श्रीसीतारामाभ्यां नमः

श्रीसीतारामनाम—साधना

– संपादक –

शत्रुहनशरण

— प्रकाशक —

''साकेतवासी श्रीविपिन विहारी प्रसाद एवम् गजेन्द्र प्रसाद श्रीवास्तव''

की पुण्यस्मृति में

श्रीकेदारनाथ प्रसाद एवम् श्री वीरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

— मुद्रक —

श्रीराम ऑफसेट प्रिन्टर्स

पालकी खाना, फैजाबाद, दूरभाष—२०५५२

द्वितीय संस्करण—२००० सन् १९९९ई० न्यौछावर दो सौ एक रूपये

201/- रुपये
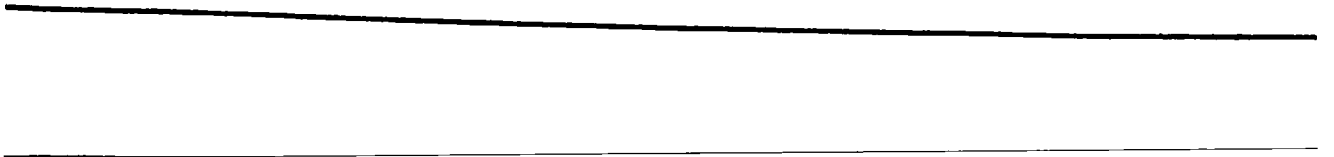
श्रीजानकी—रमणो विजयते

प्रस्तावना

झाँसी के श्रद्धेय सज्जन श्रीरामसेवक झा जी पूर्वजन्म ही के नामानुरागी हैं। रेलवे के चार्जमैन नाम प्रतिष्ठित पद पर नौकरी करते हैं। रेलवे के कार्य में दिन के घंटों तक रत रहते समय इन्हें मानों दो मन, दो जीभ हो जाती है। एक जीभ और मन से तो लौकिक नौकरी वाला कार्य सम्हालते रहते हैं। दूसरे मन—जीभ से सतत नामाभ्यास में जागरुक रहते हैं। इनकी साधना उस समय भी शिथिल नहीं होती। उसके पश्चात् वाला आपका समय तीव्र साधना में ही व्यतीत होता है। रात में बहुत कम सोते हैं। इनके पूज्य पिताजी का दर्जा इनसे भी ऊँचा था। उनके दर्शनों के लिये एक दुर्लभ—दर्शन सिद्ध आया करते थे। वे अपने नामानुरागको ऐसा छिपाकर रखते थे कि आपके निकटवर्ती आत्मीय लोगों को भी पता नहीं था कि इनकी ऊँची पहुँच है। लोगों को आश्चर्य होता था, कि इनमें क्या विशेषता है कि इतने बड़े महान सिद्ध इनके दर्शनों के लिये बार—बार आते रहते हैं। एक रातको २ बजे सिद्धजी श्रीरामसेवकजी को सोये से जगाकर इन्हें पितृचरण के समीप लिवा गये। उस समय वे गाढ़ी नींद के आनन्दमें थे, पर निद्रावस्थामें भी उनके मुख से जाग्रतकी भाँति नामोच्चारण की झड़ी लगी थी। रामसेवक! तुम्हारे पिता की यह विशेषता मुझे भी प्राप्त नहीं हैं। इनकी इसी विशिष्टता के कारण मैं इनके दर्शनोंको बराबर आया करता हूँ।

इन दोनो पितापुत्र के द्वारा झाँसी के नवयुवक समाजमें इस समय भगवन्नामानुराग की प्रवर्द्धमान लगन जागृत है। श्रीरामसेवकजी को अधिक समय नहीं कि इन नवोदित नामानुरागियों को अलग—अलग अपनी प्रकृतिके अनुसार नाम—साधना का मार्ग निर्देश करते रहें। उन्हीं नवयुवकों में एक हैं श्रीरामप्रेम शरण। श्री अयोध्या में ये हस्ततैलचित्र के कलाकार रूपमें प्रसिद्ध हैं। एक दिन श्रीरामप्रेमशरणजी ने मुझसे आग्रह किया कि आपने कई ग्रन्थ लिखे। कुछ नामजप की विधि लिखकर दें, तो हम अपने झाँसी के युवक समाज के निमित्त छपाकर उनमें वितरित करें। मैं चिरकाल से श्रीसीतारामनाम का आश्रयी हूँ। यदि जीवनमें मुझसे कुछ साधना बनी है तो गलत या सही तरीके से केवल नामोच्चारण मात्र। श्रीसीतारामनाम प्रताप प्रकाश का मैं बराबर पाठ करता रहा हूँ। मुझे श्रीनामसरकार की लिखित सेवा करने में बड़ा हर्ष हुआ। संक्षिप्त जप विधि मात्र लिखने बैठा, तो लिखते लिखते एक विशाल काय ग्रन्थ बन गया।

मैंने एक नाम साधन के लिये जितने आवश्यक ज्ञातव्य विषय समझे, कुछ न कुछ प्रत्येक पर कलम चली। लेखन में मुझे कल्याण के प्रथम विशेषांक श्रीभगवन्नामांक तथा भगवन्नाम महिमा एवं प्रार्थना अंक—इन दोनों विशेषांकों से पर्याप्त लेखन सामग्री मिली है। खासकर दृष्टांत सभी तो वहीं से उद्धत हैं। परमहंस श्री प्रेमलताजी महाराज के ग्रन्थ,पूज्यपाद बड़ेमहाराज अनन्त श्रीस्वामीयुगलानन्यशरणजी महाराज के ग्रन्थ एवं श्रीगोस्वामीजी के काव्यों से मुझे लेखनसामग्री जुटाने में विशेष सहायता मिली हैं।

अपने ग्रन्थ में मैंने जो आर्ष ग्रन्थों के श्लोक उद्धृत किये हैं। सभी श्रीसीतारामनाम प्रताप प्रकाश से लिये गये हैं। तात्पर्य यह कि प्रस्तुत पुस्तिका में मेरा विचार तो नगण्य ही है, मैंने केवल प्राचीन तथा अर्वाचीन नाम – आचार्यों की महावाणियों का संकलनमात्र किया हैं। श्रीनाम रहस्य को सहज बोधगम्य बनाने के लिये हमने सम्पूर्ण ग्रन्थों को सात खंडो में विभाजित किया। यह विभाजन—पद्धति हमारी तुच्छ बुद्धि की उपज है।

प्रथम अभिमुख खंड में हमने श्रीसीताराम नाम जप को ही युगधर्म के अनुसार एकमात्र सफल साधना प्रवल प्रमाणों के द्वारा सिद्ध किया है। अत: विधाव्यसन, ज्ञानार्जन, हठयोग, दान, तीर्थ, यज्ञ आदि के द्वारा पंगु बनाये हुये, साधनों से मुहमोड़ कर एकमात्र नाम–साधना में शिरतोड़ परिश्रम करने पर जोर दिया है।

द्वितीय साध्य खंड में हमने श्रीसीतारामनाम की सर्वश्रेष्ठता परत्व, प्रतिभा, प्रताप,वैभव,महिमा,प्रभाव,शक्ति सिद्ध करते हुये, श्रीनाम सरकार के सौहार्द, माधुर्य आदि गुण दर्शाये हैं। श्रीनामजप की दुर्लभता एवं प्रार्थना सुलभ भी बताये गये हैं।

तृतीय साधक खंड में नामसाधक के लिये वैराग्य, नाम विश्वास,श्रद्धा, नाम भरोसा आदि आवश्यक बताते हुये,इन्हें श्रीनामाकार वृत्ति बनाने तथा नामनशे में चूर रहने का आग्रह किया गया हैं। निष्काम साधकों के सुख,महत्व तथा सुरक्षा आदि विषय भी आनुषंगित रूप से कहे गये हैं।

चौथे बाधक खंड में अति आहार, शयन,संभाषण आदि को बाधक बताते हुये, इनके तथा अनान्य आवश्यक संयम एवं दश नामापराध से बचने का आग्रह किया हैं।

पाँचवें साधन खंड में श्रीसद्गुरूशरणागति,श्रीनाम शरणागति आवश्यक बताते हुये, युगलनाम,वैखरी वाणी में जपसंख्या का नियम लेकर जपने को कहा गया है। निरंतर अखंड जप को इष्ट ध्यानपूर्वक जपना सर्वोत्तम साधन बता कर नामरटन का सुदृढ़ संकल्प लेने पर बल दिया गया है।

छठे सिद्धि खंड में नामजप से प्राप्य सिद्धाई, श्रीइष्ट धाम प्राप्ति तथा भक्ति की सिद्धि बताई गई हैं।

इसी प्रकार नामजप से रोगनिवारण,भय निवारण,संकट–मोचन, विघ्न वाधा निवारण,तथा नामजप से अमरत्व, की प्राप्ति बताया गया है। श्रीनाम सरकार प्रतिकूल को अनुकूल बनाते हैं। इनमें विलक्षण चमत्कार भरा है। ये प्रारब्ध भी मिटाने में समर्थ हैं। नामजपका अनुभव, लाभ तथा शान्ति की प्राप्ति बताई गई है।

सातवें नाम लेखन खंड में नाम लेखन से विविध मनोरथों की सिद्धि एवं अशेष प्रकार की सिद्धियाँ संभव बताई गई हैं।

ग्रन्थ प्रकाशन का पूरा भार–वहन साकेत वासी सेठ जय चन्द्र लाल जी लाहोटी, गोहाटी (आसाम) वाले के सुपुत्र श्री ऊँ प्रकाशजी लाहोटी कर रहे हैं।

एतदर्थ ये सभी सहदय पाठकों के आर्शीवाद भाजन हैं। प्रूफ मैंने केवल एकबार ही देखा है। अत: अशुद्रियाँ बहुत रह गई हैं। भूल करना मानव–स्वभाव हैं। उद्धृत श्लोको तथा आचार्य महावाणियों की हमने टीका नहीं की है। संक्षिप्त भाव सारांश मात्र जहाँ तहाँ दर्शाये गये हैं। अत: विज्ञपाठक मूल महावाणियों को अधिक विश्वनीय मानकर, हमारे भावकथन की त्रुटि को सम्हाल लेंगे। ग्रन्थमें जो कुछ खूबी है, वह आचार्यो की महावाणियों की हैं। त्रुटियों का उत्तरदायी हैं यह क्षुद्रलेखक । सहदय सज्जनों से अपराध क्षमापन की प्रार्थना करता हुआ।

विनीत

शत्रुहनशरण

श्रीरसमोदकुंज, श्री अयोध्याजी,
माघ पूर्णिमा, संवत २०३८

द्वितीय संस्करण के दो शब्द

प्रथम संस्करण की प्रतियाँ चुक गईं। संत एवं भक्त समाज को यह ग्रन्थ सुरूचिपूर्ण लगा। उनकी पुनः–पुनः माँग देखकर यह द्वितीय संस्करण सुजन समाज के समक्ष प्रस्तुत है।

इस द्वितीय संस्करण के प्रकाशन के व्यय भार वहन में साकेत वासी श्री विपिन बिहारी प्रसाद जी के सुपुत्र श्री केदारनाथ प्रसाद जी (लक्ष्मी राईस मिल, गढ़नोखा) एवं दूसरे साकेत वासी श्री गजेन्द्र प्रसाद श्रीवास्तव के सुपुत्र श्री वीरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव (श्रीवैदेहीशरणजी) अर्रा, बाधी रोड, वैशाली सहयोगी हैं।

एतदर्थ आप नामानुरागी–द्रय श्री आचार्य–कृपा के भाजन हैं।

श्रीरसमोदकुंज, श्री अयोध्याजी,
गुरू पूर्णिमा, संवत २०५६
तदनुसार २८ जुलाई, १९९९ ई०

संत चरण रेणु–किंकर
सियाछबीली शरण
(भैया जी)

सूची-पत्र

सं.	विषय	पृष्ठ

१. अभिमुख खंड

सं.	विषय	पृष्ठ
१.	मंगलाचरण	१
२.	सब साधन छोड़कर नाम जपिये	२
३.	नामेतर साधन	७
४.	सर्व साधन सार नाम जप	६
५.	स्वल्पायास से महान फल देने वाले नाम जप	१२
६.	नामाभ्यास से मुक्ति	१७
७.	युगधर्म नाम जप	१७
८.	विद्या-व्यसन छोड़कर नाम जपिये	२५
६.	ज्ञानार्जन छोड़ नाम जपिये	३०
१०.	हठयोग से नामयोग अधिक हितकर	३२
११.	दानों की अपेक्षा नाम जप	३८
१२.	तीर्थाटन छोड़कर नाम जपिये	४१
१३.	यज्ञायोजन छोड़कर नाम जपिये	४४
१४.	सर्वश्रेष्ठ साधन नाम जप	४५
१५.	आज ही दुर्दशाग्रस्त स्थिति में रामनाम की आवश्यकता	४६
१६.	मूर्ख-शिरोमणि	४८

२. साध्य खंड

सं.	विषय	पृष्ठ
१७.	श्री सीतारामनाम अनादि हैं	५४
१८.	सर्वोत्तम भगवान्नाम	६०
१६.	सर्वश्रेष्ठ मन्त्र	६५
२०.	श्री रामनाम परत्व	७४
२१.	श्री अयोध्यापति से आपके नाम बड़े हैं	८२
२२.	श्री नामप्रतिमा	८४
२३.	श्री नामप्रताप	८८
२४.	श्री नामवैभव	६७
२५.	श्री नाममहिमा	१०२
२६.	श्रीरामनाम का मूल्य	१०८
२७.	श्रीनामप्रभाव	११०
२८.	श्रीनाम शक्ति	११३
२६.	महान पुरुषों के जाप्य श्रीरामनाम ही हैं	११६
३०.	श्रीरामनाम की सार्वभौमव्यापकता	१२४
३१.	श्री नाम और रूप में अभेद	१३२

सं.	विषय	पृष्ठ
३२.	दिव्य गुणगाननिधान श्री रामनाम	१३६
३३.	सर्वसुहृदय नाम	१३८
३४.	श्री नाम माधुरी	१४०
३५.	मृतसंजीवनरामनाम	१४६
३६.	अंदर का चौकीदार	१४७
३७.	तृप्ति तो रामही नाम से	१४८
३८.	श्री रामनाम की दुर्लभता	१४८
३९.	प्रार्थना सुलभ श्रीनाम	१५२
	३. साधक खंड	
४०.	उत्तम नाम जापकों के लक्षण और रहनि	१५८
४१.	नामप्रेमियों का सर्वस्व	१६३
४२.	नामनिष्ठा	१६६
४३.	वैराग्य	१६६
४४.	धन्य कौन ?	१६७
४५.	नामनिष्ठा में दृढ़ विश्वास आवश्यक है	१७०
४६.	श्रद्धा पर एक दृष्टान्त	१७४
४८.	श्री राम नाम का अनन्य भरोसा	१७६
४९.	जापक की नामाकारवृत्ति	१८४
५०.	नामनशा	१८८
५१.	नामरुचि के लिये विपत्ति का स्वागत	१९२
५२.	निष्काम साधकोत्तम	१९२
५३.	जगत में सुखिया नाम जापक ही है	१९३
५४.	जापजापक महत्त्व	१९५
५५.	नाम जापक के रक्षक	२००
	४. वाधक खंड	
५६.	अशुद्ध अन्न और अति आहार	२०२
५७.	अधिक शयन	२०५
५८.	असंयत बोल	२०६
५९.	नामजापकों के लिये अन्य संयम	२०८
६०.	एक सिद्ध सन्त के पच्चीस अनमोल बोल	२१४
६१.	दश प्रकार के नाम अपराध	२१६
	५. साधन खंड	
६२.	श्री सद्गुरु शरणागति	२२२
६३.	श्री राम नामशरणागति	२२९
६४.	जपने का दृढ़ संकल्प	२३३

सं.	विषय	पृष्ठ
६५.	श्री युगलनाम जपना चाहिये	२३६
६६.	नाम वैखरी वाणी में ही जपना चाहिये	२४२
६७.	जप संख्या का नियम लेकर श्रीयुगलनाम जपना चाहिये	२४७
६८.	सर्वसाधनसार नामजप	२५५
६९.	नाम जप से जन्म कुंडली चक्र शोधन	२५७
७०.	निरन्तर अखंड जप	२६१
७१.	एकाग्र चित्त होकर नाम जपना चाहिये	२६५
७२.	इष्ट-रूप-ध्यानपूर्वक नाम जपना चाहिये	२६९
७३.	नामरटन का सुदृढ़ संकल्प	२७०
७४.	श्री नाम सेवन के अन्यान्य प्रकार	२७१
७५.	गुणानुसन्धानपूर्वक नामजप	२७३
७६.	मरण काल का नामोच्चारण	२७५
	६. सिद्धि खंड	
७७.	नाम जप से वैराग्योदय	२७७
७८.	नाम जापक की सुरक्षा	२८०
७९.	सभी पापों का प्रायश्रित नामजप	२८१
८०.	प्रायश्यित-विमर्श	२८३
८१.	श्री रामनाम जप से सवोच्च पद की प्राप्ति	२८९
८२.	श्री राम नाम से सकलमनोरथसिद्धि	२९०
८३.	नाम जप से त्रिगुणमयी सिद्धियाँ	२९७
८४.	नामजप से विभिन्न सिद्धियाँ	३००
८५.	नामजप से पारमार्थ सिद्धियाँ	३०२
८६.	श्रीसाकेत प्राप्ति	३०४
८७.	नामजप से श्री साकेत-प्राप्ति का दृष्टांत	३१३
८८.	परलोक संवारने के निमित्त नामजप	३१५
८९.	श्री जानकीरमण में प्रीति भक्ति	३१६
९०.	श्री नामजप से ही दिव्यानंद का अनुभव	३२०
९१.	श्री नामजप से इष्ट-दर्शन	३२२
९२.	श्री राघवदर्शन के लिये चौबीस घंटे का अखंड नामजप	३२५
९३.	नामजप से सर्वरोग निवारण	३२६
९४.	श्री रामजप से भयनिवारण	३३२
९५.	संकटमोचन	३३५
९६.	संकटमोचन रामनाम	३३८
९७.	विघ्नवाधा-निवारण	३३९
९८.	श्रीनामजप से अमरत्व	३४५

सं.	विषय	पृष्ठ
९९.	श्री रामनाम प्रतिकूल को अनुकूल बनाते हैं	३४६
१००.	श्री रामनाम का चमत्कार	३४७
१०१.	श्री नाम प्रारब्ध भी मिटाने में समर्थ हैं	३५१
१०२.	श्री नाम-साधना संभूत अनुभव	३५२
१०३.	श्री नामसाधना संभाव्य लाभ	३५६
१०४.	अखंड-जप से और अधिक लाभ	३६२
१०५.	निरंतर नामाभ्यास का प्रभाव	३६५
१०६.	श्री नाम से शान्ति लाभ	३६७
	७. श्री रामनाम लेखन खंड	
१०७.	रामनाम लेखन महत्व	३६९
१०८.	रामनाम लेखन का पुरश्चरण	३७१
१०९.	नामलनेखन से धन सम्पत्ति की प्राप्ति	३७४
११०.	धन प्राप्ति के लिये श्रीमंत्रराज लेखन	३७४
१११.	धन प्राप्ति के लिये श्री रामनाम लेखन	३७५
११२.	धन प्राप्ति के लिये श्रीशंकर उपासना	३७६
११३.	पुत्र प्राप्ति के लिये नाम लेखन	३७६
११४.	रोग निवारण के लिये नाम लेखन	३७७
११५.	व्यापार में लाभ के लिये नामलेखन	३७८
११६.	सर्व मनोरथ दायक नाम	३७९
११७.	सर्व मनोरथ सिद्धार्थ श्री हनुमानदाराधना	३७९
११८.	प्रेतवाधा निवारण के लिये	३८०
११९.	क्लेश निवारण के लिये नाम लेखन	३८०
१२०.	मृत्यरोग टालने के लिये नाम लेखन	३८०
१२१.	उपद्रव उत्पात शान्ति के लिये नाम लेखन	३८०
१२२.	वन्धनमोक्ष के लिये नाम लेखन	३८१
१२३.	नामलेखन द्वारा विद्या-प्राप्ति	३८१
१२४.	मुक्ति प्राप्ति के लिये नाम लेखन	३८१
१२५.	आकर्षण प्रयोग	३८२
१२६.	वशीकरण सिद्धि	३८२
१२७.	मोहन प्रयोग	३८३
१२८.	स्तम्भन प्रयोग	३८३
१२९.	उच्चाटन प्रयोग	३८३
१३०.	विद्वेषण प्रयोग	३८४
१३१.	मारण प्रयोग	३८४
१३२.	सन्तापन प्रयोग	३८५

❈ 'श्री सीतारामाभ्यां नमः' ❈

श्री सीताराम

꧁ नाम–साधना ꧂

❈ अभिमुख खण्ड ❈

, मङ्गलाचरण ,

सतगुरु पद असदहरन सुमिरन करु प्यारे।
याते पर अपर बात, घात पाँच सात रात,
ताते तजि तृगुन नात, गुरु गुननिधि धारे।
लोक लाज खाज दरद, दायक दब दगाबाज,
जानि बूझि भाज गुरु, सनेह सुचि सँवारे।।
नाम नेह नवल अमल, गेह देह पाँच हीन,
पीन मति विचित्र सरन, सतगुरु अवधारे।
'श्री युगल अनन्य' करुना सत, वत्सलय अधिक मेल।
तोल पोल पार प्रीति, रीति लघु सवारे।।

चहुँ युग माहि सुसंत जे, रसिक नाम अभिराम।
तिन पद पंकज नमो नित, दायक उर अभिराम।।

पर ते पर पावन परम, अग जग जीवन जान।
बंदो सीताराम निज, नाम महामुद खान।।

अगुन सगुन वर बोध कर, अमर अजर सुख हेतु।
करुनानिधि आरत हरन, भव दुस्तर सुचि सेतु।।

,सब साधन छोड़कर नाम जपिये,

उपासना मार्ग पर चलने को समुत्सुक नवल जिज्ञासुओं के लिए प्राय: सर्वत्र श्रीसीतारामनाम जपने पर विशेष जोर दिया जाता है। हम पहले यही स्तम्भ यहाँ उपस्थित करते हैं :—

भक्त संसार की सर्वसम्मत मान्यता है कि ''सर्वं त्यक्त्वा हरिं भजेत्''।

''श्रुति सिद्धान्त इहै उरगारी। भजिये राम सब काम बिसारी।।''

इसी सिद्धान्त पर शास्त्रीय रीति से विस्तारपूर्वक विचार करना है।

श्री विष्णु पुराण में श्रीब्रह्माजी ने श्री मरीचिजी से कहा है कि भूमंडल में श्रीरामनाम विज्ञान से विहीन जन ही कोई स्वर्गादि नश्वर फल देने वाले यज्ञादिक कर्मों में लगे रहते हैं, कोई घुनाक्षर न्याय की भाँति कैवल्य प्राप्ति में भी संदिग्ध साधन ज्ञानार्जन में लगे हैं। लोग जानते नहीं कि संसार—सागर से पार उतारने वाले तारक शब्द 'ब्रह्म' संज्ञक तो एकमात्र श्रीराम नाम ही है। यही कारण है कि श्रीरामनाम के समान अमोघ साधन को छोड़कर कोई हठयोग के पीछे माथ मुड़ा रहे हैं, तो कोई ध्यानादि में मोहित हो रहे हैं। कोई नाना मंत्र जप की सिद्धि में क्लेश उठा रहे हैं। हम ब्रह्मा, श्रीशंकरजी, भगवान् विष्णु तथा सभी देवता लोगों ने भी श्रीरामनाम ही के प्रभाव से उत्तमोत्तम सिद्धियाँ प्राप्त की हैं। जो श्रीनाम विद्या नहीं जानते वे भटका करें।

''केचिद्यज्ञादिकं कर्म केचिज्ज्ञानादि साधनम्।
कुर्वन्ति नाम विज्ञान विहीना मानवा भुवि।।
तत्र योग रता: केचित्केचिद् ध्यान विमोहिता:।
जपे केचित्तु क्लिश्यन्ति नैव जानन्ति तारकम्।।
अहं च शङ्करौ विष्णुस्तथा सर्वे दिवौकस:।
राम नाम प्रभावेण सम्प्राप्ता सिद्धिमुत्तमाम्।।''

भविष्योत्तर पुराण में भगवान् श्रीनारायण, भगवती श्रीलक्ष्मीदेवी से कहते हैं — कमले ! क्या साधनान्तरों में भटकना है? सभी ईश्वर कोटि के महानों द्वारा संपूजित रामनाम जपो, रामनाम ! मैं भी तो मन ही मन वही नाम जपता हूँ। सभी साधनों में श्रीरामनाम उच्चारण सर्वोत्तम है। अकेले मैं ही नहीं कहता, वेद मर्मज्ञ, ज्ञानसागर में मग्न, महानुभाव भी यही कहते हैं।

''भजस्व कमले नित्यं नाम सर्वेश पूजितम्।
रामेति मधुरं साक्षान्मया संकीर्त्यते हृदि।।
सर्वेषां साधनानां वै श्रीनामोच्चारणं परम्।।
वदन्ति वेद मर्मज्ञा निमग्ना ज्ञान सागरे।।''

जब सरल सुगम अमोघफलप्रसू श्रीरामनाम ही सभी दिव्यादिव्य मनोरथ पूर्ण करने वाले है, तो नाहक तीर्थ, व्रत, हवन, तप, यज्ञ, दान, ध्यान, विज्ञान, समाधि, योग, विराग अन्य जप, पूजापाठ, यंत्र, मंत्र, तंत्र तथा अन्यान्य उग्र कर्म करने की क्या आवश्यकता? ऐसी 'वृहन्नारदीय' की सम्मति है।

''किं तीर्थै किं व्रतै होमैः किं तपोभिः किमध्वरैः।
दानैर्ध्यानैश्च किं ज्ञानैर्विज्ञानैः किंः समाधिभिः।।
किं योगैः किं विरागैश्च जपैरन्यैः किमर्चनैः।
यन्त्रैर्मन्त्रैस्तथा तन्त्रैः किमन्यैरुग्र कर्मभिः।।
स्मरणात्कीर्त्तनाच्चैव श्रवणाल्लेखनादपि।
दर्शनाद्धरणादेव रामनामाखिलेष्टदम्।।''

प्रश्न यह बनता है कि जब श्रीरामनाम ही लौकिक—पारलौकिक स्वार्थ—परमार्थ की अशेष वस्तु देते हैं, तो अन्यान्य साधन बनाये ही क्यों गये हैं? उत्तर — प्रीति—प्रतीति श्रीरामनाम ही में जमना बड़ा कठिन है। जिन्हें जम गया, उनके लिये सभी अन्य साधन व्यर्थ हैं। जिस भाग्यहीन को श्रीरामनाम में विश्वास नहीं है, वह करे क्या? आखिर कहीं तो उन्हें अपने मन को सन्तोष देने के लिए, लगना है। अतः ऐसे ही मंदभागियों के लिए परमानन्द—निष्ठ महर्षियों में साधनान्तर की कल्पना की है। श्रीआदित्य पुराण में स्वयं भगवान् सूर्यदेव मुनियों से कहते हैं —

''नाम विश्रब्धहीनानां साधनान्तर कल्पना।
कृता महर्षिभिस्सर्वैः परमानन्दनैष्ठिकैः।।''

श्रीरामनाम को छोड़कर जिसे अन्य साधना में प्रीति है, समझो कि वह अनजान कल्पवृक्ष समूह को छोड़कर, एरण्ड पेड़ का सेवन कर रहा है। 'श्रीआङ्गिरस पुराण' में कहा है —

''सुरद्रुम चयं त्यक्त्वा ह्येरण्डं समुपासते।
यस्यान्य साधने प्रीतिस्त्यक्त्वा श्रीनाममङ्गलम्।।''

कलि के प्रभाव से श्री रामनाम प्रतिपादक अनेक ग्रन्थ लुप्त हो गये हैं। आजकल पाखंडियों ने नाना मतवाद फैला रखा है, भोली—भाली जनता के धनापहरण के लिए। अतः अनेक बहकावे में न आाकर, जो सभी साधनों से मन मोड़कर, एकमात्र नामाभ्यास में लगे हैं, वही कृतकृत्य हैं, वही सभी वेदान्तों के मर्मज्ञ हैं। 'ब्रह्म संहिता' में कहा है—

''कलि प्रभावतो नष्टाः सद्ग्रन्थानां कथाः शुभाः।
पाखण्डै र्निर्मितं नाना मतं श्रीनाम वर्जितम्।।
अतस्सर्वं परित्यज्य नाम संस्मरणे रताः।
त एव कृतकृत्याश्च सर्व वेदान्त कोविदाः।।''

हमारे पूर्वाचार्य श्री बड़े महाराज कहते हैं— सभी साधन समूह की श्रीराम नाम से तुलना हो नहीं सकती है। आकाश—जमीन के समान अन्तर है दोनों में। यदि श्री नाम देवेन्द्र हैं, तो अन्य साधन भूमण्डल के दरिद्र। श्रीनाम विज्ञ हैं, तो दूसरे साधन अज्ञ। श्री नाम स्वच्छ जल हैं, तो दूसरे साधन सब कीचवत्। श्रीरामनाम अमृत, अन्य साधन मौत। श्रीरामनाम दिव्यदेह, तो अनन्य साधन मलीन स्थूल शरीरवत्। इसी भाँति दोनों में अन्तर समझ लेना चाहिए।

''जैसे छिति व्योम माँझ अन्तर लखाय अति,
जैसे सुरराज रंक भेद दरसात हैं।
जैसे विज्ञ अज्ञ बीच, स्वच्छ जल कीच,
सुधा मीच में, विभेद सब भाँति सरसात हैं।।
जैसे दिव्यदेह गुन गेह, औ मलीन तन,
समता कदापि नहीं कबहूँ लखात है।
(श्री) युगल अनन्य ऐसे साधन समूह सब,
महाराज नाम की न तुल्यता विभात है।। १०९९

आप चले हैं और साधनों की श्री रामनाम से तुलना करने। भला बतलाइए तो असंख्य तारागण, दीपक, अग्नि, विद्युत, सहस्रों चन्द्रमा मिलकर भी सूर्य की तुलना करेंगे? सम्पूर्ण भूमंडल की प्रजा मिलकर, वैभव में क्या चक्रवर्ती सम्राट् की समता कर लेगी? काँच के कोटि–कोटि पर्वत मिलकर, क्या स्वच्छता में, मोल में, प्रकाश में, चिन्तामणि का पटतर कर पावेंगे? आपको तुलना करना हो तो कीजिये, किन्तु याद रहे सिद्धि तो रामनाम ही से मिलेगी।

'' अमित नखात दीप अनल सुदामसुता,
सहस उड़ेश सूर सदृश न होत रे।
अखिल जहान प्रजा जुरे न नृपेश सम,
वैभव विलास सम जोहिये निसोत रे।।
कोटिन पहार सम काँच तऊ चिंतामनि,
सदृश न स्वच्छता अमोलता सुजोत रे।
(श्री) युगल अनन्य ऐसे महाराज नाम सम,
साधन असंख्य सिद्धताई न उदोत रे।। ११०४।।

उसी भाँति श्रीबड़े महाराज कहते हैं कि श्रीनाम रहित साधन कैसे दारुण दोषयुक्त है– जैसे प्राणहीन शरीर, राजारहित असंख्य सैनिक दुखद ही होते हैं। चन्द्र चाँदनी बिना अँधेरी रात, सत्संगहीन नर जीवन, जल बिना नदी सरोवर, पतिहीन नारी, धूलवत् तुच्छ हैं।

''जैसे प्रानहीन तन नृपति रहित जन,
जरे सत सैन ऐन दुख ही को हेतु रे।
जैसे चन्द चान्दनी वियोग से देखात निसि,
जैसे संतसंग बिनु जीवन सकेतु रे।।
जैसे नीर रहित सरित सर देखियत,
जैसे धव हीन वाम तुच्छ सन रेत रे।
(श्री) युगल अनन्य ऐसे नाम से विहीन सब,
साधना मलीन दोष दारुन उपेत रे।। ११०५।।

पुन: आप कहते हैं कि श्रीरामनाम स्नेह के बिना ज्ञान—ध्यान प्राणहीन तन के समान अपावन है, अत: नाम सहित सभी साधन सुखद हैं। नाम हीन दुखद हैं। पाप—नाश की दृष्टि से नाम छोड़कर अन्य प्रायश्चित करना राख में होम करने के समान निष्फल है। और साधन इन्दारुण फल के समान कड़ुए हैं तो श्रीसीताराम नाम दाख के समान मीठे हैं।

राम नाम नेह बिन ज्ञान ध्यान प्रानहीन,
तन के समान यों सुजान संत साख है।
ताही हेतु नामहेत सहित सुखद सब,
दुखद रहित वेद विदवर भाष है।।
जेते करतब कल्मष के हरनहार,
ते ते नाम बिन जैसे वादि होम राख है।
(श्री) युगल अनन्य और साधन इन्दारुनी सो,
सीतावर नाम महामिष्ट सम दाख है।१३४०।।

श्रीरामनाम पावनों के पावन बनाने वाले, महामोद सिन्धु, दीनबंधु हैं। पुराणों में अन्यान्य साधन जो लिखे हैं उन्हें कलियुग में हाथी के बाहरी दाँत के समान केवल दिखावटी मात्र समझना किसी साधन में भी कलियुगी बद्धजीव को प्रभु के सम्मुख करने की शक्ति नहीं है, केवल सब भाँति से आदि, मध्य परिणाम में तीनों प्रकार उन्हें दुखद समझना। अत: अन्य साधन की आशा करने वाले गधे के समान नासमझ हैं और हैं कर्मनाशा नदी तुल्य अपावन।

महामोद सिन्धु दीनबंधु विमलेश नाम,
लेक वेद जाहिर हमेश ही सुखद है।
साधन समूह व्यूह लिखो जो पुरान बीच,
तौन कलिकाल बीच रदन द्विरद है।।
काहू मध्य वध्य जीव सींव सनमुख शक्ति,
नेकु न देखात तिहूँ भाँतिन दुखद हैं।
(श्री) युगल अनन्य अन्य आस के करैया नर,
खर के समान तिन्हें मानों नदवद हैं१३४४।।

नाना साधन अनेक मत, मलीन मादक है। लक्ष्य तक पहुँचाने वाले नहीं हैं। जब पारसपर्वत तुल्य राम नाम मिल गये, तो कौड़ी मोल वाले साधनों से क्या मतलब? संत सद्गुरु ने श्रीरामनाम सुधासिंधु दरशा दिया, तो अन्य साधन रूपी खारे जल पीकर कैसे प्रतोष चाहते हैं? श्रीसीताराम सुयश चिंतनपूर्वक नाम जपिये प्रेम रंग में रंगाइये और सारहीन साधनों के पीछे मत भटकिये।

नाना मत मादक मुलीनता मुराद बिन,
मतलब करन अजूब अविचार है।

पायो प्रिय पारस पहार अविकार जब,
तब कहा कौड़िन को रह्यो दरकार है।।
संत सदगुरु दरसाय दियो सुधासिंधु,
पीवत प्रतोष काज कौन जलछार है।
(श्री) युगल अनन्य सीताराम नाम जस संग,
रंग अंग रंग्यो और साधन असार है।।१५६०ई.।।

श्री बड़े सरकार के मत से श्रीरामनामहीन साधना बन्ध्यापुत्र सममिथ्या है कहने में सुगम, करने में अगम। करो भी तो मनबुद्धि की स्थिरता नहीं होती। जैसे भूसा कूटने से अन्न नहीं निकलता, जल मथने से घी नहीं निकलता, उसी भाँति अन्य साधनों से फल नहीं मिलता। कलिकाल में नाम ही से श्रीसाकेतधाम मिलेगा।

''मेरे मत मांझ सब बांझ सुत के समान,
साधन सुनाम विरहित सांच मानिये।
कथनी करन लागे सुगम अगम अति,
होत तिलमात्रहूँ न थिर मति तानिये।।
तुषा घात किये से न कढ़त अनाज कहूँ,
नीर के मथे ते घृत कैसेहूँ प्रमानिये।
(श्री) युगल अनन्य कलिकाल में कृपाल नाम,
देत सत्य धाम संत साखि साँच जानिये''।।२७३८।।

और भी महाराज की विमल वाणी पढ़िये—

कोउ साँख्य शास्त्र उपनिषद सुभाष्य वेद,
खेद विरहित निशि दिवस बिलोकही।
कोऊ योग रोग हर, सोग से बिहीन भक्ति,
सुरति सुतंत्र सुविचारत अशोक ही।।
कोउ यंत्र मंत्र तंत्र सिद्धता बड़ाई हेत,
नाना भाँति साधन सजाय चित्त रोकही।
(श्री) युगल अनन्य सब सत्य पर आज काल,
सीताराम नाम जपे पावे सुख थोक ही।।१४११।।

अनेकों कल्प पर्यन्त शरीर को कष्ट देकर, मौन पूर्वक तप कर लो, कंचनकामिनी तथा विषय विलास त्याग कर समाधि भी सिद्ध कर लो, काल की कठोरता को भी साधन द्वारा शीतल बना लो, परन्तु जो विलक्षण सुख स्वाद नाम जपने से होगा, वह उन साधनों में कहाँ?

'' कोटिन काय कलेश करे कति कल्प अनल्प अजल्प रहावै।
कंचन कामिनि काम कषाय विहाय समाय समाधि सजावै।।
काल कराल कठोर कवाहत चाहत ताहि सदा सितलावै।
(श्री) युग्म अनन्य अमोल अडोल सुनाम रटे विन मौज न छावै।।१९०२।।

भजन प्रभाव होत सुलभ सकल सुख, घोर भवसिंधु होत गाय के ज्यों खूर है।
साधन करत सियराम नाम तजि कलि आमन के हेतु जनु सेवत बबूर हैं।।
चहुँ जुग तीनि काल वेद और पुरान माहि झलमल झलकत नाम ही को नूर है।
दीखत न प्रेमलता लोचन विहीन लोग रटत न राम नाम सोई नर कूर है।।

नाम को स्वाद मिल्यो जिन्हि को तिन्हि को जप जोग न भोग सुहाहीं।
कर्म सुधर्म शुभाशुभ साधन आराधन बहुते जग माहीं।
रिद्धि सुसिद्धि विभूति तिलोक की पूजन पाठ प्रपंच लखाहीं।
प्रेमलता रत नामहिं जे तिन्हि को कछु भूलिहु भावत नाहीं।।

कोटिन बात की बात कहौं इक, सत्य प्रमानिक मंगल खानी।
रटना सियराम के नाम सुजानहु कोटि प्रकारनि आनंद दानी।।
श्री गुरुदेव कृपाल कही मोहि पावन पर्म सु नाम कहानी।
प्रेमलता दृढ़ धारि सदा उर नाम रटो सुनि मोर सुवानी।।

नामेतर साधन निष्फल

युग द्रष्टा वैष्णवाचार्य शिरोमणि कलिपावनावतार श्री गोस्वामिपाद ने इस युग में श्रीरामनाम भिन्न सभी अन्यान्य साधनों को फलोत्पादनी शक्ति विरहिता वन्ध्यावत् बताया है। '' कलिकाल अपर उपाय ते उपाय भये। जैसे तम नासिवो को चित्र की तरनि। ''

राम नाम इक अङ्क है,सब साधन है सून।
अंक गये कछु हाथ नहिं, अंक रहे दस गून।।

आदि में आप १, २, ३, ४ आदि कोई अंक न लिखें, केवल शून्य—शून्य लिखते जायें, तो गिनती में कुछ नही रहेगा। आदि में कोई अंक लिखकर शून्य लिखें, यथा १०, २०, ३० आदि तो वह लिखित अंक अपने से दस गुन बढ़ जायगा। उसी भाँति नाम कीर्त्तन सहित कोई साधन करें, तो उन वन्ध्या साधनो में भी श्रीनाम सरकार, अपनी शक्ति से शास्त्रोक्त फल के दश गुन अधिक दे देंगे।

यदि आप नाम छोड़कर, तीर्थ, व्रत, दान, पुण्य, योग, यज्ञ, ज्ञान, ध्यान आदि साधन कर रहे हैं, तो आपको परमार्थ प्राप्ति से तो हाथ धो ही लेना चाहिये। परमार्थ बनेगा, भगवद्धाम की प्राप्ति

मुक्ति, भक्ति आदि होगी, तो एक मात्र श्रीरामनाम के जप से ही। श्रीदोहावली में श्रीगोस्वामिपाद कहते हैं कि –

''राम नाम अवलंब विन, परमारथ की आस।
बरसत वारिद बूंद गहि,चाहत चढ़न अकास।।''

भला वर्षा बूँदो की लड़ी पकड़ कर कोई आकाश पर चढ़ सकता है? तब अन्य सभी साधन तो वर्षा बूंद की लड़ी है। भगवद्धाम कैसे पहुँचियेगा?

श्रीनृसिंह पुराण का प्रमाण है। देवर्षि नारदजी, श्रीयाज्ञवल्क्य ऋषि से श्रीरामनाम की महिमा बता रहे हैं। आपका कहना है कि किसी साधक के श्रीरामनाम में श्रद्धा तो है नहीं, अन्यान्य धर्म संग्रह में लगा है। समझ लीजिए मुनिवर! उसके सभी साधन निष्फल जायेंगे। यथा कोई रास्ते पर बीज वपन करे, तो पथिकों के चरण रगड़े से उस बीज का अंकुर ही नष्ट हो जायेगा, बिना पौधे का फल कहाँ?

''राम नाम्नि रति र्नास्ति कुरूते धर्म सञ्चयम्।
तत्सर्व निष्फलं प्रोक्तं पथि बीजाङ्कुरा इव।।''

आपने साधन ग्रन्थों में बहुत से साधनों के चमत्कार पढ़े होंगे। आप ही अपने हृदय पर हाथ रख कहिये, घोर पापियों का उद्धार किस साधन के द्वारा हुआ है अब तक?

श्री वायु पुराण की बात है। सब साधन प्रभाव मर्मज्ञ, अनादि काल से अद्यपर्यन्त साधन फलों को देखते आने वाले, जगद्गुरु भगवान शंकरजी बहुश्रुत, सर्वलोक पर्यटक देवर्षि नारदजी से कहते हैं। देवर्षि! जहाँ–जहाँ घोर पापियों का सम्यक उद्धार देखने अथवा सुनने में आया है, एक मात्र श्रीराम–नाम से संभव हुआ है? भगवान शंकर अपने कथन के प्रमाण में सत्य की दोहाई दे रहे हैं।

''यत्र यत्र समुद्धारो दृश्यते श्रूयतेऽथवा।
तत्सर्व राम नाम्नैव सत्यं सत्यं बचो मम।।''

श्री गोस्वामी जी अपने कथन का समर्थन करते हैं

' पतित पावन राम नाम सो न दूसरो।
सुमिरि सुभूमि भयो तुलसी सो ऊसरो।।' (श्री विनय पत्रिका)

जासु पतित पावन बड़ बाना। गावहिं कवि श्रुति संत पुराना।।
ताहि भजहिं मन तजि कुटिलाई। राम भजे गति केहि नहिं पाई।।
पाई न केहिं गति पति पावन राम भजि सुनु सठ मना।
गनिका अजामिल व्याध गीध गजादि खल तारे घना।।
आभीर जमन किरात खस स्वपचादि अति अघरास जे।
कहि नाम बारक तेपि पावन होहि राम नमामि ते।। (श्रीमानस ७/१३०/१)

सर्व साधन सार नाम जप

कर्म, वैराग्य, ज्ञान, योग, उपासना, प्रपत्ति आदि वेदोक्त शुभ साधना समुदाय अपनी—अपनी जगह सभी सत्य हैं। परन्तु युग धर्म के अनुरूप उनका सुविस्तृत विधि विधान से निर्वाह होना दुष्कर है। श्री रामनाम जप ऐसा सारभूत साधन है, जिसके करने से सभी उपर्युक्त साधनों के परित्याग जन्य दोष लगना तो दूर रहा, उल्टे अन्य साधनों की अपेक्षा, इससे असंख्य गुणित अधिक लाभ है। अत: सभी युगों में श्रीरामनाम सब साधनों का सार माना जाता है, परन्तु कलिकाल के लिए एक मात्र यही उपाय सुकर रह गया है।

पहले हम श्रीनाम साधन को सर्वसार, शास्त्रीय पद्धति से, सिद्ध करेंगे।

''एहि मह रघुपति नाम उदारा। अति पावन पुरान श्रुति सारा।''

श्री वृहद्विष्णु पुराण में श्रीपराशरजी ने अपने शिष्य को बताया है कि वेद की सम्मति में श्रीरामनाम से बढ़कर; किसी भी साधन को नहीं बताया गया है। यह सारों का भी सार है, सबों को परमोत्तमा मुक्ति देने वाला है। अत: अपनी जीभ को समझाना चाहिये कि रसने! तुम मधुर प्रिय और रस सार को परखने वाली हो। अत: श्रीरामनाम रूपी सुस्वाद सुधा निरन्तर प्रीति पूर्वक पान किया करो।

'' हे जिह्वे रस सारज्ञे सन्ततं मधुर प्रिये।
श्रीरामनाम पीयूषं पिव प्रीत्या निरन्तरम्।।
नात: परतर: पायो दृश्यते सम्मतौ श्रुतौ।
सारात्सारतमं शुद्धं सर्वेषां मुक्तिदं परम्।।''

श्री मंत्र प्रकाश में कहा गया है कि मैं (भगवान शंकर) ने सभी सद् ग्रन्थों को, सभी शास्त्रों को मंथन करके, यही निर्णय किया है कि श्रीरामनाम स्मरण करनाही सार है, अन्य साधन इसके आगे व्यर्थ हैं।

' कृतं सद्ग्रन्थशास्त्राणां निर्णयं परमं मया।
श्री रामनाम स्मरणं सारमन्यं निरर्थकम्।। ''

श्री बड़े महाराज विभिन्न शास्त्रीय मतवादों के नाम गिनाकर, सबों का सार श्रीरामनाम ही को बताते हैं।

न्याय मतवादी ईश करता निरूपे निज,
काल सर्वेश सुवैशेषिक विचार है।
प्रकृत पुरुष युगवाद सांख्य शास्त्रमत,
पातंजलि बीच योग स्वच्छ निर्द्धार है।।

कर्मकांड कहत मीमांसिक समेत युक्ति,
　　ब्रह्म अद्वितीय उपनिषद् प्रकार है।
श्री युगल अनन्य वेद भाल में अमित मत,
　　रामनाम रटन कदंब मत सार है।।५३३।।

जैसे मधुमक्खी फूलों से सार रूप शहद निकालती है, उसी भाँति संतोंने श्रुति समूह मथ कर श्रीरामनाम निकाला है। अत: और साधनों को सारहीन मान कर सारभूत श्रीरामनाम का खूब रटन कीजिये। आलस्य तथा मीनमेष छोड़कर नामाभ्यास में पिल पड़िये। फिर मृत्यु की परवा आपको नहीं रहेगी।

''जैसे मधुमक्षिका निकासि सार फूलन ते,
　　गहत विशेष बात विदित विशेष है।
ऐसे ही सुसंत सुधि श्रुतिन समूह मथि,
　　सु राम नाम रंग रूप वेष है।।
नाना मतवाद बहवाइये असार जानि,
　　जिकर जमाइये सुनाम अतिशेष है।
श्री युगल अनन्य चित्त अंतक न त्रास तिल,
　　वारिये प्रमादता विहाय मीनमेष है।। ७०२।।

नाम रटना सब सार मतों का भी सार है। आप प्रेम, विश्वास, सुविधि हीन भी एकही वार नाम उच्चारण करेंगे, तो आपके सभी पाप नष्ट हो जायेंगे। प्रमाण में अजामिल है। श्रीरामनाम का अमितप्रताप अचिन्त्य है। सच्ची बुद्धि से विचारिये कि ज्ञान ध्यान तप आदि के साधनों में इतनी बड़ी पाप दाहन शक्ति है कहाँ? अत: हमारे तो जीवन का आधार, समस्त सारों के सार, श्रीनाम सरकार ही बन गये हैं।

''राम नाम रटन समस्त सार सार है।''

वारक वदन ते वदत कोई रीति प्रीति,
　　विगत प्रतीति तऊ कटे अघ भार है।
अहो अद्‌भुत् नाम प्रबल प्रताप पन,
　　समात नहिं करत विचार है।।
कहाँ ज्ञान ध्यान तप आदिक में शक्ति इहै,
　　साँची मति सहित निहारिये सुतार है।
(श्री) युगल अनन्य मेरो जीवन अधार यार,
　　राम नाम रटन समस्त सार सार है।। ७२५।।

एक तो कलियुगी मानव की आयु थोड़ी, उसमें भी अनेकों रोग ग्रसित यह शरीर। शुद्ध अहार के अभाव में मन भी स्थिर नहीं हो पाता। नाना साधन प्रतिपादक शब्दजाल तो बीहड़ बन के समान जान पड़ते हैं। युगों पढ़ते रहो, कोई निश्चित निर्णय नहीं निकलता। योग, ध्यान, ज्ञान तो इस युग में बनने से रहा। अत: मोह, ममता, त्याग कर, सभी मतों के सार, सभी ग्रन्थों के सार, सुधा के भी सार, श्रीरामनाम ही को समझकर, नामामृत का ही पान करो।

''जीवन अलप तामें रोग से ग्रसित तन,
मनहुँ न थीर कहो कहा मीत कीजिए।
कानन समान शब्दजाल को न ठीक मीत,
परत अनंत युग पढ़ै पै पतीजिये।।
योग ज्ञान ध्यान नेक वनि न सकत काल,
कठिन कराल नैन देखि के न छीजिये।
श्री युगल अनन्य मोह ममता बिसारि सब,
सारहू को सार सुधासार नाम पीजिये।। २१४६।।

श्रीरामनाम सारों के भी सार हैं। आनंद के तो सुन्दर मदिंर ही हैं। श्रीशंकरजी तथा श्रीहनुमत लालजी के हृदय में ऐसे गूंजित रहते हैं, मानों प्रकाशमान रत्न के हार पहने हों। घोर भयंकर कलिकाल जन्य दोष दुख को काटने के निमित्त मानों तीक्ष्ण तलवार है। श्रीनाम अशरण शरण हैं। गुणहीनों के भी अधार हैं, अमानी को मान देने वाले हैं। अपराधपुंज हरनेवाले हैं। श्री बड़े महाराज कहते हैं कि मेरे मन ने भली–भाँति स्वीकार कर लिया है कि श्री राम नाम समस्त रसों की खान है, प्राणों के प्राण, जीव के जीवन रूप हैं।

''सारन को सार मोदमंदिर बहारदार
हर हनुमान हिय हार दुतिमान हैं।
कठिन कराल काल कहर कलंक कुल
कतल करन हित निसित कृपान हैं।।
असरनसरन हरन अपराध पुँज
अगुन अधार औ अमानिन को मान है
श्री युगल अनन्य मन मानि लियो भली–भाँति
नाम रस खान प्रान प्रान जीव जान है।। २६५२।।

उपर्युक्त सभी कवित्त श्री सीताराम नाम सनेह वाटिका से उद्धत किए गए हैं।।

वेद के प्रकांड विद्वान् महामहोपाध्याय श्री देव स्वामी ज़ी अपनी सरल किंतु गूढ़ार्थगर्भित भाषा में भी यही कहते हैं।

''यही सार निचुरि रह्यो रामनाम रटन। याही में ज्ञान योग तीरथ कोअटन।।
राम नाम हीर और साधन सब छटन। रूप में मिलावन की नाम ही में घटन।।

नाम ही को मूरि कहत वेद बड़े डटन। यामें कछु नहिं दिखात सटन बटन जटन।।
देवमंत्र नामहि को बक्र भाव नटन। सीधी पथ पाइ चहत भली मजा पटन।।''

स्वल्पायास से भी महान फल देने वाला नाम जप है।

अन्यान्य साधनों को छोड़कर श्रीसीताराम नाम रटने को इसलिये भी कहा जाता है कि यह साधन अन्यों की अपेक्षा सुलभ है, सुकर हैं। स्वल्प प्रयास और फल सब साधनों की अपेक्षा बहुत अधिक और वह भी सुनिश्चित रूप से प्राप्त होने वाला है।

''सुमिरत सुलभ सुखद काहू लोकलाहु पर लोक निबाहूँ।। श्रीमानस नाम वंदना

श्रीभविष्योत्तर पुराण में देवर्षि नारद जी महामुनि श्रीभरद्वाज जी को बताते हैं कि— मुनिवर! योगादि साधन पार लगना दुस्तर है। अतः सुलभ सुमार्ग पर चलना चाहिये और वह है श्रीराम नाम का स्मरण। हे मुनि श्रेष्ठ श्रीराम नाम के प्रभाव से जो भक्त जनों के लिए दुर्लभ सर्वस्व हैं, वह श्रीराम रूप अनायास मिल जाते हैं। इससे भी बढ़कर कोई साधन फल है? हो तो बताइए?

'' योगादि साधने क्लेशं दुस्तरं सर्वथा मुने
अत सौलभ्य सन्मार्ग संगच्छेन्नाम संस्मरन्।।
अनायासेन सर्वस्वं दुर्लभं मुनि सत्तम
प्रभावाद्राम—नाम्नस्तु लभते रूपमद्भुतम्।।''

श्रीनारदीय पुराण में कहा गया है कि भला बताइये तो अपनी जीभ, अपना काम, नाम जपना – इसमें कौन पहाड़ ढोना है। जीभ हिलाइये, नामोच्चारण किया, हो गया सम्पूर्ण काम और जानते हैं, इस थोड़े से परिश्रम में फल क्या मिला? अनंत! दिन—रात पाप तो बनते ही हैं। कलियुगी जीव जो ठहरे। जान बूझ कर तो पाप नहीं ही करना चाहिये, परन्तु अनजान में भी तो अनेक पाप बन जाते हैं। रात दिन नाम रटते रहिये। अज्ञानजन्य पाप मिटते रहेंगे।

'आयासः स्मरणे कोऽस्ति समृतो यच्छति शोभनम्।
पाप क्षयश्च भवति स्मरतां तदहर्निशम्।।'

श्रीपुराण संग्रह में श्रीसूत जी ने श्रीशौनक जी से कहा है कि सभी मंत्रों में श्रीराम—नाम श्रेष्ठ हैं। श्रीभवानीवल्लभ के तो जीवन ही हैं। चित्त शुद्ध करनेवाले नाम जप ही है। सभी प्राणिमात्र के लिये सुलभ हैं। बिना मिहनत के ही सिद्धि लूटिये। अतः सभी साधनों को छोड़ छाड़कर प्रेम पूर्वक नाम जप में ही पिल पड़ना चाहिये।

सर्वेषां मन्त्र वर्गानां राम नाम परं स्मृतम्।
गोप्यं श्री पार्वतीशस्य जीवनं चित्त शोधकम्।।
सुलभं सर्व जीवानामनायासेन सिद्धिदम्।
सर्वोपायं विहायाशु जप्तव्यं प्रेमतत्परैः।।

और मंत्रों के जप के समय का प्रतिबन्ध है। यथा प्रातः सायं जपो, दोपहर दिन निशीथ काल में मत जपो। श्रीराम नाम जप में समय की छूट है, जब चाहो जपो। अन्य साधन में श्रद्धा विश्वास सद्भावना की अपेक्षा है। श्रीराम नाम का भ्रम से भी उच्चारण, सर्व दुःख नाश करने वाला है। ऐसा क्रियायोगसार नामक आर्ष ग्रन्थ में कहा गया है।

''स्मरणे रामनाम्नस्तु न कालनियमः स्मृतः।
भ्रमादुच्चार्यमाणोऽपि सर्वदुःखविनाशनः।।''

श्री हिरण्यगर्भ संहिता में श्रीअगस्त्यजी ने श्री सुतीक्ष्णजी से कहा है कि परम सुखदायक श्रीरामनाम को परवश होकर भी उच्चारण करने वाले समस्त पापों से रहित होकर, नित्य रामधाम श्री साकेत नगरी को जाते हैं।

''अभिरामेति यन्नाम कीर्त्तितं विवशाच्च यैः।
तेऽपि ध्वस्ताखिलाघौघा यान्ति रामास्पदं परम्।।''

विवशता पूर्वक किया गया नामोच्चारण, भगवद्धाम देने वाला है, इस पर एक सतगोष्ठी में सुनी गई आख्यायिका है। कहते हैं एक संत सेवी भगवद्भक्त क़ा एकलौता लड़का भगवत्—विमुखी था। भगतजी की साधुसेवा एवं भगवद्भजन से उसे बड़ी चिढ़ रहती थी। दरवाजे पर कोई साधु पहुँच जाय, तो वह द्वेषवश घर छोड़कर बाहर बाहर फिरा करे, घर में नहीं घुसे। श्रीरामनाम न तो वह स्वयं लेता था, न सुनना चाहता था। भगतजी के उसके परलोक बिगड़ने का बड़ा सोच था। कहा माने तब न? आये दिन भगतजी उस बच्चे के कल्याण के लिए समागत संतों से अनुनय विनय किया करते थे। भई, वह साधु सम्मुख हो तब न उसे समझा—बुझाकर, भजन में प्रवृत्त कराया जाय। उसे तो साधु के मुख देखने में भी परहेज था। एक बार एक हट्टे—कट्टे युवक नागा बाबा भगतजी के घर पहुँचे। भगत जी के बच्चे की भगवद्विमुखता पर कलपते हुए सुनकर, बाबा को तरस आ गई। बाबा महाराज ने भगतजी को आश्वासन दिया कि मैं उसके परलोक बनाने का ठेका लेता हूँ, भगत जी तुम चिन्ता मत करो। मुझे प्रसाद पवा कर, घर के एक कोने में छिपा दो, और बाहर इस बात की घोषणा कर देना कि बाबा तो खा पीकर, चले गये। ऐसा ही हुआ। बच्चे ने दूर से आहट ली। घर में किसी साधु द्वारा न तो कथा कीर्त्तन, न भगवत चर्चा हो रही थी। घर सूना सन्नाटा सा लग रहा था। पड़ोसियों से पूछताछ करने पर, मालूम हुआ कि इस समय घर में कोई साधु नहीं है। बच्चा घर में निर्भय हो घुसा। ज्यों ही बैठना चाहता था कि नागा ने घर के कोने से निकलकर, उसकी गट्टी पकड़ ली। वह कलाई छुड़ाकर, भागना चाहता था, परन्तु बाबा के जोर के सामने उसकी कुछ भी नहीं चली। बाबा ने कहा, कह बच्चे सीताराम। बच्चा का तो मुख कसकर बंद था। मानो मुख पर ताला पड़ा हो। बाबा पटककर, उसकी छाती पर चढ़ बैठे। नट्टी दबाते हुए बोले — कहो सीताराम नाम, नहीं तो अभी तेरा दम लेता हूँ। उसने दम घुटने की नौबत देखकर बड़ी जोर से चिल्लाया —बाप रे मैं

नहीं कहूँगा सीताराम। वस हो गया। बाबा ने उसे छोड़ दिया और सिखाया बेटा, जब मरने पर यमदूत पकड़कर, यमराज के पास ले जायँ तो तू पहले अपने विवशता से उच्चारित एक बार के सीताराम नाम कहने का पूरा—पूरा फल माँगना। यह बात याद रखना। जाओ तुम्हारा काम बन गया।

भगवत्‌विमुख जीवन में उसके अपराधों की गिनती नहीं रही। मरने पर यमदूत द्वारा, यमराज के पास उपस्थित कराया गया। धर्मराज ने उसके शुभाशुभ कर्मों का लेखा करके पूछा, तुम अपनी करनी पर, चिरकाल पर्यन्त भोगो जाकर। हाँ, एक बार विवशतापूर्वक रामनाम तुम्हारे सुकृत खाते में लिखा है। उसका फल चाहो तो पहले मिल सकता है। उस भगवत्—विमुखी भगत पुत्र को नागाबाबा की दम घुटाने वाली शिक्षा आजीवन याद थी। वहाँ भी याद आयी। उसने तनकर कहा धर्मराज मैं अपने नामोच्चारण का पूरा पूरा फल लूँगा। मैं आप से एक बार वैवश्य नामोच्चारण का फल अधिक नहीं माँगता, तो किंचित कम भी मुझे स्वीकार्य नहीं है। द्वादश महाभागवतों में प्रसिद्ध धर्मराज बड़े चक्कर में पड़े सोचा—

''राम नाम कर अमित प्रभावा। संत पुरान उपनिषद गावा।।''

नाम की मिति होती, तो उसके फल का आँकड़ा लगाया जाता। न्याय भी करना मेरे लिए विचित्र है। चलो, लोक पितामह ब्रह्माजी से पूछा जाय, एक नामोच्चारण का क्या फल? उस अभियोगी को साथ लेकर, श्रीब्रह्माजी के यहाँ धर्मराज पहुँचे। ब्रह्माजी बाबा ने सारा वृतान्त सुनकर कहा मैं भी संतोषप्रद निर्णय नहीं कर सकता। चलो, 'नाम प्रभाव जान सिव नीको' से पूछो। श्रीशिवजी ने कहा मैं इतना तो अवश्य जानता हूँ कि नाम का प्रभाव बहुत अधिक है। पर उस फल को तराजू के पलड़े पर तौल कर नहीं बता सकता। चलो नामी के पास जाकर पूछें। सब के सब अभियुक्त के साथ स्वयं श्रीसाकेताधीश्वर के पास पहुँचे। सारा वृत्तान्त सुनकर, प्रभु ने उस अभियुक्त को गोद में बैठा लिया और सबों को विदा करते हुए कहा। एक बार के वैवश्य नामोच्चारण का भी यही फल है कि वह मेरी गोद में लाडला बनकर अनंत काल तक मेरे धाम में परमानंद भोगता रहे। आप सब जायँ, यह यहीं रहेगा।

''बोलो श्री सीताराम नाम की जय! जोरो से गर्जन कीजिए न जय जय सीताराम!!

हमारी उपर्युक्त आख्यायिका से मिलती—जुलती एक आख्यायिका पाठक कल्याण के भवन्नाम महिमा विशेषांक के पृ. ४४९ में पढें और उसका चित्र ५२९ पृ. में देखें।

सुहृद पाठक! अपने हृदय पर हाथ रखकर, अपने ही जी से पूछिये। क्या ऐसा अन्य कोई साधन भी है, जो इस प्रकार विवशता से किंचिन्मात्र भी कराये जाने पर, पापियों को भी मुक्ति दे सके?

पुनर्जन्म दिलाने वाले स्वर्ग लोक प्राप्त कराने वाले साधनों की बात छोड़िये। जप — तप, यज्ञ दान, तीर्थ व्रत आदि कर्मकांड तो स्वर्ग ही देते हैं। हाँ, ज्ञान और योग को कैवल्य मोक्ष का साधन अवश्य माना जाता है, श्रीमानसजी के ज्ञान दीपक प्रसंग पढ़ने से पता लगता है कि ज्ञान की अन्तिम भूमिका पर पहुँचे हुए ज्ञानियों को भी विषय एवं ऋद्धि सिद्धि पतन करा देती है।

इसी से तो श्री काकर्षिजी ने कहा है—

> ''कहत कठिन समुझत कठिन, साधन कठिन विवेक।
> होइ घुनाक्षर न्याय जो पुनि प्रत्यूह अनेक।।''

योग द्वारा कैवल्य मोक्ष के द्वार तक पहुँचे हुये योगियों का भी पुनर्जन्म होना—

> ''शुचीनां श्रीमतां गेहे योगभ्रष्टोऽभिजायते।।'' गीता ६/४१

वाली श्री गीता वचन से स्पष्ट है। और अधिक किस साधन को श्रीरामनाम की तुलना में लाया जाय?

अभी श्रीनाम साधना की सुकरता के कुछ और आप्त प्रमाण देने रह गये हैं। त्रिकालदर्शी परमार्थ तत्त्व द्रष्टा महर्षियों की दिव्य प्रज्ञा द्वारा निर्णीत सिद्धान्त किसे नहीं मान्य होगा?

श्री वैश्वानर संहिता का कहना है कि और सत्कर्मो की भाँति श्रीरामनाम के उच्चारण के लिए उपयुक्त खास देश या विहित काल का प्रतिबन्ध नहीं है। चाहे जिस जगह, चाहे जिस समय, जी में आवे नामोच्चारण करते रहिए। शौचालय में बैठे—बैठे भी आप नाम जप सकते हैं। नाम जप के लिए स्नानादि द्वारा शुचि हो लेना आवश्यक नहीं। श्रीरामनाम पावनों को भी पावन बनाते हैं,अपावन को पवित्र करना कौन बड़ी बात है? ऐसी सुविधा यज्ञादि साधनों में कहाँ पाइयेगा?

> ''न देश काल नियमो न शौच निर्णयः।
> विद्यते कुत्रचिन्नैव राम नाम्नि परे शुचौ।।''
> ''भाव कुभाव अनख आलसहू। नाम जपत मंगल दिसि दसहूँ।।''
> तुलसी अपने राम को, रीझि भजो या खीझ।
> उलटो सीधो जामिहैं, खेत परे को बीज।।

श्रीलोमश संहिता में जगद्‌गुरु भगवान शंकरजी की उक्ति है कि एकमात्र रामनाम ही स्मरण करो, सदा सुना करो, पढ़ो, कीर्तन करो। रातदिन श्रद्धापूर्वक नामाभ्यास करते रहो। सदा इसकी विधि के द्वार खुले हैं। कभी निषेध नहीं। सब जगह, सब समय सभी मनुष्य जाति के द्वारा राम नाम जपा जा सकता है।

> ''स्मर्तव्यं रामनामैकं श्रोतव्यं चैव सर्वदा।
> पठितव्यं कीर्तितव्यं च श्रद्धायुक्तै र्दिवानिशम्।।
> विधिरूक्तं सदैवास्य न निषेधः क्वचिद्‌भवेत्।
> सर्वदेशे सर्व काले सर्वैश्व नरजातिभिः।।''

श्रीशुक संहिता में कहा गया हैं कि श्रीरामनाम के जपने वाले के समीप कृतार्थरूप सिद्ध महानुभाव स्वयं आकृष्ट होकर आते हैं। जापक के सभी पापों का उच्चाटन हो जाता है। अतः पाप भाग जाते हैं। चांडाल जाति के बेगूँगा मानव भी श्रीनाम जपने के अधिकारी हैं। मुक्ति जापक के वश में हो जाती है और मंत्रो की भाँति इसके अनुष्ठान में दीक्षा (संकल्प) नहीं लेनी पड़ती। न जपांत में दक्षिणा बाँटना आवश्यक है। हवन, तर्पण आदि पुरश्चरण विधि भी इसमें आवश्यक नहीं है। जीभ पर नाम का स्पर्श हुआ, अर्थात् जीभ से नामोच्चारण किया,

कि फल लगा। सद्य: अमोघ फल लीजिये नाम जप से।

''आकृष्ट: कृतचेतसां सुमहतामुच्चाटनं चांहसा—
माचाण्डालममूक लोक सुलभो वश्यं च मुक्तिस्त्रिय:।
नो दीक्षां न च दक्षिणां न च पुरश्चर्या मनागीक्षते
मन्त्रोऽयं रसनास्पृशेव फलति श्रीरामनामात्मक:।।''

हारीत स्मृति नामक धर्मशास्त्र निर्णय देते हैं कि श्रीराम नाम ''महामंत्र जोइ जपत महेसू'' है सही, परन्तु और मंत्र सिद्धि में पहले मंत्रानुष्ठान का संकल्प करना होता है। जपान्त में हवन तर्पण, मार्जन, विप्र भोजन आदि के द्वारा पुरश्चरण किया जाता है। अंग न्यास, कर न्यास आदि विधि भी जपारम्भ में आवश्यक मानी जाती है। तब जाकर मंत्र सिद्ध होता है। सब मंत्रों में शिरोमणि भूत श्रीरामनाम में ऐसा प्रतिबन्ध नहीं। यह विधिहीन जप भी सिद्ध हो जाता है।

''विनैव दीक्षां विपेन्द्र पुरश्चर्या विनैव हि।
विनैव न्यासविधिना जपमात्रेण सिद्धिद: ।।''

हमारे श्री बड़े महाराज ने श्री नाम साधना को ही सरल सुगम उपाय भक्ति मुक्ति पाने का बताया है। मूल वाणी पढ़िये—

''नाम की उपासना समान नहि आन है।
देश काल भाजन न दाम हूँ की चाह कछु,
सुचि न असुचिहू को रंचक प्रधान है।
बैठत उठत पुनि चलत असत मोद,
सोवत हूँ सतनाम जपे सुख खान है।।
संयम न एक टेक चाहिये विशेष उर,
फुरमत जानि मानि आपनोई प्रान है।
(श्री) युगल अनन्य अभिराम आठ याम प्रद,
नाम की उपासना समान नहि आन है।। ८९७।।

''ज्ञान अज्ञान को भेद नहीं, निज नाम उचारन चाहिये प्यारे।
जाने अजाने जो उत्तम औषध खात नसे तेहि रोग सवारे।।
जाने अजाने जो गंग नहावत तासु को पाप कटे मल भारे।
श्री युग्म अनन्य विचारिये ऐसेहि नाम रटे भवसागर पारे।।९०३।।

राम नाम मंत्र मौलि मधुर महान मन,
मोदक महाल माल मरम मुफीद है।
सहज सुभाय सुचि सुगम उपाय अघ,
अखिल अपाय कर कारन प्रसीद है।।

वेद भेद पावन न अगम अतीव पुनि,
धुनि ध्यान धारि जामे जोगी जन नींद है।
श्री युगल अनन्य प्रान प्रीतम हमेश एक,
रस अविकार नाम नवल नफीद है।।२५०९।।

नामाभास से मुक्ति

अजामिल ने अपने पुत्र का नाम नारायण उच्चारण किया था। उसे यह पता नहीं था कि यह भगवन्नाम भी है। फिर भी कृपालु भगवान ने उसे अपने नाम पुकारने का फल दिया। वाराहपुराण की आख्यायिका प्रसिद्ध है। एक यमन वनैया सूअर के धक्के खाकर मर रहा था। मरने के पहले कराहते हुए सुनकर लोग दौड़ पड़े। पूछे बड़े मियाँ क्या हुआ? उसने दम छोड़ते—छोड़ते कहता मरा कि 'हराम' मारा। प्रभु ने उसका अर्थ मान लिया कि वह मुझे पुकार रहा है। कहता है "हा राम मारा" चलो प्रभु की रीझ से वह मृतात्मा भगवद्धाम पहुँचा। ऐसी अनेक आख्यायिकाएँ पुराणों में पायी जाती है। " सी सी सिसकत नाम विचारो" एक ठंडी के मारे मरने वाला, मरने के पहले ठंड से सी सी करते हुए मरा। उसी सीत्कार में श्री सीतानाम का आभास पाकर, उसे मुक्ति मिली।

कोई ऐसा भी मंत्र है जो उल्टा जपने पर भी मुक्ति दे? मरा मरा कहने वाले व्याध वाल्मीकि ऋषि बनकर ब्रह्मा समान बन गये हैं। है ऐसी छूट किसी साधन में? सीताराम न कहकर, अशुद्ध अक्षर सीतरम कहने वाले भी तर जाते हैं।

श्री पद्मपुराण में श्री सनत्कुमार जी का वचन है कि—

"नामैकं यस्य वाचि स्मरणपथिगतं श्रोत्रमूलं गतं वा।
शुद्धं वाऽशुद्ध वर्ण व्यवहित रहितं तारयत्येव सत्यम्।।"

अर्थात् श्री रामनाम चाहे वचन से उच्चारण करे, स्मरण कर ले, कान से सुन भर ले। शुद्धाक्षर हो न हों अवश्य संसार से तार देंगे, इसमें कोई व्यवधान नहीं पड़ेगा। पाठक योग, ज्ञान, तीर्थ, व्रत आदि की ऐसी महिमा है कि एक ही बार के धोखे से किया गया कर्म भी संसार से मुक्त कर दे? हो तो हम भी नाम छोड़कर वही करें बताइये।

युगधर्म नाम जप

गुणग्राही, सारभागी सत्पुरुष कलियुग का इसलिये आदर करते हैं कि इस युग में एकमात्र नाम संकीर्तन से ही सभी प्रकार के स्वार्थ सिद्ध हो जाते हैं।

कलिं सभायन्यार्याः गुणज्ञाःसारभागिनः।
यत्र संकीर्तनेनैव सर्व स्वार्थोऽभिलभ्यते।।
(श्री भागवत)

श्री गरुड़पुराण में भगवान श्री विष्णुदेव स्वयं श्रीमुख से अपने परमप्रिय पार्षद श्री गरुड़ जी से कह रहे हैं कि कलिकाल में सभी पाप नामसंकीर्तन से ही नष्ट होते हैं, अतः श्री रामनाम का कीर्तन करते रहना चाहिए।

'कलौ संकीर्तनादेव सर्वपापं व्यपोहति।
तस्माच्छ्री रामनाम्नस्तु कार्यं संकीर्तनं वरम्।।'

ऐसे ही श्री ब्रह्मसंहिता में जगद्गुरु भगवानशंकर का वचन है कि कलियुगी जीवों का हृदय इतना पापग्रसित होता है कि श्री रामनाम के अतिरिक्त अन्य साधन करने का उन्हें अधिकार ही नहीं है। ऐसे पापीजीव परमसमर्थ अमोघफलदायक श्री रामनाम ही का सदा आदर पूर्वक स्मरण करता रहे, तो उसे अनायास मुक्ति मिल जायगी।

'रामेति वर्णद्वयमादरेण सदा स्मरन्मुक्तिमुपैतिजन्तुः।
कलौ युगे कल्मषमानसानामन्यत्र धर्मे खलु नाधिकारः।।'

श्री पतञ्जलिसंहिता का कथन है कि कलिकाल में श्री राघव जी के नामजप से ही नित्य साकेतधाम की अनायास और सुनिश्चित रूप से प्राप्ति हो जाती है। अतः सभी युगों से श्रेयस्कर कलि प्रशंसित होता है। इसी दृष्टि से कलि समस्त कल्याण का निवास है।

'कलौयुगे राघव नामतस्पदा परं पदं यात्पनयासतोध्रुवम्।
सर्वैर्युगैः पूजितमुन्नतंयुगं समस्तकल्याणनिकेतनं वरम्।।'

श्री शारदारामायण के मतानुसार श्रीरामनाम का समुज्ज्वल माहात्म्य तो चारो युगों से निस्संदेह सर्वश्रेष्ठ है, परन्तु कलिकाल में सब प्रकार से श्री रामनाम ही एकमात्र कल्याण का सावन है।

'चतुर्युगेषु श्री रामं नाममाहात्म्यमुज्ज्वलम्।
सर्वोत्कृष्टं न सन्देहो कलौ तत्रापि सर्वथा।।'

यही बात श्री मानसजी भी कहते हैं–

'चहुँ जुग चहुँ श्रुति नाम प्रभाऊ। कलि विशेष नहि आन उपाऊ।।'

कलिकाल में बड़भागी वही है जो श्री सीतारामनाम जप का अवलम्ब दृढ़तापूर्वक पकड़े हुए है। सतत नाम जपने वाले का इस लोक में भरण – पोषण सार सम्हार श्री नाम सरकार आदर्श माता – पिता के समान करते रहेंगे, उनके सभी मनोरथों को पूरा करते रहेंगे तथा परलोक में परम मित्र की भाँति सब प्रकार की सहायता करेंगे।

'रामनाम कलि अभिमत दाता। हित परलोक लोक पितु माता।''

''कलि नाम कामतरु रामको।
दलनिहार दारिद दुकाल दुख, दोष घोर घन घाम को।।
नाम लेत दाहिनो होत मन वाम विधाता वामको।
तुलसी जग जानियत नामते, सोच न कूच मुकामको।।'

अर्थात् यह कलिकाल ही विशेषता की है कि इस युग में श्रीरामनाम सरकार ने, जापको के सभी मनोरथ पूर्ण करने के लिए कल्पवृक्ष का स्वभाव अपना लिया है। कल्पवृक्ष का स्वभाव है—

'जाइ निकट पहिचानि तरु, छाँह समन सब सोच।
माँगे अभिमत पाव जग, राउ रंक भल पोच।।'

श्रीनाम कल्पवृक्ष की ओट लेते ही, उनकी छाया में आना माना जायगा। कल्पवृक्ष अपनी छाया में आने वाले के शोकसंताप सब हर लेते हैं। श्रीनाम कल्पवृक्ष अपनी छाया में आने वाले का अन्न वस्त्र के अभाव में होने वाले दरिद्रता रूपी कष्ट, अनावृष्टि के कारण होने वाले दुर्भिक्ष का कष्ट तथा संसार रूपी सूर्य से तपित जापकों के दैहिक, दैविक, भौतिक नामक तीनों तापों को तत्काल हर लेते हैं। साथ—साथ उसके पापों के कारण लगे हुए दोष कलंक को भी मिटा देते हैं।

'वाम विधि भालहूँ न कर्म दाग दागि है।।

किसी पापी के पापकर्मों से अप्रसन्न होकर, प्रतिकूल (वाम) होकर विधाता, उसके ललाट में दु:ख दुर्भाग्य लिखने जा रहे थे, उस पापी को देखा श्री रामनाम की ओट में, नाम जपते हुए। विधाता प्रसन्न होकर, उसके दाहिने हो गये। लिखने को दु:ख दुर्भाग्य, लिख दिया सुख सौभाग्य। अर्थात् प्राब्धकृत दु:ख भी पलट कर नाम प्रभाव से सुख बन जाता है। मुनीश श्री बाल्मीकि जी ने उलटे नाम जपने का प्रभाव दिखा दिया 'उलटा नाम जपत जग जाना। वाल्मीकि भए ब्रह्म समाना'।। देवाधिदेव भगवान शंकर जी ने सीधा नाम जपकर यह दिखा दिया कि श्री नाम कालकूट जहर को अमृत कैसे बना देते हैं। नाम जपकर अमर हो गये। नाम ही के प्रभाव से चिताभस्म मुंडमाल आदि अमंगल साज के बावजूद भी आप सभी के मंगलकर्ता बने हुये हैं।

'नाम प्रसाद संभु अबिनासी। साज अमंगल मंगल रासी।।'

अजी, जिस नामजापक को नाम जपका सहारा मिल गया उसकी मृत्यु अभी—अभी हो जाय, संसार से उसके कूच का नगाड़ा बज जाय, अथवा वह दीर्घजीवी बनकर संसार में बना रहे, दोनों हाथों में उसके लड्डू हैं। श्री नाम सरकार उसे ऐसे परमानंद में मग्न कर देते हैं कि उसके लिये जीवन—मृत्यु दोनों समान बन जाते हैं। अत: नाम रूपी—सुन्दर रत्न तो लोक परलोक दोनों को सुखमय बना देने की क्षमता रखते हैं। वह बड़ा भारी अभागा है जो ऐसे सुखदायक श्री रघुनायक नाम से विमुख है।
पुन: श्री विनयपत्रिका के निम्नोद्धृत पद सं० १८४ भी विचारणीय है।

'राम नाम के जपे जाइ जिय की जरनि।
कलिकाल अपर उपाय ते अपाय भये,
जैसे तम नासिबेको चित्र के तरनि।।
करम कलाप परिताप पाप साने सब,
ज्यों सुफूल फूले तरु फोकट फरनि।
दंभ, लोभ, लालच, उपासना बिनासि नीके,
सुगति साधन भई उदर भरनि।।
जोग न समाधि निरुपाधि न विरागग्यान,
वचन विशेष वेष, कहूँ न करनि।
कपट कुपथ कोटि, कहनि रहनि खोटि,
सकल सराहैं निज निज आचरनि।।
मरत महेस उपदेस है कहा करत,
सुरसरि तीर कासी धरम धरनि।
राम नाम को प्रताप हर कहैं जपै आप,
जुग जुग जानैं जग बेदहूँ बरनि।।
मति राम नाम ही से, रति राम नाम ही से,
गति राम नाम ही की विपति हरनि।
राम नाम से प्रतीति प्रीति राखे कबहुँक,
तुलसी ढरैंगे राम आपनी ढरनि।।

अर्थात् मनुष्यों का ह्रदय दैहिक, दैविक और भौतिक तीनों तापों से सदैव जलता रहता है, उसे शीतल करने का एक मात्र उपाय है नाम जप। बात यह है कि श्री रघुवरजू के रामनाम, कृशानु (आग), भानु (सूर्य) और हिमकर (चन्द्रमा) के भी उत्पन्न कर्त्ता हैं। अत: अनन्त चन्द्र के समान ताप जुड़ाने की शक्ति इनमें है। श्री महारामायण में भी कहा गया है कि श्रीरामनाम के अन्त्याक्षर मकार चन्द्रमा के बीज हैं। इनमें अमृत भरा है, जिससे जापकों को अपरिमित स्वाद मिलता है। पुन: प्रकार के चन्द्रबीज तीनों को शमन कर ह्रदय को जुड़ा देते हैं।

'मकारश्चन्द्रबीजं च पीयूष परिपूर्णकम्।
त्रितापंहरते नित्यं शीतलत्वं करोति च।।''

अत: हम जब तक सीताराम नाम नहीं जपेंगे, चाहे कर्म, ज्ञान, वैराग्य, योग, आदि किसी भी अन्य साधन के आश्रय में जायँ, हमारे तीनों ताप शान्त होने को नहीं।

'राम राम राम जीह जौलौ तू न जपि है,
तौलो तू कहीं ही जाय तिहूँ ताप तपि है।'' श्री विनय६८

यदि कहो कि परमार्थ साधन के लिए तो कर्म, उपासना, ज्ञान, योगादि और भी अन्यान्य साधन

हैं, तब केवल सीताराम नाम जपने ही का आग्रह क्यों किया जाता है? तो इसका उत्तर यह है कि उन सभी साधनों को कलि ने पंगु बना रखा है। कलिमल ग्रसित चंचल, विषय लोलुप चित्त से उपर्युक्त साधन सफल होने को नहीं। अत: कलिप्रभाव से सभी साधनान्तर पंगु हो गये हैं। छपी पुस्तकों में जो इनके प्रभाव बताये गये हैं वे मानों चित्रांकित सूर्य हैं। उनसे प्रकाश होना संभव नहीं, न अंधकार का निराश। अब एक—एक कर सभी साधनान्तरों में त्रुटि बताते हैं।

कर्मकांड को ही ले लीजिये। ये सेमरवृक्ष के तुल्य हैं। इनके शास्त्रोक्त लाभ को फूल समझिये। करने पर जो फल होते हैं वह निस्सार अर्थात् व्यर्थ। केवल परिश्रम ही परिश्रम,फल कुछ नहीं।

'यह कलिकाल सकल साधन तरु है श्रम फलनि फरो सो।
पाएहि पै जानिबो करम फल भरि भरि वेद परोसो।।१७३।।

'यामिमां पुष्पितां वाचं प्रवदन्त्यविपश्चितः।
वेदवादरताः पार्थ नान्यदस्तीति वादिनः।।
कामात्मनः स्वर्गपरा जन्मकर्मफलप्रदाम्।
क्रिया— विशेष— बहुलां भोगैश्वर्य—गतिं प्रति।। (श्रीगीता २/४२/४३)

अर्थात् जो सकामी पुरूष केवल फलश्रुति में प्रीति रखने वाले हैं, स्वर्ग को ही परमश्रेष्ठ मानने वाले हैं, स्वर्ग से बढ़कर कुछ नहीं है, ऐसा कहने वाले हैं, वे अविवेकी जन जन्मरूपी कर्मफल को देने वाली और भोग तथा ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए बहुत सी क्रियाओं के विस्तार वाली, इस प्रकार दिखाऊ शोभायुक्त (पुष्पवत्) वाणी कहते हैं।

रही उपासना की बात। सो दंभ ने उपासना को निष्फल बना दिया। भजन तो करते नहीं किन्तु भजनानन्दी कहाने का अनेक स्वांग सजा लेते हैं। यही है हमारा दंभ। स्वांग न सजें, तो पैसे कैसे पुजावेंगे? पेटपूजा कैसे होगी? जगदगुरु भगवान् शंकरजी के वचन मानकर यदि आज हम दिखावटी उपासना न करके, केवल जीभ से ही नाम रटते होते, तो दंभ पूर्वक नाम जप भी हमारे शोक—समुद्र को तो सुखा ही डालते।

''संभु सिखवन रसनहूँ नित राम नामहि घोसु।
दंभहु कलि नाम—कुंभज सोच सागर सोसु।।''(श्री विनय १५९)

उपासना तो अपने इष्ट के परम धाम प्राप्ति के लिए की जाती है, किन्तु आज हम ऐसे चटोरे भोजनभट्ट बन गये हैं कि पेट भरने के निमित्त ही साधु वेष बनाकर ज्ञान वैराग्य की कथनी सीखकर, कथावाचक बनकर धनार्जन करने के चक्कर में पड़े हैं। गोस्वामी पाद ने अपने ऊपर आरोपण कर, हमारा ही भंडा तो फोड़ा है।

''भगति विराग ज्ञान साधन कहि बहुविधि डँहकत लोग फिरौं।
शिव— सरबस सुखधाम नाम तब बेचि नरकप्रद उदर भरौं।।
भगति ज्ञान वैराग्य सकल साधन एहि लागि उपाई।
केउ भल कहउ देउ कछु कोऊ असि वासना न उरते जाई।।''

मान बड़ाई, पूजा प्रतिष्ठा ही हम प्राप्त करना चाहते हैं, भगवत् प्रेम, भगवत्प्राप्ति से तो कोई मतलब ही नहीं है। पेट भर गया, साधु कहा लिया। हो गई देवदुर्लभ मानव शरीर पाने की सार्थकता। यदि भाग्यवश किन्हीं विशुद्ध संत महानुभाव के संग से भक्ति मार्ग पर चलने भी लगा तो साधन कोटिकी नवधाभक्ति से चलकर प्रेमापरा और प्रौढ़ा तक की पहुँच होने में अनेक दुर्गम घाटियों के पार उतरना बड़ा कठिन है। इसी से तो श्री गोस्वामीपाद ने कहा है कि–

''रघुपति भगति करत कठिनाई।
कहत सुगम करनी अपार, जानत सोइ जेहि बनि आई।''

कलियुग भक्ति मार्ग में भी बाधक बन जाता है। किन्तु भक्ति तो हमारा गन्तव्य लक्ष्य है ही। वहाँ पहुँचने के लिए भी हमें श्री सीताराम नाम जप का ही सहारा लेना पड़ेगा। क्योंकि?

''भक्ति–वैराग्य–विज्ञान शम दान दम
नाम आधीन साधन, अनेकं।। श्री विनय ४६।।

श्री लघु भागवत नामक सद्ग्रन्थ में भी कहा गया है कि स्वरूप, परमस्वरूप का जानना, विषय से मन का उपराम हो जाना, तथा परात्परतम प्रभु श्री जानकी रमण के पादाविन्द में प्रेमा, परा एवं प्रौढ़ा–भक्ति इन सबकी प्राप्ति परमानन्ददायक श्री सीताराम नाम संकीर्तन से सुगमता पूर्वकं हो जाती है।

''ज्ञानं वैराग्यमेवाथ तथा प्रीतिः परात्मनि।
संलभेन्नाम संकीर्त्य ह्यभिरामाख्यमद्भुतम्।।''

भक्ति की सर्व्वोच्य दशा है प्रेम वैचित्री। वह श्री नाम जप से भिन्न साधनों से संभव नहीं। नाम रटने से वह भी शीघ्र ही प्राप्त हो जाती है। इसमें कोई संशय नहीं।

''प्रेम वैचित्र्यता प्रोक्ता दुर्लभा साधनान्तरैः।
तां लभेद्रामनाम्नस्तु जपाच्छीघ्रंन संशयः।'' श्री प्रेमार्णव नाटके ।।

कलिकाल में योग, वैराग्य तथा ज्ञान आदि साधनों पर विचारना है। इस युग में अष्टांग योग साधना करो, परन्तु समाधि सिद्धि होगी नहीं। कारण कि काम क्रोध लोभ मोह आदि मान–सरोग इस युग में बड़े असाध्य रूप से लोगों को ग्रसे रहते हैं।

''एक व्याधि वस नर मरहि, ये असाधि बहु व्याधि।
पीड़हि संतत जीव वहँ, ते किमि लहहि समाधि।।'' श्री मानस
'जप तप संयम योग समाधी कलिमति विकल न कछु निरुपाधी' (श्री विनय)

यही बात ज्ञान वैराग्य की भी है।

काम, क्रोध, मद, लोभ मोह मिलि ग्यान विराग हरो सो।
विगरत मन संन्यास लेत जल नावत आम घरों सो।। (श्री विनय १७३।४)

ज्ञानी, योगी, वैरागी आदि साधक अपने–अपने सम्प्रदाय के अनुसार ऊपर से संत–वेष बनाये हुए हैं, कुछ अपने–अपने मत की कथनी भी सीख ली है। करणी ढूँढ़िये, मिलना कठिन है।

ऐसे मतानुयायियों का परमार्थ कैसे बनेगा? अत: इन सभी साधनों से निराश होकर, श्री सीताराम नाम का कसकर अवलंब पकड़ना चाहिए। आप पूछ सकते हैं कि यदि नाम जापक भी विषय भोगी हुआ, ज्ञान, वैराग्य ब्रह्मचर्यादि सहायक साधन से विरहित हुआ, तो क्या उसकी सद्‌गति हो जायेगी? क्या वह श्री जानकी वल्लभ जू की धामप्राप्ति कर लेगा? उत्तर है कि यदि वह एक मात्र श्री नाम अवलंबन पर ही निर्भर है और नाम रटता रहता है तो उसे इन संयम हीनता के रहते हुए भी इष्ट धाम की प्राप्ति हो जायेगी और अवश्य होगी। प्रमाण श्री पद्‌मपुराण का है, देवर्षि श्री नारद जी परम भागवत राजा अम्बरीष के प्रति कहते हैं—

''अनन्य तयो मर्त्या भोगिनोऽपि परंतपा:।
ज्ञान—वैराग्य रहिता ब्रह्मचर्यादि वर्जिता:।।
सर्वोपाय विनिर्मुक्ता नाम मात्रैय जल्पका:।
जानकी वल्लभस्यापि धाम्नि गच्छन्ति सादरम्।।''

इस युग में असंख्य कपटपूर्ण कुत्सित मत मतान्तर चल पड़े हैं। आज श्री गोस्वामी जी की मानसवाणी सत्य—सत्य चरितार्थ हो रही है—

''श्रुति संमत हरि भगति पथ, संयुत विरति विवेक।
ते न चलहि नर मोह बस, कल्पहि पंथ अनेक।।

इन विविध पंथाइयों की रहनी देख आइये। घृणा होगी इनके प्रति। वचन भी विकारों से भरे ही बोलेंगे। इतने पर भी तुर्रा यह कि अपने—अपने मत की प्रशंसा में बड़ी—बड़ी डींगें हाँका करेंगे।

मरत महेस उपदेश है कहा करत............... जगदुरू शंकर जी सभी परमार्थ साधनों का मूल्यांकन अन्य परमार्थ वेत्तओं की अपेक्षा अधिक विश्वसनीय रूप से करेंगे। विचारना यह है कि अपने परमप्रिय काशी वासी प्राणियों की सद्‌गति के लिए आप क्या उपाय करते हैं?

सब प्राणियों को मुक्त करना आप का अभीष्ट है। तो क्या मुक्ति की जन्मभूमि, धर्म की नगरी श्री काशी स्वयं अपने वासियों को अपनी शक्ति से ही मुक्त न कर सकेगी? अच्छा, यदि ये स्वयं स्वतंत्र रूप से इस कार्य में असमर्थ हैं, तो श्री गंगा जी तो मुक्त कर ही देंगी। जगदुरू को इन दोनों में से किसी पर भी भरोसा नहीं हैं मरण काल में स्वयं साक्षात्‌दर्शन देकर आप भी मुक्त नहीं कर सकते। तब तो मरणशील प्राणियों के कान में रामनाम सुनाने के लिए आप श्री काशी नगरी की गली—गली में दिन रात विचरते रहते हैं। भगवान शंकर जी अपने अमृत उपदेशों में सद्‌ग्रन्थों में श्री रामनाम ही जपना कल्याण का अमोघ उपाय बताते हैं और स्वयं भी ''तुम पुनि रामराम दिन राती। सादर जपहु अनंग अराती।।''

वेदों के उपवृहण रूप पुराण संहिताओं में सर्वत्र श्री राम नाम का प्रभाव गाया गया है। श्री रामनाम की महिमा सभी युगों में उजागर चली आई है।

अत: सिद्धांत यही निश्चित हुआ है। कि अपनी बुद्धि को श्रीराम नाम में लगाकर रामनाम में दृढ़ विश्वास जमा लें, श्रीराम नाम ही से अनुराग बढ़ावें, श्री नाम का दृढ़ भरोसा रखें। श्री राम नाम ही विपत्ति हटाने वाले हैं।

''छुटैं न विपति भजे विनु रघुपति श्रुति सिद्धांत निवेरो।। श्री विनय ८७।४

आवश्यकता है कि हम श्री रामनाम में दृढ़ विश्वास रखते हुए, प्रेमपूर्वक श्रीनामाम्यास करते रहें। हमारे पूर्वकृत पाप संस्कार प्रभुकृपा प्राप्ति में विलंब लगा सकते हैं। परन्तु हमें घबड़ाकर नामावलंब छोड़ना नहीं चाहिए। एक न एक दिन श्रीनामी श्री रघुनन्दन अपनी दया परवश होकर, हम पर भी अवश्य ढल जायेंगे। वश, हम क्षणमात्र में निहाल हो जायेंगे।

परमार्थ पथ का नवीन जिज्ञासु बड़े चक्कर में पड़ जाता है। यदि कोई उपदेशक कहता है बिना वैराग्य, ज्ञानी को बह्म की प्राप्ति नहीं होगी। कोई निष्काम तथा अनासक्त होकर, त्रिविध कर्म करने का उपदेश देते हैं। कोई बताते हैं कि साधन के लिए स्वस्थ शरीर अपेक्षित है और रोग निवारण पूर्वक पूर्ण स्वस्थ होने के लिए योग आसन एवं योग क्रियाएँ ही उपयुक्त उपाय हैं। कोई वेद वेदान्त अध्ययन करने का परामर्श देते हैं। इस प्रकार बहुत भाँति के उपदेश होते रहते हैं। परन्तु है यह कलिकाल। इस युग में अन्यान्य उपाय से हृदय में शान्ति कतई नहीं होने को। बड़े महाराज का आदेश है कि जीभ से श्रीसीताराम नाम रटो भजन की कांति निखर आवेगी।

''काहू को संमत ज्ञान विराग अदाग—अराग क्रिया तिहु भाँती।
मानत योग सुरोग निवारक कोउ कहे पढ़िये श्रुति पाँती।
ऐसे ही नाना विधान वखानत पै कलिकाल किये नहि शांती।
युग्म अनन्य सियावर नाम रटे रसना चमके कल कांती।।१४७

श्री व्यासजी, श्री वाल्मीकिजी, श्री अगस्त्य जी, श्री शेष जी, श्री शनकादिक, श्री उमापति शंकर जी, इन सबों ने श्रीरामनाम ही के प्रभाव से, कालबाधा में रहित श्री राम प्रेम धाम प्राप्त किया है। ये सभी प्रवीण नाम जापक रहे हैं। श्री नाम ही सुधा को पान करने योग्य, श्रीनाम ही को ध्यान करने योग्य समझकर नाम साधना की है। वह श्री नाम सदैव गुप्त रहे हैं। कलिकाल में कृपालु संतों ने इन्हें अपने अनुभव से प्रगटकर लिया है। अत: इस युग में अन्य साधन को घातक मानकर, श्रद्धा प्रेमपूर्वक अखण्ड नाम जप करना चाहिए।

''व्यास, वाल्मीकि, कल कलस—सुवन, शेष
शनक, उमेश राम नाम के प्रभावते।
पायो काल व्याल से विहीन पीन प्रेमपद
परम प्रवीन पेय ध्येय दिव्य भावते।।
सोई सतनाम कलिकाल में सुसंत सब,
गोप गुह्य प्रगट बतायो अनुभाव ते।
(श्री) युगल अनन्य बात दूसरी समान घात
मानिये अखंड नाम जापिये सुभाव ते ।।२२९।।

वैश्वानर संहिता में कहा गया है कि हे महाभाग! कलियुग के समान दूसरा कोई भी नहीं है। इस युग में श्री रामनाम के स्मरण, कीर्तन मात्र से परमपद मिल जाता है।

''नास्ति नास्ति महाभाग कलेर्युगसमं युगम्।
स्मरणात् कीर्त्तनाद्यत्र लभते परमं पदम्।।''
''घोरे कलियुगे प्राप्ते सर्व दोषैक भाजने।
रामनामरता जीवास्ते कृतार्था: सुजीविन:।।
रामनामपरा ये च घोरे कलियुगे द्विजा:।
ते एव कृतकृत्याश्च न कलिर्बाधते हि तान्।।''

''वेद पुरान विहाइ सुपंथु कुमारग, कोटि कुचालि चली है।
कालु कराल, नृपाल कृपाल न, राजसमाजु, बड़ोई छली है।।
बर्न विभाग न आश्रम धर्म, दुनी दुख—दोष—दरिद्र दली है।
स्वारथ को परमारथ को कलि, राम को नाम प्रतापु वली है।।८५
दमु दुर्गम, दान, दया, मख, कर्म, सुधर्म अधीन सबै धन को।
तप तीरथ साधन, जोग विराग सोहोई, नहीं दृढ़ता मन को ।।
कलिकाल कराल में रामकृपालु यहै अवलंबु बड़ो मन को ।
'तुलसी सब संजमहीन सबै,एक नाम अधारु सदा जन को ।।

श्री कबीर जी महाराज कल्याण का साधन एकमात्र श्रीरामनाम ही को बताते हैं—

'कबिरा कहता जात है, सुनता है सब कोय।
राम कहे भल होइगा,नहितर भला ना होय।।'

राजकुमार श्री रघुवर दास जी, अमरावाला वगसरा कहते हैं :—

श्रुति भी ''यस्यनाम महद्यश: अर्थात् जिन प्रभु से बढ़कर उनके नाम का सुयश अधिक महान है, कहकर प्रशंसा करती हैं ऐसे भगवन्नाम का प्रभाव चारों युगों में फैला हुआ हैं परन्तु कलिकाल में तो साक्षात् भगवत्प्राप्ति करने के लिए यही सबसे बलवान्,शीघ्र अभीष्ट सिद्धिप्रद सर्वोत्कृष्ट और अत्यन्त सुलभ साधन है। यही सर्व शास्त्रों का तथा संतों का अनुभवपूर्ण सिद्धान्त हैं।

''चहुँ युग चहूँ श्रुति नाम प्रभाऊ। कलि विशेष नहि आन उपाऊ।।''
यह कलिकाल मलायतन, मन करि देखु बिचार।
श्री रघुनायक नाम तजि, नाहिन आन अधार।।''

विद्या—व्यसन छोड़ कर नाम जपिये

कहते हैं श्री गोस्वामीपाद अपने महाप्रस्थान के पहले यही अंतिम उपदेश दे गये हैं कि—

''अलप तो अवधि जीव तामें बहु सोच पोच
करिबे को बहुत पै कहा कहा कीजिए।

पार न पुरानहूँको वेदहूँ को अंत नाहिं
वानी तो अनेक चित्त कहा कहा दीजिये।
काव्य की कला अनंत छंद को प्रबन्ध बहु
राग तो रसीली रस कहा कहा पीजिये।
सब बातन की एक बात तुलसी बताये जात
जन्म जो सुधारा चाहो रामनाम लीजिये।।''

और भी कहा गया है कि–

''अनेक शास्त्रं वहुलाश्च विधा स्वल्पश्च कालो बहु बोधितव्यम्।
यत्सारभूतं तदुपासनीयं हंसों यथा क्षीरमिवाम्बु मध्यात्।।

अर्थात् शास्त्र अनेक हैं, विद्या बहुत हैं। कलियुगी आयु स्वल्पकालीन हैं।पढ़ने जानने की बात इतनी अधिक कि जीवनपर्यन्त सधनेवाली नहीं। तो क्या इसी में जीवन खपा देने से मुक्ति मिल जायगी? कदापि नहीं। शास्त्र कथित सार – वस्तु, तो श्रीरामनाम है। इसी को ग्रहण कीजिये। हंस से सीखिये नीर छोड़ क्षीर ग्रहण करना। विद्या समुद्र को मथ कर सार रामनाम अमृत निकाला गया है – श्री मानसमंगलाचरण

''ब्रह्माम्मोधि–समुद्मवं ...... श्रीराम नामामृतम्।।''

अर्थात वेद सिन्धु मथकर काढ़ा गया है श्रीरामनामामृत।

''पढ़व लिखव पंडित को काम। भजलो भैया सीताराम।।''

पंडित बनकर जीविका चलावो, पाँव पुजावो। मुक्ति के लिये तो रामनाम ही पर लौटकर आना पड़ेगा।

भलो जो है पोच जो है दाहिनो जो बाम रे।
रामनाम ही सो अंत सबही को कामरे।।श्री विनय०।।

वंधन–प्रद बहु पढ़ना लिखना संत विशुद्व पुकारत है।
अंत समय कछु काम न आवत संक पंक में डारत हैं।
सोई पंडित सोइ चतुर धर्मरत सोइ निज पर कहँ तारत हैं।।५।।
जो'सियलाल शरन' होइ निसिदिन श्री सियराम उचारत हैं।
अग्यानी सियराम नाम तजि पोथिन में सिर मारत हैं।
बिना विचारे सुर दुर्लभ तनु पाइ भजन बिनु हारत हैं।।
पढ़ि पढ़ि पोथी झगरा ठानत बातन में वय गारत हैं।।।६।।
'प्रेमलता' गहि कांच किरच सठ नाम सुमनि महि डारत हैं
नाम रटत अनयास सुविद्या आपै हृदय प्रकासत हैं।
परम आचरज जन्य पदारथ गुप्त प्रगट सब भासत हैं।।

मोह—जाल भाववंध अविद्या जरामूल से नासत हैं।
'प्रेमलता' लहि नाम सरन जिउ फिरि तापत्रय त्रासत हैं॥ ९॥
चारिउ वेद पूरान छतीसो सास्त्र संहिता बहुतेरे।
नाटक यामल रहस भागवत काव्य कोष जहँ लगि जेरे॥
रामायन सत कोटि आदि सिय रामनाम के लखि चेरे।
रटत सदा सियलाल शरन सोइ आवत उर फुर बिनु टेरे॥ १०॥
महामूढ़ जो परिहरि नाम सु तिन्ह के लागि यतन करते ।
मूल त्यागि सींचत सठ पातनि अग्य मोहवश हठ धरते॥
नाशवान तिहुँ काल आप जो अभिमत फल केहिं बिधि फरते ।
'प्रेमलता' अस जानि तर्क तजि रटहि नाम ते भव तरते॥ ११॥
पढ़ते हौ का पोथी थोथी पंडित कलि रजधानी में।
रटै नाम सियराम कामप्रद सार न कथा कहानी में।
आनहि सुन्दर ग्यान सिखावत आप बूड़ते पानी में।
'प्रेमलता' पाछै पछितैहौ भजे बिना प्रभु ज्वानी में॥ ७५॥श्री हितोपदेश शतक

पढ़ना—लिखना तभी तक रुचता है जब तक कि नाम का सुखस्वाद जापक के लिए नाम जपते जपते प्रगट नहीं होता है। अनेक प्रकार की विद्या वाणी में उन्हें विकार विबाद और वासना ही दीखती है। नाम के द्वारा निष्कलंक अनुराग में मन रीझ जाता है।

''कौन पढ़े अब वेद पुरान कुरान किताब अनेक कहानी।
चित्त में छायो छबीलो सुनाम हमेश रसीलो रँगीलो गुमानी॥
होइहौ मस्त अवस्त अभय अनुराग अदागहिसे मनमानी।
(श्री) युग्म अनन्य विकार विवाद भरी लखिये सब वासना वानी॥ २६३॥

नाम रटते—रटते वेद वाणी का ज्ञान स्वयमेव जापक के मस्तिष्क में प्रगट हो जाते हैं। फिर उन्हें सांगोपांग वेदाध्ययन की कतई आवश्यकता नहीं रहती। श्रीनाम से ही तो चारों वेदादि प्रगट हुए हैं। जड़ ही क्यों न सीचें कि पत्ते—पत्ते की सिंचाई में व्यर्थ लगे रहें?

रट्यो जब नाम तब पढ़यो चारो वेद को।
वाकी नहिं बच्यो कोउ अंग उपअंग पुनि
नाहक विचार बिन सहे कौन खेद को।
भूल ही के सीचे भूमिरुह हरियात सब
लोक वेद विदित न यामें लेस भेद को॥
चिंतामनि पाय पर, चाह चित्त फेरि कौन
देखिये उघारि नैन धारि निर्वेद को।

श्रीयुगल अनन्य दृढ़ कीजिए प्रतीति पटु
रट्यो जौन नाम तौन पढ़यो चारो चारो वेद को।। ८८६।।

''जानकी नाथ निगाह भये बिन होत कहा पढ़ि के बहु पोथी।
नाम अनाम जपे जिय जौक,सनेह विहीन लखे सब थोथी।।
वाद विवाद बढ़ाय जहाँ जहाँ आपने आपने ही दिशि चोथी।
युग्म अनन्य सुधा सुचि स्वच्छ विहाय के मुरूष खात हैं मोथी।।१२१७।।

(श्रीसीताराम नाम सनेह वाटिकासे)

श्रीरामनाम रहस्य के परम मर्मज्ञ श्री बड़े महाराज की निम्नोद्धृत वाणी को नाम–साधक गाँठ वाँधकर रखें–

''चारि वेद अंग औ उपांग के समेत
विधि सहित अनेक कोटि वार करे पाठ को।
तैसे ही पुरान संहिता पुनीत सुस्मृति
सहस करोर वेर कहे जीति आठ को।
नेम धर्म धारना समाधि कई जन्म लगि
करे जेते साधन उपायन के ठाठ को।
श्री युगल अनन्य तऊ एक बार रामनाम
सम होत नही देवतरुवर काठ को।।११२२।।''

भक्त गाथाओं में प्रसिद्व है कि श्री चैतन्य महाप्रभु, श्रीमाधवदास जी जगन्नाथी, श्री जीव गोस्वामी जी,श्री कबीदासजी, श्रीदेवस्वामी आदि भजनभटों के आगे दिग्विजयी पंडित गणों की अपनी–अपनी पठित विद्या निष्प्रयोजन प्रतीत हुई थी। अत: राम–नाम रट बिना केवल वेद शास्त्र में पठित विद्या तो आपको संसार से तारेगी नहीं। श्रीरामनाम जप सभी साधनों के प्राण–भूत है। प्राणहीन शरीर को शृंगार करके क्या होगा? नाम जपे बिना जाति अभिमान, शास्त्रज्ञान, जप,तप का बल आदि प्राणहीन शरीर है। श्रीभुसुंडि रामायण में कहा गया है–

''वेद शास्त्रं शतं वापि तारयन्ति न तं नरम्।
यस्तु स्वमनसा वाचा न करोति जपं परम्।।
राम नाम विहीनस्य जातिस्शास्त्रं जपस्तप:।
अप्राणस्यैव देहस्य पण्डनं तु बृथा यथा।।

श्री अध्यात्म रामायण में कहा गया है कि जिसने वेदशास्त्रों का अध्ययन नहीं किया, यज्ञादिक कर्म नहीं किये, यदि श्रीसीताराम सीताराम निरन्तर रटते रहते हैं, तो समझ लीजिए, उसने सभी वेदोदित कर्त्तव्य कर लिये।

'नाधीत वेद शास्त्रोऽपि न कृताध्वर कर्मक:।
यो नाम वदते नित्यं तेन सर्वें कृतं भवेत्।।

इसी प्रकार श्रीमन्त्र प्रकाश नामक आगम ग्रन्थ में कहा गया है कि—श्री ऋग्वेद, श्रीयजुर्वेद, श्रीसामवेद तथा श्री अथर्ववेद का उसने सांग अध्ययन कर लिया, जो निंरतर रामनाम रटते रहते हैं।

''ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदस्सामवेदस्त्वथर्वण:।
अधीतास्तेन येनोक्तं श्री रामेत्यक्षर द्वयम्।।''

इसका कारण यह है कि श्रीरामनाम के रकार में सभी वेद उसी प्रकार निहित हैं जैसे बटबीज में वटका विशाल वृक्ष शाखा पल्लव सहित छिपा स्थित रहता है। ऐसा पुलह संहिता कहती है।

''बीजे यथा स्थितावृक्ष: शाखा पल्लव संयुत:।
तथैव सर्ववेदाश्च रकारेषु व्यवस्थिता:।।''

श्री आदि पुराण में भगवान् श्रीकृष्ण श्री अर्जुन जी से कहते हैं—श्रीरामनाम ही सभी शास्त्रों के उत्तम तात्पर्यार्थ हैं। श्रीरामनाम ही वेद के मंगलमय सारसिद्धान्त हैं।

''नामैव चाङ्ग शास्त्राणां तात्पर्यार्थमुत्तमम्।
नामैव वेदसारांशं सिद्धान्तं सर्वदा शिवम्।।''

श्रीलघुभागवत में कहा गया है कि वेद शास्त्र के विस्तार में अवगाहन करने से क्या लाभ? तीर्थादिक कर्मों से मुमुक्षुओं का क्या प्रयोजन? यदि अपने लिए मुक्ति की अभिलाषा हो तो श्रीरामनाम का निरन्तर रटन करना चाहिए।

''किं तात वेदागम शास्त्र विस्तरैस्तीर्थादिकैरन्यकृतै: प्रयोजनम्।
यद्यात्मनों वाञ्छसि मुक्तिकारणं श्रीराम रामेति निरन्तरं रट।।

श्रीपद्मपुराण में कहा गया है कि वेद के सभी मंत्र का बार—बार जप करले, तो उससे कोटि गुणा फल एक बार श्रीरामनाम उच्चारण से ही मिल जायेगा।

''जपत: सर्ववेदाश्च सर्वमन्त्राश्च पार्वति।
तस्मात्कोटिगुणं पुण्यं रामनामैव लभ्यते।।''

नाम जप त्यागि पाठ पढ़े सो अधम है।

तौन सठ सुधा सुचि सरस सुपान तजि
हालाहल हेतु रचे यतन कुसम है।
पाय मनि मानिक अमोल लाल फेरि जड़
पाथर बटोरे वौरे मोद दम—दम है।।
महाराज संग नवरंग अंग पीठि देय
सेवे सो दरिद्र दुखी दूनो ताहि गम है।
श्री युगल अनन्य अवलोकिये नजर नेक
नाम—जप त्यागी पाठ पढ़े सो अधम है।।२०५१।।

''पढ़व लिखव तब लौं भलो, जब लगि मिले न नाम।
तुलसी ज्यौं रवि के उये,कहा दीप को काम।।''

ज्ञानार्जन छोड़ नाम जपिये

यदि आपको ज्ञानार्जन का ही शौक है तो श्रीसीताराम नाम के अभ्यास से वह भी हो जायेगा और होगा उपनिषद ज्ञान एवं योगज ज्ञान से भी बढ़कर दिव्य विमल विवेकज ज्ञान। श्री बड़े महाराज की निम्नलिखित रीति से आप श्री नामाभ्यास करें।

सीताराम नाम ही से उदै होत दिब्य ज्ञान
जामें लेशहू न कहूँ छप्यो सु अज्ञान है।
बातन के कहे कहा पेखिये प्रतच्छ रटि
एकरस होय के अनन्य एकतान हैं।।
मन मति रोकि के विशेष वासना से
रोम–रोम माँझ फेर कीजे नाम ध्यान है।
श्री युगल अनन्यनाम रहित हमारे मत
साधन समूह जैसे कायर कृपान है।। १५२२।।

श्री बड़े महाराज की बताई रीति में १—श्री नाम का अनन्य भरोसा रखना। २—निरन्तर तैलधारावत् नामरटना ३— एकाग्र चित्त होकर,भाव करना कि मेरे रोम—रोम से नाम ध्वनि निकल रही है। इन तीनों रीतियों को अपने नामाभ्यास में सम्मिलित करने से दिव्य ज्ञानोदय होगा।

पुनः श्रीमानस जी के आदेशानुसार भी ''जाना चहहि गूढ़ गति जेऊ। नाम जीह जपि जानहि तेऊ।।'' जिह्वा से बैखरी वाणी में श्रीनाम उच्चारण करना भी आवश्यक हैं।

पठित ज्ञान निर्भ्रान्त एवं यथार्थ होता नहीं। श्रीनाम जप द्वारा संभूत ज्ञान ही सच्चा ज्ञान होता है। इस पर श्री बड़े महाराज कहते हैं कि श्रीनाम के अतिरिक्त यर्थाथ ज्ञान क्या है,मानो आकाश में स्थित बन के पुष्प के समान,मृगतृष्णा के जल की भाँति,भूसा कूटकर निकाले गये अन्न के समान अयथार्थ है। ज्ञानार्जन के प्रयास में कोई लाभ नही होता,कृतज्ञता की हानि होती है,अनुभव प्रकाश छिप जाता हैं। बुद्धि की हानि होती है। बड़े—बड़े देवताओं और सिद्धों से सेवित नाम की उपेक्षा वही करे, जो काम विकार से मोहित हो रहा है। श्रीबड़े महाराज की विमल वाणी विवेचन करने योग्य है कि श्री रामनाम के ध्यान से उत्पन्न ज्ञान ही स्वच्छ ज्ञान है।

''नाम व्यतिरेक बोध व्योमवन सुम सम
सूरज—मरीचि तुष ताड़न बयान है।
नफा नहीं सफा वफा दफा होत जोत दवि
जफा फल पावत विशेष मति हान है।।
बड़—बड़े सिद्ध सुर सेवित सुनाम सद
शरन विहीन मोहे मदन मलान है।
युगल अनन्य वैन विमल विवेचनीय
सोई स्वच्छ ज्ञान जामें राम नाम ध्यान है।। १४१८।।''

श्री पुराण संग्रह के अनुसार आप मधुर—उपासना—सम्मत दिव्य युगल बिहार रहस्य का ज्ञान भी नामाभ्यास से प्राप्त कर सकते हैं तथा दिव्य बिहार देश की नित्य सखी यूथेश्वरियाँ स्वयं आपसे प्रत्यक्ष मिलकर,दिव्य देशका रहस्य बता जायेंगी। सच्चे ज्ञान का लक्षण है—"ग्यान मान जहँ एकउ नाहीं। देख ब्रह्म समान सब माही।।" श्रीपुराण संग्रह में श्रीसूत जी ने श्रीशौनक जी से कहा है—

पृष्ट्वा रीतिर्यथा तथ्यँ गुरोः सान्निध्यतो मुने।
तत्पश्चादभ्यसेन्नाम सर्वेश्वरमतन्द्रितः ।।
स्वल्पाहारं तथा निद्रां स्वल्प वाक्यं निरन्तरम्।
मिथ्या संभाषणं त्यक्त्वा तथा च गमनादिकम्।।
इहैव लभते नित्यं परिकराणां समागमम्।
तथा नाना रहस्यानां ज्ञानं सांजायते ध्रुवम्।।

अर्थात् रहस्य जिज्ञासु को प्रथम श्री गुरु चरणाश्रित होकर, उनसे भाव—भावना सीखनी चाहिए। तत्पश्चात् उनकी आज्ञा के अनुसार सर्वेश्वर प्रभु श्री अयोध्याविहारीजू का मंगलमय युगल सीताराम नाम का आलस्य प्रमाद त्यागकर,तीव्र साधननिष्ठ होकर, अभ्यास करे। तीव्र नाम साधन के लिए आपको नियमित आहार धटाकर,एक तिहाई शेष रखना चाहिए। स्वल्प भोजी के विषय विकार, आलस्य क्षीण होकर, बुद्धि दिव्यदेश प्रवेशिणी बन जाती है। शयन से तमोगुण की वृद्धि होती है। प्राप्त ज्ञान भी क्षीण हो जाता है। बने तो निद्रा सर्वथा त्याग दें नहीं तो जितना कम हो सके। नाम जापक को चौबीस घंटे में दो तीन घंटे से अधिक समय सोने में नहीं लगाना चाहिए। बोलिये बहुत कम। वाणी से व्यवहार बढ़ता है। वाणी जितनी रुकेगी मन की दशा, उसी अनुपात में समुन्नत होगी। मिथ्या कथन से बढ़कर कोई पाप नहीं। नहिं असत्य सम पातक पुंजा। घूमने—फिरने वाले का मन दृश्य पदार्थों में बिखर जाता है। उसको एकाग्र करने में कठिनाई होती है। ऐसे संयम के साथ तीव्र नाम साधना करने पर आपको बिहार देश के नित्य परिकरों का यहीं समागम होगा तथा नाना रहस्य ज्ञान स्वयमेव स्फुरित होंगे और होंगे अवश्य।

श्री कबीरदास जी को कोई पठित विद्याभ्यास अधिक नहीं था। फिर भी अपने दिव्य ज्ञान से दिग्विजयी विद्याभिमानी पंडित को परास्त कर शिष्य बनाया। भक्तमाल में प्रसिद्ध है। उनका कहना था कि—

"तुम कहते हो पुस्तक लेखी। मैं कहता हूँ आँखों देखी।।"

अज्ञान जन्य जगत का नानात्व दृश्य का पुस्तकीय विद्या से अभाव होना संभव नहीं। यह अज्ञान तो नाम जप से मिटगा। मार्कण्डेय पुराण में श्री व्यासदेव जी श्रीसूत जी को बताते हैं।

"अज्ञानप्रभवं सर्व जगत्स्थावर जंगमम्।
रामनाम प्रभावेण विनाशो जायते ध्रुवम्।।"

श्री ब्रह्मपुराण में कहा गया है कि श्रीराम नाम सर्व विकार रहित, शुद्ध मायातीत निर्वैर अन्यसाधन निरपेक्ष स्वयं सर्वसमर्थ हैं। इनके भजन से श्रीरामरूप का हृदय के भीतर तथा बाहर प्रकाश (अर्थात् साक्षात्कार) हो जाता है।

''निर्विकारं निरालम्बं निर्वैरं च निरञ्जनम्।
भज श्री रामनामेदं सर्वेश्वरप्रकाशकम्।।''

श्री पुराण संग्रह में श्रीसूत जी ने श्रीशौनक जी से कहा है कि श्रीरामनाम का परात्पर ऐश्वर्य हम बचन के द्वारा कैसे कहें ? श्रीरामनाम के स्मरण करते–करते सम्पूर्ण विश्व श्रीरामरूपमय दीखने लगता है। इसी को ज्ञान कहते हैं। पठित विद्या से ऐसी ब्राह्मी–दृष्टि किसको प्राप्त हुई है।

''नाम्न:परात्परैश्वर्य कथं वाचा वदामि ते।
स्मरणाल्लक्ष्यते विश्वं राम रूपेण भास्वरम्।।''

अद्वैतवादी वेद वचन के अर्थ न समझकर ,निर्गुण, निराकार ब्रह्मका प्रतिपादन करते हैं। उन्हें पूर्वापर प्रसंग समझने आवे कैसे ? ज्ञानगुमान में भरकर सद्गुण रहित हो रहे हैं जो। परात्पर ब्रह्म तो श्री अयोध्या बिहारी ही हैं। बात लोक वेद सर्वत्र प्रसिद्व हैं। सच पूछिये तो यही अयोध्या बिहारी ही, निर्विशेष अव्यक्त ब्रह्म तथा सगुण सविशेष ब्रह्म तथा अवतार –अवतारी कोटि ब्रह्म तीनों के कारण हैं। यह रहस्य ऐसा सूक्ष्म है कि नाम रटने के बिना समझ में आना कठिन है।

''श्रुतिन सदर्थ सुसमर्थ अज्ञ व्यर्थ करि
करै प्रतिपादन अगुन देहहीन को।
बूझि न परत जिन्हें पूरब अपर कछु
गहे गुन गारत गरूर गरबीन को।।
लोक वेद विदित विशेष सर्वेश अवधेश
सविशेष अविशेष बीज तीन को।
श्री युगल अनन्य राम नाम के रटन बिन
विशद विचित्र वस्तु लखे कैसे झीन को।। १४९३।।

हठयोग से नामयोग अधिक हितकर

सम्पूर्ण योगका लक्ष्य है चित्तवृत्ति का निरोध। वह कार्य तो नाम जप से, अनायास हो जाता हैं। श्रीनृसिंह पुराण में कहा है कि थोड़ी सी सावधानी से नाम जपे तो क्षिप्त विक्षिप्त तथा मूढ़ आदि चित्त की वृत्तियाँ, निश्चय पूर्वक बिटुरकर निरूद्ध हो जायेगी। वृत्तिनिरोध होने पर परमानन्द का खजाना हाथ लगेगा और भाव–समाधि भी सुलभ हो जायेगी।

''सर्वासां चित्तवृत्तीनां निरोधं जायते ध्रुवम्।
रामनाम प्रभावेण जप्तव्यं सावधानत:।।''

महात्मा गाँधी कहते हैं श्रद्धापूर्वक रामनाम के उच्चारण करने में एकाग्रचित्त हो सकते है। श्री गोस्वामी पाद श्री विनय में कहते हैं

राम नाम ते विराग जोग जप जापि हैं।
सहित सहाय कलिकाल भीरु भागि

श्रीमानस जी में भी कहा है—

''नाम जीह जपि जागहिं जोगी। परमारथी प्रपंच वियोगी।
ब्रह्म सुखहि अनुभवा अनूपा। अकथ अनामय नाम न रूपा।।''

योग रीति से भी न होने वाली हृदय की आनन्द कली नाम—जप से अनायास ही प्रफुल्ति हो जाती हैं। भीतर बाहर दोनों भाँति से नाम जप होना चाहिए श्री आङ्गिरस पुराण का कहना है कि—

''आभ्यन्तरं तथा वाह्य यस्तु श्रीराममुच्चरेत्।
स्वल्पायासेन संकाशं जायते हृदि पङ्कजे।।''

योग साधना से प्रगट होने वाले दश प्रकार के अनाहतनाद नाम जप से भी जाग्रत हो जाते हैं। श्रीभारत विभाग में योग से यह विशेषता बतायी गई कि मोक्ष प्राप्ति उसमें संदिग्ध रहता है, नामजप में निश्चित है और भगवत्प्रेम तो योग के वश की बात ही नहीं। यह तो नाम जप से ही होगा। श्रीरामनाम के प्रसंग में ही कहा गया है—

''महानादस्य जनक महामोक्षस्य हेतुकम्।
महाप्रेमरसेशानं महामोदमयं परम् ।।''
आह्लादकानां सर्वेषां रामनाम परात्परम्।
परंब्रह्म परं धाम परं कारणकारणम्।।''

बुद्धि को श्रीसगुण ब्रह्म रूप में निश्चल रूप से निविष्ट करना तथा चंचल चित्त को उन्हीं में लय कर देना, योग के लिए अगम है। यह नाम जप से ही होगा। आदि पुराण में योगीश्वर भगवान् श्रीकृष्ण का कथन श्री अर्जुन के प्रति है।

''नाम्नैव नीयते मेधा परे ब्रह्मणि निश्चला।
नामैव चञ्चलं चित्तं मनस्तस्मिन् प्रलीयते।।''

श्री कौशल खंड में कहा गया है कि जिस योग में श्रीराम रूप का ध्यान तथा रामनाम जप नहीं,वह तो रोग रूप ही है।

''योगस्सरोगो नहि यत्र राम:।।''

जब योग से संभव सभी कार्य नाम जप से हो जाता है तब योग का आश्रय छोड़कर जो श्रीरामनाम जपमें तत्पर हैं,वही धन्य हैं और वही सौभाग्यशाली,एवं सच्चे शरणागत हैं।

''धन्याः पुण्याः प्रपन्नास्ते भाग्ययुक्ता कलौयुगे।
संविहायाथ योगादीन रामनामैक नैष्ठिकाः ।।'' (श्रीविश्वामित्र संहिता)

श्री सनक सनातन संहिता में कहा गया है कि जब नाम से ही सब कुछ प्राप्त हो जाते हैं तब नाम जप छोड़कर लोग ज्ञान योगादि साधनों में व्यर्थ ही क्लेश करते हैं।

''श्रमं मृषैव कुर्वन्ति ज्ञान योगादि साधने ।
कथं न भजते राम नाम सर्वेश पूजितम्।।''

'' सरसत सत नाम सहजहि सहज समधिया ।
देह जनित भ्रमवास रास दुख सुख सम रहित उपधिया।।
मानामर्ष तर्ष तम नाशत भासत छैल अवधिया ।
(श्री) युगल अनन्य शरन रस चखि–चखि भूल गई सुधबुधिया।।''

समाधि भी कई प्रकार की होती है १–कर्म समाधि,ज्ञानसमाधि,योगसमाधि, प्रेमसमाधि,भावसमाघि, रूपसमाधि, आदि। भावसमाधि लगाकर, दिव्य विहारदर्शन में मगन होने की विधि श्रीबड़े महाराज इस प्रकार बताते हैं कि सर्वप्रथम आप किसी शान्त एकान्त देश में पवित्र आसन पर, पद्मासन लगाकर बैठिये। दृष्टिको किसी यत्न से एक ही जगह रोक रखिये। मन को इष्ट चिंतन में एकाग्र एवं अडौल बनाइए। २. रमु क्रीड़ायां धटित श्रीराम नाम का अर्थ हैं रमण करना और रमण कराना। बीच में हम श्री महारामायण कृत श्रीरामनाम का अर्थ लिखकर पुनः श्रीबड़े महाराज की बतायी शेष विधि बतावेंगे।

''कोटि कन्दर्प शोभाढ्ये सर्वाभरण भूषिते।
रम्यरूपार्णवे रामे रमन्ते सनकादयः ।।
अनेक सखिभिः साकं रमते रास मण्डले।
अतएव रमु क्रीड़ा राम नाम्ना प्रवर्तते।।''

अर्थात कोटि–कोटि काम से भी अभिराम श्रीअवध बिहारीजी रमणीय रूपके सिन्धु हैं। आप नखशिख मणिभूषणों से समालंकृत हो रहे हैं। आपके ऐसे रमणीय रूपमें बीतराग सनकादिक मुनियों का मन भी रमण करने लगता है।

जो अनन्त सीता सखियों के साथ दिव्य प्रमोदवन के श्रीराम रास में रमण करे, उन्हीं का नाम राम है, रमुधातु का अर्थ क्रीड़ा करना इसी से सिद्ध होता है।

श्री बड़े महाराज के कथनानुसार आप सारी अष्टयाम सेवा में प्रधानतया श्री रामनामार्थ घटित रास की भावना विशेष रूप में करें इसी अर्थ का विचार करना है। श्रीयोग सूत्र में भी नामजप से समाधिकी सिद्रि बतायी गयी है। वहाँ भी नाम जप काल में नामार्थ चिंतन आवश्यक बताया गया है। मूल सूत्र इस प्रकार है–

(समाधि सिद्धिः) ईश्वर प्रणिधानाद्वा १२३ ''तस्य वाचकः प्रणवः।''१ / २७
''तज्जपस्तदर्थ भावनम्''१ / २८।

विस्तार भय से यहाँ सूत्रों की व्याख्या नहीं लिखी गई। श्री नामार्थगत युगल

विहार चिंतन से आपको दिव्य प्रेमानन्द होना स्वाभााविक है। फलत: क्षण—क्षण में आपको रोमांचादि सात्विक विकार उदित होते ही रहेंगे। उसी दिव्यविहार चिंतन में रंगकर लौकिक विषय रस को नष्टकर डालिए। आपको एकान्त स्थानमें इस प्रकार छिपकर रहना चाहिए कि आपकी दिव्य दशाको दूसरा कोई लेखे नहीं। अनुभव कहकर जना देना तो अनुभव का द्वार सदा के लिए बंद कर देना है। दश नामापराध से बचते रहियेगा। लय, विक्षेप,कषाय और रसाभास इन चारों विघ्नों को जीते रहिये। उन बिघ्नों में भी कषाय अर्थात् विषय भोग की स्मृति तो महात्याज्य है। भागवतापराध से बचने के लिए सबके आगे दीन विनयी बने रहना चाहिये तथा स्थूल सूक्ष्म और कारण तीनों मायिक शरीर को भूलें। उपर्युक्त प्रकार के नामाभ्यास के लिए तीक्ष्ण बुद्धि की अपेक्षा है। किसी—किसी कृपा पात्र में पायी जाती है। अब मूल महावाणी लिखते हैं।

''इह भाँति नाम लय लावै,फिर खतरा खौफ न पावै।।
ह्वै आसीन पद्म आसन दृढ़ दृग दिल अचल करावै।
अर्थ परत्व विशेष विचारत पल — पल पुलक बढ़ावै।
रहे एकांत सांत अनुदिन निज दसा न प्रकट लखावै।।
रंगरति रातो रहे एकरस बीरस विषय बहावै।
दश अपराध असाध महारुज तेहिं तजि मोद समावै।।
लय विक्षेप क्षेप डारे करि रसाभास सकुचावँ।
प्रवल कषाय वासना भवमय आमय समुझि मिटावै।।
सबसे सहज अधीन हीन मन तन तिहुँ तमक सुखावै।।
(श्री) युगल अनन्य शरन लच्छन प्रिय कोउ तीच्छन मति पावै।।

श्री बड़े महाराज कहते हैं कि नाम स्नेह ही से योग सिद्धि प्राप्त करना उचित है। किंतु इनके लिए पाँच वस्तु वाञ्छनीय हैं।

१— धैर्य और अडोल उत्साह।

२— भोग स्पृहा से निष्कामता।

३—संयमपूर्वक एक ही स्थल में निवास।

४—श्रीनाम में प्रबल प्रतीति और प्रीति।

५—बाह्य जगत के भोग पदार्थो से चित्त में पूर्ण वैराग्य।

''योग सिद्ध कारन प्रसिद्ध पांच चीज है।
धीरता अचल उत्साह आह दाह बिन
चाह से रहित चित्त चाँदनी अतीज है।
संयम समेत एक थल में निवास पुनि
प्रबल प्रतीति प्रीति राखिये तमीज है।।

रहिये हमेश ऐश हिरस हिराय रोज

सोज जग जाहिर बिहाइये अबीज है।

श्री युगल अनन्य नाम नेह ही सुयोग योग्य

योग सिद्धि कारन प्रसिद्ध पाँच चीज है।।"

इन पंक्तियों के लेखक ने अपनी आँखों के आगे ही एक नवयुवक भगत को नाम जपते जपते समाधिस्थ होते देखा है। वह भगत अभी जीवित है। बिहार प्रान्त के दरभंगा जनपद के अभ्यन्तर दरभंगा से श्रीसीतामढ़ी जानेवाली रेलवेलाइन में एक जोगियारा नामक स्टेशन हैं। उसी स्टेशन से उतर कर जाना पड़ता है चन्दौना ग्राम में। चन्दौने में इन दिनों एक डिग्रीकालेज भी स्थापित हो गया है। वहीं का रहने वाला वह भगत है श्री रामलषण शरण नामधारी वह अपना शिष्य ही है। उस ग्राम में यह लेखक सन् १९५० में गया था। ग्राम के समीप एक आम के बगीचे मे बने झोपड़े में नाम जप कर रहा था। रामलखन शरण झोपड़े से मेरे निकलने की प्रतीक्षा में बैठा बैठा नाम जप रहा था। आंखे बंदकर, सुखासन से बैठकर नाम जप कर रहा था। उसे समाधि लग गई। मैं बाहर निकलकर उसे पुकारा देह पकड़कर जोरों से हिलाया डुलाया,परन्तु वह नाम रटते–रटते देह भान भूल चुका था। बहुत देर के पश्चात् उसे बाह्य चेतना हुई। तत्पश्चात् उस बड़भागी को कई बार श्री नामी सरकार के साक्षात् दर्शन भी हुए हैं। लय स्वर के साथ सतत नाम कीर्त्तन करना उसका स्वभाव बन गया है। समय–समंय वह अपने यहां दर्शनार्थ श्रीअयोध्या भी आया करता है।

पूज्यपाद भी हरिबाबा कल्याण भगवन्नामांक पृ०७६ में लिखते हैं– एक और सत्संगीं नाऊ जाति के थे। उनके पहले से ही नाम में श्रद्धा थी और वे रामायण का पाठ किया करते थे। नाम संकीर्त्तन करने से उन्हें भाव समाधि होने लगी । उनके नेत्र ऊपर को चढ़ जाते थे और वे राम–राम पुकारते हुए मूर्छित होकर गिर पड़ते थे, उनके जीवन में बड़ा भारी परिवर्तन आया। उन्हें सोते जागते भगवान् के दर्शन और भगवच्चरित्र के अनुभव होने लगे।

श्रीरामनाम में सुदृढ़ निष्ठा और अटल विश्वास होने से समाधि सिद्धि सुलभ हो जाती है। दृष्टांत –डॉ० भगवती प्रसाद सिंह लिखित श्री हनुमान पोद्दार के जीवनदर्शन के पृष्ठांक ४३३ से साभार उद्धृत किया जाता है।

प्रसंग सम्भवत: संवत् १९७९ वि० का है। मेरे एक मित्र थे श्रीसागर मल गनेड़ीवाला। मैं तथा वे दोनो ही नवयुवक थे। उन दिनों मैं कभी–कभी धार्मिक नाटक देख लिया करता था। एक नाटक कम्पनी में भक्त सूरदास नाटक का अभिनय होने वाला था। सागरमलजी मेरे घर पर आये और बोले "भाईजी भक्त सूरदास नाटक देखने चलिये।" मैं उनके साथ चल दिया। रास्ते में मुझे प्यास की अनुभूति हुई। श्री सुखानन्द जी की चाल (मकान) रास्ते में ही पड़ती थी। सुखानन्दजी सागर मल के फूफा थे और सागरमल उन्हींके यहां रहते थे। सागरमल ने कहा भाई पानी कहाँ खोजियेगा? अपने घर पर ही चलिये, वहाँ पानी पिया जाय।' हम दोनों उनके

घरपर पहुँचे। पानी पीने के लिए बैठे ही थे कि पररस्पर की चर्चा में रामनाम के महत्त्व का प्रसंग छिड़ गया। सागरमल नाम के प्रेमी थे, पर उनका कहना था, समझकर लिए बिना रामनाम से कोई लाभ नहीं होता। राम शब्द को भगवान् राम का नाम समझ कर लेने से ही लाभ होता है,अन्यथा नहीं।

"मेरा विश्वास भगवान् के नाम पर दूसरे ही ढंग का था। मैंने कहा— किसी प्रकार से रामनाम लिया जाय, लाभ होता ही है। राम शब्द के यदि 'रा' और'म' ये दो अक्षर मुख से निकल गये तो प्राणी की सद्‌गति होगी — इसमें तनिक भी संदेह नही हैं।

यह बात सागरमल के गले नहीं उतरी। उन्होंने इस पर विवाद छेड़ दिया। मैंने उन्हें एक कथा सुनाकर कहा, मरते समय किसी के मुख से हराम शब्द निकल गया, इसी से सद्‌गति हो गयी। कारण, हराम में राम शब्द सम्मिलित है।

सागरमल ने तर्क किया राम शब्द को अंग्रेजी में 'आर' 'ए' 'एम' लिखा जाता है और इस शब्द का अंग्रेजी भाषा के अनुसार अर्थ होता है'मेढ़ा'। कोई अंग्रेज मरते समय मेढ़े के भाव से 'राम' पुकार उठें तो क्या उसकी सद्‌गति हो जायेगी। उस अंग्रेज के ज्ञान में राम का अर्थ मेढ़े के अतिरिक्त अन्य कुछ है ही नही।

मैंने कहा, ज्ञान—अज्ञान से, भाव--अभाव कुभाव से, किसी भी प्रकार से , यदि जिह्वा पर रामका नाम आ जाय तो,भगवान का नाम होने से तार देता है। मेरे विश्वास के अनुसार उस अंग्रेज की मुक्ति हो ही जानी चाहिए। यह विवाद हो ही रहा था कि सहसा मेरी वाह्य चेतना लुप्त हो गयी।(श्रीनाम के वस्तु धर्म पर सुदृढ़ विश्वास देखकर, श्रीनामी से रहा नहीं गया। आपके हृदय में प्रगट होकर, आपको विभोर बना दिया।)

पीछे क्या हुआ,यह मुझे पता नहीं । होश आने पर श्री सागरमल जी ने मुझे बताया था कि 'तुम्हारी आँखे खुली थीं, पर बाह्य ज्ञान नहीं था, तुम ज्यों के त्यों उसी स्थान पर बैठे रहे। मैंने सोचा कि तुम बेहोश हो गये हो। मैं रातभर तुम्हारे पास बैठा रहा । मैं तो धबड़ा गया था कि क्या हो गया। सबेरे बड़ी कठिनता से तुम्हें उठाया सीढ़ियों से नीचे ले गया, मोटर मंगवायी और मोटर में बैठाकर तुम्हें घर पहुँचाया। साथ मैं स्वयं गया। घर पहुचने पर तुम्हें शौच से निवृत्त होने के लिए कहा, पर उस समय तुम्हें बिलकुल होश नहीं था। इससे तुमने मेरी बात का उत्तर नहीं दिया। मैंने तुम्हें पकड़कर पानी के नल के नीचे बैठा दिया। तुम्हारे सिर पर नल से पानी की धार गिरने लगी।

इसी बीच संगीताचार्य श्री विष्णुदिगंबर को तुम्हारी ऐसी स्थिति हो जाने की सूचना भेज दी गयी थी। श्री विष्णुदिगंबर सूचना प्राप्त होते ही चले आये। उन्होंने अपने दो विद्यार्थियों को बुलवाया और स्वयं तानपूरा लेकर उनके साथ 'रघुपति राघव राजाराम। पतित पावन सीताराम।' कीर्त्तन की ध्वनि छेड़ दी। तुम बीच में बैठे थे और चारों ओर अन्य लोग थे।

सम्भवत: पौन घंटे तक कीर्त्तन होने के बाद तुमको होश आया। रात्रिके ९बजे से प्रात:९ बजे तक लगभग बारह धंटे यह स्थिति बनी रही।

''होश आने पर मैं सकुचा गया। मैनें श्री विष्णुदिगंबर को प्रणाम किया। सब पूछने लगे,क्या हुआ, क्या देखा? मैंने कहा—'मुझे इतना ही स्मरण है कि वनवेषधारी भगवान् श्रीराम, लक्ष्मण और श्री सीताजी के दर्शन हुए। कितनी देर तक हुए,यह याद नहीं है। बातें भी हुई थीं। पर सब बातें स्मरण नहीं, केवल दो ही बातें याद हैं—एक तो भगवान ने यह कहा कि किसी भी प्रकार से भगवन्नाम लेने वाले की सद्गति होती है। दूसरी बात भगवान ने परम भक्त श्री विष्णुदिगंबर का नाम इसी सिलसिले में लिया था। इसके अतिरिक्त और कुछ याद नहीं। श्रीसागरमल ने मुझे याद दिलाना चाहा, तुम रात को उस समय कह रहे थे कि 'ये है भगवान,इनके चरण पकड़ लो। पर मुझे इन शब्दों की स्मृति नहीं थी। इस प्रसंग को सुनकर श्री विष्णुदिगंबर स्नेहातिरेक से रोने लगे। इस घटना के बाद सगुण स्वरूप की ओर विशेष झुकाव हो गया तथा भगवद् विश्वास भी प्रगाढ़ होता गया।'

, दानों की अपेक्षा नाम जप ,

श्री वात्स्यायन संहिता में कहा गया है कि कोई धनीमानी व्यक्ति बारम्बार अपने शरीर के भार के बराबर स्वर्ण तौलकर तुलादान करे उस फलसे असंख्य गुणा फल एकबार श्रीरामनाम के उच्चारण में है। हो क्यों नहीं? स्वर्णदानसे स्वर्ग मिलेगा, वहाँ से लौटकर फिर चौरासी लाख योनियों में जनमना मरना बना रहेगा। श्री रामोच्चारण से अविनाशी विशोक श्री साकेत लोक को जायेगा, जहां से पुन: लौटकर संसार में नहीं आना है।

''तुला पुरुष दानानि दत्त्वा यत्फलमश्नुते।
तस्मादसंख्य गुणितं राम नाम्नापि संलभेत्।।

पुन: वहीं कहा गया है कि जिनके मन में सतत श्रीरामनाम रटने का निश्चय दृढ़ हो चुका है, उनके लिए सूर्यग्रहण के अवसर पर कुरुक्षेत्र में जाकर हजारों सोने का भार दान करने से क्या लाभ? हाथी,घोड़े,रथादिकों के दान, देवालय मंदिर की प्रतिष्ठा ,सभी तीर्थों का सेवन नाना प्रकार के तप ये साधन नाम जापकों के लिए नगण्य हैं।

''हेमभार सहस्रै श्च कुरूक्षेत्रे रविग्रहे।
गजाश्वरथ दानैश्च देवालय प्रतिष्ठया।।
सेवनै: सर्व तीर्थानां तपोभि विविधैश्च किम्।
श्रीराम नाम्नि सततं नित्यं यस्यास्ति निश्चयम्।।''

श्री पतञ्जलि संहिता में कहा गया है कि धान्य पौधों से लहलहाती हुई पृथ्वी की सारी भूमि दान कर देने से जो फल होगा, उससे अधिक फल है, एक बार के रामनाम उच्चारण में।

''पृथ्वी शस्य सम्पूर्णा दत्त्वा यत्फलमश्नुते।
रामनाम सकृज्ज़प्त्वा ततोऽनन्तगुणं फलम्।।''

श्री सौर संहिता में कहा गया है कि समुद्र सहित पृथ्वी को शुद्ध सोने से भर कर दान कर देने मे जो फल होगा उससे अधिक फल होगा श्री रामनाम के उच्चारण में।

''ससागरां महीं दत्त्वा शुद्धाकाञ्चन पूर्णिताम्।
यत्फलं लभते लोके नामोच्चारस्ततोधिकम्।।''

श्री शुक पुराण में कहा गया है कि पृथ्वी को कौन कहे आप ब्रह्माण्ड ही दान कीजिए। एक नहीं, सैकड़ों ब्रह्माण्ड का प्रभुत्व आपको मिला हो, तो दान देकर देख लीजिये। दान का क्या फल मिलता है। अजी, कहीं ऐसा दान बन भी जाय,तो एक बार का श्रीरामनाम उच्चारण उससे अधिक फल आपको देगा।

''ब्रह्माण्ड शत दानस्य यत्फलं समुदाहृतम्।
तत्फलादधिकं विद्यात्सकृच्छ्रीराममुच्चरन्।।''

इतना कहने का यह मतलब नहीं कि आप दान न करें । हृदय धर्म को उदार बनाने के लिये दान आवश्यक कर्त्तव्य है। किन्तु मुक्ति की आशा दान से नहीं रखिये। मुक्ति के लिए एकमात्र उपाय है श्री रामनाम। पूछ लीजिये परमार्थ मर्मज्ञ जगद्गुरु शंकरजी से। प्रभो! आप काशी वासियों को मुक्त करने के लिए और उपाय क्यों नहीं करते? रातदिन गली—गली में घूम घूम कर मरणशील प्राणियों के कान में श्री रामनाम सुनाते हैं? क्या मुक्ति को जन्मभूमि काशी मुक्ति नहीं देंगी? यदि उनमें शक्ति देने की नहीं हो; तो गंगाजी में मुर्दो को प्रवाहित करवा दीजिये। श्री देवनदी तो मुक्ति देंगी ही। भगवान कहते हैं नहीं जी, मुक्ति एकमात्र श्री रामनाम ही के हाथ में है। और अन्य उपाय इस दिशा में विफल हैं।

जब गंगा काशी मरणकालीन श्री शंकर जी के साक्षात् दर्शन मुक्ति नहीं दे सकते, तब आप चले हैं दान के पुण्य प्रभाव से मुक्ति पाने? सेठ जी, जरा समझ से भी काम लीजिए।

श्रीब्रह्मवैर्त्त पुराण में कहा गया है कि जो श्री रामनाम का कीर्त्तन करते हैं, उन्हें असंख्य गोदान का, असंख्य कन्यादान का, अनत तीर्थों के फल नाम ही सरकार देते रहते हैं।

''गवामयुत कोटीनां कन्यानामयुतायुतैः।
तीर्थ कोटि सहस्त्राणां फलं श्री नाम कीर्त्तनम्।।''

इस सम्बन्ध में श्री बड़े महाराज को महावाणी उद्धृत कर, इस लेख को यही समाप्त करते हैं।

''जीवत मृतक ताते जानि न परत पीर
अंतक सदन जाय अंत सिर पीटि हैं।
कहैं हम पंडित प्रवीन सभा जीते बहु
रटे बिना नाम पढ़े पाथर औ ईंट है।।
दान अभिमान सो तौ अतिही नदानपन
नृगके समान नृप दानी गिरगीट है।
श्री युगल अनन्य सब फोकट धरम लखु
रटे नहीं नाम सों विशेष बीट कीट हैं।।''

श्रीनाभा स्वामी के सर्वमान्य परम प्रामणिक भक्तमाल के सुप्रसिद्ध कवित्त श्रीप्रियादासजी ने श्रीपंडरपुर के प्रसिद्ध सिद्ध संत श्रीनामदेवजी के विषय में एक बड़ी मजेदार कथा लिखी हैं। हम नीचे उनके मूल के कवित्त तथा श्री रूपकला जी महाराज का वार्तिक अनुवाद भी अविकल उद्धृत करते हैं। देखिये भक्ति सुधा स्वाद तिलक पृ० ३४४

''सुनौ और परचै जो आए न कवित्त माझ
बांझ भई माता क्यों न? जौ न मति पागी है।
हुतो एक साह तुला दानको उछाह भयो
दयो पुर सबै रह्यो नामदेव रागी है।।
ल्यावौ 'जू बुलाई' एक दोई तो फिराई दियो
तीसरे सो आए 'कहो कहो' बड़भागी है।
कीजिए जु कछु अंगीकार मेरो भलो होय
भलो भयो तेरो, दीजै जो पै आसा लागी है।।

अब श्री नामदेव जी के परिचय प्रभाव, जो श्री नाभास्वामी के छप्पयमें नहीं कहे गये है, सो सुनिये। देखिये ऐसे भक्ति भरे श्री नामदेव का चरित्र सुनकर श्रीसीताराम नाममें जिसकी मति प्रेम से न पगी, उसकी माता बाँझ क्यों न हुई?

पण्डरपुर में एक बड़ा सेठ था। उत्साह पूर्वक सोने का तुला दान करके उसने सबों को सुवर्ण दिया। परम अनुरागी श्री नामदेव जी एक रह गये। आपके पास भी सादर बुलाने को मनुष्य भेजे परन्तु आपने एक दो बार तो उनको कोरे ही लौटा दिया कि मुझे नहीं चाहिए। तीसरा बार बड़ी प्रार्थना पूर्वक उसने बुलाया तो आप जाकर बोले कि है बड़भागी सेठ कहो क्या कहते हो? उसने विनय की कि कृपा करके इसमें से कुछ सुवर्ण अंगीकार कीजिए कि मेरा भला हो । आपने उत्तर दिया कि तेरा भला हुआ ही है,क्योंकि तुमने सबको दिया। जिसकी आशा लगी हैं, उसको दे और यदि मुझको भी देने के हेत तेरी आशा लगी ही है तो दे।

जाके तुलसी है ऐसे तुलसी के पत्र मांझ
लिख्यो आधो रामनाम 'यासो तौल दीजियो।'
'कहा परिहास करौ? ढरो ह्वै दयाल
'देखि होत कैसो ख्याल, याको पूरो करो रीझियो।।
ल्यायो एक काँटो, लै चढ़ायो पात सोना संग
भयो बड़ो रंग सम होत नहि छीजियो।
लाई सो तराजू जासो तुलै मन पाँच सात
जाति—पाँतिहूँ की धन धरयो पै न धीजियो।।'

इतना कहकर श्रीतुलसी के पत्र में आधा श्रीराम अर्थात् 'रा' मात्र लिखकर, आप बोले कि यदि दिया ही चाहता है तो इसी भर तौल दे। सुनकर सेठने कहा कि 'आप हँसी क्या

करते हैं? इस पत्र ही भर मैं क्या दूँ? मुझ पर दयालु होकर, कुछ अधिक अंगीकार कीजिए। श्री नामदेव जी ने उत्तर दिया कि मैं हँसी नहीं करता। देख तो इसका कैसा कौतुक होता है? इस भर तौलकर पूरा तो कर, तब मैं तुझ पर अतिशय प्रसन्न हूँगा। एक तौलनेका काँटा लाकर, उसकी एक ओर तुलसीदल और दूसरी ओर सोना साहने चढ़ाया, परन्तु बड़ा ही रंगमचा कि वह सोना श्री पत्रके तुल्य न हुआ, वरन घट गया। तदनन्तर साहूने एक ऐसा तराजू मंगाया जिसमें पाँच सात मन वस्तु तुल सके। उस पर श्रीनाम पत्र रखकर, अपने घर भरका स्वर्णादिक सब धन चढ़ाया, तब भी श्रीपत्र वाले पल्ले ने भूमि न छोड़ी। फिर अपने जाति भाइयों का धन माँग—माँगकर, पल्ले पर चढ़ाता गया। तथापि पूरा न पड़ा, धनका पल्ला अतीब हलका ही रहा। उन सबका प्रिय कार्य न हुआ।

परयो सोच भारी दुःख पावें नर नारी
नामदेव जू बिचारी एक और काम कीजिये।
जिते व्रत दान औ स्नान किये तीरथ में
करिये संकल्प यापै जल डारि दीजिये।
करेऊ उपाय पात पलं भूमि गड़े पाय
रहे पै खिसाय कह्यो इतनोई लीजिये।
लै कै कहा करै, सरबरहू न करै
भक्ति भाव से लै मेरो हिय मति अति भीजिये।'

अर्द्ध—रामनाम युक्त श्रीतुलसी—पत्र के गौरव महत्त्व का कौतुक देखकर, सेठ के घर के सभी स्त्री—पुरुषों को बड़ा सोच और दुःख हुआ कि कैसे पूरा हो? श्री नामदेव जी ने विचार किया कि श्रीरामनाम के सामने धनादिकों की तुच्छता तो दिखा ही दी, परन्तु अब यह भी दिखा दूँ कि श्रीरामनाम के सामने सब धर्म—कर्म भी हलके ही हैं। अतः आपने कहा कि 'सुनो एक और काम करो कि तुम लोगों ने जितने व्रत उपवास तीर्थ स्नान, दान इत्यादि सुकर्म किये हों, उन सबों का फल भी संकल्प करके, वह जल इस पर छोड़ दो। यह भी उपाय किया गया, किंतु श्रीनाम—पत्र वाला पल्ला भूमि में पाँव जमाये ही रहा। तब तो वे सब अति लज्जित और संकुचित होकर कहने लगे। महाराज आप इतना ही ले लीजिए। श्री नामदेव जी ने उत्तर दिया कि 'यह सब धन और पुण्य ले कर क्या करूँ? क्योंकि तुमने स्पष्ट देख ही लिया कि मेरा धन श्रीरामनाम है। उसके आधे के तुल्य भी ये सब नहीं रहे। अतः श्रीरामनाम को लेकर मैं संतुष्ट रहता हूँ और रहूँगा। मेरी मति प्रेम—भक्ति में भीजी है। तुम लोग भी यही करो, तब मेरे समान सुखी होओगे।

, तीर्थाटन छोड़कर नाम जपिये ,

श्री पद्मपुराणमें स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण श्रीअर्जुन जी को श्रीरामनाम का प्रभाव बता रहे हैं। अर्जुन! जिसने श्रीरामनाम का उच्चारण कर लिया उसे सर्वतीर्थों के मज्जन—पान का फल मिल

गया। समझ लो उसने श्रीगंगा,सरस्वती, रेवा, यमुना, सिंधु, पुष्कर, केदारनाथ आदि सभी तीर्थों का स्नान, जलपान कर लिया।

अतिथि सेवा, सर्वतीर्थ स्नान आदि सर्वपुण्योंका फल श्री नामोच्चारण से अकेले श्रीनाम सरकार कृपा पूर्वक दे देते हैं। सूर्यग्रहण के मौके पर, करुक्षेत्र तीर्थ करने न भी जाओ, कार्तिक मास में स्वामी कार्तिकेय का दर्शन न भी हो सके, तो दो अक्षर वाले श्रीरामनाम सभी फल अपने उच्चारण करने से दे ही देंगे। कहाँ भटकना है? रटते रहो नाम। श्रीरामनाम की समानता करते हो, गंगा से, काशी से, नर्मदा और पुष्कर से! छि: छि: कहाँ मुक्ति देने वाले श्रीरामनाम, कहाँ स्वर्ग देने वाले तीर्थ? श्रीमाम की बराबरी सब तीर्थ कर हीं नहीं सकते। समझ लेना पृथ्वी भर में समुद्र से लेकर पुण्य सरोवर सब—जितने भी तीर्थ हैं, नाम जपने वाले सब कर चुके। जब एकत्र फल श्रीनाम सरकार ने दे ही दिया, तो कर लेने में क्या बाकी रहा?

गङ्गा सरस्वती रेवा यमुना सिन्धु पुष्करे।
केदारेतूदकं पीतं राम इत्यक्षर द्वयम्।।
अतिथेः पोषणं चैव सर्व तीर्थावगाहनम्।
सर्वपुण्यंसमाप्नोति रामनाम प्रसादत:।।
सूर्यपर्वे कुरुक्षेत्रे कात्तिर्कयां स्वामी दर्शने।
कृपापात्रेण वै लब्धं येनोक्तमक्षर द्वयम्।।
न गंङ्गा न गया काशी नर्मदा चैव पुष्करम्।
सद्दशं राम नाम्नातु न भवन्ति कदाचन।।
भूतले सर्व तीर्थानि आसमुद्र सरांसि च।
सेवितानि च येनोक्तं राम इत्यक्षर द्वयम्।।'

श्री ब्रह्मवैवर्त्त पुराण में देवर्षि श्रीनारद जी भक्तराज श्री अम्बरीष जी से कहते हैं— 'इस भूमंडल पर जितने भी पावन तीर्थ हैं, सभी मिलकर, अपने पुण्यफल एक तराजू के पलड़े पर चढ़ावें, और दूसरे पलड़े पर एक बार के नामोच्चारण के फल का केवल सोलहवाँ हिस्सा चढ़ाया जाय, तो भी श्रीनाम का पलड़ा ही भारी रहेगा।

'बसन्ति यानि तीर्थानि पावनानि महीतले।
तानि सर्वाणि नाम्नस्तु कलां नाहन्ति षोडशीम्।'

श्रीविश्वामित्र संहिता में कहा गया है कि नाना प्रकार के तीर्थ शास्त्र प्रसिद्ध हैं। किंतु उनके फल श्रीरामनाम के कीर्तनफल के करोड़वाँ अंश के बराबर भी नहीं हैं।

'विश्रुतानि बहून्येव तीर्थानि विविधानि च।
कोट्यांशान्यपि तुल्यानि नाम संकीर्तनस्य च।।'

इसी प्रकार श्रीवृहद् वशिष्ट संहिता में भी कहा गया है कि तराजू के एक पलड़े पर सभी तीर्थ तथा प्रयाग राज का जल चढ़ाया जाय, दूसरी ओर श्रीरामनाम महिमा का कण मात्र। बराबर नहीं होने को।

'एकत: सर्व तीर्थानि जलं चैव प्रयागजम्।
श्रीरामनाम महात्म्यं कलां नार्हन्ति षोऽशीम्।।'

तभी तो श्री मानस जी का परम प्रामाणिक वचन है—

'तीरथ अमित कोटि सम पावन। नाम अखिल अघपुंज नसावन।।'

श्री कात्यायन संहिता में कहा गया है कि जो बड़भागी नाम लागी नित्य प्रति रामनाम का जप करते रहते हैं, उन्हें पदे—पदे पर कोटि—कोटि पूजा विधिवत करने का और तीर्थो के फल मिलते रहते है।

'राम रामेति—रमेति प्रत्यहं वक्ति यो नरः।
सम्यक् पूजायुतं पुण्यं तीर्थ कोटि फलं लभेत्।।'

पुण्य फल लेकर स्वर्ग जाना हो, तब तो तीर्थाटन की आशा अवश्य करनी चाहिये। यदि उपासना सिद्ध कर भवगद्धाम जाना चाहते हैं तब तो तीर्थ यात्रा इसके लिए निष्फल है, बेकार है। श्री बड़े महाराज की महावाणी प्रमाण है—

'तीरथ की आस सो तो नाहक उपास्य हेतु।
एक बार राम कहे कोटिन प्रयाग है।।'(श्री चतुष्ट गुटिका)

यदि आप शरीरान्त होने पर, अपने इष्ट श्री रामधाम साकेतपुरी जाना चाहते हैं,तब तो आप तीर्थ व्रत दान पुण्य के चक्कर में मत पड़िये। कहीं एकान्त में बैठकर, दिन—रात सीताराम सीताराम जपा करिये।

'तुलसी राम नाम सम मित्र न आन।
जो पहुँचाव रामपुर तन अवसान।।' (श्री बरवै रामायण)

भवसंकट (जन्ममरण) मिटाना तो तीर्थों के मान की बात नहीं है। एक जन्म ही क्यों? अनंत जन्मों तक सभी तीर्थों में भ्रमते रहो, भवसंकट जब मिटेगा, तब केवल श्रीरामनाम से ही, और उपाय व्यर्थ। श्री कवितावली, उत्तरकांड सवैया ८६ पढ़िये।

'न मिटै भवसंकट दुर्घट है तप, तीरथ जन्म अनेक अटो।
कलि में न बिरागु, न ग्यान कहूँ, सब लागत फोकट झूठ—जटो।।
नट ज्यों जनि पेट— कुपेटक कोटिक चेटक कौतुक ठाट ठटो।
तुलसी जो सदा सुख चाहिअ तौं, रसनाँ निसिबासर राम रटो।।'

' सहस करोरि बेर द्वार का प्रयाग जाय
पदुम अनेक बार कासिका बिहार ही।
मथुरा अवन्तिका अरब औं खरब बार
मायापुरी कच्छप समान दृग धारही।।
जगन्नाथ बदरी केदारनाथ आदि सब
तीरथ सुछेत्र जाय पदुम अपार ही।।
युगल अनन्य तउ एकबार रामनाम
मुखके उचारे सम कहे पाप भार ही।।'

अब बताइये, शान्त एकान्त देश में जमकर नामसुधा पीकर जीवन कृतार्थ कीजियेगा कि तीर्थाटन के बहाने आँखों को जगह–जगह के दृश्य देखाने के लिए रेलगाड़ी में धक्के खाइयेगा?

यज्ञायोजन छोड़कर नाम जपिये

भगवान श्री गीताचार्य सभी प्रकार के वेदोक्त यज्ञों में जप को सर्वश्रेष्ठ यज्ञ मानकर, उसे अपना स्वरूप ही बताते हैं। 'यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि।' जिन्होंने श्रीरामनाम का जप कर लिया उन्हें और यज्ञादि करने की क्या आवश्यकता है? अब हम शास्त्रीय प्रमाण इस सम्बन्ध में उद्धृत करेंगे।

श्रीवृहद्वशिष्ठ संहिता में कहा गया है कि विशुद्ध चित्त से जो सतत श्री रामनाम जप करते रहते हैं, उन्हें पदे पदे पर सहस्रों राजसूय यज्ञ करने का फल मिलता रहता है।

'राम रामेति रामेति कीर्त्तयेच्छुद्ध चेतसा।
राजसूय सहस्राणां फलं प्राप्नोति मानवः।।'

श्री आदि रामायण में कहा गया है कि एक बार नामोच्चारण से हजारों बार गंगा स्नान, कोटि–कोटि यज्ञान्त (यज्ञ समापन सूचक अन्तिम) स्नान, पान करने वाली पवित्रता आती है।

'गङ्गा स्नान सहस्त्रेण यज्ञान्तस्नान कोटिभिः।
पान शुद्धिर्भवेज्जातु सा रामेति कीर्तनात्।।'

श्री कालिका पुराण का वचन है कि निर्विकार परमदेव श्रीरामनाम का उच्चारण करने मात्र से अनन्त यज्ञ और तीर्थों के फल निश्चय पूर्वक होते हैं।

'रामेत्यभिहिते देवे परात्मनि निरामये।
असंख्य मख तीर्थानां फलं तेषां भवेद्ध्रुवम्।।'

श्री लोमश संहिता में कहा गया है कि जिनने श्रीरामनाम का कीर्तन कर लिया, उनने फल पाने के अर्थ में सब यज्ञ कर लिये अर्थात् अशेष वेदोक्त यज्ञों के फल उन्हें एकत्र मिल गये।

'कृताश्च सकलाः यज्ञा येन रामेति कीर्तितम्।'

श्री पद्मपुराण में स्वयं भगवान् श्री कृष्ण श्री अर्जुनभक्तराज से कहते हैं कि दो अक्षर वाले श्री रामनाम का जिसने कीर्तन कर लिया, वे समझिये कि चारों वेद साङ्गोपाङ्ग पढ़ चुके, सभी यज्ञ कर चुके और उसने तीनों लोकों का उद्धार भी कर लिया।

'चत्वारः पठिता वेदास्सर्वे यज्ञाश्च याजिताः।
त्रिलोकी मोचिता तेन राम इत्यक्षर द्वयम्।।'

श्री विष्णु पुराण में आया है कि इस भूमंडल में जिनको श्रीरामनाम के प्रभाव, माहात्म्य का ज्ञान विज्ञान नहीं है, वहीं नाम रटन छोड़कर यज्ञादिक कर्म तथा ज्ञानादि उपार्जन में नाहक रचते–पचते रहते हैं।

'केचिद्यज्ञादिकं कर्म केचिद्ज्ञानादि साधनम्।
कुर्वन्तिनाम विज्ञान विहीना मानवा भुवि।।'

꧁ सर्वश्रेष्ठ साधना नामजप है ꧂

कोई जप को,कोई आचार विचार टकसार को, कोई योग साधना को अच्छा बताते हैं। कोई अनेक प्रकार के विचार पूर्वक ज्ञान को श्रेयस्कर बताते हैं। कोई कहते हैं कि स्त्रीभोग त्याग कर, त्याग वैराग्य से हृदय जागृत होगा। श्री बड़े महाराज की मान्यता में अपनी—अपनी जगह सब सत्य है, परन्तु श्री जानकी रमण जू का सीताराम नाम सभी साधनों से अनुपम है।

'कोऊ कहे जप नेम अचार भलो कोउ योग बखानत नीको।
कोउ वदे वर ज्ञान विचार प्रकार अनेक तहाँ करि ठीको।।
कोउ कहैं किये त्याग विराग सही जिय जाग उठे तजि ती को।
(श्री) युगम अनन्य है सत्य सभी पर नाम अनूप सदा सिय पीको।।२२५०।।
'राम महामुद धाम सुनाम अखंड उचार करो तजि के जग।
सिद्ध सिरोमनि संतन को मत है इह उज्ज्वल धारु जगामग।।
काहू की ओर न दृष्टि करो दिन रैन छको रसनाम सुधा संग।
(श्री) युग्म अनन्य में भूलो कहीं अनुराग बिना पथ और महाठग।।२७४२।

नामही के रटे ते उदासता विनास है।
प्रीति परतीति रस रीति सुविनीत गुन।
गहर गंभीर धीर सीर सुख रास है।
लोक परलोक में असोक तम तोक बिना
महत महानन की सभा में सुवास है।।
अनायास उदित मुदित अभिलाष खाश
मधुर सुमंजु कंज बिसद विकास है।
श्री युगल अनन्य सिद्धि सब करतल नित
नाम ही के रटे ते उदासता विनास है। २१७०।।
सीताराम नाम ही से आदि अंत काम है।
चोज चतुराई चटकाई चपलाई चारि—
रोज ही की चाँदनी अंधेरे परिणाम है।
देखिये दराज दृग धृग धेय संग त्यागि
पागि प्रेम रंग रस रास गौरश्याम है।।
केतो करौ कौल हौल हीयको कुडौल तौल
तकिये तलाश तीन खेद खेह खाम है।
श्री युगल अनन्य मूढ़मध्य में मलीन मद
सीताराम नाम हीं से आदि अंत काम है।। १३१।।

श्री गोस्वामिपाद ने भी श्री विनयपत्रिका में कहा है–

भलो जो है पोच जो है दाहिनो जो वाम रे।
रामनाम ही से अंत सबही को काम रे।।

मरने पर हमारे शव के साथ लोग राम नाम सत्य है का नारा लगाते जावेंगे। अभी से हम चेतकर उस सत्य स्वरूप रामनाम का अवलंब कस कर क्यों नहीं पकड़ें ?

बोलिये प्रेम से श्री सीताराम नाम की जय!

आज ही से नाम जप में लग जाइये। समय बीतने पर हाथ मलमलकर पछताना पड़ेगा।

, आज की दुर्दशाग्रस्त स्थिति में रामनाम की आवश्यकता ,

इस संदर्भ में हम श्रीराम–नाम–विज्ञान के यशस्वी लेखक गंभीर विचारक, श्री रामनामानुरागी पं० जगदीश शुक्ल के विचार यहाँ साभार उद्धृत करेंगे।

'आज की बिगड़ी परिस्थिति को सुधार सकने की सामर्थ्य एकमात्र रामनाम में ही है। आजकी हमारी चमगादुरी और उल्लू की आँखों को प्रकाश ही अन्धकारमय दीख रहा है और अन्धकार ही प्रकाशमय तभी तो हम अधर्म को धर्म, अकर्त्तव्य को कर्त्तव्य और विनाश को विकास मान बैठे हैं, और तो और, हमने शिक्षा को भी भोग के ही तराने का तबलची बना दिया है। एक ओर सह–शिक्षा व्यभिचार की वैतरणी बहा रही है, तो दूसरी ओर सार्वजनिक शिक्षा अर्थके द्वार की भिक्षुकी बन गई है। आज की अंधी शिक्षा को भी आँख देने वाला यह रामनाम ही होगा। राम नाम ही गाँधी के हृदय से आधुनिक शिक्षा के प्रभाव–परिधान को उतार फेंका और उन्हें सच्चे अर्थ में शिक्षित बना रखा था।

जब तक हम राम–नाम के रम्य रसायन को अपने रोम–रोम में रमाएँगे नहीं, तब तक कानून कागज पर कराहते ही रह जाएँगे और विकास की योजनाएँ रोती ही रह जाएँगी। कर्मठ कार्यकर्त्ता आकाश पाताल एक करते ही रह जाएँगे और सुधार के लिए उछल कूद मचती ही रह जाएगी, किन्तु संकुचित भावना का अंत नहीं होगा, क्षूद्र स्वार्थ साधना की वृति नहीं मिटेगी, त्याग, तपस्या और प्रेम का उदय नहीं होगा, परिणामतः सुख शान्ति के दर्शन दुर्लभ ही रह जाएँगें और हाहाकार की बीमारी बढ़ती ही चली जाएगी। सारी बीमारियों की दवा है राम नाम और सभी समस्याओं का समाधान है राम–नाम। राजनीतिक तथा सामाजिक उलझनों की सुलझन और साम्प्रदायिक तथा पारस्परिक उलझावों का सुलझाव भी राम–नाम ही है। राम–नाम हमें स्वार्थ त्याग का और विश्व–प्रेम का पाठ पढ़ाएगा। रामनाम ही हमारी संकुचित मनोवृतियों को विश्वव्यापिनी बनाकर, हमें 'स्वदेश भुवनत्रयम्' और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना जगायेगा।

सारे ज्ञानों, विज्ञानों और कलाओं की आत्मा राम–नाम ही है। राम–नाम से शून्य ज्ञान भी अज्ञान, विज्ञान का वरदान भी प्रलय का आह्वान है और कला की क्यारी भी विष की फुलवारी

है। सभी विद्याओं और कलाओं को अपने मंगलमय प्रकाश से प्रकाशित और प्रोद्भासित करने वाला, उन्हें उपकारक तथा उद्धारक बनाने वाला राम–नाम ही है। रामनाम से शून्य विज्ञान के कारनामों को जापान में जाकर पूछिये। वैज्ञानिक विध्वंस के शिकार हुए वहाँ के हिरोशिमा और नागाशाकी नगर खाक की ढेर हुए, अपने कलेजे के टुकड़ों को दिखला–दिखला कर आप को विज्ञान की प्रलय–लीला की वानगी बता देंगे। जहाँ फौलाद भी पिघल कर बह गया, वहाँ देहधारियों की दुर्दशा की क्या चर्चा? यह भी साफ साफ समझ लीजिये कि विज्ञान बुरी वस्तु नहीं है, बुरी वस्तु है उसका दुरुपयोग और उस दुरूपयोग का कारण है विज्ञान का राम–नाम से अलगाव। विज्ञान मानव–जीवन का सुदृढ़ पाँव है तो राम–नाम आन्तरिक आँख। इसलिए विज्ञान के बिना मानव–जीवन लँगड़ा है, तो राम–नाम के बिना विक्षिप्त और अंधा। राम–नाम जीवन को दिशा बतलाता है– और विज्ञान उसको गति देता है। इस प्रकार राम–नाम मानव जीवन का निर्देशक है और विज्ञान गतिवर्द्धक ? हाँ, राम–नाम की आवश्यकता अनिवार्य है क्योंकि राम नाम–जीवन की भीतरी आँख हैं। इसके बिना मानव–जीवन अन्धा ही नहीं पागल भी है और अपने ही लिए नहीं, संसार के लिए खतरा भी है।

इसी प्रकार राम–नाम राजनीति का भी पथ–प्रदर्शक है। इसकी भीतरी दृष्टि है, राम–नाम को दृष्टि से सूनी अतएव अंधी राजनीति क्या–क्या गुल खिला सकती है, यह तो अमेरिका और रूस के पैंतरे ही हमें आए दिन बता रहे हैं। यह आधुनिक राजनीति क्यों सारे संसार में तबाही मचा रही है? इसलिए कि इसको दिग्भ्रम हो गया है– इसके पास राम–नाम का दिशा–निर्देशक यंत्र नहीं है और राम–नाम के कारखाने की गढ़ी हुई विज्ञान की गति–वर्द्धक मशीन नहीं है। फिर यह विपरीत दिशा में न जाय तो कैसे? विगति को प्रगति नहीं मानें तो कैसे?

श्रीरामजी की भरी सभा में अपने वक्षस्थल की विदीर्ण करके, उसके भीतर रामनाम के पक्के अक्षर दिखला देने वाले हनुमान जी हमें आज भी बतला रहे हैं कि यदि तुम्हारे हृदय में राम–नाम नहीं है, तो तुम उसे विदीर्ण कर डालो, उससे न तो तुम्हारा ही हित हो सकता है, न तुम्हारे समाज का ही। राम–नाम से शून्य हृदय नहीं है, समाज समाज नहीं है, और शास्त्र–शास्त्र नहीं है। गाँधी जी के हृदयोंदयाचल से जब राम–नाम का सूर्योदय हुआ, तो उन्होंने राजनीति के मंदिर में राम–नाम की प्रतिष्ठा कर डाली और भारतीय राजनीति मंदिर को भी साधना मंदिर बना डाला।

भगवन्नाम की साधना किये बिना किसी भी सेवा की साधना शुद्ध नहीं रह सकती। इसीलिए वह सफल और लोक मंगलकारिणी भी नहीं बन सकती। गाँधी जी ने राम–नाम की साधना की, उनके मन में जब राम–नाम रम गया,तब उस मन में रामराज्य की कल्पना आई और उस जागृत स्वप्न को साकार करने के लिए वे जीवन–भर जूझते रहे। राम–नाम के द्वारा त्याग और तपस्या की, सेवा और सदाचार को, तथा प्रेम और करुणा की भावना जगा जगा कर वे

रामराज्य का ही नव निर्माण कर रहे थे। सच मानिये, रामनाम का अवलंब लिए बिना मानवता के गुण स्थायी और सच्चे कल्याणकारी हो ही नहीं सकते। बिना राम–नाम के उनकी आत्मशुद्धि जो नहीं होती, उसमें चिरन्तन प्रकाश जो नहीं आता। आज के सत्ताधारियों ने राम–नाम का वह चश्मा ही अपने हृदय की आँखों से उतार दिया। इसका फल यह हुआ कि उन्हें भोग में ही भगवान का भ्रम हो गया। इनके सेवाभाव में राम–नाम का प्रकाश जो रहा नहीं, इसीलिए गाँधी परम्परा से प्राप्त हुई शुद्ध और लोकतारक सेवा भी इनके हाथों में आकर विकृत–ग्रस्त, लोक–पीड़क, भ्रामक अतएव असफल बन गयी। आज भी इनके सामने नक्शा तो है राम–राज्य का ही, किन्तु बनता जा रहा है क्रमश: रावण राज्य। तो इस अकल्पित कार्य का कारण है राम–नाम की साधना का अभाव। अतएव भोगभावना के प्रत्यक्ष आक्रमण का प्रत्यक्ष प्रभाव।

सच मानिए, राम–नाम युग–युग का धर्म तो है ही, आज का युगधर्म भी यही है। तभी तो युग पुरुष गाँधी जी अपनी युगवाणी से इस तारक युग मंत्र के युगाक्षरों के द्वारा देश के कोने–कोने को गुंजाते रहे, वे युग युग के इस गान को युग गान बनाकर, झूम–झूम कर गाते रहे, दुनिया में घूम–घूम कर दुहराते रहे और जगाते रहे अपने जनता जनार्दन को।

आज संसार के सभी देश विश्व युद्ध से थककर, विश्व–शान्ति का सच्चा और पक्का मार्ग ढूँढ़ रहे हैं। यदि वे सच्चाई और गहराई के साथ सोचेंगे, तो इन्हें भगवन्नाम के भूगर्भ में ही विश्व–शान्ति की और विश्व बन्धुत्व की पाताल गंगा लहराती हुई मिलेगी, जहाँ गोते लगाकर संसार के स्वार्थमय संघर्ष का सारा का सारा कल्मष सदा के लिए साफ हो जाएगा और विश्व सुख तथा विश्व शान्ति और स्वर्गीय स्त्रोत अपने हाथ में आ जाएगा।

मैं मानव मात्र से यह पुनीत प्रार्थना करता हूँ कि प्रत्येक मानव भगवन्नाम की महिमा को समझे, विश्व कल्याण को ध्येय बनाकर शुद्ध हृदय से भगवन्नाम जपे और गावे। इस प्रकार सहज ही विश्व कल्याण भी हो जायगा और सच्चा आत्म कल्याण भी।

सतरहवीं सती के अंत में औरंगजेबी अत्याचार की विषवह्नि में जलते हुए राष्ट्र को बचाने के लिए तत्कालीन राष्ट्रीय चेतना के प्रबोधक और उद्घोषक परमाचार्य समर्थ गुरु रामदास ने राष्ट्र के संरक्षक और उन्नायक छत्रपति शिवाजी को तेरह अक्षरों वाले तारक का उपदेश दिया था–'श्री राम जय राम जय जय राम। श्री राम जय राम जय जय राम।।' यही नारा उस युग का राष्ट्रीय नारा था, जिसका उद्घोष करते हुए हमारे राष्ट्र के सच्चे वीरों ने उस समय अपना बेजोड़ बलिदान किया और सच पूछिये तो औरंगजेब के अत्याचार का अन्त ही करके छोड़ा। इसीलिए इस नारे में विशुद्ध राष्ट्रीयता, विश्व प्रेम और वीरत्व की भावना लहरा रही है। हम आज भी अतीत के इस विजयगान की तान छेड़ सकते हैं और अपनी भारतीय भावना के कमान पर इस अमोघ वाण का सन्धान कर अपनी राष्ट्र चेतना की नसों में दिव्य और भव्य प्राणों की प्रेरणा भरकर राष्ट्र के सम्पूर्ण संकट को हर सकते है। यह घोष सम्पूर्ण भारतीय

संस्कृति का मूलमंत्र, विश्व शान्ति के साधक, तान्त्रिकों का यशस्वी यंत्र और हमारी राष्ट्रोपासना का तगड़ा तन्त्र है। यह हमारा दिग्विजयी और विश्व–विजयी राष्ट्र–गीत, अतीत की पुनीत प्रेरणा ही नहीं, वर्तमान की अतुल उत्तेजना भी है और हमारे उज्ज्वल भविष्य का द्रष्टा तथा स्रष्टा भी। यह उद्घोष हमारे जोश का ही प्रेरक और उत्तेजक नहीं है, हमारे होश का संजीवक, पोषक और संवर्द्धक है। यह नारा शान्ति की बिजली बनकर ही हमारी नस–नस में नहीं समा जाता, हमें शील और संस्कृति की संजीवनी भी पिलाता है और विशुद्ध मानवता और विश्व–शान्ति का प्रोज्ज्वल प्रकाश भी देता है। इसीलिए यह हमारा पारमार्थिक प्राण है और व्यावहारिक शान्ति समर का रणवाद्य या शंखनाद है। कहाँ है आज देश के हमारे 'समर्थ गुरु' और 'छत्रपति' जो हमसे इस सिद्ध नारे का उदघोष कराकर, हमारे पतन की मरूभूमि में उत्थान की मन्दाकिनी बहा दें और हमें कुभावना के कुंभीपाक से निकाल कर सद्भावना के साकेत में पहुँचा दें। इस परम और चरम साध्य की सिद्धि का सफल मंत्र है–

'श्री राम जय राम जय जय राम। श्री राम जय राम जय जय राम।'

, मूर्ख– शिरोमणि ,

एक बड़ा धनी सेठ था। उसके पास एक सीधा गरीब ग्रामीण रहा करता था। एक दिन सेठ ने उसे अपना डंडा दिया। उस भोले हँसमुख ग्रामीण ने पूछा–''सेठजी, मैं इसका क्या करूँ? सेठ ने हँसते–हँसते जवाब दिया कि इसे तुम अपने पास रख, तुझसे बढ़कर कोई मूर्ख कभी मिले तो उसे दे देना, इतने दिन अपने पास रखना। ''उसने कहा बहुत ठीक।'' यों कहकर वह चला और उस डंडे को लिये गाँव में फिरने लगा। सेठ जब मिलता तब उससे पूछता–क्यों? क्या तुझे अपने से बढ़कर कोई मूर्ख अभी नहीं मिला? तब तो मैंने तुझको सबसे बड़ा मूर्ख समझकर सच्ची ही परख की है। इस तरह सेठ उससे दिल्लगी किया करता।

सेठ बीमार पड़ा,एकदिन बीमारी बहुत बढ़ गयी मरने का समय नजदीक मालूम पड़ने लगा। उससमय ग्रामीण ने आकर सेठ से पूछा–

''क्यों सेठजी क्या करते हो?'' सेठ–''अब तो चलने की तैयारी है।''

ग्रामीण –लौटकर, कबतक आओगे? सेठ–भाई अब मुझे तो वहाँ जाना है, जहाँ से लौटकर नहीं आया जा सकता । ग्रामीण–पाथेय और राहखर्चा तो साथ ले लिया है न? सेठ– भाई! यहाँ का पाथेय वहाँ काम नहीं आता। मैंने धन तो बहुत कमाया था, परन्तु इस जगत से मिली हुई सारी चीजों को अंत में यहीं छोड़ जाना पड़ता है। संसार के लोग जिस वस्तु को धन समझते हैं,महात्मा उसे धन नहीं मानते। कबीरजी ने कहा है–

'कबीरा सब जग निर्धना, धनवंता नहि कोय। धनवंता से जानिये जाके रामनाम धन होय।'

परन्तु भाई! इस रामनाम धन में तो मैं कंगाल हूँ रंक हूँ। इसीसे इस भरे हुए घर में जैसे खाली हाथ आया था, वैसे ही खाली हाथ जा रहा हूँ।

ग्रामीण—तुम तो जाते हो, अब यह तुम्हारा डंडा किसे दूँ?

सेठ— तुझसे कहा था न कि जो तुझे अपने से मूर्ख दीखे उसे ही दे देना। इसमें पूछना क्या? ग्रामीण— तो सेठ! यह तुम्हारा डंडा तुम्हीं रखो। सेठ—क्यों? किसलिये? ग्रामीण— जहाँ थोड़े दिन रहना है उस जगत के लिए तो इतना बड़ा वैभव! इतनी सम्पत्ति और इतना अटूट धन! और जहाँ अनंत काल नक रहना है वहाँ के लिये कुछ भी नहीं। इससे बढ़कर मूर्खता और क्या होगी? मैं मूर्ख हूँ तो तुम मूर्ख शिरोमणि हो। इसलिये अपना डंडा संभालो।

ग्रामीण के आखिरी शब्द सेठ के हृदय को चीरकर अन्दर प्रवेश कर गये। बड़ा असर हुआ और उस समय सेठ से जो कुछ बन सका उसने कर लिया।

''तुलसी अजहुँ सुमिरि रघुनायक तरे गपंद जाके एक नाँय। कछु ह्वै न आयो गयो जन्म जाय।''

काशी में एक दिन गंगा किनारे भक्त कबीर जी बैठे हुये थे। एक जिज्ञासुने जाकर पूछा कि ''महाराज— शास्त्रों में जहाँ तक ज्ञानकी बड़ी प्रशंसा की गई है परन्तु किसी से अमर ज्ञान के सम्बन्ध ा में पूछा जाय तो उत्तर मिलता है कि ज्ञान तो अनहद हैं। उसकी कोई हदही नहीं बताता। इसलिये क्या करना चाहिये?

श्रीकबीरजीने कहा—ज्ञान की हद मैं जानता हूँ। जिज्ञासु ने कहा''तो महाराज बतलाने की कृपा कीजिये''। श्रीकबीर जी ने कहा—

''पढ़ने की हद समझ है,समझन की हद ज्ञान।
ज्ञानकी हद हरिनाम है, यह सिद्धान्त उर आन।।''

ज्ञानी भी ज्ञान की कथा कहते—कहते अंत में भगवान्नाम स्मरण करते हैं और तभी वे शान्ति पाकर विराम को प्राप्त होते हैं। अतएव तू हरिनाम में चित्त लगा।

''भलो जो है पोच जो है दाहिनो जो वाम रे। रामनाम ही सो अंत सबही को काम रे।।''

अभी से क्यों न लग जायँ?

जब बोलने की शक्ति नहीं रहेगी, प्राण पखेरू इस देह पिंजरे में से उड़ गया होगा, तब पीछे से सब कहेंगे ''रामनाम सत्य है।'' परन्तु जब तक शरीर ठीक है, देह में आत्मा है, जीभ में दो शब्द बोलने की ताकत है तब तक रामनाम लेने की सीख कोई नहीं देता।''अब रखवारी क्या करे चिड़िया चुग गई खेत। इस बात को तो कोई भाग्यशाली संत ही समझते है जो सब छोड़ नाम जप में तत्पर हैं।

'' रसनियाँ काहे न नाम उचारो।
लोलुप भयउ लोभ लालच बस, जाय सुजन्महि हारो।।
कामद धन दारिद दुकाल हर, सो तुम निपट विसारो।
लघुजीवन जिय जानि भजहु नित, सियवर प्रीतम प्यारो।।
काल कराल सीस पर नाचत, मूढ़ गाल जनि मारो।

सुत वनिता धन धाम विषय सुख, दुख सम जानि निवारो।।
जौं आपन भल चहहु सकल विधि, मोर कह्यो चित धारो।
सुमिरहु नाम चारु चिंतामनि नाते सब परि टारो।।
सेवहु संत अनंत छाड़ि छल, पटकि लाजको भारो।
ऊँच कहाय कवन सुख जो पै निज आतमा न तारों।।
प्रेमलता मैं मोर तोर करि राग रोष जिय जारो।"

ज्ञान और विराग योग जाग तप त्याग करैं।।
सिद्ध भये तरैं माया बीचही में लूटती।
तीरथ व्रतादि दान साधन अनेक धरै
पचि मरै चावल लहै न भूसा कूटती।।
भक्ति महारानी भवभानी जुक्ति जानी परै
ताहू में तो लालच लवारी आदि जूटती।
शंभु शिर सुरसरि धरि भनी 'रंगमनी'
राम नाम जाप विन ताप त्रै न छूटती।।

अनल के कारन रकार बिन कुकरम
कोटिन कलप के जराय को पचाइहै?
त्योंही आदि आदित के कारन अकार बिन
माया मोह निशा अंधकार को नसाइ है?
चन्द्र मोद कारन मकार बिन तीन ताप
छीन कर कौन शीत शांति सरसाइ है?
जपै 'रसराम' सीताराम जो जपावै आप
रामनाम जाप बिन जरनि न जाइ हैं।।

राम यश गाये बनी सबै रसरंग मनी
गाल गुल ज्ञान के गपोड़े नहि गपिये।
करम कलाप पापलीन धन के अधीन
करिकै वृथा ही न प्रयास ताप तपिये।।
पढ़ि पढ़ि ग्रन्थ पाठ पाथर न कीजै मन
गान तान चोज चतुराई में न चपिये।
लाखन में एक बात संत सीख सुखदात
शुभ गति चाहिये तो रामनाम जपिये।

गाइये न ग्राम गीत सुनिये नहीं सुप्रीत
हारी भवभीत रामकथा सुधा पीजिये।
चढ़िये न पंथन में पढ़िकै विवाद ग्रन्थ
पर दोष देखन में चित्त नहीं दीजिये।।
योग औ विराग तप त्याग हू की आस त्यागि
पागि रसरंग सदा संत संग कीजिये।
कोटिन में एक बात काशीपति करामात
रामधाम चाहिये तो रामनाम लीजिये।।

नाम लेने का मजा जिसकी जुबाँ पर आ गया।
धन्य जीवन हो गया चारों पदारथ पा गया।।

सीखो है सिलाक औ कवित्त छंद नाद सबै
ज्योतिपहू सीखो मन रहत गरूर में।
सीखो है सौदागिरी बजाजी और रस रीती
सीखो लाख फेरन में बहो जात पूर मे।।
सीखो सब जंत्र मंत्र तंत्रहू को सीख लानो
पिंगल पुरान सीखो सीखो सीख भयो सूर में।
सव गुन खान भयो निपट सयान राम
रटियो न सीखो सब सीख गयो धूर में।।

''तुलसी चतुर सराहिय रामनाम लयलीन।
पर धन पर मन हरन को वेश्या बड़ी प्रवीन।।
रामनाम रटते रहो, धरे रहो उर धीर।
कारज सकल सँवारिहैं, कृपासिंधु रघुवीर।।
बिगड़े जनम अनेक को, सुधरे अबही आज।
होये राम को नाम जपु, तुलसी तजि कुसमाज।।
नहि कलि करम न भगति विवेकू। रामनाम अवलंबन एकू।।

काहू के आधार ग्यान भगति विराग योग
काहू के आधार जप दान तप धाम है।
काहू के आधार पाठ पूजन रसोइ केर
काहू के अधार रूप चरित ललाम है।।
काहू के अधार ब्रत नेम नृत्य गान तान
काहू के अधार ध्यान भजन अकाम है।

काहू के अधार बुधि विरति विवेक बल
मेरे तो अधार एक सीताराम नाम है।।
काहू के अधार याग यजन विराग भाग
काहू के मनन भाव कोऊ अष्टयाम है।
कोविद कहाय कविताई में प्रवीन कोऊ
काहू के अधार सतसंग गुनग्राम हैं।।
काहू के अधार न्याय जोतिष पुरान मत
काहू के अधार अथ यजु रिग साम है।।
काहू के अधार गुन वचन निपुनाई
मेरे तो अधार एक सीताराम नाम है।।
काहू के अधार भ्रात सुजन सहाय मीत
काहू के अधार माय बाप सुत बाम है।।
काहू के अधार हाट वाट के अधार कोऊ
काहू के अधार खाट गाँठि माहि दाम है।।
काहू के अधार दिन राति के अधार केऊ
काहू के अधार हिम काहू के सुघाम है।
जीविका अधार कोऊ कोऊ के अधार तन
मेरे तो अधार एक सीताराम नाम है।।
लीला धाम रूप की अराधना कठिन अति
रोगन ग्रसित तनु कलिकाल राई है।
उठति अनेक व्याधि प्रेम नेम छूटि जात
एकरस एक टेक रहे न दृढ़ाई है।।
होत न विमल उर किये योग जप तप
पूजन पठन मति भोगन लुभाई है।
प्रेमलता ज्ञान ध्यान साधन उपाधि मय
सीताराम नाम की अपार प्रभुताई है।।

श्रीसीताराम नाम जप ही भजन है, नामजप ही शरणागति है, नामजप ही भक्ति है,नामजप ही ब्रह्मविद्या है, नामजप ही पराभक्ति है, नामजप ही प्रभु—प्राप्ति तथा पराभक्ति प्राप्ति का एकमात्र अमोध उपाय है। कहिये सभी अन्य साधनों से मुँह फेर कर केवल सीतारामनाम जपियेगा न अब?

❧ २—साध्य—खण्ड ☙

□ श्रीसीताराम नाम अनादि हैं □

कतिपय व्यक्तियों के हृदय में यह भ्रान्त धारणा बैठी है कि श्रीकौशलेन्द्र कुमार के अवतार होने पर, आप का रघुकुल गुरू श्री वशिष्ठजी द्वारा नामकरण के अवसर पर श्री रामनाम रखा गया। तभी से श्रीरामनाम का प्रचलन हुआ है। इसके पहले से अनादि सिद्ध श्रीनारायणादि सगुणब्रह्म के नाम भक्तसमाज में प्रचलित थे। ऐसे सज्जन को आधुनिक विद्वत्समाज द्वारा मान्य प्रमाण श्रीमानसजी की निम्न उद्धृत पंक्तियों पर विचार करना चाहिए।

''विषय करन सुर जीव समेता। सकल एक ते एक सचेता।।
सब कर परम प्रकासक जोई। राम अनादि अवधपति सोई।।''

यहाँ श्रीरामनाम अनादि, नित्य अवध अनादि तथा श्रीराम का अवधपति होना भी अनादि सिद्ध कहा गया है। यह उक्ति जगद्गुरु भगवान शंकरजी की थी।

अब आप और भी प्रमाण श्रीरामनाम के अनादि होने के विषय में लीजिये। श्रीमहाभारत शान्ति पर्व में स्वयं भगवान श्रीकृष्ण ने भक्तराज अर्जुन से कहा है कि चारों वेदों में, पुराणों में, उपनिषदों में, ज्योतिषशास्त्रों में, सांख्यशास्त्र योग शास्त्रों में तथा आयुर्वेद आदि सद्ग्रन्थों मे महर्षियोने हम ब्रह्मों के बहुत से नाम गिना गये है। परन्तु वे सभी नाम अमुक अमुक लीला कार्य करने के निर्मित्त तत्त समयों में भक्तों द्वारा कहे गये। अत: वे सभी नाम गौण हैं, सादि है। भगवान्नामों को ही क्या कहें सभी मंत्रतत्त्वों में भी श्रीरामनाम परात्पर हैं? अत: अनादि हैं।

''ऋग्वेदेऽथ यजुर्वेदे तथैवार्थव सामसु।
पुराणे सोपनिषदि तथैव ज्योतिषेऽर्जुन।।
सांख्ये च योगशास्त्रे च आयुर्वेदे तथैव च।
बहूनि मम नामानि कीर्तितानि महर्षिभि:।।
गौणानि तत्र नामानि कर्मज्ञानि च कानि च।
सर्वेषु मन्त्र तत्त्वेषु रामनाम परात्परम्।।''

श्री आतप स्मृति में कहा गया है कि श्रीरामनाम नित्य हैं। सनातन है। ऐसे नाम का निरन्तर उच्चारण करते रहना इस जगती तल में सबों के लिए परम लाभदायक है। यहाँ सनातन शब्द से अनादि का ही भाव ग्रहण करना चाहिए।

''अयमेव परो लाभः सर्वेषां जगतीतले।
नाम व्याहरणं नित्यं श्रीरामस्य सनातनम्।।''

श्रीबृहस्पति स्मृति में श्रीरामनाम को परंब्रह्म कहकर अनादि बताया हैं क्योंकि परंब्रह्म अनादि है और सभी देवताओं से पूजित होना इनका महत्त्व परिचायक हैं। ऐसी विशुद्ध सम्मति सबों की है। महान् जनों को तो श्री रामनाम जप कर ही जीना भाता हैं।

''रामनाम परंब्रह्म सर्वदेवैः प्रपूजितम्।
सर्वेषां सम्मतं शुद्धं जीवनं महतामपि।।''

श्री शुक संहिता में श्री रामनाम को सनातन एवं श्री राघव के लिए परमप्रिय नाम बताया गया है। श्रीवृन्दावन विभूषण भगवान्श्री कृष्ण इसी रामनाम को जपकर वहाँ शोभा सम्पन्न हो रहे हैं। यहाँ भी सनातन शब्द में अनादित्व ही का भाव भरा है।

'' रामस्याति प्रिय नाम रामेत्येव सनातनम्।
दिवारात्रौ गृणन्नेषों भाति वृन्दावने स्थितः।।''

श्री केदारखंड में भगवान शंकरजी ने पार्वतीजी से कहा है कि श्रीसगुणब्रह्म के और जितने भी नाम है वह लीलाकार्यों को सम्पादन करते समय, उन कार्यों के सम्बन्ध से रखे गये। यथा मुरारि, खरारि इन नामों को राक्षसों के मारने पर रखे गये। परन्तु श्रीरामनाम सबों के आदि हैं।

''अन्यान्य यानि नामानि तानि सर्वाणि पार्वति।
कार्यार्थे सम्भवानीह राम नामादितः प्रिये।।''

श्री काशीखंड में भी भगवान शंकरजीने श्री रामनामही को आदि नाम कहा है। श्रीराम नाम के विमल सुयश को श्री ब्रह्मा, भगवान विष्णु के साथ हम (श्रीशिवजी) भी प्रेम पूर्वक कहते हैं और सुनते हैं। वही श्री रामनाम सकलेश्वर हैं और हैं आदि देव भी।

'' यस्यामलं प्रिय यशः सुयशो विधाता, ताक्ष्र्यध्वजश्च गिरिजे नितरां तथाहम्।
प्रेम्णा वदामि च शृणोमि सहैव ताभ्यां, तद्रामनाम सकलेश्वरमादि देवम्।।''

श्री इतिहासोत्तम नामक उप पुराण में महर्षि भृगुजी कहते हैं कि आदि पुरुष परात्पर ब्रह्म श्रीराघवजी का आदि रामनाम कोई स्वप्न में भी उच्चारण कर ले तो उसके समस्त पाप जलकर भस्म हो जाते हैं। यदि श्री रघूत्तमजू के आदि रामनाम को कोई यत्नपूर्वक जपता है तो उसका क्या कहना है।

''स्वप्नेऽपि नामस्मृतरादिपुंसः क्षयं करोत्याहित पाप राशिः।
प्रयत्नतः कि पुनरादिपुंसः संकीर्त्यते नाम रघूत्तमस्य।।''

श्री विष्णुपुराणमें श्रीव्यास देवजी ने कहा है कि श्रीराधवजी का सर्वश्रेष्ठ नाम श्रीराम है वही सनातन भी है। श्रीविष्णुनारायणादि नामों से हजार गुणा अधिक फल देने वाले हैं।

''श्रीरामेति परं नाम रामस्यैव सनातनम्।
सहस्रनाम सादृश्यं विष्णोर्नारायणस्य च।।''

श्रीशिवपुराण में भगवान शंकरजी ने श्रीनारदजी से कहा है कि श्रीरामनाम सकलेश्वर आदि देव है। जो ऐसे नाम का सतत स्मरण करते हैं भूतल मे वेही धन्य हैं। उन्हे परममुक्ति (श्रीसाकेत की प्राप्ति) तथा अचल विमल भक्ति एवं प्रभु श्रीराघवजी के कृपा प्रसाद सब मिलेंगे।

''श्री रामनाम सकलेश्वरमादि देवं
धन्या जना भुवितले सततं स्मरन्ति।
तेषां भवेत्परम मुक्ति प्रयत्नतः तथा
श्रीरामभक्तिरचला विमला प्रसाददा।।''

श्री सुश्रुतसंहिता में श्री रामनाम को प्रणव ॐ का भी कारण बताकर अनादि जनाया गया है तथा श्रीरामनाम ही को जगद्‌गुरु के पदपर प्रतिष्ठित किया गया है। अतः विशुद्ध चित्तवाले योगियों को श्रीरामनाम ही का ध्यान श्रेयस्कर बताया गया है।

''कारणं प्रणवस्यापि रामनाम जगद्‌गुरुम्।
तस्माद्धेयं सदा चित्ते यतिभिः शुद्ध चेतसैः।।''

परात्पर सगुण साकार ब्रह्म श्री अयोध्याबिहारी जी तत्त्वतः एकही ब्रह्म हैं परन्तु स्वरूपतः आपके पति पत्नी भावात्मक युगलरूप अनादिसिद्ध है। श्रीवृहद्‌विष्णुपुराण में श्री पराशरजी मैत्रेयजी से यही कहते हैं।

''द्वयोर्नित्यं द्विधा रूपं तत्त्वतो नित्यमेकता।
राममन्त्रे स्थिता सीता सीतामन्त्रे रघूत्तमः।।
यतो वर्णात्मको रामः सीता मात्रात्मिका भवेत्।
यदा शब्दात्मको रामः सीता शब्दार्थ रूपिणी।।''

श्रीमानसजी के नीचे लिखे उद्धरणों से भी दोनो में अपृथक् सिद्ध सम्बन्ध निश्चित होता है। एक दूसरे से कभी नहीं पृथक् रह सकते।

''गिरा अरथ जल बीचि सम, कहिअत भिन्न न भिन्न।
बन्दौं सीतारामपद जिन्हहि परम प्रिय खिन्न।।''
''प्रभा जाइ कहँ भानु विहाई। कहँ चंद्रिका चंदु तजि जाई।।''
प्रभु करुणामय परम विवेकी। तनु तजि रहहि छाँह किमि छेकी।।

जैसे एक ही ब्रह्म स्वरूपत: युगल भाव से नित्य अखंड ब्रह्म कहाते हैं उसी भाँति ब्रह्म का सीतारामनाम पूर्ण नाम है। श्रीराम का श्रीसीता खंड नाम है। पूर्ण नाम का आधा भाग ही है। ब्रह्मपुराण में यही कहा गया है।

''सीताराम नाम्नस्तु सदैक्यं नास्ति संशय:।
इति ज्ञात्वा जपेद् यस्तु स धन्यो भाविनां वर:।।''

आधा खंड नाम जपने वाले को नाम जप का पूर्ण लाभ नहीं होता। श्रीजानकी विनोद विलास नामक आर्ष ग्रन्थ में कहा है कि सीतानाम के बिना रामनाम जपे अथवा रामनाम के बिना सीताराम जपे तो उसे चिरंकाल तक नामसाधना करने पर भी यथार्थ सुख नहीं होगा। अत: युगल भावात्मक ब्रह्म का ही ध्यान पूजन अथवा नाम जप करना चाहिये।

सीतां बिना भजेद्रामं सीतां रामं विना भजेत्।
कल्पकोटि सहस्त्रैस्तु लभते न प्रसन्नताम्।।
सीतारामात्मकं ध्यानं सीतारामात्मकार्चनम्।
सीतारामात्मकं नाम जपं परतरात्परम्।।

सच्ची बात तो यह है कि जहाँ श्रीसीतासहचारिणी रूप से श्रीराम के संग में नहीं हों वहाँ धोखा ब्रह्म है सच्चे ब्रह्म नित्ययुगलरूप में ही रहते हैं। उसी भाँति श्रीरामरूप के बिना श्री सीतारूप अकेले धोखा ब्रह्म है। एक दूसरे के बिना रह ही नहीं सकते। युगलरूप ही सनातन ब्रह्म हैं। ऐसा श्रीजानकी विलासोत्तम नामक आर्षग्रन्थ में कहा गया है।

''स रामो न भवेज्जातु सीता यत्र न विद्यते।
सीतानैव भवेत् सा हि यत्र रामो न विद्यते।।
सीता रामं बिना नैव राम: सीतां बिना नहि।
सीतारामयोरेण सम्बन्ध: शाश्वतो मत:।।''

अब विचारना यह है कि श्री वैदेही, मैथिली, जानकी, किशोरी, श्री प्रिया आदि आपके अनेक नामों में अनादि कौनसा नाम है? श्री लोमश संहिता में आपका सतातन अनादि नाम (श्री) सीता ही कहा गया है।

''यज्ञ दान तपस्तीर्थ स्वाध्यायात्मबोधत:।
कोटि संख्यं राम नाम्नि पावित्र्यं वर्तते प्रिये ।।
तत: कोटि गुणं पुण्यं सीतानाम सनातनम्।
इति ज्ञात्वा भजन्त्येतान् मुनयो नारदादय:।।''

अर्थात् यज्ञ, दान, तप, तीर्थ, वेदाध्ययन, आत्मज्ञान आदि साधनों से कोटि गुणा अधिक फल है। एक बार श्रीरामनाम के उच्चारण में और एक बार श्रीसीतानाम उच्चारण करने से श्री रामनामोच्चारण के कोटिगुणा अधिक फल है। श्रीसीतानाम की अधिक महिमा कहने का कारण भी है। जगत्पिता की अपेक्षा जगज्जननी में वात्सल्य, क्षमा, करुणा आदि गुण अधिक होना स्वाभाविक है।

"गह सिसु वच्छ अनल अहि धाई। तहँ राखइ जननी अरगाई।।"

पिता अबोध संतान की सुरक्षा में इतने तत्पर नहीं रहते जितना जननी। और भी कारण है वह श्रीगुणरत्नकोष के शब्दों में पढ़िये।

"मातर्मैथिलि राक्षसीस्त्वयि तदैवार्द्राऽपराधास्त्वया
रक्ष्यन्त्या पवनात्मजाल्लघुतरा रामस्य गोष्ठीकृता।
काकं तं च विभीषणं शरणमित्युक्ति क्षमौ रक्षता
सा नः सान्द्र महागसं सुखयतु क्षान्तिस्तवाकस्मिकी।।"

अर्थात् रावण वधोपरान्त अशोकवाटिका में जाकर जब श्रीहनुमानजी ने सद्यः अपराधकृत राक्षसियों को अंग भंग करके उन्हें ताड़ना दे देकर श्रीमैथिलीजी से मारने की आज्ञा माँगी, तब आपने श्रीहनुमानजी को नीति बताकर राक्षसियों की रक्षाकर ली। याद रहे कि इससे पहले राक्षसियों ने आपसे रक्षा करने की प्रार्थना भी नहीं की थी। श्री राघवजी के शरणागत दरबार में इतनी छूट नहीं है। वहाँ तो काकरूपधारी जयंत को त्राहि– त्राहि कहना पडा था। श्रीविभीषणजी को भी–

"श्रवण सुजस सुनि आयउँ, प्रभु भंजन भव भीर।
त्राहि त्राहि आरति हरन, सरन सुखद रघुवीर।।"

इनता तो कहना ही पड़ा तब जाकर उनकी रक्षा हुई। अतः जगज्जननी श्रीजानकीजी की क्षमाशीलता के सामने श्रीराघवजी की रक्षागोष्ठी हलकी हो गई। वही श्रीजानकीजू की आकस्मिकी क्षमाशीलता हम महापापी शरणागतों के लिए सुखद होगी। अतः श्रीसीतानाम भी क्षमादि गुणाधिक्य से भरा है। इसी दृष्टि से इस नाम की महिमा श्रीरामनाम से अधिक बतायी गई है। श्रीसीतानाम ही अनादि है ऐसा प्रमाण तो आपने श्रीलोमशसंहिता का पढ़ ही लिया। और भी युक्तिवाद सुनिये। अवतार लीला मे नामकरण के अवसर पर श्रीवशिष्ठजी ने आपका प्रधान नाम रखा वही अनादि सिद्ध(श्री) राम।

"सो सुखधाम राम अस नामा। अखिल लोक दायक विश्रामा।।"

उसी भाँति श्रीनारदजी ने आपका नाम (श्री)सीता रखा था। तथा उसी नाम को तीनों लोकों में प्रसिद्व बताया भी।

"इयं पुत्री महाभाग कुलद्योतकरी तब।
सीतेति नाम्ना विख्याता भविष्यति जगत्त्रये।।"

श्री परमहंस प्रेमलता जी कृत श्रीजानकीजन्म स्तुति में भी यही कहा गया है।

"ऋषि नारद आये, नाम सुनाये,सुनि सुख पाये,नृप ज्ञानी ।
सीता अस नामा पूरनकामा सब सुखधामा, गुनखानी।।"

आपकी अवतरण स्थली भी उसी अनादि नाम से संयुक्त है श्रीसीतामही। आपकी परत्व परिचायिका उपनिषद् भी आपके अनादि नाम से ही संयुक्त है सीतोपनिषद्। शिष्य परम्परा में श्री सीतारामनाम ही जपने की रीति चली आ रही है।

''आदौ सीतापदं पुण्यं परमानन्द दायकम्।
पश्चाच्छ्री रामनाम्नस्तु कथनं संप्रश्यते।।''— श्री नृसिंह पुराणे

श्रीमनुशतरूपाजी की तपस्या सिद्ध होने पर जब स्वयं श्री साकेतविहारी युगलरूप प्रगट हुए उस अवसर पर भी आपके श्रीसाकेतधाम का नित्य सनातन अनादि नाम सीताराम ही कहा गया है। और श्रीसीताजी के अनादि होने का हेतु भूत इन्हें वहाँ आदिशक्ति कहकर साथ—साथ इन्हें कोटि—कोटि उमा रमा ब्रह्माणियों को उत्पन्न करने वाली कहकर आपका परात्पर ऐश्वर्य भी सूचित किया गया है।

''वाम भाग सोभति अनुकूला। आदिसक्ति छबिनिधि जगमूला।।
जासु अंस उपजहिं गुन खानी। अगनित लच्छि उमा ब्रह्मानी।।
भृकुटि विलास जासु जग होई। रामबाम दिसि सीता सोई।।''

''सुनु सीता तब नाम सुमिरि नारि पतिव्रत करहिं।
तोहि प्रानप्रिय राम, कह्यों कथा संसार हित''

इस दोहे में भी श्रीसीतानाम ही रटने को कहा गया है। महर्षि कल्प श्रीस्वामी जानकीवरशरणजी महाराज ने भी श्रीसीता ही नाम रटने का आदेश दिया है। श्रीजानकी जन्म बधाई का पद है।

''जय जय जय श्रीस्वामिनि सीता।

श्री जानकिवर की प्रानपियारी,जपत रहत नित सीता सीता।।''

श्रीगोलाघाट सद्गुरुसदन के श्री महाराज भी अनन्त नामों में श्रीसीतारामनाम पर ही अड़ने की बात कहते हैं।

''सुनयना माई सिय सब गुनन भरी।
उमा रमा ब्रह्मानि अंसजा, निगम परत्व करी।।
श्री मनु मननशील अति तप करि, सेयो परम हरी।
सोइ दशरथ नृप अवध ललन भये, सोइ प्रभु इनहिं वरी।।
इन्हके नाम अनन्त संत कहैं,सीतानाम अरी।
अति मृदुतर चित नित हित हुलसत प्रीतम स्ववश करी।।
सत्य सत्य यह सत्य कहत है, जेहि प्रिया दृष्टि परी।
सोइ भव तरिहि सु युगल विहारिनि मिलि गुरु सुफल फरी।।''

श्रीगुरुधौली वाले महाराज भी श्रीसीतानाम को ही अनादि बताते हैं।

''नहि सरि करै हमारी स्वामिनि।
गंधर्व नाग यज्ञ किन्नर सिधि साध्य गुह्यक विद्याधर कामिनि।
पंचवटी वनिका असोक की, गुन तद्रूप वपुष अभिरामिनि।।

केहि लेखै रति सहित त्रिया त्रय,वृन्दा विपिन विहारिनि स्वामिनि।
सर्वेश्वरी सिरोमनि सबकर,परम प्रकासक पर दुति दामिनि।।
परतम ब्रह्म परतमा महिषी, सीता नाम अनादि सुनामिनि।
मिथिला अवध राज कामद पिय 'मधुरी' सँग विहरत दिन जामिनि।।''

पं० जगदीशशुक्ल अपने श्रीरामनाम विज्ञान में लिखते हैं 'रामनाम की सत्ता सनातन और पुरातन है। संसार परिवर्तनशील है और रहेगा। अनेकों प्रकार के आन्दोलन हुए और मिटे। शासकों का उदय भी हुआ और अस्त भी। साम्प्रदायिकों और दार्शनिकों की कुश्तियों हुई, राजनीतिज्ञों और सत्ताधि ाकारियों की लड़ाइयाँ हुई तथा लुटेरों और आक्रमणकारियों की हलचलें हुई। किन्तु इनसे राम–नाम की सत्ता और महत्तापर कोई आँच नहीं आयी। इतिहास साक्षी है कि १३२५ से १३५१ के बीच मे राम–नाम के मूलोच्छेद के लिए तनी हुई बादशाह मुहम्मद तुगलक की तीखी तलवार को स्वामी रामानन्दाचार्य के एक ही हुँकार पर लकवा मार गया और सम्पूर्ण शासन असमर्थ होकर आचार्य के पावन पाद पद्मों में घुटने टेक दिये। मुसलमानी शासन के धर्मोन्मूलक अत्याचारों से ऊबकर मस्जिद दौड़ाने वाले महान् योगेश्वर बाबा श्यामदास जी ने हजारों नगरों में हजारों मस्जिदों को दौड़ा दिया जो आज भी जहाँ की तहाँ पड़ी हुई रामनाम की शक्ति और सामर्थ्य की गवाही दे रही है। प्रमाण के लिए आप सिन्धराज्यके शिकारपुर नगर में जाकर फरलाँग दौड़कर सड़क पर पड़ी हुई बूढ़ी मस्जिद से उसका इतिहास पूछ सकते है और मुसलमानी अत्याचारो के दाँत खट्टे कर देने वाली नामनाम की सत्ता का स्मरण कर सकते हैं। इस प्रकार रामनाम की सत्ता को भी दबाए रही और झुकाए रही उसे सदैव अपने चरणों पर। यह सत्य जो है, शिव जो है सुन्दर जो है।

सर्वोत्तम भगवन्नाम

श्रीपद्मपुराण में ब्रह्मा का वचन है श्रीनारदजी के प्रति

श्रीविष्णु नारायणादि जितने असंख्य भगवन्नाम हैं, सभी श्रीरामनाम से ही उत्पन्न हुए हैं, और सभी हरिनामोंके वैभव भी रामनाम ही से प्राप्त हैं। इस बात को मैंने भलीभाँति जान लिया हैं। अतः श्री देवर्षिजी आप भी श्री रामनाम ही का जप करें।

''विष्णु नारायणादीनि नामानि चामितान्यपि।
तानि सर्वाणि देवर्षे जातानि रामनामतः।।
सर्वेषां हरिनाम्नां वै वैभवं रामनामतः।
ज्ञातं मया विशेषेण तस्मात् श्रीनाम संजय।।''

श्री विष्णु पुराण में उल्लिखित श्री भगवान वेदव्यास का कथन है कि भगवान विष्णु के एक–एक नाम सर्ववेदाध्ययन से बढ़कर है और ऐसे सहस्रों विष्णु नाम से बढ़कर एक बार का श्री

रामनाम उच्चारण है। ऐसी सज्जनों की सम्मति है। श्री राघवजी का सर्वोत्तम और सनातन नाम तो श्रीराम ही है। श्रीविष्णु नारायणादि नामों से अनंत गुणा बढ़कर है।

''विष्णोरेकैक नामापि सर्ववेदाधिकं मतम्।
तादृग्नाम सहस्रेण नामनाम सतां मतम्।।
श्री रामेति परं नाम रामस्यैव सनातनम्।
सहस्रनाम सादृश्यं विष्णोर्नारायणस्यच।।''

इतिहासोत्तम नामक आर्ष ग्रन्थ में स्वयं परमपुरुष भगवान अपने वैष्णव भक्तों को उपदेश देते हुए आदेश देते हैं कि श्री रामनाम के समान कोई नाम न तो अब तक हुआ है न भविष्य में होगा ही। अतएव आप सब इसी नाम का कीर्त्तन कर (शुभाशुभ कर्म) बन्धनों से मुक्त हो जाइये।

''रामनाम समं नाम न भूतो न भविष्यति।
तस्मात्तदेव संकीर्त्त्य मुच्यते कर्मबन्धनात्।।''

प्रभासपुराण में स्वयं परमप्रभुकी श्रीमुखवाणी है, श्री नारदजी के प्रति—देवर्षे, हमारे सभी नामों में मुख्यतम नाम श्री रामनामही है। समस्त प्रकार के प्रायश्चित इसी नामके उच्चारण मात्र से हो जाते है तथा सभी प्रकार के पापों से जापक मुक्त हो जाता है। श्रीरामनाम मेरे लिये प्राणों से बढ़कर प्रिय है। श्री नारद आप सत्य सत्यजानिये रामनाम से बढ़कर मेरे लिये प्रिय कोई वस्तु नहीं है। (तब तो प्रभो! श्री रामनाम के जापक भी आपको सर्वाधिक प्रिय होंगे ही? क्यों हम ठीक कहते हैं न?)

''नाम्नां मुख्यतमं नाम श्रीरामाख्यं परन्तप।
प्रायश्चितमशेषाणां पापानां मोचकं परम्।।
श्रीरामनाम परमं प्राणत्प्रियतरं मम।
नहि तस्मात् प्रियः कश्चित सत्यं जानीहि नारद।।''

'क्रियायोगसार' नामक आर्षग्रन्थ में कहा गया है कि भगवान विष्णु का एक—एक नाम समस्त वेदाध्ययन से बढ़कर मंगलदायक है। उन सभी विष्णुनारायणादि नामों में नाम तत्त्व के ज्ञाता श्रीरामनाम ही को सर्वश्रेष्ठ बताते हैं। इसलिये बताते हैं कि श्रीविष्णुसहस्त्रनाम पाठ करने से जो लाभ होगा, उससे अधिक तो केवल एक बार श्रीरामनाम के उच्चारण मात्र से ही हो जायगा।

''विष्णो र्नामानि विप्रेन्द्र सर्व वेदाधिकानि वै।
तेषां मध्ये तु तत्त्वज्ञ रामनाम परं स्मृतम्।।
विष्णोर्नाम सहस्राणि पठनाद्यल्लभते फलम्।
तत्फलं लभते मर्त्यो रामनाम स्मरन्सकृत्।।''

श्रीशिवसंहिता में कहा गया है कि श्रीनारायणादि भगवन्नाम बहुत अधिक संख्या में रटते जाओ परन्तु इनमें प्रभावप्रकाश तो श्री रामनाम ही से मिलेगा। अब बताइये आप ही, जब ये

नाम श्रीरामनाम ही से माँगकर प्रकाश जापक को देंगे तो जापक सीधे श्री रामनाम ही क्यों न रटेगा? अब साकार निराकार की बात भी सुन लीजिए। श्री नारायणादि नाम तो सगुण साकार ब्रह्म के हैं। निरीह अज आदिक नाम निर्गुण निराकार ब्रह्मके है। दोनों के ऐश्वर्य प्रभाव अलग अलग है। परन्तु जो नित्य नवलमाधुरी से विभूषित श्रीसाकेतधाम के संशोभित करने वाले श्रीदशरथनन्दन श्रीराघवजू है उनमें दोनों साकार निराकार ब्रह्मों के ऐश्वर्य एकत्र भरे हैं। श्रीरामनाम सगुण निर्गुण दोनों ब्रह्मों को प्रगट करने वाले हैं। श्रीमानसजी का वचन है—

''अगुन सगुन बिच नाम सुसाखी। उभय प्रबोधक चतुर दुभाषी।।''

अत: श्री रामनामके स्मरण से ही साक्षात् श्रीरामधाम नित्य अयोध्या(श्रीसाकेत) में आपका प्रवेश संभव है।

''नारायणादि नामानि कीर्त्तितानि बहून्यपि।
सभ्यग् भगवतस्तेषु रामनाम प्रकाशकम्।।
नारायणादि नामानि साकारैश्वर्यमुक्तमम्।
नित्यं ब्रह्म निराकारमैश्वर्य वै विभाति च।।
उभयैश्वर्यमान्नित्यो रामो दशरथात्मजः।
साकेते नित्य माधुर्ये धाम्नि संराजते सदा।।
रामनाम परं तत्त्वं द्वयोः कारणमुज्ज्वलम्।
तस्य संस्मरणादेव साक्षाद्रामालयं ब्रजेत्।।''

(जब अपने इष्टधाम श्री साकेत की प्राप्ति एकमात्र श्रीसीतारामनाम जप से ही संभव है तबतो हम भूलकर भी कभी अन्य नाम का उच्चारण नही करेंगें। चर्चावश भले कहा जाय। जपने के ख्याल से तो कहेंगे ही नहीं) अब आप जरा श्री पुलस्त्यसंहिता की बात भी सुन लीजिये। श्रीकृष्ण श्रीवासुदेव आदि अनेक भगवन्नाम है सही, परन्तु वेदों ने तो उन सबों में सबसे बड़ा श्री रामनाम ही को बताया है।

''कृष्णेति वासुदेवेति सन्ति नाम्नान्यनेकशः।
तेभ्यो रामेति यन्नाम प्राहुर्वेदाः परं मुने।''

किन्तु कठिनाई यह है श्री कृष्ण नारायणादि नाम तो झट से निकल आवेंगे, परन्तु सरल उच्चारण वाले श्रीरामनाम कहने में नानी मर जायगी। मरे क्यों नहीं? पापियों के मुख से सीधे रामनाम कैसे कहा जायेगा? तभी तो पूर्वजीवन में व्याधवृत्ति में फँस जाने के कारण श्रीवाल्मीकिजी को मुखसे सीधे रामनाम कहते नहीं बना। सप्तर्षियों ने बताया, खैर मरा मरा उल्टा ही नाम जपो तो सही। इससे भी बन जायगा! क्या अन्य भगवान्नाम भी उल्टे जपने पर फलदायक होंगे। आप बोलते क्यों नहीं? सच सच क्यों नहीं बताते?

अत: श्रीरामनाम जापक बनने के लिए पहले हजारों जन्मों तक श्री कृष्ण नाम अथवा श्रीनारायण नाम को दिन–रात अखंड जप करो। तब कहीं जाकर, श्रीरामनाममें अनुराग होगा। दिलग्गी है श्री रामनाम जपना? ऐसा प्रौढ़ वचन हम नहीं कहते हैं। श्री वशिष्ठतन्त्र में ऐसा आया है—

''कृष्ण नारायणादीनि नामानि जपतोनिशम्।
सहस्रैर्जन्मभिः रामनाम स्नेहो भवत्युत।।''

कहाँ तक प्रमाण दिये जाँय? श्रीमेरूतन्त्र में भी कहा गया है कि भगवान्नामों में सबसे मुख्यनाम श्रीरामनाम ही है। अनन्त ब्रह्माण्डों में प्रचलित भगवान्नामों में श्रीरामनामसे बढ़कर कहीं भी कोई दूसरा नाम नहीं देखा गया है।

''नाम्ना मुख्यतमं नित्यं रामनाम प्रकीर्तितम्।
नातः परतरं नाम ब्रह्माण्डेऽपि प्रदृश्यते।।'

श्रीमहारामायणमें भगवान शंकरजी श्रीपार्वतीजी से कहते है परमेश्वरके अनन्त नामों में श्रीरामनाम सर्वोत्तम है।

''परमेश्वर नामानि सत्यनेकानि पार्वति। परन्तु रामनामेदं सर्वेषामुत्तमोत्तमम्।

श्रीपद्मपुराण का यह श्लोक प्रसिद्ध ही है—

''राम रामेति रामेति राम रामे मनोरमे।
सहस्र नाम तात्तुल्यं रामनाम वरानने।।''

श्रीमानस में भी इसका अनुवाद है—

''सहस नाम सम सुनि सिय बानी। जपि जेई पिय संग भवानी।।''

देवर्षि नारदजी ने स्वयं श्रीराघवलाल से वरदान माँगा है। आपके श्रीरामनाम पापनाशन में सबसे बड़े समर्थ सिद्ध होवें। आपकी भक्तिरूपी पूर्णिमा की रात में श्रीरामनाम पूर्णचन्द्रवत् बने रहें। उनके सामने अन्य नाम तारागणवत् स्वल्प प्रकाश वाले बने रहेंगे। ऐसी ही नाम झाँकी आपके भक्तों के हृदयाकाश में सदैव बनी रहे।

''यद्यपि प्रभु के नाम अनेका। श्रुति कह अधिक एक ते एका।।
राम सकल नामनते अधिका। होउ नाथ अघ खग गन बधिका।।
राका रजनी भगति तब, रामनाम सोइ सोम।
अपर नाम उडगन विमल, बसहु भगत उर व्योम।।''

अब हम स्थानाभाव से अधिक प्रमाण न देकर अपने पूर्वाचार्य अनन्त श्रीस्वामी युगलानन्यशरणजी महाराज के श्रीसीतारामनाम सनेह वाटिका से केवल दो घनाक्षरी कवित्त उद्धृत कर, इस प्रकरण को समाप्त करते हैं।

'नाम तो अनन्त तामें रामनाम भूप है।''
नारायणादि नाम कहे कोटि वार तऊ
तुल्यता न होत नाम वारक अनूप है।
और नाम देत भुक्ति मुक्ति विष्णुलोक लगि
रटे रामनाम देश पावै रसरूप है।।

कीजिये न हठ सठपन छोड़ि दीजे नाम
परम पीयूष और मत अंधकूप है।
(श्री)युगल अनन्य साँच बदत बजाय बात
नामतो अनन्त तामें रामनाम भूप हैं।।
और नाम अपर मनीन के समान स्वच्छ
रामनाम चित्त चिंतामनि चाहि चाह रे।
और नाम रैयत दिवान औं वजीर सम
रामनाम अचल अखंड बादशाह रे।।
और नाम शिष्य सद् समता सजाये सदा
रामनाम गुरु गुन अगम अथाह रे।
(श्री) युगल अनन्य और नाम दिन चारि यार
रामनाम एक रस नित्य निर्वाह रे।।"

कृपालु पाठक बतायें इतने शास्त्रों के प्रबल प्रमाण की जानकारी होने पर आप कौन–स भगवन्नाम जपेंगे?

''जैसे ब्रह्मरूपन में राम महाराजा रूप
धामन में राजा धाम अवध सुभ्राजा है।
जैसे सब ग्रन्थन में राजा वाल्मीकि काव्य
कविन में वालमीकि सुजस दराजा है।।
रामभक्त धीरन में राजा हनुमंत वीर
तारक षडक्षर ज्यों मंत्रन समाजा है।
ईश शिरताजा जपै शंभु रसराममनी
सब हरिनामन में रामनाम राजा है।।"

कतिपय समन्वयवादी सज्जन और भगवन्नामों को युक्तिवाद से रामनाम के तुल्य ही प्रभावयु बताते है। वे इतने शास्त्रप्रमाणों की कैसे उपेक्षा करेंगे? यदि करें भी तो उनकी कौन सुनता है? भक्तसमा में सर्वाधिक प्रचार और प्रसार तो श्रीरामनाम का ही है।

ॐ सर्वश्रेष्ठ मन्त्र ॐ

हम श्रीरामनाम को मन्त्र कैसे मान लें? मन्त्र में तीन अंगों का होना आवश्यक है। आदि में वागबीज ऐं, कामबीज क्लीं, शक्तिबीज ह्रीं श्रीबीज श्रीं आदि अनेक मन्त्रबीजों में किसी न किसी बीजाक्षर की संगति मन्त्र देवता के वाचक नाम के साथ होना अनिवार्य है। सो श्रीरामनाम में नहीं देखते। पुन: वषट्, फट्, वौषट्, स्वाहा, नम: आदि शक्तियों में किसी एक भी शक्ति का साहचर्य श्री रामनाम में है नहीं। अत: बीजहीन शक्तिहीन कीलक(मन्त्र देवता का वाचक) मन्त्र को मन्त्रकोटि में परिगणित करना कैसे बने? किसी भी तार्किक के मन में ऐसी शंका उत्पन्न होना सहज सम्भव है।

समाधान यह है कि रामनाम सवांगपूर्ण मन्त्र ही नहीं महामन्त्र है। श्रीरामशब्द स्वत: बीज रूप हैं। ये अग्निबीज है, भानुबीज है,चन्द्रबीज है, सर्वशक्ति बीज है, सभी मन्त्र बीज है, सर्ववेद बीज है, चराचर जगत बीज है। यहाँ तक कि सभी भगवन्नामों के बीज तथा सभी सगुणब्रह्मों के अवतार बीज भी श्रीरामनाम ही है। तब अलग से बीज जोड़ने की क्या आवश्यकता? अब उपर्युक्त बीजों के लिए प्रमाण लीजिये:—

अग्नि सूर्य तथा चन्द्र बीज—

वंदौ नाम राम रघुवर के। हेतु कृशानु भानु हिमकर के।।

श्रीमहारामायण में श्रीरामनाम स्थित रकारमात्र को वडवानल से लेकर सभी अग्नियों का कारण माना गया है। अत: रकार मनोमल तथा शुभाशुभ कर्मों को भस्मकर देते हैं जो अन्य किसी भी अग्नि से सम्भव नहीं।

''रकारोऽनल बीजं स्याद् ये सर्वे वडवादय:।
कृत्वा मनोमलं सर्व भस्मकर्मशुभाशुभम्।।''

श्रीरामनाम के मध्याकार से सूर्य उत्पन्न होते हैं। अत: अकार के प्रभाव से जापक के हृदय में वेदशास्त्रों के बिना पढ़े ज्ञान हो जाता है। श्रीरामनाम स्थित मकार से अमृतपूर्ण चन्द्रमा उत्पन्न होते हैं।

''अकारो भानुवीजं स्याद् वेदशास्त्र प्रकाशक:।
मकारश्चन्द्र बीजं च पीयूष परिपूर्णकम्।।''

श्रीरामनाम त्रिदेवों के भी बीज अर्थात् उत्पन्नकर्ता है। श्रीरामनाम के रकार मात्र से ब्रह्मा विष्णु महेश तथा सभी शक्तियों का प्रादुर्भाव होता है। अत: शक्ति बीज भी हैं।

''रकाराज्जायते ब्रह्मा रकाराज्जायते हरि:।
रकाराज्जायते शुम्भु: रकारात्सर्व शक्तय:।।''

सभी मन्त्रबीज श्रीरामनाम:—

श्रीपद्मपुराणमें श्रीशिवजी पार्वतीजी से कहते हैं कि श्रीरामनाम असंख्य मन्त्रों तथा असंख्य भगवन्नामों के बीज है। परमानन्ददाता हैं। वे महामन्द हैं जो इनकी उपेक्षा करके अन्य साधन में समासक्त हो रहे हैं।

''असंख्य मन्त्र नाम्नां च बीजं शर्म्मास्पदं परम्।
अनादृत्य महामन्दाः संशक्ताश्चान्य साधने।।''

श्रीपुलहसंहिता कहती है कि सभी मन्त्र तत्त्व श्री रामनाम में इस प्रकार गुप्तरूप से स्थित हैं जैसे पिटारी में छिपाये हुए रत्न हों।

''यथाकरण्डे रत्नानि गुप्तान्यज्ञै र्न दृश्यते।
तथैव सर्वमन्त्राश्च रकारेषु व्यवस्थितः।।''

श्रीमहाशम्भु संहिता में श्री मैथिलीजी स्वयं अपने प्राणवल्लभजू से कहती हैं। प्रियतम! कोई प्रणव को कोई आपके षडक्षर मन्त्रराज से बड़ा बताते हैं, परन्तु मेरे मत से दोनों ही आपके रामनाम से ही सिद्ध हैं। अतः दोनों के कारण भूत आपके नाम ही बड़े हैं।

प्रणवं केचिदाहुर्वै बीजं श्रेष्ठं तथापरे।
तत्तु ते नामवर्णाभ्यां सिद्धिमाप्नोति मे मतम्।।''

सगुणनिर्गुण ब्रह्मवीज श्रीरामनाम ही है।

श्रीशिवसंहिता में श्रीनारायणादि सगुण ब्रह्म तथा नित्य निराकार ब्रह्म का भी कारण रामनाम को कहा गया है। यदि उभय ब्रह्म अनादि हैं किन्तु नामजप से ही इन दोनों के अनुभव होते हैं। इस दृष्टि से दोनों के प्रगट करने वाले श्रीरामनाम वीजभूत हुए। अतः श्रीरामनाम संस्मरण से श्री रामधाम की प्राप्ति होती है।

''नारायणादीनि नामानि साकारैश्वर्यमुत्तमम्।
नित्यं ब्रह्म निराकारमैश्वर्यं वै विभाति च।।
रामनाम परं तत्त्वं द्वयोः कारणमुज्ज्वलम्।
तस्य संस्मरणादेव साक्षाद्रामालयं ब्रजेत।।''

सगुणब्रह्मों के अवतार बीज श्रीरामनाम हैं।

श्रीस्कन्द पुराण में श्री शिवपार्वती संवाद रूप में कहा गया है कि सभी अवतार श्रीरामनामकी शक्ति से प्रगट होते है। सत्य कहता हूँ। देवि! श्रीरामनाम की महिमा बड़ी अद्भुत है।

'' सर्वेऽवतारा श्रीरामनाम शक्ति समुद्भवाः।
सत्यं वदामि देवेशि! नाम माहात्म्यमद्भुतम्।।''

पुनः वायु पुराण में भी यही बात आयी है।

''सर्वेषामेवावताराणां कारणं परमाद्भुतम्।
श्रीमद्रामेति नामैव कथ्यते सद्भिरन्वहम्।।''

श्रीरामनाम अनन्त ब्रह्माण्डों के तथा चराचर जगत् के बीज हैं। श्रीपद्मपुराण में कोटि—कोटि ब्रह्माण्डों को रामनामांश से उत्पन्न कहकर त्रिदेवसहित उनकी स्थिति भी रामनाम ही में बतायी गयी है।

'रामनामांशतो जाता ब्रह्मामण्डाः कोटिकोटिशः।
रामनाम्नि परं धाम्नि संस्थिता स्वामिभिस्सह।।'

श्रीरामपूर्वतापनी उपनिषद में सम्पूर्ण सचराचर जगत की स्थिति श्रीरामनाम में उसी भाँति बतायी गयी है, जैसे वटबीज में वट के विशालवृक्ष गुप्तरूप से स्थित रहते हैं।

'यथैव बटबीजस्थः प्राकृतश्च महाद्रुमः।
तथैव रामबीजस्थं जगदेतच्चराचरम्।।''

सभी वेदों के बीज भी रामानाम ही हैं—

श्री भुसुण्डि रामायण कहती है श्रीरामनाम असंख्य कोटि लोकों के जैसे कारण हैं, उसी भाँति सभी वेदों के भी बीज हैं।

'असंख्य कोटि लोकानामुपाददानं परात्परम्।
तथैव सर्ववेदानां कारणं नाम उच्यते।।'

श्री पुलहसंहिता का कहना है कि जैसे बीज ही में शाखापल्लव संयुक्त विशालवृक्ष सूक्ष्म रूप से छिपे रहते हैं, उसी भाँति समस्त वेदराशि श्रीरामनाम के रकार में स्थित रहती है।

'बीजे यथा स्थितो वृक्षः शाखा पल्लव संयुतः।
तथैव सर्व वेदाश्च रकारेषु व्यवस्थिताः।।'

ऊपर भी श्रीरामनाम को सर्वशक्ति बीज कहा जाता है। श्रीवृहद्विष्णुपुराण में श्रीपराशर जी ने अपने शिष्य से कहा है कि स्वभाविकीशक्ति, ज्ञानशक्ति, क्रियाशक्ति आदि जितनी भी लोकपूज्या शक्तियाँ हैं, सभी श्रीरामनाम के अंश से ही उत्पन्न हैं।

'स्वाभाविकी तथा ज्ञानक्रियाद्याः शक्तयः शुभाः।
रामनामांशतो जाता सर्वलोकेषु पूजिताः।।'

उपरिनिर्दिष्ट उद्धरणों से स्पष्ट हो गया है कि श्रीरामनामात्मक मन्त्र बीजहीन नहीं है। स्वयं बीजभूत हैं अतः बीज एवं कीलक उभय मन्त्र संपत्ति एकमात्र श्रीरामनाम ही में है। रही नमस्कारात्मक शक्ति की बात, सो श्रीनाम स्वयं सर्ववेद मुनि भक्त जन नमस्कृत हैं। जिनको सभी नमन करें, जो सबके नम्य हों, वही तो नाम है। इसी दृष्टि से ऋग्वेद की संहिता ५। ३। १० कहती है।

'भूरि नाम वन्दमानो दधाति।।'

भक्तराज अर्जुन भगवान् श्रीकृष्ण के श्रीमुख से श्रीरामनाम की स्तुति सुनकर, श्रीआदिपुराण में नित्य विशुद्ध रामनाम को बार—बार नमस्कार करते हैं।

'नमोस्तु नामनित्याय नमो नामप्रभाविणे।
नमोस्तु नामशुद्धाय नमो नाममयाय च।।'

अत: श्रीरामनाम सर्वाङ्गपूर्ण सिद्धमन्त्र शिरमौर हैं। अनेक वैदिकमन्त्रों के द्रष्टा, तान्त्रिक तथा शाबरमन्त्रों के स्रष्टा, मंत्ररहस्य, मर्मज्ञ, मौलिमणि भगवान् शंकर श्रीरामनाम ही को महामन्त्र एवंबीजमन्त्र मानकर जपते हैं।

'बन्दौ नाम राम रघुवर को। हेतु कृसानु भानु हिमकर को।।
विधिहरिहरमय वेद प्रान सो। अगुन अनूपम गुन निधान सो।।
महामन्त्र जोइ जपत महेसू। कासी मुकुति हेतु उपदेसू।।'
वीर महा अवराधिये साधे सिधि होय।
सकल काम पूरन करै जानै सब कोय।।
बेगि विलम्ब न कीजिये लीजै उपदेस
बीजमन्त्र जपिये सोई जो जपत महेस।।श्रीविनय प० १०८।१२।

अत: श्रीसीतारामनाम केवल भगवन्नामो में ही सर्वोत्तम नाम हों, इतना ही नहीं, इन श्रीनाम में सभी तन्त्रमन्त्रोंकी शक्ति भरी है। या यों कहिये कि मन्त्रशास्त्रोंमें प्रशंसित सभी महामन्त्रों में भी रामनाम ही सर्वश्रेष्ठ मन्त्र हैं। इस सम्बन्ध के शास्त्रप्रमाण तो और बहुत हैं। हम केवल थोड़े से प्रमाण पाठकों के हृदय में अपने जाप्यनाम में मन्त्रात्मक प्रभाव दृढ़ाने के लक्ष्य से उद्धृत करते हैं।

श्रीनारद पञ्चरात्रसंहिता में कहा गया है कि श्रीरामनाम ही सभी मन्त्रों के शिरोमणि हैं। अन्य मन्त्रों को भी इन्हीं के प्रभाव से सिद्धि मिलती है। श्रीरामनामही में सभीं नामों, मन्त्रों की सिद्धियाँ सिमट कर भरी हैं। अत: श्रीरामनामात्मक भावप्रिय मन्त्र ही को जपना चाहिये।

'अयं सर्वेषु मन्त्रेषु चूड़ामणिरूदाहृत:।
मन्त्राणां सिद्धिदो मन्त्र: श्रीरामेत्यक्षरद्वयम्।।
सर्वार्थ सिद्धि युक्तेषु नाम्नामेवार्थतायत:।
अत: श्रीरामनामेदं भजेद्भावैक वल्लभम्।।'

बात ब्रह्मयामल नामक मन्त्रशास्त्र की है। भगवती पार्वती अपने प्राणनाथ भगवान शंकर से पूछती हैं, प्रभो, आपने कई मन्त्रशास्त्रों में औरों की दृष्टि से अलक्ष्य होने की गुटिका नामक तंत्रात्मिका युक्ति बतायी। विशेष खड़ाँऊ पर चढ़कर, जल में स्थल की भाँति चलने की युक्ति भी बतायी। दूसरेके शरीर में अपनी जीवात्मा को प्रवेश कराने का मंत्र भी बताया। वचन सत्य होने की शक्ति प्राप्त करने वाले मन्त्र बताये। सभी सृष्टि के धन देखने की अर्थसिद्धि भी बतायी। मन में जो आवे, वही सिद्ध हो जाय, ऐसी मनोमयी सिद्धि भी बतायी। ज्ञान–विज्ञान के चमत्कार प्रगट करने वाली लक्ष्मी कुतूहल की सिद्धि, मनोरथपूर्ति वाली वाञ्छासिद्धि तथा आकाश में उड़ने की शक्ति देने वाली खेचरी सिद्धि बताई। इन सभी सिद्धियों के पृथक–पृथक मन्त्र हैं। अब मैं यह जानता चाहता हूँ कि कोई ऐसा एक ही मन्त्र है क्या, जिस एक ही मन्त्र से सभी प्रकार की सिद्धियाँ प्राप्त हो जायँ? मुझे अपनी अनुगामिनी जानकर मुझे छिपाइये नहीं। मन में मंत्र शक्तियों का प्रभाव निर्णय कर, तत्त्वत: कहिये।

गुटिका पादुका सिद्धिः परकाया प्रवेशनम्।
वाचा सिद्धिश्चार्थ सिद्धिस्तथा सिद्धिर्मनोमयी।।
ज्ञान विज्ञान कर्माणि नाना सिद्धिकराणि च ।
लक्ष्मी कुतूहला सिद्धि र्वाञ्छा सिद्धिस्तुखेचरी।।
केनेदं सर्वमाप्नोति देव मे वद तत्त्वतः।
सर्वतो निर्णयं कृत्वा ज्ञात्वा मामनुगामिनी।।

भगवान शंकरजीने उपर्युक्त प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा कि प्रिये, तुमने तो केवल सर्वसिद्धियों को देने वाला एकही मन्त्र पूछा। मैंतो तुम्हें ऐसा मंत्र बताऊँगा, जो समस्त सिद्धियोंको देने में अकेले समर्थ होगा। वही मंत्र सभी प्रकारका ऐश्वर्य भी देगा, उसीसे परामर्थ भी सिद्ध होगा। लौकिक पारलौकिक मंगलों को नित्यनित्य देनेवाला भी वही मंत्र समर्थ होगा। बतावें ? वही मंत्रजपो, जो बताऊँ। वह है सभी नामोंसे, सभी मंत्रोंसे बढ़कर परात्पर प्रभाव रखनेवाला श्रीरामनाम। सच्चासुख पाने के लिए श्रीरामनामजप से बढ़कर, कोई उपाय है भी नहीं। सभी तंत्रमंत्रों का तत्त्व मुझे मालूम है। मैं सत्य कहता हूँ, सत्य कहता हूँ, विल्कुल सत्य कह रहा हूँ।

'सर्वैश्वर्य प्रदं सर्वसिद्धिदं परमार्थदम्।
महामाङ्गलिकं नित्यं रामनाम परात्परम्।।
नातः परतरोपायः सुखार्थं बर्तते प्रिये।
सत्यं सत्यं पुनः सत्यं नान्यथा वचनं मम।।'

संमोहन नामक तंत्रशास्त्रमें भी भगवान् शंकरजीने पार्वतीजी से यही बात बताई है। हे पार्वति! मैने जितने मंत्रों के चमत्कार बताये हैं, उन सभी मंत्रों द्वारा प्राप्त होनेवाली सिद्धियाँ, एक मात्र श्रीरामनामही से निश्चित रूपसे मिल जाती हैं। बात यह है कि उन मंत्रों के शास्त्रोक्त प्रयोग साधकोंसे सविध बन नहीं पाते। अतः उन मंत्रोंके प्रयोग सहित सिद्ध करनेपर भी सिद्धि शीघ्र नहीं मिलती। श्रीरामनामसे वे सभी सिद्धियाँ अनायास प्राप्त हो जाती हैं। इनका प्रयोग अमोघ है, अचूक है। अतः देवि, अन्यान्य मंत्रोंका संग्रह त्यागकर, शीघ्र सर्वसिद्धिदायक श्रीरामनामही कीर्त्तन का नियमपूर्वक करना चाहिए।

'यन्मयोदितमुल्लासं मन्त्राणांभूधरात्मजे
तत्सर्वं रामनाम्नैव सिद्धिमाप्नोति निश्चितम।।
सर्वेषां सुप्रयोगानां सिद्धिरन्यत्र दुर्लभा।
श्री रामनाम स्मरणादनायासेन सिद्धयति''
तस्माच्छ्री रामनाम्नस्तु कीर्त्तनं सर्वसिद्धिदम्।
कर्त्तव्यं नियमं देवि त्यक्त्वाऽन्यान्यमन्त्रसञ्चयान्।।

श्रीमानसजी का भी यही निर्णय है।

साधक नाम जपहि लय लाये। होहि सिद्ध अनिमादिक पाये।।

स्मरण रखना चाहिये कि सिद्धि प्राप्त करनेकी श्रीनाम जपविधि अलग है। जिसे किसी तांत्रिक गुरुसे समझना होगा। अधिक नामाभ्याससे सभी सिद्धियाँ आपही सुलभ होंगी।

श्रीतन्त्रसार नामक मंत्रशास्त्र में भी श्रीपार्वतीजी से भगवान् शंकर कहते हैं कि सभी मंत्र समूहोंका निचोड़ रूप श्रीरामनामही है। वेदोंके तो हृदय ही हैं। श्रीरामनाम सुधा धाम है। साधकोंके हृदय में अन्यान्य तंत्रमंत्रों की सविधजप द्वारा अनेक सिद्धियाँ प्राप्त करनेकी रूचि तभी तक रहती है, जब तक श्रीरामनामरूपी अमृत का पान नहीं किया है। वह मंत्र शिरोमणि नाम सबोंके लिए दुर्लभ है। पापी कैसे जपेंगे? अनेक जन्मोंके पुण्यपुञ्ज उदय होनेपर ही श्रीरामनाम जपमें प्रवृत्ति होती है।

इदमेव परं सारं सर्वेषां मन्त्रसंहते।
वेदानां हृदयं सौम्य रामनाम सुधास्पदम्।।
यावच्छ्री रामनामस्तु पानं नास्ति नृणां शिवे।
तावन्मन्त्राणि यन्त्राणि रुचिः स्याद् हृदयस्थले।।
दुर्लभं सर्वजीवानामिमं मन्त्रेश्वरेश्वरम्।
कथं भजन्ति पापिष्ठाः सुकृतौघं बिना प्रिये।।'

मंत्रमहोदधिनामक मंत्रशास्त्रमें कहा है कि श्रीरामनाम तो प्राणिमात्रका अपना प्राण सर्वस्व है। सभी मंत्रोंके परम गुरु हैं। इसी नाम के संकीर्तनसे प्राणी सर्वोत्तम मोक्ष प्राप्त करते हैं।

श्रीरामनाम सर्वस्वं मन्त्राणां परमं गुरुम्।
यस्य संकीर्त्तनाज्जन्तुर्याति निर्वाणमुत्तमम्।।'

अब हम आगे कुछ संहिताओं के प्रमाण उद्घृत करेंगे। वेदों के मंत्रभागही संहिता कहलाती है। श्रीविश्वामित्र संहितामें श्रीराघवजीके गुरु श्री विश्वामित्रजी वैश्यों को उपदेश देते हुए कहते हैं कि उन महाभागने अध्यात्म शास्त्रों को भलीभाँति जान लिया है, उनने परमसुधा चख लिया, जिनने वाणीमात्रसे श्रीरामनामका कीर्तनकर लिया। श्रीरामनाममें सभी मंत्र तंत्रोंकी शक्ति भरी है। जो सिद्धियाँ सहज सुखमयी हैं, तथा जिन्हें दुर्लभसे दुर्लभ परासिद्धि कहते हैं, सभी इन श्रीरामनामके जपसे ही प्राप्त हो जाती है। नाना मंत्रतंत्रोंके प्रयोगों से अनजान नाहक मूर्ख रचते पचते रहते हैं। परम अभिराम श्रीरामनामको छोड़कर सिद्धि कहाँ पाइये? हमतो भाई, उन्हीं श्रीरामनामका भजन करते हैं, जिनके स्मरणमात्र से सभी मनोरथों के फल नयन गोचर हो जाते हैं।

'ज्ञातमध्यात्म शास्त्रं च प्राप्तं तेनामृतं महत्।
कीर्तितं तेन वचसा श्रीरामेत्यक्षर द्वयम्।।
सर्व मन्त्रमयं नाम यन्त्रास्पदमनुत्तमम्।
स्वाभाविकीं परां सिद्धिं दुर्लभां तज्जपाल्लभेत्।।
वृथा नाना प्रयोगेषु मन्त्रतन्त्रेषु मानवाः।
यत्नं कुर्वन्त्य हो मूढास्त्यक्त्वा श्रीरामसुन्दरम्।

यस्य संस्मरणादेव सर्वाथाश्चक्षुगोचराः।
भवन्त्येवानयासेन तच्छी राममहं भजे।।'

हिरण्यगर्भ संहितामें श्रीअगस्त्यजी अपने शिष्य श्रीसुतीक्ष्णजी को उपदेश करते हुए कहते हैं कि श्रीरामनाम ही परममन्त्र है। श्रीनामही मंत्रात्मक पद है। पुनर्जन्म एवं मरणभयको मिटा कर संसारके तारने वाले भी यही हैं।

'श्रीरामेति परं मन्त्रं तदेव परमं पदम्।
तदेव तारकं विद्धि जन्ममृत्यु भयापहम्।।

श्रीमहाशम्भु संहिता में श्रीशिवजीका वचन है कि श्रीरामनाम समस्त मंत्रोंके उत्पन्न करने वाले बीज हैं। यही संजीवनी जड़ी है। जिसके हृदयमें श्रीरामनाम सरकार बस जाँय, वह चाहे हलाहल विष पान कर लेवे, या प्रलयकालीन अग्निमें पड़ जाय, अथवा कालके मुखही में घुस जाय, उसे कहीं भय नहीं होगा। 'जो पै राखिहैं राम तो मारिहैं को रे''। (श्रीकवितावली)

''श्रीरामनामाखिल मन्त्रबीजं सञ्जीवनं चेत् हृदये प्रविष्टम्।
हालाहलं वा प्रलयानलं वा मृत्योर्मुखं वा विशतां कुतोभीः।।''

पतञ्जलि संहितामें कहा गया है कि श्रीरामनाम सभी मंत्रोंके परम एवं अक्षय बीज हैं। जो सतत इनका कीर्त्तन करते रहते हैं, उनके लिये कुछ भी दुर्लभ नहीं है।

''रामेति नाम परमं मन्त्राणां वीजमव्ययम्।
ये कीर्त्तयन्ति सततं तेषां किञ्चिन्न दुर्लभम्।।''

श्रीप्रमोद रामायणमें कहा गया है कि जितने भी अनन्त शुभदायक मन्त्र हैं, सभी श्रीरामनाम के अंश से ही उत्पन्न हुए हैं। अज्ञानी श्रीरामनामके उज्ज्वल माहात्म्य को नहीं जानते हैं।

रामनाम्नांशतो जातास्सुमन्त्राश्चप्यनन्तकाः।
अवुधा नैव जानन्ति नाममाहात्म्यमुज्ज्वलम्।।

अब कुछ पुराणोंके प्रमाण भी आप जान लें। श्री पद्मपुराण में परामर्थतत्त्व के मर्मज्ञ जगद्गुरु भगवान् शंकरजी, श्रद्धास्वरूपिणी भगवती पार्वतीजी से कहते हैं कि सभी वेदों को बराबर पाठ करलें, सभी महामन्त्रों का अनेकवार जप करलें, उनसे कोटिगुण पुण्य एकवारके श्रीरामनाम उच्चारण से ही प्राप्त होगा। तन्त्रशास्त्रमें जितने भी प्रयोग बताये गये हैं, वे उन उपायोंसे सिद्ध हों न हों, निश्चय नहीं है, किन्तु श्रीरामनामके कीर्तनसे वेही समस्त सिद्धियाँ अनायास तथा अतिशीघ्र प्राप्त होंगी ही।

''जपतः सर्ववेदांश्च सर्वमन्त्रांश्च पार्वति।
तस्मात्कोटि गुणं पुण्यं रामनाम्नैव लभ्यते।।
ये ये प्रयोगास्तन्त्रेषु तेस्तैर्यत्साध्यते फलम्।
तत्सर्वं सिद्धयति क्षिप्रं रामनामैव कीर्त्तनात्।।''

पुराणसंग्रहमें कहा गया है– श्रीवेदव्यास–शिष्य श्रीसूतजी, श्रीशौनकजी से कहते हैं कि सभी मन्त्रसमूहों में श्रीरामनाम सर्वोपरि है। परमगोप्य हैं। श्रीपार्वतीपति शंकरजीके तो जीवन ही हैं। चित्तवृत्तिको संशुद्ध बनाने वाले भी यहीं हैं।

''सर्वेषां मन्त्रवर्गानां रामनान परं स्मृतम्।
गोप्यं श्रीपार्वतीशस्य जीवनं चित्तशोधकम्।।''

कालिकापुराणका वचन है कि श्रीरामनाम प्राणोंको अनुप्राणित करने वाले हैं। जीवोंको जीवित रखने वाले हैं; तथा सभी मन्त्रोंमें परममंत्र हैं। क्यों न सर्वदा सर्वप्रिय हों?

''प्राणानां प्राणमित्याहु जीविनां जीवनंपरम्।
मन्त्राणां परमं मन्त्रं रामनाम सदाप्रियम्।।''

श्रीक्रियायोगसार नामक पुराणभागमें आया है कि दो अक्षर वाले श्रीरामनाम सभी मंत्रों से अधिक फल देने वाले हैं। इनके एकवार के ही उच्चारणसे, पापीसे पापी भी परमगति पा लेता है।

''रामेत्यक्षर युग्मं हि सर्वमन्त्राधिकं द्विज।
यदुच्चारण मात्रेण पापी याति पराङ्गतिम्।।''

महाभारत शान्तिपर्व में श्रीरामनाम को सभी मन्त्रतत्त्वों में परात्पर कहा गया है।

''सर्वेषु मन्त्रतत्त्वेषु रामनाम परात्परम्।।''

इतने प्रमाण श्रीरामनामके अभ्यन्तर मन्त्रशक्ति बताने में पर्याप्त है। प्रिय पाठक ! अब आपही निर्णय कीजिये कि कौनसा भगवन्नाम आपको जपना है?

षडक्षर युगलमन्त्रराज तथा श्रीयुगलनाममें विशेष अन्तर नहीं है। यदि संस्कृत भाषा से अनभिज्ञ सज्जन श्रीमन्त्रराज का शुद्ध–शुद्ध उच्चारण नहींकर पावें, तो वे अधिक संख्यामें श्री युगलनामही जपें। अथवा जिन्हें निरन्तर नाम रटनेका चस्का लग गया है। एकक्षणभी श्रीनाम बिना रहा नहीं जाता, ऐसे सतत नामयोगीसे यदि गृहीत मन्त्रराज काजप न बने तो कोई चिन्ता न करें, नामजपमें ही मन्त्रजपका फल एवं मन्त्रत्याग दोषका परिहार हो जायगा। इस सम्बन्धमें नामके परमाचार्य परमहंस श्रीप्रेमलता जी कहते हैं–

मंत्र षडक्षर नाम जो, युगल एक जिय जोइ।
प्रेमलता सियराम नित, रटै भरमना खोइ।।
सर्व तजै नहि दोष जो, मन लागै सियराम।
प्रेमलता सब धर्मके, कारण नाम ललाम।।

यदि नामजप के अतिरिक्त आपको और अवकाश हो, तो आपको गुरु–गृहीत युगलमन्त्रराज अवश्य जपना चाहिये। यदि आप अपनी साधनाको मन्त्रमयी बनाना चाहते हों और आपको निरन्तर मन्त्र के जप एवं नाम संस्मरण में मन रम गया है, तो आप नामजप छूट जानेकी चिंता न करें। मन्त्रजपसे ही उन्हें श्रीनामजप वाला लाभ भी हो जायगा। कहने का भाव कि श्रीनाममन्त्र में अभेद है। आपकी रुचि हो तो दोनों जपिये, और अवश्य जपिये। यदि दोनोंमें से किसी एकही में सतत साधननिष्ठ होना चाहें, तो शेषके त्याग में आप दोषभागी नहीं होंगे। ऐसी समझ इस लेखक की भी है।

श्रीरामनाममन्त्र में सर्वाधिक फलोत्पादक प्रभाव होते हुए भी जापकोंके लिए कुछ विशेष सुलभता और सुगमता है, जो अन्य मन्त्रोंमें दुर्लभ हैं। क्षुद्रदेवताओं के अल्पवीर्य मन्त्रोंके १— जनन, २—दीपन, ३— बोधन, ४—ताडन, ५—अभिषेक, ६—बिमलीकरण, ७— जीवन, ८— तर्पण, ९— गोपन और १०— आप्यायन— ये दश संस्कार करने पड़ते हैं। इनके बिना मन्त्र सिद्ध नहीं होते। यथा—

''जननं दीपनं पश्चाद् बोधनं ताडनस्तथा।
अथाभिषेको बिमलीकरणाऽप्यायन पुनः।।
जीवनं तर्पणं गुप्ति र्दशैता मन्त्र संस्क्रिया।''

परम समर्थ श्रीनाममन्त्रमें इन संस्क्रियाओं की कोई अपेक्षा नहीं। इनके बिना भी तो उल्टे नामजपसे श्रीवाल्मीकि जी व्याध से ब्रह्मतुल्य बन गये। मन्त्रतत्त्ववेत्तागण मन्त्रोंमें छिन्न, रूद्ध, शक्तिहीन, पराङ्मुख, वधिर, नेत्रहीन, कीलित, स्तम्भित, दग्ध आदि ५० दोष बताते हैं। मांत्रिकों को इन्हें जानकर, इनसे बचते हुए मन्त्राराधन करना चाहिये। अन्यथा मन्त्रसिद्ध नहीं होने को। यथा —

''दोषानिमानविज्ञाय यो मन्त्रान् भजते जडः।
सिद्धिर्न जायते तस्य कल्पकोटि शतैरपि।।''

परन्तु श्रीनाममन्त्र तो जापकके असंख्य दोषोंको मिटाकर विशुद्ध बना देते हैं, इनमें दोष कहाँ से आ सकते हैं?

धर्मानशेष संशुद्धान्सेवन्ते ये द्विजोत्तमाः।
तेभ्योऽनन्तगुणं प्रोक्तं श्रेष्ठं श्रीनाम कीर्त्तनम्।।

— श्रीमार्कण्डेयपुराणे, श्रीव्यास वाक्यम्।

श्री विश्वामित्र—वशिष्ठ कलहमें पारस्परिक शपाभिशाप में सभी मन्त्र शक्तियाँ कीलित कर दी गई थीं। तबसे तान्त्रिकगण किसी भी मन्त्रसाधनमें सर्वप्रथम उत्कीलन प्रयोग द्वारा अपने इष्टमन्त्र को शापमुक्त कराकर, तत्पश्चात् मन्त्राभ्यास करते आये हैं। उत्कीलन प्रयोग सम्पूर्ण होनेपर, उसकी फलस्तुति इस प्रकार पठित होती है—

''इदं श्री त्रिपुरास्तोत्रं पठेत् भक्त्या तु यो नरः।
सर्वान् कामानवाप्नोति सर्वशापाद् विमुच्यते।।
इति सर्व यन्त्रमन्त्रतन्त्रोत्कीलनं सम्पूर्णम्।।''

परन्तु परंब्रह्ममय श्रीरामनामात्मक मन्त्रशिरोमणि में शाप—प्रभाव कहाँ स्पर्श करने को? 'ब्रह्मराम ते नाम वड़' को कीलित कर सके, ऐसी सामर्थ्य किसमें है? गज, गणिका, अजामिल आदि बिना उत्कीलन किये ही, भगवन्नाम प्रभावसे परमपद प्राप्त कर चुके हैं।

वेदमन्त्रों के लिए शान्तिपाठ भले आवश्यक हों, परन्तु 'विश्रामस्थानमेकं' रामनाम तो स्वतः शान्तिस्वरूप हैं। सभी अमंगलों को मिटाकर, जापकोंके हृदय में परमशान्ति स्थापित करना आपका सहज स्वभाव है। रही मन्त्रों की सिद्धिमें पुरश्चरण की बात। सो अन्य सभी मन्त्रोंके आदि में विनियोग न्यास आदि अनिवार्य रूप से आवश्यक है, जपान्तमें पूजन, हवन, तर्पण, मार्जन,

ब्राह्मण भोजन भी आवश्यक है। इनके बिना मन्त्र सिद्ध नहीं होते। परन्तु हारीतस्मृति नाममंत्र की सिद्धिके लिए इनकी भी आवश्यकता अनपेक्षित बताती हैं।

''बिनैव दीक्षां विप्रेन्द्र पुरश्चर्यां बिनैव हि।
विनैव न्यास विधिना जपमात्रेण सिद्धिद:।।''

साधक दुष्ट प्रयोग सिद्धिके लिए मन्त्रसाधनमें श्मसानपीठिका, शवपीठिका का उपयोग करते है, तीव्र वैराग्यपूर्वक ज्ञानार्जनके लिए अरण्यपीठिका का तथा जितेन्द्रियता लाभके लिए श्यामापीठिका का उपयोग होता है। आदिरामायण नाममंत्र में इनसबों को उपेक्षणीय बताती हैं—

देशकाल क्रिया ज्ञानादनपेक्ष्यं स्वरूपत:।
अनन्तकोटि फलदं नाममन्त्रं जगत्पते:।।

शुचि अशुचि सब दशाओं में नाममंत्र का अभ्यास बन् सकता है। सिद्धि के बाधकों की परचा भी न करें। उच्चारणमात्र होना है।

न शौच नियमाद्यत्र न सिद्धारि विचारणम्।
कल्पवृक्ष स्वरूपत्वाज्जनानां रामनामकम्।।

उपरिनिर्दिष्ट मंत्रसाधनके सभी आवश्यक नियमों के पालन करने पर भी मंत्र सिद्धि किसी को फलित होती है, किसी को नहीं। यह बात श्रीरामनामात्मक मंत्रमें नहीं है। सभी विधियों से हीन होनेपर भी, केवल नामग्रहणमात्र होना चाहिये। फल तो अवश्यम्भावी है। किसकी मजाल कि एकनामग्रहण के फल को भी व्यर्थ कर सके?

''अन्यदाराधनशतै मन्त्रं फलति नाथवा।
गृहीतमात्र फलदं रामनाम स्वरूपत:।।''

(ये सभी श्लोक श्री आदिरामायण के हैं)

श्रीरामनाम परत्त्व

श्रीभुसुण्डिरामायणमें कहा गया है कि परात्पर श्रीरामनाम असंख्य कोटि लोकों के उत्पन्न करने वाले हैं। सभी वेद भी श्रीनामही से प्रगट हुए हैं।

''असंख्य कोटि लोकानामुपादानं परात्परम्।
तथैव सर्ववेदानां कारणं नाम उच्यते।।''

श्रीशाश्वततंत्र में कहा गया है कि श्रीरामनामके प्रसादसे ही ब्रह्माजीमें सृष्टि रचना करने की, श्रीविष्णुलोकमें पालन करने की शक्ति प्राप्त हुई है। इन्द्रादिक देवगण भी श्रीरामनामही से समृद्धिमान बने हुए हैं।

भगवान् शंकरजी, कहते हैं कि हे देवि पार्वती! श्रीरामनाम ही के प्रसाद से मुझे ऐसी सामर्थ्य प्राप्त है कि तीनों लोकों के चराचर को क्षणमात्र में संहार कर डालता हूँ।

"धाता सृजति भूतानि विष्णु धार्यते जगत्।
तथा चेन्द्रादय: सर्वे रामनाम्ना समृद्धिमान्॥
यस्य प्रसादाद्देवेशि मम सामर्थ्यमीदृशम्।
संहारामि क्षणादेव त्रैलोक्यं सचराचरम्॥"

श्री लिङ्गपुराणमें भी श्री शिवजीने श्रीपार्वती जीसे ऐसा ही कहा है— पार्वती ! श्रीरामनाम के कणमात्र प्रभाव से मुझे शिवपद मिला है।

"यत्प्रभाव लवकांशत: शिवे शिवपदं सुभगं यदवाप्तम्।"

श्री लिङ्गपुराण में तो श्रीशंकरजी ने श्रीपार्वती जी से कहा है कि हे प्रिये! मैं गोप्यसे भी गोप्य वस्तु कृपापूर्वक तुम्हें बता रहा हूँ कि साकार तथा निर्गुण निराकार दोनों प्रकारके ब्रह्मों से भी श्रीरामनाम परे हैं।

"साकारादगुणाच्चापि रामनाम परं प्रिये।
गोप्याद्गोप्यतमं वस्तु कृपया संप्रकाशितम्॥"

इस सम्बन्ध वाला श्रीमानसवचन सर्वविदित है।

"अगुन सगुन दुइ ब्रह्म सरूपा। अकथ अगाध अनादि अनूपा॥
मोरे मत बड़ नाम दुहू तें। किये जेहि जुग निज बस निज बूते॥
प्रौढ़ि सुजन जनि जानहि जनकी। कहउँ प्रतीति प्रीति रुचि मनकी॥
एकु दारुगत देखिअ एकू। पावक सम जुग ब्रह्म विवेकू॥
उभय अगम जुग सुगम नाम तें। कहेउँ नामु बड़ ब्रह्म राम तें॥
व्यापकु एक ब्रह्म अबिनासी। सत चेतन धन आनंद रासी॥
अस प्रभु हृदयँ अछत अविकारी। सकल जीव जग दीन दुखारी॥
नाम निरूपन नाम जतन ते। सोउ प्रगटत जिमि मोल रतन तें॥
निरगुन ते एहि भाँति बड़ नाम प्रभाउ अपार।
कहउँ नाम बड़ राम तें, निज विचार अनुसार॥ २३॥
राम भगत हित नर तनु धारी। सहि संकट किए साधु सुखारी॥
नामु सप्रेम जपत अनयासा । भगत होहि मुद मंगल बासा॥
राम एक तापस तिय तारी। नाम कोटि खल कुमति सुधारी॥
रिषि हित राम सुकेतुसुता की। सहित सेन सुत कीन्हि विवाकी॥
सहित दोष दुख दास दुरासा। दलइ नाम जिमि रबि निसि नासा॥
भँजेउ राम आपु भव चापू। भव भय भंजन नाम प्रतापू॥
दंडकवन प्रभु कीन्ह सुहावन। जन मन अमित नाम किए पावन॥
निसिचर निकर दले रघुनन्दन । नामु सकल कलि कलेषु निकन्दन॥

सबरी गीध सुसेवकनि, सुगति दीन्हि रघुनाथ।
नाम उधारे अमित खल, वेद बिदित गुन गाय।।२४।।
राम सुकंठ बिभीषन दोऊ। राखे सरन जान सब कोऊ।
नाम गरीब अनेक नेवाजे। लोक वेद वर विरिद बिराजे।।
राम भालु कपि कटुक बटोरा। सेतु हेतु श्रमु कीन्ह न थोरा।
नामु लेत भवसिन्धु सुखाहीं। करहु बिचारु सुजन मन माहीं।
राम सकुल रन रावनु मारा। सीय सहित निज पुर पगु धारा।।
राजा रामु अवध रजधानी। गावत गुन सुर मुनिवर बानी।।
सेवक सुमिरत नाम सप्रीती। बिनु श्रम प्रबल मोह दलु जीती।।
फिरत सनेह मगन सुख अपने। नाम प्रसाद सोच नहिं सपने।।
ब्रह्म राम ते नामु बड़, बर दायक वर दानि।
रामचरित सतकोटि महँ, लिय महेस जियँ जानि।।२५।।

अर्थात् वेदशास्त्रों के मत से एक ही ब्रह्मतत्त्व के सगुण निर्गुण दोनों रूप अनिवर्चनीय है, महिमा दोनों की अगम अथाह है। दोनों ही अनादि हैं और हैं अप्रतिम निरूपम। नामरहस्य मर्मज्ञ श्रीगोस्वामिपाद के विचार से श्रीरामनाम उभय ब्रह्मस्वरूपों से बड़े हैं। क्योंकि श्रीनाम ने अपनी शक्ति से दोनों को स्ववश कर रखा है। श्री वैष्णवाचार्य शिरोमणि श्रीगोस्वामीजी महाराज का कहना है कि मैं कोई अधिकार पाकर प्रौढ़ वचन नहीं कहता। मेरे हृदय में श्रीरामनाम के प्रति ऐसा ही विश्वास है, रुचि और प्रीति भी श्रीनाम में इसी भाँति की है।

'प्रीति—प्रतीति जहाँ जाकी तहँ ताको काज सरो।
मेरे तो माय—बाप दोउ आखर, हौं सिसु—अरनि अरो।।
संकर साखि जो राखिं कहौं कछु तौ जरि जीह गरो।
अपनो भलो रामनामहि ते तुलसिहि समुझि परो।।' श्रीविनयपत्रिका, २२६।५,६।

सगुण ब्रह्म तो प्रगट अग्नि के समान सर्वोपयोगी बने रहते हैं, निर्गुण ब्रह्म काष्ठगत गुप्त अग्निवत् अव्यक्त रहते हैं। उनकी सत्ता बुद्धिगम्य मात्र है। ऐसे तो दोनों ब्रह्मस्वरूपों का साक्षात् अनुभव अगम है, किन्तु श्रीनामाभ्यास में दोनों में से जिन्हें चाहिये सुगमतापूर्वक अनुभवगम्य बना सकते हैं। दोनों ब्रह्मस्वरूपों से श्रीनाम को युक्तिवाद द्वारा बड़ा सिद्ध कर रहे हैं। प्रथम अव्यक्त निर्गुण ब्रह्म की बात लीजिये। ये सर्वव्यापक, अद्वय, महान् से भी महान्, अविनाशी एवं सच्चिदानन्द घन कहे जाते हैं। हमारे हृदय में भी अपनी आनन्दराशि के साथ विराजमान हैं। किन्तु आपकी अपरिमित आनन्दराशि से मेरे को क्या लाभ। सर्वसुहृद कहाने वाले के पास आनन्द का खजाना, अपने प्रयोजन से भी बहुत अधिक हो, वहीं हम आनन्दाभाव में दीन—दुखी बने रहें, तो आपकी आनन्दराशि मेरे किस काम की? सच है निर्गुण में उदारतादि गुण कहाँ पाइये? किन्तु

कृपण शिरोमणि! याद रखना मेरे पास तुम्हारे नाम का बल है। तुमसे वलात् आनन्द छीनकर रहूँगा। देखें कब तक छिपाते हो? हम पहले नामप्रतिपादक ग्रन्थों के स्वाध्याय, नामरहस्यमर्मज्ञ सज्जनों के सत्संग से श्रीनाम का मोल, महिमा प्रभाव को जानेंगे, अन्यथा क्षुद्र लौकिक प्रयोजन के लिए महाअनमोलरत्न को साग बैगन के मोल में गँवा देंगे। तत्पश्चात् नामप्रभावानुभवी जापकों से नामजप विधि सीखकर नामाभ्यास करेंगे। तबतो अव्यक्त यार तुम्हें व्यक्त सगुण स्वरूप में परिवर्तित होना ही पड़ेगा। हृदय में द्विभुज धनुषधारी उदार, दयालु रूप में प्रगट होकर मुझे अनन्त आनन्द में डुबों देना। रत्न को जौहरी से दाम अँकवाकर भजा लीजिये। उससे प्राप्त द्रव्यों द्वारा जो चाहिये प्राप्त करते रहिये। इस प्रकार निर्गुण ब्रह्म से श्रीरामनाम बड़े हुये। सगुण–लीला में वर्णित श्रीमानस पंक्तियों से पाठक सगुण ब्रह्म की अपेक्षा भी नाम को बड़ा समझ लें।

प्रिय रामनामते नाहि न रामो।
ताको भलो कठिन कलिकालहुँ आदि–मध्य परिनामों।।
सकुचत समुझि नाम–महिमा मद–लोभ–मोह–कोह–कामो।
राम–नाम–जप–निरत सुजन पर करत छाँह घोर घामो।।
नाम–प्रभाउ सही जो कहै कोउ सिला सरोरुह जामो।
जो सुनि–सुमिरि भाग–भाजन भइ सुकृति–सील भील भामो।।
वालमीकि अजामिल के कछु हुतो न साधन सामों।
उलटे पलटे नाम–महातम गुञ्जनि जितो ललामो।।
रामतें अधिक नाम–करतव जेहि किये नगरगत गामो।
भये बजाइ दाहिने जो जपि तुलसीदास से बामो।।

श्री हनुमत्संहिता में श्रीहनुमान्जी श्री राघवलालजू से कहते हैं– प्रभो! आपसे आपके नाम बड़े हैं। मेरी ऐसी निश्चल मति है। आपने केवल अयोध्या को ही तो तारा है। आपके नाम तीनों लोकों को तारते हैं और सदा तारते रहेंगे।

'राम त्वत्त्वोऽधिकं नाम इति मे निश्चला मतिः।
त्वया तु तारिताऽयोध्या नाम्ना तु भुवनत्रयम्।।'

वेद–पुराण– शास्त्रों के सर्वश्रेष्ठ मर्मज्ञ भगवान् वेदव्यासजी ने श्रीविष्णुपुराण में बताया है कि श्रीरामनाम से बढ़कर कोई भी तत्त्व न तो वेदों में है, न स्मृतियों में, न संहिताओं में, न पुराणों में,न तन्त्रशास्त्र में। आपही बताइये,अब कौन सद्ग्रन्थ बाकी रह गये?

'रामनाम्नः परं किञ्चित्तत्त्वं वेदे स्मृतिष्वपि।
संहितासु पुराणेषु नैव तन्त्रेषु विद्यते।।'

श्रीकालिकापुराण तो शाक्तग्रन्थ है। इसमें पराशक्तिका ही परत्व कहा गया है। वहाँ भी श्रीरामनाम को सर्वेश्वर, शरणार्थियों के [illegible] कहकर, बताया गया है कि सभी शक्तियों को उत्पन्न करने वाले

कारणभूत श्रीरामनाम ही हैं। किन्तु अधिकांश शक्तियाँ तमोमयी होती हैं। उनके हेतुभूत श्रीरामनाम तो तम से परे हैं।

'सर्वासामेव शक्तीनां कारणं तमसः परम्।
श्री रामनाम सर्वेशं सौख्यदं शरणार्थिनाम्॥''

जगत् को अपने शासनाधीन रखकर, अपने बनाये हुये निश्चित नियमों पर चलाने वाले श्री ब्रह्म, विष्णु, महेशादि जगत् के नियामक कहे जाते हैं। श्रीकूर्मपुराण में कहा है कि नियामकों को भी उत्पन्न करने वाले तथा अपनी प्रेरणा के अधीन रखने वाले श्रीरामनाम ही सभी के सर्वेश्वर हैं। भगवान् शंकरजी श्री पार्वती जी को आदेश दे रहे हैं कि उन्हीं श्रीरामनाम का तुम निरन्तर जप करो।

'जपस्व सततं रामनाम सर्वेश्वर प्रियम।
नियामकानां सर्वेषां कारणं प्रेरकं परम्॥'

श्रीआदिपुराणमें भगवान् श्रीकृष्ण्, श्रीअर्जुनसे बताते हैं कि श्रीरामनामही जगत्को धारण करतें हैं। श्रीनामही जगत्का पालन करते हैं। श्रीनामही की कृपासे नामोच्चारण होता है तथा श्रीनामही के शासन अधीन जपका फल भी है।

''नामैव धार्यते विश्वं नामैव पालयते जगत्।
नामैव नीयते नाम नामैव भुञ्जते फलम्॥

श्रीमहारामायण में भगवान् श्रीशंकरजी, श्रीपार्वतीजी से कहते हैं कि जगत् के पोषण धारण करने वाले श्रीरामनाम ही हैं। अतएव श्रीरमुक्रीड़ा धातु से व्युत्पन्न श्रीरामनाम ही को परब्रह्म कहा जाता है।

'पोषणं भरणाधारं रामनाम्नो जगत्सु च।
अतएव रमु क्रीड़ा परब्रह्माभिधीयते॥'

श्री भारतविभाग नामक उपपुराण में कहा गया है कि परमानन्द प्रदान कर्त्तओं में श्रीराम नाम सर्वश्रेष्ठ है। अतः श्रीरामनामही को परब्रह्म, परमधाम तथा सभी कारणों के भी आदिकारण बताया गया है।

आह्लादकानां सर्वेषां रामनाम परात्परम्।
परंब्रह्म परंधाम परंकारण कारणम्।'

यह बात श्रीइतिहासोत्तम नामक उपपुराण में आयी है। श्रीपुष्कर मुनि नरकवासियों की दारुण यन्त्रणा देखकर दयार्द्र हो गये। उन नरकवासियों से कहा— भैया, तुम लोक परात्परब्रह्म श्रीरामनाम से विमुख रहने के कारण ही नरक में आ पड़े हों। यहाँ घोर पीड़ा सह रहे हो। हाहाकार से क्या लाभ। सर्वदुःखहारी रामनाम का स्मरण करो।

'किमत्र हाहाकारेण युष्माकमधुना ध्रुवम्।
स्मरणध्वं रामनामाख्यं मन्त्रं दुःखापहारकम्॥'

कोई बात नहीं, अब भी श्रीरामनाम सरकार को आरत होकर पुकारो। अर्थात् आरत स्वर से नामोच्चारण करो। ये महान से भी महान् होकर बड़े दयालु हैं। अपने उच्चारण करने वाले के

कृतज्ञ हो जाते हैं। कहना चाहिये कि ऐसे कृतज्ञ कोई परतत्त्व होंगे भी नहीं। अपनी उत्तम पुकार पर शीघ्र तुम्हें यहाँ से उबारने आ पहुँचेंगे। आगे का प्रसंग है कि हुआ भी ऐसा ही। श्रीमुनिराज के मुख से नाम सुनते ही ये नरक से छूट गये,तथा नामोच्चारण करते ही इनके लिए श्रीसाकेत से विमान आकर उस नरक के सभी वासियों को श्रीदिव्यधाम ले गये।

'कृतज्ञानां शिरोरत्नं रामनाम परात्परम्।
कथं न द्रवते श्रुत्वा स्वनामाह्वानमुत्तमम्।।'
'श्रुत्वा नामानि तत्रस्थास्तेनोक्तानि तथाद्विज।
नरकाः नरकान्मुक्ताः सद्यः एव महामुने।।'

श्री प्रभासपुराण में कहा गया है कि श्रीरामनाम ही ब्रह्म के मुख्यनाम हैं। इन्हें सर्वेश्वर का भी ईश्वर कहा गया है। मधुरता की खान है। इनके जीभपर स्फुरित होते ही, दिव्य रसखान श्रीसीताराम महारास का अनुभव होने लगता है।

'मधुरालयमदो मुख्यं नाम सर्वेश्वरेश्वरम्।
रसनायां स्फुरत्यासु महारासरसालयम्।।'

श्रीप्रमोदनाटक नामक आर्ष ग्रन्थ का वचन है। श्रीराघवजी के निर्मल नाम श्रीरामनाम है। यह नाम निर्विकार है। युगलस्वरूप को लखाने वाले हैं। ऐसे कृपानिधि हैं कि भक्तों के संकट सदा निवारण करते रहते हैं। ये सभी देवताओं से, मुनिवरों से तथा ईश्वर वर्ग से भी सम्यकपूजित हैं। मैं इन्हीं का स्मरण करता रहता हूँ।

'अनामयं रूपयुग प्रकाशकं सदैव भक्तार्तिहरं दयानिधिम्।
स्मरामि श्रीराघवनाम निर्मलं प्रपूजितं देव मुनीश्वरेश्वरैः।।'

श्री आदित्यपुराण में श्रीशंकरजी ने श्री पार्वतीजी को बताया है कि श्रीरामनाम में ही श्रीरघुलाल जी सपरिकर चारोभाई, गुणगण तथा मंगलमय श्रीधाम स्थित रहते हैं।

'रामनाम्नि स्थितास्सर्वे भ्रातरः परिकरास्तथा।
गुणानां निचयं देवि तथा श्रीधाम मङ्गलम्।।'

श्रीवृहस्पति स्मृति में कहा गया है कि श्रीरामनाम ही परब्रह्म है। सभी देवगण इन्हीं का सर्वाधिक पूजन करते हैं। महान्पुरुष तो इन्हीं को जपते हुये जीते हैं। यह मैं विशुद्ध सर्वसम्मत सिद्धान्त कहता हूँ।

'रामनाम परं ब्रह्म सर्वदैवैः प्रपूजितम्।
सर्वेषां सम्मतं शुद्धं जीवनं महतामपि।।'

श्री निर्वाणखण्ड अन्तर्गत श्रीशिवजी का सम्वाद है स्वयं श्रीरघुलाल जी के साथ। वाह्यभोगों के तृष्णालु मन्दबुद्धि वाले श्रीरामनाम के परत्व को क्या जानें? सभी वेदान्तों की सम्मति में श्रीरामनाम ही परब्रह्म है। यहीं जगत् के प्रभु हैं। सत् तथा असत् से परे, परमानन्द को जनन करने वाले हैं। परात्पर ईश्वर है। श्रीरामनाम तथा सभी महज्जन इन्हीं श्रीनाम की उपासना करते हैं।

'मन्दात्मानो न जानन्ति वहिरर्थस्पृहायुता:।
रामनाम परंब्रह्म सर्ववेदान्त सम्मतम्।।
जगत्प्रभुं परमानन्दं कारणं सद्सत्परम्।
रामनाम परेशानं सर्वोपास्यं परमेश्वरम्।।'

श्रीसौर्यधर्मोत्तर में कहा गया है कि श्रीरामनाम का परत्त्व सभी जगह वेदों में भरा है। मूर्ख नहीं जानते। इसी से तो भवसागर में डूबते हैं।

'परत्वं परमं नाम्नो विदितं सर्वत: श्रुतौ।
अबुधा: नैव जानन्ति सम्पतन्ति भवार्णवे।।'

यहाँ तक प्राचीन आर्षग्रन्थों के आधार पर श्रीरामनाम का परत्व प्रतिपादित हुआ, आगे हम अनन्त श्री स्वामी युगलानन्यशरणजी महाराज की कुछ महावाणी श्रीसीताराम सनेहवाटिका से भी उद्धृत करेंगे।

श्रीबड़े महाराज कहते हैं कि श्रीरामनाम के आद्यक्षर रकार के एक ही स्तुत्य अंश से अनीह अकाम निर्गुण ब्रह्म का प्रकाश होता है। श्री ब्रह्मा—विष्णु—महेश, ये त्रिदेव भी श्रीरेफही में निवास करते हैं तथा रेफही से प्रगट होते हैं। साधनों और सिद्धियों की समष्टि रकार ही में भासमान होती है। जापक इन्हें ही जपकर अनमोल एवं निश्चला पराप्रतिभा प्राप्त करते हैं।

'रेफहिके एक अंस प्रसंस से ब्रह्म अनीह अकाम प्रकासे।
तानहु देव समेत निकेत सदैव बसैं तेंहि बीच निकासे
साधन सिद्धि समूह जहाँ लगि रेफ अनूपम अंक सुभासे।
(श्री) युग्म अनन्य पराप्रतिभा अनमोल अडोल जपे प्रतिकासे।।'१९१९।।

पुन: कहते हैं कि बुद्धि से बिचारकर देखोगे, तो श्रीजानकीरमणजू के श्रीरामनाम ही में तुम्हें निस्सन्देह समस्त उत्तमोत्तम तत्त्वों की स्थिति मिलेगी। ईश्वर के अवतार और अवतारी तथा तीनों जगदीश (ब्रह्मा,विष्णु, महेश) निस्सन्देह श्रीरामनामही के अभ्यन्तर दीख पड़ेंगे। कोटि कामाभिराम युगलस्वरूप, लीला, धाम तथा गुणगण सभी श्रीनाम ही से प्रगट होंगे। उन सबों का जापक एकत्र रसास्वादन करता है। ऐसे नाम को क्षणमात्र भी भूलने से अपार दु:ख होगा। अत: विचारपूर्वक इन्हीं नाम का निरन्तर रटन करते हुए जीवन धारण करना कर्त्तव्य है।

'जानकीरमण नाम मध्य व्यवधान बिना।
निखिल सुवस्तु वरवोध सोध कीजिये।
ईश अवतार अवतारी जेते जगदीश
तेते शकहीन नित नित्त लखि लीजिये।।
युगल स्वरूप कोटि काम तें अनूप
लीला धाम गुन सुछबि प्रतच्छ रस पीजिये।

(श्री) युगल अनन्य पलपाब विरहित होय।
हाय हरतौर गौर युत भज जीजिये।।' १४६७।।

श्रीयुगलकिशोर जू का युगलरूप भी श्रीयुगलनामों के अभ्यन्तर नख—शिख पर्यन्त नित्य विराजमान रहते हैं तथा रूपों के अङ्ग —अङ्ग में नाम विराजमान हैं। श्रीनाम तथा रूप का रहस्य अगम अथाह है। सभी नहीं समझ सकते।

'नामी नाम माँझ नख शिख लौं विराजमान
हेरिये सुजान मान भान को विहाय के।
ऐसो कौन अंग रसरंग निधि जामें नाम
ललित ललाम नहिं लसत सुभायके।।
संत सतगुरु सुचि संग के विहीन नर
आन तान गावत कुरंग नीर न्हाय के।
(श्री) युगल अनन्य अनमोल नाम नामी गति
अगम अथाह कैसे पावे बिललाय के।।११३५।।

सखेन्द्र श्रीरसरंगमणिजी महाराज की विमल महावाणी भी पठनीय है—

रामनाम गुरु को परमगुरु प्रेमपद
रामनाम सुर को परम सुर एक है।
रामनाम मन्त्रन को महामन्त्र मुक्तिदानि
रामनाम जन्त्र तन्त्र खानि सिद्धि सेक है।
रामनाम ज्ञानहू को ज्ञान ध्यान ध्यानहूं को
जोगहूं को जोग और विवेक को विवेक है।
रटै 'रसराम' आठयाम हटै मद काम
मिलै सीताराम गहे रामराम टेक है।
रामनाम प्रणवको कारण उच्चारण ते
तारण करन भव उदधि अगम है।
रेफ औ अकार त्यों मकार विधि हरिहर
त्रिगुणको हेतु आप अगुन परम है।
वीज वह्नि भानु शशि मनमल मोहतम
नासिकै प्रकासै सुख सीत अनुपम है।
शिवाकौ सुनायौ शिव महामन्त्र 'रसराम'
रामनाम हरिके सहस्रनाम सम है।।

श्री अयोध्यापति से आपके नाम बड़े हैं

इस पर एक बड़ा ही मनोरंजक इतिहास है। लंकाविजय से श्रीअवध प्रत्यागमन पर, श्रीजानकीजीवनजू श्री अवध के साम्राज्य पद पर अभिषिक्त हुए। प्रत्येक वर्ष आपकी उस अभिषेक तिथि पर, राज्यतिलक की वर्षगाँठ मनायी जाने लगी। ऐसी ही वर्षगांठ के अवसर पर, देश–देश के नृपतिगण अपने–अपने विभिन्न देशों से उपहार लेकर, समाट् का अभिवादन करने पधारे थे। कुलगुरु श्रीवशिष्ठजी की सम्मति से उस समय के सभी ऋषि, मुनि भी आमंत्रित किये गये थे। श्रीराघवेन्द्र के द्वितीय गुरु श्रीविश्वामित्र कैसे नहीं आवें ? ब्रह्मलोक से नारदादि देवर्षिगण भी पधारे थे।

सिन्धुदेश के नरेश श्रीत्रिविक्रमदेव जी प्रात:काल ही आवश्यक भेंट के साथ श्री कौशलेन्द्र राजसभा में सम्मिलित होने आ रहे थे। रास्ते में मिले उन्हें देवर्षि नारद। कलह–प्रिय नारदजी को उस भोले–भाले नरेश को देख कुछ कौतुक रचने को फुरा। देवर्षि ने कहा–राजन्! सभाभवन में प्रवेश करने के पहले, कुछ मेरी भी सुन लो। तुम ठहरे भोले भाले, तुम्हें अपने राज्यपद के गौरव का भी ख्याल रखना चाहिए। ऋषि–मुनियों को यथायोग्य प्रणाम करना तो राजाओं का धर्म ही है पर राजा होकर, सभी सामान्य राजाओं को भी प्रणाम करते फिरना राज्यगौरव को मिट्‌टी में मिलाना है। वह श्रीविश्वामित्रजी तो कल–परसों तक एक देश के राजा ही थे। आज मुनि बन बैठे हैं, तो क्या हुआ? आखिर हैं तो क्षत्रिय राजा ही। उनके छोटे राज्य से तुम्हारे राज्य का गौरव अधिक साम्मान्य है। उन्हें प्रणाम करने में तुम्हारे राज्य गौरव में बट्‌टा लगेगा। देवर्षि की बात कैसे अमान्य होगी? नृपति त्रिविक्रम सभा में जाकर, सबों को प्रणाम तो किया, किन्तु श्रीविश्वामित्र जी के समीप से जाते हुए भी उनकी ओर श्रद्धादृष्टि से न तो देखा, न प्रणाम किया।

श्रीदुर्वासाजी के बाद, कोही मुनि में दूसरा नम्बर श्री विश्वामित्रजी का ही आता है। एक साधारण नरेश के द्वारा भरी अवध राज्यसभा में अपना अपमान उन्हें क्यों कर सहन होने लगा? आग–बबूला हो उठे। बोल उठे, श्रीरामभद्र! श्रीकौशलेन्द्र हाथ जोड़े सामने उपस्थित हुए। क्या आदेश गुरुदेव? 'देखो, इस मानी राजा त्रिविक्रम को समुचित दण्ड तुम्हें देना है।' जैसी आज्ञा हो, आपका यह सेवक पालन करने को तत्पर है।' ' इसे अपने हाथों प्राणदण्ड दो। 'अभी अभी श्री गुरुआज्ञा का पालन करता हूँ'। 'अभी नहीं, आज अभिषेक का वर्षोत्सव हो लेने दो।' कल प्रात:काल ही इसे मौत के घाट पार उतारियो, प्रतिज्ञा करो, मेरे सामने।''श्री विश्वामित्र जी के आदेश से उसी समय सत्यसंकल्प श्री राघवेन्द्र ने भरीसभा में हाथ उठाकर प्रतिज्ञा की, कि कल प्रात:काल ही श्रीगुरु आज्ञा से मैं सिन्धुनरेश त्रिविक्रम को प्राणदण्ड दूँगा। त्रिविक्रम देव ने अपनी आँखों के सामने श्रीराघवलाल की अमोघ प्रतिज्ञा सुनी। आधे प्राण तो उसी समय सूख गये। काटो तो खून नहीं। दौड़े–दौड़े श्रीनारद जी के चरणों में जा गिरे। देवऋषि! आपने क्या गजब ढा दिया! ऐसा पाठ पढाया कि अबतो हमारे प्राणों के लाले पड़ रहे हैं। श्रीनारद जी ने कहा– मैं क्या जानता था, कि थोड़ी सी बात का इतना बड़ा बतंगड़ हो जायगा। खैर, तुम घबड़ाना नहीं। श्रीहनुमन्तलालजी की वीरमाता श्री अञ्जनीदेवी जी इस समय भी अवधनगर के दक्षिणप्रान्त में स्थित मुक्ताचलपर्वत पर

ठहरी हैं। उनक श्रीचरणों पर त्राहि—त्राहि कहकर गिरो जाकर। उनसे रक्षा का सुदृढ़ वचन लेना, पर पूरा भेद बताना मत। ऐसा ही हुआ। प्राण संकटग्रस्त राजा त्रिविक्रम को सदय हृदया माता अञ्जना ने अभय वचन दिया। उसी समय नित्य नियम की भाँति श्रीहनुमन्तलाल जी अपने मातृचरण की वन्दना करने पध ारे थे। माता का आदेश हुआ— बेटा! मेरे लाल!! मैंने इस प्राणसंकटापन्न राजा त्रिविक्रम को अभयवचन दे दिया है। मेरे वचन की लाज रखनी है तुम्हें। मातृ आज्ञा में तत्पर श्रीहनुमन्तलाल जी ने अम्बा जी को आश्वासन दिया कि माताजी आपकी आज्ञा से मैं इसकी प्राणरक्षा करूँगा।

पुन: राजा त्रिविक्रम को एकान्त में बुलाकर, प्राण लेने वाले के परिचय के साथ—साथ, राजा के अपराध का भी व्यौरा पूछा। राजा ने कहा कि मैंने श्रीनारद जी के सिखाने से श्री विश्वामित्रजी को प्रणाम नहीं किया था, इसी अपराध से उन्होंने स्वयं श्रीरघुलालजी से मेरे वध की प्रतिज्ञा करा ली है। अब क्या हो? मेरे प्राणों की रक्षा अब आपके समर्थ हाथों में है। अपने स्वामी की प्रतिज्ञा सुनकर, परम स्वामिभक्त श्री मारूतिजी बड़े धर्मसंकट में पड़े। एक ओर स्वामिभक्ति, दूसरी ओर मातृ आदेश। साँप छुछून्दर की गति हो रही है। 'बुद्धिमतां वरिष्ठं' प्रत्युत्पन्नमति को युक्ति विचारने में देर नहीं हुई। उन्होंने श्रीरामरूप से भी बढ़कर, श्रीरामनाम की शक्ति को जानकर, श्रीनाम की ओट लेने की ठानी। राजा को सिखाया,अभी से जाकर, तुम खूब उत्साह से श्रीसीतारामनाम का रटन करो। जबतक मौत की घड़ी न टले,तब तक तुम्हारे नामोच्चारण में किंचित् भी शिथिलता नहीं होनी चाहिए। मरता क्या नही करता? दूसरे दिन प्रात: श्री राघवजू धनुषवाण को लिये वध्य नृपति त्रिविक्रम की खोज में निकल पड़े। देखते क्या हैं, एक विस्तृत रमणीक मैदान के एक छोर पर राजा बैठा श्रीरामनाम का जोर—जोरसे उच्चारण कर रहा है। श्रीहनुमन्तलाल जी अपनी पूछ बढ़ाकर उसके चारों ओर पूछ का ही परकोटा बनाकर,उसे अभिगुप्त कर रहे हैं। दृश्य देखकर आप तो हैरान हो गये। अब क्या हो? हमारे नाम और नामानुरागी श्रीहनुमान दोनों समर्थ उसकी रक्षा में है। परन्तु अपनी प्रतिज्ञा तो पालन करनी ही है। श्रीराघवजी का 'जिमि अमोघ रघुपति कर बाना' एक के बाद दूसरे चलने लगे। श्रीवाण नामजापक त्रिविक्रम तक पहुँचकर लौट आते थे, और पुन: तरकश में प्रवेश कर जाते थे। नामजापक का वध ा श्रीवाण करें? कैसे सम्भव है? एक के बाद तीक्ष्ण से तीक्ष्णतर वाण चलाते—चलाते चौबीस घण्टे बीत गये। न वाणमोचन छूट रहा है, न त्रिविक्रम का नाम जप। दूसरे दिन के सूर्योदय होते ही, कौतिकी नारदजी ने श्रीविश्वामित्र जी से जाकर, कहा—ब्रह्मर्षि श्री विश्वामित्र जी! कुछ ब्रह्मर्षियों का क्षमा दयादिगुण भी तो अपने हृदय में लाइये। देखिये आपके परमदुलारे,अतिशय सुकुमार,श्री राघवसरकार वाण चलाते चलाते मारे पसीने के लथपथ हो रहे हैं। कैसा हठ है आपका? चलिये उनका श्रम निवारण कीजिये। कोमल चित्त विश्वामित्र द्रवित हो गये। घटनास्थल पर पहुँचकर कहा— श्रीरामभद्र! मेरा वचन रह गया। तुम्हारी प्रतिज्ञा भी पूरी हुई। अब मैं त्रिविक्रम को क्षमा करता हूँ। रहने दो वाणमोचन। श्रीराघवजी से भी आपके नाम को अधिक शक्तिशाली सिद्धकर, श्रीनारदजी के कौतुक के साथ—साथ वह विनोदमयी राघवलीला भी समाप्त हुई। बोलिये परमसमर्थ श्रीरामनाम सरकार की जय! यह प्रसंग श्रीविठुर के संत श्रीरामप्रियाशरण जी ने स्वरचित छन्दोवद्ध श्रीरामनाम की विजय नाम्नी पुस्तिका में

लिखी है तथा इसी का थोड़ा रूपान्तर कल्याण के भगवन्नाम महिमा अंक में भी छपा है। जहाँ तहाँ कथारूप में भी यह गाथा गाई जाती है। सुना है श्रीअयोध्या मणिपर्वत वाले श्रीमानसतत्त्वान्वेषी पं० श्रीरामकुमारदास जी इसे किसी आर्षग्रन्थ में भी उल्लिखित बताते हैं।

स्वर्ग के पारिजातवृक्ष पाने पर श्रीसत्यभामादेवी परमप्रसन्न हो रहीं थीं। उसी समय श्रीनारद जी वहाँ आये। पूछा देवि! अब आपको क्या चाहिए? 'बस यही कि जन्म-जन्म तक मुझे श्रीकृष्ण ही पतिरूप में मिलें।' इसमें क्या है? किसी सत्पात्र को श्रीकृष्ण दान कर दीजिये। 'बबा सो लुनिये लहिय जो दीन्हा।' 'सत्पात्र कहाँ पाइये?'देवि! मैं तो प्रतिग्रह अंगीकार नहीं करता। किन्तु यह है कि सात्त्विक दान। मैं ही ले लूँगा।' भोलीभाली देवी सत्यभामा ने दान संकल्प कर झट से श्रीनारद के हाथ में जल दे दिया। इतने ही में श्रीकृष्ण वहाँ आ पहुँचे उनका हाथ पकड़कर श्रीनारद लिवा चले। श्रीकृष्ण चुपचाप उनके साथ चले जा रहे हैं। किसी की ओर पलटकर देखते भी नहीं। तब तो श्रीसत्यभामाजी को अपनी भूल समझ में आई। अब क्या हो? देवर्षि! मैं तो इनके बिना जी नहीं सकती। कोई उपाय बताइये।' श्रीनारदजी ने कहा, इनके बराबर सुवर्ण तौलकर दे दीजिये। मैं इन्हें लौटा दूँगा। रनिवास भर के सारे स्वर्ण-भूषण श्रीकृष्ण के साथ तुला पर चढ़ाये गये। बराबर नहीं हुए। श्रीरुक्मिणी देवी ने सुना तो श्रीतुलसीपत्र पर श्रीकृष्णनाम लिखकर तराजू के भूषणवाले पलड़े पर रख दिया। श्रीकृष्ण ऊपर उठ गये, नाम गरू हो गया। श्रीनारदजी ने न तो सुवर्ण लिया, न श्रीकृष्ण को। श्रीनाम तुलसी मुख में डालकर चलते बनें। जाते-जाते कहा मुझे तो इस लीला से यही दिखाना था कि प्रभु के रूप से आपका नाम बड़ा है।

श्रीनाम-प्रकाश

'बन्दो नाम राम रघुवर को। हेतु कृशानु भानु हिमकर को।।'

सूर्य, चन्द्र, अग्नि (विद्युत, प्रकाश) आदि प्रकाशक तत्त्वों के भी उत्पन्न करने वाले श्रीराम-नाम में कितना अधिक प्रकाश होगा, पाठक कैमुतिक न्याय से स्वयं अनुमान कर सकते हैं। जिन बड़भागी महानुभावों को श्रीनामप्रकाश देखने की दिव्यदृष्टि मिली है,उनके नीचे दिये गये अनुभूत वचन, पाठक उन्हीं के शब्दों में पढ़ें।

श्री आदिरामायण में श्रीरामनाम महामणि के पारखी श्रीहनुमंतलालजी ने श्रीनलजी को बताया है कि एकओर सभी मन्त्रों को, कोटि-कोटि ज्ञानराशि को जुटाकर रखिये, सब मिलाकर भी श्रीरामनाम की समता नहीं कर पावेंगे। अनन्तकोटि सूर्य, चन्द्र तथा अग्नि के प्रकाश से भी बढ़कर प्रकाश श्रीनाम में है। अत: जापक के भीतर-बाहर समस्त अन्धकार की राशि को श्रीनाम नष्ट कर देते हैं।

'एकत: सकला मन्त्रा एकतो ज्ञान कोटय:।
एकतो रामनाम स्यात्तदपि स्यान्न वै समम्।।
अनन्तकोटि सूर्येन्दु बह्नि दीधिति दीप्तिमत्।
वाह्यान्तर सुसंच्छन्नं तमोवृन्द निरासकम्।।''

श्रीहनुमंतलाल जी पुनः कहते हैं कि सत्युगमें कोई—कोई सुकृती अपने सद्गुरू से श्रीराम—नाम के रहस्य को एक बार आस्वादन करके, अज्ञानान्धकार को छिन्न—भिन्न करके, तथा अपने भीतर प्रकाश से परिपूर्ण होकर सिद्ध बन गये हैं तथा परतम ब्रह्म श्रीराघवजू को प्राप्त किया है।

'पुरा कृतयुगे केचित् जनाः सुकृतिनो नल।
सरहस्यं रामनाम सकृदास्वाद्य सद्गुरुम्।।
भित्वाऽज्ञान तमोराशिं कृत्वा स्वात्मप्रकाशनम्।
परे ब्रह्मणि संलीनाः सिद्धिं प्राप्तः विनाश्रमम्।।'

श्रीरामोपनिषद् में आया है कि श्रीरघुनाथजू ही परब्रह्म हैं, परमतप, परम तत्त्व हैं, तथा उन्हीं का श्रीरामनाम तारक ब्रह्म हैं। श्रीरामनाम अपने प्रकाश से प्रकाशित परम ज्योतिर्मय हैं। प्रणव के प्राण हैं तथा सृष्टि स्थिति और लय के कारण हैं।

'राम एव परंब्रह्म राम एव परंतपः।
राम एव परं तत्त्वं श्रीरामो ब्रह्मतारकम्।
स्व भू ज्योंतिर्मयोऽनन्तरूपी स्वनैव भासते।
जीवत्वेनदमो सृष्टि स्थिति हेतु र्लयस्य च।।'

लिङ्गपुराण में कहा गया है कि श्रीरामनाम ही से सम्पूर्ण जगत् सदा प्रकाशित हो रहा है। श्रीरामनाम का अमित प्रभाव वचन से अगोचर है।

रामनाम्ना जगत्सर्वं भासितं सर्वदा द्विज।
प्रभावं परतमं तस्य वचनागोचरं मुने।।

ब्रह्माण्डपुराण में श्रीधर्मराज कहते हैं— श्रीरामनाम का दिव्य प्रकाश वेद— वेदान्त के अनुभव में नहीं समाने वाला है। श्री नामप्रकाश जिनके हृदयमें प्रसरित हो गये, वह जापक त्रिलोकपूज्य हो जाते हैं।

'रामनाम प्रभा दिव्या वेद वेदान्त पारगाः।
येषां स्वान्ते सदा भाति ते पूज्या भुवनत्रये।।'

श्री आङ्गिरसपुराण में कहा गया है कि जो भीतर तथा बाहर अर्थात् बैखरी से — दोनों स्थलों से नाम जपते हैं, उनके हृदय की आनन्दकली श्रीनामरूपी सूर्य के द्वारा खिल जाती है।

'आभ्यन्तरं तथा वाह्यं यस्तु श्रीराममुच्चरेत्।
स्वल्पायासेन संकाशं जायते हृदिपङ्कजे।'

रामतापनीयउपनिषद में कहा गया है कि पापरूपीवृक्षके लिये श्रीरामनामकुठार है। पापरूपी सूखीलकड़ी को भस्म करने वाले दावानल हैं तथा पापराशिरूपी घोर अन्धकारको भगानेवाले प्रकाशमान सूर्य हैं।

'पापद्रुम कुठारोऽयं पापेन्धन दावानलम्।
पापराशि तमस्तोमं रविः साक्षात्प्रभानिधिः।''

श्रीलोमशसंहिता में भगवान् शंकरजी कहते हैं कि श्रीरामनाम अज्ञानरूपी अन्धकार के मिटाने में कोटि—कोटि सूर्य चन्द्रमा तुल्य प्रकाशमान हैं तथा ज्ञानामृत की वृष्टि करने वाले सजल जलद हैं। ऐसे श्रीरामनाम को सदा जपना चाहिए।

'अज्ञान तिमिरोद्भेदं कोटि सूर्येन्दु भास्वरम्।
ज्ञानामृत पयोवाहं रामनाम सदा जपते।।'

श्रीजानकीपरिणय नाटकनामक आर्षग्रन्थ में कहा गया है कि स्यमंतक आदि महामणीन्द्र से भी श्रीरामनाम में अधिक प्रकाश है। जीभपर सदा प्रकाशरूप से स्थित रहें, तो हृदय के भीतर वाले तथा दृश्य जगत में भासमान् मोहान्धकार विनाश करने में समर्थ है। अत: हम तो दिन–रात यही नाम जपते हैं।

'महामणीन्द्रादपि काशतेऽधिकं सदैव जिह्वाग्र प्रदीपयत्यलम्।
आम्यान्तर ध्वान्त सबाह्यमुल्वणं निवारणे शक्तमहर्निशं भजे।।'

इसी प्रकार श्रीप्रमोद नाटक में भी कहा गया है कि निरामय रामनाम युगलरूप के प्रकाशक अर्थात् साक्षात् कराने वाले हैं। सदा भक्तों की आर्त्ति हरने वाले कृपानिधान हैं। सभी देव–मुनीश्वरों से पूजित श्री राघवजू के रामनाम को हम स्मरण करते हैं।

'अनामयं रूपयुगं प्रकाशकं सदैव भक्तार्तिहरं कृपानिधिम्।
स्मरामि श्रीराघवनाम निर्मलं प्रपूजितं देव मुनीश्वरेश्वरैः।।'

श्रीजावालि संहिता में कहा गया है कि श्रीरामनाम का दिव्यप्रकाश जिसके हृदय को प्रकाशित किये रहता है, उसके लिये परतमब्रह्म से प्राप्य सभी दिव्यानन्द सुलभ हो जाते हैं।

'रामनाम प्रभो दिव्या यस्योरसि प्रकाशते।
तस्यास्ति सुलभं सर्व सौख्यं सर्वेशजं परम्।।'

श्रीनामजप से ही परमसिद्ध पद पर प्रतिष्ठित श्रीबड़े महाराजजी कहते हैं, वेदवाणी आदि भी शब्द ब्रह्म है, पर श्रीरामनाम शब्द ब्रह्म से ही निर्मल ज्ञान स्फुरित होता है। इन्हें अनन्त ज्ञानराशिरूपी सुविशाल वटवृक्ष की भाँति उसके लघुवीजके समान समझना। इन्हीं का रसास्वादन करो। सगुण–निर्गुण दोनों ब्रह्मों में श्रीरामनाम ही की कला व्याप रही है। 'अगुन सगुन बिच नाम सुसाखी। उभय प्रबोधक चतुर दुभाषी।।' जिन्हें ऐसी दृष्टि प्राप्त हो गयी है, उनके लिये आठो प्रहर सर्वत्र श्रीरामनाम ही का प्रकाश फैलता हुआ प्रतीत होता है।

'शब्दब्रह्म जावत जहान बीच पेखो तुम
तावत अमल बोध नाम सर्वेश में ।
सूक्ष्म सुवट बीज सम लखो चखो रस
अरस विहाय वँधो काहू के न वेश में।।
रामनाम ही की कला कलित अनूप अति
व्यापि रही नित्त अविशेष सविशेष में।
(श्री) युगलअनन्य आठयाम अवलोकु निज
नामही की आभा फैलि रही सब देश में।।

चन्द सूर पावक प्रकासी जैते जग बीच
तेते सब नामही के आसरे प्रकास गुन।
रेफ परब्रह्म तेज अमित दिनेस सम
व्यापक अचर चर वदे वेद विदुषन।।
नामी नाम एकता अखंड संत शास्त्र सुचि।
संवत सदैव इह जानि विषय बीज भुन।
श्रीयुगल अनन्य नामनेह बिना किये सठ
कोटि—कोटि कल्पलौं खराबी सहो सीस धुन।।१७७२।।

श्रीसीतारामशुद्ध चिदानन्द परिपूर्ण प्रकाश के भी कारण है। कलंक हरने वाले हैं। अपने अन्तःकरण को निर्मल एवं पावन बनाकर, श्रीनाम के परत्व देखिये और असत भोगवासना जन्य शोक—विलाप को नामकृपा से त्यागिये। निराकार तथा साकार ब्रह्म से भी स्वच्छ हैं तथा जगत् के उपादान कारण श्रीनाम हैं। श्री बड़े महाराज कहते हैं कि श्रीसीतारामनामही श्रीशेष, शुकदेव, शारदा, गणेश तथा असंख्य मुनीश्वरों तथा श्रीशंकरजी के भी जीवन धन हैं।

'सीतारामनाम परिपूरन प्रकाश शुद्ध
चिदानन्द कारन कलंक के हरन हैं।
पेखिये परत्व मलहीन शुचि सत्त्व करि
परिहरि असद विलाप आभरन है।।
निराकार सहित अकार से सहज स्वच्छ
सानुकूल नाम जग उपादान घन है।
(श्री) युगल अनन्य शुक शेष शारदा गनेश
अमित मुनीश ईश शंकर सुघन है।।२२०३।।

रहे नहिं पावत प्रपंच पंच वंच मंत्र
मान मद रंच जहाँ नाम भानु भास है।
सरस सुभाव भाव भाग अनुराग गुन
सुमन सदैव बिगसत अनयास है।
अखिल अमंगल अगार दुखधार भार
अधिक अजार भार मिटन कुवास है।
श्री युगल अनन्य और साधन से कौन काम
नाम की कृपालुता से भ्रम तम नास है। २६५।।

रामनाम मानिक झलक दुतिदाम काम
कोटिन कृसानु भानु तारकेश तुच्छ हैं।

पल पल पर प्रतिकाश भास भव हर
अमर अजर कर निकर मुमुच्छ है।।
रहस रसाल नेह निधि रसिकेश प्रिय
हर हिये हरन रहित रस रूच्छ है।
श्रीयुगल अनन्य वरनेश परमेश सम
सरस रमन बिना कलिकाल कुच्छ है।।
प्रानापान व्यान औ समानस उदान नाग
कुरुम कृकिल देवदत्तहू में हेरिये।
करन कदंब मन मति अभिमान चित्त
नाम धाम बीच लसे सदा यों निवेरिये।
भूमिहू पताल स्वर्ग अपवर्ग मध्य मीत।
अन्तरीछ दिगदस वही सुख ढेरिये।।
श्रीयुगल अनन्य सोम सूरज नखत माहि
अचल प्रकाश नाम पेखै गुन गेरिये।।२२१३।।

श्रीनाम—प्रताप

संस्कृत के प्रतिप— धतु और धञ् उपसर्ग से व्युत्पन्न प्रताप शब्द का अर्थ होता है, प्रभुत्व पराक्रम आदि का आतंक फैलाने वाला तेज। श्री वैद्यनाथ जी प्रताप शब्द की दोहाबद्ध परिभाषा इस प्रकार लिखते हैं।

जाकी कीरति सुयस सुनि, होय सत्रु उर ताप।
जग डराय सब आपही, कहिये ताहि प्रताप।।

श्रीसूर्य भगवान् का प्रताप प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर है। अत: प्रताप की उपमा सूर्य से देने की कबिकुल रीति हैं। यथा—

जब तें रामप्रताप खगेसा। उदित भये अति प्रबल दिनेसा।।

पुन: प्रताप शब्दान्तर्गत तेज का भाव भी अन्तर्हित है। तेज की उपमा अग्नि से दी जाती है। 'तेज कृशानु रोष महिषेसा' आतंक फैलाने वाले सुयश प्रसारित करने का धर्म होने से इनमें भी प्रताप का आरोप किया जाता है।

अब हम पूर्वाचार्यों की महावाणियों का उद्धरण देकर, श्रीसीतारामनाम सरकार के प्रताप धर्म पर प्रकाश डालेंगे। श्रीरामनामके आतंक से जापक के भय भी भयभीत होकर भाग जाते हैं। पापराशि, संकट भी भस्म हो जाते हैं। यह सब हम आगे आने वाले भय संकट निवारण प्रसंग में दिखायेंगे। यहाँ श्रीगोस्वामिपाद तथा श्री बड़े महाराज की कुछ महावाणियाँ इस सम्बन्ध की यहाँ उल्लिखित की जा रही है।

'जान आदि कवि नाम प्रतापू। भयउ सुद्ध करि उलटा जापू।।' १।१९।५

आदि कवि महर्षि वाल्मीकिजी ने श्रीनामाभ्यास करके अपने जीवन में ही प्रत्यक्ष अनुभव किया कि पहले आपके समस्त संचित पाप जलकर भस्म हुए। पुन: इसी शरीर में पूर्वकृत व्याधों के कुसंग से की गई हिंसा, वटमारी कुनारी संसर्ग आदि अक्षम्य क्रियमाण पाप भी समस्त जल गये तथा उन्हें श्रीनामसरकार ने बिल्कुल पापमुक्त कर दिया। प्रारब्ध पर भी विजय कर आप ब्रह्मतुल्य हो गये। विशुद्ध हृदय में श्रीनामचमत्कार स्वत: अनुभूत होने लगते हैं।

'भंजेउ राम आपु भवचापू। भव भय भंजन नामप्रतापू।।' १।२४।६

ऊपर की अर्द्धालीमें भव शब्द का यमक है। प्रथम भव का अर्थ श्रीशिवजी, तथा दूसरे भव का अर्थ संसार का जन्म—मरण है। श्रीरामनाम के प्रताप से ही जापक के हृदय के पुनर्जन्म, नरकयातना, आसन्न विघ्न—बाधाओं के भय सभी आपही आपभग जाते हैं। अत: सभी तीव्र नाम—साधक अपने आपको निर्भय निशंक से देखेंगे। आप नामाभ्यास करके स्वयं भी अपने हृदय से पूछ लीजिये।

'नारद जानेउ नाम प्रतापू। जग प्रिय हरि हरिहर प्रिय आपू।''

देवर्षि नारद ने श्रीरामनामकाप्रताप कैसे जाना? उत्तर —

' हिमगिरि गुहा एक अति पावनि। बह समीप सुरसरी सुहावनि।।
आश्रम परम पुनीत सुहावा। देखि देवरिषि मन अति भावा।।
निरखि सैल सरि विपिन विभागा। भयउ रमापति पद अनुरागा।।
सुमिरत हरिहि श्राप गति बाधी ।सहज विमल मन लागि समाधी।।'

आपको दक्षप्रजापति ने शाप दिया था कि सम्पूर्ण लोकों में विचरते हुए भी तेरे ठहरने का कोई निश्चित स्थान न होगा। उस शाप के मारे आप कहीं भी कुछ काल जमकर नहीं रूक पाते थे। यहाँ हरि स्मरण का माध्यम नाम जप ही था। नामों में श्रीनारद श्रीरामनाम के जापक हैं। यह बात श्रीमानसजी से सिद्ध है। अरण्यकाण्ड के अन्त में पंपासर पर श्रीराघव—नारद संवाद है। उसमें श्रीनारदजी ने वर माँगा है—

'यद्यपि प्रभु के नाम अनेका। श्रुति कह अधिक एक तें एका।।
राम सकल नामन्ह ते अधिका। होउ नाथ अघ खग बन बधिका।।'

'राका रजनी भगति तब, रामनाम सोइ सोम।
अपर नाम उडगन बिमल, बसहुँ भगत उर व्योम।।'

श्रीनारद जी ने प्रत्यक्ष देखा है कि श्रीरामनाम से शाप भी टल जाता है। इतना ही नहीं, इन्द्रप्रेरित काम भी अपने सहाय सहित आपको डिगा नहीं सका। काम के द्वारा उपद्रव होने पर, आपको क्रोध होना स्वाभाविक था। सो श्रीरामनाम के प्रताप से क्रोध भी आपके पास फटक नहीं सका। यद्यपि उस समय प्रभुकृत अवतार हेतु लीला ने आपको कुछ काल के लिये मोहान्ध बना

सीताराम नाम साधन

ी रसमोद कुञ्ज बिहारी बिहारिणी जू

दिया था,पर पुनः प्रभु कृपा से ही मोह निवृत्त होने पर, आपने श्रीनाम—प्रताप को अच्छी प्रकार से जान लिया। फिर तो ऐसे नामाभ्यास में जुट गये कि श्रीरामनाम के प्रभाव से आप स्वयं श्री राघव हरिके, तथा नामजापक शिरोमणि श्रीहर शंकरजीके भी प्रेम—भाजन बन गये। धन्य श्रीराम— नाम का प्रताप!

'सब भरोस तजि जो भज रामहि। प्रेम समेत गाव गुन ग्रामहि।।
सो भव तर कछु संसय नाही। नाम प्रताप प्रगट कलि माही।।'

बात यह है कि परमविज्ञ एवं समर्थ श्रीरामनाम के सामने कलि न टिक सकता है, न कोई बाधा ही पहुँचा सकता है। यह बात कई उद्धरणों से स्वतः स्पष्ट हो जाती है। यथा—

' कालनेमि कलि कपट निधानू। नाम सुमति समरथ हनुमानू।।
राम नाम नरकेसरी, कनककशिपु कलिकाल।
जापक जन प्रह्लाद जिमि, पालिहि दलि सुरसाल।।'
रामनाम के प्रभाव जानु जुड़ी आगि है।
सहित सहाय कलिकाल भीरु भागि है।। — श्री विनय ७०/२

श्रीकवितावली उत्तरकाण्डके छन्द ७९ में कहा गया है कि कलियुगी जीवों की बुद्धि ऐसी मारी गई है कि श्रीहरिभक्तिरूपी कामधेनु गौ को, पेट के लिये बेचकर, लोग विषयभोगी रूपी गधी खरीदने लगे हैं। ऐसे भयंकर युग में भी श्रीरामनाम के जप से जापक के हृदय को त्रिताप नहीं जला सकते। अपने जापक के तीनों तापही को श्रीनाम—प्रताप जलाकर भस्म कर देते हैं।

'जर जरत प्रभाव नाम ललित ललाम को।'
'जाहिर जहान में जमानो एक भाँति भयो, बेंचिये बिवुध धेनु रासभी बेसाहिये।
ऐसेउ कराल कलिकाल में कृपालु तेरे नाम के प्रताप न त्रितापत न दाहिये।।'
नाम के प्रताप बाप! आजुलौ निबाही नीके,
आगे को गोसाई स्वामी सबल सुजान हैं। ' ७/८०।।

आजकल कलिके भयंकर प्रभाव नर समाज को प्रपीड़ित कर रहा है। लोग वेद—पुराण के बताये हए सन्मार्ग को छोड़कर,कुत्सित आचरण करते हुये, दुःखशोक परिणामी कुमार्ग पर चल रहे हैं। आजकल के राजसमाज में तनक भी दया नहीं है। नाना छल पूर्वक प्रजा का रक्तशोषण करने पर तुला हुआ है। न वर्णाश्रम धर्म की व्यवस्था रह गई, न विभाग। संसार के पापी दुःख, दोष और दरिद्रता से दलित हो रहे हैं। ऐसे घोर समय में सभी कल्याण के मार्ग अवरुद्ध होने पर,एकमात्र श्रीरामनाम के प्रबल प्रताप से ही मुमुक्षु अपने लोक तथा परलोक के मंगल को सिद्ध कर रहे हैं।

' वेद पुरान बिहाइ सुपंथ कुमारग कोटि कुचालि चली है।
काल कराल नृपाल कृपाल न राज समाज बड़ोई छली है।।

वर्न विभाग न आश्रम धर्म दुनी दुख दोष दरिद्र दली है।
स्वारथ की परमारथ को कलि रामको नाम प्रताप बली है।।' ७।८५।

उलटा नाम जपने से श्रीवाल्मीकिजी का सारा बिगड़ा हुआ बन गया। नामही से गजराज की ग्राह से रक्षा हुई, सुग्गे को श्रीरामनाम पढ़ाने वाली वेश्या भी श्रीरामनाम के प्रभाव से तर गई। अजामिल भी मरते समय पुत्र के ब्याज से नामोच्चारण करने के कारण सारी चूकों से मुक्त होकर परमधाम गये। श्रीनामप्रताप से ही श्री द्रौपदीजी की लज्जा बची, दुष्ट कौरवों की राजसभामें । श्रीरामनाम का प्रताप ऐसा प्रबल है कि इस घोर कलिकाल में जिन्हें दो अक्षर वाले श्रीरामनाम में विश्वास और प्रेम है, उनके लिये कल्याण तो सुनिश्चित है ही। श्रीकवितावली, उत्तरकांड छन्द ८९ देखिये—

'रामु बिहाइ मरा जपते बिगरी सुधरी कवि कोकिलहू की।
नामहि ते गजकी,गनिकाकी, अजामिलकी चलिगै चल चुकी।।
नाम प्रताप बड़ो कुसमाज बजाइ रही पति पांडु बधू की।
ताको भलो अजहू तुलसी जेहि प्रीति प्रतीति है आखर दू की।।'

श्रीरामनाम के प्रताप से खोटे भी खरे, और छोटे भी बड़े अनायास हो जाते हैं। संकट में इन्हें स्मरण करो, वहीं प्रगट होकर रक्षा करेंगे।

'आरतपाल कृपालु जो रामु जेही सुमिरे तेहिको तहँ ठाढ़े।
नामप्रताप महामहिमा अँकरे किय खोटेउ छोटेउ बाढ़े।।श्री क० ७/१२७।

श्रीरामनाम के प्रताप से कलि के घोर दु:ख शोक परिणामी पाप समूह उसी प्रकार अनायास नष्ट हो जाते हैं, जैसे सूर्योदय होते ही अन्धकार समूह मिट जाँय।

'बिनु श्रम कलि कलुष जाल कटु कराल कटत।
दिनकर के उदय जैसे तिमिर तोम फटत।।''

— श्री विनय १२९।२।

परमार्थ पथ के मर्मज्ञ जगद्गुरु भगवान् शंकरजी ने विचार कर देखा कि संसार से मुक्तकर श्रीरामधाम को देने की शक्ति न तो धर्मभूमि श्रीकाशीजी में है, न श्रीगङ्गा जी में। अत: परम—प्रतापी श्रीरामनाम का आप स्वयं जप करते हैं तथा काशी के मरणशील प्राणियों को भी इसी रामनाम महामन्त्र का उपदेश करते हैं।

' मरत महेश उपदेश है कहा करत सुरसरि तीर कासी धरम धरनि।
रामनाम को प्रताप हर कहै जपै आप जुग जुग जानै जग वेदहू बरनि।।'

— श्रीबिनय १८४।४।

श्री अगस्त्य जी ने श्रीरामनाम के प्रताप को प्रत्यक्ष देखा। किसी समय आप समुद्रतट पर विराजमान होकर, श्रीरामनाम का रटन कर रहे थे। समुद्र के किसी हरकत पर कुपित होकर, आपने अपार—अथाह जलराशि पूर्ण सम्पूर्ण सागर को ही सोख लेने का संकल्प किया।

श्रीरामनाम के उच्चारण करते ही श्रीनाम—प्रताप से सम्पूर्ण सिन्धु सिकुड़ कर, इतना छोटा हो गया कि तीन ही चुल्लू में आप राम—राम—राम कहकर समूचे सागर को पी गये।

'कलसजोनि जिय जानेउ नाम प्रताप। कौतुक सार सोखेउ करि जिय जाप।।'

—— श्रीबरवैरामायण, उत्तरकांड ५५।

श्रीरामनाम के प्रताप को अनुभव करने की युक्ति कृपालु श्री बड़े महाराज ने बतायी है। नामजापक शान्त, सुशील, सन्तोषी होकर, जगत के साथ रागद्वेष विरहित समत्व भाव का व्यवहार करें। निर्दोष वचन बोले। खूब उत्साहपूर्वक बीतराग सजातीय रसिक महानुभावों का सोहावन संग करे। हृदय में निश्चय कर ले कि श्रीनामजप,अथवा श्रीनाम सुयश गान के अतिरिक्त अशान्ति बढ़ाने वाली अन्य प्रकार की लौकिक चर्चा कभी नहीं करेंगे। तब श्रीनाम सरकार हमारे लिये अपना प्रताप प्रगट करेंगे। फिर तो दिव्य—प्रेम लीजिये, दिव्यानन्द लूटिये सब सहज ही संभव हो जायगा। श्रीनाम—प्रताप बड़े वरिष्ठ हैं।

'सांत सुसील सजो समता सुचि तोष अदोष सुबाग उचारो।
संत सजातिन संग सोहावन कीजिये शौक बढ़ाय हजारो।
नाम बिना बकिये न कदाचित बैन अचैन हिये अवधारो।
(श्री) युग्म अनन्य सुनाम प्रताप सें पाइहौं प्रेम प्रसन्नता भारो।।'

— श्रीसीतारामनाम सनेह वाटिका,१२१८।

श्रीरूप सरकार के प्रताप के समान ही श्रीनाम—प्रताप तीव्र नामाभ्यासी के हृदय में स्वत: प्रकाशित हो जाता है। हृदय में श्रीनाम—प्रताप धारण करने वाला सर्वथा निर्भय—निशंक हो जाता है। उसमें अद्‌भुत कर्म कर डालने का पराक्रम प्राप्त हो जाता है। यथा:—

''प्रभु प्रताप उर सहज असंका। रन बाँकुर बालिसुत वंका।।'' ६।१८।२

रावण सभा में श्री अङ्गदजी का सभाभूमि में प्रतिज्ञापूर्वक चरण स्थापित करना, तथा उनके चरण में मेघनादादि किसी भी सुभट से उठाने में असमर्थ होना, श्रीरामप्रताप की करामत थी। क्योंकि— प्रण करने के पहले श्रीअंगद जी ने प्रताप का बल ले रखा था—

समुझि राम प्रताप कपि कोपा। सभा माँझ पन करि पद रोपा।।

अत: आप तीव्र नामाभ्यास के द्वारा अपने हृदय में श्रीनामका प्रताप प्रकाशित कर लें,फिर तो आपके सारे शोच—संकट मिट जायेंगे। दैहिक, दैविक और भौतिक ताप, आपके हृदय को स्पर्श नहीं करने पावेंगे। आपके मन के समस्त मल श्रीनाम—प्रताप में जलकर भस्म हो जायेंगे। निर्मल मन से प्रेम—समाधि लगाने की योग्यता आपमें आ जायगी। आपके रोम—रोम में नामध्वनि प्रविष्ट होने पर, काम विकार को आपके अंगों में ठहरने की जगह भी नहीं मिलेगी। लोक चर्चा तो हृदय की शान्ति को नष्ट करने वाली है। इसे त्यागने पर ही आप श्रीनामरस का आस्वादन कर पायेंगे। इस भाँति से प्रताप स्मरणपूर्वक आप श्रीनामाभ्यास करेंगे, तो आपका हृदय श्री दिव्ययुगलविहार भावना से अनुरञ्जित हो जायगा। आपके हृदय में दिव्यदेश के रास—विलास का प्रकाश छा जायगा।

'नाम प्रताप विलाप कलाप मिटाय अताप समाधि सुधारो।
काम कषाय समाय कहाँ फिरि रोमहि रोम सुनाम सँवारो।।
लौकिक बैन अमैन अचैन निहायत त्याग किये रस प्यारो।
(श्री) युग्म अनन्य रहस्य रंगी रति रैन प्रकाश विलास– विचारो।।'१३३७।।

श्रीनामसरकार का निर्मल प्रताप आप के हृदय में जम गया, तब फिर आपके लिये क्या असंभव रह जायगा? दिव्यप्रेम का सार है श्री कौशलकुमारजू के प्रति इश्क हो जाना। आपके श्रीनामप्रताप से वह भी मिलेगा। विमल ज्ञान–विज्ञान की प्राप्ति होगी। इस विषय–विष से तथा नाना उपद्रवों से परिपूर्ण इस मायिक जगत् से आपको कोई भय आशंका नहीं रहेगी। श्रीनामप्रताप से छलकपट की छाया भी आप तक नहीं पहुँच सकेगी। सम्पूर्ण संसार में आपकी मान–प्रतिष्ठा बढ़ जायगी, फिर भी आप स्वयं अमानी ही बने रहेंगे। नामामृत चखकर, आपको सांसारिक मिष्ट भोजनों की रुचि नहीं रह जायगी। क्षणमात्र भी आप नाम–प्रताप के भाव में मग्न हो जायें, फिर तो आपका सब प्रकार से बन जायगा।

'इश्क यार प्यार सार सरस समूह स्वच्छ
अच्छ अनमोल ग्यान पावै नाम जाप तें।
खटका न खौफ जौफ जालिम जहर जग
ठग मग लग नहि आवै नाम ताप तें।।
निखिल जहान माहि मानता अमान होत
खान पान मधुर पियूष दूर पाप तें।
(श्री) युगलअनन्य पलपाव भाव किये पर
विसद बनाव बात बिमल प्रताप तें।। '' १४३९।।

आपको श्रीनामजप के सर्वोत्तम साधन– मार्ग से विचलित कराने के लिए सांसारिक धूर्त लोग, आपको तन्त्र–मन्त्र, योग युक्ति आदि से प्राप्त होने वाली चमत्कार पूर्ण सिद्धाई की बात बनाकर कहेंगे। आपके यदि श्रीनामप्रताप हृदय में खचित हो गया है, तो आप इनके धोखे में नहीं आवें। आप अपने नामाभ्यास में ऐसे लयलीन हो जायें कि आपको संसार का भान ही भूल जाय। नामप्रेम का प्याला पीकर मस्त रहिये। आपके हृदय की आनन्दकली अनायास खिल उठेगी। सिद्धाई प्राप्त होने पर कंचन की प्राप्ति सुलभ हो जाती है। कंचन के बाहुल्य होने पर कामिनी सुलभ हो जाती है। फिर 'नारि विष्णु माया प्रकट' से बचना कठिन हो जायगा। आपको सिद्धाई प्रगट करना अपने को बर्वाद करना है। संसार के समस्त भोग सुखों को मिथ्या, नाशवान मानकर, सत्स्वरूप श्रीयुगलकिशोर के ध्यान में चित्त को फँसाये रखना चाहिये। श्रीबड़े महाराज का आदेश है कि श्रीनामप्रताप हृदय में धारणकर, आप स्वयं भी दिव्य प्रेमामृत का पान करते रहें तथा औरों को भी पान कराने की शक्ति आपको कृपालु नाम सरकार दे देंगे।

'कोटिन भाँति कहे कोउ बात विचित्र बनाय न चित्त में लावो।
होश हिराय रहो निज नाम में मस्त सदा उर कंज फुलावो।।
कंचन कामिनी संग करो मत, सत्त स्वरूप में चित्त रलावो।
(श्री) युग्म अनन्य सुनाम प्रताप से प्रेम पियूष पियो औ पिलाओ।।'

'जौन नाम सबल सम्हारि हनुमान हिये
गये सिन्धु पार दह्यो लंक बिन शंक के।
जौन नाम प्रबल प्रताप धारि कुम्भसुत
पियो वारिनिधि रोक्यो बिध्य बिना बंक के।।
जौन नाम सुमिरि गनेश पूजनीय भयो
शंकर पचायो कालकूट हीन अंक के।
सोइ सुधाधाम नाम सर्वेश शिरमौर
(श्री) युगल अनन्य के अधार अविशंक के।।'२०५३।।

श्रीबड़े महाराज कहते हैं कि शास्त्रोक्त साधन सभी अपनी जगह पर सही हैं, परन्तु उनमें प्रचंड अग्निज्वाला के समान जो बाधाएँ आती हैं, उनके कारण साधक इन साधनों को सम्हाल नहीं पाता। आप अपने हृदय में विचारें कि गजराज को ग्राह से किस साधन ने उबारा? असंख्य संत श्रीरामनाम के प्रतापको ही हृदय में दृढ़तापूर्वक जोगाकर, साधकों के मोहान्धकार को मिटाने वाले हो गये हैं। अतः युगल प्रभु का सच्चा शरणापन्न वही माना जायगा जो अविलंब युगलनाम जप में तत्पर हो जाँय।

'साधन सिद्ध समूह सहीं पर आफत आग समेत सम्हार न।
देखिये दृष्टि उघारि भला जग कौन उधार कियो वर वारन।।
नाम प्रताप हिये गहिके दृढ़ संत अनन्त भये तम तारन।
(श्री) युगलअनन्य प्रपन्न सदा सोइ जौन जपे निज नाम अघारन।।'' १७७।।

श्रीनाम सरकार ही ऐसे परम उदार हैं, जो हमारे सभी मनोरथों को पूर्ण करते हैं। अन्य निष्फल साधन से हमारा प्रयोजन ही क्या? अन्य साधन फल न प्रदान कर सकने के कारण बदनाम हो चुके हैं। अतः इनसे नेह तोड़ डाला है। अन्य साधनों की प्रशंसा नहीं करना है, अन्यथा ये जो कुछ मान—मर्यादा है, नष्ट ही कर डालेंगे। श्रीरामनाम प्रताप से ही काम—विकार की कीचड़ धुलेगी।

'नीम सही सरकार उदार हमारी मनोरथ पूरन वारो।
आन अकाम से काम कहा बदनाम बिचारिके नेह निवारो।।
तान न गाइये दूसरी आन सुमान प्रमान बहावन वारो।
(श्री) युग्म अनन्य सुनाम प्रताप से काम कलंक कुपंक निकारो।।'२७०।।

अत: श्रीरामनाम का रटन तो समस्त सिद्धान्तों के सार का भी सार सर्वस्वं है। एक बार भी कोई मुख से श्रीरामनाम का उच्चारणभर कर देवें। उसमें चाहे जपकी सुरीति हो न हो, श्रीनाम में श्रद्धा विश्वास हो न हो,तो भी परम समर्थ श्रीनाम उसके सभी पापों का नाश कर देते हैं। अहो— श्रीरामनाम का प्रताप! विचार करने में इनका महत्त्व मन में अँटता भी नहीं। आप भली—भाँति बिचारकर स्वयं तौल लीजिये। इतनी बड़ी शक्ति तप, ज्ञान, ध्यान आदि साधनों में कहाँ? अत: हमारे जीवन का आधार एकमात्र है श्रीरामनाम का रटन। बस!

'रामनाम रटन समस्त सार सार है।
वारक वदन ते वदत कोइ रीति प्रीति
विगत प्रतीति तऊ कटे अघ भार है।
अहो अद्‌भुत नाम प्रबल प्रताप पन
मन में समात नहि करत विचार है।।
कहाँ ज्ञान—ध्यान तप आदिक में शक्ति इह
साँची मति सहित निहारिये सुतार है।
(श्री) युगल अनन्य मेरो जीवन अधार यार
रामनाम रटन समस्त सार सार है।' ७२५।।

श्रीरामनामका प्रताप हृदय में नहीं धारण करने के कारण विमुखी जीवन चौरासीलाख योनियों में भरमते रहते हैं। ऐसा श्रीक्रियायोगसार में धर्मराज ने यमदूतों से कहा है।

'यावच्छ्री रामनाम्नस्तु सुप्रताप हृदिस्थले।
नायाति सम्भ्रमन्तीह विमुखा: सर्व योनिषु।।''

पूज्यपाद श्रीबड़े महाराज स्वरचित सत्सिद्धान्तसार नामक ग्रन्थ में श्रीनाम—प्रताप विषयक एक सुन्दर आख्यायिका लिखते हैं। श्री सुतीक्ष्णजी की जिज्ञासा देखकर, सद्‌गुरु श्री अगस्त्यजी ने उन्हें श्रीरामनाम प्रताप प्रत्यक्ष प्रगटाकर दिखाया। श्रीसुतीक्ष्णजी क्या देखते हैं कि एक अद्‌भुत मणिमय भवन श्रीअगस्त्य आश्रम में ही प्रगट हो गया है। असंख्य सूर्यो के समान उससे प्रकाश दिग—दिगान्त को प्रतिभासित करने लगा है।उस भवन के भीतर एक सोहावन मंडप बना है। उस मंडप के भीतर एक सुन्दर रत्नमय वेदिका है। उस पर रत्न—सिंहासन सजा है।उस पर दिव्यप्रेम नेममय बिछावन बिछे हैं। परम—प्रभा छा रही है। बड़ा ही सुहावना है। उस दिव्य—स्तरणमय सिंहासन पर श्रीसीतारामनाम सरकार अपने ऐश्वर्य सहित अक्षरमय विराजमान हैं। उनसे सूर्य के समान तेज छिटक रहा है अत्यन्त सुन्दर है। चारों तरफ आवरणों में दिव्य दरबारी लोग विराजमान हैं। उन्हीं अक्षरों से मधुर—मधुर सीतारामनाम ध्वनि प्रगट हो रही है। चारों ओर के आवरणों में अनन्त साधन एवं साध्यगण विगत मान होकर श्रीनाम सरकार की सुछवि देख रहे हैं। उस समय के नाम सरकार के रूप गुण, परत्व देखकर सबकी वाणी अवरूद्ध हो रही है।

सभी अवतार श्रीनामसरकार के कृपाकटाक्ष की चाहना कर रहे हैं,सभी परेश्वर श्रीनाम के वशीभूत एवं परतन्त्र होकर, उनकी स्तुति कर रहे हैं।

हे श्रीनाम सरकार! आप जिस पर कृपा कर दें, वह अद्वितीय महान बन जाता है। आप अपना कृपापात्र बनाने में ऊँच–नीच पात्रों को नहीं देखते। आपकी कृपा जिस जापक पर हुई,उसी के पास हम सभी परमेश्वरगण (नाना रूपधारी सगुणब्रह्म एवं त्रिदेव) सभी साधन–सिद्धियों को साथ लेकर पहुँच जाते हैं। और आपके कृपापात्र जापक की सभी अभिलाषायें, अविलम्ब पूरी कर देते हैं। वही जापक परम–पावन बन जाताहै। श्री जानकीवल्लभलालजू के अतिरिक्त जितने भी सगुण ब्रह्मरूप हैं, सभी आप नामांश से ही संभावित हुए हैं तथा जिस पर श्रीसीताराम रूप के रिझाने में लगे रहते हैं, उसी प्रकार आप श्रीनाम सरकार को भी रिझाया करते हैं। स्वयं श्रीजानकीरमण तो अपने नाम के प्रति इतने अनुरागासक्त रहते हैं कि नामजापक के परतन्त्र हो जाते हैं। इस प्रकार श्रीअगस्त्य जी ने श्रीसीतारामनाम का प्रताप श्री सुतीक्ष्णजी को प्रत्यक्ष दिखा दिया। पुन: वह झाँकी अन्तर्ध्यान हो गई। मूल महावाणी इस प्रकार पठित है। श्री सत्सिद्धान्तरसार के षष्ठ सिद्धान्तसार में परतम प्रभाव कथन प्रकरण आप पढ़ें।

अमित मित्र सम सहज प्रकासा। अद्भुत भवन दशहु दिशि भासा।।
मण्डप मधुर मान मद हारी। वरवेदी आसन मनहारी।।
प्रेमनेम मय बिछे बिछावन। परम प्रभा समान छबि छावन।।
तापर लसत नाम सुख सागर। विभव विलास सहित नव नागर।।
तेज तरुन सौन्दर्य निधाना। अवरन वरन अकथ गुन आना।।
शब्दसार रसरूप परेश्वर। जेहि ध्यावत वरदेश महेश्वर।।

चारिहु दिसि कर जोरि सब, साधन सिद्धि अनन्त।
वदन बिलोक भाव भरि, परिहरि मान दुरन्त।।
वचन गिरा थकि जात गुन, रूप परत्व मझार।
(श्री) युगलानन्य सुमंद मति, बरनौ कौन प्रकार।।

सब अवतार निहारहि भौहैं। सनमुख खरे भरे मुद दोहै।।
सुस्तुति सरस विनय बहु भाषै। निज प्रभाव परेश बस राखै।।
जापर कृपा रावरो होई। ताहि समान और नहि कोई।।
हम सब ईश तासु आधीना। साधन विभव समेत नवीना।।
नीच ऊँच नहि करहि विचारा। जहाँ कृपा सागर पद धारा।।
तहँ तहँ हम सब सपदि सिधारे। तासु सकल अभिलाष सँवारे।।
सो पावन पावनतर पावन। जेहि जिय वसहु प्रनत प्रगटावन।।
हम सब रूप नाम बसबरती। काहू समय न मम मति फिरती।।

सियवर बिना रूप गुन जेते। सो सब नाम अंस दुति देते।।
सियपिय नाम रूप युग सुन्दर। परम परेश प्रेममय मन्दिर।
और रूप सब ईश कहावै। सो समस्त सियराम रिझावै।।
सियवल्लभ निज नाम सनेही। वसीभूत सम रहे निरेही।।
सीताराम नाम आधीना। श्रुति सम्मत पुनि कहै प्रवीना।।
या प्रकार सुख सार रहस वर। दरसायो करुनाकर मुनिवर।।
अन्तर्धान भयो सुख सोई। गुप्त रहस्य अनूपम गोई।।
मगन महा सुखसिन्धु सुतीक्षन । तन मन लीन हीन तम तीक्षन।।

'नाम प्रभाव न जाने यथारथ रामहु और के काह चली है।
अज्ञ अकोविद आलसि आँधर भूलै फिरैं जन भर्म गली है।
ते किमि जानहि नाम—प्रताप सुबुद्धि कुभोग विकार छली है।
प्रेमलता नहि नामसो नेह लखो करणी तेहि लाख कली है।।'

श्री नाम वैभव

ईश्वर और विभु प्राय: एकार्थ बोधक शब्द हैं। अत: दोनों के भाव—वाचक ऐश्वर्य और वैभव को हम एक ही अर्थ में यहाँ कहेंगे।

शास्त्रों में श्रीनाम— वैभव को अनन्त एवं अचिन्त्य बताया गया है। श्रीतापनीय संहिता कहती हैं कि सभी दोषों का परं प्रायश्चित तो नामजप ही है। नामजप से अकाल मृत्यु मिटती है तथा अविद्या समूल नष्ट हो जाती है। श्रीरामचन्द्र जैसे प्राणों के प्राण, जीवनों के जीवन हैं, प्राण सर्वस्व हैं, उसी भाँति आपके नाम का वैभव भी अनन्त है। नाम से बढ़कर,हम किसको कहें?

'सर्वाषामेव दोषाणां प्रायश्चितं परं स्मृतम्।
अपमृत्यु: प्रशमनं मूलाविद्या विनाशनम्।।
नाम संकीर्तनं विद्धि अतो नान्यद्‌द्वदाम्यहम्।
सर्वस्वं रामचन्द्रोऽपि तन्नामानन्त वैभवम्।।'

वायु पुराण में भगवान शंकर देवर्षि श्रीनारदजी के प्रति कहते हैं कि श्रीरामनामकी सामर्थ्य वैभव, शौर्य, विक्रम कोई कह नहीं सकता। मैं नारद! सत्य—सत्य कहता हूँ। श्रीरामनाम के अर्थ करने में, उसी नाम के अभ्यन्तर श्रीसीता महाशक्ति का भी अधिवास मानना पड़ता है। मुनिवर! श्रीरामनाम का वैभव, विज्ञान के लिए भी अगोचर है।

'श्रीरामनाम सामर्थ्यं वैभवं शौर्य विक्रमम्।
प्रवक्तुं कोपि शक्नोति सत्यं सत्यं च नारद।।
रामनामार्थमध्ये तु साक्षात् सीता पदं प्रियम्।
विज्ञानागोचरं नित्यं मुने श्रीनामवैभवम्।।''

शक्तियों के सहित त्रिदेवोंके की रकार ही से उत्पत्ति कहकर पुन: कहते हैं,उनके द्वारा उत्पन्न पालित संहरित जगत भी महाप्रलयों के तारतन्य से सृष्टि के आदि तथा स्थिति वाले मध्य महाप्रलय वाले अन्त में रकार ही में नित्य व्यवस्थित रहते हैं।

''आदावन्ते तथा मध्ये रकारेषु व्यवस्थितम्।
विश्वं चराचरं सर्वमवकाशेन नित्यश:।।

श्रीब्रह्मयामल का भी यही मत है। जगत रकार से ही उत्पन्न होकर महाप्रलयकाल में रकार ही में लीन होकर रहता है। इनमें विकल्प कभी नहीं होता। ये तो नित्य हैं निर्मल एवं चिन्मय(बुद्र) हैं।

''रकारोत्पद्यते नित्यं रकारे लीयते जगत्।
रकारो निर्विकल्पश्च शुद्ध बुद्धस्सदाऽद्वय:।।''

श्रीकूर्मपुराण में भगवान् शंकर श्रीपार्वती से कहते हैं कि सर्वेश्वरप्रिय रामनामका सतत् जप करो सभी त्रिदेवादि शासकवर्ग श्रीरामनाम से ही उत्पन्न होते हैं तथा श्रीनामही उनके प्रेरक भी हैं।

जपस्व सततं रामनाम सर्वेश्वरप्रियम्।
नियामकानां सर्वेषां कारणं प्रेरकं परम्।।

श्रुति स्मृति पुराणगण भी श्रीरामनाम ही में स्थित रहते हैं। तभी तो जापक को बिना इनके पढ़े भी सभी शास्त्रज्ञान स्वयं आ जाते हैं। श्रीरहस्यनाटक का श्लोक हैं।

''श्रुति स्मृति पुराणानि रामनाम्नि च संस्थितम्।
यथैव लोके सुस्पष्टं सूत्रे मणि गणा इव।।''

असंख्य सुमन्त्र गण भी श्रीरामनाम ही के अंश से उत्पन्न हुए हैं। श्रीनाम की उज्ज्वल महिमा गँवार क्या जाने?

असंख्यमन्त्र नाम्नां तु बीजं शर्मास्पदं परम्।
अनादृत्य महामन्दा संशक्ताश्चान्य साधने।। 'पद्मे'

इतिहासोत्तम का कहना है कि श्रीरामनाम के पारमार्थिक वैभव सुनकर जिस आँखे से आँसू न बहने लगे उसमें धूल डालना चाहिये।

''श्रुत्वा श्रीनाम्नस्तु वैभवं पारमार्थिकम्।
स्रवते न जलं नेत्रात्तन्नेत्रे वै रजोक्षिपेत्।।''

श्रीविष्णुपुराण में श्रीसनत्कुमार जी श्रीवशिष्ठजी से कहते हैं — मैंने उत्तमोत्तम सभी सार वस्तुओं को स्वयं देखा भी है और सुना भी, परन्तु श्रीरामनाम का वैभव तो परतर से भी परतम है।

''दृष्टं श्रुतं मया सर्वं यत्किंश्चित्सारमुत्तमम्।
परन्तु रामनामैकं वैभव तु परात्परम्।।''

श्रीपद्मपुराण में लोकपितामह ब्रह्माजी श्रीनारदजी से कहते हैं — वत्स सभी भगवन्नामों के वैभव श्रीरामनाम ही से प्राप्त हैं। यह तत्त्व मैंने विशेष रूप से समझा है। अत: तुम श्रीरामनाम ही जपो।

''सर्वेषां हरिनाम्ना वै वैभवं रामनामतः।
ज्ञातं मया विशेषेण तस्मात् श्रीनाम संजय।।''

श्रीशुकपुराण में श्रीशिव वचन है देवि पार्वती अग्नि यदि रज से ढका हो तो केवल उसके विश्वासी मर्मी ही जानते हैं भीतर आग छिपी है। उसी भाँति अविश्वासी के लिए श्रीनाम का वैभव अज्ञात रहता हैं।

'' यथैव पावको देवि रजसाच्छन्नतां ब्रजेत्।
तथा विश्वासहीनानां नास्ति नामार्थ वैभवम्।।''

इस सन्दर्भ के प्राप्त और शास्त्र प्रमाणों को हम ग्रन्थ विस्तारभय से छोड़ते हैं। श्रीबड़े महाराज के हिन्दी छन्द आगे उद्धृत करते हैं।

सीतारामनाम की विभूति अविचिन्त्यचारु
व्यापि रही निखिल निकेतन मझार हैं।
ताते भिन्न तिहूँ लोक नजर देखात नहि
समुझि सुहीय हरषात एकवार हैं।।
कौन साथ रागद्वेष कीजिये विचारु नेक
एक रघुनाथ को विलास अविकार है।
(श्री)युगल अनन्य नाम पूरन परत्व पेखि
पायो प्रेम प्रवल प्रसाद स्वच्छ सार है।। १५०।।

सीतारामनाम जस जिकर फिकर हर
निकर निकेत शुद्धसार शुभ फल है।
होय के एकान्त शान्त भ्रान्त से रहित कांत
कमल सुपद अभिलाषिये सुचित्त थल।।
वातन विनोद बीच व्यर्थ व्यवहार विष
बोइये न नेक टेक छोड़िये कलीक मल।
(श्री)युगल अनन्य इष्ट नाम की विभूति वर
जानिये जहान जहाँ तलक सुजल थल।।१७८।।

नाम की विभूति छर अछर अजूब वर
मधुर मधुर नाम रटत विनीत है।
तीनहु के पार जौन सहित बिहार वर
मधुर मधुर नाम रटत विनीत है।।
नाम परमेश परहू ते परतम सम
विषम विहीन अविगीत चित्त चीत है।

(श्री) युगल अनन्य अनुरागी बड़भागी नाम
सुजस समूह सब भाँति अविगीत है।। १५५६।।

वैभवशाली श्रीरामनाम का आश्रयण कर जापक मालोमाल हो जाता है

''कविरा सब जग निर्धना, धनवन्ता नहि कोय।
धनवन्ता सोइ जानिए, रामनाम धन होय।।''

परमंहस श्रीप्रेमलता जी रचित ''श्रीसीतारामनाम किंचित् विभूति चालीसा'' से श्रीनामवैभव परिचायक कतिपय छन्द नीचे उद्धृत किये जाते हैं—

कोटिन रिद्धि सुसिद्वि प्रदायक कोटिन भक्ति सुमुक्ति के दानी।
कोटिन मातु–पिता सम पालक घालक कोटि कुसंकट हानी।।
कोटिन ईश महीश करोरनि स्वामी सहायक सिद्ध सुज्ञानी।
प्रेमलता हित नाम समान तिलोक न सन्तन बैन बखानी।।
कोटिनि चन्द्र समान सुसीतल कोटिनि सूर्य समान प्रकासू।
कोटि पताल समान अगाध सुकोटि अकाश समान उचासू।।
कोटिनि काल समान कराल सुकोटिनि शक्र समान विलासू।
कोटिनि भूमि समान छमी भजु नाम सुप्रेमलता प्रति स्वासू।।
कोटिनि वायु समान वली वर सुन्दर कोटिनि काम समानू।
पंडित कोटिन शारद के सम तेज सुकोटि समान कृशानू।।
कोटि गनेस से पूज्य सुकोटिन रूद्र समान प्रताप निधानू।
कोटिनि व्यास समान पुराणिक प्रेमलता प्रभु नाम सुजानू।।
कोटि कुवेर समान धनी सियराम तें कोटि गुनी प्रभुताई।
कोटि ब्रह्म समान रमे जग कोटि सुमेरनि सी अचलाई।।
भृगुपति कोटिनि से अरिमर्दन कोटि विरंचिनि सी चतुराई।
कोटिनि विष्णु से प्रेमलता जन रक्षक नाम सदा सुखदाई।।
कोटिनि कर्ण वली से उदार तपी मनु कोटिन से अधिकाई।
कोटिन बद्रिनारायन ते हित साधक लोकनि के विनु हेतु सहाई।।
कोटिन नारद से अति वेग सुकोटिन तोमश सी अमराई।
कौतुकि कोटिन कृष्णनि ते प्रभु नाम सुप्रेमलता कह गाई।।
कोटिनि भूप विभीषण से रत नीति सुनाम कृपाल नरेशू।
कोटिनि अज्जनिनन्दन से भट नाशन सन्तन केर कलेसू।।
कोटिनि कामसुधेनु से कामद कोटिनि अमृत ते सुररेश।
कोटिन धाम ते प्रेमलता रमणीक सुनाम बखान महेशू।।

कोटिनि धर्म ते सत्यब्रती शुक कोटिनि तें सुविरक्त विचारी।
शोषक कोटिनि कुम्भज से जन के अघ वारिधि ते अति भारी।।
जगदीश ते भोगी अनन्तगुने सुधन्वरि कोटि से रोग प्रहारी।
प्रेमलता अस जानि रटो सियराम सुनाम पुकारि पुकारी।।

विभु शब्द का अर्थ सर्वव्यापक भी है। अत: श्रीनाम वैभव में श्रीनाम की सर्वव्यापकता भी अन्तर्भूत है। नाम रटते–रटते जब विज्ञानमयी दृष्टि प्राप्त होती है तो श्रीरामनाम सरकार जगत के अणु परमाणु में व्याप्त दीखते हैं।

श्रीरामनाम स्थित रकारमात्र सब प्राणियों में व्याप्य व्यापक ईश्वर तथा सबों के अनन्त रूपधारी ईश्वर है। ऐसा ब्रह्मयामल का कथन है।

''रकारः सर्व भूतानामीश्वरोऽनन्त रूप धृक्।
रकारः सर्वभूतानां व्याप्यव्यापकमीश्वरः।।''

श्रीनामकृपा से प्राप्त विज्ञानमयी दृष्टि से हमारे पूर्वाचार्य श्रीबड़े महाराज जी स्वरचित श्रीसीतारामनाम सनेहवाटिका में कहते हैं–

'डार डार में रकार फूलपात में रकार
जाति पाँति में रकार प्रीति प्यार में रकार है।
रंग–संग में रकार अंग अंग में रकार
राव रंक में रकार मूल धूल में रकार है।।
नृर पूर में रकार चन्द सूर में रकार
योग यज्ञ में रकार नाद विंदु में रकार है।
हर्ष शोक में रकार शून्य पूर में रकार
ज्ञानध्यानमें रकार यों रकारे सरकार है।।
नेम प्रेम में रकार हेम छेम में रकार
स्वर्ग भूमि में रकार राग रास में रकार है।
तात भ्रात में रकार बात बात में रकार
दिवारात में रकार सर्वोपर विचार है।।
मान दान में रकार खान पान में रकार
गान तान में रकार अनुराग रसधार है।
नाम रूप में रकार काम धाम में रकार
परब्रह्म में रकार यों रकारे सरकार है।।
धर्म कर्म में रकार ब्रह्म शर्म में रकार
नर्म गर्म में रकार हौश हिंर्स में रकार है।

प्रीति रीति में रकार जीत नीत में रकार
मीठ तीत में रकार नील पीत में रकार है।
रोम रोम में रकार कौम कौम में रकार
वक्र सौम में रकार राम रूप स्वाद सार है।।
व्याप्य व्यापक रकार ओंकार में रकार
सुधा सागर रकार यों रकारे सरकार है।।६९३।।

ब्रह्मवैवर्त्त पुराण में देवर्षि नारदजी ने महाराज अम्बरीष से कहा है कि मैंने विज्ञान दृष्टि से देखा कि सारा विश्व श्रीरामनाम से व्याप्त है। वह दृश्य मनवाणी तथा इन्द्रियों से परे निर्विकल्प एवं परमानन्द दायक रहा।

''दृष्टं नामात्मकं विश्वं मया विज्ञान चक्षुषा।
वाङ्मनोगोचरातीतं निर्विकल्पं प्रमोददम्।।''

श्रीनामवैभव श्रीनामानुभवी के मुख से सुनने का फल श्रीशुक देवजी से सुनिये—

''यन्नाम वैभवं श्रुत्वा शङ्कराच्छुकजन्मना।
साक्षादीश्वरतां प्राप्तः पूजितोऽहं मुनीश्वरैः।।''

अर्थात् श्रीशुकदेवजी ने स्वयं कहा है कि जब मैं शुकयोनि में था तो भगवान शंकर के मुख से श्रीरामनाम का वैभव सुना था। उसका फल यह हुआ कि आज मेरी गणना ईश्वरकोटि में हो रही है और सभी मुनीश्वरों का पूज्य बन गया हूँ। यह श्रीनाम वैभव श्रवण मात्र का फल हुआ। हृदय में वैभव धारण करें तो क्या हो?

श्रीनाम महिमा

शब्दार्थ के अनुसार महान होने के भाव को महिमा कहते हैं। महत्त्व, माहात्म्य, बड़ाई आदि महिमा के ही पर्यायवाची शब्द हैं। श्रीकाकर्षिजी श्रीनाम महिमा को अमित अनन्त बताते हैं।

''महिमा नाम रूप गुन गाथा। सकल अमित अनन्त रघुनाथा।।''१२१।३

श्रीनारदीयपुराण में देवर्षि नारदजी श्रीव्यासदेवजी से कहते हैं कि चिरायु एवं बहुश्रुत होने के नाते तथा अनेक साधन करके उनके फलाफल को अनुभव द्वारा जानकर मैं कहता हूँ कि मैंने अन्यान्य सभी साधनों के वैभव को अच्छी प्रकार तौल लिया है, परन्तु श्रीरामनाम माहात्म्य के सामने सेर भर में एक छटाँक के बराबर भी वे नहीं तुलेंगे।

सर्वेषां साधनानां च संदृष्टं वैभव मया।
परन्तु नाम माहात्म्यकलां नार्हति षोडशीम्।।

श्रीपद्मपुराण में लोक पितामह ब्रह्माजी देवर्षि नारदजी से कहते हैं कि वेद वर्णित श्रीरामनाम के यथार्थ माहात्म्य को सुनकर बुद्धिमानों को चाहिये कि अन्य साधनों की आशा भरोसा को छोड़कर श्रीरामनाम के निरन्तर जप में शीघ्र तत्पर हो जायँ।

श्रुत्वा श्रीनाम माहात्म्यं यथार्थं श्रुति पूजितम्।
सर्वाशां संविहायाशु स्मर्तव्यं सर्वदा बुधैः।।

श्रीकात्यायन संहिता में कहा गया है कि श्रीरामनाम की महिमा जो कुछ कही सुनी जाती है,सभी वेद सम्मत है। इसमें अविश्वास करके जो कुतर्क करने लगते हैं वह मनुष्य पापभागी होते हैं।

श्रीरामनाम माहात्म्यं यथार्थ श्रुति सम्मतम्।
कुतर्कं ये प्रकुर्वन्ति तेऽधमाः पापयोनयः।।

श्रीशारदा रामायण में कहा गया है कि श्रीरामनाम का माहात्म्य चारो युगों में सर्वोपरि जगमगाता आता है, किन्तु कलिकाल में श्रीनामही का अवलंब रह गया है।

चतुर्युगेषु श्रीरामं नाममाहात्म्यमुज्ज्वलम्।
सर्वोत्कृष्टं न सन्देहो कलौ तत्रापि सर्वथा।।

श्रीआदि रामायण की बात हैं। सेतुवन्ध के प्रधान शिल्पी श्रीनलजी से सेतुरचना नहीं हो पा रही थी। श्रीहनुमतलालजी ने प्रत्येक शिला खंड पर श्रीरामनाम लिखा तथा उसे जल में तैराकर श्रीनल जी को श्रीनाम प्रभाव स्पष्ट दिखा। देखकर वानर गण चकित रह गये।

''लिखित्वा दृषदां मध्ये नाम सीतापते र्मुहुः।
निविक्षेप पयोराशौ बहूनुच्चावचान् गिरीन्।।
संतरन्तिस्म दृष्तो रामनामाङ्किता जले।
तद् दृष्ट्वा वानराः सर्वे बभूवुर्विस्मतास्तदा।।''

श्रीहनुमतलाल जी ने पुनः बताया कि नल! मानव जातिके पाप तो पाषाण से भी अधिकभारी होते है। श्रीनाम महिमा से सारे पाप लुप्त हो जाते हैं। पुनः वह मनुष्य हल्का बनकर भवसागर से तर जाता है। यह आश्चर्य नही है क्या?

''ग्रावाङ्गणेभ्योऽपि जनस्य पापान्यतीव सारेणसमाकुलानि।
लघुक्रियन्ते मनुजा यदेतैर्भृशं विलुप्तैरिह तन्न चित्रम्।।''

श्रीनलजी ने कहा श्रीपवननन्दनजी! श्रीरामनाम के इस आश्चर्यजनक माहात्म्य को सुनकर तथा स्मरण करके मुझे तृप्ति नहीं हो रही है। अतः मुझे और भी महिमा सुनाने की कृपा करें।

''श्रृण्वन स्मरन् प्रभोर्नाम माहात्म्यमिद्मद्भुतम्।
न तृप्यामि मरुत्सूनो ! कथयस्व ततो मम।।''

श्रीमानसजी के नीचें लिखे उदधरणों से भी श्रीनाम महिमा का ज्ञान प्राप्त हो सकता है।

''महिमा जासु जान गनराऊ। प्रथम पूजिअत नाम प्रभाऊ।।'' १।१९।४

''आकर चारि जीव जग अहहीं। कासी मरत परमपद लहहीं।।
सोपि राममहिमा मुनिराया। सिव उपदेस करत करि दाया।। १।४७।४।५

बरवैरामायण में श्रीवरवा रामारण भी यही बात कही गई है।

''महिमा रामनाम की जान महेस।

देत परमपद कासी करि उपदेस।।''

श्रीमिथिलाजी के नामजापक शिरमौर परमहंस श्रीप्रेमलता जी महाराज का उपदेश है कि श्रीरामनाम की अकथ अपार महिमा तो कहने को हमने भी थोड़ा सा कह दिया है, परन्तु श्रीमहिमा का यथार्थ ज्ञान तो स्वयं श्रीनाम सरकार ही जापक के हृदय में दरशा देंगे। नाम रटन होना चाहिये उत्साहपूर्वक। श्रीवृहद उपासना रहस्य से उद्धरण दिया जा रहा है।

''कहेउ कछुक श्रीनाम की, महिमा अकथ अपार।

रटत रटत दरसावहीं, नामहिं हृदय मझार।।''

श्रीदोहावलीमें श्रीगोस्वामिपाद कहते है कि परम महिमामय गरीब निवाज श्रीरामनाम जापक को राज्यसुख दे डालते हैं,परन्तु पाजी मन धूर ढेर में मुर्गे की भाँति कण—कण ढूँढ़ने की आदत नहीं छोड़ता।

''नाम गरीब—निवाज को राज देत जन जानि।

तुलसी मन परिहरत नहिं घुरबिनियाँ की बानि।।'' १३।

श्रीविनय पत्रिका में कहते हैं कि माया के दल काल कर्म गुण स्वभाव मनुष्य के शिर पर बड़े प्रवल ताप पहुँचाते हैं। श्रीरामनाम महिमा की चर्चा चलते ही डर के मारे दब जाते हैं।

''काल करम गुन सुभाउ सबके सीस तपत।

रामनाम महिमा की चरचा चले चपत।। १३०।।

उलटे नाम की महिमा प्रगट की है श्रीवाल्मीकिजी ने और सीधे नाम की भगवान महेश्वर ने। जो नाम स्मरण करते हैं उनकी दुःख दुर्भाग्य—भाग्यलिपि लिखने को समुद्यत विधाता प्रसन्न होकर सुख सौभाग्य लिख देते हैं।

''नाम लेत दाहिनो होत मन वाम विधाता वामको।

कहत मुनीस महेश महातम उलटे सीधे नामको।। १५६।।

''नाम महिमा अपार सेष सुक बार—बार, मति अनुसार वुध वेदहू बरनि।।२४६

लाभहू को लाभ सुखहू को सुख सरवस, पतित पावन डरहू को डर है।।२६६

श्रीबड़े महाराज जी स्वरचित श्रीरामनाम परत्व पदावली में कहते हैं कि श्रीरामनाम की महिमा सारे भूमण्डल में प्रसिद्व है। एक ही बार श्रीनामोच्चारण से श्रीनाम जापक को अज्ञान सिन्धु से पार उतारकर तीनों मायिक गुणों से ऊपर उठाकर उसके संसार को जला देते हैं। ऐसे श्रीनाम स्वजन रंक्षक हैं। जैसे सिंह गर्जन सुनते ही वनके क्या मृग गण क्या मत्तगयंदगण सबके सब प्राण लेकर वहाँ से भाग जाते हैं, उसी भाँति नाम उच्चारण सुनते ही काम, क्रोध, मोह, द्वेष आदि कुगण नाम श्रोता के हृदय से संत्रस्त होकर भाग जाते हैं। नाम जापकों का अनुभव सिद्व सत्य

सिद्धान्त है। इसमें संशय नहीं करना चाहिये। विमल हृदय जापक नाम महिमा का अनुभव कर पाते हैं। वेद का प्रमाण है कि दानपुन्य तीर्थ व्रत ज्ञान ध्यान आदि कोई भी पारमार्थिक साधन श्रीरामनाम की समता नहीं कर सकते। अत: श्रीबड़े महाराज जी का आदेश है कि सभी साधनों की आशा त्यागकर एकमात्र श्रीनामाभ्यास में पग जाना चाहिये। फिर तो आनन्द ही आनन्द लूटते रहो।

''रामनाम महिमा महि मंडल मधि ख्यात है।
बारक उच्चारत तम तोभ सिन्धु तारक तर
त्रिगुन तीर पारक जग जारक जन त्रात है।।
जैसे वनवासी मृग करिवर गन जीव सकल
सुनत शब्द सिंह तुरत भागत गुनि घात है।
वैसे ही अनेक दुष्ट काम कोह मोह द्रोह
नाम लेत नष्ट होत संशयिक न तात है।।
जेतिक कछु पुण्य दान, तीरथ व्रत ज्ञान ध्यान
नाम के समान सो न होहि वेद बात है।
ताते सब त्यागि पागि रहिये निज नाम माँह
(श्री) युगलअनन्य मौज मोद याते सरसात है।।''

श्रीबड़े महाराज जी श्रीसीतारामनाम सनेह वाटिका नामक स्वरचित बृहद्गन्थ में कहते हैं कि श्रीरामनाम मन्त्र शिरोमणि है। इनसे मनके प्रबल संकल्प विकल्प मिट जाते हैं। अनमोल रत्नवत् इनकी महिमा विचार कर और साधनकी चाह धूलवत तुच्छ प्रतीत होती है। श्रीनाम में अमृत के समान स्वाद है। परमानन्द हृदय में सरसने लगता है। जिसने इनका जीभ से आस्वादन कर लिया उनके लिये सभी स्वाद फीके लगते हैं। अन्य साधना के लुभावने फल को समझकर उनके प्रति सानन्द हृदय प्रवृत होता है। परन्तु करने में कठिन और परिणाम हृदय को निराश करने वाला होता है। श्रीनाम की महिमा अति अगम है। एक ही बार मुख से उच्चारण करने पर इनके अलौकिक तेज का अनुभव होने लगता है।

''रामनाम मन्त्रसिरमौर दौर जौर हर
जौहर विचित्र पाय चाह और धूर है।
परम पीयूष मकरन्द मोद निधि नाम
जीह जौन चाख्यो ताके सब रस कूर है।।
साधन समूह दरसात हुलसात हिये
करत कठिन परिनाम चित्त चूर है।
(श्री) युगलअनन्य नाम महिमा अगम अति
बारक बदन ते बदत नवनूर है।। ९३३।।

कोटि— कोटि शारद, शेष, गणेश, महेश, वृहस्पति, ब्रह्मा, मुनीश्वर जन श्रीनाम सरकार के अनन्त गुणगण गाकर नेति कह देते हैं। तब काम मद से मलिन बुद्धिवाले साधारणजन श्रीनाम की अपार महिमा कैसे कह पायेंगे? अत: भद्दी भावना एवं भ्रम छोड़कर श्रीसीतारामनाम के प्रति नवल नेह बढ़ाना चाहिये। इनके प्रकाश में आपको भाव का भवन ही दृष्ट होगा।

'सारद असंख्य गननाथ गुरु गिरापति
पदुम अपार गिरिजेश शेष शांति से।
अमित मुनीश ईश अमल अनन्त गुन
गावे एक रस नेति कहत सुपांति से।।
नाम नेह नवल सजाइये बिहाय भ्रम
भावना भदेश भाव भवन सुकांति से।
(श्री) युगल अनन्य मति मलिन मनोज मद
महिमा अपार नाम कहै कौन भाँति से।।''९३९।।

महात्मा गाँधी कहते हैं नाम महिमा बुद्धिवाद से सिद्ध नहीं हो सकती, श्रद्धा से अनुभव साध्य है।

कलकत्ते के नामनिष्ठ सज्जन श्रीज्वालाप्रसाद जी कानौडिया कहते है। मरूभूमि सदृशशुष्क हृदय में आनन्दरस की लहरें उत्पन्न करने के लिये, घोर अन्धकाराच्छन्न हृदयाकाश में प्रकाश का प्रादुर्भाव करने के लिए पापपंक में पड़े हुये जीवों को उससे बाहर निकालने के लिये, विषय भागों में आसक्त चंचलचित्त में अटल शान्ति स्थापन करने के लिये घोर नरको में प्रबल वेग से जाते हुए जीव की गति को रोक कर उसे कल्याण के पावन पथ पर चलने के लिए और त्रिविध तापों से संतप्त प्राणियों को सुखमय शीतलता के स्थान तक पहुँचाने के लिये यदि कोई परमसाधन है तो वह एक श्रीभगवन्नामही है। शास्त्रों से साधु महात्माओं के वचनों से युक्तियों से और व्यावहारिक दृष्टि से भी नाम महिमा प्रसिद्ध है। यद्यपि संसार में कुछ ऐसे मनुष्य भी हैं जो नाम महिमा स्वीकार नहीं करते, परन्तु इससे नाम—महिमा में कुछ भी कमी नहीं होती। हीरा आदि रत्नों की पहचान और उसकी कीमत का ज्ञान बहुत से लोगों को नहीं होती, इससे उसकी कीमत कहीं चली नहीं जाती। इसी प्रकार नाम की शक्ति अनादिकाल से अप्रतिहत, है स्वप्रकाश है, यह सर्वदा ऐसी ही बनी रहेगी। स्मृति में कहा गया है—

''नाम्नो हि यावती शक्ति: पापनिर्हरणे हरे:।
तावत्कर्तुं न शक्नोति पातकं पातकी नर:।।''

यदि कोई श्रद्धालु आस्तिक पुरुष प्रेम से नामका अभ्यास करता हुआ उसकी महिमा पर विचार करे तो उसके हृदय में यह बात नि:संशय सिद्ध हो जाती है कि नाम महिमा का जितना शास्त्रों में वर्णन है और जितना श्रेष्ठ पुरूषों का कथन है वह सब बहुत ही थोड़ा है। अपार असीम महामहिमार्णव की सीमा बतलाने में न तो लेखनी समर्थ है और न वाणी ही! ग्रन्थों का वर्णन और

श्रेष्ठ पुरूषों का कथन तो केवल नाम प्रेमियों के कृतज्ञताभिभूत हृदयों का उच्छवासमात्र है। समुद्रमें से उतना ही जल लिया जा सकता है जितना बड़ा अपने पास वर्तन होता है। सारे समुद्र जल का ग्रहण असम्भव है। इसी प्रकार नाम माहात्म्य का भी विशेष उल्लेख या वर्णन सर्वथा असम्भव है। कोई यदि नाम माहात्म्य वर्णन करने का अभिमान करता है तो वह उसके केवल उपहास का विषय ही होता है। एक भक्त ने कहा है—

''तत्त्वे न यस्य महिमार्णव शीकराणु: शक्यो न मातुमपि सर्वपितामहाद्यै:।
कर्तुं तदीय महिम स्तुति मुद्यताय, मह्यं नमोस्तु कवये निरपत्रपाय।।''

अर्थात् जिस नाम महिमा रूप समुद्र के अतिसूक्ष्म कण का यथार्थ परिमाण लोकपितामह ब्रह्मादि नहीं बतला सकते। उसे बताने के लिये यदि हम जैसा कोई साहस करे तो ऐसे निर्लज्ज कवि को नमस्कार है। मतलब यह है कि रूद्रादिदेव भी जिसके वर्णन में असमर्थ हैं। उसका वर्णन हम कैसे कर सकते हैं?

''अमित महत्ता नाम की, को करि सकै बखान।
जाके उच्चारत करत, बिकत आप भगवान्।।''

नहि भजन यहि सम आन कहत सुमन्दमति नरबाम है।
श्रम कवन रटत सुनाम में नहि लगत कौड़ी दाम है।।
महिमा महान सुसुलभ अस सब भाँति प्रद आराम है।
अलि प्रेमलतिका रटत जे जन जात ते परधाम है।।
महि भार धारहि शेष शिर जेहि नामबल रवि तपत है।
ससि स्रवत अमृत नाम बल खल काल कलिमल छपत है।।
सियरामनाम अनूप धुनि सुनि भूत प्रेतहु कँपत है।
अस प्रेमलतिका जानि शिख शुचि संत नामहि जपत है।।
जेहि नामबल जल बरषहीं घन, प्रवल वायू बहत है।
सियरामनाम प्रताप पाय सुअनल सरब सुदहत है।।
विधि करहि सृष्टि सु हरहिं हर हरिभरत पाइ सुमहत है।
अस प्रेमलतिका नाम महिमा अकथ श्रुति नित कहत है।।

गुन प्रभाव के ज्ञान बिनु,नाम अवज्ञा होय।
रटतउ होत न विमल उर प्रेमलता सुन सोय।।

''कहे करजोर कर यह 'श्रीहरि' ऐं सज्जनों सुन लो।
बता कोई न सकता नाम की महिमा हिये गुन लो।।
कोई ही पारखी ज्यों दाम हरिको लगा सकते।
कभी शिव शेष नारद नामकी महिमा बता सकते।।
जपैंगे सो होवेंगे मंगल निधान।।''

श्रीरामनाम का मूल्य

(कल्याण भगवन्नाम महिमा अङ्क पृ०४४८ से साभार उद्धृत)

एक नगर के बाहर एक महात्मा रहा करते थे। एक श्रद्धालु भक्त प्रतिदिन उनके पास जाता और श्रद्धाभक्ति पूर्वक खूब उनकी सेवा करता। उसकी सेवा से महात्माजी प्रसन्न हो गये और बोले तू ईश्वर भक्त है, तू साधुसेवी है, शास्त्र के वचनों पर विश्वास करता है। साधन निष्ठ है, तेरी सरलता और सेवा सराहनीय है। तू व्यर्थ के कुर्तकों में नहीं फँसता, किसी का तू अ।हॅत नहीं करता। ये ही सब ऐसे आदर्श गुण हैं जो भक्तों में सहज ही होने चााहिये।

तुझको इन सद्‌गुणों से सम्पन्न और हर प्रकार से योग्य समझकर एक परम गोपनीय मन्त्र दे रहा हूँ। इस मन्त्र के वास्तविक महत्त्व को कोई नहीं जानता। इसे किसी को बतला देना मत। यह कहकर महात्माजी ने 'राम' उस भक्त के कान में कह दिया। वह भक्त 'राम—नाम' के जप में प्रवृत्त हो गया।

अब तो राम का जप उस श्रद्धालु भक्त का स्वभाव बन गया। न किसी की ओर देखना, न ध्यान देना, न कुछ कहना बस, निरन्तर राम का जप करते रहना। भक्त रोज गंगास्नान करने जाता—आता, पर राम के जप के अतिरिक्त दूसरे से उसका कोई प्रयोजन न था। एक दिन वह गंगा नहाकर लौट रहा था कि उसका ध्यान उन कुछ लोगों की ओर गया, जो गंगास्नान से लौटते समय जोर—जोर से 'राम राम' बोल रहे थे। उनके द्वारा राम शब्द सुनते ही भक्त को बड़ा आश्चर्य हुआ। वह सोचने लगा कि महात्माजी तो यह कहते थे कि परम गुप्त मन्त्र है। पर इसे तो जन जन बोल रहा है फिर इसमें गोपनीयता कहाँ रही? मुझसे तो कहा कि किसी को बतलाना नहीं और यहाँ तो हर एक के मुखपर राम है। अब वह भक्त घर न जाकर सीधा महात्माजी की कुटिया पर पहुँचा और अपने मन का सारा सन्देह महात्माजी के सामने निवेदन करके बैठ गया। महात्माजी उसकी मनोदशा से अवगत हो गये। उन्होंने कहा अच्छी बात है। मै तुम्हारे सन्देह को मिटा दूँगा तुम चिंता मत करो। पहले मेरा एक बहुत जरूरी काम कर दो। यह कह कर महात्माजी ने अपनी झोली से एक चमकता काँच सा निकाल कर उस भक्त को दिया और कहा वत्स इसको लेकर तुम बाजार में जाओ और इसका मूल्य अँकवा लाओ। देखो इसको किसी भी मूल्य पर बेचना नहीं है केवल यही पता लगाना है कि इसका मूल्य क्या है?

सरलचित्त और श्रद्धालु भक्त ने महात्माजी की बात मान ली। अपने सन्देह को एकबार वहीं छोड़ दिया और महात्माजी के आज्ञानुसार उस काँच का मूल्य अँकवाने के लिये वह बाजार में गया। बाजारमें प्रवेश करते ही उसे एक साग बेचने वाली मिली। भक्त ने उस सागवाली को दिखाकर उसका मूल्य पूछा। सागवाली ने विचार किया कि यह काँच बड़ा ही चमक रहा है। बच्चों के खेलने के लिये बढ़िया चीज है। यों सोचकर उसने भक्त से कहा यह मुझे दे दो और बदले में दो सेर आलू ले जाओ।''

भक्त ने वह काँच वापस ले लिया और आगे बढ़ा। सामने सुनार की दूकान आयी। सुनार को दिखा कर भक्त ने काँच का मूल्य पूछा। सुनार ने देखकर सोचा कि यह देखने में नकली हीरा सा लगता है, अतः इसका मूल्य सौ रुपया देकर भी ले लेने में कोई हानि नहीं होगी। सुनार ने उस काँच का दाम

सौ रुपये बता दिया। सुनार से काँच लेकर भक्त आगे बढ़ा। एक महाजन की दुकान पर गया और उसे काँच दिखाया। महाजन ने देखा और सोचा– है तो यह नकली हीरा पर इतना बढ़िया है कि इसे कौन नकली कहेगा? फिर हमारे घर की बहू बेटियो को पहने देख कर तो सभी इसको असली ही कहेंगे। यों बिचार कर महाजन ने एक हजार रुपये मूल्य रूप देने को कहा। भक्त और आगे बढ़ा। अब भक्त के मन में उत्साह आ गया। दाम की जाँच–ज्यों ज्यों करता जा रहा था, त्यों त्यों काँच की श्रेष्ठता और उच्चता प्रगट और सिद्ध होती जा रही थी। फिर एक जौहरी की दूकान पर गया। जौहरी ने देखा और मनही मन कहा, यह लगता तो हीरा है, पर इतना बड़ा और बढ़िया हीरा तो कभी देखा नहीं। शायद हीरा न हो पर यदि कहीं हीरा हुआ तो इसका मूल्य अत्यधिक होगा। अतएव एक लाख रुपये तक में इसे खरीद लेना बुरा न होगा। यह सोचकर पूरे एक लाख में हीरा लेना चाहा। भक्त ने हीरा वापस ले लिया। भक्तका विश्वास बढ़ गया। तदन्तर वह नगर के सबसे बड़े जौहरी के यहाँ गया और उसे हीरा दिखाया। जौहरी ने देखा बारीकी से परखा और कहा–भाई इतना बढ़िया हीरा तुम्हें कहाँ से मिल गया? यह तो अमूल्य है इतना भव्य और बड़ा हीरा मैं ने आजतक कहीं देखा नहीं। यह इतना मूल्यवान है कि जौहरियों के तथा बड़े बड़े नरेशों के सारे हीरों का जितना दाम हो सकता है वह सब मिलकर भी इसके मूल्य के बराबर नहीं हो सकता। वास्तव में इसका मोल आँकना किसी की भी बुद्धि से बाहर की बात है।

यह उस काँच (और अब हीरे) के मूल्यांकन की पराकाष्ठा थी। भक्त लौटकर महात्माजी के पास आ गया। महात्माजी ने भक्त से काँच का मूल्य पूछा। भक्तने कहा महराज! यह तो अमूल्य हीरा है। सागवाली ने दो सेर आलू बताया। सुनार ने बदले में सौ रुपये देने चाहे। महाजन ने एक हजार आँके। जौहरी ने एक लाख कहा और नगर के सबसे बड़े जौहरी ने यही कहा कि यह अमूल्य है। देश के सारे हीरे मिलकर भी मूल्य में इसकी बराबरी नहीं कर सकते। महात्माजी ने वह हीरा वापस लेकर झोली में रख लिया।

भक्त ने कहा महाराज! मैं तो आपके आज्ञानुसार आपका काम कर आंया अब आप मेरे सन्देह को दूर कीजिये। महात्माजी ने हँसते हुए कहा कर तो चुका भैया! बात भक्त की समझमें आई नहीं। उसने विनम्रता सहित पूछा कैसे गुरुदेव? महात्माजी बड़े प्यार से बोले–अभी तुम को प्रत्यक्ष उदाहरण दिया न? तुम हीरा लेकर बाजार में गये। किसी ने दो सेर आलू, किसी ने सौ रुपये, किसी ने एक हजार अथवा एक लाख मूल्यांकन किया। पर सच्चे जौहरीने इसे अमूल्य बताया। चीज एक ही थी पर सबका मूल्यांकन अलग अलग था। इसी तरह राम नाम भी अमूल्य वस्तु है। इसका सच्चा मूल्य आँका नहीं जा सकता और तो क्या? स्वयं राम भी इसका मूल्य नहीं बता सकते। राम न सकहि नाम गुन गाई इस रहस्य को वही जानता है जिस पर भगवान की कृपा होती है। राम नाम लेने वाले बहुत लोग हैं, पर कीमत जानने वाले विरलेही होते हैं। भक्तका सारा सन्देह दूर हो गया। अत्यधिक श्रद्धा भाव से उसने महात्माजी के चरणों में प्रमाण किया और वह अधिक नाम निष्ठा के साथ घर को लौट आया।

श्रीनाम–प्रभाव

प्रभाव का शब्दार्थ होता है, किसी साधन की अलौकिक फलोत्पादिनी शक्ति। श्रीसीतारामनाम का प्रभाव अचिन्त्य है। नाम प्रभाव की पराकाष्ठा तक वेदान्त पुराण सन्तों की बुद्धि नहीं पहुँच पाती। इसी से कहा गया है–

''रामनाम कर अमित प्रभावा। संत पुरान उपनिषद गावा।।'' १।४६।२

जिन्होंने प्रभाव जाना भी उसे आंशिक ज्ञानही कहेंगे। ऐसे कहने को तो प्रभाव जानकार श्रीशिवजी भी हैं। प्रभाव ही जानकर कालकूट विष पान कर गये और वह हो भी गया, नामप्रभाव से अमृत।

''नाम प्रभाउ जान सिव नीको। कालकूट फल दीन्ह अमीको।।'' १।१९।८

श्रीक्रियायोगसार में भी यही कहा गया है सब वेदों से प्रशंसित श्री महेश ही नाम प्रभाव को जानते है।

''रामनाम प्रभावोऽयं सर्ववेदैः प्रपूजितम्।
महेश एव जानाति नान्यो जानाति वै मुने।।''

श्रीप्रमोद नाटक में कहा गया है कि बानराधिप श्रीहनुमतलालजी परात्पर शक्तिधाम श्रीराम नामके प्रभाव को विशेष रूप से जानते हैं। यद्यपि आप श्रीरामरूप के अनुरागी है, फिर भी आपने उनके नामका ऐसा अधिक अभ्यास किया कि आपके साढ़े तीन कोटि रोम छिद्रों से प्रत्येक श्वास में नाम ध्वनि गुञ्जित होती रहती है।

''नाम्नः पराशक्तिपतेः प्रभावं प्रजानते मर्कटराजराजः।
यद्रूपरागीश्वर वायुसूनुस्तद्रोमकूपे ध्वनिमुल्लसन्तम्।।''

श्री सौर्य धर्मोत्तर में कहा गया है कि श्रीरामनाम का निर्मल प्रभाव जपावेश में आविष्ट कोई कोई सज्जन ही जानते हैं।

''श्रीमद्रामस्य नाम्नस्तु प्रभावं निर्मलं मुने।
जपावेशवशेनैव ज्ञायते सज्जनैः क्वचित्।।''

श्रीलिंगपुराण में कहा गया है कि श्रीरामनाम का परात्परतम प्रभाव बचन अगोचर है। नामाभ्यास करते करते श्रीनामप्रभाव से सम्पूर्ण जगत् श्रीनामही से प्रकाशित दृष्ट होता है।

''रामनाम्ना जगत्सर्वं भासितं सर्वदा द्विजे।
प्रभावं परतमं तस्य वचनागोचरं मूने।।''

श्रीमार्कण्डेयपुराण में कहा गया है कि अज्ञान के कारण जगत चराचरमय प्रतीत होता है। श्रीरामनाम के प्रभाव से वह अज्ञान मिट जायगा तो सम्पूर्ण जगत श्रीसीताराममय दीख पड़ेगा।''निज प्रभुमय देखहिं जगत'' वाली दशा आ जायगी।

"अज्ञान प्रभवं सर्वं जगत्स्थावर जङ्गमम्।
रामनाम प्रभावेण विनाशो जायते ध्रुवम्।।"

श्रीवराहपुराण में कहा गया है कि संयोगवश एक वृद्धावस्था से जर्जर यवन को सूकर के बच्चे ने धक्का मारा। वह धक्के खाकर धराशायी हो गया तथा मरने के पहले कहता गया कि हराम ने मुझे मारा। हराम शब्द तो सूकर वाचक है, परन्तु उसके अन्तिम दो अक्षरों में रामनाम आया है। उस नामाभास के प्रभाव से वह इस अपार भवसागर से गोखुर के समान पार उतर गया। जिस नामाभास में ऐसा प्रभाव है उस साक्षात रामनाम को जो नाम रसिक प्रेमपूर्वक जपते हैं वह यदि श्रीरामधाम को प्राप्त करते हैं तो इसमें क्या आश्चर्य है?

"दैवाच्छूकर शावकेन निहतो मलेच्छो जरा जर्जरो।
हारामेण हतोऽस्मि भूमिपतितों जल्पंस्तनुं त्यक्तवान।।
तीर्णो गोष्पद बद्मवार्णवमहो नाम्नः प्रभावादहो।
किं चित्रं यदि रामनाम रसिकास्तेयान्ति रामास्पद।।" वराह पुराणे

अपतु अजामिलु गजु गनिकाऊ। भए मुकुत हरिनाम प्रभाऊ।।
चहुँ जुग चहुँ श्रुति नाम प्रभाऊ। कलि विसेषि नहिं आन उपाऊ।।१।२६।७

श्रीनामके प्रभावसे अनहोनी बात भी हो जाती है। कोई कहे कि किसी नाम जापक ने नाम प्रभाव से पत्थर पर कमल उत्पन्न कर दिया है तो उसे बिल्कुल सही मान लेना चाहिये।

नाम प्रभाउ सही जो कहै कोउ सिला सरोरुह जामो।। श्रीविनय २२८

श्रीब्रह्माण्ड पुराण में कहा गया हैं कि श्रीरामनाम के परात्पर प्रभाव को सुनकर जो इसे सत्य न मानें उस नाम प्रीति प्रतीत हीन अभागे का मुख भी नहीं देखना चाहिये।

"श्रुत्वा श्रीरामनाम्नस्तु प्रभावं वै परात्परम्।
सत्यं यो नाभिजानाति द्रष्टव्यं तन्मुखं नहि।।"

श्रीनाम प्रभाव से श्रीसीताराम जी के साक्षात दर्शन होते हैं। श्रीनामप्रभाव से भक्ति, परमानन्द की प्राप्ति होती है। श्रीरामनाम के प्रभाव से सर्वसिद्धि प्राप्त होती है। श्रीरामनाम में चमत्कार आदि आगे लिखे जाने स्तम्भों में श्रीनाम प्रभाव का विशेषरूप से विवेचन होगा।

यहाँ हम श्रीबड़े महाराज जी की कतिपय महावाणियाँ इस प्रभाव सम्बन्ध की उद्धृत करेंगे। श्रीबड़े सरकार कहते हैं कि मांगलिक कार्य समूह श्रीनाम प्रभावही से सिद्ध होते हैं। परमानन्द धाम श्रीरामनामही के प्रभाव से बड़े—बड़े पापियों ने पावन बनकर सिद्धि भी पाई है। उदारता में कल्पवृक्ष, कामधेनु और चिन्तामणि के समान दरिद्र को भी धनकुबेर बनाने वाले हैं। श्रीसीतारामनाम दिव्यमंगल निधान के अतिरिक्त अन्य किस साधन के पास ऐसा ऐश्वर्य है?

"महाराज नाम के प्रभाव ही से काज कुल
राज सुभ सरस समाज सत सिद्धि है।

सीतारामनाम मोदधाम प्रतिकाश पाय

पावन परम पातकीश लब्ध रिद्धि है।।

सीतारामनाम काम भूरूह सुधेनुसुर

चिंतामनि चारू रंक सौपत सुनिद्धि है।

(श्री)युगलअनन्य ऐसो नाम सीताराम दिब्य

भव्यता भंडार बिना कौन को समिद्धि है।।''२०८।।

श्रीसीतारामनाम नित्यरसनिधान है। मायिक विषय रस को सुखा डालते है। जीभ से जप,मन से नाम प्रभाव चिन्तन करने पर हृदय में परमानन्द की वृष्टि होने लगती है। युगल बिहार के तो बीज ही हैं श्रीनाम। इनसे रहस्यज्ञानरूपी वृक्ष प्रगट होकर फूलने फलने लगते है। त्रिगुण से पार कराकर श्रीनाम सूर्य के समान दिव्यज्ञान का प्रकाश करते हैं। श्रीनाम प्रभाव से प्रभु से विमुख कराने वाले काम—क्रोधादि विकारों के साथ कलिकाल भी नष्ट हो जाते हैं। श्रीबड़े महाराज आदेश करते हैं कि शोक संताप देने वाली लौकिक बड़ाई की चाहना को जलाकर नाम जपने में तत्पर हो जाइये। देर मत करिये।

''एकरस सरस अरस हरनेश नाम

महामोदधाम मन माझ बरसत जब।

विशद विहार वर बीज अद्‌भुत चीज

तीज तम तरनि विभास विलसत तब।।

काम कोह काफिर कलंक कलिकाल कटु

कायर अनेक रुच्छ तुच्छ नसि जात दब।

(श्री)युगल अनन्यनाम जपिये जहान जस

जाल जलवाय हाय विलम न कीजै अब।।''९५०।।

नाम प्रभाव अपार वखानत रामउ हिये लजाते हैं।

पतितउ पावन होत रटत जेहि बिनुश्रम परमपद पाते हैं।।

यवन गयो प्रभुधाम नाम जपि व्याध सुब्रह्म कहाते हैं।

प्रेमलता ते धन्य लोक में जे सियराम सुगाते हैं।।

— श्रीहितोपदेश सतक

नामही में रूप राम नाम ही अनूप धाम

नामही में गुनग्राम प्रभुता सुनामही।

नामही में भाव भक्ति नामही में रसव्यक्ति

नामही में प्रेमी ज्ञानी प्रेमा परा पावहीं।।

नामही प्रभाव एक जानै रघुराउ शिव
हनुमत आदिक को आपही जनावहीं।
सीताराम चरण शरण परि मागैं वर
रसरंग सीताराम नामही रटावहीं।।

श्रीनाम—शक्ति

श्रद्धेय श्री हरिबाबा कहते हैं कि जैसे प्रभुमें अनन्त चमत्कार है, अनन्त शक्तियाँ है, वैसे ही उनके नाम में भी समझिये। नहीं— नहीं उनसे भी अनन्तगुने चमत्कार अनन्तगुनी शक्तियों से भरी हुई यह नाममयी जादू की पिटारी है। इसके लिये हमतो उसे अनन्त प्रणाम करते हैं। (कल्याण भगवन्नाम महिमा अंक पृ०७० से साभार उद्धृत) वहीं पाद टिप्पणी में श्रीनाम की प्रधान १५ शक्तियाँ गिनायी गई हैं। वह **नीचे लिखी** जाती है—

१— भुवन पावनी— यथा श्रीहनुमतलालजी ने श्रीहनुमत संहिता में कहा है कि हे श्रीरघुलालजी! आपसे आपका रामनाम अधिक है। यह मेरी निश्चित समझ है। समझने का कारण भी है। आप तो श्रीअयोध्या मात्र के प्राणियों को अपने साथ श्रीधाम ले गये, किन्तु आपके नाम तीनों लोको का अद्यावधि उद्धार करते है।

''रामतत्त्वोऽधिकं नाम इति मे निश्चला मतिः।
त्वया तु तारताऽयोध्या नाम्ना तु भुवन त्रयम्।।''

२— सर्व व्याधि विनाशिनी—समुद्रमन्थन से प्रगट हुये धन्वन्तरि का यह श्लोक प्रसिद्ध है कि अच्युत अनन्त गोविंद आदि भगवन्नाम रूपी औषधि से सम्पूर्ण रोग नष्ट हो जाते है। तब सभी नामों में श्रेष्ठ रामनाम से क्यों नही होगा?

''अच्युतानन्त गोविन्द नामोच्चारण भेषजात्।
नश्यन्ति सकला रोगाः सत्यं सत्यं वदाम्यहम्।।''

महात्मा गाँधी का भी यही सिद्धान्त है कि श्रीरामनाम से सब रोगो की निवृत्ति होती है। कहते हैं कि एक कोटि नामजप से तनु स्थान की शुद्धि होती है तब सभी शारीरिक रोग मिट जाते हैं। जब असाध्य भवरोग श्रीनाम से मिटता है तो शारीरिक रोगों की उसके आगे क्या हस्ती।

''जासु नाम भव भेषज , हरन घोर त्रय सूल।''

३—सर्वदुःख हारिणी— श्रीलोमश संहिता में कहा गया है दो अक्षर वाले श्रीरामनाम का बुद्धिमान जन जहाँ संकीर्त्तन करते हैं, वहाँ प्रभु प्रगट होकर जापक के सभी दुःख मिटा देते हैं।

''रामेति द्वयक्षरं नाम यत्र संकीर्त्यते बुधैः।
तत्राविर्भूय भगवान सर्व दुःखं विनाशयेत्।।''

४—कलिकाल भुजंग भय नाशिनी— ''नाम सकल कलि कलुष विभंजनि।''

५—नरकोद्धारिणी— नृसिंह पुराणमें कहा गया है जो नीच पुरुष नरकगामी है जीतेजी मृतक तुल्य है वैसा पुरुष भी नाम कीर्त्तन करे तो उसे भी मुक्ति मिल जाती है।

''नरका ये नरा नीचा जीवन्तोऽपि मृतोपमाः।
तेषामपि भवन्मुक्ती रामनामानुकीर्त्तनात्।।''

कहते हैं कि एकबार भगवद्धाम जाते हुये पुष्करमुनिको नरक के ऊपर से गुजरना पड़ा। नरकवासियों को हाहाकार चित्कार करते हुये देख उन्हें बड़ी दया आई। सबों को आपने उपदेश किया कि हाहाकार मचाने से क्या लाभ? उसी मुख से रामनाम का उच्चारण करो। तुम्हारे सभी नरक कष्ट मिट जायेंगे।

''किमत्र हाहाकारेण युष्माकमधुना ध्रुवम्।
स्मरध्वं राम नामाख्यं मन्त्रं दुःखापहारकम्।।''

उनके मुख से नामोच्चारण सुनते ही नरकवासी नरक से निकल निकलकर उनके साथ भगवद्धाम गये।

''श्रुत्वा नामानि तत्रस्था स्तेनोक्तानि तथा द्विज। नरका नरकान्मुक्ताः सद्य एव महामुने।''

ऐसा इतिहासोत्तम में कहा गया है। इसी पर कहा है कि सन्तोंके संग ऐसा अद्भुत प्रभाव है कि नरक भी मिट जाते हैं।

''अहो सतां संगममद्भुतं फलं परं पवित्रं नरकादि नाशनम्।''

६— प्रारब्ध विनाशिनी— श्रीआदि रामायण में श्री हनुमतलालजी ने श्रीनलजी से कहा है कि बुधजनों ने कहा है कि श्रीरामनाम ही प्रारब्ध कर्म मिटाने में प्रवीण है। शबरी अधम किरात जाति की नाममहिमा जानकर ही मुनिजनों के भी प्रणम्य बन गयी।

'' प्रारब्ध कर्मापहृति प्रवीणं रामेति नामैव वुधैर्निरूक्तम्।
यज्ज्ञान मात्रादधमा किराती मुनीन्द्र बृन्दैरभवन्नमस्या।।''

७—सर्वापराध भंजनी—श्रीबोधायन संहिता में कहा गया है कि श्रीरामनाम में अपराध भंजनी सामर्थ्य इतनी अधिक है कि पृथ्वी के पापी उतना पाप कर भी नहीं सकते।

''रामनाम सामर्थ्यमतुलं विद्यते द्विज।
नहि पापात्मकस्तावत्पापं कर्तुं क्षमः क्षितौ।।''

श्रीवाराह पुराण में कहा गया है कि करुणासिन्धु रामनाम अपराध निवारक है। इनमें जिसे प्रीति नही वह महा पापी है।

''करुणा वारिधी नाम ह्यपराध निवारकम्।
तस्मिन्प्रीति न येषां वै ते महापापिनो नराः।।''

८— **कर्म सम्पूर्ति कारिणी**— श्रीबृहन्नारदीय में कहा गया है कि कलिकाल के वेदोक्त कर्म विधि विधान से पूर्ण नहीं हो पाते हैं। अतः विधिहीन कर्म निष्फल हो जाते हैं। किन्तु रामनामकीर्त्तन करते हुये वही कर्म करें तो त्रुटिपूर्ण कर्मो का भी पूरा— पूरा फल मिलेगा उसे।

''न्यूनातिरिक्ता सिद्धि कलौ वेदोक्त कर्मणाम्।
नाम संकीर्त्तनादेव सम्पूर्ण फल दायकम्।।''

श्रीब्रह्मवैवर्त पुराण में कहा गया है कि जिनके नाम के स्मरण कीर्त्तन से तप यज्ञादि क्रियाओं की न्यूनता भी सम्पूर्ण फलदायिनी हो जाती है तथा जापक कर्म बन्धन से भी शीघ्र छूट जाते हैं, उन अच्युत राघव की हम वन्दना करते हैं।

''यस्यस्मृत्या च नामोक्त्या तपो यज्ञ क्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्।।''

९—सर्ववेद तीर्थाधिक फलदायिनी— लघुभागवत में श्रीव्यासदेवजी ने श्रीशुकदेवजी से कहा है कि मुक्ति तो श्रीरामनाम के रटने से ही होती है। श्रीरामनाम की तुला में वेद आगम शास्त्र तीर्थादिक कर्म नगण्य है।

किं तात वेदागम शास्त्र विस्तरैस्तीर्थादिकैरन्यकृतैः प्रयोजनम्।
यद्यात्मनो वाञ्छसि मुक्तिकारणं श्रीरामरामेति निरन्तरं रट।।

१०— सर्वार्थ दायिनी—

''रामनाम कामतरु जोइ जोइ माँगि है।
तुलसिदास स्वारथ परमारथ न खागि है।।''

श्री विनयपत्रिका।

११—जगदानन्ददायिनी— श्रीरहस्यनाटक में कहा गया है कि श्रीरामनाम जपने से कोई सुख मिलने से बाकी नहीं रहता है। यदि कोई कहे कि अमुक सुख श्रीनाम नहीं देंगे, तो वह सुख आकाश कुसुम वन्ध्यापुत्र के समान अनहोनी मानना।

''स्मरणाद्रामनाम्नस्तु यत् सुखं न लभेन्नरः।
तत्सुखं खे गतं पुष्पं बन्ध्यापुत्रमिवाद्भुतम्।।''

१२— अगति गतिदायिनी शक्ति—

''पतित पावन रामनाम सो न दूसरो।
सुमिरि सु भूमि भयो तुलसी सो ऊसरो।।''

श्रीविनय पत्रिका।

१३— मुक्तिप्रदायिनी— श्रीक्रियायोगसार नामक आर्षग्रन्थ में कहा गया है कि कोटि— कोटि जन्म पर्यन्न अनेक दुःख सहकर किये गये कर्म भी मुक्ति देने में समर्थ नहीं होते। श्रीरामनाम के एक ही बार उच्चारण में वह मुक्ति अनायास मिल जाती हैं। तब आपही बताइये कि रामकीर्त्तन से बढ़कर कर्म है ही कौन?

''अत्यन्त दुःख लभ्योपि सुमुक्तिर्जन्म कोटिभिः।
लभ्यते राम नाम्नैव कर्मास्ति किमतः परम्।।''

१४—श्रीरामधाम दायिनी शक्ति—श्रीपद्मपुराण में भगवान शंकरने भगवती पार्वती से कहा है— श्रीसाकेत नामक रामधाम योगीश्वरों के लिये भी दुर्लभ है, परन्तु श्रीरामनाम की आराधना से उसकी सुखपूर्वक प्राप्ति हो जाती है।

''दुर्लभ योगिनां नित्यं स्थानं साकेत सञ्ज्ञकम्।
सुख पूर्वं लभेत्तत्तु नाम संराधनात् प्रिये।।''

१५— भगवत्प्रीति दायिनी शक्ति— उपर्युक्त १४वीं और १५वीं शक्तियों के परिचायक पद नीचे पढ़िये।

''रसना रट रामनाम धाम दैन हारो।
अनुपम अनुराग वाग विगसत उजियारो।
आलस मति वालस विष लालस तजि मोह मान
मालिक मकसूद नाम नेह धीय धारो।।
सात तवक पार लोक शोक से विहीन नित्य
त्रिगुन तार तिमिर तरून तरनि सुरुचि सारो।
अनुभव वल अर्थ सत समर्थ व्यर्थ हरन अखिल
मनन करत पल— पल प्रति प्रभा प्रगट प्यारो।।
धीरज धरि ध्यान धारना जमाय जाय स्वच्छ
अच्छ में प्रतच्छ भान, होत नृपति वारो।
(श्री) युगल अनन्य अमल— कमल फूलत फवि मधुप सुमन
भूलत नहिं हूलत हिय, हिरस अरस आरो।।''

श्रीवृहद् विष्णुपुराण में तीन और शक्तियों के नाम गिनाये गये है तथा आदि कहकर इन तीनों के अतिरिक्त और भी अनेक नाम—शक्तियों की सूचना दी गयी है।

१—स्वभाविकीशक्ति,

२—ज्ञानशक्ति,

३—क्रियाशक्ति,

लेखक की सम्मति में—

४—अघट घटना पटीयसी शक्ति आदि।

''स्वभाविकी तथा ज्ञान क्रियाद्या: शक्तय: शुभा:।
रामनामांशतो जाता सर्वलोकेषु पूजिता:।।''

कल्याण के श्रद्धेय विद्वान लेखक ने उपर्युक्त पन्द्रह शक्तियाँ श्रीरामनाम की गिनाकर हमारे नाम विज्ञान में एक नई कड़ी जोड़कर हमारा बड़ा ही उपकार किया है। परन्तु इन पंक्तियोंके तुच्छ लेखक की सम्मति में श्रीरामनाम की अचिन्त्य एवं अनन्त शक्तियों को किसी सीमित संख्यां मे परिगणन करना श्रीनाम विज्ञान की अज्ञानता समझी जायगी। सच पूछिये तो अशेष शक्तियाँ श्रीरामनामही से उत्पन्न हुई है। शक्ति परत्त्व कहने वाले श्री कालिकापुराण का वचन है—

"सर्वासामेव शक्तीनां कारणं तमसः परम्।
श्रीरामनाम सर्वेशं सौख्यदं शरणार्थिनाम्।।"

श्रीशिव संहिता कहती है कि श्रीरामनाम स्थित रा मात्र परब्रह्म वाचक है तथा मकार सभी शक्तियों से वंदित पराशक्ति वाचक है।

"रा शब्दस्तु परंब्रह्म वाचकत्वेन बोधितः।
मकारस्तु पराशक्तिस्सर्व शक्त्यादि वन्दिता।।"

अतः श्रीरामनाम कासामर्थ्य वैभव शौर्य एवं विक्रम सभी सर्वथा अनिर्वचनीय है। ऐसा वायुपुराण में भगवान शंकर ने श्रीनारदजी से कहा है।

"श्रीरामनाम सामर्थ्य वैभवं शौर्य विक्रमम्।
न वक्तु कोषि शक्नोति सत्यं सत्यं च नारद।।"

महात्मा गाँधी (ह०से०१३—१०—१९४६में) लिखते हैं कि रामनाम लेना एक महान शक्ति का सहारा लेना हैं। वह शक्ति जो कर सकती है वैसी दूसरा कोई शक्ति नहीं कर पाती। इसके मुकाबले अणुबम कोई चीज नहीं। इससे सब दूर होते हैं।

मैं बिना किसी हिचकिचाहट के साथ कह सकता हूँ कि लाखों आदमियों के द्वारा सच्चे दिलसे एक ताल और लयके साथ गाये जानी वाली रामधुन की ताकत फौजी ताकत के दिखावे से बिल्कुल अलग और कई गुना बढ़ी चढ़ी है।

सामूहिक रामधुन जिस काम को करोड़ों लोग एक साथ कर सकते हैं, उसमें एक बेजोड़ ताकत पैदा हो जाती है। आपको अपने घरों में भी इसका अभ्यास करना चाहिये। मै आपसे कहूँगा कि जब रामधुन स्वर और तालके साथ गायी जाती है तो स्वर ताल और विचार तीनों का मेल मिठास और शक्ति का एक ऐसा अमिट वातावरण पैदा करता है जिसका शब्दों द्वारा वर्णन नहीं किया जा सकता है। हरिजन सेवक७—४—१९४६

"जेहि खोजहीं मुनि मारि मन तन कसहिं बसि सुइकंत ही।
करि योग जप तप ध्यान सम दम ज्ञान कर्म अनन्त ही।।
सुर सिद्ध शेष महेश गावत जाहि लहत न अन्त ही।
तेहि प्रेमलतिका करत वश रटि नाम के वल सन्त ही।।
कोउ कहत निर्गुण ब्रह्म जेहि कहँ सगुण कोउ कोउ भाषहीं।
ब्रह्मादि सुर सनकादि मुनि जेहि चरणरज अभिलाषहीं।।
जेहि भजत भक्त अनन्यधी धरि मुक्ति योग सु ताखहीं।
तेहि प्रेमलतिका नाम रटि नित रसिक वश करि राखहीं ।।"

सीताराम नाम की अपार प्रभुताई है।
रामहू न गाय सकै नामके विमल गुन शारदा गणेश कहाँ शेष की चलाई है।
नामके अधीन रूपलीला धाम भक्ति—मुक्ति अगुन सगुन बह्म सुख समुदाई है।।

आगम पुरान वेद वरनत जहँ लगि तीनि लोक माहि सृष्टि विधि निपुनाई है।
नाम तें प्रगट होत नाम में समाई जात सीतारामनाम की अपार प्रभुताई है।।
प्रगटत रामरूप जनके हरन दुख नाम के रटत अघ जात विनसाई हैं।
रामरूप देत गति ऊँचनि को कष्ट युत श्रम विनु नाम रटि को न गति पाई है।।
तैसही चरित्र अति अगम सुपढ़े विन नाम सब भाँति ते सुलभ अधिकाई है।
स्वपच यवन जड़ पामरनि तारत सु सीतारामनाम की अपार प्रभुताई है।।
धाम एकदेशी पुनि अंत सदगति देत परम कठिन होत विघ्न बहुताई है।
सबहि सुखद सवविधि सब देशनि सु नाम सदगति की दूकान सी लगाई है।।
ऊँच नीच कोऊ जहँ तहँ येनकेन विधि रटै नाम देत ताहि सुगति सुहाई है।
प्रेमलता प्रेम नेम छेम बिनु द्रवत सु सीतारामनाम की अपार प्रभुताई है।।
लीला धाम रूप की आराधना कठिन अति रोगन ग्रसित तन काल कलिराई है।
उठति अनेक व्याधि प्रेमनेम छूटि जात एकरस एकटेक रहे न दृढ़ाई है।।
होत न विमल उर किये योग जप तप पूजन पठन मति भोगनि लुभाई है।
प्रेमलता ज्ञान ध्यान साधन उपाधिमय सीतारामनाम की अपार प्रभुताई है।।
कृतयुग सतोगुनी होत रहे लोग प्रभु ध्यान में मगन नहि अघ अघमाई है।
करम प्रधान भयो त्रेतायुग ध्यान गयो सतोगुन महि मिल्यो रजोगुण जाई है।।
द्वापर उपासना प्रगट भइ पूजा आदि सतगुन स्वल्प रह्ये रजतम छाई है।
प्रेमलता यज्ञ ध्यान पूजा न विवेक अब सीतारामनाम की अपार प्रभुताई है।।
कलिमल मूल भयो प्रगट अधिक तम कछु रज लिये नीति सतकी उठाई है।
अधरम छाइ रह्यो विदिशि माहि धरम प्रभाव नहिं परत लखाई है।।
जीवनि की मतिगति पापरत होत जात धर्म शीलताई साधुताई सकुचाई है।
वेद प्रतिकूल करें कर्म धर्म प्रेमलता सीतारामनाम की अपार प्रभुताई है।।
काम कोह लोभ मोह कपट कुचाल हठ बढ़ेउ पखंड दंभ द्वेष विबुधाई है।
साधु में न साधुताई गृही में गृहस्तताई अहं अधिकाई कलिकाल की बड़ाई है।।
पापरत नारी नर पावत न चैन रंच मायिक प्रपंच माहि गये लपटाई है।
प्रेमलता धर्म कर्म करै कहौ कौन भाँति सीतारामनाम की अपार प्रभुताई है।।
मन वच करम मलीनता समाइ उर ऊपरते केवल दिखाउ सुसफाई है।
सकल प्रकार अविचार कलि रोग वश भये लोग छूटन की कोउ न दवाई है।।
करत उपाय बहु सियारामनाम तजि नाशत न रोग भोग बढ़त विथाई है।
प्रेमलता नाम रटै चाहै जौन लहे सब सीतारामनाम की अपार प्रभुताई है।।

महान पुरुषों के जाप्य श्री रामनाम ही हैं

आदिपुराणमें स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण अपने सखा श्रीअर्जुनसे कह रहे हैं कि मैं सम्पूर्ण विश्व के गुरुरूप श्री रामनाम को सतत प्रेमपूर्वक स्मरण करता रहता हूँ। मुझे श्रीरामनाम क्षणमात्र भी नहीं भूलते। मेरे वचनको तुम सत्य सत्य मानना।

''रामनाम सदा प्रेम्णा संस्मरामि जगद्गुरुम्।
क्षणं न विस्मृतिं याति सत्यं सत्यं वचो मम।।''

श्री मद्भागवतके वक्ता, श्रीकृष्णतत्त्वके मर्मज्ञ परमहंस चक्रचूड़ामणि श्रीशुकदेवजी श्रीशुकसंहितामें भी कहते हैं श्रीराघवजी का सनातन और अतिप्रिय नाम तो श्रीरामनाम ही हैं। इसी रामनामको सदा सर्वदा जपकर, भगवान् श्रीकृष्ण श्रीवृन्दावन को सुशोभित करते रहते हैं।

''रामस्याति प्रियं नाम रामत्येव सनातनम्।
दिवारात्रौ गृणन्नेषो भाति वृन्दावने स्थित:।।''

श्रीसाकेतबिहारी परब्रह्म रामायण के पृ० १७ में लिखा है कि श्रीलक्ष्मीजी द्वारा प्रार्थना किये जानेपर, सर्व जनेश्वर श्रीमान् विष्णु भगवान् ने भगवान् श्रीरामचन्द्रके दिये हुये ब्रह्मवोधक श्रीराम तारक मन्त्र का उपदेश श्रीलक्ष्मीजी को किया।

''देव्यानुबोधित: श्रीमान् विष्णु:सर्व जनेश्वर:।
ग्राह्ममास तां देवीं तारकं ब्रह्म वाचकम्।।''

पुन: भविष्योत्तर पुराणमें स्वयं भगवान् नारायण श्रीकमलादेवी से कह रहे हैं सभी सर्वेश वर्गो द्वारा पूजित महामधुर श्रीरामनाम ही हैं। मैं भी मनही मन इसी नामका कीर्त्तन करता रहता हूँ। तुम भी यही नाम नित्यप्रति जपा करो।

''भजस्व कमले नित्यं नाम सर्वेश पूजितम्।
रामेति मधुरं साक्षान्मया संकीर्त्यते हृदि।।''

श्रीअगस्त्य संहितामें स्वयं श्रीशंकरजी, अपने इष्टदेव श्रीरामचन्द्रजीसे कहते हैं—प्रभो! मैं तो आपही के रामनामको जपकर कृतार्थ हो गया हूँ। दिवारात्रि श्रीपार्वतीजी के सहित काशीमें निवास करते हुये मरणशील प्राणियों की मुक्ति के लिये, आपही के श्रीरामनाम को सुनाया करता हूँ।

''अहं भगवन्नाम जपन्कृतार्थो वसामि काश्यामनिशं भवान्या।
मरिष्यमाणस्य विमुक्तयेऽपि दिशामि मन्त्रं तव रामनाम।।''

श्रीपुलहसंहिता के मतानुसार श्रीब्रह्माजी अपनी शक्ति श्रीसावित्रीदेवीके साथ, श्रीमन्नारायणदेव भगवती श्रीलक्ष्मीजी के साथ, तथा श्रीशम्भुजी श्रीपार्वतीजी के साथ सदा स्पष्ट रूपसे रामनाम जपते रहते हैं।

''सावित्री ब्रह्मणा सार्द्धं लक्ष्मीर्नारायणेन च।
शम्भुना रामरामेति पार्वती जपति स्फुटम्।।''

श्रीयोगसार में आया है कि श्रीशेषजी भी हजारों जीभ से श्रीरामनामका जप किया करते हैं। इसीके प्रभावसे विना किसी कष्टके ब्रह्माण्डको अपने फण पर धारण किये रहते हैं।

''सहस्रास्येन शेषोऽपि रामनाम स्मरत्यलम्।
तत्प्रभावेण ब्रह्माण्डं धृत्वां क्लेशं बिना द्विजम्।।''

श्रीआदित्यपुराणमें स्वयं सूर्य भगवान् ऋषियों से कह रहे हैं कि श्रीरामनामही जपने से मैं प्रकाशकर्त्ता बना हुआ हूँ तथा सभी लोकों को अतिक्रमण करनेकी मुझे शक्ति श्रीरामनाम—जप से ही प्राप्त हुई है।

''रामनाम जपादेव भासकोऽहं विशेषत:।
तथैव सर्वलोकानां क्रमणे शक्तिवानहम्।।''

इसी प्रकार श्रीगणेशजी ने श्रीगणेश पुराणमें ऋषियों से कहा है कि मैं श्रीरामनामकीर्त्तन के प्रभावही से सभी लोकों में पूज्य बना बैठा हूँ। अत: सबोंको चाहिये कि सदा—सर्वदा श्रीरामनाम ही का कीर्त्तन करते रहें।

''अहं पुज्योऽभवं लोके श्रीरामनामानुकीर्त्तनात्।
अत:श्रीरामनाम्नस्तु कीर्त्तनं सर्वदोंचितम्।।''

औरों की क्या कहा जाय? स्वयं श्रीराघवप्राणवल्लभा—श्रीमैथिलीजी भी श्रीरामनाम जप को अपना जीवन मानकर सदा जपती रहती हैं। श्रीमानसरामायण के किष्किन्धाकाण्ड वाले मङ्गलाचरण के श्लोक में कहा गया है कि रामनामरूपी अमृत बेदरूपी समुद्र को मथकर निकाला गया है। अत: श्रीरामनामही कलिके मलको नष्ट करने में समर्थ हैं। श्रीशंकर भगवान् के मुखचन्द्रमें जपरूपसे सतत सुशोभित रहते हैं। जन्म—मरणरूपी रोगकी एकमात्र यही उपयुक्त औषधि है। सुख देने वाले ही श्रीरामनामही हैं। श्रीजानकीजी के लिए श्रीरामनामजप जीवनही है। वह पुण्यवान् धन्य हैं, जो सतत श्रीरामनाम—रूपी अमृत को पान करते रहते हैं।

''ब्रह्माम्भोधिसमुद्भवं कलिमलप्रध्वंसनं चाव्ययं
श्रीमच्छम्भु मुखेन्दु सुन्दरवरे सशोभितं सर्वदा।
संसारामय भेषजं सुखकरं श्रीजानकीजीवनं
धन्यास्ते कृतिन:पिवन्ति सततं श्रीरामनामामृतम्।।''

और भी —

''जेहि विधि कपट कुरंग संग, धाइ चले श्रीराम।
सोई छबि सीता राखि उर, रटति रहति हरिनाम।।''

श्रीहनुमानजी श्रीराघवजी से कहते हैं कि आपके विरहमें श्रीस्वामिनीजी के प्राण इसलिये नहीं निकल रहे हैं कि उनकी जीभ पर आपके नाम रटन रूप से सदा पहरुआ बने हैं,उनके प्राण नहीं निकलने देते।

''नाम पाहरू दिवस निसि,ध्यान तुम्हार कपाट।
लोचन निज पद जंत्रित, जाहिं प्रान केहि बाट।।''

श्रीभरतलालजी के नामजप के विषय में कहा गया हैं–

पुलक गात हियँ सिय रघुवीरू। जीहँ नाम जप लोचन नीरू।।

और भी –

भरत तीसरे पहर कहँ, कीन्ह प्रवेसु प्रयाग।
कहत रामसिय रामसिय, उमगि उमगि अनुराग।।

श्रीहनुमानजी तो शेष भगवान् से भी श्रीरामनाम उच्चारणमें आगे बढ़े हुये हैं। श्रीशेष एकवार में एकही हजार रामनाम उच्चारण करते हैं, परन्तु श्रीहनुमतलालजी तो श्वांस–श्वांस प्रति साढ़े तीन करोड़ नाम उच्चारण करते हैं, क्योंकि आपके प्रत्येक रोमछिद्र से श्रीनामोच्चारण होता रहता है। कारण यह है कि श्री वानरराज श्रीरामरूप के अनुरागी हैं तथा श्रीपराशक्ति–पतिरामनाम के प्रभाव को अच्छी प्रकार से जानते हैं। प्रमाण का श्लोक श्रीप्रमोद–नाटक नामक आर्षग्रन्थ का है।

''नाम्न पराशक्ति पते: प्रभावं प्रजानते मर्कटराज राज:।
यद्रूप–रागीश्वर वायुसूनस्तद्रोमकूपे ध्वनिमुल्लसन्तम्।।''

श्रीवृहस्पति स्मृति का वचन है कि श्रीरामनाम स्वयं परंब्रह्म हैं। सभी देवताओंसे पूजित हैं। सभी तत्त्ववेत्ताओं की शुद्ध सम्मतिमें यही सर्वोपास्य हैं। महान पुरुषों के तो जीवनही हैं।

''रामनाम परंब्रह्म सर्वदेवै:प्रपूजितम्।
सर्वेषां सम्मतं शुद्धं जीवनं महतामपि।।''

कहाँ तक कहा जाय प्राचीन कालके सभी महर्षिवृन्द श्रीरामनामका ही कीर्त्तन करते थे। इसीसे उन्हें सर्वसिद्धि मिली थी। इसीके प्रभावसे ब्रह्मानन्दमें मगन रहते थे तथा अन्तमें श्रीरामधाम श्रीसाकेतपुरी को भी प्राप्त किया था। प्रमाणका श्लोक श्रीइतिहासोत्तम नामक आर्षग्रन्थ का है।

''पुरा महर्षय: सर्वे रामनामानुकीर्त्तनात्।
सिद्धा ब्रह्म सुखे मग्ना याता: श्रीरामसद्मनि।।''

इतने अधिक प्रमाण देकर,इसी निष्कर्ष पर पहुँचना है कि सभी भगवन्नामों में महज्जनों द्वारा जाप्य होनेके कारण,इसी शिष्ट परिगृहित मार्गको अपनाना चाहिये। अत: हमें भी श्रीरामनामही जपना चाहिये। आगे हम यह बतावेंगे कि श्रीसीताराम के सहित श्रीरामनाम जपना चाहिये। हमारा जाप्य नाम होना चाहिये, सीताराम–सीताराम।

पूज्यपाद श्रीबड़े महाराज जी स्वरचित सत्सिद्धान्तसार ग्रन्थके परतम प्रभाव प्रकाशन प्रसंग में श्रीसीताराम नाम के महान जापकों के नाम गिनाते हुए कहते हैं कि –

महाविष्णु लौ नाम परायन। समुझे सुमन नाम गुन गायन।।
जपे समूह ईस रघुनायक। जानि परेस पूज्य पद लायक।।

अर्थात् ईश्वर वर्ग समुदाय से लेकर (श्रीमहाविष्णु) पर्यन्त सभी श्रीराघवजू को अपना पूज्यपाद परेश मानकर, उन्हीं के श्रीरामनाम के जापक एवं श्रीरामनाम के गुणों के गायक हैं।

''श्रीप्रह्लाद विभीषन श्रीध्रुव भीषम आदि भये सद जेते।
नारद नेह निकेत सदाशिव औरहु संत सुनामहि लेते।।
नामहि के गुनगाय भलीविधि काम मदादिक के सिर रेते।
युग्म अनन्य प्रपन्न भने निज नाम रटे ते तरे खल केते।।९८९।।

श्रीनिर्वाणखण्ड भगवान् श्रीशंकरजी का कथन है कि श्रीरामनाम जगत्–भर के प्रभु हैं, परमानन्द को प्रगट करने वाले हैं, सत–असत से भी परे हैं, यही परात्पर ईश्वर है। सबों के लिए उपास्य भी यही हैं

''जगत्प्रभुं परमानन्द कारणं सदसत्परम्।
रामनाम परेशानं सर्वोपास्यं परमेश्वरम्।।''

श्रीजानकी परिणय–नाटक नामक आर्षग्रन्थ का प्रमाण है कि श्रीसीतानाम समेत जो श्रीरामनाम जपते हैं, वे बडा ही पुण्यवान एवं भाग्यवान् हैं। वे अकेले नहीं अपने स्वजन वर्गोको साथ लेकर, श्रीसाकेत जायेंगे।

''सीता समेतं रघुवीरं नाम जपन्ति ये नित्यमघौघ हारि।
ते पुण्यवन्त: खलु भाग्यवन्त:परं पदं यान्ति स्ववर्गयुक्ता:।।''

नाम ही रटत प्रहलाद शुक शौनकादि
पुंडरीक पाराशर नारदादि गावहीं।
नाम ही रटत रुकमांगदादि भीष्म बलि
त्रिजटा विभीषनादि रटै रामनाम ही ।।
नाम ही रटत धर्मसूनु शिवी रंतिदेव
भरत दधीचि हरिचन्द यश पावहीं।
नाम ही रटत रसरंगमणि हटै दु:ख
रटै मुख तब जब रामहि रटावही।।१।।
नाम ही रटत है सुकंठ हनुमन्त जामवन्त
अगंदादि अनगंत कीशराज ही ।
नाम ही रटत मुनि लोमस भुसुंडि
वालमीकि वैनतेय जागवल्क भरद्वाज ही ।।
नाम ही रटत श्रीवशिष्ट वामदेव अत्रि
गौतम सुतीक्षन अगस्त्य नाम गावहीं।

नाम ही रटत रसरंगमणी हटै दुःख
रटै मुख तब जब रामही रटावही।।२।।
नाम ही रटत हैं गनेस शेष औ दिनेस
विधि अमरेस त्यो महेस रट लावहीं।
नाम ही रटत शुद्ध ज्ञानी औ विरागी जौगी
त्यागी सिद्ध साधक सुभागी रामनाम ही ।।
नाम ही रटत हरिभक्त जक्त नेह त्यक्त
दिवानक्त अनुरक्त रूपासक्त गावहीं।
नाम ही रटत रसरंगमणी मिलै मुक्ति
दूसरी न जुक्ति वेद नाम ही बतावहीं।।३।।
नाम ही रटे हैं रामानुज रामानन्द स्वामी
तुलसी गोस्वामी प्रेमधामी रटे नाम ही ।
नामही रटे हैं कीलदेव अग्रदेव नाभा
नामदेव कबीरादि सबै भक्त गावहीं।
नाम ही रटे है चारि संप्रदा अनन्त संत
पन्थ अनपन्थ ग्रन्थ नाम के बनावही।।
नाम ही रटत रसरंगमणी मिलै मुक्ति
दूसरी न जुक्ति वेद नाम ही बतावहीं।।४।।

गनपति गिरा गिरीश गौरि गुरु गोविन्द जेहि जस छाके।
शेष महेश दिनेश वेश मुनि भूप सुगुन गनि थाके।।
जाको विरद विदित वैभव वर अंड कोटि लगि ताके।
युगलानन्यशरन करुनानिधि नाम शरन मन झाँके।।
बेद कदम्ब मुनीश ईश अवलम्ब नाम का कीए हैं।
श्री सुख–सागर नाम अंस सीकर प्रभाव सें जीए हैं।।
अंतक त्रास समन दुशमन मन दमन नाम रस पीए हैं।
युगलानन्यशरन सुनाम बल भुक्ति मुक्ति नहिं छीए हैं।
श्री प्रहलाद विभीषन श्री हनुमान नाम–रस नेही।
वालमीकि मुनिराज कुम्भसुत शिव शुक सुमुनि विदेही।।
नाम–प्रताप पाय पटुतर अनिमेष निदरि निरनेही।
युगलानन्य नाम सुमिरन सजु तजु तम तार तनेही।।

शेष गनेश महेश एकरस जपत निरन्तर रामें।
गिरिजा गिरा गिरापति रति नति करहि हमेश प्रनामें ।।
जाको नाम काम—भूरुह सतकोटि कहत घन घामें।
युगलानन्यशरन सर्वोपरि नाम अनूप कलामें।। (श्री नामकांति से)

꧁ श्री नामराम की सार्वभौम व्यापकता ꧂

श्री रामानन्दी वैष्णवोंके लिये तो श्रीरामनाम जीवनके परम अवलम्ब ही हैं, इनके अतिरिक्त विभिन्न सम्प्रदायों एवं पन्थों के सन्तों ने भी श्री रामनामही को सर्वोपरि साधन माना है। हम यहाँ विभिन्न मतवादियों की तत्सम्बन्धी महावाणियाँ उद्धृत करते हैं।

१— नाथपन्थी सन्त खेचरनाथजी के शिष्य एवं श्रीज्ञानदेवजी के साधक श्रीनामदेवजी का कहना है कि शुभदायक सार तत्त्वको काढ़ करके निकालने के लिए, अगाध भगवल्लीलासिन्धु का कौन मन्थन करता रहे। सीधा राज मार्ग है श्रीरामनाम को जीभ से रटना, यही सारतत्त्व है। सोनेका सुमेरु पर्वत दान दे दो, हाथी, घोड़ी तथा कोटि—कोटि गोदान करो, एकबार जीभसे रामनाम उच्चारणके समान फलदायक, ये सब होनेको नहीं। ऐसा समझकर, जीभपर श्रीरामनाम को पधरालें और जन्म—मरणसे पार हो जायँ।

''तत्त गहन को नाम हैं,भजि लीजै सोई।
लीला सिन्धु अगाध है, गति लखै न कोई।।
कंचन मेरू सुमेरू हय गज दीजै दाना।
कोटि गऊ जो दान दे, नहि नाम समाना।।
अस मन लख राम रसना, तेरी बहुरि न होइ जरा मरना।।''

२— पण्डरपुरके शिवभक्त नरहरि सोनारजी कहते हैं— प्रभो! मैंने विवेक का हथौड़ा लेकर काम क्रोध को चूर किया, और मन—बुद्धि की कैंची से रामनाम बराबर चुराता रहा। यह नरहरि सुनार है, हरि तेरा दास दास है। रात—दिन तेरा ही भजन करता है।

३— समर्थ गुरु रामदासजी महाराज कहते हैं कि अनेक नाम, मन्त्रों की तुलना इस रामनाम के साथ नहीं हो सकती। यह भाग्यहीन मनुष्य की समझ में नहीं आता।

४— महाराष्ट्रीय सन्त श्री अमृतराय जी महाराज कहते हैं—

''चंदन सीस लगावै टीका। आखर राम भजन बिन फीका।।''

५— सन्त कबीरदासजी महाराज कहते हैं —

मन रे रामसुमिरि रामसुमिरि रामसुमिरि भाई।
रामनाम सुमिरन बिन बूड़त अधिकाई।।

रामनाम निज औषधी, सतगुरु दई बताय।
औषध खाय रु पथ रहै,ताको वेदन जाय।।

सन्त श्रीकमालजी –

कहत कमाल कबीर कर बालका, रामनाम तेरा संग साथी।

७–सन्त श्रीरैदासजी महाराज–

''ऐसी भगति न होइ रे भाई।
रामनाम बिन जो कछु करिये, सो सब भरम कहाई।।''

८–सन्त निपट निरंजनजी (बूंदेलखंड वाले) –

''रामनाम को परगट बेचे,करत भक्ति को नास।''

९– मुसलमान सन्त श्रीयारीसाहब –

''रसना, राम कहत तें थाको।''

१०–सन्त गुलाल साहब (गाजीपुर जिले के) –

बिना नाम नहि मुक्ति अंध सब खोइया। कह गुलाल संत लोग, गाफित सब रोइया।।
राम भजहु लव लाइ प्रेमपद पाइया। सफल मनोरथ होय, सत्तगुन गाइया।।

११– सन्त दूलनदास (श्रीजगजीवनराम के शिष्य) –

''रहु तोइँ राम राम रटलाई।
जाइ रटहु तुम नाम अच्छर दुइ, जौनी विधि रटि जाई।।
राम–राम तुम रटहु निरन्तर खोजु न जतन उपाई।
जानि परत मोहि भजन पन्थ को, यहौ अरुझनि भाई।।
वालमीकि उलटा जप कीन्हेउ,भयौ सिद्ध सिधि पाई।
सुबा पढ़ावत गनिका तारी, देखु नाम प्रभुताई।।
दूलनदास तू रामनाम रटु,सकल सबै बिसराई।
सतगुरु साई जगजीवन के,रहु चरनन लपटाई।''

१२–सन्त भीखा साहब (संत गुलाल साहब के शिष्य) –

''मन तुम रामनाम चित धारो।
जो निज कर अपनी भल चाहो, ममता मोह बिसारो।।''
''राम को नाम अनन्त है,अन्त न पावै कोय।
'भीखा' जस लधु बुद्धि है, नाम तबन सुख होय।।''

१३–श्रीदादू दयालजी महाराज –

''एकै अच्छर पीवका, सोई सत करि जाणि।
रामनाम सतगुरु कह्या, दादू सो परवाणि।।

राम तुम्हारे नाम बिन, जे मुख निकसे और ।
तौ इस अपराधी जीव कूँ, तीन लोक कत ठौर।।

१४—मारवाड के सन्त स्वामी श्रीहरिदासजी (हरिपुरुष) —

रामनाम व्रत हिरदै धारूं परम उदार निमिख न बिसारूँ।।

१५— अलबर के श्रीचरणदासजी (श्रीशुकदेवजीके शिष्य)

सुकदेव गुरु ग्यान चरनदास को कहै,
भज रामनाम सांचा पद मुक्ति का निधान ।

१६—श्रीदयावाईजी(श्रीचरणदास की शिष्या)

राम नाम के लेत ही पातक झरे अनेक।
रे नर हरि के नाम को, राखो मन में टेक।।

१७—आसाम के सन्त श्रीशंकरदेवजी —

नारद सुकमुनि रामनाम बिन, नाहि कहल गति आर।
कृष्णकिंकर कय छोड़ मायामय, रामनाम तत्त्वसार।।

१८—श्री सूरदासजी महाराज —

जौ तू रामनाम धन धरतौ।
अबके जन्म आगिलो तेरौ, दोऊ जन्म सुधरतौ।।
जमको त्रास सबै मिटि जातो, भक्त नाम तेरौ परतौ।
तंदूल धिरत समर्पि स्यामकौ, संत परोसौ करतौ।।
हौतौ नफा साधु की संगति, मूल गाँठि नहिं टरतौ।
सूरदास बैकुण्ठ पैठ में, कोउ न फेंट फकरतौ।

१९—श्रीयोगानन्दाचार्यजी महाराज —

साधन सौ धन मिलै लगै जब रामनाम मन।
जोगानन्द निहारि नयन सत चित आनन्द धन।।

२०—श्रीटीलाजी (श्री साकेतनिवासाचार्यजी)महाराज——

रामनाम सुख धाम मन, करि श्रद्धा विश्वास।
टीलाका विश्वास पुनि, आवै निकरौ श्वास।।

२१—श्रीरसरंगमणिजी महाराज—

जप तप तीरथ सुलभ है, सुलभ जोग वैराग।
दुर्लभ भक्ति अनन्यता, रामनाम अनुराग।।

२२– श्रीकाष्ठजिह्वा (देव) स्वामी जी महाराज–

'देव' धरम चाहे सो करले, आवागमन न टरता है।
प्यारे केवल रामनाम से,तेरा मतलब सरता है।।

२३– बाराबंकी जिले के सत्यनामी महंत श्रीगुरुदत्त दासजी–

दस अपराध बचाय के, भजै राम का नाम।
गुरुदत्त साँची कहै, पावै सुख विश्राम।।

२४–श्रीमीराजी –

मेरो मन रामहि राम रटै रे।
रामनाम जप लीजै प्रानी,कोटिक पाप कटे रे ।
जनम जनमके खत जु पुराने,नामहि लेत फटे रे।
रामनाम की निंद्या ठाणो करम ही करम कुमावै।
रामनाम बिनु मुकुति न पावै,फिर चौरासी जावै।।

२५– श्री अंग्रदेवाचार्य –

निवहो नेह जानकीवर से।
जाँचो नाहि और काहू से, नेह लगै दसरथ के कुँवर से।।
अष्ट सिद्धि नवनिद्धि महाफल, नही काम ये चारो वर से।
(श्री) अग्रदास की याही बानी, रामनाम नहि छूटै यहि धरसे।।

२६–श्रीगुरुनानक देव जी–

मन रे, राम भगति चित लाइये।
गुरुमुख रामनाम जपि हिरदै, सहज सेती धरि जाइए।।
रामनाम बिन बिरथे जगि जनमा।
विखु खावै बिख बोलै बिनु नावै निहफल मरि भ्रमना।।
पुसतक पाठ विआकरण बखाणे संधिआ करम तिरकाल करै ।
बिनु गुरसवद मुकति कहाँ प्राणी रामनाम बिन उरझि मरै।।
डंड कमंडल सिखा सूत धोती तीरथि गवनु अति भ्रमनु करै।
राम नाम बिनु सांति न आवै,जपि हरि हरिनाम सुपारि परै।।

२७–गुरु श्रीअर्जुनदेव जी –

जाकी रामनाम लिव लागी। सजनु सुहृद सुहेला सहजे, सो कहिए बड़भागी।।
राम राम राम राम जाप। कलि कलेस लोभ मोह बिनसि जाइ अहंताप।।

२८–श्री गुरु तेगबहादुर जी –

मन रे साँचा गहो विचारा। रामनाम विनु मिथिआ मानौ, सगरो इस संसारा।।

२९— श्रीसन्तदासजी महाराज—

रामनाम में ध्यान धर, जो साँसा मिल जाय।
तो चौरासी बिच संतदास, देह न धारे काय।।

३०— श्री रामस्नेही पंथ के श्रीरामचरणजी —

राम राम रसना रटो, पालो सील सन्तोष
दया भाव क्षमा गहो, रहो सकल निर्दोष।।

३१— श्रीरामस्नेही सन्त श्रीरामजनजी (चित्तौड़ समीपवर्ती)

सन्त सटासटि राम रटारटि काम घटाघटि दाम निवारै।
लोभ कटाकटि पाप फटाफटि मोह नटानटि मानहु डरै।।

३२— श्रीरामस्नेही पन्थके श्रीभगवानदासजी (मारवाड़)

जो नर रामनाम लिव लावै।
ताकूँ कोई भय नहि व्यापै, विघन विलै होय जावै।।

३३— श्रीरामस्नेही धर्माचार्य श्रीदरियाजी महाराज —

'दरिया' दूजे धर्म से, संसय मिटै न सूल।
रामनाम रटता रहे, सब धर्मों का मूल।।

३४— श्रीहरकाराम जी—

रामनाम तत सार, सर्व ग्रन्थन में गायो।
संत अनंत पिछाण, रामही राम सरायो।।

३५— बीकानेर के जैमलदासजी—

काया माँझ खजाना पावै। रोम रोम में राम रमावै।।

३६— वहीं के श्रीहरिराम दास जी—

रामनामको कीजिये, आठौ पहर उचार।
'हरिया' वंदीवान ज्यों, करिये कूक पुकार।।

३७— वहीं के श्रीपरसरामजी महाराज —

पूरा सतगुरु परख कर, ताको शरण समाय।
रामनाम उर इष्ट धर, आन इष्ट छिटकाय।।

३८— सन्त पलटू साहब (श्रीअयोध्यावासी)

रामनाम जेहि मुखन तें, पलटू होय प्रकास।
तिनके पद वंदन करौ, वो साहिब मैं दास।।

३९— गोंडा जिले के नगवा ग्राम वाले— सन्त लक्ष्मणदासजी—

मुनि जन रामनाम रट लागे, सन्तन देत नगारा।

४०– श्रीदीनदरवेश जी–

तज ममता भज रामनाम सो अम्मर रहवे।

४१– गुजरात के सन्त– रवि साहेब–

सन्त अनेकन जे भये, कीन्हीं रामपुकार।
रवीदास सब छोड़िके, रामहिराम उचार।।

४२– स्वामी श्रीसन्तदेव जी–

कोइ निन्दै कोइ वन्दे जगमें, मनमें हरष न माखो।
आठों जाम मस्त मतवारो, रामनाम रस चाखो।।

४३– मालवा प्रान्त के परमहंस अवधूत श्रीगुप्तानन्दजी महाराज–

पीले रामनाम रस प्याला, तेरा मनुवा होय मतवाला।

४४– होशंगाबाद जिले के श्रीदीनदासजी महाराज –

रसना रामनाम क्यों नहि बोलत।
निसिदिन पर अपवाद बखानत, क्यों पर अघ को तौलत ?।।

४५– जयपुर राजपरिवार के सन्त चतुरसिंह जी–

राम रावरे नाम में वही अनोखी बात। दो सूधे आखर तऊ, आखर याद न आत॥

४६– श्रीकाशी के प्रसिद्ध सिद्ध सन्त श्रीहरिहर बाबा–

किसी जिज्ञासू का प्रश्न– बाबा, हमारा क्लेश कैसे मिटेगा?

उत्तर:– श्रीरामनाम जपने से सब क्लेश मिट जायेंगे।

उपदेश– श्रीरामनामके बराबर कुछ नहीं है। जो भी रामनाम जपता है उसके सब काम पूरे होते हैं और उसे मोक्ष की भी प्राप्ति हो जाती है।

४७– उन्नाव के स्वामी श्रीनिरंजनानन्दजी महाराज –

भजले सीताराम फिरत मन काहे भटका।
गुरुपद सेइ संत संगति करि, अहंकार को पटका।।
रामनाम को रटहि निरंतर, सीखि भजनका लटका।।

४८– बाबा कीनारामजी अघोरी –

सो सब प्रभु महँ रमि रह्यो, जड़ चेतन निज ठौर।
तातै राम संभारि गहु, सब नामन सिरमौर।।

४९– महात्मा गाँधी श्रीरामनाम के बड़े अनुरागी हो गये हैं। उन्हें श्रीरामनाममें ऐसा दृढ़ विश्वास जम गया था कि आप सभी अनिष्टोंसे बचने का उपाय एकमात्र श्रीरामनाम के जप को ही मानते थे।

''रघुपति राघव राजाराम। पतित पावन सीताराम।''

इस नामका कीर्तन आपका जीवन था। आपके नाम विश्वास परक बहुतसे अनमोल बचन यत्र–तत्र देखे जाते हैं। उनमें से कुछ नीचे लिखे जाते हैं –

(क) बिकारी विचारसे बचने का एक अमोघ उपाय रामनाम है।

(ख) कोई भी व्याधि हो, अगर मनुष्य हृदय से रामनाम लें तो, ब्याधि नष्ट होनी चाहिये।

(ग) सत्य और अहिंसा पर अमल करने के लिए, जितनी भी दवाइयाँ हैं, उनमें सबसे अच्छी दवाई रामनाम है।

(छ) विषय जीतने का सुवर्ण नियम रामनाम हैं।। इत्यादि।

ग्रन्थ– विस्तार भय से हम यहाँ और भी महापुरुषों के, उपलब्ध श्रीरामनाम प्रतिपादक वचन, उद्धृत करने से असमर्थ हो रहे हैं। पाठक कल्याण का सन्त–वाणी अंक पढ़ें और महापुरुषों की महावाणियों का अनुशीलन करें।

हम पिछले स्तम्भों में श्रीरामनामको सर्वोत्तम भगवन्नाम तथा सर्व–मन्त्रों के मूल उत्पत्तिकर्त्ता श्रीरामनामही को सप्रमाण सिद्ध कर आये हैं। यहाँ संक्षेपमें यह बताना है कि श्रीरामनाम अन्यान्य मन्त्रों को किस प्रकार अनुप्राणित करते हैं। कलि संतरणोपनिषदमें –"हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।।" इस षोडश नाम वाले मन्त्र को कलिकालमें भवसंतरण का मुख्य उपाय बताया गया है। हम पिछले स्तम्भमें श्रीरामनामको ही कलियुग का सर्व–समर्थ साधन बता आये हैं। अत: दोनों विचारों का समन्वय इस प्रकार भी हो जाता है कि षोडशनामात्मक मन्त्र को अनुप्रमाणित तथा शक्तिशाली बनाने वाले उस मन्त्रमें स्थित रामनाम ही हैं।

श्रीरामनाम में प्रयुक्त रकार तथा मकार दोनों वर्णों में पृथक–पृथक अमित ऐश्वर्य भरे हैं। ब्रह्मयामल में रकार को सभी देवताओं में प्रबल महाकाल पावक, जीवोंके सर्वपाप दाहक, सब जीवों का जीवन, देवताओं के तेज रूप कहा गया है। रकार ही सब सुखों की सिद्धि देने वाले हैं सभी विद्याओं में जाने योग्य रकारही है। सभी प्राणियों के अनन्त रूपधारी व्याप्य–व्यापक ईश्वर भी रकारही है। रकारसे ही जगत उत्पन्न होता है तथा रकारही में लीन हो जाता है। रकारही शुद्ध सच्चिदानन्दमय अद्वैत ब्रह्म हैं। रकारही सर्बमनोरथ–प्रपूरक हैं। रकारही सब दुष्टों के विनाशक श्रीरघुनायक हैं। यही सब जीवोंका परमानन्द प्रदायक हैं तथा सभी वेदों के कारण हैं। मायातीत हैं।

रकार: सर्वदेवानां साक्षात् कालानल: प्रभु:।
रकार: सर्वजीवानां सर्व पापस्य दाहक:।।
रकार: सर्व भूतानां जीवरूपी परात्पर:।
रकार: सर्वदेवानां तेज: पुञ्ज: सनातन:।।
रकार: सर्व सौख्यानां सिद्धिदस्तु पुरातन:।
रकार: सर्व विद्यानां वेद्यस्तत्त्वं सनातन:।।
रकार: सर्व भूतानामीश्वरोऽनन्त रूप धृक्।

रकार: सर्व भूतानां व्याप्य व्यापकमीश्वर:।।
रकारोत्पद्यते नित्यं रकारे लीयते जगत्।
रकारो निर्विकल्पश्च शुद्धवुद्धस्सदाऽद्वय:।।
रकार: सर्व कामश्च परिपूर्ण: मनोरथ:।
रकार: सर्व दुष्टानां नाशको रघुनायक:।।
रकार: सर्व सत्त्वानां महामोदमय: स्वराट्।
रकार: सर्ववेदानां कारण: प्रकृते: पर:।।''

इसी भाँति मकार का ऐश्वर्य भी वहीं ब्रह्मायामलमें ही विस्तारपूर्वक कहा गया है। सभी साध्य तत्त्वों में सुखके संचारक मकार है। सभी देवताओं में सिद्धि देने की शक्ति मकारसेही प्राप्त है। सभी मूलों के मूल, सभी पराशक्तियों की सर्व मनोरथ पूरक; मकार ही हैं। मकार सब जीवों के पालक जगदीश्वर हैं और सब सिद्धियों के कारण भी मकार ही हैं। मकार ही सभी लोकोंमें व्यापक ब्रह्म हैं। सभी शास्त्रों के सत्‌सिद्धान्त रूप तथा सभी मुक्तिदाता मकार ही है।

मकार: सर्व साध्यानां सर्व सौख्यप्रदस्तथा।
मकार: सर्वदेवानां सिद्धिदस्तु सदा प्रिये।
मकार: सर्व मूलानां मूलं मोदमय: स्वराट्।
मकारश्च पराशक्तिरुज्ज्वला सर्वकामदा।।
मकार: सर्वजीवनां पालको जगदीश्वर:।
मकार: सर्व सिद्धिनां कारणं नात्र संशय:।।
मकार: लोकलोकानां मकार: सर्व व्यापक:
मकार: सर्वशास्त्राणां सिद्धान्त: सर्व मुक्तिद:।।''

यही कारण है कि जिस मन्त्रमें रकार या मकार दोनों में से कोई न हो, वे सभी मन्त्र शक्तिहीन एवं निष्फल बन जाते हैं। दृष्टान्त के लिए आप ''नमो नारायणाय'' ''नम: शिवाय'' ये दोनों अष्टाक्षर और पंचाक्षर मन्त्रों को लीजिये। नारायणाय से 'रा' निकल जाने पर 'नाय—नाय' निरर्थक शब्द बन जाता है। नम: शिवाय से मकार हटा देने पर न शिवाय निषेधार्थक, अत: निष्प्रयोजन शब्द बन जाता हैं। ऐसा— श्रीशुकसंहितामें कहा गया है। अत: रकार तथा मकार ही से दोनों मुक्तिप्रद बने है। अत: हम दोनों वर्ण से युक्त श्रीरामनामही की उपासना करते हैं।

नायनाय यद्दतेऽक्षराष्टिकं च न शिवाय यद्विना।
मुक्तिदं भवति यद्वयोर्वशात्तद् द्वयं वयमुपास्महे किल।।

अत: सभी मन्त्रोंमें श्रीरामनाम पूर्णाक्षर या एकाक्षर रूपसे विद्यमान रहकर मन्त्रों को सशक्ति बनाये हुये हैं। हिन्दू समाज में श्रीरामनाम तो जीवन का परम संवल माना गया है। हमारे सभी व्यवहार रामनाममय हो रहे हैं। हिन्दू—जाति में कोई भी मर जाय, तो उसके शव के साथ 'राम नाम सत्य है' की ध्वनि लगाने की परम्परागत प्रथा है। दो धनीमानी व्यक्ति मिलने पर, 'जयराम जी की'

कहकर एक दूसरे का अभिवादन करते हैं। अनाज वजन करने वाले हटवे की सार्वदेशिक रीति है कि वजन की संख्या गिनते समय रामनाम का उच्चारण करते जायेंगे। यथा— एक को रामेराम कहकर शुरू करेंगे। पश्चात् दुइयेराम दो, तीनेराम तीन, चारेराम चार, पाँचेराम पाँच— इस प्रकार पूरी गिनती तक, श्रीरामनाम का ताँता लगा रहेगा। महाजन लोग बही खाता लिखते समय पहले 'श्रीराम' ऐसा लिखकर, पश्चात् अपने आय—व्यय का व्यौरा लिखते हैं। यहाँ तक कि घृणा प्रकट करने में भी राम! राम!! कहेंगे। इधर नास्तिकता की वृद्धि के साथ—साथ, हिन्दू—जातिके जीवनभूत श्रीरामनाम की भी दिनानुदिन उपेक्षा होती जा रही है। श्रीगिरिधर कविराय के समयमें श्रीरामनाम उच्चारण विरहित हिन्दू, समाज में बहिष्कार्य माना जाता था। यह बात उनकी नीचे दी गई कुण्डिलयाँ से प्रतीत होती हैं —

''हिन्दू कुलमें जनमि के, रामनाम सुख सार।
जे न जपे तेहि सीस पर जूता साठ हजार।।
जूता साठ हजार मारि मार मुख कारिख दीजै।
दै गरदन में हाथ नगर से बाहिर कीजै।।
कह गिरिधर कविराय सुनो हो भैया जिन्दू।
रटै राम नहि नाम सो पापी कैसा हिन्दू।।''

श्रीनाम और रूप में अभेद

श्रीपद्मपुराण मे परमार्थ तत्वके सुमर्मज्ञ जगद्गुरु भगवान् शंकरजी ने श्रद्धा स्वरूपिणी भगवती पार्वतीजी को बताया है कि श्री रामनाम, जापकों के सभी दिव्य मनोरथों को पूर्ण करने में चिन्तामणि की समता सजते हैं। यही परतत्त्व के स्वरूप हैं। अन्य सहकारी साधनोंसे निरपेक्ष रहकर स्वत: परिपूर्ण हैं। सर्वथा निर्विकार एवं नित्य हैं। सच पूछो तो श्रीरूप के सभी धर्म श्रीनाम में विद्यमान रहने के कारण, श्रीरूप तथा नाममें कोई भिन्नता है ही नही। दोनों एक ही परतत्त्व हैं।

''नाम चिन्तामणिं रामश्चैतन्य परविग्रह:।
पूर्ण: शुद्धो नित्ययुक्तो न भिन्नो नाम नामिन:।।''

श्रीलोमश संहितामें आया है कि दो अक्षरके श्रीरामनामने ही पिनाकधारी भगवान् शंकर के अभिमान को भंग कर दिया। इस पर तर्क उपस्थित हुआ कि पिनाक तोड़ने वाले तो श्रीरूप सरकार हैं, श्रीनामको श्रेय कैसा? इस पर सर्व—सम्मति से निर्णय हुआ कि जो ही रूप हैं, वही श्रीनाम हैं। दोनों में ही शक्ति, सामर्थ्य, प्रभाव, महिमा आदि समान रूपही से विद्यमान हैं।

''रामेति द्वयक्षरं नाम मानभङ्ग पिनाकिन:।
अभेदो बोध्यते तेन सततं नाम नामिनो:।।''

पूज्यपाद श्रीबड़े महाराजने भी स्वरचित श्रीसीतारामनाम स्नेह—वाटिकामें यही कहा है कि श्रीरामरूप ऐसे रमणीय हैं कि उन सौन्दर्य—माधुर्य—सुधासिन्धु विग्रह में सबों का मन रमण करने

लगता है। क्या मुनीश्वरगण,क्या अनन्त ब्रह्माण्डों के विविध त्रिदेवगण, क्या भिन्न–भिन्न वैकुण्ठों के सगुण साकार ब्रह्म विग्रहगण, सबोंका मन एकाग्र होकर, उसी रूपसिन्धुमें गोता लगाता रहता है। उस अनिर्वचनीय अनूप रूप के अङ्ग–अङ्ग की छबि देखकर कोटि–कोटि अनंग (काम), दंग रह जाते हैं। यही बात परम रमणीय श्रीरामनाम में है। श्रीनाममें भी इतना अपरमित रस भरा हुआ है कि सभी वर्गके जापकों का मन अनायास श्रीरसार्णव रामनाम में मगन हो जाता है। अत: दोनों में अन्तर बताने वाले मन्दबुद्रि सांसारिक प्राणी ही होंगे नवके अङ्क के समान कई गुणा होनेपर भी जोड़में नवके नव ही रह जाते हैं। उसी भाँति श्रीनामरूपकी नित्य एकरसता है।

''रमे जेहि माहि मन मारिके मुनीश ईश
विगत अनीश जगदीश देश देश के।
कोटिन अनंग छबि अंग अंग पर लित
मात होत अकथ अनूप दुति वेश के ॥
नामी नाम मध्य लेश अन्तर न पाइयत
बीच जे वदत तेइ मन्द भव वेश के।
(श्री) युगलअनन्य नव अंकके समान नाम
व्यापक विचित्र भाँति पूजित अशेष के॥''२६१०॥

श्रीनामरूपको अभेद बताने वाला एक बड़ाही मजेदार दृष्टान्त है। बात नित्य दिव्य–विहार देश व है। श्रीकौशलेन्द्रकुमारजू अपने अन्त:पुर स्थित श्रीप्रिया जनकेन्द्र राजनन्दिनीजू से विदा माँगकर, अपने सखाओं के साथ श्रीसरयूपुलिन स्थित व्याघ्रादि हिंस्र पशुओं से सेवित घोर अरण्य देशमें आखेटक लीला करने जा रहे हैं। अभी आपका खेटक समाज श्रीसरयू–प्रवाह के सन्निकट रंग–विरंगी मणिचूर्ण मयी बालुकाओं पर विराजमान होकर, नर्महास परिहास का आनन्द लूट रहा है। श्रीजानकीरमण तो तन से आखेट निमित्त बाहर आये हैं, परन्तु आपका मन तो श्रीप्रियाजू के रूपगुणों में रमण करता हुआ, श्रीकनकभवनही में रह गया था आपको बेमन देखकर, किसी सखाने आपसे श्रीप्रियाजू का सम्बन्ध लेकर, मीठी सी चुटकी की। श्रीप्रियाजी की चर्चा सुनतेही, उनसे अपनेको पृथक अनुमानकर उनके विरहमें आप व्याकुल हो गये। आपकी विरहोन्मत्त स्थिति देखकर, किसी अन्य चतुर सखा ने श्री (सीता) दो अक्षर का नाम लिखकर, आपके सामने रख दिया और कहा–मित्रवर! यहीं तो आपकी श्रीप्रियाजू हैं। कहां आप उनसे अलग है? श्रीप्रियाजू का परम आकर्षक नाम देखकर, आप उन्हें साक्षात् प्रियाजू मानकर, उनसे मिलने को उत्कंठित होकर, ज्योंही आगे बढ़े कि उस नामसे श्रीप्रियाजूने प्रगट होकर, आपका प्रेमपूर्ण अंकमाल किया। युगल जयति ध्वनिसे गगन–मंडल मुखरित हो उठा।

पुन: श्रीबड़े महाराज जी कहते हैं कि वेदों के मत से रूप और नाम में किंचित भी भेद नहीं हैं। जो कार्य रूप के द्वारा होता है, वह सभी कार्य श्रीनाम भी कर सकते हैं। श्रीरूप वाच्य हैं, उन का वाचक श्रीनाम हैं। तब अन्तर कैसा? एकही तत्त्व तो हैं। अत: सावधान होकर श्री सरकार की सेवा जप रूप से करनी चाहिये। विषयभोग नीरस एवं कुमार्गपर ले जाने वाला

मोह को अन्त:करण का मल मानना चाहिये। व्यर्थवाद मिथ्यावादमें जीभ का दुरुपयोग न करके, इसे प्रियतम के नाम के गान एवं गुणकीर्त्तनमें लगाये रखना चाहिये। श्रीबड़े महाराज जी की सम्मतिमें रातभर जगकर नामाभ्यास करने में अधिक लाभ है। मोहनिशा में भी जगना चाहिये। देव—दुर्लभ मानव आयुरूपी सम्पत्ति का क्षणभर भी व्यर्थमें बरबाद न करें।

''नाम रूप माझ भेद वेद न वदत नेक
कहत अभेद वाच्य वाचक विबेक बल।
ताते सावधान होय जोय जुग एकरस
अरस कुपन्थ को विहाय मानि मोह मल।।
मिथ्या अनरथ व्यर्थ वचन कदर्थ तजि
भजिये सुनाम गुन गाइये सुधाम थल।
(श्री) युगलअनन्य रैन जागिये सुचेत चित्त
वित्त बरबाद मत कीजिये सुपल भल।।''५२८।।

अभेद इसलिये भी कहते हैं कि श्रीरामरूप के अभ्यन्तर श्रीचरण नखसे मस्तक शिखापर्यन्त रंगनिधि अङ्ग—अङ्गमें सुललित नाम विराजमान हैं। अभिमानरूपी भ्रम छोड़कर देखना चाहिये। जिन्होंने सन्तों की, सद्गुरु की संगति नहीं की है, वह उल्टी—सीधी बात बनाया करते हैं। अनमोल श्रीनाम का तथा श्रीरूप का रहस्य अगम अथाह है। मोह से व्याकुल चित्त बाले क्या समझेंगे? श्रीरूप तथा नाम दोनों नित्य अनादि हैं। किंचिन्मात्र दोनों में भेद बताने वाले के सुख सुकृत दोनों नष्ट होंगे। रूपके बिना नाम आकाश—कुसुमवत् भ्रममूलक ही रहेंगे, तथा नामरहित रूपका परिचय ही नहीं मिलेगा। अज्ञानी—जन व्यर्थ के वितंडावाद फैलाते हैं। यथार्थ वस्तु उन्हें भासती नहीं। श्रीरूप नाममें जो गूढ़रहस्य है, उसे हमको संतगुरुने कृपाकर दर्शाया हैं।

''नामी माझ नाम नखसिख लौं विराजमान
हेरिये सुजान मान भान को विहाय के।
ऐसो कौन अंग रसरंग निधि जामें नाम
ललित ललाम नहिं लसत सुभाय के।।
सन्त सतगुरु सुचि संग के विहीन नर
आन तान गावत कुरंग निधि न्हाय के।
(श्री) युगल अनन्य अनमोल नाम नामी गति
अगम अथाह कैसे पावें विललाय के ।।१९३५।।
नामी नाम युगल अनादि एकरस तिल
तरक करत सुख सुकृत विनासि है।

रूप के विहीन नाम व्योम के कुसुम, नाम

विरहित रूप अन्धकार सम भासि हैं।।

नाहक वितंड खंडनीय वाद साद विन

बोलत अबोध सोध भासत न खासि हैं।

(श्री) युगल अनन्य सन्त गुरु दरसाय दियो

नामी नाम रहस विचित्र जौन गांसि हैं।।११३६।।

श्रीश्याम सलोने जानकीरमणजू की रमणीय मूर्ति अतिसुन्दर नामाक्षरों के अभ्यन्तर से झलकने लगती हैं। प्रेमोत्साह पूर्वक महामन्त्रमणि श्रीसीतारामनाम को उच्चारण कीजिये और प्रेम विश्वास पूर्वक श्रीनामाक्षरों का ध्यान कीजिये। नामाक्षरों के भीतरसे ही रूपका प्रकाश कोटि–कोटि सूर्य चन्द्रके प्रकाश को विलज्जित करता हुआ आपके हृदय में स्वयमेव प्रगट हो जायगा। उस समय आप अपने हृदयमें वीणा की रागिनीके समान मनमोहिनी नामध्वनि सुनकर, विलक्षण नामनशेमें चूर हो जायेंगे।

''माधुरी सूरति साँवरे की झलकाति सुनाम ललाम के अन्तर।

जोहिये प्रीति प्रतीति समेत उचारिके रंग–उमंग से मन्तर।।

आपहि आप प्रकास उठे उर चन्द सुभान समान वसन्तर।

(श्री) युग्मअनन्य अजूब नसानिज जानि परै सुनि रागिनीयन्तर।।''१२५०।।

श्रीसीताराम–सुधाकुण्ड हैं। इनमें आनन्दपूर्ण रहस्य भरे हैं। नामाक्षरों के ध्यान कीजिये और अपने अंग–अंगमें अभयदायक परमानन्द एवं हजारों वर्ष का अनुभव कीजिये। नामहीन जीवन में कोटि–कोटि दुःख विपत्ति भरे रहेंगे। इसे विचार की दृष्टिसे देखकर जगत् जंजाल को छोड़कर, नामाभ्यासमें तत्पर होइये। फिर श्रीनाम कृपासे आपके हृदयमें श्रीजानकीकान्तजू के रूप ऐसे जमकर रहेंगे कि यत्न करने पर भी नहीं निकलेंगे।

''राजत रंग रहस्य सुधाहृद नाम के अन्तर जोहिये प्यारे।

छाजत मौज अजूव अभयप्रद अंगहि अंग में हर्ष हजारे।।

नाम बिना दुःख दोष घना दृग देखि के त्यागिये फंद पसारे।

(श्री) युग्मअनन्य सियावरकी छबि पैठि नहीं निकसे श्रमधारे।।''१४४२।।

श्री भुवनेश्वरनाथ मिश्र 'माधव' लिखते हैं– यह रामनाम, जिसके जपने से दसो–दिशाएँ मंगलमय हो जाती हैं, और जिसके लेने–मात्र से संसार सागर सूख जाता है, प्रेम–पूर्वक दीर्घ–काल तक निरन्तर अभ्यास करने से ही, अपने–आप साधक के हृदयमें ज्योतिरूप होकर प्रगट होता है और तब साधक यह अनुभव करता है कि स्वयं दिव्य नामोच्चार हो रहा है रोम–रोमसे, और वह मात्र उसका द्रष्टा है। ऐसे नामानुरागी सिद्धयोगी भक्त आज भी अपने देशमें हैं। यह नाम बाहर–बाहर से जितना सीधा,साधा सरल प्रतीत होता है, उसमें प्रवेश करने पर वह उतनाही गुह्यतम,रहस्य हो जाता है–अन्तर्लोक के पर्दे एक के बाद एक खुलने लगते हैं और साधक अपने आपको सहज

ही एक दिव्यलोकमें, दिव्यप्रेम, दिव्य–सौन्दर्य, दिव्य–आनन्द की त्रिवेणी में स्नान करते पाता है,और वहां उसका सब कुछ दिव्य–ही–दिव्य हो जाता है। नाम और नामी की अभिन्नता का यही स्वरूप हैं।

जीवन–जान जुगल परिकर से सहित नाम में बसते हैं।
अमल अभेद अखेद नाम नामी अभ्यन्तर लसते हैं।।
नाम सनेह सजे पावे प्रीतम सतसंग तरसते हैं।
युगलानन्य नाम रमने कारन हरदम कटि कसते हैं।।
व्यर्थ त्यागि अनुरागि नाम तन–मन–बच जिकर जमाते हैं।
अखिल तत्त्वतर सार अर्थ मन मनन किए मुद माते हैं।।
नामी नाम एकता करि निज नाम सनेह समाते हैं।
युगलानन्य नाम करुणा तें छबि निधि छबि झमकाते हैं।।
नामी नाम अभेद वेदविद वदहिं बिशेष प्रचारी।
तामें रंचकहू संशय नहिं देखिय दृष्टि पसारी।।
द्वादश अंग अनंग रङ्ग हर रूप नाम छवि धारी।
युगलानन्यशरन नामहु मधि छहू मात्रा प्यारी।।
इष्ट स्वरूप अनूप मिष्ट निज नाम माँझ नित झाँके।
बार बार बलिहार करत अनुराग सुधा रस छाके।।
रसना रटत रहे आरत ह्वै सपनेहुँ कबहुँ न थाके।
युगलानन्यशरन सुनाम सें विमुख खाक ही फाँके।। श्रीनामकान्ति स

दिव्य गुणगण–निधान श्रीरामनाम

श्रीआदित्यपुराणमें भगवान् श्रीशंकरजी ने श्रीपार्वतीदेवी से कहा है कि श्रीरामनाम महामोद धाम के अभ्यन्तरही सपरिकर सानुजगण श्रीयुगलकिशोरजी, उनके मंगलमय श्रीअवध–धाम तथा आपके समस्त गुणगण निवास करते हैं।

''रामनाम्नि स्थितास्सर्वे भ्रातरः परिकरास्तथा।
गुणानां निचयं देवि तथा श्रीधाम मंगलम्।।''

श्रीपद्मपुराणमें श्रीरघुकुलगुरु श्रीनामतत्त्वके मर्मज्ञ श्रीवशिष्ठजी ने श्रीभरद्वाजजी को बताया है कि यद्यपि श्रीनाम–रहस्य अतिशय गूढ़ हैं, परन्तु प्रत्यक्ष रूपसे सभी लोकोंमें इनकी स्थिति है। श्रीनाममें भी श्रीरूपही की भाँति सौशिल्यादि समस्त शरणागतोपयोगी कल्याण गुणगण निहित हैं। तौभी मन्दभागी जीव इनके समाश्रय को छोड़कर, नाना साधनान्तरों में नाहक रचता–पचता रहता हैं।

''प्रत्यक्षं परमं गुह्यं सौशील्यादि गुणार्णवम्।
त्यक्त्वा मन्दात्मका जीवा नाना मार्गानुयायिन:।।''

श्रीबाराहपुराण में भगवान् श्रीशंकरजी का विमल वचन है—श्रीरामनाम शरणागत—वत्सल एवं अपार करुणासिन्धु हैं जापकों के द्वारा किये हुये कोटि—कोटि अपराधों को तथा तज्जन्य पापों को मिटा देते हैं। ऐसे श्रीनाम के जपमें जिसे प्रीति न हुई,समझ लो वही मनुष्य महान—पापी है।

''करुणा—वारिधिं नाम ह्यपराध निवारकम्।
तस्मिन्प्रीतिर्न येषां वै ते महापापिनो नरा:।।

श्रीपतञ्जलि—संहिता में कहा गया है कि परब्रह्म स्वरूप तथा वात्सल्य सिन्धु श्रीरामनाम को छोड़कर,अन्य साधन से सुरक्षा होने योग्य नहीं है। सत्य—सत्य कहता हूँ।।

''रामनाम परब्रह्म त्यक्वा वात्सल्यसागरम्।
अन्यथा शरणं नास्ति सत्यं सत्यं वचो मम।।''
कहौं कहाँ लगि नाम बड़ाई। राम न सकहि नाम गुन गाई।।

श्रीरामनाम जापकों में समस्त दिव्यगुण भर देते हैं तथा उन्हें ऐश्वर्य सम्पन्न कर देते हैं। इनके संकीर्त्तन से मरण—धर्मा मानव उज्ज्वल अक्षय भगवद्धाम प्राप्त करते हैं।

''गुणानां कारणं नाम तथैवाश्वर्यवतां सदा।
संकीत्तनाल्लभेन्मर्त्य: पदमव्ययमुज्ज्वलम्।।''

श्रीरामनामके जापक शान्त,जितेन्द्रय, क्षमाशील होकर नामार्थ का चिंतन करते हुये नाम जपें, तो उनमें असंख्य सद्गुण आकर भर जायेंगे।

''शान्तो दान्त: क्षमाशीलो रामनामार्थचिन्तक:।
तस्य सद्गुण संख्यानां वक्तुं नैव क्षमोप्यहम्।।''

श्रीनाम रटनेवाले में श्रीराघवलालजू के समस्त लभ्य गुणगण उतर आते हैं। वह भी करुणा—कृपाशील तथा सुशील, रागद्वेष विरहित समत्व भाव वाला,दयालु दीन हितकारी, सर्व—सुखद बन जाता है। आप अधिक अमानी,औरों को मान देने वाला सारग्राही, दु:ख—विनाशक बन जाता है तथा सबके प्रति कोमल भाव का व्यवहार करता है। उनके मुख से कोमल सुखद वचन निकलते हैं। उनके तन,मन,बचन में कहीं कठोरता का लेश भी न पाइयेगा। अत: उसमें श्रीराघवजू के समान ही सब गुणों की विद्यमानता में तनक भी सन्देह न करना चाहिए।

''रटै जौन नाम तामें आवै गुन राम के ।
करुना कलित कृपा सरस सुशील सम
दाया दीन—हित चित दायक आराम के।
अधिक अमान मानप्रद सदसार गुन—
ग्राही दुखादाही मृदुताई खास आम के।।

कोमल वचन मन तन मे कठोरता को
लेस हूँ न मिले साँचे राँचे सुखधाम के ।
श्रीयुगल अनन्य उर खाटका न जानो नेक
रटै जौन नाम तामै आवै गुन राम के।।''

सर्व–सुहृद नाम

हमारे लौकिक जीवन के स्वार्थी सहायक माता–पिता,भाई–बन्धु, पुत्र–कलत्र आदि शारीरिक सम्बन्धी माने जाते हैं,परन्तु हमारे पारलौकिक कल्याण की परवा इन्हें नहीं रहती। बीतराग निष्किञ्चन सन्त हमारे पारलौकिक सुखों के सहायक अवश्य होते हैं, किन्तु स्वयं संग्रहशील न रहने के कारण हमारे भोजन वस्त्रादि निर्वाह सम्बन्धी वस्तुओं के लिए स्वयं रूप से हमारे सहायक नहीं बन पाते। श्रीरामनाम हमारे उभय लोको के सहायक हैं और है निस्स्वार्थ हितू।

रामनाम कलि अभिमत दाता। हित परलोक लोक पितुमाता।।

सभी जागतिक सम्बन्धियों की भाँति श्रीरामनाम अकेले सब नातेदार बनकर, हमारे सार–सम्हार करते हैं।

श्रीविनय–पत्रिका पद सं० २२६में गोस्वामिपाद कहते हैं–

"मेरे माय बाप दुइ आखर,हौ सिसु अरनि अरौ।"

पुन: वहीं पद सं० २५४ में कहते हैं––

''राम रावरो नाम मेरो मातु–पितु हैं।
सुजन सनेही गुरु साहिब सखा सुखाद
रामनाम प्रेम अविचल वितु है।।''

पुन: श्रीकवितावली ७/१७८ में कहते हैं––

रामनाम मातु–पितु स्वामी समरथ हितू
आस रामनाम के भरोसो रामनाम को।

श्री विनय–पत्रिका के पद सं० २२७ में कहते हैं––

''नाम राम रावरोई हित मेरे।''

श्रीवाराहपुराणमें कहा गया है कि परात्परब्रह्म श्रीराघवजू का रामनाम सौभाग्य–वर्द्धक सर्वस्वामी, आनन्ददाता, सर्वसुहृत, देवासुर वन्द्य परम आनन्दकंद हैं।

''श्रीमद्रामपरेश–नाम सुभगं सर्वाधिपं शर्मदं
सर्वेषां सुहृदं सुरासुरनुतं ह्यानन्दकंद परम्।।''

श्रीआदिपुराण में भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं––श्रीरामनाम जगत् के सभी प्राणियों के बन्धु हैं तथा अनाथ–नाथ हैं।

''नामैव जगतां वन्धु र्नामैव जगतां प्रभु:।''

श्रीवृहदवशिष्ठ संहिता में श्रीनारदजी ने मुनियों से कहा है कि श्रीरामनाम अन्धों के लिए उत्कृष्ट और स्वच्छ नेत्र हैं।भीतर तथा बाहर की सभी वस्तुओं को दिखाते हैं। वधिरों के लिये उसी प्रकार के कान हैं तथा पंगुओं के हाथ—पाँव हैं।

''अन्धानां नेत्रमुत्कृष्टं स्वच्छं श्रीनाम मंगलम।
वधिराणां तथा कर्ण पंगूनां हस्तपादकम्।।''

श्रीगालवीयसंहिता कहती है कि निराधार के लिए श्रीरामनाम आश्रय स्थान है तथा सभी देहधारियें को माता—पिता की भाँति लालन—पालन करने वाले हैं।

''आश्रमं सर्व जन्तूनामाधार रहितात्मनाम्।
जननी तात वन्नित्यं पोषकं सर्व देहिनाम्।।''

''सुमिरू सनेह तू नाम रामनाम को। संबल निसंबल को सखा असहाय को।।
भाग है अभागेहू को गुन गुनहीन को। गाहक गरीब को दयालु दानि दीन को।।
कुल अकुलीन को सुन्यो है वेद साखि है। पांगुरे को हाथपाँव, आँधरे को आँखि है।।
माय बाप भूखे को अधार निराधार को। सेतु भवसागर को हेतु सुखसार को।।
पतित पावन रामनाम सो न दूसरो। सुमिरि सुभूमि भयो तुलसी सो ऊसरो।।'' श्री विनय—पत्रिका,६९

श्रीजानकी वल्लभलालजू का मंगलमय (मोबारक) नाम मानो दिव्यानन्द (सादी)का सुहावना नगर ही है। ये नाम परात्परब्रह्म जन्य परमानन्द तथा दिव्यप्रेम और विश्वास देने वाले हैं,इनके जपसे प्राणप्रियतम श्री जानकीरमणजू की वह छवि—छटा भी झलकने लगती है जो विमल अनुभव में भी ध्यानगम्य नहीं हैं। ऐसे सर्व—सुहृद नामके स्मरण बिना अन्य बातों में लगना मानो सन्मार्ग से वहक जाना है।

श्रीसीतावर नाम मोबारक सादी सहर सोहावन है।
परमानन्द परेश प्यार परतीति प्रभा परचावन है।।
अनुभव अमल पार प्रीतम छविछटा—घटा झलकावन है।
युगलानन्य नाम—सुमिरन बिन विविध बात बहकावन है।।

श्रीसीताराम नाम —सरकार दिव्य है,मंगलनिधान (भव्य) हैं,नित्य नवनवायामान प्रतीत होते हैं। दिव्य—स्नेह के सुधा—सिन्धु तथा अत्यन्त प्रेमास्पद (नीको) हैं। प्रतिकूल अनुकूल व्यक्तियों के लिए समान रूप से सुहृद हैं। सबों को सुधाधिक सुख देते है। हवन,पिंडदान,पूजन आदि कुछ भी नहीं चाहते,केवल प्रेम के भूखे हैं। दानी शिरोमणि हैं। जापक की रक्षा में तत्पर रहकर उन्हें निर्भय बना देते हैं। अत:हैं ये प्राणसंजीवन।

दिव्य भव्य नित नव्य नेहनिधि नाम नेहायत नीको।
सव्य तथा अपसव्य सदृश सुख सौंपत अधिक अमी को ।।
हव्य कव्य बरजित पूजन चाहत एक प्रीति सुठीको।
युगलानन्यशरन उदार अभयप्रद नाम सजीवन जी को।।

श्रीनाम ऐसे अवढर–ढरन हैं कि स्वप्नमें भी कोई नाम बरबरा उठे अथवा किसी नशे में बुत होकर नाम गा ले; अथवा शारीरिक संकट आ पड़ने पर आर्त होकर नामोच्चारण करे,अथवा पुजाने के लक्ष्यसे नाम–जप का दंभ ही करे,अथवा निन्दा घृणा के अवसर पर राम!राम!!छि:! छि:!! के बहाने ही नाम ले ले,जो उसे निहाल कर देते। उसके भाव–कुभाव पर आपकी दृष्टि नहीं जाती। श्रीनाम–सरकार नामाश्रयी के दोषों की ओर ध्यान नहीं देकर, केवल उसके गुणही ग्रहण करते हैं। ऐसे श्रीनाम को जीते–जी क्षणार्द्ध के लिये भी छोड़ना नहीं चाहिये।

सपने में बड़राय नाम जो गाय उठे मद पीए।
अथवा काय क्लेश दंभ अपवाद हास रस लीए।।
भावाभाव नहीं निरखात श्रीनाम सगुन मन दीए।
श्रीयुगलानन्यशरन विसरत मत पलक पाव हूँ जीए।। श्रीनाम–कांति से

श्रीनाम – माधुरी

अपरिमित रसोदधि श्रीरामनाम अपार माधुरी से परिपूर्ण हैं। जिन बड़भागियों ने श्रीनामका रसास्वादन किया है, वे भी ' गूंगे के गुड़' की भाँति श्रीनामस्वाद के बखान करने में मूक हो रहे हैं। अत: श्री क्रियायोगसार–नामक आर्षग्रन्थ का कहना सवा सोलह–आना सत्य है कि हम नामामृत का स्वाद किन शब्दों में वर्णन करें? जिन्हें स्वाद का ज्ञान प्राप्त करना हो, वे बुद्धिमान् स्वयं जपकर परख लें।

''रामनामामृतं स्वाद कथं वाचा वदामिते।
स्मरणादेव ज्ञातव्यं सर्वदा बुध–सत्तमै:।।''

श्रीनाम का शब्दार्थ भी तो यही कहता है–न–आ–म–यानी नास्ति आ–समन्ताम् म–माधुर्य श्री यस्मात् अर्थात् जिससे बढ़कर परिपूर्ण रूपसे माधुरी कहीं है ही नहीं,उसे ही तो नाम (राम) ही कहेंगे। श्रीनामरस के सुमधुर स्वाद को जान गये, आदिकवि महर्षि श्रीवाल्मीकिजी। अपने श्रीरामायण नामक महाकाव्य के पदे–पदे में आपने ऐसी मिठास भर दी,मानो आप अपने काव्यवृक्ष की कविता की शाखा पर बैठकर,कोकिल की भाँति मधुर–मधुर नामका कलरव कर रहे हैं। ऐसे कविकोकिल को मेरा बार–बार प्रणाम!

''कूजन्तं राम रामेति मधुरं मधुराक्षरम्।
आरुह्य कविता शाखां वन्दे वाल्मीकि कोकिलम्।।''

श्रीरामनाम स्वाद के रसिया हैं श्रीहनुमतलालजी। आदिरामायण में सेतुबन्ध के महाशिल्पी श्री नलजी से नाम–महिमा कहते हुये आपने श्रीरामनाम को अमृत की खान बतायी और कहा कि यह देवलोक के, नागलोक के,चन्द्रमास्थित अमृत से भी अतिश्रेष्ठ अमृत हैं। उपयुक्त अमृत पानकर, देवतानाग कभी न कभी मर भी जाते हैं। नामसुधा पान करने वाला सदा के लिये अजर–अमर हो जाता है। अमृतप्रासी देवता को भोजन स्वाद से भले तृप्ति हो जाय, भोग स्वाद का चस्का तो उनका उत्तरोत्तर

बढ़ता ही जाता है। नामामृत पान करने वाले को इहलोक,परलोक के किसी अन्य सुख–स्वाद की चाहना कतई नहीं रहती। अतः इस नामामृत को श्रीहनुमतलाल महा–अर्जित श्रेष्ठ बताते हैं–

''अमृतस्याकरं विद्यादेतदेव महोर्जितम्।''

श्रीरामनाम के रसका जिन्होंने आस्वादनकर लिया,वे महात्मा श्रीनामतत्त्व के ज्ञात–अज्ञात सारे रहस्य जान जाते हैं। श्रीव्यासदेवजी सूतजी से मार्किण्डेय पुराण में कहते हैं–

''रामनाम परं गुह्यं सर्ववेदान्त वन्दितम्।
ये रसज्ञा महात्मनस्ते जानन्ति परेश्वरम्।।''

अतःश्रीरामनाम के रसास्वादन में जिसे श्रद्धा–भक्ति है, वहीं सभी शास्त्रों का यथार्थ ज्ञाता है,वही मानव जीवनको सार्थक करने वाला है। ऐसा रहस्यसार–नामक ग्रन्थ में स्वयं भगवान् नारायण मुनियों से कह रहे हैं।

''यस्य रामरसे प्रीति वर्तते भक्ति संयुता।
त एव कृतकृत्यश्च सर्व शास्त्रार्थ कोविदः।।''

हमही लोगों के समान जिस भाग्यहीन को सुधा–धाम श्रीरामनाम में प्रीति नहीं हुई, वह पतित शिरोमणि भूमि का महान भार–स्वरूप है श्री मेरुतन्त्र ने बहुत ही ठीक कहा है–

''रामनाम्नि सुधानाम्नि यस्यप्रीतिर्न विद्यते।
पापिनामग्रगण्यस्य भूमेर्भार महत्तरः।।''

यही कारण है कि हम भक्ति–भाव के कच्चे हैं। पक्का तो राम–जापक ही होते हैं। श्रीनामशब्द का यह भी अर्थ है 'न आमो येन' अर्थात् जिसका अभ्यास कर जीव कच्चा न रहे, वहीं है नाम। आम का अर्थ कच्चा भी होता है। यथा– ''विगरत मन संन्यास लेत जल नावत आम धरो सो''।। श्री विनय १७३।४

हमारी कच्चाई का कारण है हमारी लोभ–लिप्सा एकतो गुरुजनों के उपदेश के अनुसार,नाम रटने में हमारी नानी मर जाती है। रटते ही नहीं बनता है। रटे तो नाम में स्वाद न मिलने से,तुरत नाम जपना छोड़–छाड़कर, भोग सामग्री जुटाने के गोरखधन्धे में लग जाते हैं।

श्रीरामनाम में सुधा से सहस्रगुना अधिक मिठास है। आपको श्रीनाम का स्वाद नहीं मिलता है, इसके कारण पर आपने कभी विचार किया है? हमारे परमाचार्य श्री गोस्वामिपाद ने तो डंका बजाकर,पहले से कह रखा है–

''तुलसी जौ लौं विषय की मुधा माधुरी मीठ।
तौ लौं सुधा सहस्र सम,राम भगति सुठि सीठ।।''

श्रीराम भगति पाठ को बदलकर,यदि रामनाम रखकर नया पाठ बना लें,तो श्रीगोस्वामिपाद के तात्पर्य में कोई हेर–फेर नहीं होगा।

''तुलसी जौ लौं विषय की मुधा माधुरी मीठ।
तौ लौं सुधा सहस्र सम,रामनाम सुठि सीठ।।''

अब समझा न आपने?प्राकृतिक भोग–विलास में मृगमरीचिका के समान भ्रमपूर्ण रस लेने वाले को दिव्यरस कभी मयस्सर नहीं होने को। जीभ से श्रीनाम का रसास्वादन तब हो,जब हम सर्वप्रथम जीभ को खाद्य–वस्तुओं के स्वाद से रोकें?देवस्वामी कहते हैं–'जीभ चटोरी चाट चटेगी, कांहे सियबर को नाम रटेगी।' महात्मा गाँधी की भांति अस्वादब्रत ले लीजिये,पुन: संसार की सभी भोग–वस्तुओं से सभी विषयेन्द्रियों को रोकिये। पुन:निरन्तर नामजप में तत्पर होइए? स्वाद सरसेगा क्यों नहीं जीभपर श्रीनामका? जैमिनी पुराण के अनुसार तत्त्वदर्शी मुनियों ने जीभ का दूसरा नाम रसना बताया है,इसलिये कि यही जीभ श्रीरामनाम में स्थित परम स्वाद का,परम रस का भेद जानती है। 'रसभेद जाने सो रसना'।

''रामनाम परमस्वादु भेदज्ञा रसना च या।
तन्नाम रसनेत्यहुर्मनयस्तत्त्वदर्शिन:।।''

श्रीवृहद्विष्णुपुराण में महर्षि पराशरजी अपने शिष्य को समझा रहे हैं।बच्चे,अपनी जीभ से कहो कि हे जिह्वे! तू रससार को परखने वाली है, तुझे माधुरी से बड़ी प्रीति हैं। लो श्रीरामनाम में अनन्त सुधा से भी बढ़कर स्वाद भरा है, निरन्तर पीता रह इसे।

''हे जिह्वे रससारज्ञे संततं मधुर प्रिये।
श्रीरामनाम–पीयूषं पिव प्रीत्या निरन्तरम्।।''

श्री सनक–सनातन संहिता में भी जीभको इसी प्रकार समझाया गया है–है जिह्वे! तू मधुर प्रिय है, तो श्रीरामनाम–सुधा का प्रेमभक्तिसे पान किया कर। वाद–विवाद तो अपने और परायें हृदय को संतप्त करने वाला अग्नि है। इसमें कभी मत उलझना। श्रीरामनाम में केवल सुधाधिक स्वाद ही हो,इतनाही नहीं। इनके जपसे जन्म–मरण का रोग मिटेगा, काम–विकार नष्ट होगा।श्रीनाम तुम्हारे मनको दिव्यानन्द में रमण करावेंगें, क्योंकि ये स्वत: रमणीक से भी रमणीक है। यही कारण है कि भगवान् पार्वतीवल्लभ को सदैव प्रिय हैं। सर्वेश्वर हैं,अनन्त सुखदाता हैं।

हे जिह्वे मधुरप्रिये सुमधुरं श्रीरामात्मकं
पीयूषं पिव प्रेमभक्ति मनसा हित्वा विवादानलम्।
जन्मव्याधि कषाय–काम समनं रम्यातिरम्यं परं
श्रीगौरीश प्रियं सदैव सुभगं सर्वेश्वरं सौख्यदम्।।''

श्रीप्रभास पुराण का कथन है–श्रीरामनाम में निरतिशय माधुरी भरी है। श्रीनाम सर्वेश्वर के भी ईश्वर हैं। अर्थात् ब्रह्मरूप से भी बड़े हैं। जीभ से उच्चारण करने पर; समस्त रसों के निधान स्वरूप महारास का सुखस्वाद शीघ्र सरसने लगता है।

''मधुरालयमदो मुख्यं नाम सर्वेश्वरम्।
रसनायां स्फुरत्याशु महारास रसालयम्।''

श्री पद्मपुराण में श्रीवशिष्ठ जी ने श्रीभरद्वाजऋषि से कहा है कि श्रीरामनाम स्वाद में सुधानिधान हैं। निर्मल, गुण तीत एवं नित्य निर्विकार हैं। जापक को तत्काल अभय कर देते हैं।

''अहो महामुने लोके राम नामाभय प्रदम।
निर्मलं निर्गुणं नित्यं निर्विकार सुधास्पदम्।।''

श्रीमार्कण्डेय पुराण में कहा गया है कि जिसे श्रीरामनाममृतमें रूचि हो गई, उसकी जीभ तो निरन्तर दिव्य सुधा–स्वाद को लूटती रहती है। वह स्वयं तो कृतकृत्य हो ही गया। औरों के दोष को भी भस्म कर देने में समर्थ हो गया।

''जिह्वा सुधामयी तस्य यस्य नामामृते रुचिः।
कृतकृत्यस्स एव स्यात् सर्वदोषैक दाहकः।''

श्री पद्मसंहिता कहती है–श्रीरामनाम में अनन्त रस, अपरिमित स्वाद भरा है। नामसाधको के लिये तो दिव्यरसों का निधान ही है। ऐसे रामनामके स्मरण से श्रीरामरूप का स्पष्ट प्रकाश हो जाता हैं।

''रामनाम रसानन्त साधकं सुरसालयम्।
स्मरणाद्रामभद्रस्य संकाशः तस्य संस्फुटम्।।''

श्रीरहस्यनाटक में कहा गया है कि श्रीरामनाम स्वाद में मधुराति–मधुर हैं। मंगलों के भी मंगल करने वाले हैं। समस्त श्रुतिको हम यदि कल्पलता मान लें, तो श्रीरामनामको उस लताका चिन्मय फल कहेंगे। एक ही बार ऐसे नाम उच्चारण करले, चाहे भावसे या कुभाव से ही, तो वह संसार से पार उतर जाता है।

मधुर मधुरमेतं मंगलम् मंगलानां
सकल निगमवल्ली यत्फलं चित्स्वरूपम्।
सकृदपि परिगीतं श्रद्धया हेलया वा
स भवति भवपारं रामनामानुभावात् ।।

पुनः वहीं कहते हैं कि श्रीरामनाम के दोनों अक्षर क्या हैं–मानो दो प्रफुल्लित कमल हैं। हमारा मन मधुकर उसके मकरन्द स्वाद पीकर मस्त बना है। हमारे कानें में जब राम–ध्वनि प्रविष्ट होती है तब मालूम पड़ता है सुधा– धारा कानके अन्दर घुस रही हो, मेरे लिये तो ऐसे ही सुखदायक है। सरस्वती देवी के तो दोनों नयनही हैं। वह श्रीरामनाम हीन निरी अन्धी हैं। अज्ञानान्धार को मिटाने के लिये दोनों सूर्य–चन्द्रवत् समर्थ हैं। सम्पूर्ण वेद–सिन्धु को मथकर,यहीं दोनों रत्नमणि निकाली गई है। मुनियों के मनरूपी मानसरोवर में हंस समान विहार करने वाले हैं दोनों नामवर्ण । मुक्ति–रूपी सुहागिन के तो दोनों सौभाग्य–सूचक ताटंक ही हैं।

''चेतोऽलेः कमलद्वयं श्रुतिपुटी पीयूषपूर द्वयं
वागीशा नयनद्वयं धनतमश्चण्डांशु चन्द्रद्वयम्।
छान्दस्सिन्धु मणिद्वयं मुनिमनः कासार हंस द्वयं
मोक्षश्री श्रवणोत्पल द्वयमिदं रामेतिवर्ण द्वयम्।।''

श्रीरामचरितमानस की वंदना का श्लोक है कि श्रीरामनाम—रूपी अमृत वेदसिन्धु को मथकर काढ़ा गया है। क्षीरसिन्धु मंथन से जो अमृत सार निकला,वह चन्द्रमा में स्थित हुआ। यह नामसुधा श्री शिवजी के मुखचन्द्र में सुशोभित हुई। कलिमल को धोने में समर्थ हैं। जन्म—मरण—रूपी रोग की यह महौषधि है। श्रीजनकनन्दिनी तो इसी नाम को जपकर जीवन धारण करती है। ऐसे नाम—सुधा का जो सुकृति नित्य पान करते हैं, वह धन्यातिधन्य हैं।

''ब्रह्माम्भोधि समुद्भवं कलिमल प्रध्वंसनं चाव्ययं
श्री मच्छम्भु मुखेन्दु सुन्दरवरे संशोभितं सर्वदा।
संसारामय—भेषजं सुखकरं श्रीजानकी जीवनं
धन्यास्ते कृतिनः पिवन्ति सततं श्रीरामनामामृतम्।।''

श्रीमानसजी तो श्रीरामनाम को सुधा—कुंड ही बताते हैं। निष्कामी भक्त इस सुधाकुंड में अपने मनको मीन बनाकर डुबोये रहते हैं।

''सकल कामना हीन जे,राम भगति रस लीन।
नाम सुप्रेम पीयूष ह्रद, तिनहुँ कियो मन मीन।।''

एक बात और —और भक्ति अंग संतरे, अनार आदि के रस के समान हैं, तो श्रीनाम—सुधा है। अमृत और रस में तारतम्य तो है ही। श्रीबडे महाराज पाँचों भक्ति—रस को श्रीरामनामाक्षरों में ही स्थित बताते हैं। रेफ में रसराज शृंगार रस है; तो रेफ के अकार में सख्य रस, मध्याकार में वात्सल्य रस तथा मकार में शान्त और दास्य रस स्थित हैं।

''सरस सिंगार रसराज रेफ रस रूप, अमल अनूप भाव भाँति सुनिबेरिये।
सहज सुभाय भाय चहल पहल निंत, सख्य शुचि भाव कल माँझ रुचि धेरिये।।
वात्सल्य विमल विचित्र गुरु श्रेय स्वर,बीच वरदैन अनुराग सुख ढेरिये।
(श्री) युगलअनन्य शान्त दास्यहू मकार माँझ,रहस रसाल लाल साममध्य हेरिये।।२६४८।।

ऐसे श्रीरामनाम सुधा—धाम हैं। इनके परम स्वाद को रटकर अनुभव करना चाहिये। श्रीरामनामके अचिन्त्य रस की,स्वाद की सिद्धि तर्क—कुतर्क से नहीं होने को। कोई नाम—विमुखी इसमें कुतर्क करता है, वह महान पापी है। नरकगामी है, उसे राक्षसाधम समझना। इतिहासोत्तम तो यही कहते हैं।

''राम नाम्नि सुधाधाम्नि कुतर्कं निरयावहम्।
समाश्रयन्ति ये पापास्ते महारक्षसाधमाः।।''

श्रीनाम का अर्थ पंडित एक और भाँति से बताते हैं—'न अ मा अलक्ष्मीः अमा अन्धकारोवा यस्मात्' अर्थात् जिसके जप से न तो शोभा एवं धन—सम्पति की कमी न रहे,न अज्ञानान्धकार हृदय में रहने पावे उसे (श्री) नाम कहेंगे। श्रीरामनाम में दोनों गुण सहज है।

एक बात और श्रीरसमय रामनाम के रटन से रस का परिपाक बनता है। जापक के हृदय—रूपी घट को भी श्री नाम परिपक्व कर देते हैं। एक वैदिक मन्त्र है——

''अतप्त तनुर्न तदामो अश्नुते दिवम्।''

अर्थात् जो न आम नाम नहीं जपता है,वह आम अर्थात् कच्च है और नाम रटने का स्वाभाविक फल है विरह ज्वाला जगना। उस विरहाग्नि में जिसका हृदय घट पका नहीं, वह न तो दिव्य–सुख स्वरूप धाम का,न रूप का भोग सकता है।

अत: विरह ताप में तन को तपाना योग्य है। श्रीनाम प्रेम वसावन वरवा विलास में श्री बड़े महाराज ने इस सम्बन्ध में बहुत विस्तार से विचार किया है। विरह इच्छुकों को वह अवश्य देखना चाहिये और देखिये श्री बड़े महाराज का 'विरह परत्व प्रबोध दोहावली'। हम साम्प्रदायिक रीति से उपर्युक्त मन्त्र का ऐसा भी अर्थ कर सकते हैं कि जिसने श्रीधनुषवाण के तप्त श्रीरामायुध से अपने तन को तापित नहीं करवा लिया, वह कच्चा शरणागत है। वह दिव्यधाम, इष्टरूप का सुख नहीं पा सकेगा।

श्रीरामनाम की यह मिठास,यह मस्ती,जो सज्जन पुराकाल से अबतक अनुभव करते आये हैं,हमें क्यों नहीं अनुभव होता है? इसका विवेचन श्रीरघुनाथदास गोस्वामी ने बड़ी सरलता से कर दिया है।

''स्याद्रामनाम चारितादिसिताप्यविधा
पित्तोपतप्तरसनस्य न रोचिकानु।
किन्त्वादरादनुदिनं खलु सैव जुष्टाऽ
स्वाद्वीक्रमाद्भवति तद्गदमूल हंत्री।।''

मिसरी मीठी है,जो खाता है उसे मीठी जान पड़ती है, पर जिसका मुख पित्त से तप्त होकर कडुआ हो रहा है, उसे मिसरी कड़वी जान पड़ती है। यही पित्तके उद्भय होने की परीक्षा है। अविद्या पित्तसे तप्त हमारी रसना वा मन वाणी को श्रीरामनाम–लीलागुण मधुर होने पर भी मधुर प्रतीत नहीं होते हैं, प्रत्युत अरुचिकर अप्रिया और कटु प्रतीत होते हैं। परन्तु नियम यह है कि पित्तरोग की जैसे यह परीक्षा है कि उसे मिसरी कटु प्रतीत हो, वैसेही उसकी चिकित्सा भी यही है कि वह मिसरी ही का सेवन करता रहे। इसी से क्रमश: पित्त शान्त होता जायेगा, मिसरी मीठी प्रतीत होने लगेगी। अविद्या संतप्त हमारे मन वाणी को श्रीहरिनाम का सेवन करते रहने से क्रमसे उसका माधुर्य अनुभव होने लगेगा और मधुरता ग्रहण की विरोधी अविद्या भी क्रमश: नष्ट हो जायेगी। बस रुचि हो वा न हो, मीठा प्रतीत हो वा कटु,नाम–स्मरणही करते रहना।

**मीठो लगे मोहि अपने पिया को नाम अनूपम रंग भरो जी।
अपर ठौर न प्रीति बढ़त कछु छनछन मेरी हीय हरो जी।।
चारिउ फलकी चाह न सपनेहुँ सुख–सम्पति जग भार परो जी।
साधन सिद्धि नाम केवल दृढ मन बच करम सुबुझि धरो जी।।
बिना अयास रुच्छ नाना मत– सागर सहजहि सहज तरो जी।
युगलअनन्यशरन संतत सुख अति विचित्रतर भाव भरो जी।।**

रामनाम मधुर सुरस पीवत पति पावैं।
युग युग प्रति प्रभा पुञ्ज संयुत सरसावै।
दाद दाह आह चाह चौगुन चटकावै।।
विभव विमल अष्ट सुगुन अगुन रस रसावै।
सद विलास भांस खाश सुछवि छटा छावैं।।
लहर लय ललाम आम अनुपम अनुभावै।
युगअनन्य युगल रूप निकट नित सोहावैं।। श्रीनाम–परत्व पदावली।

रसमय रमन अर्थ आयस सुचि सार सुजान सनेही।
विशद बरन हिय हरन शरन प्रद तारन तरन सबेही।।
जापकजन जानहि जिलवा जस जाहिर जुग–जुग एही।
युगलानन्यशरन रमि रहु रस सागर नाम निरेही।।

निगमागम द्रुम दमकदार दुतिदायक फल ललिताली।
महामधुर रसरूप मृदुलतर नाम प्रनत प्रतिपाली।।
जेहि फल अमल हेत तरसत शिव शेष सुविधि बनमाली ।
युगलानन्यशरन चाखात चित लाय रहस्य रसाली।

हे रसनेश्रीरामनाम धुनि करत आलकस काहे।
जाने दियो अनूठी तब गति आदि अंत निर्वाहें।।
याते मधुर स्वाद दूजो का जाको तू चित चाहे।
युगलानन्यशरन पानी धो पानी जात बहा है।। श्री नाम–कान्ति से

♈ मृत संजीवन राम–नाम ♈

(कल्याण,भगवन्नाम महिमा अंक पृ०१३३ से साभार उद्धृत)

श्रीकबीरदास जी के पुत्र कमालजी थे। वे एक बार गंगातट पर गये। उन्होंने वहां एक मृतक व्यक्ति को देखा। उसके परिवारवाले रो रहे थे। कमालजीको उन पर दया आयी । पिताजी की बात उन्हें याद थी कि भगवान् के नामसे सब कुछ हो सकता है। उन्होंने मृतक के कानके समीप जाकर कहा–'अरे,–राम–राम' कहो।' इतना सुनते ही वह व्यक्ति उठकर खडा हो गया। कमालजी बड़े प्रसन्न हुये। वे दौड़े–दौड़े कबीर जी के पास गये और बोले–'पिताजी! पिताजी!! मैंने केवल दो बार राम–राम कहकर मृतक को जीवित कर दिया।

कबीरजी यह सुनकर बोले–अरे,अबोध बालक! एक मृतक को जीवित करने को तुझे दो बार राम का नाम लेना पड़ा? अच्छा,एक तुलसीदल ला। कमालजी एक तुलसीदल ले आये,

उस पर कबीदासजी ने केवल 'रा' लिखा। फिर एक लोटा जल में उसे छोड़ दिया और कहा–'जा इस जल को तू जितने मृतकों के ऊपर छोड़ेगा, वे सभी जीवित हो जायेंगे।' यह सुनकर कमालजी मणिकर्णिका घा पर गये, वहाँ सैकडों मृतक पड़े थे। सबपर उन्होंने छींटे दिये और सभी जीवित हो उठे।

इस कथा से यही सारांश निकला कि नाम तो एकही है। एक सद्गुण सदाचारी सुपात्र उसके महत्त्व को अधिक जानता है, उसकी श्रद्धा अधिक है। अत: उसका आधा नाम भी अत्यधिक प्रभावशील होगा। दूस जो उसके महत्त्व को कम जानते हैं,उनका कम प्रभाव पड़ेगा।

❁ अन्दर का चौकीदार ❁

''नाम पाहरू दिवस निसि, ध्यान तुम्हार कपाट।

लोचन निज–पद जंत्रित,प्रान जाहि केहि वाट।।''

एक धनीसेठ ने एक सन्त को अपने विशाल वैभव और महलों के बड़े–बड़े ठाठ दिखाये। सब कुछ देख चुकने के बाद साधुने पूछा–सेठ! यह सब तो ठीक है,परन्तु चौकीदार रखा है या नहीं? सेठ ने कहा–महाराज! चौकीदार न हो तो दिन–दहाड़े बदमाश लूटकर न ले जायें? इन सबकी सम्हाल के लिए बहुत से चौकीदार रक्खे हैं। सन्तने कहा – यह तो तुमने बाहर के माल की रक्षा के लिए बाहर से चौकीदार की बात कहीं। मैं तो तुम्हें भीतर के चौकीदार के सम्बन्ध में पूछ रहा हूँ। सेठ ने हाथ जोड़कर कहा महाराज आपकी गूढ़ बात मैं तो नहीं समझ सका। अन्दर के चौकीदार का क्या अर्थ? सन्तने कहा–सेठ!राम–नाम अन्दर का चौकीदार है। जैसे तुम्हारे घर में अनेक अमूल्य वस्तुएँ भरी हैं, इसी प्रकार तुम्हारे अन्दर में उनसे भी बढ़कर अमूल्य वस्तुएँ भरी हैं। जैसे चौकीदार के बिना अपने घर की चीजें चोरी चली जाती हैं, इसी प्रकार अन्दर के चौकीदारके बिना अपने अन्दर रहनेवाली अनेक ऊँची–ऊँची चीजें चोरी चली जाती है। रामनाम के चौकीदार के बिना उत्तम नीति चोरी जाती है। इस चौकीदार के बिना जगत् के प्रपंच मे हृदय की शान्ति चली जाती है। भलमनासाई और भक्ति चली जाती है, दया, क्षमा और परोपकार आदि चले जाते हैं, और सा विवेक ज्ञान चला जाता है। परन्तु यदि रामनामरूपी चौकीदार अन्दर रक्खा जाता है, तो वे स बढ़ियाँ–बढ़ियाँ चीजें चोरी जाने से बच जाती हैं। ये सब दैवी–सम्पति की वस्तुएँ जीवन को सुधारने वाल हैं, जीवन में रस भरने वाली हैं,और अन्त में भगवद्धाम तक पहुँचाने वाली हैं। जैसे बाहर के महल व लौकिक वस्तुओं के चोरी न जाने के लिये तुमने कड़ा प्रबन्ध कर रखा है,इसी प्रकार तुम्हारा अन्त:करण जो अनन्तब्रह्मांडनायक के रहने का घर है, उस अलौकिक घर की वस्तुएँ चोरी न जायं, इसके लिये भी तुम प्रबंध करना चाहिये। इस बात को सुनकर सेठ उस सन्तके चरणों में गिर पड़ा, और उनके उपदेशानुसार जीव बिताकर चलता बना।

♈ तृप्ति तो राम–ही–नाम से ♈

(भगवन्नाम महिमा अंक,कल्याण पृ०४६३ से साभार उद्धृत)

राज्याभिषेक को बहुत समय हो चुका था। माता जानकी के मनमें वात्सल्य उमड़ा। उन्होंने एक दिन कहा–हनुमान्! कल तुम्हें मैं अपने हाथों से बनाकर भोजन कराऊँगी। भला,हनुमानजी के आनन्द का क्या पूछना! जगन्माता स्वयं भोजन बनाकर खिलायें,यह सौभाग्य किसे मिलता है? दूसरे दिन बड़े स्नेह से, बड़े उल्लास से, श्रीविदेहनन्दिनी ने नाना प्रकार के व्यंजन बनाये और हनुमानजी को सम्मुख आसन पर बैठाकर परसने लगीं। निखिलेश्वरी श्रीरामवल्लभा स्वयं अपने करों से परस रहीं थीं, और उनके परम स्नेह–भाजन लाड़ले पुत्र हनुमान् भोजनकर रहे थे। माता स्नेह से परोसे तो पुत्र को क्षुधा न लगी हो तो लग जाय। हनुमानजी ने भाव–विभोर होकर, भोजन प्रारम्भ किया। जो कुछ थाली में पड़ता, एकही बार में मुख में चला जाता। श्रीजानकीजी को चिन्ता होने लेगी। अयोध्या–सम्राट के रसोई–घर का व्यंजन समाप्त होने को आया और हनुमानका हाथ तो शिथिल हो ही नहीं रहा था। अन्तमें जनकनन्दिनी ने लषणलाल को बुलवाया और अपनी कठिनाई बतायी। श्रीसौमित्र बोले– ये रूद्रके अवतार हैं। इनको भला, इस प्रकार कैसे तृप्ति कौन दे सकता है?

लक्ष्मणजीने एक तुलसी दल पर 'राम' चन्दन से लिखकर, हनुमानजी के सामने भोजन–पात्र में डाल दिया। वह तुलसीदल मुख में जाते ही हनुमानजी ने तृप्ति की डकार ली और पात्र में बचे अन्न को पूरे शरीर में उन्होंने मल लिया और हर्षावेश में नृत्य करते हुये'रामनाम'का कीर्त्तन करने लगे।

❄ श्रीरामनाम की दुर्लभता ❄

पूज्यपाद श्रीबड़े महाराज स्वरचित श्रीरामनाम परत्व पदावली में लिखते हैं कि श्रीरामनामजप में तत्पर होनेवाले सज्जन विरले कोई होते हैं, क्योंकि नामजप बड़ाही कठिन काम है। आप जल के भीतर रहने की योगशक्ति श्रीभागवत कथित सौभरि ऋषि के समान प्राप्त करलें, और उतराने के भय से गलेमें जलपूर्ण गागर बाँधकर जल में डूबे रहें, यह नामजप की कठिनाई के आगे सुलभ हैं। पुन: आप योगसिद्धि के बलसे सैकड़ो योजन ऊंचे सुमेरू पर्वत के उच्च शिखर पर चढ़ जायं, और वहाँ से बारबार भूमि पर कूदा करें और चूर–चूर होकर मरने से बच भी जायं, ऐसी शक्ति प्राप्त करना भी संभव है पर नाम निष्ठा प्राप्तकर लेना बड़ाही कठिन काम है। पुन: आप योग–बल से श्रीबालिजी के समान सातो समुद्र को क्षण भर में पारकर आ जाये यह भी श्री नामकठिनाई के आगे सुगम हैं। प्रलयकालीन प्रचंड पवन के झकोरे आप सह सकते हैं। वासनाओं का त्याग भी उनके आगे सुगम है, पर श्रीरामनामका दृढ़ ब्रत लेना बड़ा ही दुष्कर कार्य है। किसी बिरले भजन शूरमा से यह बनना सम्भव है।

''कठिन श्रीरामनाम को कहिवो। बरुगर गागर वांधि बूडिसर रहिवो।

चढ़ि सुमेर सत सहस कोस ते सुलभ बार बहुतिरवो।
सातो सिन्धु पलक में तिरवो, तिमि सब भूमिन फिरवो।
प्रबल पवन अति प्रलय कालको, सोउ धीरज धरि सहिवो।
इल्यादिंदक आचरन सुलभ सब समुझि वासना जहिवो।
(श्री) युगलानन्यशरन दुर्लभतम नाम सुदृढ़ब्रत गहिवो।

कहावत है कि———

''रामनाम सोई रटे,जो रटि आया होय।
वावन विघा छोड़ि के ,अनत न केसर होय।।''

कहते हैं कि केशर केवल कश्मीर में ही होता हैं और काश्मीर में भी सर्वत्र नहीं । वहाँ एक बाव विघेका चकला है, उसी में होता है। कहावत है कि एकबार जयपुर के कोई शौकीन नृपतिने अपने य कश्मीर का केशर उत्पन्न कुशल माली बुलाकर अपने यहाँ केशर का बाग लगाना चाहा। माली द्वारा प्रया हुआ पर लगा नहीं। पूछने पर माली ने बताया कि वहीं की मिट्टी पर केशर जमेगा। इसपर वहाँ की मिट मँगायी गई फिर भी केशर नहीं हुआ। माली के कहने पर वहीं का जल केशर सींचने के लिए आया, पि भी केशर नहीं हुआ। तब हार कर प्रयास छोड़ दिया। यही बात नाप जप की है। जपने में कई साधक तत भी होते हैं, तो चार दिनों के बाद 'टांय–टांय फिस !' कायर लोग नामजप संग्राम में टिक नहीं पाते ।

श्रीनृसिंह पुराण की बात है। देवर्षि नारदजी का सम्वाद श्रीयाज्ञवल्क्यजी के प्रति है। श्री देवर्षि कह हैं कि त्रिकालदर्शी महर्षियों ने अपनी सर्वज्ञता से जानकर यह निर्भ्रान्त सिद्धान्त स्थिर किया है कि जिस पूर्व जन्म के असंख्य उग्र पुण्यों का फल एक साथ उदित होता है जो उसी पुण्य प्रभाव से कोई श्रीरामन जप में तत्पर हो पाता है।

'' बहु जन्मोग्र पुण्यानां फलं नामानुकीर्त्तनम्।
सर्वेषां ब्रह्मर्षि मुख्यानां सम्मतं संशयं बिना।।''

श्री रहस्य नाटक का वचन है कि दुष्ट जनों के लिए परब्रह्म स्वरुप श्री रामनाम की आराधना दुष है, सुकर है केवल प्रेम सम्पन्न हृदय वाले बड़भागी श्रीनामानुरागी के लिये। उनके लिये सुलभ और सुसा है।

''रामनाम परब्रह्म दुराराध्यं दुरात्मनाम्।
साध्यं च सुलभं नित्यं प्रेम सम्पन्न मानसैः।

श्री प्रभास पुराण में श्री प्रभुका ही श्रीमुखवचन श्रीनारदजी के प्रति है जिस व्यक्ति के पाप क्षीण गये हैं,जो पुण्यपुञ्ज से युक्त है,वे ही श्रीरामनाम का ध्यान तथा जप कर सकते हैं । श्रीनारदजी, अन्यों लिये जो स्वप्न में भी होना कठिन है।

'नराणं क्षीणपापानां सर्वेणां सुकृतात्मनाम्।
इदमेव परं ध्येयं नान्यत्स्वप्नेपि नारद।।''

श्रीसनक सनातन संहिता में कहा गया है कि सभी शुभ साधनों का अन्तिम फल यही है कि निरालस्य जिह्वा से निरन्तर नाम जप होने लगे।

सर्वेषां साधनानां वै परिपाकमिदं मुने।
यज्जिह्वाग्रे परं नाम जपेन्नित्यमतन्द्रितम्।।'

श्रीतन्त्रसार में कहा गया है कि सभी मन्त्रों से श्रेष्ठतममंत्र श्रीरामनाम है। इनका जप साधारण जीव समुदाय के लिए दुर्लभ है। पापियों के मुख से श्रीनामोच्चारण कैसे होंगे? पुण्यपुञ्ज उदय हो, तो नाम निष्ठा जगे।

'दुर्लभं सर्व जीवानामिमं मन्त्रेश्वरेश्वर।
कथं भजन्ति पापिष्ठाः सुकृतौघं विना प्रिये।।''

जानकी जीवन नाम सनेही सही सत कोटिन माँझ में एहै
कौन कहौ तिनकी महिमा सब भाँति बड़ी अनुरागिन टेक है।।
आप परेश भये बस जासुके भूलि परत्व सुप्रेम से छके है।
(श्री) युग्म अनन्य सोई धनि धन्य जो नामके साँचे सुसेवक नेक है।।२००१

तुलसी कहत सुनत सब समुझत कोय। बड़े भाग अनुराग राम सन होय।।

नाम रटन तेहि नहि रुचै, जेहि उर पाप निवास।
प्रेमलता जिमि ज्वर अछत, अमी असनहू धास।।
एकहि एक सिखावत जपत न आप। तुलसी राम प्रेम कर बाधक पाप।।
मरत कहत सब सब कहै सुमिरहु राम। तुलसी अब नहि जपत समुझि परिनाम।

श्रीवरवैरामायण उत्तरकाण्ड।

श्री आदि रामायण में कहा गया है श्रीरामनाम में श्रद्धा होना बड़ा ही कठिन काम है। करोड़ों जन्म के असंख्य पुण्यपुञ्ज एकसाथ जुटकर अपना फल प्रगट करें, तब कहीं जाकर श्रीरामनाम में रति होती है।

'असंख्यैः पुण्यनिचयैः कोटि जन्मार्जितैरपि।
पञ्चाङ्गोपासनाभिश्च रामनाम्नि रतिर्भवेत्।।'

साम्वर्तक स्मृति में कहा गया कि यदि कोई सज्जन असंख्य जन्मों के सुकृतों से संयुक्त हो, तो उसी को परमोत्तम मंत्रस्वरूप श्रीरामनाम में रति उत्पन्न होती है।

' असंख्य जन्म सुकृतैर्युक्तो यदि भवेज्जनः।
तथाश्रीराम सन्मन्त्रे रति स्संजायते नृणाम्।।'

लाखन में कोउ एक नामरत होइ है नरवर बड़भागी।
रटहि निरन्तर सकल सोच तजि धरि अनन्यव्रत अनुरागी।।
अरुझे अपर विविध कर्मनि महँ जरते सदा त्रिविध आगी।
प्रेमलता सिख सुनहि न सुन्दर धावत फिरहि उदर लागी।।

— श्रीहितोपदेश शतक।

शास्त्रों में नाममहिमा के इतने अधिक प्रसंग हैं कि उनकी गणना करना भी बड़ा कठिन कार्य है। इतन होते हुए भी जगत् के सब लोग नाम पर विश्वास क्यों नहीं करते? नामका साधन तो कठिन नहीं प्रतीत होता पूजा, होम, यज्ञ आदि में जितना अधिक प्रयास और सामग्रियों का संग्रह करना पड़ता है। इसमें वह सब कुछ नहीं करना पड़ता। तो भी सब लोग नामपरायण क्यों नहीं होते?

इसका उत्तर यह है कि नामपरायण होना जितना मुख से सहज कहा जाता है, वास्तव में उतन सहज नहीं है। बड़े पुण्यबल से नाम में रुचि होती है, शास्त्र पढ़ना, उपदेश देना, बड़े—बड़े शास्त्रार्थ करन सहज है, परन्तु निश्चित मन से विश्वासपूर्वक भगवान् का नाम लेना बड़ा कठिन है।

कुछ लोग तो इसकी ओर ध्यान हीं नहीं देते, जो कुछ ध्यान देते हैं, उन्हें इसका सुकरत्व (सहजपन देखकर अश्रद्धा हो जाती है, वे समझते हैं कि जब बड़े—बड़े यज्ञ—तप दानादि सत्कर्मों से पापवासना क नाश होकर मनकी वृत्तियाँ शुद्ध और सात्विक नहीं बनतीं, तब केवल शब्दोच्चारण मात्र से क्या हो सकत है? वे लोग इसे मामूली शब्द समझकर छोड़ देते हैं। कुछ लोग पंडिताई के अभिमान से, शास्त्रों के बाह्य अवलोकन से केवल बाग—वितण्डार्थ शास्त्रपटु होकर नाम का आदर नहीं करते! पाश्चात्य— शिक्षा— प्राप्त पुरुष तो प्राय: आधुनिक पाश्चात्यसभ्यता की माया— मरीचिका में पड़कर ऐसी बातों को केवल गपोड़ा ही समझते हैं, कुछ सुधारका दम भरने वाले (संसार का सुधार हमारे बल पर होगा, ईश्वर वस्तु है ही क्या उसकी आवश्यकता तो घरवाररहित संन्यासियों को है, हमें उससे क्या मतलब? सत्कर्म करेंगे, अच्छाफल आपही आप होगा, ऐसी भावना से) नाम का तिरस्कार करते हैं।

बंचक विवेक बल वस्तु वित्त हीन दीन,
छीन लीन बिष पीन नाम गुन जानते।
यन्त्र मन्त्र तोटकाटि साधन समूह रचि,
पचि अज्ञ जीव कृतकृत्यता प्रमानते।।
मृग भ्रम नीर माँझ मगन हमेश होय,
विविध विकार ताते करतब छानते।
युगल अनन्य सर्वेश्वर प्रधान नाम,
अगुन अनाम गुनधाम न पछानते।।

कुछ ज्ञानाभिमानी लोग ज्ञान के अभिमान में हरिनाम को गौण समझकर या मन्द— साधन समझक त्याग देते हैं। जनता अधिकतर संसार में बड़े लोग कहलाने वाले के पीछे ही चला करती है। यही सब कार है कि सब लोग रामनाम—परायण नहीं होते।

रामनाम का सौदा सच्चा धोखे का है काम नहीं।
सस्ता चोखा यद्यपि जाहिर लेते इसको आम नहीं।
परखैया कोउ सन्त सनेही तजते आठो याम नहीं।
प्रेमलता मूरख किमि पावै शरघा रूपी दाम नहीं।

नाम—जापक में श्रीनामजप की उमङ्ग तथा आवेश ऐसा चढ़ना चाहिये, जैसे श्रावण की प्रबल—बेगवती सरिता की अविराम धारा हो। सरिता के दोनों तट उस समय हरे—हरे बड़े शोभायमान प्रतीत होते हैं, उसी भाँति नाम रटन जन्य हृदय में खुशीयाली से जापक संशोभित रहते हैं। श्रीनामका प्रभाव देख—देखकर जापक अपने—पराये की सुधिबुधि भूलकर निर्भय बन जाते हैं। प्रियतमपुर की गैल—लखाने वाले ऐसे नाम के अनुरागी लाखों—करोड़ों में कोई विरले हाते हैं।

'सावन सरित भरित सोभा भल हरित हिय हरसायत।
याही भाँति उमंग नाम नव रंग चढ़े चित चायत।।
भूले भीति नीति निज—पर—मति सहित सराह मरायत।
युगलानन्यशरन पदुमन में कोउ महरमी विलायत।।' श्रीनाम — कान्ति।

& प्रार्थना सुलभ नाम &

सच्चे सत्संगसे श्रीनामजपहीको कलिकाल में उबारने वाले एकमात्र अचूक साधन तो जान लिया, किन्तु नाम रटने की इच्छा रहते हुए भी हमसे नाम जपते बनता नहीं। चलो वहाँ देखो, वहाँ सुनो, इस प्रकार के मन—बहलाऊ काम तो कालक्षेप के लिए हो जाता है, किन्तु नापजपवाले ठोस साधन में न जाने मन क्यों नहीं लगता है? बात स्पष्ट है, पूर्वजन्मार्जित पाप—पुञ्ज की प्रबलता नाम रटने में बाधा पहुँचा रही है।

एकहि एक सिखावत जपत न आप।
तुलसी नाम प्रेम कर बाधक पाप।।

तब क्या करें? निराश होकर छोड़ दें? नहीं जी, असम्भव से भी असम्भव कार्य भगवत्प्रार्थना से सुकर हो जाता है। प्रार्थना में आश्चर्यजनक शक्ति है। हम प्रभु से नाम—प्रेम प्रार्थना पूर्वक माँगें। हमे परमोत्तम भागवत श्री धर्मराज जी से नाम—प्रेम माँगने की प्रार्थना सीखनी चाहिये। ब्रह्माण्ड— पुराण में उस प्रार्थना का स्वरूप कहा गया है।

'जयस्व रघुनन्दन रामचन्द्र प्रपन्न—दीनार्ति हराखिलेश।
वाञ्छामहे नाम निरामयं सदा, प्रदेहि भगवन् कृपया कृपालो।'

अर्थात् शरणागतों की समस्त आरति को हरण करने वाले अखिल सर्वेश्वर श्रीरघुनन्दन रामचन्द्रजू की जय हो। प्रभो! हम आपके निरामय नाम को जपना चाहते हैं। हे कृपालो! कृपापूर्वक अपने नाम में लगन मुझे दीजिये।

उसी प्रकार सिद्धान्त रहस्य—नामक आर्षग्रन्थ में देवर्षि श्रीनारदजी की प्रार्थना वाणी उल्लिखित है।

'श्रीराम—राम रघुवंश कुलावतंस त्वन्नाम कीर्त्तनपरा भवतीवाणी।

नान्यं वरं रघुपते भ्रमतोऽपि याचे सत्यं वदामि रघुवीर दयानिधेऽह

अर्थात् हे श्रीरघुकुल—भूषण श्रीरामराघवजू! हमारी वाणी आपके नामकीर्तन—परायण हो जाय। हे दयानिधान रघुवीरजी, मैं सत्य कहता हूँ, यही एकमात्र आपसे वरदान याचना है। अन्य वर मैं भ्रमवश भी नहीं माँगता। इसी प्रकार ब्रह्माण्ड—पुराण ही में श्रीनाम—सरकार से ही प्रार्थना मिलती है।

'सुखप्रदं रामपदं मनोहरं युगाक्षरं भीतिहरं शिवाकरम्।

यशस्करं धर्मकरं गुणाकरं वचोवरं में हृदयेस्तु सादरम्।।'

अर्थात् श्रीरामनामात्मक—युगलवरण सुख देने वाले, भय—निवारक, कल्याण की खान, जापक के सुयश बढ़ाने वाले, धर्म संचय करानेवाले, सकल सद्गुणों की खान है। ऐसे शब्द— शिरोमणि नाम कृपया हमारे हृदय में आकर बसें। श्रीनाम का सादर आवाहन करता हूँ।

श्रीगोस्वामिपाद ने अपने सुललित काव्यों में अनेक ठौर पर श्रीनाम वरदान की याचना की है। यथा—श्रीविनय २५५। ४ में कहा है—

नाम सों निवाहु नेहु, दीन को दयालु देहु।

दास तुलसी को बलि बड़ो बरु है।।

श्रीबरवै—रामायण में कहा है—

राम भरोस नामबल नाम सनेहु। जनम—जनम रघुनन्दन तुलसिहि देहु।।

जनम—जनम जहँ तहँ तन तुलसिहि देहु। तहँ तहँ राम निवाहिब नाम सनेहु

श्रीदोहावली में कहा है कि माँगने पर आपने श्रीविभीषणजी को लंका दी, कपिराज श्रीसुग्रीवजी को किष्किन्धा को राज्य दिया। श्रीहनुमतलाल जी को स्वामीरूप से प्राप्त हुये। गीधराज जटायु को गोदमें बैठाकर मौत दी, मैं सबसे नीच हूँ। मुझे तो आप अपने नाम के प्रति अनुराग ही दे दीजिए।

लंक विभीषन राज कपि, पति मारुति खग मीच।

लही राम सो नाम रति, चाहत तुलसी नीच।।

श्रीसीतारामनाम सनेह वाटिका में श्रीबड़े महाराज ने श्रीनाम—सरकार के प्रति रुचि जगाने की रीति बतायी है। नामानुरागी सन्तसे नाम प्रतिपादक मनोहर वाणी शौक समेत सुनें और सानन्द हृदय में धारण करें। क्योंकि—

सन्त सोई जिनके सदा, सुमिरन नाम रसाल।

पलक पड़े पावे नहीं, बिछुरत हाल बिहाल।। श्रीसन्त विनय शतक।

सच्चीरीति तो नामजप ही है और साधन कलिकाल में झूठे हैं। अतः झूठ छोड़कर नेमपूर्वक सत्य नामजप को हृदयमें जगावें। नामरहस्य मर्मज्ञ सन्त के बिना नामरहस्य अन्य करोड़ों उपाय से भी मिलना दुर्लभ है। ऐसे सन्त की वाणी सुनकर श्रीजानकीकान्तजू से नाम सनेह सम्बन्ध माँगना चाहिये।

सन्त सोहावन वाक् मनोहर शौक समेत सुनो मृद पाई।
साँची सुरीति सनेम हृदय दृढ़ धारना धारिये झूठ बिहाई।।
बाकीफकार मिले बिनु भेदको पाय सके नहि कोटि उपाई।
(श्री) युग्मअनन्य सियावर सो नित याँचिये नामसनेह सगाई।। १७८१

और दूसरा उपाय है सन्त– गुरु से नाम– प्रेम माँगना।

श्रीगुरुदेव दयाल दया दृग देखिहै मोहि कहूँ यहि भाँति।
आठहु याम सुनाम पियूष को पान करै मन माँझ सशांति।।
भूलिहैं भाव भदेश कुदेशहु हूलियै हाय न हीय बिजाती।
(श्री) युग्मअनन्य सुफूलिहै कामिल कंज कलंक बिहीन सकांती।।३

श्री आदि–रामायण में कहा गया है कि जब तक श्री नामानुरागी रामभ॰ के सतत पाँव नहीं पलोटोगे, तब तक परात्पर नाम श्रीसीताराम में प्रीति होगी कैसे?

'यावन्न रामभक्तानां सततं पाद सेवनम्।
राम नाम्निपरं तावत् प्रीतिस्संजायते कथम्।।'

श्री बड़े महाराज ने स्वरचित सन्त–विनय शतक में सन्तों से नाम–प्रेम ही माँगा है। हम यहाँ उसमें से कतिपय दोहे वानगी रूप में नीचे उद्धृत करते हैं।

श्रीसतगुरु सिरताज पद, बन्दौ बारहि बार।
दीजे युगल अनन्य को, नाम नेह निज सार।।१।।
श्रीसिय श्रीरघुवीर के, प्रान पियारे वीर।
श्रीहनुमन्त दयाल ह्वै, दीजे नाम गम्भीर।।२।।
श्रीमुनिराज अगस्त जू, अति कृपाल गुन ऐन।
अगुनि समुझि मोहि दीजिये, नाम रमन दिन रैन।।३।।
श्रीनारद तारद विसद, सियपिय अस दातार।
युगलानन्य अजान को, दीजै नाम अधार।।४।।
वन्दौं सनकादिक चरन, हरन अमंगल मूल।
दीन खीन लखि दीजिये, नाम प्रेम अनुकूल।।५।।
श्रीमुनि सुभ लच्छन सहित, सरस सुतीछन पाय।
वंदि सदा जाँचौ इहै, नाम सनेह सुभाय।।६।।

श्रीवसिष्ठ महाराज गुरु,सुषद नमो सत बार।
दीजै दीनदयाल मोहि, नाम रटन एक तार।।७।।

इसी प्रकार भक्तमाल प्रसिद्ध सभी सन्तों से विनय—पूर्वक नामानुराग माँगा गया है। ग्रन्थ विस्तार—भय से हम पूरा ग्रन्थ यहाँ नहीं उतार रहे हैं। श्रीनामानुराग जगाने की एक और युक्ति श्रीपद्म—पुराग में भगवान् शंकर ने बतायी है— वह यह कि अन्य स्तम्भ में बताये गये संयम सदा बरतना चाहिये। संयम से श्री चिन्मय सीतारामनाम में अधिक प्रीति बढ़ती है।

'संयमं सर्वदा धार्य्य नैव त्याज्यं कदाचन।
संयमान्नाम चिन्मात्रे प्रीति स्संजायतेऽधिका।'

भूलै ना भुखाने अपमाने राम रावरे कौं
अतिशै अघाने सनमानै प्रान भूलै ना।
फूलै ना कुवेली आस वाम मास मेली बास
फैले ना फलै ना दुख काम फल झूलै ना।।
झूलै ना झकोर हानि— लाभ के हिंडोर जीव
मोह की अतीव घोर जीति हारि हूलै ना।
हूलै ना हरामी हीय माँगौ सीय—पिय दीजै
रामनाम 'रसराम' बसु जाम भूलै ना।।
छूटै ना सुबास तीर नीर सरयू को पान
आन खान—पान विषै वसुजाम जूटै ना।
लूटै ना लवारी लोभ लालची प्रपंची रिपू
प्रेमिन सों प्रेम 'रसराम' राम टूटै ना।
टूटै ना सुताग अनुराग वरदान माँगौं
देह प्रान छूटै रट रामनाम छूटै ना।
नाम की सुननि दीजै नाम की गुननि दीजै
नाम की कहनि दीजै गहनि सुनाम की।
नाम की रहनि दीजै नाम की चहनि दीजै
नाम की लहनि दीजै छिति नाम धाम की।।
नाम की रटनि दीजै नाम की सटनि दीजै
प्रेम उघटनि दीजै रोम रोम ग्राम की।

दीजै सीताराम वर माँगै 'रसरंगमनी'
नख–सिख सुमिरनि नाम अभिराम की।।
जस देह दियो निज गेह दियो सरजु पुर सन्तन में वसना।
तस दीनदयाल सखा 'रसराम' निकाम अकाम करो कस ना।
सपने महँ चाटत वाम कुचाम बसो मन मीत करै अस ना।
वसुजाम सुजोस जगी उमगी अनुराग सों नाम रटै रसना।
नामहि की रट दीजिये राम मिटै मन काम डटै अनचाहिये।
नामहि सो नित योग औ क्षेम बढ़ै अति प्रेम पयोधि अथाहिये।।
नाम सो आस विश्वास 'मनी रस रंगहि' दै उर मोद उमाहिये।।
कै निज रूपमयी मति मोरि सदा निज नाम सो नेह निवाहिये।।
नाम सप्रेम जपों मुख सो सुखसो मन तासु स्वरूप बिसेखौं।
कानन सो बहिरो बनि बाहेर अंतर नाम सुनाद परेखौं।।
होहि विमोहमयी दृग दूरि चराचर पूरि तुम्हैं प्रभु देखौं।
रोमहिं रोम रमे सियराम 'मनीरसराम' स्वदेह में देखौं।।
रामहि को दास मैंहौ रामही की आस मोहि
राम दुखनास मम वास खास धाम हौं।
रामही की पूजा मेरे राम बिना दूजा नाहि
सीताराम शरण रहौं मैं आठौ जाम हौं।।
रामहि को ध्यान मेरे रामहि को ज्ञान 'रस–
रङ्ग' सखय अभिमान राम को गुलाम हौं।
रामपद ठाम मेरे रामही को काम मेरे
मांगौं सीतारामही सो रट राम राम हौं।।

श्री मिथिलाजी के नामजापक शिरोमणिपरमहंस श्रीप्रेमलताजी महाराज प्रभु से प्रार्थना करते हैं–

मन क्रम बचन विकार तजि, रटौ नाम सियराम।
अस वर दीजे स्वामि मम, प्रभु परिपूरन–काम।।
मन वच क्रम मोर अपराधा। क्षमा करहु प्रभु कृपा अगाधा।
बार बार पद वन्दौं स्वामी। द्रवो दीन पर लखि अनुगामी।
सीतारामनाम असनेहू। नाथ कृपा करि यह वर देहू।।
जन्म जन्म बाढ़ै दिन दूना। काल–कर्म बश होइ न ऊना।।
कवनिउँ योनि जन्म तहँ होई। नाम सनेह बढ़ै प्रभु सोई।
नाम रटनि छूटै नहि कबहूँ। कोटि विघ्न व्यापै जो तबहूँ।।
सीताराम रटौं नित स्वामी। यह वर देउ जानि अनुगामी।।

सीताराम सुनाम रट, सुख–सागर गुणधाम।
'प्रेमलता' कहँ देउ प्रभु, सतगुरु पूरण काम।।
बार बार चरननि सिर नावौं। सीताराम रटनि वर पावौं।।
नित नव बढ़ैं नाम सन नेहू। कृपासिन्धु गुरू यह वर देहू।।
नाम रटे तें रीझहि नामी। नाम–रटनि दृढ़ दीजे स्वामी।।
नित नूजन नामामृत पीवों। मन वच कर्म आन नहिं छीवों।।
विषयभोग लखि रोग सम, साधन सुगति विहाइ।
प्रेमलता चाहै सदा, नाम रटनि अधिकाइ।।
संयम अरू दम नेम तितीक्षा भोगों से उपराम रहै।
शरधा वर विश्वास धारणा ध्यान सुदम्पति नाम रहै।।
भजन भावना युक्त हमेशे रहव सुमिथिला धाम रहै।
प्रेमलता पुनि–पुनि वर माँगै रटना सीताराम रहै।।
राजिव–लोचन राम–सुनाम की मैं बलि जाउँ हमेश हजारन।
जिनकी करुना तिल लेशहुँ पाय के मोद–प्रमोद चढ़यों चित वारन।।
भूल गई विष वासना वृन्द विलन्द अमन्द उमङ्ग अपारन।
युग्म अनन्य गह्यो मनमोहन पाहन कौन बटोरे अकारन।।
परम अगम जाहि बदत पुरान वेद
पायो सो अखोद सियवर धनु–धारियाँ
अगुन सगुन ब्रह्म दोउन के कारन सु
तारन अगाध भव–सागर अपारियाँ।।
राम ऐसो नाम जाको रमन सकल माहि
एकही अनादि नर रूप सब नारियाँ।
प्रेमलता नाम रटि प्रगट सो लखो राम
नाम महाराज की मैं जाउँ वलिहारियाँ।।
त्रिगुनमयी सब सृष्टि दृष्टि भीतर की खोलि निहारो।
सीता राम नाम गुन लीला धाम भिन्न निरधारो।।
इष्ट मिष्ट अखिलेष्ट प्रदायक नाम निरंकुश धारो।
युगलानन्यशरण नामहि पर सकल सम्पदा वारो।।
लोक शोक ओक कुल कतल करन हित जातवेग बीच वोध विरति विचारिये।
पारस परम पनपोषन प्रधान पक्ष स्वच्छता सदन श्रम शोषन निहारिये।
जाहिर जहान वेद विमल वयान मान मधुर महान रसखान धीर धारिये।
युगलअनन्य शरनेश सब देश परमेश अवधेश नाम पर आप वारिये।।

❀ साधक खंड ❀

✡ उत्तम नाम जापकों के लक्षण और रहनि ✡

❀ ❀

✓ नाम—जापकों की प्रीति—रीति ऐसा अगम अथाह है कि योगी भी उसे नहीं समझ पाते क्योंकि ज्ञान तथा योग मार्ग वालों के हृदय में अहं ब्रह्यास्मि की दुर्निवार अभिमान—दाह उनके विमल विवेक को दबाये रहती है। तब बेचारे भव—प्रवाह में बहे जाते हुए विषय—भोगी क्या समझेंगे? और साधनों में रचने—पचने वालों को तो पेट भरने की ही चिन्ता ब्याकुल किये रहती है। श्रीनाम महाराज का परत्व— सिन्धु अपरम्पार है। उसी भाँति श्रीनाम अपने जापक को बना देते हैं। स्वयं श्रीनाम—सरकार ही अपनी करुणा से जना दें, तो पता लगता है।

नामिन की रीति प्रीति अगम अथाह है।
जाने नहि योगी रोगी भोगी भववाह बहे
ज्ञानी ध्यानी हीय रहे अहंकार दाह है।
और जेते साधन करन वाले जीव तेते
पेट के भरन अर्थ रचे चित्त चाह है।।
पारावार अमित परत्व नाम महाराज
विधि हरि हर हू को अधिक अथाह है।
(श्री) युगल अनन्य करुना ही ते लखाय परे
नामिन की रीति प्रीति अगम अथाह है।। ९०२।।

✓ नाम—जापक सन्त सिरताज होते हैं। वे भजन—शूर होते हैं। उनके मुख में नाम क्या हैं, मानो स्वामी की प्रभा ही वहाँ प्रगट है। मन में उमंग भरी है। नामानन्द के प्रभाव से मायाकृत मद, मोह, अभिमान, मोह—ममता आदिक मन के मैलों को परास्त किये रहते हैं। काम का मुख—भंजन करके दिन—रात सुख—शान्ति पूर्वक नामाभ्यास करते हुए त्रिगुणमयी माया की शृंगार को तोड़े रहते हैं। उनके मुख से नामोच्चारण उसी भाँति होता है, जैसे निषंग से वाणों की झड़ी लग जाय।

सन्त सिरताज सूर साहिब सुजान नूर
बदन विराजमान मानस उमङ्ग से।
माया मद मोह मान ममता मलीन मन
जीते रन मध्य अनयास नाम रंग से।।

रैन ऐन चैन चित्त मैन मुख मोड़ि तोड़ि
त्रिगुन तमाम तार प्रीति के प्रसंग में।
(श्री) युगल अनन्य रटे नाम अभिराम जस
चलत चलाक तीर तरल निषंग से।। ९१२।।

✓नाम—स्नेही को क्लेश कभी नहीं व्यापता। मोह से उत्पन्न विषय—वासना को त्यागे, सदा सतर्क रहते हैं कि कहीं आ न घुसे। नाम—जापक सन्त से तो उत्पात करने वाली माया डर के मारे स्वयं थरथर काँपती है। यह दशा नाम बिमुखियों को कैसे मुयस्सर हो? उन्हें तो मोहरूपी सुरा—पान करने वाला निन्दनीय मानना चाहिए।

नाम सनेह सज्यों जेहि अन्तर ताहि न होत कलेश कदापी।
आठहुँ याम रहे हुशियार विहाय विषय विष मोह मिलापी।।
सन्त सुजापक से पल ही पल माया महा उत्पातिनी काँपी।
युग्म अनन्य सुनाम रटे बिन है अति निंद्य मलीन सुरापी।। १३५०।।

✓नाम—जापकों का अथाह रहस्य सामान्य जीव क्या समझेंगे? उनकी जीभ से नामोच्चारण क्या होता है मानो प्रियतम श्रीराघवलालजू की प्रीति का सुधासार टपकता हो। नाम—जापकों के अनुभूत दिव्यानन्द का बखान करते, वेद की वाणी नेति कहकर मुग्ध हो जाती है। इससे आगे क्या पराकाष्ठा रह गई? शूरवीर को युद्ध में भिड़ते समय जो हर्षोत्साह होता है, उसे नामर्द क्या समझेंगे? उसी भाँति नाम विमुख नाम—जापक शूरों की उमङ्ग को क्या समझेगा? इसे नाम—जापक विवेकी ही जान पायेंगे, अपर जीव नहीं।

नामिन की रहस अथाह जाने जीव का?
पल पल बीच माने मोद मकरन्द सुख
स्रवत विचित्र सुधासार प्रीति पीव का।
वानी वेद नेति नित निजानन्द नामी जन
कहत हमेश आगे रहयो पुनि सींव का।।
शूरन को रन में भिरत जौन हर्ष होत
तौन तीन कालहूँ में पावत हैं क्लीव का
(श्री) युगल अनन्य बूझे विमल विवेकी सन्त
नामिन की रहस अथाह जाने जीव का।। १३६१।।

✓ नाम—जापक की प्रमोन्मत्त दशा देखकर कोई तो इन्हें पागल समझता है। कोई इनकी विरह दशा को देखकर, इन्हें घायल मानता है। कोई इन्हें उमङ्गी उतावला मानता है। कोई ठग चोर कहता है, कोई धनवान् साहूकार का चोर मानता है। कोई पहचानने वाला लखता है कि ये तो अपने प्रियतम मुखचन्द्र के चकोर हैं? कोई इन्हें अज्ञानी, कोई ब्रह्मज्ञानी, कोई सर्वज्ञ, कोई कुजाति कोई कुलीन जानता है। किन्तु नाम—जापकों को असली स्नेह स्थिति को कोई विरले ही परख पाते हैं।

नाम नेह वानन की गति ऐसी जानवी।
कोऊ कहै बावरो, बखानै घावरो सो कोऊ
तावरो उतावरो बतावै मन मानवी।
कोउ ठग, चोर साहुकार धन जोर बदै
कोऊ मुखचन्द को चकोर पहिचानवी।।
कोउ कहे अज्ञ कोऊ तज्ञ सर्वज्ञ कोई
कहत कुजाति जाति उत्तम प्रमानवी।
श्री युगल अनन्य कोउ लखि न सकत तिन्हें
नाम नेह वानन की गति ऐसी जानवी।। १९७५।।

परमहंस श्रीसियालालशरण उपनाम श्रीप्रेमलताजी अपनी रहनि स्वयं कहते हैं। उन्हीं की विमल वाणी में नाम—जापकों की रहनि पढ़िये:—

आशक हैं सियराम नाम के सहर जनकपुर रहते हैं।
अकड़े रहें सदा सियवर बल, तीनि ताप नहि दहते हैं।।
रखते नहिं परवाह किसी की जगते कछू न चहते हैं।
सियलालशरन मस्तान हुये नहिं चाल दूसरी गहते हैं।।
मतलब सीताराम नाम से दुनियाँ से क्या करना है।
धर्ममूल सर्वोपरि सुखनिधि नाम सन्त श्रुति वरना है।।
सर्व दुराग्रह त्यागि दिवस निशि केवल सोई रटना है।
सियलालशरण गुरुदेव कृपाते भवनिधि पार उतरना है।।

श्रीजगन्नाथपुरी में महाप्रभु श्रीगोराङ्गदेव के पास प्रतिवर्ष बंगाल से अनेक भक्तजन आया करते थे। भक्तों ने श्री महाप्रभुजी से पूछा कि वैष्णव के क्या लक्षण हैं? प्रभु बोले— अष्ट प्रहर में जिसके मुख से एक बार भी भगवन्नाम सुनो, उसे वैष्णव जानो! दूसरे वर्ष भक्तजनों ने फिर वही प्रश्न किया कि— "वैष्णवके क्या लक्षण हैं? प्रभुने कहा— "जो आठो प्रहर निरन्तर तैल धारावत् श्रीभगवन्नाम जपे, उसे वैष्णव जानो।" तीसरे वर्ष भक्तों ने फिर वही प्रश्न किया—तब प्रभुने उत्तर दिया— कि "जिसके दर्शनमात्र से भगवन्नामका स्फुरण हो, उसे ही वैष्णव जानो।"

श्रीसियराम उपासक साँचे ते न किसी से डरते हैं।
रटै रटावहिं नाम याम वसु निज प्रभु धाम विचरते हैं।।
रँगे रहत सियराम रूप रंग चरण कुपंथ न धरते हैं।
प्रेमलता तजि आस त्रास सब महामोद मन भरते हैं।।

घोषहि नाम अनन्य भाव धरि बिलग बैठि वसुयामा है।
भूख–प्यास सहि रहि प्रमुदित नित निवसहि इष्ट सुधामा है।।
जगतें रहै उदास आस तजि रटहिं नाम 'निष्कामा है।
प्रेमलता अनयास जीविका पास न राखत दामा है।।
टोरि जगत सम्बन्ध शोकप्रद रसना नाम सुहावत है।
बैरिउ करत बड़ाई तिन्हिकी सबही के उर भावत है।।
नाम प्रसाद पाय प्रमुदित मन प्रेम पयोधि समावत है।।
प्रेमलता आसक मस्ताने निशिदिन मौज उड़ावत है।
असल उपासक आशक खासे सोइ जो नाम उचरते हैं।
त्यागि सकल परपंच जगत का गुरु–मूरति उर धरते हैं।।
थोड़े महै निर्वाह देह कर जेनकेन विधि करते हैं।
प्रेमलता अति अभय नामबल कालहु ते नहिं डरते हैं।।
वरषै नाम झमाझम मुख से हरषहि उर अति खुशियाली।
सर्वोपरि लखि नाम इष्ट निज भई बुद्धि वर मतवाली।।
श्री सियराम रटन बिनु जिन्हका रहत कभूँ नहि मुख खाली।
प्रेमलता सोइ परमहंस जग पीवत नाम सुधा प्याली।।
ठटा फकीर ठाठ सुउत्तम गुरु सन भावत जी का है।
निज पर रूप बोध विधि नीके नाश्यो संशय ही का है।
मुदित रहहि हर हाल सदा शुचि जग सुख लागत फीका है।।
रटहिं नाम सियराम सुखद जो शोषक मोह नदी का है।
परमारथी प्रपंच वियोगी मितभोगी दिन कटते हैं।
हटते जायँ विषय ते दिन प्रभु पदपंकज सटते हैं।।
भजन भावना पुष्ट रहैं अति बिलग सदा खटपट ते हैं।
प्रेमलता आशक सियवर के रटहिं नाम जे भट ते हैं।।
प्रीति न अधिक विरोध किसी ते जीते प्रभु पद भजते हैं।
हरषहि सुनि सुप्रशंसा परकी निज गुन सुनि गुनि लजते हैं।।
भजन प्रताप प्रभाव बढ़यो पै बने रहहिं लघु रजते हैं।
सेवत जिनके चरण सुश्रम बिनु उर गुन विमल उपजते हैं।।
रेक टेक दृढ़ वेष विरक्ती धारि नहीं फिरि तजते हैं।
गुरु निदेश धरि शीश ईशपद प्रीति सुनित नव सजते हैं।।
रटहिं खूब सियराम ऊब बिन सन्त समाज सुछजते हैं।
प्रेमलता तजि त्रिभुवन संपति दंपति गुनगन जजते हैं।।

तन दिशि ताकहिं तनक न प्रभुहित इन्द्रि आदि मन कस्ते हैं।
परम उपायशून्य शरणागत लिये रहहि अलमस्ते हैं।।
पिंजर भयों शरीर सूखि पै मुख सुप्रसन्न विलस्ते है।
प्रेमलता सियारामनाम रत संतत चलहि सुरस्ते हैं।।
काहुइ तें नहि कछू प्रयोजन सदा इकंत निवस्ते हैं।
नाम प्रताप कुटिल कामादिक गये निकसि नस–नसते है।।
कसी कठिन कटि कन्त मिलन हित भूलि न भोगनि फँसते हैं।
प्रेमलता तजि लोग सगाई प्रभुपथ चढ़े न सखते हैं।।
माँगि के खात इकंत रहैं मुख नाम रटैं नहि दूसर वैना।
कोमलगात कठोर कियो प्रन दम्पति रंग रंगे दोउ नैना।।
शीश पै टोप गले गुदरी कल चिंतहिं चारु चरित्र सुखैना।
प्रेमलता सुप्रसन्न अटै महि काहुते है कुछ लैन न दैना।।
श्री सियराम अनन्य उपासक ज्ञान बिचार विवेक के ऐना।
इष्ट स्वरूप लखै जड़ जंगम राग न रोष न दंभ न मैना।।
ठानि सुटेक न टारि सकै कोउ एकहि रंग रहै दिन रैना।
प्रेमलता सियाराम रटैं मुख काहू ते है कुछ लैन न दैना।।
नाम रटैं उठि भोरहि ते करि सोर, कठोर न, शीतल अङ्गा।
तीव्र विराग उदार अगेह सु भावत नीति सजातिनि संगा।।
आश न त्रास, हुलास नयो नित, बाढ़त, प्रेम, सुनेम अभँगा।
प्रेमलता मित भोजन सैन सुवैन रु नैन रंगे पिय रंगा।।
हास विलास उदास प्रपंच ते गदगद कंठ बहावत आँसू।
दाम न बाम न धाम न ग्राम सुकेवल नाम रटैं प्रति स्वाँसू।।
पाबहि शीथ सुसंतनि के शुचि सोच संकोच कियो सब नासू।
प्रेमलता उर इष्ट भरोस अनिष्ट तजै लखि ज्यों तृन घासू ।।
मतलब जिन्हें न दुनियाँ से कछू जाति जमाति निशानों से।
रंगे रहत सियारामनाम रंग विलग बैठि भवभानों से।।
बोले अटपट वैन चैनमय डोलें महि मस्तानों से।
सब ते ढंग निराला जिनका आला पद विज्ञानों से।।
निर्मल नाम नेह नूतन निज नेही सजे सजावै।
नाम मनोहर शब्द विशद बीना हरबखत बजावैं।।
नाह दरश उत्साह चाह चित चौगुन चटक छजावैं।
युगलानन्य निखिल नर से निर्वेद अखेद भजावैं।।

नाम मंत्र जस यंत्र–तंत्र सिरताज स्वतंत्र सम्हारे।
खाम खलक खाहिस खाकी नापाकी नजर निहारें।।
दाम चाम की सुरति सफा फन फानी दफा विचारें।
युगलानन्य सुनाम बसीकर नामी दृढ़ मत धारे।।
जैसे कृषीकार सुन्दर सुचि धान पाय सुख पावै।
तजे पयाल जाल अंतर गुनि तिमि सत नाम समावैं।।
पढ़ि सुनि निखिल ग्रन्थ अर्थन पुनि छोड़ि सुनाम लोभावै।
युगलानन्यशरन घृत गहि घट अलग किए हरषावै।।
समुझि कृतज्ञ सुगुन राखे रस चाखे नाम पियूषन को।
संतत संत सुसंग सजे तम तजे भजे कुल भूषन को।।
राग अराग पराग प्रलय करि नाषे नेह कुरुषन को।
युगलानन्शरन अन्तर उर सोभा नाम मयूषन को।।
पार भए पर नाव काम कहो कौन रहे दृग देखो।
निज मोकाम जब जाय मिल्यो पुनि पंथ गमन नहिं लेखो।।
भेट्यो सुजन सनेहवंत फिरि वृथा खोज अविशेषो।
युगलानन्य नामजपि के श्रम साधन निरस निरेखो।।
कस्तुरी सुचि सरस सुरभि गुलशन गुलाब जिन पाया है।
तिनको प्याज गाँठ लस्सुन दुर्ग कहो कब भाया है।।
शाहंशाह सलतनत हासिल हुये न भीख मँगाया है।
युगलानन्य नाम रस चाखत साधन सकल बिलाया है।।
खौफ किसीका झुके न हरगिज निसि दिन नाम सुरंगी।
काजी पंडित राजी निज घर रहे अचाह असंगी।।
मेहर मोबारक मुरशिद की एक खाहिस सहज सुचंगी।
युगलानन्यशरन लागरजी लरजी मिली–उमंगी।। – श्री नाम–कान्ति

नाम प्रमियों का सर्वस्व

श्री विन्दु जी कहते हैं–

न हमको धन से मतलब है, न हमको धाम से मतलब।
हमें तो सिर्फ है सरकार के बस नाम से मतलब।।

लेत आठोयाम ताप नासत तमाम देत

अन्त रामधाम साखी जमन हराम है।
पापी परिनाम लोक वेद में न ठाम
जपे 'मनिरसराम' भयो रामको गुलाम है।।
पूरक सुकाम कामतरु अभिराम
हरै क्रोध मद काम करैं मुदित अकाम है।
राम रवि धाम रोम रोम में मुकाम
प्रान–प्रान में ललाम जीव जीव रामनाम है।।
राजा मेरे राम सुख साजा मेरे राम
सुभ काजा मेरे राम सो निवाजा मोसे छाम है।
इष्ट मेरे राम मन्त्रनिष्ठ मेरे राम औ
अनिष्ट हर राम सन्त सिष्ठ 'रसराम' है।।
ज्ञान मेरे राम रूप ध्यान मेरे राम
प्रिय प्रान मेरे राम सियजान जस धाम है।।
तात मेरे राम मंजू मात मेरे राम
भल भ्रात मेरे राम सरवस रामनाम है।।
यश मेरे राम मन बश मेरे राम
कायाकस मेरे राम सुख शान्त 'रसराम' है।।
मान मेरे राम औ अमान मेरे राम
भगवान मेरे राम जीव जान प्रद काम है।।
योग मेरे राम दिव्य भोग मेरे राम
साँच सोग मेरे राम जो वियोग घड़ी जाम है।
तात मेरे राम मंजू मात मेरे राम
भल भ्रात मेरे राम सरवस रामनाम है।।
जाग मेरे राम भूरि भाग मेरे राम
गीत राग मेरे राम अनुराग 'रसराम' है।
धीर मेरे राम बरवीर मेरे राम
हर पीर मेरे राम धनु तीन धर श्याम है।।
दानी मेरे राम सत्यवानी मेरे राम
सिया रानी रत राम सुख खानी शीलधाम है।
तात मेरे राम मंजु मात मेरे राम
भल भ्रात मेरे राम सरवस रामनाम है।।

देह मेरे राम सुविदेह मेरे राम
गुन गेह मेरे राम प्रद नेह मेह श्याम हैं।
रंग मेरे राम भवभंग कारी राम
सुभ अङ्ग मेरे राम बसै संग बसु जाम हैं।।
स्वामी मेरे राम ब्रह्मनामी मेरे राम
हिय धामी मेरे राम सखा साँचे 'रसराम' हैं।
तात मेरे राम मंजु मात मेरे राम
भल भ्रात मेरे राम सरवस रामनाम है।।

नामहि सेवा नामहि पूजा नाम महानिधि सिधि दाता।
नाम इष्ट गुरु सखा सहायक लायक नाम सुपितु माता।
नाम सुवन शुचि सुखद नामही युवती जन तन धन भ्राता।
प्रेमलता प्रिय नाम सुरक्षक भक्षक भव श्रम भ्रम व्राता।।
नामहिं मात–पिता परिवार बिहार, बहार अगार हमारे।
राम सुसाज समाज सुधी सर्वस्व सुधानिधि नाम सुधारे।।
साधन सिद्ध सुमिद्ध सुखाकर नामहि दीनदयाल सम्हारे।
(श्री) युग्मअनन्य अजान सुजान सियावर नाम परेश बिचारे।। (६२९)

जीवन हमारो वर वरन विचित्र मित्र
तारापति अमित सुजोति या पै वारिये।
जैसे नीर जीवन है मीन को मनिन्द्र जैसे
जीवन फनिन्द्र ऐसे नाम ध्यान धारिये।।
जैसे चाह चातक सुघन स्वाति बूँद चारु
चमक चकोर चन्द प्रीति अनुसारिये।
श्रीयुगल अनन्य नाम नेह हीन सिद्धि फल
मुक्ति अभिलाष राख मानि दूरि डारिये।। (१३७२)

"श्रीरामनाम से ही जोइ होइ सोइ नीको लागे
ऐसोई सुभाव कछु तुलसी के मन को।"
चाहो कोउ निन्दो चाहो वन्दो मोद शोक नहिं
मन वच वपु मोहि लागो प्यारो नाम ही।
और न सोहात बात घात सम विषमहु
यामे काहू भाँति लेश होत न आराम ही।। (१३७३)

कथनी के कथे कहाँ पाइये परम धाम
जौ लौं नाम रटि नहिं पायो विश्राम ही।
युगल अनन्य मन्द मति सब भाँति तौन
जौन नाम कंज कर आये न विराम ही।। (१३७३)

रामनाम प्रान धन दौलत सु रामनाम
रामनाम कुलुक महान मसनद है।
रामनाम लोक परलोक रिद्धि सिद्धि सब
भगति मुकुति रामनाम अनहद है।।
रामनाम रौशन रहस्य रस रामनाम
रामनाम जीवन सुमूरि पर पद है।
युगल अनन्य रामनाम सरबस मम
तात मात भ्रात पति नातो अनवद है।। (२६४०)

❋ नाम–निष्ठा ❋

राम सुनाम बिना 'रसरङ्गमनी मुख जानि लजौ मैं लजौं रे।
चातक ज्यो धन, रंग भजै धन, त्यों प्रभुनाम भजौ मैं भजौं रे।।
काक कुसंगति छोडि सुसंगति हंस सुवेष सजौ मैं सजौं रे।
जानकिजीवन रामको नाम कभूँ न तजौ न तजौ न तजौं रे।।

नाम अभिराम चोट चित्त लागि जात जब
तब कछु बात ना सोहात जातपाँत है।।
बिरहा बेहाल लाल मिलन सुचाह छन
छन उमगात प्रीति पद परसात है।।
शिवशिव शेष हनुमत मन मंजु कंज
मकरंद मधुप वरन युग खयात है।
युगल अनन्य ताही संग अनुराग रचु
पचु जनि इत उत आयुष सिरात है।। (२६०८)

❋ वैराग्य ❋

जेन केन विधि रुखा सूखा माँगि उदर में भरना है।
सन्त सीथ पट फटे पुराने पाय मोद मन करना है।।
केहि लगि फिरैं याचते घर घर संपत्ति जोरि न धरना है।
सियालालशरण सियराम नामरटि आखिर इक दिन मरना है।
— श्रीहितोपदेश शतक।

धोखहि नाम अनन्य भाव धरि विलग बैठि वसुमाया है।
भूख—प्यास सहि रहि प्रमुदित नित निवसहि इष्ट सुधामा है।।
जगते रहे उदास आस तजि रटहि नाम निष्कामा है।
प्रेमलता अनयास जीविका पास न राखत दामा है।।३५।। श्री हितोपदेश शतक

❋ धन्य कौन ❋

श्री पद्मपुराण में श्री व्यासदेव जी ने मुनियों से कहा है कि श्रीरघुवंश शिरोमणिजू को राम नाम में अनुरागोदय हो गया उसका भाग्य धन्यातिधन्य है।

'अहो भागमहो भाग्यमहो भाग्यं पुनः पुनः।
येषां श्रीमद्रघूत्तंस — नाम्नि सञ्जायते रतिः।।'

श्रीमार्कण्डेय पुराण में श्रीव्यासदेवजी ने अपने शिष्यों को समझाया है कि जिस बड़भागी को श्रीराम—नाम रूपी अमृत में रुचि हो गई, उसकी जीभ सुधामयी बन जाती है। वही धन्यातिधन्य है। वह सभी दोषों को भस्म करने वाला हो जाता है।

'जिह्वा सुधामयी तस्य यस्य नामामृते रुचिः।
कृतकृत्यस्सएव स्यात् सर्बदोषैक दाहकः।।'

श्रीवृहन्नारदीय में कहा गया है कि श्रीराम—नाम के जापक कृतार्थ रूप हैं, सदा शुद्ध हैं, सर्व प्रकार से निर्विघ्न हैं। श्रीनाम के प्रभाव से अंत में परमधाम श्रीसाकेतपुरी को जायेंगे ही।

'ते कृतार्थाः सदा शुद्धाः सर्वोपाधि विवर्जिताः।
नाम्नः प्रभावमासाद्य गमिष्यन्ति परं पदम्।।

वहीं यह भी कहा गया है कि श्रीराम नाम जप में परायण श्रीनाम कीर्त्तन में तत्पर, श्रीनाम सरकार के पूजन, निष्ठ, जो—जो सज्जन हैं, वही कृतार्थ हैं। इसमें संशय नहीं।

'राम नाम परा ये य नामकीर्त्तन तत्पराः।
नाम्नः पूजा परा ये वै ते कृतार्थाः न संशयः।।'

श्रीशुक पुराण में कहा गया है कि जिनका मन श्रीराम नाम में लगा है, वे ही सबसे बड़े सौभाग्यशाली हैं। श्रीनामार्थ चिंतनपूर्वक नाम रटते हुये वे समस्त जगत को पावन करते हैं।

'अहो भाग्यतराः सर्वे नाम संलग्न मानसाः।
पावयन्ति जगत्सर्वं रामनामार्थ चिन्तनात्।।'

इतिहासोत्तम नामक आर्ष ग्रन्थ में श्रीभृगुजी का वचन है कि उत्तम कोटि के सन्तों ने सतत श्रीसीताराम नाम को कीर्त्तन करने वालों को ही परम सौभाग्यशाली कहा है।

'इदमेव परं भाग्यं प्रशस्यं सद्भिरुत्तमैः।
श्री सीताराम नाम्नस्तु सततं कीर्त्तनं मुने।।'

श्री लघु भागवत में भी श्रीव्यासदेवजी ने कहा है हे राजन्! मनष्यों में वही कृतार्थ, वही भाग्यवान् है, जो सदा भक्ति पूर्वक श्रीराम—नाम का स्वयं स्मरण करते हैं तथा औरों से भी स्मरण कराते।

ते कृतार्था: मनुष्येषु सुभाग्या: नृपनिश्चितम्।
रामनाम सदा भक्ता स्मरन्ति स्मारयन्ति ये।।

वहीं यह भी कहा गया है कि जो श्रीनामानन्य गायक प्रसन्न मन से श्रीराम—नाम का कीर्त्तन करते रहते है। वही परम पावन है; धन्य हैं तथा उन्हीं के भजन के प्रताप से पृथ्वी भी टिकी है।

'श्री रामेति मुदायुक्त: कीर्तयेद्यस्त्वनन्यधी:।
पावनेन च धन्येन तेनेयं पृथिवी धृता।।'

श्रीआदिपुराण में भगवान् श्रीकृष्ण ने श्रीअर्जुन से कहा है कि जो प्रेममग्न भावुक श्रीरामनाम के समाश्रित हो चुके हैं, वे ही कृतार्थ रूप हैं, मैं सत्य सत्य कहता हूँ, अन्यथा नहीं मानना।

'राम नामाश्रया ये वै भावुका: प्रेम संप्लुता:।
ते कृतार्था सदा तात सत्यं सत्यं न चान्यथा।।'

वहीं यह भी कहा गया है कि श्रीरामनाम प्रभाव की कथा गाते हुए भूमि में विचरते रहते हैं, वे सत्पुरुष धन्य हैं और धन्यातिधन्य हैं वे जो श्रीनाम कथा में वर्णित परतत्व श्रीरामनाम के जप में निष्ठा रखते हुए भूमंडल को पावन करते हैं।

'तौ नामगाथा विचरन्ति भूमौ गीत्वा सदा ते पुरुषा: सुधन्या:।
ये नाम गाथा परतत्त्व निष्ठास्ते धन्य धन्या: भुवि कृत्यपुण्या:।।'

श्रीविश्वामित्र संहिता में श्रीविश्वामित्रजी वैशें से कहते हैं कि कलियुग में वही धन्य है, पुण्यवान् है तथा शरणापन्न भी वही माना जायेगा, वहीं सौभाग्यशाली है जो योगादिक साधनों का भरोसा छोड़कर, एकमात्र श्रीरामनाम के जाप में दृढ़ता पूर्वक निष्ठा रखता है।

'धन्या: पुण्या: प्रपन्नास्ते भाग्ययुक्ता: कलौयुगे।
संविहायाथ योगादीन् रामनामैक नैष्ठिका:।।'

श्रीसूत संहिता में कहा गया है कि श्रीराम, रामभद्र, सीताराम आदि सुखखन नामों को जो नित्य जपते हैं, वे ही धन्यातिधन्य मनुष्य हैं।

'श्रीराम रामभद्रं च सीतारामं सुखाकरम्।
इतीरयन्ति ये नित्य ते वै धन्यतमा नरा:।।

श्री वात्स्यायन संहिता में कहा गया है कि श्रीरामनाम समस्त जगत के आधार हैं। अखंड सर्वेश्वर हैं। कलिकाल में जो इनका सादर जप करते हैं, वे ही धन्य हैं, पूजनीय हैं। उनके लिये कहीं भय नहीं है। विप्रवर! मैं आपसे सत्य कहता हूँ। मेरी बात को अन्यथा न मानियेगा।

'समस्तजगदाधारं सर्वेश्वरमखाण्डितम्।
रामनाम कलौ नित्यं ये जपन्ति समादरात्।।

ते धन्याः पूजनीयाश्च तेषां नास्ति भयं क्वचित्।
सत्यं वदामि विप्रेन्द! नान्यथा वचनं मम।।'

श्रीअत्रि संहिता में श्रीशिवजी का आदेश है कि जप संख्या का नियम लेकर नामाभ्यास करना चाहिए। अन्त में कहते हैं कि हे पार्वती! कलिकाल में जिनका श्रीरामनाम जप का अखंड नियम निभ जाय उन्हीं का अहोभाग्य है।

'अहो भाग्यमहो भाग्यं कलौ तेषां सदा शिवे।
येषां श्री रामनाम्नस्तु नियमं समखण्डितम।।'

श्री मार्कण्डेय पुराण में श्रीव्यासदेवजी ने सूतजी से कहा है कि जिस कुल में श्री रामनाम जप में तत्पर और नाम निर्वाह का दृढ़ संकल्प धारण करने वाला कुलतारण सपूत उत्पन्न होता है, वह कुल धन्य है। श्रीशेषजी स्वयं एक हजार जीभ से निरन्तर नाम जपते हैं। अतः श्रीरामनाम का वह जापक श्रीशेषजी का प्रेमपात्र भी बन जाता है।

धन्यं कुलवरं तस्य यस्मिन् श्रीरामतत्परः
जायते सत्यसंकल्पः पुत्रः श्रीशेषबल्लभः।।

श्रीदक्ष स्मृति में कहा गया है कि जहाँ श्रीरामनाम के पवित्र जापक उत्पन्न होते हैं। वह कुल धन्यातिधन्य है। उनके माता–पिता धन्य हैं।

धन्या माता पिता धन्यो धन्याद्धन्यतमं कुलम्।
यत्र श्रीराम नाम्नस्तु जापको जायते शुचिः।।

श्रीधर्मराज स्मृति में स्वयं श्रीधर्मराज कहते हैं कि श्रीरामनाम जप में निष्ठावान् सज्जन जिस स्थल पर विराजमान होकर श्रीनाम जप करते हैं, वह देश धन्य हैं। साक्षात श्रीसाकेत धाम के समान ही वहाँ की महिमा हो जाती है।

सवै धन्यतरो देशः साक्षाच्छ्रीधाम सन्निभः।
यत्र तिष्ठिन्ति श्रीराम नाम संलाप नैष्ठिकाः।।

श्रीबड़े महाराज श्रीसीतारामनाम सनेह वाटिकामें कहते हैं कि अनमोल श्रीरामनाम श्रेष्ठ पावन है। जापक को श्रीसाकेतधाम देने वाले हैं। इस जगतीतल में वही धन्यातिधन्य हैं जिनकी जीभ को तथा मनको श्रीरामनाम का अबलंब पकड़ा गया है। ऐसे श्रीरामनाम के जापक तीनों लोकों को तारने में समर्थ हैं। इसमें कोई संदेह नहीं। इन्हीं श्रीरामनाम रस का पान करते करते मतवाले बन जाना चाहिए। विषय रस को छूना भी नहीं चाहिये। उसमें न स्वाद है न सुख।

शुद्ध शिरोमणि राम सुनाम अनाम सुधाम प्रदायक प्यारों।
ते धनधन्य सदा जगतीतल है जिनके जिय जीह अधारो।।
तारक तीन तिलोकन को सोई है सब भाँति नहीं शक धारो।
(श्री) युग्म अनन्य छकी रस पीवत छीवत स्वाद नहीं सुख खारो।। २६५।।

पुनः उसी ग्रन्थ में कहते हैं कि श्रीसीताकान्तजू के सीतारामनाम जिन जापक के हृदय में दिव्यानन्द प्रदान करते हैं, वह धन्याग्रगण्य हैं। उन्हीं को सब प्रकार से सुयोग्य भाविक तथा भाव स्नेही मानना चाहिए। उस समस्त सद्गुण सम्पन्न नाम—जापक की कीर्ति कोटि ब्रह्मण्डों में फैल जाती हैं। उन्हींको नित्य—निरन्तर श्रीराम—सरकार श्रेष्ठ प्राणाधार हैं। ये उमङ्ग—उत्साह पूर्वक नाम—साधना में तत्पर रहते हैं।

"धन्य धुरीन सुगन्य सदा सब लायक भाविक भाव सनेही।
कीरति कोटिन अंडन में तिनकी नित छाय रही गुन गेही।।
तेई निरन्तर प्रान अधार उदार उमङ्ग उछाह समेही।
(श्री) युग्म अनन्य सियावर नाम हृदै अभिराम प्रदायक जेही।।१९१८।।"
नामानन्य प्रपन्न धन्य सो जिसकी गति मति ऐसी है।
बाँकी कहनि रहनि कसरत गुन गहनि चहनि निज जैसी है।।
प्रीति प्रनय परतीति एकरस श्री मजनू लैलै सी है।
युगलानन्य इश्क वालों की कीमत चाहिए जैसी है।। — श्रीनाम कान्ति

❊ नाम—निष्ठा में दृढ़ विश्वास आवश्यक है। ❊

बात पद्मपुराण की है—भगवान् श्रीवेदव्यासजी मुनियों के प्रति नाम उपदेश करते हुए, आदेश दे रहे हैं कि उत्तम साधक को अपने जाप्यनाम में दृढ़ विश्वास रखना चाहिये। विश्वासपूर्वक नाम जपने से भगवत्प्रेम—प्राप्ति सुनिश्चित हो जायेगी और उसे सिद्धि मिलेगी अविलम्ब। कोई संशय नहीं है इसमें।

"विश्वासः सुदृढ़ौ नाम्नि कर्त्तव्यः साधकोत्तमैः।
निश्चयेन परां सिद्धिः शीघ्रं प्राप्नोत्यसंशयम्।।"

श्रीनारद वचन—

'यस्य यावांश्च विश्वासस्तस्य सिद्धिश्च तावती।'

जिन्हें जितना विश्वास उसी अनुपात में उन्हें सिद्धि मिलेगी। बिना विश्वास के, न तो कोई सिद्धि मिलेगी, न श्रीराम—भक्ति।

"कवनिहु सिद्धि कि बिनु विश्वासा।"
बिनु विश्वास भगति नहीं, तेहि बिनु द्रवहि न राम।
राम कृपा बिनु सपनेहु, जीव न लह विश्राम।।

नाम विश्वास हमें श्रीशंकरजी से सीखना चाहिए।

"नाम प्रभाव जान सिव नीको। कालकूट फल दीन्ह अमीको।।"

श्री प्रह्लादजी भी हमें नाम—विश्वास में दृढ़ाने वाले हैं, अपनी नाम—निष्ठा से।

रामनाम जपतां कुतो भयं सर्व ताप शमनैक भेषजम्।
पश्य तात मम गात्र संगत: पावकोऽपि सलिलायतेऽधुना।।

अर्थात् श्री प्रह्लादजी को अग्नि की प्रज्ज्वलित चिता में बैठा दिया गया है। पिता ने पूछा तुम्हें भय हो, तो हमारे शत्रुके नामोच्चारण छोड़ दो। अभी चितासे तुम्हें निकाले देता हूँ। श्रीप्रह्लादजी ने उत्तर दिया—पिताजी, श्रीरामनाम तो सभी तापों को तमटाने वाले हैं। इनके बलपर मुझे भय कहाँ? देखते नहीं, आपकी प्रज्ज्वलित आग मेरे अंगों में जलवत शीतल प्रतीत हो रही है।

श्रीगोस्वामीपाद विरचित श्रीविनय—पत्रिका का पद १५५ इस सम्बन्ध में विचारणीय है।

विश्वास एक रामनाम को।
मानत नहि परतीति अनत, ऐसोई सुभाउ मन वाम को।।
पढिवो परयो न छठी छमत, ऋग जजुर अर्थबन साम को।
व्रत तीरथ तप सुनि सहमत, पचि मरै करै तन छाम को?।।
करम जाल कलिकाल कठिन, आधीन सुसाधित दाम को।
ज्ञान विराग जोग जप को, भय लोभ मोह कोह काम को।।
सब दिन सब लायक भयो गायक रघुनायक गुन—ग्राम को।
बैठे नाम कामतरु तर डरु कौन घोर घन—घाम को।।
को जाने को जैहे जमपुर को सुरपुर परधाम को।
तुलसिहि बहुत भलो लागत जग—जीवन राम गुलाम को।।

अर्थात् श्रीगोस्वामीपाद कहते हैं कि ऐसे कर्म, उपासन, ज्ञान, योग आदि अनेकों वेदोक्त साधन परमार्थ साधन के हैं। सभी अपनी—अपनी जगह पर ठीक ही होंगे, परन्तु अपने—अपने हृदय की मान्यता ही तो ठहरी। मेरे को तो एकमात्र रामनाम ही में विश्वास है। हो क्यों नहीं? मेरा तो सारा बिगड़ा हुआ नाम जपही से बना है।

"हौं तो सदा खर को असवार, तिहारोइ नाम गयंद चढ़ायो।"

श्रीकवितावली ७ ।। ६०।।

आपने अपने इष्ट की शपथ खाकर उन्हीं से कहा है कि मुझे एकमात्र आपके नामही की गति हैं। जो आपके सामने झूठा कहेगा, वह तो तीनों कालों मे तीनों लोकों में भी झूठ ही समझा जायेगा।

"रावरी सपथ, रामनाम ही की गति मेरे
इहाँ झूठौ झूठौ सों तिलोक तिहूँ काल है।"

श्रीकवितावली ७६५ ।३।

पुन: आप अपनी विनय—पत्रिका के २२६वें पदमें कहते हैं कि यदि मैं कुछ भी दुराव रखकर कहता होऊँ, तो मेरी जीभ गलकर गिर जाय। मेरा अपना कल्याण तो एकमात्र श्रीरामनाम ही से हो सकता है।

संकर साखि जो राखि कहौ कछु तौ जरि जीह गरो।
अपनो भलो राम–नामहि ते तुलसिहि समुझि परो।।

मानत नहि परतीति .... कहते हैं अन्यान्य साधन भी तो वेद ही ने बताये हैं। श्रीवेदवचन में विश्वास न रखना मन की विमुखता है। क्या करूँ, मनका कुछ ऐसा ही स्वभाव पड़ गया है।

रामही के नाम ते जो होइ सोइ नीको लागै,
ऐसोई सुभाउ कछु तुलसी के मन को।

श्रीकवितावली ७ । ७७ ।

चारों वेद छवों शास्त्र का अध्ययनकर लेना द्विजातियों का परम कर्त्तव्य है। किन्तु विद्या–बोध भी तो भाग्याधीन ही है। अपने जन्म की छठवीं रात में विधाता ने मेरे ललाटमें वेदाध्ययन लिखाही नहीं और नहीं लिखा सो अच्छा ही किया।

नाम लिया तिन सब लिया चहूँ भेद के भेद।
नाम बिना नरके गये, पढ़ि पढ़ि चारिउ वेद।

व्रत, तीर्थ, तप आदि साधन भी ठीक ही होंगे, किन्तु अपने को तो "सुमिरत सुलभ सुखद सब कहूँ। लोक लाहु परलोक निवाहू।।" वाले साधन नाम–जापक अवलंब पकड़ा गया है। इसमें साधन श्रम तो है नहीं, फल अपरिमिति। तो अत्यन्त क्लिष्ट साधन, अल्पफल के लिए कौन करे? इन साधनों में शरीरको गलाना पड़ता है। लाभ भी केवल स्वर्गलोक के दिव्य–भोगोंकी प्राप्ति है, फिर तो चौरासी के चक्कर में पड़ना ही होगा।

वेदोक्त, यज्ञ, दानादि साधन कलिमल ग्रसित ह्रदय वाले जीव से पवित्रता–पूर्वक बन नहीं सकते। इसमें पर्याप्त द्रव्य की आवश्यकता है। शुद्ध जीविका के द्वारा ईमानदारी की कमाई कितने के पास हैं? यज्ञार्थ पवित्र घी आदि वस्तु कहाँ मिलेगी? अत: इनमें फलता नहीं मिलने को। मिले भी तो श्रीरामनाम–जप की अपेक्षा बहुतही नगण्य। रही ज्ञान, वैराग्य, योग, जप, तप की बात! सो काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि षड् विकार कलियुगी जीवों को अपरिहार्य रूपसे जकड़े हुये है। इनके मारे उन साधनों में सफलता नहीं होने को। हो भी जाय तो नाम–जपके समान, अनायास परम फल उनसे मिलना सम्भव नहीं। एक बात ध्यान देने की है। नाम–जप के साथ इष्ट गुण–चिंतन से सद्य: परमानन्द सुलभ हो जाता है। श्रीमुख वचन है, पुरजनों के प्रति।

मम गुन–ग्राम नाम रत, गत ममता मद मोह।
ताकर सुख सोइ जानइ, परानन्द सन्देह।।

इस संसार में श्रीरघुनाथजी के गुण–समूह को गाने वाले ही सब प्रकारके योग्य हैं। जो श्रीरामनामरूपी कल्पवृक्ष की शीतल सुखद छाया में बैठे हैं, उनहें घनघोर घटा के समान तमोमय अज्ञान, अथवा तेज धूप के समान विषय सेवन सम्भव घोर ताप का कौन भय है? अन्यान्य साधनों से पता नहीं, साधक नरक

जायेगा, या स्वर्ग, या परम धाम को। जब राजा नृग के समान दान यज्ञ में तत्पर धर्मात्मा गिरगिट बन गये। तप के द्वारा अजर अमर होने पर भी नमुचि फेन से मरा, तो इन साधनों का कौन भरोसा? श्रीरामनाम जप से मुझे भगवद्भक्ति प्राप्त हुई। श्रीराघवजू के भक्तों का जीवन मुझे (श्रीगोस्वामीजी को) बड़ा ही सुखदायक सिद्ध हुआ। श्रीआदिपुराण में भगवान् श्रीकृष्ण श्रीअर्जुन से कहते हैं कि नाम जापक श्रीरामनाम के प्रभाव से सिद्धशिरोमणि हो सकते हैं। विश्वासपूर्वक जपना चाहिए।

'रामनाम प्रभावेण सर्व सिद्धीश्वरोभवेत्।
विश्वासेनैवश्रीरामनाम जाप्सं सदाबुधै।:।।'

इस प्रकार विचार करने पर, श्रीनाम प्रभाव में दृढ़ विश्वास जमाये रखना नाम जापकों के लिए बड़ा ही आवश्यक है।

(जप, तप, भजन, पूजन तथा लौकिक, पारलौकिक सभी प्रकार के कार्यों में विश्वास ही प्रधान है। जिसे जिस पर जैसा विश्वास जम गया, उसे उसके द्वारा वैसा ही फल प्राप्त हो सकेगा। फल का प्रधान हेतु विश्वास ही है। विश्वास के सम्मुख कोई बात असम्भव नहीं। असम्भव तो अविश्वास का पर्यायवाची शब्द है। विश्वास के सामने सभी कुल सम्भव है। विश्वास के ही सहारे चरणामृत मान कर मीरा विष मान कर गयी, नामदेव ने पत्थर की मूर्तिको भोजन कराया, धन्ना भगतका बिना बोया ही खेत उपज आया, रैदासजी ने भगवान् की मूर्ति को सजीव करके दिखला दिया। ये सब भक्तों के दृढ़ विश्वास के ही चमत्कार हैं। जिनकी भगवन्नाम पर दृढ़ निष्ठा है, उन्हें भारी से भारी विपत्ति भी साधारण सी घटना ही मालूम पड़ने लगती है। वे भयंकर से भयंकर विपत्ति में भी विश्वास से विचलित नहीं होते। ध्रुव तथा प्रह्लाद के लोक प्रसिद्ध चरित्र इसके प्रमाण हैं, ये चरित्र तो बहुत प्राचीन हैं, कुछ लोग इसमें अर्थवाद का भी आरोप करते हैं, किन्तु महात्मा (श्रीचैतन्य महाप्रभु अनुयायी यवन) हरिदासजी की नामनिष्ठा का ज्वलन्त प्रमाण तो अभी कल ही परसों की बात है..... बिना भगवन्नाम में दृढ़ निष्ठा हुये क्या कोई इस प्रकार अपने निश्चय पर अटल भाव से अड़ा रह सकता है? कभी नहीं, जब तक हृदय में दृढ़ विश्वास जन्य भारी बल न हो, तब तक ऐसी दृढ़ता सम्भव ही नहीं हो सकती।) श्रीचैतन्यचरितावली, खण्ड २, के श्रीहरिदासजी की नाम निष्ठा प्रसंग से साभार उद्धृत। श्रीबड़े महाराज का आदेश है कि एक मात्र श्रीसीतारामनाम की शक्ति सामर्थ्य का ही निरन्तर मनन करना चाहिये तथा इन्हीं का यशोगान करना चाहिये। अपने मनको तथा और लोगों को भी यहीं सिखावें, समुझावें और साधनों के प्रति विश्वास को दु:ख दोषपूर्ण समझकर हटा देना चाहिये, श्रीनाम में विश्वास सजकर भवभीर से मुक्त हो जाता है। मलिन—वासना तथा बड़े पापों में फँसने नहीं पावे, सावधान रहना चाहिये। श्रीनाम के महत्त्व परत्व के ज्ञानार्जन में लगे रहना चाहिये। चाहे दूसरा श्रीनामके प्रतिकूल कितना भी तर्क—वितर्क करके हमें समझावें, हमें अपनी नामनिष्ठा में अडिग रहना है।

❋ श्रद्धाहीन नाम—जप ❋

'नाम ही को बल व्यवधान विन गावो ध्याओ
लेखान बताओ सिखलावो चित्त चारु को।
और विश्वास बहवावो दुख दोष जानि
मानि के प्रतीति दै उतार भव भारु को।
वासना मलिन पाप पीन में न फँसो गसो
रसो बसो नाम ज्ञान ग्राम बीच हारू को।
(श्री) युगल अनन्य चाहे कोऊ बके झके तऊ
उर में न भूलि अकुलाइये विचारु को।।

कुछ लोगों की यह शंका है कि आजकल नाम लेने वाले तो बहुत लोग देखे जाते हैं, परन्तु उनकी दशादेखते हैं तो मालूम होता है कि उनको कोई लाभ नहीं हुआ! जिस नाम के एक बार मात्र—उच्चारण करने से सम्पूर्ण पापों का नाश होना बताया जाता है, उस नाम के लाखोंवार आवृत्ति करने पर भी लोग पापों में प्रवृत्त और दुःखी देखे जाते हैं। इसका क्या कारण है? इसके उत्तर में पहली बात तो यह है कि लाखोंवार नामकी आवृत्ति उनके द्वारा होती नहीं, धोखे से समझ ली जाती है। दूसरा कारण यह है कि नाम में श्रद्धा नहीं है। नाम के इस माहात्म्य में उन्हें स्वयं ही संशय है। भगवान् ने गीता में कहा है "संशयात्मा विनश्यति"। इसीलिये उन्हें पूरा लाभ नहीं होता। भजन में श्रद्धाही फल—सिद्धिका मुख्य साधन है। अवश्य ही भजन करने वाले में श्रद्धा का कुछ अंश तो रहता ही है। यदि श्रद्धा का सर्वथा अभाव हो तो भजन में प्रवृत्ति ही नहीं हो। बिना किंचित् श्रद्धा हुए किसी कार्य विशेष में प्रवृत्त होना बड़ा कठिन है, अतएव जो नाम ग्रहण करते हैं, उनमें श्रद्धा का जरासा अंश तो अवश्य है, परन्तु श्रद्धा के उस क्षुद्र अंशकी अपेक्षा संशय की मात्रा अधिक है। इसीलिये उन्हें वास्तविक फलसे वंचित रहना पड़ता है। गंगा—स्नान में पापों का अशेष नाश होना बतलाया गया है, परन्तु नित्य गंगा स्नान करनेवाले लोग भी पाप में प्रवृत्त होते देखे जाते हैं (यद्यपि एकबार भी रामनाम का उच्चारण हजारों—वार के गंगा—स्नान से बढ़कर है।)

❋ श्रद्धा पर एक दृष्टान्त ❋

एक समय शिवजी महाराज पार्वती के साथ हरिद्वार में घूम रहे थे। पार्वती ने देखा कि सहस्रोंमनुष्य गंगा में नहा—नहाकर हर—हर करते चले जा रहे हैं। परन्तु प्रायः सभी दुःखी और पाप—परायण हैं। पार्वती ने बड़े आश्चर्य के साथ शिवजी से पूछा कि 'हे देवाधिदेव! गंगा में इतने बार स्नान करने पर भी इनके पाप और दुःखों का नाश क्यों नहीं हुआ? क्या गंगा में सामर्थ्य नहीं रही? शिवजीने कहा—प्रिये! गंगा में तो वही सामर्थ्य है, परन्तु इन लोगों ने पापनाशिनी गंगा में स्नान ही नहीं किया है, तब इन्हे लाभ कैसे हो? पर्वती ने साश्चर्य कहा कि 'स्नान कैसे नहीं किया? सभी तो नहा—नहाकर आ रहे हैं? अभी तक इनके शरीर भी नहीं सूखे हैं।' शिवजी ने कहा 'ये केवल जल में डुबकी लगाकर आ रहे हैं। तुम्हें कल इसका

रहस्य समझाऊँगा। दूसरे दिन बड़े जोर की बरसात होने लगी। गलियाँ कीचड़ से भर गईं। एक चौड़े रा
में एक गहरा गड्ढा था, चारों ओर लपटीला कीचड़ भर रहा था। शिवजी ने लीला से ही कुछ अपंग
भेष धारण कर लिया और दीन विवश की तरह गड्ढे में जाकर ऐसे पड़ गये जैसे कोई मनुष्य चलता चल
गड्ढे में गिर पड़ा हो और निकलने की चेष्टा करने पर भी न निकल सकता हो। पार्वतीजी को यह समझा
गड्ढे के पास बैठा दिया कि देखो! 'तुम, लोगों को सुना सुनाकर यों पुकारती रहो कि मेरे वृद्ध अपंग प
अकस्मात् गड्ढे में गिर पड़े हैं, कोई पुण्यात्मा इन्हें निकालकर इनके प्राण बचाइये और मुझ असहाय
सहायता कीजिए। शिवजी ने यह और समझा दिया कि जब कोई गड्ढे में से मुझे निकालने को तैयार
तब इतना और कह देना 'कि भाई मेरे पति सर्वथा निष्पाप हैं, इन्हें वहीं छूये जो स्वयं निष्पाप हो, य
आप निष्पाप हैं तो इनके शरीर में हाथ लगाइये नहीं तो हाथ लगाते ही आप भस्म हो जायेंगे।' पार्व
तथास्तु कहकर गड्ढे के किनारे पर बैठ गयी और आने जाने वालों को सुना–सुनाकर शिवजी की सिखा
हुई बात कहने लगी। गंगा में नहाकर लोगों के दल के दल आ रहे हैं। सुंदर युवतीको यों बैठी देखक
कइयोंके मनमें पापआया, कई लोकलज्जा से डरे, तो कइयों को कुछ धर्म का भय हुआ, कई कानूनसे ड
कुछ लोगों ने तो पार्वती को यह सुना भी दिया कि, मरने दे बुड्ढे को! क्यों उसके लिए रोती है? अ
और भी कहा, मर्यादा भंग होने के भय से वे शब्द लिखे नहीं जाते। कुछ दयालु चरित्र पुरुष थे। उन्हं
करुणावश हो युवती के पतिको निकालना चाहा परन्तु पार्वती के वचन सुनकर वे भी रुक गये। उन्होंने सो
कि हम गंगा में नहाकर आये हैं तो क्या हुआ! पापी तो हैं ही, कहीं होम करते हाथ न जल जाय। बु
को निकालने जाकर इस स्त्री के कथनानुसार हम स्वयं भस्म हो जायँ। सुतरां किसी का साहस नहीं हुअ
सैकड़ों आये, सैकड़ों ने पूछा और चले गये, सन्ध्या हो चली, शिवजी ने कहा–पार्वती! देखा, आया क
गंगा में नहाने वाला? थोड़ी देर बाद एक जवान हाथ में लोटा लिये हर हर करता हुआ निकला, पार्व
ने उससे भी वही बात कही। युवक का हृदय करुणा से भर आया। उसने शिवजी को निकालने की तैय
की। पार्वती ने रोकर कहा कि 'भई! यदि तुम सर्वथा निष्पाप नहीं होओगे तो मेरे पति को छूते ही ज
जाओगे।' उसने उसी क्षण बिना किसी संकोच में दृढ़ निश्चय के साथ पार्वती से कहा कि, 'माता!
निष्पाप होने में तुझे संदेह क्यों होता है? देखती नहीं। मैं अभ्भी गंगा नहाकर आया हूँ। भला गंगा में ग
लगाने के बाद भी कभी पाप रहते हैं? मैं अभी तेरे पति को निकालता हूँ। युवक ने लपककर बुड्ऐ
ऊपर उठा लिया।' शिव पार्वती ने अधिकारी समझकर अपना असली स्वरूप प्रगट कर उसे दर्शन दे
कृतार्थ किया! इसी दृष्टांत ने पार्वतीजी से कहा कि इतने लोगों में से एक ने ही वास्तव में गंगा स्नान वि
है? इसी दृष्टांत के अनुसार जो लोग बिना श्रद्धा और विश्वास से केवल दंभ के लिए नाम ग्रहण क
हैं, उन्हें वास्तविक फल नहीं मिलता। परन्तु इसका यह मतलब नहीं कि नाम ग्रहण व्यर्थ जाता है। नाम
फल तो अवश्य होता है, परन्तु जैसा चाहिये, वैसा नहीं होता।

श्री रामनाम का अनन्य भरोसा

पिछले प्रसंगों से यह बात सिद्ध हो चुकी है कि कलि में श्रीनाम के अतिरिक्त अन्य सभी साधन निष्फल बन गये हैं। अत: सभी अन्यान्य साधनों से मुख मोड़कर, एक मात्र नाप जप में तत्पर हो जाना चाहिए। अपने लोक परलोक को सुखमय बनाने के लिए एकमात्र श्रीरामनाम जप पर ही निर्भर करना चाहिये। इस सम्बन्ध में श्रुति पुराण तथा श्रीगोस्वामीजी के अनेक वचन प्रमाणभूत है।

श्रीविनय पत्रिका पद संख्या ६५, इस सम्बन्ध में विशेष रूप से मननीय हैं। वैखरी, उपांशु, मध्यमा, परा; पश्यन्ती आदि वाणियों को एकमात्र नाम में ही लगाना चाहिये। बैखरी से तो नाम रटना चाहिये, उपांशु से जपना चाहिये एवं परा पश्यन्तीसे श्रीरामनाम में रमण करते रहना योग्य है। जैसे पपीहा स्वाती जलद का अनन्य प्रेमी होता है, वहीं अन्यत्र वृत्ति नाम जापक को श्रीरामनाम जप में धारण करनी चाहिए। पपीहा, कूप, नदी, तालाब से लेकर समुद्र तक के जल की भी उपेक्षा कर देता है, वह प्यास के मारे भले मर जाय, किन्तु इन उपर्युक्त जलाशयों के जल को तो छुयेगा भी नहीं। उसी प्रकार, अन्य सभी साधनों की उपेक्षा कर; नाम जापक को एकमात्र श्रीरामनाम की जप में ही अनन्य अनुराग करना चाहिये। नाम के द्वारा कण मात्र सुख स्वाद में अपार तृप्ति माननी चाहिये। चातक की प्रीति परीक्षा के लिए स्वाती का बादल गर्जन, तर्जन पूर्वक उसे फटकारता है। ओले पत्थरों की वर्षा से उसके पंख चूर–चूर कर डालता है, फिर भी पपीहे की अधिकाधिक प्रीति उसी निष्ठुर स्वाती जलद के दिन प्रतिदिन बढ़ती ही जाती है। हो सकता है श्रीनाम सरकार संसार की आसक्ति तोड़ाने के निमित्त धन, जन, स्वास्थ्य की हानि विघटित कर देवें, फिर भी जापक वही सराहनीय होगा, जो इन प्रेम परीक्षा में खरा उतरने के लिए उनमें और भी उत्तरोत्तर प्रेम परिवर्द्धन करता जाय। इसी में प्रेम पराकाष्ठा का निर्वाह है। जिन्हें श्रीरामनाम ही का बल भरोसा है, अपनी बुद्धि के द्वारा नाम ही में विश्वास जमाये हुये हैं, और प्रेमपूर्वक नाम ही रटते रहते हैं, ऐसे ही जापक तीनों लोकों में तीनों कालों में सबसे बड़े भाग्यवान् माने जायेंगे। यह अनन्य नाम निष्ठा का मार्ग एकांगी होता है, इस पर चलकर, अंत तक निर्वाह करना विरले ही भजन–वीर से बनता है। इस एकांगी मार्ग पर चलने वाले मान बड़ाई रूपी छाया में क्षण–क्षण रुके नहीं। निर्विघ्न नामानुराग निवाहने ही में अपना सब प्रकार से हित मानना चाहिए। मूल पद इस प्रकार पठित है:–

'राम राम रमु, राम राम रटु राम राम जपु जीहा।
रामनाम नवनेह मेहको, मन! हठि होहि पपीहा।।
सब साधन फल कूप–सरित–सर–सागर–सलिल–निरासा।
रामनाम रति स्वाति सुधा सुभ सीकर प्रेम पियासा।।
गरजि तरजि पाषान वरषि पवि प्रीति परखि जिय जानै।
अधिक–अधिक अनुराग उमँग उर पर परिमिति पहिचानै।।

रामनाम गति, रामनाम मति, राम नाम अनुरागी।
ह्वै गये, हैं, जै होहिगे, तेइ त्रिभुवन गनियत बड़भागी।।
एक अङ्ग मग अगमु गवन कर विलमु न छिन छिन छाँहै।।
तुलसी हित अपनो अपनी दिसि निरुपधि नेम निबाहे।

श्रीगोस्वामिपाद के और भी पदों में अनन्य भरोसा पर अधिक जोर दिया गया है। आगे हम उन्हें भी उद्धृत करेंगे।

नाहिन आवत आन भरोसो।
यहि कलिकाल सकल साधन तरु है स्रम फलनि फरोसो।
तप, तीरथ, उपवास, दान मख, जेहि जो रचै करो सो।।
पायेहिं पै जानिवो करम–फल, भरि भरि बेद परोसो।
आगम विधि जप जाग करत नर, सरत न काज खरोसो।।
सुख सपनेहु न जोग सिधि साधन रोग वियोग धरोसो।
काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह मिलि ग्यान विराग हरोसो।।
विगरत मन संन्यास लेत जल नावत आम घरोसो।
बहुमत मुनि बहु पंथ पुराननि जहाँ तहाँ झगरोसो।।
गुरु कह्यो राम भजन नीको मोहि लगत राज डगरोसो।
तुलसी बिनु परतीति–प्रीति फिरि फिरि पचि मरै मरोसो।।
राम नाम वोहित भव सागर चाहै तरन तरोसो।। १७३।।

अर्थात् श्रीरामनाम के अतिरिक्त मुझे कर्म, ज्ञान, योग, उपासन जप तप तीर्थ वृत आदि किसी भी साधन में भरोसा नहीं है कि इस घोर कलियुग में ये हमारा कल्याण कर सकेंगे। इसका कारण है कि इन साधनों का स्वरूप तो किसी प्रकार बन जाता है, पर इनमें फलोदय नहीं होता, मानों साधन वृक्ष हो और उसमें फल के बदले केवल परिश्रम ही परिश्रम हाथ लगे।

तप, तीर्थ, व्रत, दान, यज्ञ आदि साधनों में हमारी (गोस्वामीजी को) प्रवृत्ति नहीं है, परन्तु हम किसी को मना नहीं करते। जिनकी रुचि हो इन कर्मों में, वे मनमाना करें तो सही। परनन्तु जब परलोक में जाकर, इनके फल मिलने लगेंगे तो पता लगेगा। अर्थात् जिस उद्देश्य से ये कर्म किये गये थे, उसकी पूर्ति न होगी, तब कर्मकांडियों को हाथ मल–मलकर पछताना पड़ेगा। वेद लुभावनी फलश्रुति कहकर, मानो कर्मफल का पत्तल परोस रहे हैं, किन्तु है यह कलियुग। इस विकारों के मन में भरने वाले युग में, कोई भी अल्प शपक्ति वाले साधन, सफल नहीं होने पाते। इस युग में श्रीरामनाम ही परम समर्थ नृसिंह भगवान् हैं, कलिरूपी हिरण्यकश्यप के उदर विदारकर नामक जापक रूपी प्रहलाद की रक्षा करने वाले।

राम नाम नरकेसरी, कनककसिपु कलिकाल।
जापक जन प्रहलाद जिमि, पालहि दलि सुरसाल।।

यदि कलि कालनेमि के समान कपट करने में प्रवीण है, तो श्रीरामनाम श्रीमहावीरजी के समान उसके कपट परखने में बुद्धिमान और पछाड़ने में समर्थ हैं।

'काल नेमि कलि कपट निधानू। नाम सुमति समरथ हनुमानू'।।

इस युग में वेदोक्त विधि से भी लोग नाना सिद्धि दायक मन्त्रों का जप करते हैं, यज्ञ करते हैं, किन्तु उनसे इष्टफल की सिद्धि नहीं होगी, कारण कि कलिमल ग्रसित साधकों में उनके साधनोचित भीतर—बाहर की पवित्रता एवं पात्रता नहीं होती। उपयोगी सामग्री भी अशुद्ध ही प्राप्त होती है। अत: वेदों का कोई दोष नहीं है। वे साधन अन्य युग में सफल होते होंगे, इस विकारी युग में सफलहोने को नहीं।

योग सिद्धि करना चाहो, तो उसकी साधना में न सुख मिलेगा, न फलोदय काल में। हठयोग का फल स्वास्थ्य की हानि, संसार के लिए उपयोगी न होने से प्रियजनों का वियोग।

रही ज्ञान वैराग्य की बात। सो ज्ञान के शत्रु, अज्ञान, मोह, लोभ, अहंकार, इन्हें सफल नहीं होने देते।

तम मोह लोभ अहंकारा। मद क्रोध बोध रिपु मारा।। १२५।।

गृहस्थाश्रम में विषय भोग करके, वानप्रस्थ आश्रम में भोगों के त्याग का अभ्यास किया जाता है। कलियुगी जीवों से तो विषय स्पृहा छूटने से रही। इस युग में एक—व—एक संन्यास वेश ऊपर से सज लेते हैं। विषय वासना तो छूटती नहीं। मन मिट्टी के कच्चे घड़े के समान अपरिपक्व होता है। उसमें संन्यास रूपी जल डालो, तो कच्चे घड़े तुल्य मन और भी बिगड़ जायेगा। मतलब समाज के प्रतिबन्ध से हीन होने पर, खुल्लम—ख़ुल्ला भोगासक्त हो जायेंगे।

मुनियों के शास्त्र कथित सिद्धान्तों में परस्पर मतभेद देखने में आता है जो जिस साधन से सिद्ध हुये हैं, उसकी प्रशंसा करेंगे, अन्य साधनों में त्रुटि बतावेंगे। वही बात पुराणों की भी है, इनमें नाना मतों का कथन हुआ है। अत: ठौर—ठौर पर विचार वैभिन्य देखने में आता है। अत: इन सद्ग्रन्थों के वाद—विवाद में कौन उलझकर, अपने अमूल्य मानव—जीवन के अधिक अंश को गँवावे? हमारे गुरुदेवजू ने हमें श्रीराम भजन में सीतारामनाम रटन की ही प्रधानता बतायी है। मुझे यह भजन मार्ग बहुत रुचा। लगा कि हमें राजमार्ग ही मिल गया। न कहीं ठोकर, न कहीं नींचा—ऊँचा। आँख मूँदकर सरपट दौड़े चलो। गिरने फिसलने का भय नहीं। एक बात और, राजमार्ग पर राजा की ओर से चोर डाकुओं से बचाने के लिये रक्षक भी नियुक्त रहते हैं, उसी भाँति श्रीराम भजन में 'करौ सदा तिनकी रखवारी' करने वाले स्वयं सर्व समर्थ प्रभु ही रक्षक हैं।

जिन्हें श्रीरामनाम में विश्वास नहीं हो, श्रीनाम के प्रति अनुराग नहीं हो, ये नाना साधनों में रचते पचते हुए, अपने देव दुर्लभ मानव जन्म को व्यर्थ खो डाले। श्रीरामनाम तो भव संतरण के लिए सुदृढ़ जहाज है। जिन्हें संसार सगार से, जन्ममरण के चक्कर से बचना हो, वे श्रीरामनाम रूपी जहाज पर बैठकर पार उतर जायँ।

पुन: श्रीविनयजी की पद संख्या २२६ भी नाम भरोसा सम्बन्ध में मननीय है।

भरोसा जाहि दूसरो सो करो।
मोको तो राम को नाम कल्पतरु कलि कल्यान फरो।
करम, उपासन, ग्यान, वेदमत, सो सब भाँति खरो।
मोहि तो 'सावन के अंधहि' ज्यों सूझत रंग हरो।।
चाटत रह्यो स्वान पातरि ज्यों कबहुँ न पेट भरो।
सो हौं सुमिरत नाम–सुधा–रस पेखत परुधि धरो।।
स्वारथ औ परमारथ हूँ को नहिं कुंजरो नरो।
सुनियत सेतु पयोधि पषाननि' करि कपि–कटक तरो।।
प्रीति–प्रतीति जहाँ जाकी, तहँ ताको काज सरो।
मेरे तो माय बाप दोउ आखर, हौं सिसु–अरनि अरो।।
संकर साखि जो राखि कहैं कछु तौ जरि जीह गरो।
अपनो भलो रामनामहि ते तुलसिहि समुझि परो।।

उपर्युक्त पद में श्रीगोस्वामिपाद स्वानुभूत नाम जप का सुख स्वाद बताते हैं। जिसे श्रीनाम से भिन्न अन्यान्य साधनों का भरोसा हो उसे हम रोकने नहीं जाते। वह अपना मनोनीत साधन करता रहे। किन्तु जहाँ तक मेरी बात है, मेरे लिये श्रीरामनाम कल्पवृक्ष बनकर सब सुख दे रहे हैं। इस कलियुग में कल्याण साधन दुर्लभ हो रहा है। सो मेरे लिये नाम कामतरु कल्याण के सुस्वाद फल फल रहे हैं।

कर्मकांड, उपासना, ज्ञानकांड सभी वेद सम्मत हैं। सभी अपनी–अपनी जगह पर सही हैं, परन्तु मेरी आँखों में तो श्रीरामनाम ही का प्रभाव जमा है। श्रावण की हरियाली देखकर, कोई अन्धा हो जाय, तो उसे भविष्य के सभी दिन हरे ही हरे समझ में आते रहेंगे। यही बात मेरी भी है। श्रीनाम प्रभाव देखकर, अन्य साधनों के फलस्वरूप देखने की दृष्टि ही मेरी समाप्त हो गयी है। बचपन में मैं श्रीनाम के प्रभाव को नहीं जानता था, जपता कैसे? उन श्रीराम विमुख दिनों में मैं भूखों मारा–मारा फिरता था। कुत्ते की भाँति जूठन पत्तलों में लगे अन्य के दाने चाटते–चाटते भी मेरी भूख नहीं शांत होती थी। अब जब मैं जपने लगा हूँ, तो मेरे लिये नित्य नाना स्वादिष्ट भगवत्प्रसादों की थाल सजी सजाई सुलभ हो गयी है। श्रीयुधिष्ठिर ने अपने जीवन में केवल एक बार संदिग्ध वचन के द्वारा झूठ कहा था।

'अश्वत्थामा हतो नरोवा कुञ्जरो वा'।

गुरुवर श्रीद्रोणाचार्यजी, अश्वत्थामा तो मारा गया, मैं निश्चयपूर्वक नहीं कह सकता कि अश्वत्थामा नामक हाथी मरा कि मनुष्य? तब से संदिग्ध वचनों के लिए नर व कुंजर लोकोक्ति बन गयी। अर्थात् स्वार्थ सिद्ध करना चाहो, या परमार्थ, निस्सन्देह दोनों श्रीरामनाम जप से बनेंगे। सुना जाता है कि लंका यात्रा के लिए जो सेतु बाँधा गया था, उसमें श्रीनाम ही के प्रभाव से पत्थर जल पर तैरने लगे थे तथा आपस मे

साधन हितकर है। मेरे लिये श्रीरामनाम के दोनों अक्षर रकार और मकार पिता—माता के समान भरण—पोषण करने वाले सिद्ध हुए हैं। बच्चे अपनी मुँहमांगी वस्तु के लिए माता—पिता से मचल जाते हैं, और अपना अभीष्ट लेकर ही, हठ छोड़ते हैं, उसी प्रकार मैं अपनी प्रयोजनीय सारी वस्तुएँ श्रीनाम सरकार से ही मचल—मचल कर लेता रहता हूँ। मैं मन में कुछ और आस्था रखकर केवल मुँह से ही श्रीनाम की बड़ाई करता होऊँ तो मेरी जीभ गलकर गिर जाय। भगवान् शंकर को साक्षी देकर, कसम खाता हूँ। मुझे अपना कल्याण तो श्रीरामनाम ही से सिद्ध होता हुआ दीखता है।

श्रीविनय पद ६६/५ में गोस्वामीजी कहते हैं श्रीरामनाम जप ऐसे आशुफलद है कि मानों फल परोस कर आगे में रखा हुआ थाल के समान है। खाते जाओ, तुष्ट पुष्ट होते रहो और साधनों का फल मनों रोटी के टुकड़ों के समान अतृप्तिकर है। सो भी देवताओं से माँगो तब पावो।

राम नाम छोड़ि जो भरोसो करै और रे।
तुलसी परोसो त्यागि माँगे कूर कौर रे।।

श्रीमानसजी में भी आपने ठौर—ठौर पर कहा है—

सब भरोस तजि जो भज रामहि। प्रेम समेत गाव गुन ग्रामहि।।
सो भव तर कुछ संशय नाही। नाम प्रताप प्रकट कलि माहीं।।

हमारे प्राचीन आर्षग्रन्थ श्रीनाम के अनन्य भरोसा दृढ़ाने के आप्त वचन कहते आये हैं।

श्री देवीभागवत का वचन है। हम लोगोंने तो गर्भ में नारकीय यातना भोगने पर, गर्भोदक शायी अपने इष्टदेव से, रक्षा की प्रार्थना की थी, और उनसे कौल करार किया था कि हे करुणानिधान इस बार मुझे इस दारुण कष्ट से उबार लें। अब गर्भ से निकलने पर मैं सतत् आदरपूर्वक आपका नाम कीर्त्तन करता रहूँगा। नाम जप में बहानेबाजी नहीं करूँगा। दुराग्रह छोड़ दूँगा, कुटंब संग्रह कर उसी में रचना पचना नहीं है। सब कुछ छोड़ छाड़ कर केवल आपका नाम कीर्त्तन ही किया करूँगा। अब हम स्वयं आत्मघाती कृतध्नी बनकर, उसी कौल को भूल गये। श्रीनाम से विमुख हो रहे हैं। यही कारण है कि बारंबार चौरासी लाख योनियों में भटकने का कष्ट भोगते आ रहे हैं।

गर्म मध्ये तु यत्प्रोक्तं करुणानिधिमग्नतः।
सततं कीर्त्तनं राम नाम कुर्वे समादरात्।।
त्यक्त्वा दुराग्रहं सर्वं कुटुम्बादिक संग्रहम्।
करिष्यामि सदा भक्त्या तव नामानुकीर्त्तनम्।।
तत्सर्वं विस्मृतं ताताधमेनामपहारिणा।
तस्मात् कष्टतरं दुःखं सम्प्राप्नोति पुनः पुनः।।

इसी प्रकार श्रीअग्निपुराण में भक्तशिरोमणि श्रीप्रह्लादजी का वचन आया है। अपने सहपाठी बालकों से कह रहे हैं मित्रगण, आपके देखते–देखते मैं अपने पिता द्वारा संघटित घोर मृत्यु भय रूपी समुद्र से अनायास तर गया हूँ। उसमें केवल श्रीरामनाम के प्रभाव ही का श्रेय है। अत: आप लोगों को भी सभी दुराग्रहों तथा अन्यान्य साधनों को छोड़कर, सावधानता पूर्वक नाम कीर्त्तन ही में जुट जाना चाहिये। अपने जी में आप अन्य साधनों को नीरस समझियेगा।

यत्प्रभावादहं साक्षात्तीर्त्वा घोर भयार्णवम्।
अनायासेन वाल्येऽपि तस्माच्छ्री नामकीर्त्तनम्।।
कर्त्तव्यं सावधानेन त्यक्त्वा सर्व दुराग्रहम्।
साधनान्यं विहायाशु बुद्ध्वा नैंरस्यमात्मनि।।

श्रीआदिपुराण में पुरुषोत्तम भगवान् श्रीकृष्ण भक्तराज श्रीअर्जुन को उपदेश करते हुये, आदेश करते हैं कि अर्जुन, श्रीवैष्णव युग–युग से सभी अन्यान्य कर्म धर्म को त्याग कर, एकमात्र श्रीरामनाम ही का गान करते आ रहे हैं। जिसने एकमात्र श्रीरामनाम ही का अवलंब ले लिया है, उनके लिये मैं त्रिवाचा पूर्वक सत्य सत्य कहता हूँ कि उनकी सद्गति तो सुनिश्चित ही होगी।

गायन्ति रामनामानि वैष्णवाश्च युगे युगे।
त्यक्त्वा च सर्व कर्माणि धर्माणि च कपिध्वज।।
राम नामैव नामैव रामनामैव केवलम्।
गतिस्तेषां गतिस्तेषां गतिस्तेषां सुनिश्चितम्।।

हारीत स्मृति नामक धर्म शास्त्र में भी कहा है कि सभी अन्यान्य साधनों को छोड़कर, बुद्धिमानों को चाहिये कि सभी प्रकार से श्रीरामनाम रूपी मंत्र का ही जप किया करें।

तस्मा सर्वात्मना राम नाम रूपं परंप्रियम्।
मन्त्रं जपेत् धीमान् संविहायान्यसाधनम्।।

बैरञ्च्यतन्त्र में भी कहा गया है कि अन्य साधनोंको छोड़कर एकमात्र रामनाम के जप में तत्पर हो जाना चाहिये। इससे बढ़कर कोई भी दूसरा यत्न न तो सुलभ है, न सभी मनोरथों को पूर्ण करने वाला है।

त्यक्त्वाऽन्य साधनान् सर्वान् रामनाम परो भव।
नात: परतरं यत्नं सुलभं सकलेष्टदम्।।

श्रीनारायण तन्त्र में भी कहा गया है बड़े–बड़े फलों को देने वाले जितने धर्म कर्म हैं, औरों के लिये भले लुभावने हों, परन्तु श्रीरामनाम के जप में लगे हुये महानुभावों के लिए सभी निष्फल प्रतीत होते हैं।

यानि धर्माणि कर्माणि महोग्रा फलदानि वै।
निष्फलानि च सर्वाणि रामनाम रतात्मनाम्।।

श्रीसीतारामनाम के ऊपर पूरी निर्भरता, यदि आपकी हो गई, तब तो आपको अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष चारों फलों के भी सुन्दर फल मिल गये।

'नाम को भरोसो बल चारिहू फल को फल
सुमिरिये छाड़ि छल भलो कृतु है।'

— श्रीविनय २५४/२

श्रीसीताराम, नाम नित्य अमूल्य स्नेह सम्पति है। इनमें सभी धर्म भरे हैं। 'यथा भूमि सब बीजमय, नखत निवास अकास। रामनाम सब धर्ममय जानत तुलसीदास।।' नाम जपने से आपको सभी धर्माचरण करने का पुण्य एकत्र मिल जायेगा। अपने ध्येय इष्ट स्वरूप में ध्यान, धारण तथा समाधि जमाने में आपके लिये श्रीनाम सरकार धन के समान सहायक होंगे। धन से सभी धर्म संभव है। आपको श्रीनाम दिव्य प्रकाश सुझावेंगे। दहर (डुबाने वले कुंड) अर्थात् पतन कराने वाले वाहय आडंबर (दुकान करने से मन फिरा देंगे। दारुण शोक मिटाकर, अतिशय परमानंद देंगे। श्रीनाम तो अनुकूलता की जड़ ही है। कष्ट पीड़ा रूपी अनिष्टों को हरने वाले हैं। बड़े–२ अफसर, वैद्य डाक्टर निरन्तर आपकी सेवा करने को सामने उपस्थित रहेंगे) ऐसे परम हितैषी लोक परलोक के सर्व कार्य साधक श्रीनाम सरकार को छोड़कर अन्यान्य साधनों की आशा रखना, उनके लिये वासना होना तो श्रीनाम के प्रति रसाभास ही है। श्रीनाम ही आपके सुख सौभाग्य हैं, सभी दिव्य रसों की खान हैं।

सीतारामनाम नेह नित्य निर्मोल धाम
धरम धुरीन ध्येय धारना धरेश धन।
दिव्य दुति दान देत दहर दुकान दलि
दारुन दरारदुखा दरन प्रमोद धन।।
मूल अनुकूल प्रतिकूल शून हूल हरू
हाकिम हकीम हरसायत हजूर जन।
श्री युगल अनन्य अन्य आस वास भस सब
खास रसरास नाम सुखाद सुभाग वन।।

(श्री सीतारामनाम सनेह वाटिका १८)

कोटिन माघ प्रयाग नहाई। राम नाम वारक रटु भाई।।
कोटिन व्रत एकादसि कीजै। राम नाम मुख वारक लीजै।।
कोटिन विप्र सुन्योति जिमावै। नाम नाम वारक मुख गावै।।
कोटिन भाँति करै प्रभु सेवा। राम नाम सम नहि सुख देवा।।
कोटिन विधि सेवै सुचि संता। राम नाम एकवार कहता।।
कोटिन मातु पिता सेवकाई। राम नाम सम सुखद न भाई।।
कोटिन गो रक्षा जो करई। राम नाम वारक उच्चरई।।

कोटिन भाँति देइ बहु दाना। राम नाम वारक न समाना।।
कोटिन साधन ज्ञान विवेका। राम नाम सम सुखद न एका।।
कोटिन सर वापी कुआँ, खनै लगावै वाग।
रामनाम के सम नहिं, रटु तेहि सह अनुराग।।
कोटिन किरिया कर्म विरागा। करै नाम बिन जगत न भागा।।
कोटिन मख जप तप कोउ ठाने। रामनाम एक बार बखाने।।
कोटिन संध्या बंदन करहू। राम नाम बारक उच्चरहू।।
कोटिन रचै धर्म गोशाला। राम नाम बारक जन पाला।।
कोटिन पढ़ै पुराण सुवेदा। राम नाम वारक हर खेदा।।
कोटिन विधि गायत्री जापै। राम नाम एक बार अलापै।।
कोटिन रचै क्षेत्र सुर देवल। राम नाम रटु बारक ही भल।।
कोटिन पूजा पाठ करीजै। राम नाम वारक हि भनीजै।।
कोटिन ब्रह्मचर्य शुभ कर्मा। राम नाम सम तुलै न धर्मा।।
कोटिन साधन साधिये, कोटिन जनम सुधारि।
राम नाम की रटन सम, सुखद न कहत पुरारि।
अस विचारि जौ चहहु भलाई। रटहु रटावहु नामहि भाई।।

(बृहद् उपासना रहस्य श्री सियाराम नाम प्रसंग)

नाम अनन्य अधिकतर प्रियतम रटत जौन लय जोरी है।
सपनेऊँ तिन्हें आन अवलंब न विधि निषेध मय तोरी है।।
केवल श्री सियरामनाम गति सब ही सन मति मोरी है।
तासु प्रेमरजु बँधे फिरहि संग राम लखन सिय गोरी है।।

यहाँ हम नामानन्य साधकों के कुछ लक्षण श्रीनामकांतिसे उद्धृत करेंगे। ग्रन्थ विस्तार भय से अर्थ नहीं लिख रहे हैं। मूल ही मूल पढ़े।

पंचानन नहिं घास खाय कोउ काल बात सत साँची है।
राजहंस नहि चुगे कबहुँ संवुक सुरेख दृढ़ खाँची है।।
सुंदरि सती सिंगार सजी स्वामी विन अनत न राँची है।
युगलानन्यशरन मति मेरी नाम मोहब्बत माँची है।। ५०।।
सूर सूर प्रतिकाश रास क्या जाने भला बिचारो तो।
कूर धूर भव भूरट में निज नूर लखे कयों धारो तो।।
जीवन मूर सहूर सजे तिनके संग तन मन गारो तो।
पूरनपूर नाम निर्मल गुन होय अनन्य सम्हारो तो।। ७९।।

चाहे कोटि कथे कोई विज्ञान योग वर बातें।
दरसावै फल सद्य सकल पै मानो तुम उत्पाते।।
सावधान सुखखान नाम प्रियप्रान भजो तजि घाते।
युगलानन्य नाम सुमिरन बिन मोद नहीं दिन राते।। १४९।।
धन्य संत अति मान मन्य गुन गन्य नाम रस छकते हैं।।
नाम हीन पल पाव निरय सम समुझि व्यर्थ नहि बकते हैं।।
चित चख गगन चढ़ाय नाम बल किस ही तरफ न तकते हैं।
युगलानन्य नाम मारग से सपनेहु कभी न थकते हैं।। २२३।।
शव सम शुद्ध दशा धारे निज नाम स्वरूप समाते हैं।
सम संतोष पोष पाए कर धोये संतत माते हैं।।
नाम रहित साधन अनंत दुखवंत बिचारि बहाते हैं।
युगलानन्य नाम रसिया रस पीवत अति अलसाते है।। २२४।।
सकल मतन में निर्विरोध श्री नाम उचारन साँचो।
पक्षपात की बात नहीं दृढ़ धारि मोहब्बत माँचो।।
जो काउ कुछ कहे नई कल्पना गनो तेहि काँचो।
युगलानन्य नाम जपि पटुतर पाँच आँच ते बाँचो।। ३२८।।

❊ जापक की नामाकार वृत्ति ❊

उत्तम कोटि के नाम जापक अपनी वृत्ति को नाममय बनाते हैं। यदि आपके जपस्थल तक बाहर की अन्य ध्वनि आकर बरवश आपके कानों में पड़ती है, तो आप इतने उच्चस्वर से नामोच्चारण करें कि आपका कान दूसरी ध्वनि न सुनकर, केवल नाम ध्वनि ही सुने। यदि रात के सूने सन्नाटे में आप नामोच्चारण कर रहे हैं, तो आपकी नामध्वनि इतनी मीठी होनी चाहिये कि आपके आसपास सोये हुये आपके मित्रों के शयन सुख में विक्षेप न पहुँचे। जीभ नाम जप रही है तो अभ्यास ऐसा बनावें कि मन भी नाम जपें। तात्पर्य कि मानसिक और बैखरी जप साथ–साथ होवें ऐसा करना प्रारम्भ में कुछ कठिन अवश्य है, पर श्रीनाम सरकार की कृपा से असंभव नहीं है। कान को सतत् अपने द्वारा उच्चारित नाम ध्वनि को सुनने में संलग्न रखिये। नामध्वनिके अतिरिक्त कान कोई अन्य ध्वनि सुने ही नहीं। जपे एकमात्र नाम ही, यदि जीभ चार अक्षर सीताराम के अतिरिक्त कोई भी पांचवा अक्षर उच्चारण करती है, तो जीभ को यह व्यभिचार दोष लग जायेगा। उसी प्रकार कान कोई अन्य शब्द न सुनकर, श्रीनाम श्रवण में अव्यभिचारी बना रहे। आंखें भीतर व बाहर भी केवल नामाक्षरों को देखा करें। नाम दर्शन में आँख को सतीत्वव्रत धारण करना पड़ेगा।

स्वरचित श्रीवृहद उपासना रहस्य में परमहंस श्रीप्रेमलताजी महाराज श्रीमुखवाणी का अनुवाद करते हुए कहते हैं कि–

मम प्रसन्नता जो जन चाहे। रटै नाम करि नेम निवाहै।।

मम प्रसन्नता जो जन चाहे। रटै नाम करि नेम निवाहै।।
गर्जे रटे जपे सियरामहिं। पढ़े सुने समुझे मम नामहि।।
कहे कहावे गावे नामहि। ध्यावे पावे ते मम धामहि।।
मुख में वानी बैखरी, तेहि ते रटै प्रचारि।
लय लगाय ते लहहि मोहि, कर्म सुभासुभ जारि।।

श्रीबड़े महाराज स्वरचित श्रीसीताराम नाम सनेह वाटिका नामक ग्रन्थ रत्न में भी ऐसा ही आदेश हम नाम जापकों को दे रहे हैं। ताल स्वर में गाने की इच्छा हो; तो हमें नाम गान की रागबद्ध रूप से करना चाहिये। चित्त से ध्यान हो तो केवल श्रीनामाक्षरों के ही। अन्य साधनों के द्वारा प्राप्त सुख की उपेक्षा कर, श्रीनाम ही सरकार से सब सुख प्राप्त करने की इच्छा पोषण करें।

राम ही के नाम ते जो होई सोइ नीको लगै,
ऐसोई सुभाउ कछु तुलसी के मनको।

(श्रीकवि० ७/७७)

राम के नाम ते सो होउ, न सोउ हिएँ, रसना ही कहो है।
किये न कछू, करिवो न कछू, कहिवो न कछू मरिबोइ रहो है।।

(श्रीकवि० ७/९१)

श्रीनाम सरकार की प्रकाशमान अक्षरमय शोभा हृदय में पधरानी चाहिये। यदि यशोगान करना है तो एकमात्र श्रीनाम सरकार का ही। इस प्रकार श्रीनाम से निष्कलंक, अव्यभिचारिणी लगन लगानी चाहिये। अन्य साधन के आश्रय में जाने को व्यभिचार मार्ग मानें। श्रीबड़े महाराज श्रीनाम ही को अपना प्राण संजीवन मानकर, उन्हीं के उच्चारण में तत्पर रहते हैं।

नामहि गाइये, ध्याइये नामहि, पाइये नामहि से सुख सारो।
छाइये नामहि की छवि अंतर, गाइये नामहि को जस प्यारो।।
लाइये लाग अदाग सुनाम से, जाइये और नहीं ब्यभिचारो।
(श्री) युग्म अनन्य के प्रान सजीवन जानकी जीवन नाम उचारो।। १७९।।

पुन: श्रीबड़े महाराज का आदेश है कि हम श्रीनाम ही सरकार का गुण गावें, श्रीनाम ही के करकंज में बिक जायें। मन को भी श्रीनाम ही के रस में निरन्तर रमाया करें। विशुद्ध नामानुरागी महानुभावों के सत्संग सिन्धु में मगन होकर शरीर और मन को नामानुराग के पतिव्रत पथ पर चलने योग्य पवित्र बनावें। स्वाती की बूँद की प्यास जैसे पपीहे को होती है, उसी भाँति हमें श्रीनाम प्रेम की प्यास होनी चाहिये। वाद–विवाद में न पड़कर हमें निरंतर अखंड नामोच्चारण में तत्पर रहना होगा। इस प्रकार अपने जीवन को प्रेम रस से ओतप्रोत बनावें। इस प्रकार श्रीनामानुराग की भाव समाधि में विभोर रहें कि बाहर से देखने वाले को मालूम पड़े कि ये सो रहे हैं।

नाम गुन गाइये बिकाइये सुनाम कर
नाम रस माँझ मन नित ही रमाइये।
नाम अनुरागिन सुसंग सुचि सागर में।
होय के मगन तन मन अन्हवाइये।।
नाम–प्रेम–प्यास चित्त चाहिये अखंड निज
नेह निर्वाहिये विवाद बहवाइये।
(श्री) युगल अनन्य नाम सरस सनेह साज
साजिये सदैव सानुकूल अलसाइये।। १८४६।।

इस प्रकार श्रीनामानुरागी के एकांगी मार्ग से चलने पर, आपको थोड़े ही दिनों में यह चराचर विश्व नाम रटता सा प्रतीत होगा। आप जिस जगह बैठकर नाम रटते हैं, वह धरती नामोच्चारण करती हुई ही कान को भान कराएगी। आकाश से नामोच्चारण होता हुआ सुनेंगे। छत, दीवाल, गच्ची, खंभे, चौकट, किवाड़ सभी नामोच्चारण करते हुए प्रतीत होंगे। लता वृक्ष, कीट पतंग, पशु, पक्षी, सब नाम रटते हुए प्रतीत होंगे। बात ब्रह्मवैवर्त पुराण की है। देवर्षि नारदजी महाराज अम्बरीष को अपनी कुछ कालीन श्रीनाम साधना का अनुभव बताते हुए कहते हैं कि भई, मुझे नाम रटते–रटते विज्ञानमयी दृष्टि प्राप्त हुई। उस समय मैं क्या देखता हूँ कि सारा विश्व श्रीनाममय हो रहा है। वह अवस्था वाणी, मन तथा इन्द्रियों से परे की थी। किसी भी प्रकार अन्य व्यक्ति उसकी कल्पना भी नहीं कर पायेंगे। उस दशा में जो सुख मुझे हुआ था, वह मेरा हृदय ही जानता है कह नहीं सकता हूँ।

दृष्टं नामात्मकं विश्वं मया विज्ञानचक्षुषा।
वाड्मनो गोचारातीतं निर्विकल्पं प्रमोददम्।।

देवर्षिजी, मालूम पड़ता है, वह दशा इस समय आपकी नहीं है। नाना जगहों पर घूमने फिरने से, सर्वत्र का दृश्य देखिये और उसी दृष्ट वस्तु को कहिये, मन में विचारिये तो वह दशा कैसे रहे? नाम जापको के लिए घूमना फिरना मना है। श्रीनारदजी कहते हैं कि देखो उस दशा को लाने के लिए फिर से यत्न में हूँ। संग हो तो अनन्य नामानुरागियों का, नहीं तो, निर्जन देश का वास भला है। कट्टर नामानुरागी कहाँ पाइये? अहा! वह दिन परम सौभाग्यवाला कब आवे कि मैं निर्जन वन में सीताराम सीताराम रटते हुये, नामाप्रेम में उन्मत्त बनकर इधर–उधर डोलते हुये अपने जीवन के शेष दिन व्यतीत कर दूँगा।

कदाऽहं विजनेऽरण्यै निरन्तरमितस्ततः।
प्रलपन् राम रामेति गमिष्यामि च वासरान्।।

धन्य है वह नाममय जीवन!

आदर्श नामाकार वृत्ति वाले हैं श्रीहनुमतलालजी, जिसने अपने कलेजो को फाड़कर, भीतर पक्के अक्षरों में नामांकित दिखाया।

राम माथ, मुकुट राम, राम सिर नयन राम
राम कान, नासा राम, ढोड़ी राम नाम है।
रामकंठ, कंध राम, राम भुजा बाजूबंद
राम हृदय, अलंकार हार राम नाम है।।
राम उदर, नाभि राम, राम कटी, कटीसूत्र
राम वसन जंघ राम, जानु पैर राम है।
राम मन, बचन राम, गदा, कटक राम,
मारुति के रोम रोम व्यापक राम नाम है।।

नामाकार वृत्ति का रहस्य हृदयंगम करने के लिए कल्याण के भगवन्नाम महिमा अंक के पृ० २९३ से लिखित नाम—समाधि लेख पढ़ने को हम अपने सहृदय पाठक से अनुरोध करेंगे। हम उस लेख के कुछ अंश यहाँ उद्धृत करते हैं।

नामाकार वृत्ति का रहस्य हृदयंगम करने के लिए कल्याण के भगवन्नाम महिमा अंक के पृ० २९३ से लिखित नाम—समाधि लेख पढ़ने को हम अपने सहृदय पाठक से अनुरोध करेंगे। हम उस लेख के कुछ अंश यहाँ उद्धृत करते हैं।

'नाम जप के बहिरंग और अन्तरंग साधनों से सम्पन्न होकर, जब हम नामाभ्यास करने लगते हैं, तब नामाभ्यास की प्रगल्भ अवस्था में हमें 'नाम समाधि' की अवस्था प्राप्त होने ल गती है। इस अवस्था में हमारा नामजप केवल वैखरी वाणी से ही नहीं होता है। हमारे रोम—रोम से नामजप होने लगता है। हम मुख से तो रामनामोच्चारण करते ही हैं, किन्तु इनके साथ ही हमारी सारी ज्ञानेन्द्रियां, कर्मेन्द्रियों और अन्तःकरण चतुष्टय भगवन्नाम से आप्लावित होकर भगवन्नाममय हो जाते हैं। हम कानों से रामनाम की दिव्य मधुर ध्वनि सुनते हैं, रसना से दिव्य रामनामामृत का आस्वादन करने लगते हैं, त्वगिन्द्रिय से मानो रामनाम के दिव्य स्पर्श का अनुभव करते हैं, नेत्रों से रामनाम के दिव्य रूप का दर्शन करते हैं। हमारे अन्तःकरण चतुष्टय (मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार) के समस्त व्यापार नाममय हो उठते हैं। केवल इतना ही नहीं, वाहय जगत भी हमारे लिये रामनाममय हो जाता है। विश्वब्रह्माण्ड के अणुरेणु को हम रामनाम से ओतप्रोत पाते हैं। सिवा रामरूपऔर रामनाम के हम और किसी िवषय का अनुभव ही नहीं करते। हमारे सारे शारीरिक एवं मानसिक व्यापार नाममय अतएव राममय हो उठते हैं। (क्योंकि नाम नामी का अभेद है) और हम अपने—आपको अनंत नामामृत सिंधु में निमज्जित पाते हैं। हमारी सारी चित्त वृत्तियाँ सभी विषयों से हट जाती हैं और हम नाम स्वरूप में यानी भगवत्स्वरूप में ही अवस्थित हो जाते हैं। व्यवहार काल में भी हमारी यह नाम समाधि या नाममय अवस्था भंग नहीं होने पाती, निरंतर यह नाम की लौ लगी रहती है। इस प्रकार हम भगवन्नाम के सुलभ साधन के अवलंब से राजयोग, हठयोगादि की कष्टसाध्य समाधि के क्लेशों से बचकर इन्हीं के चित्तवृत्ति निरोध ध्येय को और समाधि को सुगमतया प्राप्त कर लेते हैं।
नाम समाधि में भी दो प्रकार हैं : एक अन्वय समाधि दूसरी व्यतिरेक समाधि। व्यतिरेक समाधि में हम केवल भगवत स्वरूप भगवान्नाम को छोड़कर किसी और भी वस्तु का अनुभव नहीं करते। सारा कार्य प्रपंच—दृश्य

जगत्–उस समय अपने मूलकारण भगवत्स्वरूपमें लीन हो जाता है। व्यतिरेक समाधि में हम व्यवहार जगतके समस्त व्यापारोंसे उपरत होकर केवल भगवत्स्वरूप भगवान्नाम से लीन रहते हैं। अन्वय समाधि का अनुभव हम व्यवहार काल में करते हैं। इसमें हम सकल दृश्य प्रपंच को भगवन्नाममय ही पाते हैं। इसी भागवत भूमिका से हमारे सब व्यवहार होते हैं। इस उदात्त भूमिका पर हमारे क्षुद्र अहं–मम भाव को यानी 'मैं और मेरा' इस परिछिन्न अहंकार मूलक व्यवहार को तनिक भी अवकाश नहीं रहता। उक्त नाम–समाधि की हम दो अवस्थाएँ पाते हैं– एक तो साधकावस्था और दूसरी सिद्धावस्था। साधकावस्था में हमें बारम्बार मन और इन्द्रियों को नामामृत–सागर में निमज्जित करना पड़ता है। किन्तु नामाभ्यास की सिद्धावस्था में तो हम जागते–सोते, उठते–बैठते, खाते–पीते, चलते–फिरते, हर अवस्था में हमारा नाम–जप अखंड रूप से और अनायास चलतारहता है, सुषुप्ति में भी खंड नहीं पड़ने पाता। दृष्टांत में अखंड नाम जप प्रभाव के कुछ उदाहरण इसी ग्रन्थ में द्रष्टव्य हैं।

❋ नाम नशा ❋

श्रीनाम रटते–रटते नामानुराग दिनानुदिन बढ़ता जाता है। नाम जप की उच्चदशा प्राप्त होने पर, जापक श्रीनामानन्द के मौज में छक जाता है। वह मस्ती की दश नामनशा कहाती है। वह अनिर्वचनीय सुख की दशा बड़ी स्पृहणीय है।

उस दशा को प्राप्त करने की शक्ति श्रीबड़े महाराज की विमल महावाणी में पढ़िये:–

नामहि के अनुराग छके, छल छांह तके तिनके दिशि नाहीं।
प्रीति परायन पाय पके, न बके, न जके, न थके, रस राही।।
भूतिहूँ के हुलके न अचानक, आन निकेत सुसाधन माही।
(श्री) युग्म अनन्य अजूब दशा, निज नाम नशा, दृगमेंझलकाहीं।। २२४८।।

अर्थात् अन्य साधनों को परित्याग कर, एकमात्र श्रीनाम जपते–जपते पहले श्रीनामानुराग की दशा तक पहुँचना चाहिये। श्रीनाम सरकार से स्वारथ परमारथ की चाह करना छल कपट है। उसकी ओर देखना भी नहीं चाहिये। नाम जप का फल नामानुराग ही है। नाम ही साधना और श्रीनाम ही साध्य भी है। नामीप्रीति परायण होकर, प्रीति को परिपक्व बनावे। श्रीराम से भिन्न अन्य शब्द मुख से कहे भी नहीं। न श्रीनाम प्रेमरस के मार्ग पर चलने में थकना अर्थात् रुकना चाहिये। नामानंद में विभोर होने पर भी चेष्टा रहे कि नाम जप छूटे नहीं। चाहे कैसा भी उत्तम साधन हो, उस साधन के द्वार पर झाँकने भी नहीं जायँ। इस प्रकार श्रीनामानुराग के एकांगी मार्ग पर चलने से श्रीनामनशा की विलक्षण दशा उतर आवेगी। उस समय नानुराग में जापक को दोनों नयन अलसोहैं, ललौहें दीखने लगते हैं। श्रीनाम रटें और अधिकाधिक रटन की भूख बढ़ती जाय। तब आपको ऐसा नामानुराग प्राप्त होगा कि आप आपादमस्तक उस नाम प्रेम रस में मग्न हो जाइयेगा। मृत्यु की आशंका रंचक भी नहीं रह जायेगी। तब श्रीरूप, धामलीला भी आपके लिये अप्राप्य नहीं रहेंगी। श्रीनाम में ही सब स्थित रहते हैं तथा नाम ही से सब प्रगट हो जाते हैं। आपका श्रीनामानुराग

सीताराम नाम साधन

ी रसमोद कुञ्ज बिहारी बिहारिणी जू

श्रीरूपानुराग में परिवर्तित हो जायेगा। अनुपम प्रेम होगा वह। नाम जप कर अनुभव–सिद्ध–महानुभावों का संग करिये, तो श्रीनाम के सूक्ष्म गूढ़ रहस्यों की जानकारी प्राप्त होवे। निस्ताप नाम नशा में मतवाला बनने के लिए आपको विषय का भ्रमपूर्ण सुख भूल ही जाना होगा।

नाम रटे अभिलाष बढ़ाय, लहे रस भावहपात अनूपम्।
मौत को धौल न भाल लगे, जगे जानकिनाह से प्रेम निरूपम्।।
संत समागम कीन्हे बिना नहि भेद खुले अति झीन स्वरूपम्।
(श्री) युग्म अनन्य विसारि विषय भ्रम, मातिये नाम नशा गतधूपम्।।१२८९।।

श्याम सुन्दर श्रीजानकीरमणजू की मनमोहिनी मूर्ति आपको श्रीनामाक्षरों के भीतर से ही प्रगट होती हुई प्रतीत होगी। विश्वास प्रेमपूर्वक नाम रूपी महामंत्र को बैखरी वाणी में उच्चारण करते हुए आप युगल रूप दर्शनों की प्रतीक्षा में बने रहिये। आपके हृदय में श्रीनाम कृपा से कोटि–कोटि सूर्य चन्द्रमा के समान प्रकाश करते हुए श्रीयुगलकिशोर प्रगट हो जायेंगे। उस समय आपको वाद्ययंत्रों की झनकार के समान कर्णसुखद नामध्वनि बहुत मीठी लगेगी। तब तो आपके हृदय में विलक्षण नाम नशा चढ़ जायेगा।

माधुरि सूरति साँवरे की, झलकाति सुनाम ललाम के अंतर।
जोहिये प्रीति प्रतीति समेत, उचारि के रंग उमंग से मंतर।।
आपहि आप प्रकाश उठे उर रंग सुभान समान बसंतर।
(श्री) युग्म अनन्य अजूब नशा निज जानि परै सुनि रागिनी यंतर।।१२५०।।

श्रीबड़े महाराज ऐसे नामानुरागी को बड़भागी कहते हैं और आदेश देते हैं कि नित्य नवीन स्नेह बढ़ाते हुए, नाम का नशा पीया करो। प्रियतम प्राणवल्लभ श्रीजानकी कातजू के प्रति बड़ी सुहागिनी प्रीति प्रतीति जग पड़ेंगी। तब तो वह नाम की खुमारी कभी हृदय से उतरेगी ही नहीं, फिर आप दिन रात (लैल निहार) दिव्य युगल विहार का दर्शन करते रहिये। वह नाम रूप विहार दर्शन जन्य जो अविरल रति आपको प्राप्त होगी, उस दशा में शोक का नामोनिशान नहीं रहता है और अभागे लोगों को तो जो विषयसुख का नशा चढ़ता है, वह सर्वथा विकारपूर्ण है, निस्सार है, हृदय का कलंक हैं

नाम नशा नित पीजिये नेम से नेह नवीन सजाय सुभागी।
फेर नहीं उतरे हिय से प्रिय प्रेम प्रतीति सोहागिनि जागी।।
लैल निहार बिहार विलोकनि शोक नएक रती रति रागी।
(श्री) युग्म अनन्य विकार अगार असार नशा सब ही दिल दागी।।१९२२।।

श्रीबड़े महाराज कहते हैं कि श्रीसीतारामनाम के नशा के समान दिव्यानन्द दायक और नशा कहाँ पाइये? गाँजा, भाँग, मद्यादि वाले लौकिक नशा तो सदा विकार पूर्ण होते हैं। दूसरी बात यह है कि लौकिक नशा किसी निश्चित अवधि तक रहता है। एक पहर रहे, दो चार आठ पहर तक हद हो गया। फिर उतर जाता है। नाम नशा चढ़ा तो फिर उतरने को नहीं। युग युगान्त तक बना रहेगा। भगवान् शंकर तो नाम–नशा

को प्राण समान जोगाते रहते हैं। उनके हृदय में, नयन में श्रीनाम—नशा निरन्तर चढ़ा रहता है। अतः इसी नाम—नशा में तुम्हें भी दिन—रात छके रहना चाहिये। नाम—नशा से भिन्न और अभिलाषा हो ही नहीं सकता।

रामनाम अमल समान न अमल आन
समल जहान माँझ अमल प्रमानियो।
और जेते मादक रहम तेते जाम एक
दोय चार आठ तक अवधि सुजानियो।।
उमापति प्रान सर्वेश युग बरनेश
सतत सुनशा दृग दिल में निसानियाँ।
(श्री) युगलअनन्य याते याही मद माँझ भोर
साँझ रहो मगन न और चाह आनियो।। १०५४।।

सन्त कबीरजी महाराज भी यही कहते हैं। नामनशा तो उतरने को नहीं। जहाँ लौकिक मादक वस्तुओं का नशा क्षण—क्षण चढ़ता उतरता रहता है— वहाँ नाम—नाश दिनानुदिन बढ़ता ही जायेगा। श्रीनामक्षरों के दर्शन करो, अथवा नामानुरागी की दशा देख लो, तब नशा चढ़े, नामानुरागीके मुखसे नामोच्चारण सुनो तब नशा चढ़े, श्रीनाम का ध्यान करो, तब तक वह नशा तन को समाधिस्थ ही कर देता है। अपना अनुभव सुनाते हुए श्रीसन्तजी कहते हैं कि मैं तो उस नाम मदका प्याला पीकर उन्मत्त ही बन गया हूँ। श्रीनाम के प्रति तभी से संशय भगा। इसी नशे के स्पर्श से तो सदन कसाई और सुग्गे को नाम पढ़ाने वाली वेश्या तर गई। गूंगे के गुड़ खाने के समान, इस नशे का स्वाद हृदय जानता है। हृदय को जीभ हो तो कहे।

नाम अमल उतरै नहि भाई।
और अमल छिन—छिन चढ़ि उतरै, नाम अमल दिन बढ़ै सबाई।।
देखत चढ़ै सुनत हिये लागै, सुरत किये तन देत घुमाई।
पियत पियाला भये मतवाला, पायो नाम मिटी दुचिताई।।
जो जन नाम अमल रस चाखा, तर गइ गनिका सदन कसाई।
कहे कबीर गूंगे गुड़ खाया, बिन रसना क्या करै बड़ाई।।

श्रीराम—स्नेहीपंथ के सन्त श्रीरामजनजी भी इसी राग में अपना स्वर मिला रहे हैं। मैंने उस नाम जापक की दशा देखी है जो दिन—रात केवल श्रीरामनाम ही का उच्चारण करते रहते हैं। उन्हें मोह माया छू तक नहीं गई है। आठो पहर श्रीरामनाम के नशा को पान करते रहते हैं। त्रिगुणमय स्थूल शरीर को तो वे मानो भूल ही गये हैं। वह नशा उनमें सदा एकरस बना रहता है। कभी उतरता नहीं। मालूम पड़ता है दिन—दूना रात—चौगुना बढ़ता जा रहा हो। उनकी दशा देखकर मैं भी नाम—दिवाना बन गया हूँ।

संतो देखि दिवाना आया।
निसिदिन रामहि राम उचारै, जाके नही मोह नहि माया।
आठौ पहर राम रस पीवै, बिसर गये गुण काया।
अमल एक रस उतरै नाहीं, दूणादूण चढ़ाया।।

इधर श्रीदादूजी अलग नाम माधुरी पानकर मतवाले बन रहे हैं। आप सर्वशिरमौर रामनाम पर बलिहार हो रहे हैं। श्रीनाम का कौन कौन गुण गावें? दुस्तर संसार सागर से पार उतारें श्रीनाम, नरक निवारे श्रीनाम! श्रीनाम कभी तो अपनी छटा दिखाते हैं, कभी अपने तेज में मिलाते हैं, कभी हृदय में ज्योति जगा देते हैं। आप ऐसे एक सुखदाता नामामृत में अनुरक्त हो रहे हैं।

नाऊँ रे नाऊँ रे सकल सिरोमनि, नाऊँ रें मैं बलिहारी जाऊँ ते।
दूतर तारै पार उतारै नकर निबारै नाऊँ रे।
तारणहारा भव जल पारा, निर्मल सारा नाऊँ रे।।
नूर दिखावै, तेज मिलावै, जोति जगावै नाऊँ रे।
सब सुखदाता अमृत राता दादू माता नाऊँ रे।।

उधर भगवान गौरांग महाप्रभु से पूछिये। आप कहते हैं संसारी जन हमें चाहे जितना निन्दें, हम कुछ विचार नहीं करते हैं। जिसको मुख है वह जो चाहे सो कहो हम तो हरिरस मदिरा से मत्त हैं। कभी पृथ्वी पर लोट पोट होते हैं, कभी नाचते हैं, कभी सोते हैं। हम अपने आनन्द में मग्न हैं। हमको दूसरे के कहने—सुनने की कुछ परवाह नहीं है।

परिवदतु जनो यथातथायं, ननु मुखरो न ततो विचारयामः।
हरिरस मदिरामदेन मत्ता, भुवि विलुठाम नटाम निर्विशामः।।

जो नाम के रसिक हैं, जिन्हें असली रसास्वादन काकभी अवसर प्राप्त हो गया है वे तो फिर दूसरी ओर भूलकर भी नहीं ताकते! न उन्हें शरीर की कुछ परवाह रहती है न जगत् की। मतवाले शराबी की तरह, नाम प्रेम में मस्त हुए वे कभी हँसते हैं, कभी रोते हैं, कभी गाते हैं, कभी नाचते हैं, उने लिये फिर कोई अपना पराया नहीं रह जाता। वास्तव में ऐसे ही पुरुष नाम के प्रकृत भक्त हैं और इन्हीं लोगों के द्वारा किया हुआ नामोच्चारण जगत् को पावन कर देता है।

नाम महामदिरा मनमोहनि जे जन छकि छकि पीते हैं।
कोटिन कल्प विकल्प भए पर नशा जैन नहिं रीते हैं।।
झुकि झुकि रहे रहस राते दृग मृग मदमस्त अभी ते हैं।
युगलानन्य अमर पद पाये हर हमेश ही जीते हैं।। — श्रीनाम कांति

नामरुचि के लिये विपत्ति का स्वागत

सुख के माथे सिल पड़े, नाम हृदय से जाय।
बलिहारी वा दु:ख के, पल–पल नाम रटाय।।

भगवन्नाम का स्मरण प्राय: विपत्तिकाल में ही हुआ करता है। जब मनुष्य के सब सहारे छूट जाते हैं, कहीं से कोई आशा नहीं रहती, किसी से कोई आश्वासन नहीं मिलता, जगत् के लोग मुखसे नहीं बोलना चाहते, निर्धनता, निर्जनता, आरोग्य हीनता और अपमान से मन घबरा उठता है, दु:खों की विषमयी ज्वाला से हृदय दग्ध होने लगता है, घर के मित्र, स्नेही और सुहृदों का एकान्त अभाव हो जाता है तब प्राण रो उठते हैं। हृदय खोजता है किसी शीतल सुरम्य वस्तु को जिसे पाकर उसे कुछ शीतलता, कुछ शान्ति प्राप्त हो सके। ऐसे दु:खसमयमें छटपटाते हुए व्याकुल प्राण स्वाभाविक ही उस अनजाने और अनदेखे हुए प्रियतम की गोदका आश्रय ढूँढ़ते हैं। ऐसे अवसर पर बड़े–बड़े शास्त्राभिमानी, शास्त्रार्थ में तर्क–युक्तियों से ईश्वर का खण्डन करने वाले, धन और पद के मद में ईश्वर को तुच्छ समझने वाले, विषयों की प्रमाद–मदिरा के अविरल पान से उन्मत्त होकर विचरने वाले मनुष्यों के मुँह से भी सहसा ऐसे उद्‌गार निकल पड़ते हैं कि हे राम! हे ईश्वर, तू ही बचा! तेरे बिना अब कोई सहारा नहीं है। ऐसे ही विपद्–संकुल समय में जिह्वा स्वच्छन्दता से भगवन्नाम का उच्चारण करने लगती है और ऐसे ही शोकमोहपूर्ण समय में मन और प्राण भी उसका स्मरण करने लग जाते हैं। इसी लोभ से तो माता कुन्ती ने भगवान् श्रीकृष्ण से विपत्ति का वरदान माँगा था। उसने कहा था 'हे कृष्ण! तेरा स्मरण विपत्ति में ही होता है। इसलिये मुझे बार–बार विपत्ति के जाल में डालता रहा!

तात्पर्य यह कि भगवन्नाम का स्मरण प्राय: दु:खकाल में होता है। दु:खी, अनाश्रित और दीन जन ही प्राय: उसका नाम लिया करते हैं। इसलिए कुछ लोग जो विषयों के बाहुल्य से मोह वश अपने को बड़ा बुद्धिमान, धनजनवान और सुखी मानते हैं, भगवन्नाम लेकर अपनी समझ से दु:खी और अनाश्रितों की श्रेणी में सम्मिलित होना नहीं चाहते।

❊ निष्काम साधकोत्तम ❊

हम बहुत बड़ी मूल्यवान् वस्तु को बहुत सस्ते दामों पर बेच देते हैं। सिर गें मामूली दर्द होता है तो उसे मिटाने के लिये 'राम–राम' कहते हैं? सौ पचास रुपये की कमाई के लिए राम–नाम लेते हैं, स्त्री बच्चो की आरोग्यता के लिये रामनाम लेते हैं, मान बड़ाई पाने के लिए रामनाम कहते हैं, संतान सुख के लिए रामनाम कहते हैं। फल यह होता है कि हम रामनाम लेने पर भी कमाने के साथ ही लुटाने वाले मूर्ख समाज जहाँ के तहाँ रह जाते हैं। चलनी में जितना भी पानी भरते रहो, सभी निकल जायेगा। हमारा अन्त:करण भी कामनाओं के अनंत छेदों से चलनी हो रहा है। कुछ ठहरता नहीं! रामनाम का फल कैसे हो? प्यास

लगी हुई है, जगत् में सुख की पिपासा नहीं है? पवित्र जलका भी झरना झर रहाहै। रामनाम के झरने का प्रवाह सदा ही अवाधित रूप से बहता है, परंतु हम अभागे उस झरने के आगे अंजलि, बाँधकर जल ग्रहण नहीं करते। हम उसके आगे रखते हैं हजारों छेदों वाली चलनी। जिसमें न तो कभी पानी ठहरता है और न हमारी प्यास ही बुझती है! सकाम भाव से लिये हुए नाम से भी नाम के असली फल आत्यन्तिक सुख से हम इसी प्रकार वंचित रह जाते हैं। प्रथम तो कोई रामनाम लेता ही नहीं और यदि कोई लेता है तो वह सकाम भाव से, धन, संतान, मान बड़ाई की वृद्धि के लिए लेता है। नियमानुसार फल में जहाँ का तहाँ ही रहना पड़ता है। परन्तु नाम की महिमा अपार है इसप्रकार लिये हुये नाम से फल तो होता ही है। सकाम कर्म की सिद्धि भी होती है और आगे चलकर भगवद्भक्ति भी प्राप्त होती है। जब मैं सकाम भाव से नामजप किया करता था तब कई बार मेरी विपत्तियाँ टली हैं, जिनके टलने की कोई आशा नहीं थी। मेरी केवल यह विपत्तियाँ ही नहीं टली, उसका और भी फल हुआ। नाम में रुचि बढ़ी और आगे चलकर निष्काम भाव भी हो गया। रामनाम का अंतिम परिणाम है श्रीजानकीरमण में एकांत प्रेम हो जाना। एकांत प्रेम होने के बाद प्रेममय के मिलने में जरा सा भी विलंब नहीं होता। जैसे ध्रुवको और विभीषण को राज्य की भी प्राप्ति हुई और भगवत्प्रेम की भी। इसलिये शास्त्रों में चाहे जैसे भगवनाम लेने के भी बड़ा उत्तम बतलाया है।

रामनाम गुन गुप्त धन, पावे हरिजन संत।
करे नहीं जो कामना, दिन दिन होय अनंत॥

कुछ लोग कह दिया करते हैं कि हमें तो नाम जपते बहुत दिन हो गये, कोई लाभ नहीं हुआ। पर ऐसा कहने वाले यदि अपने हृदय की ओर देखें तो उन्हें पता लगेगा कि उन्होंने सकाम भावों में नाम जपके फलको खो दिया है। निष्काम भजन हो तो निश्चय ही वह बहुत तेजी से बढ़कर साधक का शीघ्र कल्याण कर देता है।

इस जगत में सुखिया नामजापक ही है

जन्मत मरत जीव जग अगनित तिनमें सुखिया सोई है।
सकल दुराग्रह त्यागि दिवशनिशि रटते आखर दोई है॥
सपनेउ नहि परवाह किसी की दुर्मति भवभय खोई है।
प्रेमनलता सियराम नाम बिनु हितू न जाने कोई है॥
भजन करय भगवान सृष्टि सब भगवत के आधीना है।
भजन करत यह जानि संत शुचि बैठि इकंत प्रवीना है॥
भजन हीन नर दुखित रहहिं नित फिरहिं मलिन ज्यों दीना हैं।
भजन प्रभाव सुप्रेमलता जन पावत सुख अति पीना है॥
भजन करहिं मन मारि साधु जे ते सियवर के प्यारे हैं।
करत लगत सुख सकल लोक के निन्हि कहँ बेद पुकारे हैं॥

भजनानन्द लहहि इच्छित फल होत न कबहूं दुखारे हैं।
प्रेमलता प्रिय सबहि संत ते अपर फिरहि जग मारे हैं।।
श्री सियारामनाम मुख रटना भजन इसी को कहते हैं।
अपर अर्थ करि भजन शब्द को भ्रमदायक उर दहते हैं।।
तर्क वितर्क त्यागि जे नामैं धरि अनन्य मति गहते हैं।
प्रेमलता लय लाय रटत नित परम सुखी सोइ रहते हैं।।
पल—पल में जो होत परम सुख सो न बखाना जाता है।
जीवत ही भये मुक्त नाम रटि रसिक त्यागि जग नाता है।।
अटहि सुखेन इष्ट धामादिक ठाट फकीरी भाता है।
दरसत तुच्छ अमीरी का सुख तेहि सुख सम न तुलाता है।।
नामहि की करुना लवलेश से होता हजार करोर महामुद।
काम कषाय रहे न कहीं फिरि मोह रु कोह करे न जरा तुद।।
आठहू याम सुदामहि फेरिये सिघ्र नसे विष वासना को छुद।
युग्म अनन्य अकाम भये पर जानकी जीवन आय मिले खुद।।

पेखिये प्रत्यक्ष स्वच्छ अक्ष खोलि आप ही से
नाम जो न रटे ताको अखिल अगम है।
वाको दुरलभ तीन काल में सुगति मीत
बिना मोल मूजी सो विकाय हाथ जम है।।
नाम नेह वानन के मौज छन छन नित्त
वित्त वर पाय सपनेहू में न गम है।
युगल अनन्य प्रीति परम पुनीत पर
नाम के अधासर सुख सकल सुगम है।। २०४३।।

कहिये बुझाय टुक मोहूँ संग मूढ़ मन
कपट कलंक छावनीन अव छाइये।
लोक माहि मान परलोक सुखखान दोउ
नाम के अधीन ताते खूब ताहि गाइये।।
जानि तोहि आपनो सनेही साँचो सीख देऊँ
मानैगो जो मीत तौ अभीत सरसाइये।
युगल अनन्य जनि भूलिये भरम मग
कौन सुख स्वाद जो न नाम जपि पाइये।।

'नानम दुखिया सब संसारा। सुखिया केवल नाम अधारा।'

नाम—जापक—महत्त्व

श्रीमार्कण्डेय पुराण में भगवान् वेदव्यासजी श्रीसूतजी से कहते हैं—वह कुल धन्य है जिसमें प्रभुके प्यारे सत्यसंकल्प रामनाम जप तत्पर पुत्ररत्न उत्पन्न होते हैं।

धन्य कुलवरं तस्य यस्मिन् श्रीराम तत्परः।
जायते सत्यसंकल्पः पुत्रः श्रीशेषवल्लभः।।

श्रीदक्षस्मृति में कहा गया है कि जहाँ परमपावन श्रीरामनाम—जापक उत्पन्न होता है, वह कुल धन्याति—धन्य है और धन्यहैं माता—पिता।

धन्या माता पिता धन्यो धन्याद्धन्यतमं कुलम्।
यत्र श्रीरामनाम्नस्तु जापको जायते शुचिः।।

श्रीधर्मराज स्मृति में कहा गया है कि जहाँ श्रीरामनाम जप में संलग्न महापुरुष निवास करते हैं, वह स्थल, वह देश धन्य है। साक्षात् श्रीसाकेतधाम ही के समान उसे समझना चाहिए।

स वै धन्यतरो देशः साक्षाच्छ्रीधाम सन्निभः।
यत्र तिष्ठन्ति श्रीरामनाम संलाप नैष्ठिकाः।।

श्रीआदिपुराण में भगवान् श्रीकृष्ण अर्जुनजी से कहते हैं कि नाम—जापक यदि नीच वर्ण का है तो भी श्रीराघवजू उससे इतनी प्रीति करते हैं, जितनी गुणातीत सन्त से भी नहीं करते।

नामयुक्ता जनाः पार्थ जात्यन्तर समन्विताः।
प्रीतिं कुर्वन्ति श्रीराम न तथा नष्ट षड्गुणाः।।

श्रीवशिष्ठ रामायण में श्रीमुख वचन है जो जितेन्द्रिय होकर मेरा नाम—स्मरण करता है, उससे बढ़कर ब्रह्माण्ड भर में मुझे प्रिय नहीं हैं

मन्नाम संस्मरेद्यस्तु सततं नियतेन्द्रियः।
तस्मात् प्रियतमः कश्चिन्नास्ति ब्रह्माण्डमण्डले।।

मम प्रसन्नता हेतु मोर ये द्वादश भक्ति प्रधाना है।
नवधा दशधा परा सुप्रेमा वेद पुराण बखाना है।।
इक इक के बहुभेद बखानत जानत सन्त सुजाना है।
'प्रेमलता' पै नाम जापकनि समन मोहि प्रिय आना है।।
सोवत जागत उठत परात सुनाम रटन जेहि लागी है।
तेहि समान तिहुँ लोक न दूसर पुण्यमान बड़भागी है।।
पूजनीय शुचि संत सनेही प्रभुप्रिय सोई मति जागी है।
प्रेमलता सोई गुणी गनी बुधज्ञानी सोई वैरागी है।।

जानकी जीवन को सोइ प्राणप्रिय है।
जाके नहिं आस विश्वास अभिलाष लोक
रंजना रुचत एक नाम सियपीय है।
देह गुजरान जैसे तैसे करै मान बिन
खान पान सरस सोहात नहि हीय है।।
बसै इष्टधाम अभिराम गुण गावै सदा
परसे न भूलिहू कदापि वित्त तोय है।
युगल अनन्य मोसे खलन को कौन गनै
जानकी जीवनजू को सोइ प्राणप्रिय है।। ९९०।।
अन्त समे रामनाम बारक कहत जौन
तौन जन जात अनयास परधाम है।
साधन समूह आस दास पन जग भास
मिटत कलंक काश पास दुख रास है।।
अहो भाग रटत रहत एकरस जोइ
सोई है अदाग रागरस शुचि वास है।
युगल अनन्य नाम निरत सुजन नित्य
जानकी–जीवन प्राणप्रीतम सुदास है।। २६०५।।
सीताराम परम परात्पर नाम सुख
सार सद धाम जौन जीह जक लाय जप।
कारक हमेश भव वारक विशेष ताको
अनयास कटत कलेश रो गसोक तप।।
जानकीविहारी छबिकारीजू को प्राणप्रिय
होत सो सदैव सानुकूल दल छाड़ि छप।
युगलअनन्य नाम कीरतन आठो याम
उचित विहाय वद वाद अपवाद दप।।

शिव सिद्धान्त नामक ग्रंथ में भगवान् शंकर जी कहते हैं कि हिमालय और विन्ध्याचल के मध्य भाग आर्यावर्त निवासी श्रीरामनाम उच्चारण करने वाले परम भागवत माने जाते हैं और मेरे लिये तो ऐसे नाम जापक प्राणों से बढ़कर प्रिय हैं।

हिमवद् विंध्ययोर्मध्ये जना भागवता: मता:।
उच्चारयन्ति श्रीरामनाम प्राणात्प्रियं मम।।

श्रीवैष्णवस्मृति में कहा गया है कि जो सोते खाते, उठते, बैठते, चलते सदैव रामनाम जपते रहते हैं, उन्हें बार–बार प्रणाम है।

स्वपन् भुञ्जन ब्रजंस्तिष्ठनुश्ठंश्च वदंस्तथा।
यो वक्ति रामनामाख्यं मन्त्रं तस्मै नमो नमः।।

श्रीआदि रामायण में भी यही बात कही गयी है कि इस भूलोक में जो सतत् नामगान करते रहते हैं, उनके लिये बार—बार नमस्कार है।

गायन्ति रामनामानि सततं जे जना भुवि।
नमस्तेभ्यो नमस्तेभ्यो नमस्तेभ्यः पुनः पुनः।।
जहँ तहँ जायँ नाम जापक तन तहँ तहँ परमानंद पावैं।
पावन करैं सुनाय नाम धुनि पतितनि कहँ चहुँ श्रुति गावैं।
दरश परस जिन्ह कर शुभदायक बचननि में रस बरसावैं।
प्रेमलता कृतकृत्य होयं ते जे नामिनि पद शिर नावै।।

श्रीआदि रामायण में श्रीमुख वचन है कि मेरे नाम कीर्त्तन से आनन्दमग्न रहने वाले मानव पुण्यवानों में शिरमौर हैं। उनके चरण रज से यह वसुधा भी पावन बन जाती हैं।

मन्नाम कीर्त्तने हृष्टो नरः पुण्यवतां वरः।
तस्यापि पाद रजसा शुद्ध्यति क्षिति मण्डलम्।।

धर्मराज स्मृति में स्वयं महाभागवत श्रीधर्मराजजी कहते हैं कि ध्याननिष्ठ रामनाम जापक को देखते ही मैंउनके सत्कार में स्नेह पूर्वक उठकर खड़ा हो जाता हूँ।

दृष्टवा श्री रामनाम्नस्तु जापकं ध्यान तत्परम्।
अभ्युत्थानं सदा स्नेहात् करिष्येऽहं सदा मुने।।

गार्गीय संहिता में भी श्रीधर्मराज अपने यमदूतों को आदेश देते हुये कहते हैं कि हम लोग नामप्रेमी सज्जन के गुणगान करते रहते हैं तथा नाम जापक के चरण सेवक अपने को मानते हैं। क्योंकि श्रीरामनाम ही के प्रभाव से ब्रह्मा सृष्टि करने में, श्रीविष्णु पालन करने में तथा श्रीशंकर जगत के संहार करने में समर्थ हुए हैं। अतः खबरदार दूतो! जिस घर में नाम कीर्त्तन होता हो, वहाँ से सावधान होकर दूर—दूर रहना।

वयं सदा नामसुहृद् गुणेरता स्तथैवतज्जापक पादसेवकाः।
प्रभावते यस्य हरीश ब्रह्मा विभर्ति विश्वं सलयं ससम्भवम्।।
तस्मात् प्रमादमुत्सृज्य दूरतः किंकरास्सदा।
श्री रामनाम सम्पन्ने गृहे गच्छन्तु नैव हि।।

श्रीवात्स्यायन संहिता कहती है कि श्रीरामनाम समस्त जगत् के आधार हैं, अखंड सर्वेश्वर हैं, इस कलिकाल में जो इनका सादर जप करते हैं, वे धन्य हैं, पूजनीय हैं। उनके लिये कहीं कभी कोई भय नहीं रहता। मैं सत्य कहता हूँ। मेरी बात को अन्यथा न मानना।

समस्त जगदाधारं सर्वेश्वरमखाण्डितम्।
रामनाम कलौ नित्यं ये जपन्ति समादरात्।।

ते धन्याः पूजनीयाश्च तेषां नास्ति भयं क्वचित्।
सत्यं वदामि विप्रेन्द्र नान्यथा वचनं मम।।

मत्स्यपुराण में कहा है कि श्रीरामनाम स्मरण निष्ठ सज्जनके नामस्मरण करने से महान पापी भी सर्वपातक मुक्त हो जाता है तथा अभिलाषित मनोरथ पाता है।

नामस्मरणनिष्ठानां नामस्मृत्या महाघवान्।
मुच्यते सर्व पापेभ्यो वाञ्छितार्थं च विन्दति।।

श्रीआदि पुराण का श्रीकृष्ण वचन है कि श्रीरामनाम में निरत रहने वाले ही श्रीरामचन्द्रजू के भावुक भक्त हैं। ऐसे भक्त के दर्शनों से रसात्मिका भक्ति प्राप्त होती है।

रामानामरता ये च ते वै श्री राम भावुकाः।
तेषां संदर्शनादेव भवेद् भक्ती रसात्मिका।।

श्रीआदि रामायण में कहा गया है कि जब तक श्रीनाम जापक रामभक्त के सतत चरण सेवा न करोगे, तब तक तुम्हारे सुख से इस परमदुर्लभ रामनाम का उच्चारण होगा कैसे?

यावन्न राम भक्तानां सततं पाद सेवनम्।
रामानाम्नः कथं तेषां मुखादुच्चारणं भवेत्।।

ऐसे विशुद्ध नाम जापक संत प्रभु कृपा से ही मिलते हैं—

जेहि पर कृपा करहिं प्रभु पूरन तेहि कहँ संत मिलाते हैं।
परम विशुद्ध नामरस माते जे उर कमल खिलाते हैं।।
जिन्ह कर सेवा संग रंग लहि खलगगहूं पिघलाते हैं।
प्रेमलता दै नाम सुधा श्रुति जीवत मुये जिलाते हैं।।
नामी नाम प्राण प्रिय जिन्ह कहँ ते जानहु प्रभु प्यारे हैं।
रटहि नाम निज अरु नामिनि पर तन मन धन सबु बारे हैं।।
तिन्ह के सुकृत समूह लिखत शिव शेष गणेशहुँ हारे हैं।
प्रेमलता नामिनि के सेवक नामिनिहूँ ते भारे हैं।।

यहाँ नामिनि का अर्थ नाम जापक समझना चाहिये। श्रीमुख वचन है कि—

नाम जापकनि की सेवा सम अपार न प्रिय मोहि कोई है।
पुरवहुँ मैं तिन्ह के सुमनोरथ भावत मन जोई जोई है।।
नाम सनेही—नेहिनि के हित राखहुं नहि कछु गोई है।
प्रेमलता अस जानि सेउ नित नामिनि के पग दोई है।।
बिनु समुझे नर पचत मूढ़ बहु नाना विधि दुख पावत है।
मम हित अमित उपाय करत नहिं नामिनि के पग ध्यावत है।।
कर्म धर्म जप योग यज्ञ व्रत तेहि बिनु मोहि न भावत है।

प्रेमलता अस जानि सेउ नित जे मम नामहि गावत हैं।।
सेवा संग रंग नामिनि कर कामिनि कहँ गति दायक है।
बड़भागी रटि नाम सुसेवहि नामिनि पद सब लायक है।।
रक्षा करहिं सदा नामिनि की सियवर धरि धनु शायक है।
प्रेमलता तजि आस त्रास भजु नामहि सबके नायक है।।
संत रहै अलमस्त जगत में रामनाम गुन गाते हैं।
रिद्धि सिद्धि सुख संपति सादर संग चले जित जाते हैं।।
भक्ति ज्ञान वैराग्य बोध कर जीवों को सिखलाते हैं।
प्रेमलता करि संगति जिन्ह की पापिउ मुक्ति सुपाते हैं।।

श्रीआदि पुराण में भगवान् श्रीकृष्ण अपने सखा श्रीअर्जुन से कहते हैं कि नाम जापकों को देखकर, उनके प्रति जो आदर दृष्टि रखता है, वह परमधाम प्राप्त कर, श्रज्ञीरघुलालजू के साथ परमानंद लूटता है। पुनः नाम जापक को देखते ही उन्हें प्रणाम करने वाला; इतने सत्कर्म से सब पापों से मुक्त हो जाता है। नाम जापक के दर्शनों से जिसका हृदय श्रद्धा से स्निग्ध हो जाय, वह परमानन्द सिन्धु परम साकेत धाम को जाता है।

नामयुक्ता ञ्जनान् दृष्ट्वा यः पश्यते सादरं सखे।
स याति परमं स्थानं रामेण सह मोदते।।
नामयुक्ताञ्जनान् दृष्टवा प्रणमन्ति च ये नराः।
ते पूतास्सर्व पापेभ्यः कर्मण तेन हेतुना।।
नामयुक्ताञ्जनान् दृष्टवा स्निग्धो भवति यो नरः।
स याति परमं स्थानं परमानन्द सागरम्।।

रामनाम जप से प्रज्ञाचक्षु प्राप्त परमहंस श्रीप्रेमलताजी महाराज की सिद्ध वाणी प्रमाणिक है। आप नाम जापक के सेवको कों प्राप्त होने वाले लाभ इस प्रकार बताते हैं।

नाम रसिक संतनि कहँ जो कोइ भोजन बसन सुदेते हैं।
बड़भागी ते जीव जगत में जीवन को फल लेते हैं।।
तन मन धन करि देत समर्पन संतनि हित जु सहेते हैं।
प्रेमलता परिवार सहित ते बसहि जाइ साकेते हैं।।
कोटिनि भजन तीर्थ जप तप ते अधिक संत सेवकाई।
चहुं युग चहुँ श्रुति विदित बात यह त्रिभुवन दशदिशि छाई है।।
नाम रसिक जन सेइ परम गति रति मति के न सुपाई है।
प्रेमलता संतनि की महिमा मुख ते जाते न गाई है।।

नाम रसिक संतनि की सेवा करन चहै जब कोउ मन में।
निकसि निकसि तेहि पितर निरय ते होइँ सुखी अति तेहि छनमें।।
कोटिनि पातक नसहिं होइ जब प्रीति प्रतीति सुहरिजन मैं।
प्रेमलता सुचि साधु सुमहिमा लखहि न जे रत तन धन में।।

ब्रह्म बधादिक पाप प्रबल जे घोर नरक के दानी हैं।
सेवत नाम रसिक संतनि पद पावहिं सब अध हानी है।।
परहि न ते भवकूप जीव जे संत संग रति मानी है।
प्रेमलता दोउ लोक परम सुख लहहि सु रहित गलानी है।।

एक तो श्री सियाराम उपासक नाम रसिक पुनि शृंगारी।
वीतराग संयमी साधु शुचि निष्किंचन इच्छाचारी।।
तिन्ह कर सेवा महल टहल प्रद रमत जहाँ प्रीतम प्यारी।
प्रेमलता सच्चिदानंद दोउ बदत वेद महिमा भारी।।

नाम जापक के रक्षक

जाके रक्षक नाम हैं श्री सियाराम समेत।
ताकी रक्षा करहिं सब जड़ चैतन्य सहेत।।
जड़ चैतन्य सहेत देत जो चाहत साई।
करे निरादर तासु तिहूँ पुर अस नहिं कोई।।
रटहि नाम बसुजाम कामप्रद सिंधु सुधा के।
प्रेमलता श्रुति शेष बखानहिं गुनगान जाके।।

रामरूप धनुवान धारि कर रक्षा में नित रहते हैं।
शिव त्रिशूल धरि ब्रह्म दंड कर विष्णु चक्र नित लहते हैं।।
नारायण धरि गदा कौमुदी जापक के रिपु दहते हैं।
प्रेमलता हनुमान मनोरथ पुरबहि जो कछु चहते हैं।।

सियजू भोजन देइँ शक्ति सब करैं जाइ शिर पर छाया।
दानव देव भूत किन्नर पशु पच्छी जो जगमें जाया।।
प्रेमलता तेहि भजहि न जड़मति पाय अनूपम नरकाया।

ब्रह्म सृष्टि महँ जीव जहाँ लगि जड़ चैतन्य अपारा है।
दानव देव नाग मुनि किन्नर विष्णु आदि अवतारा है।।
शिव विरंचि श्रुति शेष शारदा योग लगन तिथि वारा।
रक्षा करहिं नाम जापक की बाँधि कमर हथियारा है।।
इन्द्रादिक दिकपाल काल यम भूत प्रेत सह दारा है।
दुर्गा दिशा दिवशनिशि निशिचर भय दायक बलभारा है।।
हनुमदादि कपि रीच्छ पशु खग पंडित मूढ़ गँवारा है।
रक्षहि तिन्हें सकल मिलि सादर रटहिं जे आखर चारा है।।
सकल ठाम सब भाँति सर्ब के नाम सुसदा सहायक हैं।
भाव कुभाव अनख आलसहू रटत सकल सुखदायक हैं।।
परमानंद प्रकाशक उर–पुर कोटि अमंगल घायक हैं।
शरणपाल सुठि सुलभ सरल शुचि सर्वेश्वर सब लायक हैं।।

●

❀ बाधक खण्ड ❀

✡ अशुद्ध अन्न और अति अहार ✡

श्रीराम साधकों के लिये सबसे बड़ा बाधक है अन्न दोष। खाद्य वस्तुओं में १. जाति दोष, २. निमि
दोष, और ३. आश्रय दोष—तीन प्रकार के दोष भरे होते हैं।

मछली, मांस, लहसुन, प्याज खाने से हृदय में तमोगुण की वृद्धि होकर हिंसादि कुकर्मों में प्रवृत्ति हो
लगती है। उसी भाँति मरुआ, कोदो, कौनी आदि कदन्न बुद्धि मलीन करते हैं। गाजर, सलजम, बँधा गोभ
आदि साक भी बुद्धि मंद करने वाले होने से इनका सेवन शास्त्र वर्जित है। इस सब अखाद्य वस्तुओं
जो स्वरूपगत दोष हैं, वे जाति दोष कहाते हैं।

खाद्य वस्तुओं को देने वाले में यदि पुत्र, कलत्र, धन की प्राप्ति, रोग निवारण, मृतक—सद्गा
आदिकों की कामना हुई तो वैसे अन्न भक्षण करने वालों का भजन, दाता की कामना पूर्ति में नष्ट होत
है। इस प्रकार के सूत्रों से प्राप्त अन्न में निमित्त दोष भरा रहता है।

राजा, वेश्या, चोर, डाकू, हिंसक आदि रजोगुणी तमोगुणी व्यक्तियों के यहाँ के अन्न आश्रय दो
से दूषित होते हैं। अतः शास्त्र द्वारा निषिद्धि बताये गये हैं।

उपर्युक्त तीनों दोषों से वर्जित अन्न ही शुद्ध माने जाते हैं। दोषरहित अन्न खाने से हृदय निर्मल हो
है। निर्मल हृदय से ही इष्टदेव की अखंड—स्मृति सम्भव है। कहा भी है कि आहार शुद्धि से अन्तःकर
की शुद्धि तथा अन्तःकरण शुद्धि से अखंड स्मरण बनता है।

"आहार शुद्धौ सत्त्वशुद्धिः सत्त्वः शुद्धौ ध्रुवा—स्मृति।"

अशुद्ध अन्न श्रीठाकुरजी को भोग लगाकर, लोग उसे भगवत्प्रसाद मानकर शुद्धान्न मान लेते
परन्तु सर्वज्ञ अशुद्ध अन्न भोग लगाते ही नहीं। भक्त—गाथाओं से यह बात स्पष्ट होती है। यदि प्रभु अ
वस्तु को शुद्ध मान भी लें तो वैसे अन्न की आंशिक शुद्धि ही मानी जायेगी। हाँ यदि सन्त प्रत्यक्ष पा
तो उनका उच्छिष्ट प्रसाद पूर्ण निर्दोष हो जाता है। अतः केवल संत शीथपर ही शरीर निर्वाह करने वा
का हृदय सद्यः शुद्ध बन जाता है, तथा भजन का चमत्कार अविलंब प्रगट होने लगता है। कई स्थानों
प्राप्त चुटकी, या मधुकरी में अन्नदोष नाम—मात्र के रहते हैं।

यह तो हुई अन्नदोष तथा उनसे बचने की युक्ति। भोजन तब भजन बाधक होता है जब वह अधि
मात्रा में खाया जाय। अधिक खाने वाले, आलसी, रोगी, अल्पायु तथा मंद—बुद्धि बन जाते हैं। नाम—जाप
को स्वाभाविक आहार घटाकर, एक तिहाई भोजन मात्र रखना चाहिये। श्रीसीतारामनाम अभ्यास प्रकाश

श्री बड़े महाराज आदेश देते हैं। "शिष्य! प्रथम तो सब व्यवहार त्यागि के चालीस दिन या भाँति दृढ़ निश्चय सहित अनुष्ठान करो। धीरे–धीरे भोजन लघु करि देखो। इहाँ तक के तीन भाग में एक भाग रहि जाय, परन्तु भोजन शुद्ध, हलका, चिकनाई समेत होय। जल भी थोड़ा पान करो। शरीर की कृशता तरफ न ताके, परम उत्साह समेत प्रभु प्रमोद के तरफ दृष्टि राखे रहो।" मूल महावाणी। इस सम्बन्ध में महात्मागाँधी के वचन भी विचारणीय है।

महात्मा गांधी कहते हैं जो सब इन्द्रियों का पूर्ण संयम करना चाहता है, उसे अन्त को शरीर क्षीणता का अभिनन्दन करना पड़ेगा। जब शरीर का मोह और ममत्व क्षीण हो जायेगा, तब शरीर–बल की इच्छा रही नहीं सकती।

मेरा अनुभव तो ऐसा है कि जिसने स्वाद को नहीं जीता, वह विषय को नहीं जीत सकता। स्वाद का जीतना बहुत कठिन है, परन्तु इस विजय के साथ ही दूसरे विजय की सम्भावना है।

श्रीदेवस्वामी के मत से स्वाद–लोलुप साधक श्री श्रीनामजप नहीं होने को। विचारना चाहिये आखिर जीभ तो चाम–मात्र है। इसके सहायक दाँत केवल हड्डी तो है। जिस खाद्य वस्तु में जितना ही अधिक स्वाद होगा, उससे बने मल में भी इतनी ही अधिक दुर्गन्ध होती है, जो स्वाद का अन्तिम दुर्गन्धमय परिणाम लखाने वाले हैं। यद्यपि दाँत के द्वारा बार–बार यह कटती रहती है। परन्तु फिर भी चटोरापन नहीं छोड़ती। जीभ का पर्यायवाची शब्द है रसना। रसना शब्द का अर्थ है रस को जानने वाली, सो यह मिथ्या स्वाद में अरुझी है। इसे स्वउदही चाहिये तो मिथ्या विषय स्वादको छोड़ नाम–महारस का पान क्यों नहीं करती? उस स्वाद के सामने देवलोक का अमृत भी फीका है। नाम–रसिक सन्तों से जब रहस्य समझे तो जीभ असली स्वाद के लिए यत्नवान हो।

जीभ चटौरी चाट चटेगी, काहे को राम को नाम रटैगी।
हाड़ सहाय आप खुद चमड़ी, जड़ तारु सों जाय सटैगी।।
छन सवाद पाछे जो गंदा ऐसन सों न हटी न हटैगी।
दगाबाज औ वैरी जन सो बार–बार यह सदपि कटैगी।।
तदपि चखे रस चाखन ही को याकी चाह बढ़ी न हटैगी।
रस न जान याही ते रसना नाम अरथ गति यही अटैगी।।
यह अपराधिनि सजा हमारी बद बदरी कब दैव फटैगी।
नाम महारस जिनके आगे देव सुधाहु दूर छटैगी।
रसिकन सों इतनों जब जानै तबही रसकी मजा पटैगी।।

पुन: श्रीबड़े महाराज स्वल्पाहार से दश महान् गुण की संभावना बताते हैं–

१. स्वल्पाहारी में आलस्य, प्रमाद तथा निद्रा क्षीण हो जाती है। शरीर में स्फूर्ति, भजन में उत्साह बढ़ता है तथा यथेच्छ जागरण सधता है।

२. स्वल्पाहारी के शरीरगत रोग शरीर की क्षीणता के साथ क्षीण हो जाते हैं। बल से रोगमुक्त होना चाहे तो वह भी सुकर हो जाता है। यदि निष्काम भजन करें, तौ भी रोग ऐसे दबे रहेंगे कि भजन में बाधा नहीं कर पायेंगे। अतः स्वल्पाहारी वैद्यों के चक्कर नहीं पड़ते हैं।

३. स्वल्पाहारी में भजन–जन्य परमानन्द अविलम्ब अनुभूत होने लगता है।

४. स्वल्पाहारी में मलमूत्र का वेग प्रबल नहीं हो पाता। अतः शरीर स्वच्छ रहता है।

५. स्वल्पाहारी को भोजन–संग्रह में अधिक समय नहीं गँवाना पड़ता है। भोजन चबाने में भी समय की बचत हो जाती है।

६. भोजन की मात्रा जितनी अधिक बढ़ाओ, उसी अनुपात में भोजनदाता की पराधीनता बढ़ेगी स्वल्पही भोजन से लापरवाह रहने के कारण किसी जीव के पराधीन नहीं रहते।

७. स्वल्पाहारी के शरीर क्षीण होने पर पशुबल घ्नटकर, दैवीबल बढ़ता है। शारीरिक निर्बलता के साथ विषयेन्द्रियाँ निर्बल पड़ जाती है। अतः इन्द्रियदमन सुकर हो जाता है।

८. स्वल्पाहारी में काम–विकार शिथिल पड़ जाता है।

९. पेट में भोजन वाला वजन कम रहने से आप सुखपूर्वक एक आसन से मनमाने काल तक बैठे रहिये। आसन अचल बना रहेगा।

१०. स्वल्पाहारी के जहाँ शारीरिक रोग श्रीण होते हैं, वहाँ काम, क्रोध, लोभ आदि मानस रोग भी घट जाते हैं। शम दम सम्पन्न सज्जन को शोक कहाँ?

अलप अशन माहि दश गुन जानियो।
आलस प्रमाद नींद बैद की अधीनताई
रंचक न होय महामोद पहिचानियो।
सदा तन स्वच्छ व्यर्थ काल न विहात
पराधीनता बहुत चाह भूलि हूँ न आनियो।।
करन निवल मनमथ हूँ नसात तिमि
आसन अचल रोग सोग दूर ठानियो।
युगल अनन्य सावधान सदा रहो नित
अलप अशन माँहि दश गुन जानियो।।

अधिक खाने वाले की आयु का अधिक समय भोनज सामग्री जुटाने में ही बीत जाता है। वह सर्वदा अपने शरीर के पालन–पोषण की खटपट में लगा रहता है। अधिक आहार से छः गुणोंके नाश होते हैं। १ भजन के रहस्य का अनुभव नहीं होता, २. दूसरी बातों का स्मरण नहीं होता, ३. दया, धर्म में कमी आ जाती है, ४. आलस्य बढ़ जाता है, ५. भागों की आसक्ति बढ़ जाती है, ६. सर्वदा खाने और मल त्याग की खटपट लगी रहती है।

त्यागने की खटपट लगी रहती है।

पारसमणि के सप्तम उल्लास को दूसरी किरण में कहा गया है। जो अपने उदरका विशेष पोषण करता है, उसके लिये दिव्य देश का मार्ग नहीं खुलता है। आहार की अधिकता से हृदय मृतक हो जाता है। आहार–संयमी का हृदय उज्ज्वल होता है और कोमल। भूखे और नंगे रहने वालों को निसन्देह भगवान के दर्शन होते हैं। भूख के द्वारा चपल मन का स्वाभाविक निग्रह हो जाता है। भूखे रहने पर धैर्य और सहनशीलता प्राप्त होते हैं। आहार संयम से व्यर्थ वचन और काम की प्रबलता दूर होती है। स्वप्न दोष नहीं होने पाते। शरीर निरोग रहता है। निश्चिन्तता और भजन का आनन्द बढ़ता है। हृदय धर्म उदार बन जाता है।

अधिक शयन

तीसरा बाधक है अधिक शयन। नाम जापक यदि निद्रा जीत सके तो उसमें भजन का चमत्कार शीघ्र उदित होता है। यदि नींद का सर्वथा त्याग संभव नहीं हो, तो नाम जापक को दो तीन घंटे से अधिक कदापि नहीं सोना चाहिये। अधिक सोने से आलस्य प्रमाद आदि तमोगुण की वृद्धि, बुद्धि मंद, आयु क्षीण; देव दुर्लभ अमोल मानव जीवन का दुरुपयोगनाम रटन का समयाभाव, भावना में अनुभवहीनता आदि अनेक दुर्गुण आ जुटते हैं।

सैन याम अधिक किये से सुखसार बीच
परत विशेष ताते जागनोई सार है।
सीताराम नाम बिना वैन व्यवहार बीज
बोलत उपाधि नाम मध्य टकसार है।
लौकिकी कलाम खाम वाम बदनाम संग
त्यागिये तमाम तम असम असार है।
युगल अनन्य अलसाय दिसि दूसरी से
शौक सजवाय नाम जपो सुखसार है।।

श्रीपारसमणि में लिखा है कि रात्रि का जागरण ही भजन, ध्यान और विचार का बीज है। श्रीबड़े महाराज कहते हैं जग कर नाम रटने से रात ठीक ही परमानन्द दायिनी तथा चित्त में शान्ति देने वाली बन जाती है। काम, अहंकार आदि निःशेष रूपसे मिट जाते हैं। उसे दिव्य कनक–भवन में मानसिक स्थिति अनायास ही सुलभ हो जाती है। अतः सभी मत मतान्तरों से हटकर श्रीनाम सरकार की अनन्य शरण ग्रहण करा लें। श्रीनामही श्रीनाम–स्नेह को निवाहते हैं।

रैन महामुद दैन सही चित्त चैन निधान सुनाम उचारत।
मैन मदादिक लेश रहे नहिं ऐन निवास लहे गत आरत।।
जैन जमात समान सभी मत मानि के छोड़िये लोक कहावत।
युग्म अनन्य रती हूँ नही शक आपहि नाम सनेह निवाहत।।१०७८।।

श्रीबड़े महाराज का आदेश है कि नींद सब प्रकार से निन्दनीय है। साधक का सर्वनाश करती है। अतः इसे भली प्रकार जीतना ही योग्य हैं। निद्रा जीतने पर ही भजन भावना का एकरस अघट स्वाद सरसने लगता

है। अतः अपने मन में यह निश्चय विश्वास करें कि हम जहरीली तथा जड़ता बढ़ाने वाली नीन्द हो जीते बिना परमानन्द दुर्लभ है। नीन्द जीतकर अखंड नाम—स्मरण करे तो सभी अनिष्ट स्वतः मिट जायेंगे।

नींद निन्द्य निज नाश हेत हिय समुझि भली विधि जीतो।
भजन भावना स्वाद एकरस तब सरसाय अरीतो।।
बिना विजय जड़ जहर नींद नहि मोद प्रमोद प्रतीतो।
युगलानन्यशरन सुमिरन से विनसत अखिल अनीतो।। ६३।। श्रीनाम कांति

असंयत बोल

नाम—जप का चौथा बाधक हैं अधिक बोलना। पापों के तीन विभाग माने जाते हैं।

१. कायिक—शरीर के अंगों से बनने वाले २. मानसिक हृदय में परिहिंसादि नाना प्रकार के पापों का चिन्तन तथा पाप करने का संकल्प ३. वाचिक—वाणी द्वारा संभूत ताप।

किसी भी पातकी के पापों का विश्लेषण किया जाय तो उनमें वाचिक पाप ही आधे से अधिक सिद्ध होंगे। अतः वाणी के संयम से आप बहुत अंशों में पापों से बच सकते हैं। ऐसे तो वचन से होने वाले अनेक दोष हैं, परन्तु पारसमणि के मत से पंद्रह दोष प्रधान हैं। उनका व्योरा नीचे दिया जाता है।

१. बिना प्रयोजन बोलना निन्दनीय है। जिस वचन से न तो अपना स्वार्थ सिद्ध होता है, न परमार्थ, न दूसरे का हित, ऐसे वचन से सत्त्वगुण का सुख नष्ट होता है। ऐसे वचन बोलने में कितना नाम—जप छूट जाता है? सबसे बड़ी हानि यही है।

२. मिथ्या बोलना— "नहि असत्य सम पातक पुंजा" लड़ाई झगड़े की चर्चा दुराचारी पुरुषों के व्यवहार की आलोचना, आदि वाचिक पाप कभी मिथ्या भाषण के समान ही अनर्थकारी है। ऐसे अवसर पर मौन रहना ही हितकर है।

३. किसी की बात का खंडन करना उचित नहीं। कोई झूठा भी कह रहा हो तो आप सुनकर चुप रहें खंडन से उसे क्लेश होगा। कलह बढ़ेगा। वाद—विवाद बढ़ेगा।

४. भूमि तथा धन के लिए झगड़ा करना तथा पंचायती या कचहरी का आश्रय लेना निन्दनीय है। जापक तो स्वेच्छापूर्वक धन तथा भूमि का त्यागकर देते हैं।

५. मुख से दुर्वचन, अश्लील शब्द, किसी को गाली देना दोषावह है।

६. किसी को धिक्कारना—इसमें नाम—जापक की शोभा नष्ट होती है। उसकी जगह नामोच्चारण अधिक हितकर है।

७. किसी स्थूल शरीरधारी के हाड़—माँस मलमूत्र से भरे हुये घृणित शरीर के रूप—सौन्दर्य की चर्चा, लौकिक शृंगार सम्बन्धी कविता करना, आदि दुर्गुणों से मनमें कामविकार जगता है। भगवान् संत की स्तुति उससे अच्छाहै और उससे भी अच्छा ऐसे वचन के बदले नाम ही रटना।

८. हास विनोद मय वचन बोल कर अपने तथा दूसरे को प्रसन्न करना। इससे आयु का अमोल समय व्यर्थ जाता है, हृदय अंधकारमय हो जाता है तथा जापक की गंभीरता नष्ट होती है। अपनी नीच स्थिति तथा प्रभु के वियोग में रोना उचित है, हँसना हँसाना नहीं।

९. किसी के छिद्र पर उससे मजाक करना तथा उसके द्वार औरोंको हँसाना। हो सकता है, अपने में उसमें भी बड़े—बड़े छिद्र भरे हों और उस पर दृष्टि नहीं जाती हो ऐसा भी हो सकता है, वह छिद्रों के रहते भी प्रभु का हमसे अधिक प्यारा हो। जो अभिमानपूर्वक किसी के अवगुण पर हँसता है, मरने के पहले वही अवगुण हँसने वाले में भी आ जाता है।

१०. किसी के साथ वचनबद्ध होकर, अपने वचन को न निभाना। वचनबद्ध होने पर एक प्रकार से उसका ऋण अपने माथे पर चढ़ जाता है। वचन पूरा न करने पर उसे कर्जखोर की दुर्गति होती हैं

११. झूठ बोलना तथा झूठी गवाही देना। इससे भी हृदय अंधा हो जाता है। भगवान की शपथ खाना भ्ज्ञी महान पाप है।

१२. पर निंदा करना महापाप है। "पर निंदा सम अध न गरीसा।" निंदा का लक्षण यह है कि उसके विषय की बात सच्ची भी हो, किन्तु यदि उसे सुनकर कष्ट होवे तो वह निंदा तुल्य ही है। उचित तो यह है कि हम हृदय से भी किसी की निंदा न करें। 'सपनेहु नहिं देखहिं परदोषा।' जैसे हम अपने पापों को सदा छिपाने का यत्न करते हैं, उसी प्रकार हमें अन्य व्यक्तियों के पापों का भी उद्घाटन नहीं करना चाहिये। हम जिसकी निंदा करते हैं, उसके अधिकांश पाप हममें ही आ जायेंगे तथा हमारे सुकृत का बड़ा अंश उसे प्राप्त होगा।

१३. किसी की चुगली करना। किसी दूसरे के दोष, देखकर दूसरे से कहना चुगली है।

१४. वाक्छलं करना। दो विरोधियों के साथ मैत्री दिखाने के लिये इसकी बात उससे तथा उसकी बात इससे कहना वाक्छल है। यह कपट कहलाता है।

१५. किसी की व्यर्थ स्तुति करना। मिथ्या करनेवाले तथा सुननेवाले दोनों ही दोषी सिद्ध होते हैं। और भी कितने पाप वचन से संभव हैं। इसी से तो कहते हैं कि वाणी का संयम नाम—जापकों के लिए अत्यन्त आवश्यक है। अधिकतर मौन ही रहकर नाम—रटते रहें। बहुत आवश्यकता पड़ने पर कम से कम वचन द्वारा अपना कार्य सिद्ध करें। पर उपदेश देने के चक्कर में नहीं पड़े। उससे मान बड़ाई बढ़ती है, व्यवहार बढ़ जाता है। हमारी आदर्श नाम रटन ही कोटि—कोटि उपदेशों के समान औरों को नाम तत्पर बनाकर उसका सच्चा हित करेगी। श्रीदेवस्वामी ने क्या ठीक कहा है—

कथनी से का होइ हैं कछु करनी चाही।
कथनी केवल वाद बढ़ैहैं, करनी वादहि खोइ है।।
करनी वारां अन्त लहे सुख कथनीवारे रोई हैं।
करनीवारो जियत मुक्त हैं, टांग पसारे सोइ हैं।।
कथनीवारो मारि खाइकै बार बार शिर टोइ है।
जैसी करनी कर राखी हैं तैसे बोझा ढोइ है।।

साधनवारो साधन करि के अंतर मलकों धोई है।
कथनी वै वारो कथ रहिहैं देय रूप वह जोइ है।।

इस सम्बन्ध में श्रीदेवस्वामीजी के एक और पद विचारणीय है—

जो देखन चाहै जग की मजा, तौ रोको बानी औ मन को।
वानी से व्यवहार बढ़त है मन ही को तूफान सजा।।
ज्यों ज्यों वानी रुकत जायगी, त्यों त्यों बढ़ै मन को दरजा।
श्याम रूप तब कुछ कुछ झलकत इन्द्रिन आपुइ विषय तजा।।
मन दर्पण प्रतिविंव लहत ही उघटि जात तब पट हरजा।
हूवहू साहिब सों मुजरा करते पातक दूरि भजा।।
यही पंथ परमारथ को अस, वेद नगारा धमकि बजा।
वासुदेव पद पंकज भजले सबके ऊपर जाको रजा।।

नाम जापकों के लिए अन्य संयम

१. नामजापकों को सबसे पहले दंभ त्यागना चाहिये। जो गुण अपने में नहीं है, उन्हें मान बड़ाई, पू प्रतिष्ठा के निमित्त कृत्रिम उपायों से जगत में प्रगट करना तथा भीतर में कुछ और ऊपर से कुछ अ दिखलाना दंभ कहाता हैं शारीरिक दंभ यह है कि ऊपर से वैष्णवों का, सन्तों का वाना धारण कर ले भीतर में वैष्णवोचित, संतोचित रहनी आचरण में नहीं रखना।

'साधु कहावत न लागत शरम।
वाना बड़े को धारत पाजिन के सब करत करम।।'

— देवस्वामीजी।

वाचिक दंभ है

लोभ मनहि नचाव कपि ज्यों गरे आसा डोरि।
बात कहौं बनाइ बुधज्यौं। वर विराग निचोरि।।

मानसिक दंभ है—

'हे हरि कवन यतन भ्रम भागै।
भगति ग्यान वैराग्य सकल साधन यहि लागि उपाई।
कोउ भल कहहु देउ कछु कोऊ अस वासना हृदय ते न जाई।।'

दंभ करने से तीन अलौकिक वस्तुओं से हाथ धोना पड़ता है।

१. अपने अन्तर्यामी इष्ट में प्रेम तथा विश्वास से।
२. हृदय में इष्ट ध्यान के साक्षात्कार से।
३. परलोक में उज्ज्वल सुगति से।

४. अत: सब प्रकार के दंभों का त्याग कर, नामाभ्यास करना चाहिये। दंभ त्यागते ही नाम, नामी में चित्तवृत्ति मगन होने लगेगी तथा वैराग्य, ज्ञान एवं भक्ति की प्राप्ति का मार्ग परिष्कृत हो जायगा।

५. नाम–जापकों को केवल नामानुरागियों का ही संग करना चाहिये। सामूहिक नाम–संकीर्तन के लिए भी नाम समाज में सम्मिलित होना चाहिये। अन्यथा निर्जन, निर्विघ्न एकान्त देश में ही बैठकर नामाभ्यास करना श्रेयस्कर हैं

६. नाम जापकों को षट खटका नामानुराग घटाने वाले हैं। तीन तो हैं ईषणा और तीनही वासना भी है। तीन ईषणा है। १. सुतैषणा, २. धनैषण, ३. नारीईषणा। तीन वासना हैं १. शास्त्र वासना, २. देश वासना, ३. मन वासना। सुतैषणा– बेटे की चाह, उसकी प्राप्ति में उसके लालन–पालन, शिक्षा–दीक्षा में, व्याह, निर्वाहार्थ जीविका में रचते–पचते रहना। नामजप का बाधक है। अत: पुत्रहीन अपना सौभाग्य समझ सुतैषणा के चक्कर में न पड़ें।

७. धन जड़ है। धनप्राप्ति के आदि में व्यर्थश्रम, प्राप्त होने पर उसकी सुरक्षा में लगे रहना, नष्ट होने पर शोक करना आदि बाधाएँ लगी रहती हैं। सम्पत्ति प्राप्त होने पर भी, उसे स्त्रीरूपा जानकर, उसे अपने शारीरिक भोग में न लगावे। अपनी अर्जित सम्पत्ति को, अपनी बेटी माने, पिता की अर्जित सम्पत्ति को बहनवत् मानें, दूसरे से प्राप्त सम्पत्ति को परनारी माने। तीनों दशाओं में कभी सम्पत्ति को भोग्या न मानें। हाँ कन्या को योग्य वन से ब्याह कर देना ही उचित है। भगवत–भागवत में खर्च कर डालना, कन्यारूपी सम्पत्ति को योग्य वर से ब्याह देना मानना चाहिये।

८. नारी ईषणा को विचार–पूर्वक त्यागना चाहिये। स्त्री का स्थूल शरीर, हाड़माँस, मल–मूत्र, आदि दुर्गन्ध वस्तुओं का पुतला होता है। काम–विकार परवश यदि युवक उसमें आसक्त भी होता है तो तभी तब जब तक उसमें जवानी बनी है। धनहीन होने पर युवती स्त्री भी अपने कामी पति का तिरस्कार करने लगती है। अत: कामविकार पर ही विजय पाकर, स्त्री आसक्ति को त्यागना चाहिये।

९. शास्त्र वासना नामजप का बाधक है। आत्म–कल्याणार्थ थोड़ा सा विद्या बोध प्राप्त कर लेना पर्याप्त है।[२] नाना ग्रन्थों के स्वाध्याय उपयोगी है पुजाने खाने, मान बड़ाई, प्राप्त करने के निमित्त। किन्तु आत्म कल्याण के लिए नामजप ही एकमात्र उपाय है। ग्रन्थों में रचते–पचते जीवन गँवा देने में बुद्धिमानी नहीं है।

१०. मान बड़ाई की वासना छोड़ना है कठिन, पर नामानुराग प्राप्ति के निमित्ति तो इन्हें छोड़ने में ही कल्याण है। मान–वासना को त्याग कर अखण्ड भजन में लगना चाहिये।

११. देश–वासना– नये–नये देशों को देखने के लोभ से भटकते फिरना, भजन सुविधा के उपयुक्त स्थान की खोज में अधिक समय गँवा देने में बुद्धिमानी नहीं है। भ्रमण किये हुये देशों की यादगारी भजनकाल में मन को एकाग्र करने में बाधक बन जाती है। अत: घूमना–फिरना भी बाधक ही है।

१२. नाम जपमें चार विघ्न उपस्थित होते हैं।– १. लय, २. विक्षेप, ३. कषाय और ४. रसाभास। इनसे बचना चाहिये। अधिक भोजन से, गुरुपाक वस्तुओं के आहार से, नामजप काल में आलस्य सताता है। माला हाथ से फेरते–फेरते ऊँघने लगे, नाम जप अधूरा छोड़कर सो गये–ये सब लय नामक बाधा है स्वल्प सुपथ भोजन के द्वारा इनहें जीतना होगा।

१३. जन समूह में नाम व्यतिरेक सांसारिक वार्ता कान में पड़ेगी ही। इससे ध्यान करने में विक्षेप होन स्वाभाविक है। अत: शान्त एकान्त देश में नामाभ्यास करना चाहिये।

१४. मनको पवित्र बनाकर इष्ट ध्यानपूर्वक नाम जपना चाहिये। पूर्वकृत विषय भोग के अधिव अभ्यास से भजन काल में भी भोग्य विषयोंका स्मरण वरबश आते रहना कषाय नामक विघ्न है। वैराग विचार से इन्हें हटाना होगा।

१५. श्रीसीताराम नाम तो स्वत: सुधा सार हैं। स्वत: अपरिमित स्वादु, असीम आनन्द को उत्पन्न कर वाले हैं। अन्यान्य साधन रूपी रस इसमें आनन्द वर्द्धन के लिये मिलाना रसाभास कहाता है। स्मरण र अपने इष्ट के रूप, गुण, लीला धाम का चिंतन श्रीनाम सरकार से भिन्न रसान्तर नहीं है। कर्म, ज्ञान यो आदि रसान्तर माने जायेंगे। ये भी सहायक हों, तो रसाभास नहीं हैं।

१६. मिथ्या संभाषण से नामानुराग रस सूख जाता हैं ये सब उपर्युक्त मत श्रीस्वामी युगलानन्यशरणज महाराज विरचित श्रीमानबोधशतक नामक ग्रन्थ से लिखे गये हैं।

महाप्रभु श्रीचैतन्यदेवजू ने अपने अनुयायिओं के लिए, नाम जपने में चार अत्यन्त प्रयोजनीय संयमात्मक गु धारण का आदेश दिया है।

तृणादपि सुनीचेन तरोरपि सहिष्णुना।
अमानिना मानदेन कीर्त्तनीय: सदा हरि:।।

१. अर्थात् नाम संकीर्त्तन करने वाले सर्वप्रथम अपने को तृणसे भी अत्यधिक नीच मानें। तृण य कृषकों के खेत में उग आये, तो उसे वे शीघ्र उखाड़ फेंकते हैं। मार्ग मे उग आया तो पथिकों का दिन रा पदप्रहार सहना पड़ता है। सर्वत्र तृण का निरादर ही होता है। इसी भाँति नाम जापक अपने को नीचातिनी तुच्छ और सर्वत्र तिरस्कृत होने योग्य माने।

२. दूसरा गुण नामजापक धारण करे सहनशील। सहनशील होना वृक्षों से सीखें। वृक्ष दिन रात ए पैर पर खड़ा होकर, शीतधाम, वर्षा एवं ओले पत्थरों की बौछार, तुफानों का झकझोर सब सहता हुआ परोपकार परायण रहता है। अपने डाल पात छेदन करने वालों को भी छाया, फल–फूल देता रहता है। उ रोड़े डंडों से मारो तो उसके बदले वह पके फल ही गिराकर, सेवा करेगा। नाम जापक को तो वृक्ष से बढ़कर सहनशील होना चाहिये। क्योंकि वृक्ष जड़ है, हम चैतन्य हैं। हममें सहनशीलता के लाभ समझ की बुद्धि भी हैं

३. नाम जापक को होना चाहिये अमानी। प्रतिष्ठा को सूकरी–बिष्टा समझ कर त्याग देवे। क किसी से मान बड़ाई मिलने पर भी उसे स्वीकार न करें। इससे अपने पतन की संभावना समझे।

४. सन्तों का तो भगवान का रूपही मानकर अत्यधिक समादर करे, और जगत को सियाराममय मानकर, घृणित व्यक्ति को भी अधिक से अधिक मान सम्मान दें, आदर करे।

श्रीसुदर्शन संहिता की आज्ञा है कि नाम—जापक को चाहिये कि सांसारिक दो दिनों के दुःख सुख को एक समान मानकर धैर्यपूर्वक नाम रटता रहे। निन्दा, स्तुति, मान, अपमान आदि द्वन्द्वों से ऊपर उठकर नामाभ्यास में तत्पर रहे। अब औरों से मन को खींचकर एकमात्र निरामय नाम रटता रहे।

"दुःखादिकं समं कृत्वा द्वन्द्व धर्मं विहाय च।
भजेन्निरामयं नाम चित्तमाकृष्य सर्वतः।।"

परमहंस श्रीप्रेमलताजी कहते हैं—

प्रेमलता भेषज भजन, संयम यह सुख देत।
सीताराम सुनाम रटि, संयम नेम समेत।।
भजन स्वरूप सुखते के, रक्षक संयम नेम।
प्रेमलता सियराम मधि, इन बिनु होत न प्रेम।।
भोजन शयन सुबैन लघु, दंभ त्यागि मद मान।
प्रेमलता सियराम कर, नाम रटहु धरि ध्यान।।
खेद रहित एकान्त में, जग—जंजाल बिहाइ।
प्रेमलता सियराम कर, रटै नाम चित लाइ।।
वाम दाम दोनों तजे, सजे सुदृढ़ अनुराग।
प्रेमलता सियराम कर, नाम रटे भ्व भाग।।
नाम अर्थ चिन्तन करै, आशा तृष्णा त्यागि।
प्रेमलता सियराम के, नाम महारस पागि।।
चाह बड़ाई मान्यता, सुख दुख भोग विलास।
प्रेमलता तजि एकरस, भजि सियराम निरास।।
विघ्न करे कोउ आइ जो, तापर करै न क्रोध।
प्रेमलता सियराम रटि, उपजै आतम बोध।।
निन्दा अस्तुति सम लखै, जाति पाँति दुख रूप।
प्रेमलता पाखंड तजि, रटि सियराम अनूप।।

पूज्यपाद श्रीबड़े महाराज नाम में पाँच और विघ्न बताते हैं।

१. प्रेम भक्तों का लक्ष्य होता है, अपने इष्ट के प्रति अधिक से अधिक प्रेम जागृत करना तथा प्रेम संवर्द्धन के लिए इष्टरूप का साक्षात्कार। निराकारवादी योगी केवल ब्रह्मप्रकाश के ही दर्शनकर पाते हैं तथा अन्त में कैवल्य मोक्ष प्राप्त होने पर, श्रीसाकेतके बहिर्देश व्यापी प्रकाशावरण में लीन हो जाते हैं। उनकी

देखादेखी हम भी केवल प्रकाशलोक के ही दर्शन के लिए साधन तत्पर होवें, तो हम अपने लक्ष्य से भ्रष्ट हो जायंगे। अतः इष्ट रूप छोड़ ब्रह्म प्रकाश के चक्कर में नहीं पड़ना चाहिये। यह नाम जपका विघ्न है।

२. संसार में पुजाने खाने, भोग सामग्री इकट्ठे करने के लिए बहुत से लोग नकली सिद्धाई प्रदर्शन की ढोंग करते हैं। यदि नाम जप से बाचासिद्ध, संकल्पसिद्धि आदि प्राप्त हो जायं, तो उन्हें या तो प्रभु प्रार्थनापूर्वक त्याग दे, या गुप्त रखें। कहते हैं कि एक बार श्रीबड़े महाराज को श्रीचित्रकूट में नामाभ्यास काल में अपनी संकल्प सिद्धि देखने में आई। मन में कोई संकल्प फुरा, तत्काल उसकी पूर्ति होते देखीं। आप अपने इष्टदेव से झगड़ पड़े। देखोजी, कौतुकी प्यारे! संकल्प फुराना भी तुम्हारा ही काम है, उसकी तत्काल पूर्ति भी तुम ही करते हो। इस लीला में तुम्हें तो कौतुक का मजा मिलता होगा, किन्तु मैं तो इस सिद्धाई के चलते अपने पथसे भ्रष्ट ही हो जाऊँगा। अतः अपनी दी हुई यह सिद्धाई वापस ले लो, नहीं तो मैं तुम्हारा भजन ही छोड़ दूँगा। इतना कहते ही, वह सिद्धाई आपकी लुप्त हो गई। आज हम ऐसे विचारहीन हो गये कि न धन हो तो मान ही बड़ाई के लिये ही सही, सिद्धाई न होने पर भी सिद्धिका दंभ करते फिरते हैं दर्शनार्थियों की भीड़ इकट्ठे कर, भजन से वंचित हो जाते हैं। अतः सिद्धाई प्रदर्शन नाम जपका ऐसा विघ्न है मानों कोढ़ की खाज हो।

३. तीसरा विघ्न है देशाटन, तीर्थाटन की चाह।

तीरथ अमित कोटि सम पावन। नाम अखिल अघपुंज नसावन॥

'तीरथ की आस सो तो नाहक उपास हित, एक बार राम कहो, कोटिन प्रयाग है' एक जगह स्थायी रहकर नामजप अधिक होता है। नामाभ्यास का उत्साह भी बना रहता है। घूमने—फिरने वाले, बाहर की देख जागतिक वस्तुओं की चर्चा और स्मरण करने में अपना बहुमूल्य मानव जीवन व्यर्थ खो देते हैं। श्रीगोस्वामीजी अपनी कवितावली ९/८६ में कहते हैं।

न मिटै भव संकट दुर्घट है। तप तीरथ जन्म अनेक अटो।

... ...

तुलसी जो सदा सुख चाहिये तौ रसना निसिवासर राम रटो॥

तीर्थयात्रा तो स्वर्ग सुख देने वाला कर्मकांड है। भक्ति देश में इसका कोई मोल नहीं है। अतः नामजापक को एकही जगह स्थायी रहकर कम से कम बारह वर्ष नामाभ्यास करना चाहिए।

४. वाद—विवाद में प्रतिपक्षी को परास्त करने के लक्ष्य से अधिक विद्या का अभ्यास आवश्यक आत्मकल्याण के लिए, थोड़ा बहुत इसलिये पढत्र ले कि केवल दिव्य प्रेम मार्ग की जानकारी प्राप्त हो जाए श्री गोस्वामीजी के काव्यों का अनुशीलन पर्याप्त है। सो भी कथा कहकर पुजाने खाने के लक्ष्य से नहीं केवल भक्तितत्त्व के ज्ञान मात्र के लिये ही।

नाम लिया तिन सब लिया, चहूँ वेद के भेद।
नाम बिना नरके गये, पढ़ि पढ़ि चारिउ वेद॥

अधिक विद्या पढ़ने वालों को अपने कहीं स्थायी बैठकर नामाभ्यास करते देखा है?

५. पाचवाँ विघ्न है कविता बना–बनाकर कवि कहाने की लालसा।

सारद दारुनारि सम स्वामी। राम सूत्रधर अन्तरजामी।।
जेहिपर कृपा करहि जन जानीं। कबिउर अजिर नचावहि बानी।।

प्रभु प्रसाद जन्य अलौकिक काव्य, जो आचार्य कोटि के महानुभावों द्वारा प्रगट किये गये हैं, उन्हींके आधार पर तो आज हमारी उपासना परिचालित हो रही है। उनकी बात ही न्यारी है। हमलोग तुकबन्दी–मात्र जानंकर, अपनी अल्हड़ तुकबन्दियों के प्रचार प्रसार के लिए आचार्यों की महावाणी की भी अपेक्षाकर बैठते हैं। नामरटना छोड़ तुकबन्दी जोड़ने में समय नष्ट करते हैं, यह विघ्न नहीं तो क्या है? अब इस सम्बन्ध की मूलवाणीभी अप पढ़ें।

नाम के रटन बिच पाँच विघ्न दुष्ट हैं।
प्रथम प्रकास लोक वासना दुरास दूजो
सिद्धताई चाह हिये कोढ़ में को कुष्ट हैं।
तीजो देश तीरथ अटल विद्या वाद बहु
पढ़न कथन चौथो सोकदन सुष्टहै।।
पाँचवो कबित कुशलाई निपुनाई निज
सुजस के हेत दुखादाई नहीं पुष्ट है।।
(श्री) युगलाअनन्य अति कठिन उपाधि सब
नाम के रटन बिच पाँच विघ्न दुष्ट हैं।।

श्रीसीताराम सनेह वाटिका, २०४९

आचार्यपादका उपदेश है कि नामाभ्यास से अनुभूत श्रीनामसरकार के चमत्कारपूर्ण प्रभाव को उसी भाँति छिपाकर रखना है, जैसे साँप मणि को। कामविकार को नामप्रेम में कलंक मानकर सर्वथा त्याग देना चाहिये। रिद्धि–सिद्धि को प्रपंच मानकर इनसे दूर रहना चाहिए। नामजप का स्थान होना चाहिये, एकान्त, शान्त। वहाँ अपने प्रियतम के ध्यान परायण रहें। वहाँ नाम के प्रकाश का अनुभव संभव है। श्रीनामानन्य होकर नामाभ्यास करते रहने से श्रीनाम सर्वविधि सहायता करेंगे।

नाम महामनि मानस माँझ छिपाय के राखिये साँझ सबेरे।
काम कलंक विहाय भलीविधि रिद्धिहु सिद्धि विचारि बखेरे।।
शान्त नितान्त सुकान्त समेत निकेत के अन्तर पाय उजेरे।
(श्री) युग्मअनन्य प्रमोद परायन प्रीतम नाम सहायक मेरे।।

नाम जापकों के लिए संयम बताते हुए श्रीबड़े महाराज आदेश देते हैं कि शुद्ध सतोगुणी आहार स्वल्पमात्रा में खाना चाहिये। वाणी मधुर, सत्य, हितप्रद, सुखदायक स्वल्प शब्दों में बोले, दिन रात कभी न सोये।

सदैव नाम रटे। गृह, धन, भूमि, युवती को धूल समान समझे। संकल्प विकल्प आदि मन की कल्पना शरीर की खाज समान दु:खद जानकर त्याग दे। अपनी उच्चारित नामध्वनि को सुनने में मनको मगन दे। नामोच्चारण नाम परत्व प्रतिपादन छोड़कर, अन्य बातें व्यर्थ बोलना एकदम छोड़ दें। इधर—उधर घू नाच तमाशा, सिनेमा, टेलीविजन आदि तथा—कथित मनोरंजन को दु:खदायी कार्य माने, कलियुग के प्रीति करना समझिये, इन्हें छोड़ दे। नामोच्चारण एवं इष्टध्यान निरन्तर दृढ़ता—पूर्वक करते रहें। नाम में विश्वास जमाये रखिये। नामजप में आलस्य करना, भोगों की दुर्वासना त्याग दें। रात—दिन नाम ज जागरण करें। मान—अभिमान नि:शेष रूप से त्याग दीजिए। नाम—सरकार से प्रीति का निर्वाह नामानु सन्तों से विनयपूर्वक भीख माँगनी चाहिए।

अशन अल्प शुद्ध सतोगुन लिये मित वचन विचित्र मुद मधुर उचारिये।
रैन दिन जागरन सुपन सुभाय भूलि धूलि धन धाम धरा जुवती निहारिये।।
सावधान होय मनोराज खाज खेहि गुनि धुनि माँझ मानस मगन नित धारिये।
(श्री) युगलअनन्य और कथन बकन व्यर्थ दायक अनर्थ ताको मूल जुत जारिये।। ३१९।।

इत उत गमन रमन कौतुकादि कुल, कारज कठोर कलि रीति—प्रीति त्यागिये।
ध्यान ही करत एकरस दृढ़ आस विश्वास सुखरास अभिराम बन पागिये।।
आलस अयोम भोग सोग दुर्वास माँस शान्त त्यागि रैन ऐन जपि जागिये।
युगल अनन्य अभिमान मान लेश नहि, नाधे सोई रीति—प्रीति संतन सो मागिये।। ३२०।।

❀ एक सिद्ध संत के पच्चीस अनमोल बोल

१. एकान्त में रहने का अभ्यास करो।
२. जहाँ तक हो सके अकेला रहो।
३. प्रेम सबसे करो, किन्तु आसक्ति किसी में नहीं हो।
४. अभ्यास बढ़ाते चलो कि निरन्तर नामजप होना रहे।
५. एक ही इच्छा, एक ही वासना बने कि नामजपही में पूर्ण रुचि हो जाय।
६. कम बोलना।
७. सुनो कम, कहो कम, करो अधिक।
८. एक क्षण भी व्यर्थ न खोना।
९. भजन में जो बाधा पड़े उसे सह लेना महापाप है।
१०. विचार एकही हो कि श्रीनामजप कैसे बने।
११. जीभ का मुख्य काम यही कि नाम रटे।
१२. कानों का मुख्य काम यही कि नाम श्रवण करे।
१३. मन का मुख्य काम यही कि नामजप से पूर्ण आनन्द ले।

१४. समस्त पुण्य पुंज का एक फल कि श्रीनाम सरकार में पूर्ण निष्ठा हो जाय।

१५. जीवन की सफलता केवल नामजप में।

१६. भजन का मुख्य फल भजन।

१७. भजन से कभी तृप्ति न हो।

१८. सौभाग्य यही है कि केवल भजन ही सोहाय।

१९. दुर्भाग्य इसी को मानना कि भजन छोड़ अनान्य कामना में लगना।

२०. भजन ही को साधन, भजन ही को साध्य मानना।

२१. श्री प्राण संजीवन इष्टदेव की पूर्ण कृपा का यही परिचय, यही पहचान है कि श्रीनाम का पूर्ण आश्रयण हो जाय।

२२. भजन करते करते जीये।

२३. श्रीनाम रटते रटते मरे।

२४. अगले जन्म में क्या करेंगे? श्री नामजप।

२५. श्रीनाम श्रीनामी (रूप) में अभेद भाव रखना।

अब हम श्रीनाम कांति के कुछ छन्द संयम विषयक उद्धृत करेंगे।

'लघु भोजन सुचि सत्त्व सुगुन युत वचन मधुर धुनि बोलो।
अचल हमेश रहो आसन–थल विकल न भवमग डोलो।।
संजम साधि समाधि सुधा सम नाम–नेह अनमोलो।
युगलानन्यशरन चित–वृत्ति नित विरह तराजू तोलो।। ९२।।
बाहर दृग मृग धृग दशदिशि से खैचि एकठा कीजै।
लक्ष्य ललित लय लगन लाय अभ्यंतर अमृत पीजे।।
मन मारे बिन काज सेरे नहि बार बार मर जीजे।
युगलानन्य चौथ चंदा सम आलस तार तजीते।। १२१।।
युगल वरन हिय हरन एकरस रटिए रगर लगाई।।
वृथा वाक नापाक खाक परिपाक बराक विहाई।।
सत संगति संतत सजि के सुख सर्वस लहो सदाई।
युगलानन्य शरन खाहिश खटका दिल दूर बहाई।। १९०।।
करन–कषाय बहाय नाम बर बिरह नीरनीधि माही।
जीवत मरन कबूल करो परिहरो बिस्व छल छाँही।।
चातक धरन धरे दायम दिल गहि श्री सतगुरु बाँही।
युगलानन्य शरन प्रीतमरस कहो न काहू पाहीं।। १९७।।
सावधान व्यवधान हान हरि हिरस हवा हनि हेरो।
नाम हरित हित लाय भाय भल ज्ञान गरूरी गेरो।।

किसही से न करो सोहवत तजि तिरगुन मेरो तेरो।
युगलानन्य शरन सुमिरन संबंध सुसाजु सबेरो।। १९९।।
रसना नाम रटो आलस तजि बाद वितर्क बिहाई।
यामे कहा कलेश होत सोऊ कहिए समुझाई।।
फेर समा दुर्लभ देखो दृग खोल प्रपंच पराई।
युगलानन्य शरन नामहि में रहो हमेश समाई।। २०७।।
खबरदार हरदम रहिए गहिए श्री सतुरु वानी को।
लोकरीत विपरीत समुझि के त्यागो जगत कहानी को
ममता नाम श्यामसुंदर छवि समता सहज जहानी को।
युगलानन्य शरन आसा हरसायत सिय ठकुरानी को।। २०९।।
होत कहा किस्सा गाए औ सुनाए बिचारे भाई।
जौलौं लगे न नाम माधुरी माँझ नेह दृग जाई।।
मौन रहे मन मारि एकरस तजि जगजाल सगाई।
युगलानन्य शरन पहुँचे पुर प्रीतम बंव बजाई।। २४०।।
क्रिया कलाप तरफ ताके नहि बिना नेह निधि नामा।
वृथा अलाप भजे अंतर तिहु काल न दुख परिनामा।।
मदन–दाप दावे सबही विधि कांपे नहि कोउ कामा।
युगलानन्यशरन सुमिरन से प्रमुदित मन वसुजामा।। २४१।।
षट उद्वेग नेग नासन करि तेग नाम कर गहिये।
मन वानी तिमि जठर कोह अभिलाष सिश्न ज्वर जहिये।।
रसना रटन लगाय नाम मुख से कटु कहर न कहिये।
युगलानन्यशरन सुशांत रह शीश परे सुख सहिये।। २६९।।

दश प्रकार के नाम अपराध

इसके पूर्व श्रीनाम जापकों के लिए आवश्यक संयम बता आये हैं। उन संयमों को धारण करना निवाहना नये नाम साधक से तभी बनेगा, जबकि किसी अनुभवी नामनिष्ठ विशुद्ध संत के तत्त्वावधान उनकी उपदिष्ट रीति से श्रीनामाभ्यास करते रहेंगे। नवीन नाम साधक के लिये जहाँ श्रीनाम परत्त्व प्रतिप ग्रन्थों का नित्य पठन मनन आवश्यक है, वहाँ नामानुरागी महानुभावों का नित्य सत्संग भी अनिवार्य से आवश्यक है। आगे बताये जाने वाले दश प्रकार के नामापराध से बचने का उपाय भी सत्संग ही है सत्सिद्धान्त सार में श्रीबड़े महाराज हम लोगों को आदेश देते हैं।

श्री सतुगुरु सुचि संत संग, साजत सुलभ सुनाम।
रटन होय अपराध बिनु, नसत वासना वाम।।

१. प्रथम नामापराध है नामानुरागी संतों की निन्दा करना। विचारना चाहियेः नामानुरागी महानुभाव तो युगल नाम के रसास्वाद से प्रमोन्मत्त हो रहे हैं। श्रीनाम पर ही निछावर हैं। सभी जीवों से नाम जपवा रहे हैं, वह भी स्वार्थ रहित होकर, स्वयं दीन–हीन बनकर। ऐसे ही नामनिष्ठ महापुरुष सच्चे संत शिरोमणि हैं। काल रूपी भयंकर सर्प से वही वाल वाल बचेंगे। ऐसे महानुभाव की यदि हम निंदा करेंगे, तो उस अपराधनिग्न से हमारा हृदय क्यों न संतप्त होता रहेगा? ऐसे नाम–प्रेमी के प्रति किये गये निंदा–अपराध को कृतज्ञ शिरोमणि श्री नाम सरकार कैसे सहन करेंगे? चाहे सैकड़ों कल्प पर्यन्त नाम रटा करो, तौभी हमें नाम जपना निष्फल ही होता रहेगा। वही कृपालु संत जिनकी हमने निन्दा की है, क्षमा कर दें तभी उवार है, नहीं तो नाम जपने पर भी भव सागर में डूब मरेंगे।

२. भगवान शंकर निरंतर श्रीरामनाम जप करते रहने से ही अजर अमर बन गये हैं। 'नाम प्रसाद संभु अविनाशी। आप बाहर से चिता भस्म; मुंडमाल आदि अमंगल साज सजे रहते हैं, तो भी श्रीशिव अर्थात् स्वयं रूप है, तथा शंकर औरों के कल्याण कर्त्ता भी हैं।

'साज अमंगल मंगल रासी।'

नाम प्रभाव से ही आपको

'काल कूट फल दीन्ह अमी को।'

नाम सुनाकर ही मरणशील काशीवासी प्राणियों को आप मुक्त किया करते हैं। आपके समान श्रीरामनामानुरागी और कौन होगा? तभी तो नाम साधक आपके नामोपदेश से पुराणादि आर्षग्रन्थ भरे हैं। तभी तो नाम जापक संसार आपको गुरुओं के परमगुरू, जगद्‌गुरु पद पर प्रतिष्ठा करते हैं। ऐसे नामानुरागी गुरु में तथा नामी में क्या भेद रह गया? श्वतोश्वतर उपनिषद् की श्रुति कहती है कि आपको अपने इष्टदेव में जितनी भक्ति है, उतनी ही भक्ति आपको गुरु में भी रखनी होगी। तभी आपके हृदय में सर्व वेदमय श्रीरामनाम का अर्थ भासित होगा।

यस्य देवे परा भक्तिर्यथा देवे तथा गुरौ।
तस्यैते कथित ह्यार्था, प्रकाशन्ते महात्मनः।। ६/२३।।

श्रीशंकर जी में गुरु भाव रखकर, उनके प्रति प्रेम कीजिये। तभी आपको श्रीनाम जप का सुख स्वाद मिलेगा। गुरु में और इष्ट में अभेद भाव रखना भी चाहिये। उनके नाम रूप में भी अभेद मानें।

महादेव पद विमुख जौन जन। नाम सुरस पावत न मोद धन।।
श्री शंकर हरि भेद न धारे। नाम स्वरूप अभेद बिचारे।।

३. तीसरा नामापराध है श्रीसद्‌गुरु की अवज्ञा करना। भला विचारिये तो सही, उन्हीं कृपालु गुरुदेव ने आपको ऐसा अमोल नाम रत्न दिया है, उनका महत्त्व परत्व समझा दिया है। 'महामोहतम पुंज जासु वचन रविकर निकर।' ऐसी वचन शक्ति रखने वाले गुरुदेव के आदेश आप नहीं मानते।

स्वयं आलस्य प्रमाद में पड़कर नाम साधना शिथिल कर रहे हैं। मालूम पड़ता है परमार्थ साधन के लिये नहीं, प्रत्युत पेट भरने के लक्ष्य से, अपने क्षणभंगुर स्वार्थ परक उल्लू सीधा करने के लिए ही आप ऐसे परलोक साधक गुरुदेव की शरण में आये हैं, तभी तो उनके लोक परलोक बनाने वाले नामोपदेश की उपेक्षा करते हैं। आप ही के हित की बात कहते हैं और आप उनकी आज्ञा उल्लंघन करते हैं? क्या होगा आपको नाम जपने से? श्रीनाम सरकार ने ही तो इन्हें गुरु पद पर बैठाया है। इनका अनादर सहकर, आप पर कभी नाम सरकार रीझेंगे? कभी नहीं।

निज गुन विपुल भाँति सनमाने। सतगुरु सुमति स्वल्प अनुमाने।
ते पापी सिरताज विसेषी। यह दुतिय अघ दुखद विशेषी।।

४. वेद तो साक्षात ब्रह्मवाणी है। जिन सद्ग्रन्थों में त्रिकालदर्शी ऋषि मुनियों के आप्तवचन भरे हैं तथा सिद्धसंत महानुभावों ने जिन परोक्ष वस्तुओं को अपने ध्यान देश में प्रत्यक्ष की भाँति देखकर, वहाँ की गुप्त बातें बतायी हैं, उनके प्रमाण बचन को हम नहीं मानें, तो हमारे मन बुद्धि के परे भगवद्धाम जाने का मार्ग हमें कहाँ से और कैसे प्राप्त होगा? हमारी समझ में शास्त्र वचन नहीं आवें, तो हम उनकी निन्दा करें, श्रीनाम प्रभाव तो हमें अपने अनुभव के मालूम भी नहीं बताने वाले तो अल्प बचन ही हैं। उनकी निन्दा करोगे, तो श्रीनाम सरकार को कैसे रिझा पाओगे? अतः वेद शास्त्र निंदा चौथा नामापराध है।

५. **'कहौं कहाँ लगि नाम बड़ाई। राम न सकहि नाम गुन गाई।।'**

श्रीनाम का अपरिमित प्रभाव यथावत् किसी को मालूम नहीं है। वेद शास्त्र, संत वचन में जो श्रीनामका माहात्म्य कहा गया है वह तो आंशिक मात्र है अति स्वल्प है। उतने में भी हमें विश्वास नहीं, उसे भी अर्थवाद यथार्थ से भी अधिक बढ़ा–चढ़ाकर, श्रीनाम की मिथ्या प्रशंसा कहकर मखौल करें तो बड़ा भारी अपराध लगेगा न हमें?

अर्थवाद श्रभ्नाम मझारी। करै महा अघ रूप अनारी।।
सुनि प्रभाव अति प्रबल अनूपा। शंका करै परै भवकूपा।।
नाम महत्त्व शेष श्रुति शारद। वरनि न सके महेश विशारद।।
अपर जीव मन मलिन अजाने। क्यों जाने भव कुपथ भुलाने।।

६. श्रीनाम में अनन्त पाप नष्ट करने का प्रभाव भरा है। पापपर्वत को रूई मान लीजिये, तो उस समस्त पाप पर्वत को एक नामोच्चारण, अग्नि कणिका के समान भस्म कर डालने में समर्थ है।

जासु नाम पापक अध तूला। सुमिरत सकल सुमंगल मूला।

नामाभ्यास प्रारम्भ करने के पहले अज्ञान दशा में किये गये हमारे इस जन्म के क्रियमाणपाप तथा अनेकों पूर्व जन्मार्जित पाप सभा श्रीनाम सरकार नष्ट कर देंगे, किन्तु नामाभ्यास करते समय तो हमें पाप से बचना ही चाहिये। श्रीनाम जैसे पूर्व पापों को नष्ट करते हैं, उसी भाँति अब भी हम पाप करते रहें तो नाम सरकार मिटा ही देंगे, इसी बल पर हम नाम रटते हुये, जान–बूझकर पाप करते रहेंगे, तो श्रीना

कैसे क्षमा करेंगे उसे? प्रत्युत् उन पापों के साक्षी स्वयं श्रीनाम सरकार ही हो जाते हैं। अत: ढिठाई पूर्वक किये गये नाम जापक के पाप ऐसे अक्षम्य हो जाते हैं कि नरक यातना भोगने पर भी, उसकी निष्कृति नहीं हो पाती। हाँ, धोखे से अनजान दशा में जो पाप नाम जापक से बन जायें, उसके लिये हम ग्लानि करें, रोयें, आरत होकर, श्रीनाम सरकार से क्षमा करावें और भविष्य में पाप न करने का दृढ़ निश्चय करें, तो प्रमादवश किया हुआ पाप क्षमा कर देंगे श्रीनाम।

७. धर्म, व्रत, त्याग, यज्ञ, आदि सत्कर्म अधिक से अधिक स्वर्ग सुख देने वाले हैं। स्वर्ग भोगकर पुन: वे जन्म मरण के चक्कर में पड़ो। श्रीनाम जप तो परम भगवद्धाम देने वाले हैं, जहाँ जाकर जन्ममरण सदा के लिये मिट जाते हैं। ऐसी दशा में स्वर्ग देने वाले सत्कर्मों से श्रीनाम की तुलना कैसी? एक एक नाम उच्चारण से ही वह मुक्ति मिलने वाली है, जो अनन्त जन्मों के अन्य क्लिष्ट से क्लिष्ट साधनों से भी दुर्लभ थी।

जासु नाम सुमिरत एक बारा उतरहि नर भव सिंधु अपारा।

अत: सत्कर्मों से श्रीनाम प्रभाव की तुलना करना नाम की लघुता मानना हुआ। यह अपराध भी श्रीनाम दरबार में अक्षम्य माना जाता है।

८. अनधिकारियों को श्रीनाम का उपदेश नहीं करना चाहिये। जो श्रीनाम में श्रद्धा विश्वास न करें, उल्टे उनकी निंदा करता है, जिसे नाम प्रशंसा सुनने की श्रद्धा भी नहीं, उन अभागे को पैसे के लोभ से श्रीनाम की प्रशंसा कहके सुनाना क्यों न अपराध माना जायगा? संतों की सभा में नाम प्रभाव कहने—सुनने में पारस्परिक हित होता है। अत: संत सभा की शोभा है यह। निस्वार्थ भाव से श्रीनाम की प्रशंसा किये बिना न रहा जाय, तो साधारण तरह से तो योग्य रहस्य न बनाकर, साधारणतया कुछ प्रशंसा कर देने में हर्ज नहीं।

'नाम विनिन्दक अधम खल, श्रवन चाह जेहि नाहि।
तेहि उपदेशे लोभ वश, नाम मंत्र चित चाहि।।
अधिकारी बिन जनि कहौ, नाम परत्व प्रकार।
युगलानन्य सुनाम मनि, संत सभा दुतिदार।।
सहज सुभाय नाम कहि देवे। स्वारथ लोभ न मन मघि लेवे।।
ता मघि कछु अपराध न लागे। स्वारथ किये पाप फल रागे।।
ताके अष्टम अघ अपुनीता। लगे भगे वासना पुनीता।।

९. नाम माहात्म्य सुनकर भी, जिसे नाम जपने की श्रद्धा न जगे, नाम जप से विमुख बना रहे, उसके उद्धार का क्या उपाय? नाम प्रभाव सुनकर चटपट नाम जप में जुट जाना चाहिये। विलंब लगाने का बहाना न बनाया करें।

१०. मोह ममता में पड़कर, नाम साधना से विमुख रहना भी नामापराध ही है।

ममता मद मैं मोर मलीना। संतत रहे एक रस लीना।।

संत संग से राग न लागे। दंभ खंभ हिय बीच गड़ावै।।
मान मोह मद मृषा विगोये। भ्रम तन्द्रादि विवश शठ सोये।।
नाम रटै पै दाग न खोवै। बिना विवेक शीश हनि रोवै।।
दशम महा अपराध विचारी। भजे नाम रसना भ्रम जारी।।

ऊपर बताये गये दश नाम अपराध अनेक स्थलों में कह गये हैं। हमने यहाँ उन अपराधों का विवेचन साधारणत: श्रीपद्मपुराण में श्री नारद जी के प्रति कहे गये श्रीसनतकुमारजी के वचनों के आधार पर खास कर श्रीबड़े महाराज विरचित श्रीसत्सिद्धान्तसार के सहारे किया है। इस प्रसंग के उद्धृत दोहे चौपाई सब श्रीसत्सिद्धान्त सारसे ही लिये गये हैं।

श्री पद्मपुराण में वही संवाद कहता है कि यदि प्रमादवश हमसे उपर्युक्त नामापराधों में से कोई अपराध बन जाय, तो उसके क्षमापण के लिये कोई भी अन्य प्रायश्चित समर्थ नहीं हो पावेगी। हम श्रीनामाश्रय का विचार करते हुए अथक भाव से नाम ही रटते रहें। उन्हीं से आरत प्रार्थनापूर्वक क्षमा करा दें।

जाते नामापराधे तु प्रमादेन कथञ्चनन।
सदा संकीर्तयन्नाम तदेकं शरणोभवेत्।।
नामापराध युक्तानां नामान्येव हरन्त्यघम।
अविश्रान्त प्रयुक्तानि तान्येवार्थ कराणि च।।

श्रीरामनाम में अतुल प्रभाव भरा है। हम नाम रटें, मन से स्मरण करें अथवा सुन ही लें तो श्रीनाम हमें अवश्य तार देंगे। परन्तु चाहे नामाक्षर शुद्ध हो या अशुद्ध देह पालने के उद्देश्य से, धन कमाने के लोभ से, मान बड़ाई पाने के लिए, जमात घुमाने के लिए, दंभ से पाखंड से नाम रटन कीर्तन करेंगे, तो नाम के फलोदय में बहुत विलंब लग जायगा। फल होगा भी तो नाम मात्र का। उसी ऊपर के प्रसंग में ऐसा भी लिखा है।

नामैकं यस्य वाचि स्मरणपथि गतं श्रोत्रमूले गतंवा।
शुद्ध वाऽशुद्ध वर्ण व्यवहित रहितं तारयत्येव सत्यम्।।
तद्वैदेह द्रविण जनता लोभ पाखंड मध्ये निक्षिप्तं।
स्यान्न फलजनकं शीघ्रमेवात्र विप्र।।

प्रात: स्मरणीय स्वामी श्रीअग्रदेवाचार्य के मत से छ: ऐसे घोर पाप हैं, जो नाम रटने से भी नहीं मिटते।

१. गुरु में मनुष्य बुद्धि करना।
२. श्रीशालग्राम अथवा भगवत्प्रतिमा को पत्थर समझना।
३. भगवच्चरणामृत को सामान्य जल मानना।

४. अपार शक्ति प्रपूरित श्रीमंत्रराज को साधारण वचन के समान मानना।

५. महामहिम भगवत्प्रसाद में अन्नबुद्धि करना तथा।

६. संतों की जाति पर विचार कर, उन्हें नीच दृष्टि से देखना। मूल छप्पय जैसे स्मरण हैं यहाँ नीचे लिखते हैं।

गुरु विषे नर बुद्धि सिला करि गनै विष्णु तन।
चरनामृत जल जान मंत्र मानै वानी सन।।
महा प्रसादहि अन्न साधु की जाति पिछानै।
सो नर नरके जाय वेद स्मृति वखानै।।
अग्र कहै ये पाप षट अति मोटो दुर्घट विकट।
और पाप सब जाय पै ये न मिटै हरि नाम रट।।

उत्तम साधकों को श्रीनाम सरकार स्वयं बाधकों से परिचय करा देते हैं तथा स्वयं सर्वसमर्थ श्रीनाम सरकार ही उनसे रक्षा भी करते हैं। सावधान रहना चाहिये तथा तत्काल उनसे बचने के उपाय और युक्ति में लग जाना चाहिये।

●

साधक खण्ड

श्रीसद्गुरु शरणागति

श्रीनाम–साधना में तत्पर होने वाले जिज्ञासु को सर्वप्रथम किसी नामानुरागी, नामरंग में रँगे हुए विरक्त सिद्ध सन्त को अपने साधनमार्ग प्रदर्शक के रूप में सद्गुरु मनोनीत करना चाहिये। कर्मकाण्डियों ज्ञानियों, योगियो तथा उपसकों के लिये नाम–साधना की विधि भी भिन्न–भिन्न प्रकारों की होती है। जिस जिज्ञासु को अपने हृदय की प्रवृत्ति जिस मार्ग में हो, उसी के अनुकूल पथ–प्रदर्शक भी उसे चुनना चाहिये

पुराणसंग्रह नामक आर्षग्रन्थ में श्रीवेदव्यास के शिष्य श्रीसूतजी महाराज श्रीशौकनऋषि से बता रहे हैं। श्री नाम का जप, तो साधक चाहे किसी प्रकार से करे, उसका अवश्यम्भवी फल है। अन्त में मोक्ष की प्राप्ति। किन्तु नीचे लिखी रीति से, जो बड़भागी साधक, नाम–जप करेगा, सिद्धि कर तलगत हो जायेंगी और बिना विशेष परिश्रम के ही, अतिशीघ्र होंगी यह अनुभव सिद्ध उपाय मैं सत्य–सत्य बता रहा हूँ और इस कलीके पाप भी सभी मिट जायेगे।

सर्वप्रथम साधक अपने नामसाधना बताने वाले सद्गुरु से नामजप की विधि पूछकर जान ले तत्पश्चात् वह परात्पर ब्रह्म श्रीनामसरकारका जप–अभ्यास करे। अभ्यास निरालस्य होना चाहिये। साधक भोजन कम करे, सोये थोड़ा, बोले कम। झूठ तो कभी न बोले। व्यर्थ में इधर–उधर घूमना–फिरना बन्द कर दे। इस रीतिसे नामाभ्यास करने पर, उसे सर्वप्रथम अपने इष्ट परिकरों का समागम यहीं इसी संसार में होने लगेगा तथा नाना प्रकार के गूढ़ रहस्यों का श्रीनामकृपा से ज्ञान हो जायेगा। श्रीनामसरकार का सर्वश्रेष्ठ ऐश्वर्य क्या बतावें? स्मरण करते–करते यह चराचरमयी सृष्टि श्रीरामरूप भासने लगती है। मूल श्लोक इस प्रकार पठित हैं।

"येन केन प्रकारेण जपन्मोक्षप्रद नृणाम्।
एवं रीत्या जपेद्यस्तु रामनाममनुत्तमम्।।
तस्य पाणितले सिद्धिरनायासेन सत्त्वरम्।
सत्यं बदामि सिद्धान्तं सर्व कलिमलापहम्।।
पृष्ट्वा रीतिर्यथा तथ्यं गुरोः सान्निध्यतो मुने।
तत्पश्चादभ्येन्नाम सर्वेश्वरमतन्द्रितम्।।
स्वल्पाहारं तथा निद्रां स्वल्पवाक्य निरन्तरम्।
मिथ्या सम्भाषणं त्यक्त्वा तथा च गमनादिकम्।।

इहैव लभते नित्यं परिकराणां समागमम्।
तथा नाना रहस्यानां ज्ञानं संजायतें ध्रुवम्।।
नाम्नः परात्परैश्वरर्य कथं वाचा वदामि ते।
स्मरणाल्लक्षते विश्वं रामरूपेण भास्वरम्।।

इसी प्रका श्री गोस्वामिपाद ने भी श्री विनयपत्रिका की पद संख्या १०८ में नामसाधना के आरम्भ में सद्गुरु से मन्त्रदीक्षा लेने की आवश्यकता बतायी है। पद इस प्रकार पठित है।

वीर महा अवराधिये, साधे सिधि होय।
सकल काम पूरन करे, जानै सब कोय।।
बेगि बिलंव न कीजिये, लीजै उपदेश।
बीज मन्त्र जपिये सोई, जो जपत महेस।।
प्रेमवारि तरपन भलो, घृत सहज सनेहु।
संसय समिध अगिनि—छमा, ममता—बलिदेहु।।
अघ—उचाटि मन बस करै, मारै मद मार।
आकरषै सुख—संपदा—सन्तोष बिचार।।
जिन्हें यहि भाँति भजन कियो, मिले रघुपति ताहि।
तुलसिदास प्रभु पथ चढ़यों, जौ लेहु निवाहि।।

अब यथाबुद्धि ऊपर उद्धृत पद का भाव लिखते हैं। साधक को मन्त्रदीक्षा लेने के पहले, अपने इष्टदेवता का निश्चित निरूपण करना चाहिये। श्रीगोस्वामिपादका सुझाव है कि आराधना क्षुद्र देवी, देवता, यक्ष, राक्षस—भूतप्रेत की नहीं करनी चाहिये। क्योंकि मन्त्रजापक के वश में मन्त्रदेवता को होना पड़तास है। इंस विचार से आराध्यदेव ही मन्त्रानुष्ठान्त में बाधक बनकर, अपना मन्त्र सिद्ध नहीं होने देते। अतः परम पौरुष सम्पन्न विश्व—विख्यात वीरपुंगव श्रीरघुवीरजी को ही अपना आराध्य इष्टदेव वरण करना चाहिये। दयामय कृपासिन्धु श्रीजानकी नाथजी अपनी मन्त्र आराधना करने वालों के स्वयं सहायक एवं रक्षक बन जाते हैं। अतः आपकी मन्त्रसाधना करने से अवश्यमेव सिद्ध होती है और देवता आपके लौकिक मनोरथ पूरा करेंगे, तो पारलौकिक मनोरथ पूर्ण करने में क्या असमर्थ रहेंगे? श्रीरघुवीर तो आपके सभी मनोरथों को पूर्ण करने में समर्थ सहायक हैं।

जब आपने इष्टदेव का निर्णय कर लिया, तो क्षणभंगुर मानव—जीवन पर विश्वास न कर, शीघ्रातिशीघ्र मन्त्रदीक्षा किसी योग्य सद्गुरु से ले लीजिए। आजाकल के निगुरा विद्वान् सद्गुरु वरण में आपको बहुत बहकावेंगे। परन्तु आपको श्रीभक्तमाल में चर्चित कई साधकों के ऐसे वृतान्त मिलेंगे, जिन्हें प्रभु के साक्षात्कार होने पर भी, प्रभुही की आज्ञा से उन्हें भी गुरू करना पड़ा।

आप श्रीधनाभक्त की कथा पढ़िये। प्रभु प्रगट होकर, आपके हाथ की समर्पित रोटी खाते थे। आपकी गौ भी चराते थे। फिर भी आपकी पूर्ण स्वीकृति के लिये, परलोक सिद्धि के लिए स्वयं प्रभु ने ही श्रीधनाजी रामानन्दाचार्य के शिष्य होने की आज्ञा दी। श्रीहरिव्यासजी को दर्शन होने के बाद दीक्षा दिलवायी। औरों की बात छोड़िये, श्रीपार्वतीजी को भी भगवान् शंकरजी ने श्रीवाम देवजी से मन्त्रदीक्षा गुरु से न लेने पर, "गु बिनु भवनिधि तरै न कोई। जौ विरंचित शंकर सम होई।।" यह मानस वचन मिथ्या सिद्ध होगा। यहाँ बीजाक्ष संयुक्त श्रीराम षडक्षर मन्त्रराज लेने की बात कही गयी है, और है भी यही प्रचलित दीक्षा विधि। भगवा शंकरजी जहाँ दिन–रात श्रीरामनाम जपते रहते हैं, वहाँ उनके षडक्षर श्रीराम मन्त्र जपने का भी प्रमा श्रीरामोत्तरतापिनी उपनिषद् में आया है। "श्रीरामस्य मनुं काश्यां जजाप्य वृषभध्वज:।।" हमने मन्त्रविज्ञों सुना है कि श्रीरामनाम की आराधना के पहले श्रीयुगल षडक्षर मन्त्रराज की दीक्षा लेकर, श्रीमन्त्रराज का पह पुरश्चरण कर लेना चाहिये। १२ लाख मन्त्रराज सविधि जपनाही मन्त्रका पुरश्चण है। पुरश्चरण विधि है मन्त्रजप संख्या की दशांश संख्या में हवन करना चाहिये। उसकी दशांश संख्या में दर्पण करना चाहिये उसके दशंश मार्जन। उसका दशांश मन्त्रजापक ब्राह्मणों को दक्षिणा सहित भोजन कराना चाहिये। यहाँ हव की विधि विस्तारपूर्वक बताने के लिये सूची कटाह न्याय से पहले तर्पण की विधि बता दी गयी। तर्पण पवित्र तीर्थजल से उत्तम माना जाता है। परन्तु श्रीराघवजू "रामहि केवल प्रेम पिआरा" है। अत: जपका में प्रेमाश्रु विमोचन होता रहे, तो उसी प्रेमआँसू को आप अपना तर्पण मानकर रीझ जाते हैं। हवन में शु गोघृत चाहिये, आम्र आदि पवित्र काष्ट का हवनीय ईंधन होना चाहिये। हवनाग्नि अरणी मथकर प्रगट कि जाता है। हवनान्त में पशुबलि या हिंसा से बचने वाले के लिये नारियल की बलि देने की विधि है। ये स विधियाँ श्रीराघवजू के रिझाने में बदल देनी चाहिये। आप हवन में घृत की जगह, इसी संशय को जला नष्ट कर देना चाहिये। जैसे अग्नि अपने सम्पर्क में आने वाली सभी वस्तुओं को जलाकर भस्म कर दे है, उसी भाँति क्षमा सभी अनिष्ठों को मिटा देती है। अत: क्षमा से हवनीय अग्नि का काम लिया जा ममता अर्थात् सांसारिक वस्तुओं में अपनपौ मानना ही सांसारासक्ति का मूल है। अत: ममता को ही ब देकर अभाव कर देना चाहिये। इस प्रकार मन्त्र जपान्त हवन करने से चार प्रयोग तो आपको अनायास सि हो जायेंगे– १. उच्चाटन २. वशीकरण ३. मरण और ४. आकर्षण।

उच्चाटन से आपके सारे पापों को उचाट लगाकर भगा दिया जायेगा। वशीकरण से अनेकं यत्नों भी एकाग्र नहीं होने वाला, आपका मन आपके ऐसा वशीभूत हो जायेगा जब तक चाहें, इसे इष्ट ध्य चिंतन में लगाये रखें। मारण से आपके अभिमान और काम विकार का काम तमाम कर दिया जायेगा अ आकर्षण सिद्ध होने पर सुख सम्पत्ति, सन्तोष विचार आदि शुभ वस्तुएँ बिना यत्न के आप के पास

जायेगी। ऐसी श्रद्धा, विश्वास और अनुराग पूर्वक मंत्र नाम जपने वालों को श्रीरघुपतिजी पहले भी प्राप्त हो चुके हैं और अब भी प्राप्त हो रहे हैं, भविष्य में भी सुगम, सुलभ ही रहेंगे। श्रीगोस्वामीजी का कहना है कि यह भक्त भी आपके प्राप्ति–पथ पर आरूढ़ है। अन्त तक इस मार्ग पर चलकर निवाहना, अपने मन की बात नहीं है। आपही की कृपा से निवहेगा।

अनन्त श्रीविभूषित स्वामी युगलानन्यशरणजी महाराज ने अपनी नाम साधना विषयक पुस्तकों में सर्वत्र इस बात का आदेश दिया है कि साधक सर्वप्रथम सद्गुरु शरणापन्न होकर, उन्हीं से मंत्र और नमा की दीक्षा प्राप्त करे तथा नाम आराधना की रीति भलीभाँति सीखकर, उन्हीं के तत्त्वावधान में साधन करे। सर्वप्रथम आपके रचित श्रीसीताराम नामाभ्यास प्रकाश की कतिपय पंक्तियाँ उपर्युक्त आदेश सम्बन्धी हम यहाँ उद्धृत करते हैं। भाषा अवधी है। पाठक–खड़ी बोली वाले लेखन तथा व्याकरण की खोज यहाँ नहीं रखें।

'विचार किया जाना चाहिये कि ऐसे चारु चमत्कार चिंतामनि से विशेष मानव वपुको पशु, सिंह, भूतप्रेत, सम सुभव धारन करके, कौड़ी सम अनादर करना न चाहिये। ताते पुरुषोत्तम राम सुखधाम मिलाप निमित्त सांचे सतगुरु पदपंकज पराग के आश्रित होय के श्रुति संत संमत संयुक्त श्रीनामाभ्यास में सुचि रुचि करना परम उचित है। इह इष्ट पदार्थ सम्बन्धी समस्त दुखदाय प्रभु विमुखता के कारन हैं। ताते सत्संगी मतिमान सब स्थूल भोगरोग शोक सम मानि के केवल प्रभु प्राप्ति अभ्यास मं तत्पर होय। श्रीसतगुरु कृपा कटाक्ष के बिना, अभ्यास सफल नहीं होता। ताते श्रीगुरुद्वारे यतन में तत्पर होय, आलस प्रमाद त्यागि के।'

पुन: श्रीबड़े महाराजजी अपने श्रीयुगल वर्ण विलास नामक ग्रन्थ में लिखते हैं कि श्रीनामाभ्यास की अनुपम भूमिका यह है कि किन्हीं नामाराधन तत्पर महानुभाव के निकट श्रीनाम में प्रेम, विश्वास तथा नामजप की विधि सीखे। बारंबार चारों ओर ढूँढ़े कि नामाराधन में तत्पर निर्मल संत कहाँ मिलेंगे? अपने सौभाग्य से यदि उनकी प्राप्ति हो जाय, तो सावधानी से उनके पादारविन्द का सेवन करे। उनके संग में निवास करके, उनसे सुधासिंधु श्रीसीतारामनाम से स्नेह करने की रीति सीखे। पुन: उनसे श्रीनाम का अर्थ, श्रीनाम परत्व, श्रीनाम का महत्त्व, श्रीनाम की रसरूपता, श्रीनाम में पवित्र विश्वास आदि सीखे। श्रीनाम में भाव करना, नाम में उत्साह श्रीनाम के द्वारा दिव्य अनुभव कैसे हो, तथा निविघ्न रटन कैसे निवहे अपने मनोनीत करुणा सागर सद्गुरु से प्रवीण साधक सब सीख ले। नाम सम्बन्धी सारी ज्ञातव्य बातों की जानकारी प्रापत होने पर, साधक अपने सुपास देखकर या तो उन्हीं कृपालु सतगुरु के सानिध्य में रहकर, नामाभ्यास करे अथवा उनकी आज्ञा लेकर पृथक नामाभ्यास में जुट जाय। स्वाद ले लेकर नाम रटना चाहिये। नाम रटन में जहाँ जीभ को लगावे, तो उसके साथ–साथ मन भी लगा रहे। इससे हृदय में शाँति मिलेगी।

नाम मिलन की भूमिका, है यह परम अनूप।
नामाराधन जन निकट, प्रीति प्रतीति सुजूप।।

पुनि पुनि खोजे सकल दिसि, नाम निरत सत स्वच्छ।
विशद भाग्यवल पाय पद, सेवे सतत सुदक्ष।।
बसे संग सीखे सुधा, सिंधु सनेह सुरति।
अर्थ परत्व महत्व रस, रूप पुनीत प्रतीति।।
भाव चाव अनुभाव विधि, रटन उपाधि विहीन।
श्री सद्गुरु करुनेश पहँ, सीखे सकल प्रवीन।।
विदा होय वा संग बसि, जपे जौक जुत नाम।
मधुर मधुर मन जीह सह, दायक दिल आराम।।

हमारे पूज्यपाद श्रीबड़े महाराज ने श्रीरामनामपरत्वपदावली में भी इसी प्रकार की बात लिखी है, साधक को चाहिये कि किसी नामानुरागी संतसे नामराधन की युक्ति सीखे। यदि नाम छोड़कर, हम अपने लोक परलोक बनाने का दूसरा उपाय कर रहे हैं तो उसमें हमारी भलाई नहीं हैं। इस मूर्ख मनका व्यर्थ भटकना माना जायेगा। हमारे चित्त को मोह, काम तथा अभिमान ने धोखा दे रखा है। इसीसे हम भोग साधक धन के लिये क्षुद्र संसारी धनी जीवों से अनुनय विनय करते फिरते हैं। अमोल आयु व्यर्थ समाप्त होती जा रही है। जब श्रीसद्गुरुदेव हममें श्रीनामाराधन का अटल गुण भर देंगे, तब किसकी सामर्थ्य किहमें साधन से डिगा सके? अत: नाम—साधना में कभी क्षणमात्रका विलंब नहीं करना चाहिए। परम करुणामय, कृपासिंधु श्रीराघवलाल का रूप हृदय में स्मरण करते हुये, उनके नामाभ्यास में तत्पर होना चाहिये।

कोई संत निकट गहु नाम कला।
केहि हित भटकि मरत मन मूरख, और जतन विच नाहि भला।।
बकता विपुल विनय वित हित नित, चित मद मोह मनोज छला।
जब सतगुरु दैहें अविचल गुन, तब कोउ केहि विधि सकत हला।।
जनि पल भर कीजिए अंतर कहुँ, अमल उमर लक्षु जात चला।
(श्री) युगलअनन्य शरन छल बल तजि, सुमिरन करू हिय राम लला।।

इस सम्बन्ध को और भी महावाणियाँ हैं। स्थानाभाव से सब उद्धृत नहीं कर सके। आजकल के कुछ तथाकथित निगुरा विद्वान् किसी संत विग्रह धारी गोविन्द को गुरु मानने को तैयार नहीं होते। वे श्रीगीता या श्रीमानस आदि किसी ग्रन्थको गुरु माने बैठे हुए हैं। उन्हें मन्त्र मर्म दर्शक उड्डीश तन्त्र के इस कथन पर ध्यान देना चाहिए।

पुस्तके लिखिता विद्या नैव सिद्धिप्रदा नृणाम।
गुरु विनापि शास्त्रेऽस्मिन्नाधिकार: कथंचन।।

अर्थात् पुस्तक में लिखी विद्या मनुष्यों को सिद्धि नहीं देती। तन्त्र शास्त्र में बिना गुरु के उपदेश के किसी प्रकार के कार्य का अधिकार नहीं है।

नाम जिज्ञासुको सर्वप्रथम नामानुरागी संतों से पूछकर नाम तत्त्व को जानना चाहिये। प्रथम लोकलाज, घरका सुखसाज छोड़कर, शुद्ध विरक्त बनकर, निश्छल भाव से सतगुरु की सेवा करके अन्तःकरण को शुद्ध बनावे। जगत् से उदासीन हो जाय। एक मात्र नाम रटन की अभिलाषा बढ़ावे। गृह, गृहसम्पत्ति, भूमि में ममता छोड़ दे। जो नाम छोड़कर, अद्वैत मत का ज्ञान सिखावे, उसे विरोधी मानकर, उसकी संगति त्याग देवें। श्रीनामानुरागी संतों को तन, मन, धन समर्पण करके, उनसे नाम तत्त्व का उपदेश लेना चाहिए।

'संतन समीप जाय पूछो नाम तत्त्व को।
प्रथम उपाधि लोक लाज सुख साज तजि
सजि के विराग शुद्ध सोधि सुचि सत्व को
होय के उदास अभिलाष नाम मध्य करि
धरा धन धाम छल छोड़िये ममत्व को।।
संगति विशेष त्यागि दीजिये विरोधी मानि
कहत जो ज्ञान नाम रहित एकत्व को।
(श्री) युगल अनन्य तन मन धन सौंपि पुनि
संतन समीप जाय पूछो नाम तत्त्व को।। ९९३।।

अनुभवी संतों से नाम तत्त्व पूछना इसलिये है कि नाम रहस्य अतिशय गोपनीय है जो नाम प्रभाव प्रगट रूप से देखने में आता है, वह तो श्रीनाम सरकार की कृपा है। पतितों के उद्धार हेतु इतना प्रभाव प्रकाश करना आवश्यक था। जैसे–जैसे आप नाम रहस्य जानते जायेंगे तैसे–तैसे अधिकाधिक जानने की जिज्ञासा बढ़ती ही जायेगी। श्रीनाम के विशुद्ध और अनुपम अर्थ को काम क्रोध जीतने वाले समर्थ श्रीशिवजी, श्रीशेषजी, परमहंस वर्य श्रीशुकदेवजी जान पाये हैं। जब नामानन्द में मगन करुणावान संत सौभाग्यवश किसी बड़भागी नवीन साधक को मिल जायें, तब श्रीनाम की लगन जगे, और सांसारिक भोग–पदार्थ का लोभ लालच मिट जाय। श्रीबड़े महाराज जी कहते हैं कि मतिमंदो के लिये नितांत गुप्त नाम रहस्य अगम है।

नाम को रहस्य अति गोप हू ते गोप है।
प्रगट देखात सो तो पावन पतित हेतु
बढ़े जावे जानिवे की आगे आगे चोप है।
अमल अनूप अर्थ अकथ समर्थ शिव
शेष सुक जान्यो जिन जीत्यो काम कोप है।।
मिले सुख रास संत करुना निकेत तब
लगे लाग बाग होय जाय लोभ लोप है।
(श्री) युगलअनन्य मोसे मंद न निहारि सके
नाम को रहस्य अति गोपहूँ ते गोप है।। ९९४।।

सच्चे नामानुरागी एवं अनुभवी सद्गुरु यदि श्रीनामसाधक—को पथ प्रदर्शक रूप में मिल जाते हैं, तो साधक का साधनपथ बहुतही सुकर हो जाता है। यदि दुर्भाग्यवश, कहीं किसी साधक को ऐसे सुयोग्य अनुभवी सद्गुरु न मिले, तो साधक को उचित है कि किसी भी अन्य सुयोग्य नामनिष्ठ महानुभाव के समाश्रित होके, श्रीनामसाधना में तत्पर होवे। श्रीबड़े महाराज की महावाणी के प्रकाश में ऐसे सद्गुरु ढूढ़िये

साँचो सतगुरु सिरताज महाराज तौन
जौन निज नाम उपदेशो दोष दलि के।
प्रगट अघट अटपट के विहीन पर
तत्त्व दरसावै मान मोह मद मलि के।।
भावना भरम अधरम असरम मेटि
महामुददान दियो चारो छली छली के।
(श्री) युगलअनन्य ऐसे गुरु सदयाल ढिग
कोटि काम धाम तजि रहो पास चलि के।। २२१७।।

"गुरु बिनु होई कि ग्यान, ग्यान कि होहि विराग बिनु।" परमहंस श्रीप्रेमलताजी महाराज भी गु शरणगति की आवश्यकता बताते हुए कहते हैं।

जद्यपि नाम परत्व बहु, पोथिन में विख्याता।
प्रेमलता गुरु ग्यान बिनु, निगुरनि नाहि लखात।।
नाम तत्त्व अतिसय अगम, गुरु बिनु गावहि संत।
प्रेमलता जिमि मसकही, दुर्लभ सागर अंत।।
नाम तत्त्व लहि सुगुरु सन, रटत सदा इकतार।
प्रेमलता ते अचल जिमि, साधु धर्म संसार।।
विधि निषेध के पार जो, परम सार को सार।
प्रेमलता सूझत नहीं, गुरु बिनु नाम उदार।।

सरल भाषा में लिखित दोहे की व्याख्या अनावश्यक समझी गयी

सुख निधान गुरुदेव मिले मोहि सोइ मेरे उर वस्ते हैं।
रटवावहि सियराम कृपाकरि रोकहि जात कुरस्ते हैं।
तेहिलगि कठिन विषय कामादिक जनमन अधिक न धस्ते हैं।
प्रेमलता जे लाल गुरुन के रहहि सदा अलमस्ते हैं।। १३।।
गुरुपद विमुख मनमुखी मूरख परपद पाइउ खस्ते हैं।
रटतौ नाम न सुख सिद्धि सरसत जद्यपि तन बहु कस्ते हैं।।
काढ़त खीस उदर लगि निसिदिन डोलत दर दर सस्ते हैं।
प्रेमलता गुरुदेव कृपा बिनु फिरि—फिरि भोगनि फँस्ते हैं।। १४।।

जो न रटै सियराम नाम जन गुरुमुख होइ धरि नरदेही।
जीवत मुये समान फिरहि जग खर कूकर निंदत तेही।।
झूठे नाते जोरि तजे सठ सीतावर अस असनेही।
ज्ञान ध्यान बहु कथै भजन बिनु प्रेमलता मनमुख गेही।

श्रीहितोपदेश—शतक

श्रीरामनाम—शरणागति

जिन श्रीरामनाम सुधाधाम के प्रभाव से श्रीब्रह्मा, विष्णु, महेश तथा लक्ष्मी आदि वैकुण्ठ के पार्षदगण, अपने—अपने पदों पर सुशोभित हो रहे हैं तथा जिस तत्त्वका सेवन कर, मुनीन्द्र, योगीन्द्र अपने—अपने मार्गमें चमत्कार पाये हुये हैं, उन्हीं श्रीरामसरकार की शरण में हम भी प्राप्त हो रहे हैं।

राजन्ति यद्विष्णु शिवस्स्वयम्भुवो
लक्ष्म्यादि वैकुण्ठ चराश्च नित्याः।
तदेव तत्त्वं च मुनीन्द्र योगिनां
श्रीरामनामामृतमाश्रयं मे।।

श्रीआदिपुराण में भगवान् श्रीकृष्ण अपने परमभक्त श्रीअर्जुनजी को आदेश दे रहे हैं कि जो प्रेमी भावुक श्रीरामनाम का आश्रयण किये हुये हैं वे सदा कृतार्थ रूप हैं। मैंसत्य—सत्य कहता हूँ, मेरी बातों को अन्यथा न मानना।

रामनामाश्रया ये वै भावुकाः प्रेम संलुप्ताः।
ते कृतार्थास्सदा तात सत्यं सत्यं न चान्यथा।।

शरणागति लेने से श्रीरामनामही जापक के रक्षक बनकर, उसकी सदैव सुरक्षा करते रहते हैं, अतः शत्रु उसकी ओर आँख उठाकर भी नहीं देख सकते, दुष्ट ग्रहगण, उसे कोई बाधा नहीं पहुँचा सकते, राक्षस उसे खा नहीं सकते। नामजप में तत्पर रहना चाहिये। दण्डकारण्यके "निसिचर निकर सकल मुनि खाये।" वे मुनिगण श्रीनामजापक नहीं रहे होंगे।

रिपवस्तस्य च पश्यन्ति न वाधन्ते ग्रहाश्च तम्।
राक्षसाश्च च खादन्ति नरं रामेति वादिनम्।।

— श्री सूतसंहिता

श्रीमार्कण्डेय संहितामें कहा गया है कि श्रीरामनाम के आश्रित होनेपर, श्रीनाम—सारकार दर्शनानुसार आर्तभक्तों को इष्ट दर्शन कराकर प्राण रक्षा करते हैं तथा शरीरान्त होने पर, अपने इष्टके मिलन में दृढ़ विश्वास रखकर सन्तोषपूर्वक कालक्षेप करने वाले दृप्त भक्तों को दिव्यानन्द देते रहते हैं।

आर्त्तानां जीवानां नित्यं दृप्तानां वै विनोददम्।
भक्ताणां त्राण कर्त्तारं रामनाम समाश्रये।।

श्रीविश्वामित्र संहिता का वचन है कि कलिकाल में श्रीनाम सरकार के प्रपन्न महाभाग धन्य है, बड़े पुण्यवान हैं। शरणागति धर्म का आग्रह है, शरण्येतर अन्य साधन की आशा भरोसा का त्याग करना। सो श्रीरामनाम के आश्रित योगादिक साधनों को भलीभाँति त्याग कर, एकमात्र नाम साधना में निष्ठा रखते हैं।

धन्याः पुण्याः प्रपन्नास्ते भाग्ययुक्ताः कलौयुगे।
संविहायाथ योगादीन राम रामैक नैष्ठिकाः।।

श्रीमार्कण्डेय संहिता में कहा गया है कि श्रीरामनाम ऐसे शरणागत रक्षक हैं कि आश्रित जापकों के विवेकादिक शुभाचरण की रक्षा करने में सदैव तत्पर रहते हैं और आश्रितों को सुख देने में तो परमानन्द के स्वरूप ही हैं।

विवेकादीन् शुभाचारान् रक्षणाय सदोद्यतम्।
श्रीरामेति सन्नाम परमानन्दविग्रहम्।।

श्रीरामरक्षा स्तोत्र में कहा गया है श्रीरामनाम के द्वारा सुरक्षित रहने वाले को पाताल, भूतल या आकाश में विचरने वाले कपट रूप धारी दुष्ट गण दुखदायिनी नजर उठाकर देख भी नहीं सकते।

पाताल भूतल व्योम चारिणःश्छद्म।
न द्रष्टुमपि शक्तास्ते रक्षितं रामनामभिः।।

पतंञ्जलि संहिता में भी यही बात आयी है कि वात्सल्यसिन्धु परब्रह्म रूप श्रीरामनाम को छोड़कर माया से रक्षा पाने का दूसरा कोई उपाय नहीं है। हम सत्य कहते हैं।

राम नाम परब्रह्म त्यक्त्वा वात्सल्यसागरम्।
अन्यथा शरणं नास्ति सत्यं सत्यं वदाम्यहम्।।

सांखल्य स्मृति में कहा गया है कि जिन श्रीरामनाम के सुनने से अथवा कीर्त्तन करने से, मानव सभी आपत्तियों से बच जाता है, हम उन्हीं श्रीरामनाम रूपी मंत्र के शरणापन्न होते हैं।

"श्रवणात्कीर्त्तनाद्यस्य नरो याति निरापदम्।
तच्छ्रीमद्राम नामाख्यं मन्त्रे वै संश्रयाम्यहम्।।"

वृहन्नारदीय का वचन है कि परात्पर ब्रह्म श्रीरामनाम के ही सदा शरणापत्र होना योग्य है। हम लोगों के संत समाज के लिए अन्य साधनों का आश्रय लेना अनर्थकारक है।

"श्रीमद्रामेश नाम्नस्तु सततं शरणं व्रजेत्।
अस्माकं सत्समाजेषु पायान्तरमनर्थकम्।।"

नृसिंहपुराण में भक्तवर श्रीप्रह्लाद जी अपने भगवत्विमुखी पिता का हित बताते हुये कहते हैं कि श्रीरामनाम के प्रभाव से सब बन्धनों से जीव मुक्त हो जाता है। अत: दैत्यराज! आप भी उन्हीं श्रीनाम सरकार की शरणगति ग्रहण करें।

राम नाम प्रभावेण मुच्यते सर्व वन्धनात्।
तस्मात्त्वमपि दैत्येश तस्यैव शरणं ब्रज।।

श्रीकालिका पुराण में कहा गया है कि सभी शक्तियों को उत्पन्न करने वाले तमोगुण से अतीत श्रीरामनाम ही परात्परतम ब्रह्म हैं। अपनी शरण में आने वालों को बहुत बहुत सुख देते हैं।

सर्वासामेव शक्तीनां कारणं तमस: परम्।
श्रीराम नाम सर्वेशं सौख्यदं शरणार्थिनाम्।।

श्री बड़े महाराज श्रीसीतारामनाम सनेह वाटिका (१७) में कहते हैं कि करुणानिधान सुजान शिरोमणि श्रीनाम सरकार की कृपा दृष्टि चाहिये। नाना प्रकार के वेश बनाने से क्या होगा? मरा मरा कहने वाले श्रीवाल्मीकि हराम शब्द कहने वाला यवन नामाभास के कारण, किरात सूग्गा को राम नाम पढ़ाने वाली वेश्या करोड़ों पापी श्री नाम सरकार की शरणागति से परम साकेत धाम को पहुँच गये श्रीनाम का सुयश चारों युगों में संसार भर में जगमगाता आया है ऐसा स्वयं वेद ही कहते हैं। श्रीनाम सरकार को रिझाने के लिये केवल विश्वास और श्रद्धा प्रेम की आवश्यकता है इनके अभ्यास में पैसे कौड़ी तो खर्च करना ही नहीं पड़ता।

सीताराम नाम करुनेश की नजर नेक
चाहिये हमेश वेश और कौन काम को।
वाल्मीकि जमन किरात गनिकादि कोटि
ओट नाम सरन सुपायो पर धाम को।।
चारि युग जाहिर जहान जगमग जस
सरस सुनाम वेद वदत अराम ो।
युगल अनन्य चित्त चाहिये प्रतीति प्रीति
नाम सुमिरन मांझ खरच न दाम को।।

जिन्होंने श्रीनाम महाराज की शरणागति लेकर अहर्निश नामभ्यास किया है उन्हें आप अपनी आँख से ही देख लीजिये कि वे तीनों गुणों से अतीत हो गये कि नहीं? उनके सन्निकट में रहेंगे सत्य, शांति, शील अन्त:करण शुद्धि, सच्चे स्नेह का शौक आदि शुभ गुणगण। नाम शरणागति को आप स्वयं अजमाकर देख क्यों नहीं लेते हैं कि कितना बड़ा सौभाग्योदय होता हैं इनसे? आप भली—भांति देखियेगा कि ऐसे कौन से दिव्य गुण हैं जो नामजापक को प्रत्यक्ष न प्राप्त हो जाय? अर्थात् सब सुलभ है। नाम जापक संतों का संग तो दर्पण है। अपना सहज दिव्य श्रीराघव पार्षद रूप देखना हो तो इसी सत्संग दर्पण में देख लीजिये। अर्थात् नामिष्ठ संतों के संग से अपने दिव्य रूप का बोध होता है।

नाम महाराज के शरन भये जौन जन
तौन तीन गुन तें अतीत दृग देखिये।
सत्य शान्ति शील सत्त्व शुद्धता सनेह शौक
साजन समीपता सुभाग अवरेखिये।।
ऐसौ कौन दिव्य भव्य सुगुन रटत नाम
होय अपरोक्ष नाहि भली–भाँति लेखिये।
(श्री) युगल अनन्य संत संग आरसीस बिच
सहज स्वरूप अवलोकनो विशेषिये।। २९।।

आप श्रीनाम कृपालु के समाश्रित हो जाइये और दिव्य आनन्द वाग की कोयल बनकर कलर करते रहिये। श्रीनाम शरणागत के ऊपर काम का, कलिकाल का कोई भी दुष्ट प्रभाव नहीं पड़ने के आवश्यकता है सुधाधाम नामाभ्यास में मन को रमाकर नित्य रात भर जगकर नाम रटते रहे। ऐसे ना जापक के द्वार. पर सदा निर्भयता का नगाड़ा बजा करेगा।

नाम कृपाल के आसरे हूजिये कूजिये वाग विनोद विलच्छन।
काम कलाल की शक्ति चले नहि काह करे कलिकाल कुलच्छन।।
जागिये रैन सुचैन सुधानिधि नाम से चित्त रमाय अनुच्छन।
युग्म अनन्य निशान अभै बजवाइये शौक समेत विचच्छन।।

हे श्रीनाम सरकार अब तो मैंने आपकही की शरणागति ले ली है। जब मर्जी हो तभी अपनाइ अपनाना है आपही को, मेरी बुद्धि मलिन मंद आदि मलिन स्वभाव से मिलकर विष में ही महामोदम मधुराई मान रही है। हृदय में विचार कर देख लिया है विषय रुचि आदि कलंक कालिमा कीचड़ में स सना हुआ हूँ। श्रीसियाजू की चेरी कहवाने मात्र को हूँ। जगत से फेरने पर भी तनक भी मन भिन्न नहीं हो वृत्ति सदा वहिर्मुखी बनी रहती है। अब रक्षा आपही की कृपा पर है।

मेरी मति मलिन मदादि मलमूल मिलि
मानत मधुर मोद माहुर मनाय के।
हेरी हिय बीच कीच कालिमा कषाय कुल
घेरि रही संतत न फेरी फिरी धाय के।।
चेरी कहवाय जाय जग ते न नयारी नेकु
रहत वहेरी दिशि बहत अघाय के।
(श्री) युगल अनन्य नाम तेरी हौं शरन अब
चाहो जब तब अपनावो दृग लायके।। १९२।।

नामानुरागी जापक श्रीनाम बल से ऐसे साधनश्रम सहिष्णु तितिक्षु तपोनिष्ठ बन जाते हैं कि कायरों को होने लगता है कि हम से इतना कष्ट क्यों कर सहन होगा? परन्तु विचारना चाहिये कि इस कलिकाल

मत्तगयंद से सुरक्षा श्री नामसिंह ही कर सकते हैं। यदि अन्य साधन रूपी सियार में जायँ तो बेचारे स्वयं जान लेकर भाग खड़े होंगे।

"वात बनाने से क्या हासिल जब तक नाम न जपते हो।
कथनी का कूड़ा बटोरि के मोद मानि खल खपते हो।।
नाम सनेह सहित संतन की कथा सुने पर कँपते हो।
युगलानन्य शरण पंचानन निदरि स्याल पहँ छपते हो।। ११।।"

श्रीनाम के समाश्रित हो जाने पर श्रीनाम सरकार अपने आश्रित के ज्ञान–वैरी कामादि का नाश कर देते हैं। अज्ञानता आने देते नहीं। नाम रटते ही नामनशे में जापक चूर हो जाता है। श्रीनाम सम्मुख होते ही इन्द्रिय देवता साधन में अड़चन नहीं डाल सकते। जगत प्रपंच मिथ्या चिंता मिथ्या विषयरस का सुख स्वयं भयभीत हो जाते हैं।

बोध विरोध अबोध धमक हर नाम रटत छकि छावे।
कर न सकत अबरोध अमर जब अभय नाम समुहावे।।
फरक फरेब फिकर फानी फल विषम फनीश सकावे।
युगलानन्य शरन साबित जब सियराम नाम अपनावे।।१०२।।

श्रीनाम शरणागत होते ही परब्रह्म श्रीजानकी रामणजू की प्राप्ति हो जाती है। अष्ट सिद्धि नवोनिधि ऋद्धि नामशरणागत का रुख जोगाने लगती हैं, ये आज्ञा प्रतीक्षा करती है, सिर उठा कर उनकी ओर देखने में भी सकुचाती है। उसके लोक (दुनियाँ) तथा परलोक (दीन) दोनो अनायास (मेहनतहीन) बन जाते हैं। अन्यथा वह वैष्णव वेश का नमकहराम है।

सिद्धि रिद्धि नवनिद्धि निहारत नैन रहे निज नामी।
सिर उठाय नहि सकहि तकति निर्देश बिगत बदनामी।।
मेहनत हीन दीन दुनिया तिमि वेष सुनोन हरामी।
युगलानन्यनाम शरणागत भए प्राप्त पर स्वामी।। १९१।।

जपने का दृढ़ संकल्प

श्रीनाम शरणापन्न होने पर नाम साधना के लिए दृढ़ संकल्प करे। संकल्प नीचे लिखे प्रकार से करना चाहिये।

नाम जप में बहुत बड़ी बाधा है अधिक सोना, दिन का समय जगत के व्यवहार शारीरिक कृत्यादि में अधिक चले जाते हैं। भजन का निश्चित समय मिलता है रात में। अतः रात्रि जागरण का संकल्प करे। दो घड़ी का अर्थ ४८ मिनट है। दिनरात मिलाकर इससे अधिक निद्रा को नहीं देवे। कामविकार को भलीभांति जीतना है। किसी से कोई प्रयोजन नहीं रखे। संसार से उदासीन हो जाना है। इस प्रकार संयम का संकल्प कर नामाभ्यास करते–करते श्री नाम के सुखसिंधु में प्रवेश कर उसी में मगन रहने का शुभ संकल्प करे।

(झूलना छंद) आज से रैन दिन सैन करिहौं नहीं
लेटि युग घड़ी उठि बैठना है।
मारि मन मदन को शौक सद सदन में
होय हुशयार अब पैठना है।।
किसी से काज कछु मीत मुझको नहीं
विश्व से भली विधि ऐंठना है।
युगल अनन्य श्री नाम सुख सिन्धु में
दम वदम मौज मिलि मैठना है।। १२२७।।

अब हमें दृढ़ विश्वास हो गया है नाम ही रटने से परमानन्द में मगन रह सकते हैं। नामं विमुखी
चिंता में व्याकुल रहते हैं। उन्हें अमिट अपराधों की कलंक कालिमा लगती रहती है। अत: हम तो नाम र
का संकल्प लेकर इनसे पिंड छुड़ा रहे हैं। हम श्रीनाम शरणागत हो गये हैं। श्रीसुखसिंधुनाम की कृपा से
मुझे कोई विघ्न बाधा नहीं व्यापेगी। ऐसे सतत सावधान तो हम रहेंगे ही। अब अपने जप गृह में अ
जमकर अपने नामजप से कभी डोलेंगे नहीं। अब क्या फिर फिर इस संसार में आना है। श्रीनामवल जो साथ

कठिन कलंक वंक विषम विषाद बल
विवस विहाल होय आप न रहायेंगे
सदा सावधान सुखखान की कृपालता में
भूलेहू के कभी खौफ खातरा ना खायेंगे।।
अचल अडोल नित रहिहौ निकेत निज
फेर भव बीच पार आवैंगे न जायेगे।
युगल अनन्य दृढ़ प्रवल प्रतीति उर
नाम रट लाय परानन्द में समायेंगे।। १७८९।।

आज से नींद को भलीभांति से जीतना है। नामजप से जागरण सुकर हो जायेगा। नामजप का ब
है खान पान का सुख। अत: नाम साधना रूपी तपस्या—कष्ट सहकर, इसे छोडूँगा। किसी से अपना हाल
कहना हैं कोई श्रीनाम के एकांगी मार्ग का ज्ञाता भी तो नहीं, जो मुझे राह बतावे। तब गँवार आदमी से
वार्ता करना है? नाहक अपने वचन का अपव्यय। श्रीजानकीनाथ के चरणाश्रित होकर, श्रीनाम पर ३
जीजान सपर्मण कर दूँगा।

आज से भली—भांति, जीतिहौं निंद को
जानकी नाह निज नाम जपि के।
खान और पान दुखखान व्यवधान कर
छोड़िहौं नाम तप तीव्र तपि के।।

किसी के साथ निज गाथ कहिहौं नहीं
कौन वाकिफ शबद वृथा खपि के।
भनै युग्म आनन्य जीजान को वारिहौं
जानकीनाथ पद छाँह छपिके।। १८३१।।

(श्रीसीतारामनाम सनेह वाटिका से)

प्रेमपूर्वक श्रीनाम के महत्त्व प्रभाव का ज्ञान प्राप्त कर लेने से ही परमपद की प्राप्ति सुगम हो जाती है। नामजप में तत्पर होने पर वाद विवाद, हृदय को क्रोधाग्नि से दग्ध करने वाला मालूम पड़ता है। यह विषाद बढ़ाने वाला एक कलंक है। इसे छोड़ दूँगा। नाम नेहहीन जीवन को धिक्कार है। अत: अब नाम ही का गान करूँगा। जैसे नामजप करूँगा, उसी भाँति श्रीनामी का अखंड ध्यान करके नाम रूप दोनों के परमानंद सुख में मगन रहूँगा।

नाम निरूपन नित्य नेह से करत पदम पद पावेंगे।
वाद–विवाद विषाद दाग दुख आग अनेक बहावेंगे।।
नाम सनेह रहित धिग जीवन नाह नाम ही गावेंगे।
(श्री) युगलानन्य अखंड ध्यान धरि नामी नाम समावेंगे।। ४०।।

शाप–आशीर्वाद तो भूत प्रेतों के दुष्टकार्य जैसे हैं। इन दोनों में कोई भी नहीं देना है। अपने पराये का विचार तो जगत का प्रपंच है। इसमें रागद्वेष का हृदयताप बढ़ता है। ऐसा विचार कर इसे छोड़ नाम रटनपूर्वक नामकी माधुरी का समास्वादन करूँगा। जिस जीभ पर सर्वमंत्रमौलमणि श्रीसीताराम नाम सरकार विराजमान हो गये, उस जीभ से नामेतर शब्द को असत्य मानकर बोलूँगा नहीं। दुष्टों की, निदकों की कड़वी आलोचनात्मक वाणी सुनकर कभी क्रोध नहीं करूँगा।

साप अशीष खवीस हरक्कत हरगिज एक न राखेंगे।
आपा पर प्रपंच पावक सम समुझि नाम रस चाखेंगे।।
सर्वोपरि सिरताज नाम गहि रसना असद न भाषेंगे।
श्री युगलानन्य कटुक वानी सुनि तीनों काल न माषेंगे। ४१।।

अपनी निंदा को अमृत से भी सहस्रगुना मधुर मानकर मन ही मन प्रसन्न होऊँगा। लोक बड़ाई कूड़े कचरे के ढेर के समान उपेक्षणीय है। अत: इसे छोड़ने पर ही नामरंग चढ़ेगा। नाम जप से परमानंद सिंधु में मगन होकर षट् विकारों को त्यागूँगा। जैसे घुन भीतर ही भीतर लकड़ी खा डालता है, उसी भाँति ये विकार हृदय के श्रद्धा विश्वास को खा डालते हैं। अब श्रीनामकृपा से मनोराज, संकल्प विकल्प मुझे नहीं उपद्रव कर पायेंगे।

निज निंदा पीयूष सहस सम मिष्ट मानि मन मातेंगे।
लोक बड़ाई धूरकूर घर–घूर बूझि रंग रातेंगे।।
महामोद सत नाम सिंधु में मगन होय घुन घातेंगे।
श्री युगलानन्य सुनाम कृपा लहि चित चरखा नहि कातेंगे।। ४२।।

अब तो मुझे सतत् नाम स्नेहपूर्वक जपकर अपने हृदय में प्रेमानन्द उमगाना है। मेरा मन रूपी हाथी अनादि काल से कामविकार के दल—दल में फँसा है। श्रभ्नाम बल से इसे बाहर निकालूँगा। प्राण प्रियतम श्याम सलोने श्रीजानकी कांतजू से दिव्य सम्बन्ध स्थापित करने में ही अपने स्वरूप की शोभा सरसाना है। अपने शरीर की सभी इन्द्रियों से भी नाम ही का पाठ पढ़ाना है। जीभ नाम रटे, का नाम सुने, आँख नामाक्षरों के दर्शन करे, हाथ माला फेरे, पैर आसन की दृढ़ता सजे, हृदय नाम का ध्यान—धारण करे।

नाम सनेह संग हरदम रसरंग उमंग बढ़ाना है।
काम—कलंक—पंक से बेशक मन मातंग कढ़ाना है।
श्याम सजन संबंध सोहावन भूषन विशद गढ़ाना है।
युगलानन्य व पुष बासिन सन नाम सुपाठ पढ़ाना है।।

श्री युगल नाम जपना चाहिये

नृसिंहपुराण कावचन है कि रामनाम के अर्थ करते समय श्रीसीता शब्द का रकार मकार में अन्तर्भा हो जाता है, क्योंकि श्रीनामार्थ वैभव ज्ञान विज्ञान से भी परे है। फिर भी नाम प्रकट रूप से युगल होवे। युग नाम में पहले परमपावन सीताराम का उच्चारण करें पीछे श्रीरामनाम कहें। इसी भाँति सीताराम—सीतारा जुगलनाम प्रशंसनीय है। यदि किसी को दो ही अक्षर के श्रीरामनाम ही जपने का विशेष आग्रह हो, तो व भी श्रीराम—राम कहते—कहते बीच—बीच में सीता नामका आदरपूर्वक उच्चारण करता रहे। श्रीसीतानाम के सहि श्रीरामनाम का जप, जिस जापक को परमप्रिय है, वह कृतकृत्य हो गया। उसे बड़े—बड़े देवगण पूजा करते रहेंगे

रामनामार्थ मध्येतु साक्षात् सीतापदम्प्रियम्।
विज्ञानागोचरं, नित्यं मुने श्री रामवैभवम्।।
आदौ सीता पदं पुण्यं परमानन्द दायकम्।
पश्चाच्छ्री रामनाम्नस्तु कथनं संप्रशस्यते।।
युग्मं वर्ण जपेद्यर्हि तदा सीतेति कीर्त्तयेत्।
सावकाशे सदा भक्त्या मध्ये समादरात्।।
सीतया सहितं रामनाम येषांपरं प्रियम्।
त एवं कृतकृत्याश्च पूज्या सर्वे सुरेश्वरैः।।

जपमें श्रीसीतानाम का भी उच्चारण इसलिये आवश्यक है कि श्रीसीतानाम में श्रीरामनाम की अपे अत्यधिक प्रभाव भरा है। कहते हैं कि यज्ञ, दान, तप, तीर्थाटन वेदाध्ययन, आत्म स्वरूप का ज्ञान आ जितने भी परमार्थ साधक उपाय हैं, उनसे करोड़ों गुणा अधिक जापक को पावन करने का प्रभाव श्रीरामन में भरा है। श्रीरामनाम से भी कोटिगुणा अधिक पावन श्रीअनादि सिद्ध नाम श्रीसीता है। ऐसा ही मानक श्रीनारदादि मुनिगण युगल नाम का ही जाप करते हैं। श्रीसीतानाम जपने का सबसे बड़ा लाभ तो यह है ि

दस प्रकार के शास्त्रोक्त नाम अपराध जगज्जननी जानकी जी अपने नामजापक द्वारा होने ही नहीं देती है। यह आपही का स्वभाव है जो

करौ सदा तिनकी रखवारी। जिमि बालक राखइ महतारी।
गह सिसु बच्छ अनल अहि धाई। तहँ राखइ जननी अरगाई।।

यदि कोई भी सीतानाम से उदासीन होकर, इस अनन्तकोटि मातृवत् नामकी उपेक्षा कर दे, तो सतत् नामापराध होते रहने के कारण, उसके अनन्तकोटि भी एकमात्र रामनामका जप फलदायक होने में संदेह बना रहेगा।

यज्ञदान तपस्तीर्थ स्वाध्यायाध्यात्मबोधत:।
कोटि संख्यं राम नाम्नि पावित्र्यं वर्त्तते प्रिये।।
तत: कोटि गुणं पुण्यं सीतानाम सनातनम्।
इति मत्वा अजन्त्येतान् मनयो नारदादय:।।
सीतया सहितं यत्र रामनाम प्रकीर्त्यते।
न तत्र नामदोषाणां प्रवृत्तिस्स्यात्कथंचन।।
यावन्न कीर्त्तयेदस्या नाम कल्मषनाशनम्।
अनन्तं कोटि जपतोऽपि न राम: फलसाधक:।।

श्रीसीतानामकी महिमा प्रगट होने पर, श्रीरामनाम की महिमा में अपेक्षाकृत न्यूनतम आ जायेगी। अत: श्रीप्रियाजीकी इच्छासे ही श्रीसीतानाम का माहात्म्य सर्वत्र गुप्त रखा गया है। किन्तु श्रीप्रिया भक्ति में मग्न रसिकजन, उन्हीं कृपामयी श्रीस्वामिनीजी के अनुग्रह से श्रीप्रियानाम परत्व तो जानही जाते हैं। श्रीब्रह्मरामायण में कहा गया हैं

सीतानाम माहात्म्यं सुगोप्यं सर्वत: शुभम्।
रसिका प्रेम संमग्ना जानन्ति तदनुग्रहात्।।

एक बात और है। अकेले रामनाम जपने से भगवत्प्रेम की प्राप्ति अवश्य होती है; किन्तु प्रभुके परम प्रेम की प्राप्ति तो श्री युगलनाम जपसे ही संभव है। हाँ जपना चाहिये यत्नपूर्वक। कथन में आप तनिक सा भी संदेह न करें। ऐसा श्रीशिवपुराणका वचन है।

सीतया सहितं य रामनाम जाप्यं प्रयत्नत:।
इदमेव परं प्रेम कारणं संशयं बिना।।

इतना ही नहीं। युगल नाम जप से आपको नाम जपका स्वाद भी अपार मिलेगा। श्रीसुयज्ञ संहिता में कोई नामजापक कहते हैं कि मैं सभी नामों और साधनों को छोड़कर, श्रीरामनाम ही जपता हूँ और नाम में स्वाद के लिये, अत्यधिक आनन्दानुभव के लिये, श्रीरामनाम के साथ श्रीसीतानाम को युक्त कर लेता हूँ।

रामनाम कथयाम्यहमन्यान्यापहाय।
सीता नाम संयुक्तं यत्स्वादुसुखाय।।

श्रीयुगलनाम संयुक्त होने से ही परम भक्तिरसकी वर्षा नामजापक पर होने लगती है। देखिये पूर्ण चन्द्रमा के साथ शरद रातका योग होता है, तभी सुधावृष्टि होती हैं

तुलसी जनकसुता विना, जो सुमिरे रघुबीर।
शरद रैनि विनु चन्द्रमा, स्रवै न अमृत नीर।।

अत: श्रीमानस आदेश हैं। श्रीअवध पुरजन परस्पर में आदेश कर रहे हैं।

जनकसुता समेत रघुवीरहि। कस न भजहु भंजन भव भीरहि।।

वृहन्नारदीय का वचन है कि सीताराम युगल नाम ही में सुधा के निवास हैं। जो जापक सदा भक्तिपूर्वक युगलनाम जपते हैं, उनके लिये कुछ भी दुर्लभ नहीं है।

सीतारामात्मकं नाम सुधाधामं निरन्तरम्।।
ये जपन्ति सदा भक्त्या तेषां किंचिन्नदुर्लभम्।।

हमारे परमाचार्य श्रीस्वामी युगलानन्यशरणजी महाराज स्वरचित श्रीजानकी सनेह हुलास शतक नाम ग्रन्थ में कहते हैं कि परम मनोहर श्रीसीतानाम महामधुर रसका निवास है। यदि मनमें इस नामकी किंचित झलक ध्याताको हो जाय, तो उसका सम्पूर्ण हृदय परमानन्ददायक प्रकाश से भर जायेगा। इस महामधुर नामजप से इतना स्वाद मिलेगा कि अमृत उसके आगे व्यर्थ एवं स्वादहीन प्रतीत होगा। हृदय में इतना अपरिमित आनन्द उमड़ आवेगा कि अन्य किसी सुखकी इच्छा शेष नहीं रहेगी।

महामधुर रसधाम श्री, सीता नाम ललाम।
झलक सुमन भासत कबहुँ, होत जोत अभिराम।।
सुधा सीठ मानहु मुधा, रटत मधुरतर नाम।
रहत न हिय अभिलाष पुनि, पावत परमाराम।।

श्रीजानकीस्तवराज में आया है कि भगवान् शंकरजीने देवताओं की दिन गणना के हिसाब से दिव्य सौ वर्षों तक श्रीसीतामंत्र के बिना अकेले षडक्षर श्रीमंत्रका वेद विधि से अनुष्ठान किया था। जपांत में श्रीराघवजीने बहुत खिन्न रूप में दर्शन देकर कहा श्रीशिवजी शीघ्रातिशीघ्र अपना अभीष्ट वरदान माँग लीजिए। मुझे श्री मैथिलीजी के बिना अकेले ठहरने में अत्यन्त कष्ट हो रहा है। श्रीशिवजी की प्रार्थना पर स्वयं श्रीराघवजी ने श्री शिवजी को श्रीसीतामंत्रका उपदेश देकर, युगलमंत्र एक साथ जपनेकी आज्ञा दी। युगलभाव में भक्ति देखकर, श्रीराजकिशोरीजी ने भी दर्शन देकर इन्हें कृतार्थ यिा। श्रीराघवजी के निवास गृह श्रीसियाजू हैं। श्रीमैथिलीजी शरीर है। श्रीराघवजू उसमें प्राणभूत है। अत: युगलनाम ही जपना चाहिये 'परमहंस श्रीसियालालशरण' उपनाम श्रीप्रेमलताजी महाराजने यह प्रसंग अपने श्रीवृहद् उपासना रहस्य में लिखा है। स्थानाभाव से हम वह उद्धरण यहाँ नहीं दे सके। श्रीदेव स्वामी को भी युगल नाम जप में श्रीसीताराम का अपार स्वाद मिला है। अपना अनुभव आप इस प्रकार कह रहे हैं कि **श्रीजानकी–नाम–**ध्यान–दर्शन में मनको आकर्षण करने वाले हैं। जपने में परम स्वादिष्ट हैं। जपके लि

लिखा है। स्थानाभाव से हम वह उद्धरण यहाँ नहीं दे सके। श्रीदेव स्वामी को भी युगल नाम जप में, श्रीसीताराम क़ा अपार स्वाद मिला है। अपना अनुभव आप इस प्रकार कह रहे हैं कि श्रीजानकी–नाम–ध्यान–दर्शन में मनको आकर्षण करने वाले हैं। जपने में परम स्वादिष्ट हैं। जपके लिये अति सुखदाय सिद्धि प्रदान में तो मानो सिद्ध की पीठ ही है। जापक के हृदय को दिव्य सुदृढ़ अनुराग से ऐसा रंग देते हैं कि उसके आगे महावर का रंग फीका लगेगा। मजीठ के समान इनका रंग पक्का है। जीभ पर श्रीसीतानाम का उच्चारण बस गया तो, मानिये आपको सियाजू के दर्शनों का प्रवेश पत्र ही मिल गया। इस नाम के चिंतन से आपके हृदय वाली ध्यान दृष्टि निर्मल हो जायेगी। काल के जालसे छोड़ने में ये बड़े प्रबल हैं। भीतर बाहर में मल को धोकर ऐसा स्वच्छ कर देते हैं जैसे रीठी से धोने पर कपड़े स्वच्छ हो जाते हैं। आप श्रीसीतानाम जपकर देख लीजिये। आपको देवलोक का अमृत इसके आगे फीका लगने लगेगा।

जानकी नाम मनोहर मीठ।
जापक जन सुखदायक सीधो जनु सिद्धिन की पीठ।।
महावरहु को करत रंगीलो जैसे रंग मजीठ।
रसना पर आवत जनु आयो सिय दरसन को चीठ।।
जाके मनन गुनन ते झलकत अन्दर निरमल डीठ।
बरबस काल फाँस ते छोरत बड़ो जवर बड़ ठीठ।।
अन्दर बाहर को मल धोवत जस अंवर को रीठ।
जाके रस के आगे लागत 'देव' सुधा हूँ सीठ।।

श्रीसीतानाम प्रभाव पर और भी शास्त्र एवं पूर्वाचार्य के बहुत से वचन हैं। हम विस्तार भय के कारण सभी उद्धृत नहीं कर रहे हैं। स्वनाम धन्य परमहंस श्रीप्रेमलताजी महाराज ने श्रीसीताराम नाम सम्बन्ध बृहत्तरी नामक अनुपम ग्रन्थ लिखकर बहत्तर कवितों में युगलनाम जप की बहुत ही समीचीनी एवं स्वानुभूत महिमा बतायी है। युगल नामानुरागियों के लिए यह स्पृहनीय ग्रन्थ द्रष्टव्य हैं। हम स्थानाभाव के कारण यहाँ उनमें से केवल पाँच ही कवित्त उद्धृत करते हैं। भाषा सरल एवं सुबोध होने के कारण अर्थ नहीं लिखे गये।

सीता बिनु राम नाम रटत अयान जू।
छन हू न छाड़ियत सियजू को राम रूप
चांदनीहि चंद जिमि घाम को सु भानु जू।
रटत सु रामनाम सीय जू विहीन जौन
श्रम ही के भागी होत कहत सुजान जू।।
रीझत न राम रूप सिय बिनु सुनियत

'सीतायुत रामनाम दिव्य ग्यान देत जू।
काम क्रोध लोभ मोह वासना विकार अघ
हरत सुजन चित करत सचेत जू।
जपत जो सीताराम तपत न तीन ताप
कँपत विलोकि कलि करत सुहेत जू।।
रटत अकाम सियराम नाम जौन जन
भगति के भागी होत सुख के निकेत जू।
सीताराम रटत सुहीय में प्रकास होत
सीतायुत राम नाम दिव्य ग्यान देत जू।।
सीताराम सीताराम रटत सुचैन जू।
मंगल उदित मन मुदित विमल उर
परम प्रमोद महि अटल सुखौन जू।
हरष न शोक ताहि मान अपमान सम
सीताराम नाम मुखा दूसरो न बैन जू।।
सीताराम जपत छपत छल कलिमल
सीताराम जपत खुलत हिय नैन जू।
सीताराम सीताराम रटत सुलभ सब
सीताराम सीताराम रटत सुचैन जू।।
सीता बिनु राम नाम उर न थिरात जू।
सीता बिनु राम नावम रटत अमित काल
होत न सुतोष मन चित न सिरात जू।
रटत सुराम राम रम रम होइ जात
मध्य को अकार सिय रूपसे हिरात जू।
रटिये सुनेम करि सीतायुत राम नाम
सीताराम बिनु जग फिरत रिरात जू
अगिनि पुरान माह शिवहु बखानि कह्यों
सीता विनु राम नाम उर न थिरात जू।।
'सीता विनु राम नाम अरध भनत जू।
पूनो बिनु चन्द्र जिमि पूरन न मनियत
अमिय विहीन पाप ताप न हनत जू।

भजन भगति विनु अरध कहाय तिमि
तीय सुपुरुष बिनु सुत न जनत जू।।
पंडित सु अर्ध जिमि ब्रह्म के विचार बिनु
भोजन सुअर्ध जौलों पेट न तनत जू।
साधुता अमान विनु गीता विनु ग्यान जिमि
सीता बिनु राम नाम अरध भनत जू।।
सीता तन रोम रोम राममयी, राम तन
श्यामा श्यमताई छाई नाम रस पतिते।
राम मन मनन करत मोद मैथिली को
मैथिली मनन राम रस मन मति ते।।
रामनाम जानकी को जीवन है सुखधाम
सुमिरत सीतानाम रामहूँ सुरति ते।
सीताराम रामसीता मिले दूध नवनीता
गायो 'रस राम मनि' गीता नेह नति ते।।
राम मन सीता मन, सीता मन राम मन
सीताराम नैन किये राम सीता धाम है।
राममति सीतागति सीतामति रामगति
सीताराम वैन राम सीता के आराम है।।
रामजी को स्वारथ सो सिय परमाथ है
सिया अभिलाष लाख भाँति राम काम है।
स्वादरस एकही सु जैसे 'रसरंगमनी'
वैसे दुइ नाम रूप एक सीताराम है।।

श्रीसीतानाम सहित जो श्रीरामनाम के एक बार भी उच्चारण कर ले, उसे दिव्य इष्ट धाम की अवश्यमेव प्राप्ति हो जाती है। वहाँ का वह परमपावन परमानन्द भोगने का अधिकारी बन जाता है। उनके हाथ श्रीअध्योध्याबिहारी बिक जाते हैं। श्रीसिया स्वामिनी जूके रस का उसे समास्वादन होता है।

श्री सीता संयुत सुनाम सुचि सकृत जौनजन लेवे।
परम प्रमोद पुनीत पाय परमेश धाम सुख सेवे।।
तिन वर विमल कंज कर में अवधेश बिके दुतिदेवे।
युगल अनन्य शरन स्वामिनहू कृपा कलित रस भेवै।। श्री नाम कांति

श्रीसीतानाम विरहित अकेले रामनाम जपने वाले श्रीप्रिया प्रेम परतंत्र प्रियतम की कृपा से वंचित हो जाते हैं। अत: उन्हें युगलनाम जपवाला सुखस्वाद नहीं मिल पाता। युगल रससे वहिर्मुख एक ही नामजापक का हृदय शुष्क हो जाता है। अत: बड़भागी अनुरागी जापक श्रीयुगल नामजप रस में भीजे रहते हैं।

केवल भजन .सजे नाही सुख प्रसाद विहीने।
तुच्छ रुच्छताई अंतर झलकता बहिर दृग दीने।।
प्रिया प्रेम परतंत्र श्याम क्यों रीझे रसिक रंगीने?
युगलानन्य शरन अनुरागी बड़भागी युग भीने।। २९३।।

जगत रीति को देखने से सीताराम युगल नाम ही विशेष रूप से प्रचार में है। हिन्दू, मुसलमान, नास्तिक जो भी युगलनाम लेता है, उसे अधिक सुखानुभव होता है। सीताराम सीताराम तो बिन सीखे भी जीभ अनायास उच्चारण करते हैं। अत: युगल नाम जप कर शोक रहित हो जाना चाहिये।

सीताराम नाम जाहिर जगजीवन जगत विलोको।
हिन्दू मुसलमान काफिर कुल कहे लहे सुख थोको।।
सीखे बिना स्वाभाविक ही रसना उच्चारण तोको।
युगलानन्यशरण सीतावर नाम रटो अविसोको।।

नाम वैखरी वाणी में ही जपना चाहिये

रहस्यसार नामक प्राचीन आर्षग्रन्थ में स्वयं भगवान श्रीमन्नारायणदेवजी, मुनियों के प्रति नामोपदेश करते हुए कहते हैं कि सज्जनों को उचित है कि जीभ से उच्चारणपूर्वक ही नामाभ्यास करें। श्रवणगोचर उच्चारणका नमा ही कीर्त्तन है। कलिकाल में तो नामकीर्त्तन ही सर्व सज्जन सम्मत नामसेवन की सर्वोत्तम विधि मानी जाती है।

योगी तथा ज्ञानी लोग भ्रमवश माने हुये हैं कि हमारी नामजप की विधि मानसिक है। नामसेवन से यथार्थ लाभ उठाना चाहें, तो उन्हें भी जिहवा से उच्चारण करके ही नामजप करना चाहिये। कर्मकांडियों तथा भक्तों के लिये तो नाम कीर्त्तन प्रशस्त है ही।

परावाणी से नामजप अति उत्तम है अवश्य, पर परावाणी का अर्थ समझने में लोग भूल करते हैं। प्रेम ही परमेश्वर का सच्चा स्वरूप है और परावाणी में भी ब्रह्म की स्थिति मानी जाती है। अत: प्रेम सम्पन्न सभी जप चाहे वैखरी से हो, मध्यमा से, पश्यन्ती से अथवा नाभी के नीचे परा स्थान से हो, परावाणी का जप माना जायेगा।

रसनायां विशेषण जप्तव्यं नाम सज्जनै:।
कलौ संकीर्त्तना विप्रा: सर्व सिद्धान्त सम्मतम्।।
नामप्रोच्चारणं नित्यं रसनायां प्रशस्यते।
भक्तानां योगिनां चैव ज्ञानिनां कर्मिणां तथा।।

यत्र संगृह्यते नाम प्रेमसम्पन्नामानसै:।
तत्र तत्र परावाणी नाभिसथा सर्वत: शुभा।।

श्री गरुड़पुराण में भी स्वयं भगवान् विष्णुदेवजी ने अपने अन्तरंग पार्षद श्रीगरुड़जी से कहा है कि कलिकाल के लिए तो श्रीरामनामकीर्त्तन ही अर्थात् बैखरी वाणी में उच्चारणपूर्वक जप ही विधेय है। नाम कीर्त्तन से ही कलिमल नष्ट होंगे। अत: परमोत्तम भजन नाम कीर्त्तन को ही समझना चाहिये।

कलौ संकीर्त्तनादेव सर्वपापं व्यपोहति।
तस्माच्छ्री रामनाम्नस्तु कार्यं संकीर्त्तनं वरम्।।

इस तुच्छ लेखनी की सम्मति में कीर्त्तन तथा संकीर्त्तन में थोड़ा अन्तर दीखता है। कहीं अकेले बैठकर बैखरी नाम जप को कीर्त्तन कहना चाहिये। साजबाज के साथ दस पाँच मूर्ति का समाज रागतालबद्ध नाम गान करे, उसे नाम संकीर्त्तन कहेंगे। यदि नामानुरागियों का ऐसा संकीर्त्तन समाज जुटा तो, भगवान् चैतन्यदेववाला भगवत्प्रेम अविलम्ब प्राप्त हो। ऐसे श्रीरामनाम संकीर्त्तन से वैराग्य, ज्ञान अद्भुत भगवत्प्रेम जो चाहो, सभी भरपूर मिलेंगे। ऐसा लघुभागवत का सिद्धान्त हैं

ज्ञानं वैराग्यमेवाथ तथा प्रीति: परात्मनि।
संलभेन्नाम संकीर्त्य ह्यभिरामाख्यमद्भुतम्।।

तीर्थ, व्रत, दान, यज्ञ आदि वैदिक कर्म करने को तो लोग कर लेते हैं, परन्तु कलिकाल के दुष्ट प्रभाव के कारण, इनमें फलोदय नहीं होता। इसी से तो श्रीगोस्वामी पाद ने कहा है।

तप, तीरथ, उपवास, दान, मख जेहि जो रुचै करो सो।
पायेहि पै जानिवो करम फल, भरि भरि वेद परोसो।

हाँ, इन वैदिक सत्कर्मों के साथ नाम संकीर्त्तन होता रहे तो, उन कर्मों में त्रुटियाँ होने पर भी उनके पूरे–पूरे फल प्राप्त हो जायेंगे। नाम संकीर्त्तन का फल तो अलग से मिलेगा ही।

न्यूनातिरिक्त सिद्धि कलौ वेदोक्त कर्मणाम्।
नाम संकीर्त्तनादेव सम्पूर्ण फलदायकम।। श्री वृहन्नारदीये

महानुभावों के सभी सिद्धान्तों का निचोड़ यही है कि श्रीजानकीजीवन जू के नाम का संकीर्त्तन ही सर्वोत्तम भजन है।

सर्वेंणां मतसाराणामिदमेकं महन्मतम्।
जानकी जीवनस्याथ नाम संकीर्त्तनं वरम्।। श्री निर्वाण खण्ड

वैखरी नामजप सम्बन्धी इतने पूवोचार्यों के उपदेश, जान, सुनकर भी जो आलस्य प्रमाद या हठवश मानसिक जप ही करते रहेंगे उन्हें न तो श्रीराम भक्ति मिलेगी न शरीरान्त होने पर श्रीसीतारामजी की सामिप्य

मुक्ति। हाँ, नामजप चाहे मानसिक हीसही, व्यर्थ तो जाने का नहीं। अत: मानसिक जम से कैवल्य मोक्ष भले मिल जाय। परन्तु याद रहे, कैवल्य मोक्ष में जीव की सत्ता मिट जाती है। ब्रह्मसिन्धु में जीवबिन्दु मिलकर एकाकार हो जाता है। भक्त लोग तो बार–बार जन्म चाहेंगे, परन्तु कैवल्य मिलने पर भी उ ठुकरा देंगे। ऐसे वचन जगद्गुरु भगवान शंकर जी के हैं।

अन्तर्जपन्ति ये नाम जीवन्मुक्ता भवन्ति ते।
तेषां न जायते भक्तिर्न च राम समीपका:।।

श्री मन्महारामायण

पूज्यपाद श्री बड़े महाराज जीभ से उच्चारणपूर्वक नाम जपने का निजी अनुभव कर रहे हैं कि जी मे नाम रटने में मुझे अपार हर्ष होता रहता है। व्यर्थ वचन कहना सुनना तो उग्र विषके समान प्रतीत हो है। नाम रटने में श्रीनामरूपी अमृत का स्वाद मिलता रहता है। अब तो जीभ को ऐसा रसमय चस्का ल गया है कि नाम रटने में स्वप्न में भी आलस्य नहीं करती है। प्राणप्रियतम श्रीजानकी रमणजू के प्रेमरस ऐसी पग गई है कि शुष्क विषयरस इसे रूचता नहीं। क्यों न हों, तभी तो श्रीशेष श्रीगणेश, तथा श्रीमहे जैसे महानों को भी जीभ से नाम रटन में ही मजा आता है। संतों को नाम रटन मय जीवन अतिप्रिय ही। (श्री बड़े महाराज को) तो ऐसा लगता है कि विषय रूपी अपार सघन वनको काट काट कर साफ क देने के लिए श्रीनामरटन तीक्ष्ण हथियार का काम करता है। सभी प्रकार के दिव्य प्रेमधन संचय करने पारसमणि एवं चिंतामणि का चमत्कार करने वाले हैं श्रीनाम रटन

रसना नाम रटत हरषाती
वादि वचन विष तिष सम माने नाम सुधा सरसाती।
ऐसी वानि पड़ी कछु याके सपनेहु नहि अलसाती।।
सहजति सहज पगी प्रीतम रस तजि नीरस जाती।।
शेष गनेश महेश भावती, संतत संत सोहाती।।
विषय विपिन काटन के कारन तीछन धार लखाती।
(श्री) युगल अनन्य शरन पारस चिंतामनि दुति दरसातीं।।

श्री मिथिलजी के सुप्रसिद्ध सिद्ध नाम जापक परमहंस श्रीसियालालशरण उपनाम प्रेमलता महाराज स्वरचिज श्रीवृहद् उपासना नामक ग्रन्थ श्रीसियाराम नाम प्रसंग में वैखरी वाणी में नाम रटन के ब ल भ इस प्रकार बताते हैं।

१. इस मानव स्थूल शरीर को वृक्ष का रूप देकर, कहते हैं पापपुण्य दोनों इस शरीर वृक्ष पर बैठे पक्षी हैं। जोर–जोर से उच्चारणपूर्वक नाम ध्वनि सुनकर पक्षीगण भाग जाते हैं। अत: वैखरी नाम जापक के श में पाप अविशिष्ट नहीं रह पाता।

२. उनके नामोच्चारण सुनने वाले प्राणिमात्र संसार में तर जायेंगे।

३. कोई अन्य नाम जापक कुसंग पाकर भूल बैठा हैं तो हमारी नाम ध्वनि सुनकर वह भी नाम जाप में सावधान होकर तत्पर हो जायेगा।

४. अपनी कान से अपनी ही उच्चारित नामध्वनि सुनते रहने से बाहरी जगत के विक्षेप दायक शब्द नहीं सुन पड़ते। अत: विक्षेप से बच जाते हैं।

५. उच्चस्वर से वैखरी नामजप करने वाले के समीप नामजापक के लिए अति दुखदायिनी नींद नहीं फटकने पाती।

६. रिद्धि सिद्धि तथा सद्‌गुण आदिक नाम ध्वनि से आकृष्ट होकर नामजापक के समीप आ जुटते हैं।

७. भूत प्रेत, यमदूत, मृत्यु आदि दुष्टगण नामध्वनि सुनकर दूर ही से भाग जाते हैं।

८. अपनी नामध्वनि अपने ही कान से सुनते—सुनते नाम समाधि लग जाती है। उस क्षण मन समेत अपनी सारी उपद्रवकारिणी इन्द्रियाँ, उसमें लय हो जाती हैं। उस दशा में, "मैं अरू मोर तो तै माया" का अभाव हो जाता है। मदादिक विकार शांत पड़ जाते हैं।

९. आयु का निश्चय दिन की गणना के हिसाब से नहीं की जाती है। आयुका प्रमाण श्वास संख्या पर निर्भर करता है। वैखरीजपकाल में श्वासा विलंवित गति से चलती है। अत: वैखरी वाणी में नाम जप करने वालेकी आयु बढ़ जाती है। इस प्रकार श्रीब्रह्मकी प्रतिकूल लिपिभी मिट जाती है।

१०. श्रीचैतन्य महाप्रभु के संकीर्तन समाज की भांति या बजाकर नामगान करने पर, सब दु:ख नष्ट हो जाते हैं, प्रेमानंद का अनुभव होने लगता है।

११. शुभाशुभ कर्म मिट जाते हैं। अत: संशय, भ्रम समुदाय आपही आप नष्ट हो जाते हैं। श्रीपरमहंस जी महाराज का निजी अनुभव है, यह।

१२. आपका यह भी अपना अनुभव है कि वैखरी युगल नामजप अधिक संख्या में करने पर अपने स्वरूप का भी ज्ञान हो जाता।

इन पंक्तियों के तुच्छ लेखक की समझ में बैखरी नामध्वनि से एक और लाभ है। उस लाभ को समझने के लिये वैज्ञानिक बुद्धि का प्रयोग करना होगा। विज्ञान मत से सभी प्रकार की ध्वनि अविनाशी मानी जाती है। ग्रामोफोन के तावे में भारी हुई, टेप में रेकार्ड की हुई, पुरानी ध्वनि आज भी सुनने को मिलती है। महात्मा गांधी के उपदेश वाली मौलिक ध्वनि को, भगवान श्रीकृष्ण द्वारा उपदिष्ट श्रीगीता को, मौलिक ध्वनि को पकड़ने के लिये आज का विज्ञान उपयोगी यंत्र आविष्कार करने के यत्न में ल गा है, पुरानी ध्वनि को वायुमंडल में आज भी व्याप्त मानकर ही न? एक बात और। एक जगह की समुच्चारित ध्वनि सम्पूर्ण धरातल के वायुमंडल में व्याप्त हो जाती है। दूर—दूर की रेडियो में सुनने से, वे तार के तार द्वारा भी दूर—दूर की वार्ता सुन लेने से यह ध्वनि की व्यापकता सहज ही में बोधगम्य हो जाती है। अत: हमारी उच्चस्वर में उच्चारित नाम पृथ्वी में अविनाशी रूप से व्यापक रहकर, सम्पूर्ण वायुमंडल का चिरकालतक दिव्यीकरण करती रहेगी उस वायुमंडल में रहने वालों में सुख शांति सदविचार का प्रसार होता रहेगा। इस दृष्टि से हम अनन्तकाल के सम्पूर्ण वायुमंडल को एक दिव्य सम्पत्ति देकर मरेंगे।

श्री बड़े महाराजजी की आज्ञा है कम से कम साधन की प्रथमावस्था में तो जीभ के द्वारा वाणी अर्थात उच्च स्वर से नाम रटनाही चाहिये और रटना चाहिये संख्या का नियम लेकर। बैखरी उच्चारण से लोक विलक्षण प्रबल दिव्य स्नेह का उदय होगा। जब जब आपके जिह्वाग्र पर श्रीनाम का स्पर्श होगा, प्रत्येकवार में अमृत से बढ़कर स्वाद का अनुभव होगा। रोम–रोम में शीतलता छाकर जुड़ जायेंगे आप। ऐसे नाम रटन से ही देवदुर्लभ मानव जीवन को अकारथ खोना है। श्रीनाम रटन भवसागर से पार उतारने वाले जहाज (वहित्र) है।

रसना से प्रथम सनेम नाम जप करि प्रबल सनेह उर उठत विचित्र है।
सुधासार स्वाद, वाद विगत विलास, जीह अग्रभाग परस परत सुपवित्र है।।
रोम रोम सोम सत सहस सुसीर नीर बहत अधीर धीर दैनहार मित्र है।
युगल अनन्य जानि खोइये जनम जाय, नाम रट लाय भव सागर वहित्र है।। ६०७।।

बिना जीभ से रटे प्रेमरंग छनेगा नहीं। हरदी का गिरह बिना रगड़े नहीं सरसाता है। तेज धार व तलवार पास में है तो क्या, युद्धोत्साह हुये बिना वृथा है। नाम रटने का उत्साह आवश्यक है। श्रीरामना परत्व, परात्पर है सही, परन्तु रटनहीन आनन्द उत्पन्न कैसे करेंगे?

'हरदी गिरह सम वरन विचित्र वर, नाम अभिराम रटि संग सरसायेगा।
रटन विहीन नहिं कढ़त अनुप रंग, संत संग बीच इह भेद दरसायेगा।।
तेग तेजतर निज निकट भये ते कहा जौलौं नहिं वेग सूरताई परसायेगा।
(श्री) युगल अनन्य सब जानत परेशनाम रटन रहित कहुँ मोद बरसायेगा।।२७७३।।

महात्मा गाँधी (हरिजन सेवक १४.४.१९४६) लिखते हैं जो आदमी जानता है कि राम सचमुच उस दिल में हैं, उसे राम–नाम के उच्चारण करने की जरूरत नहीं, यह मैं कबूल कर सकता हूँ लेकिन ऐ आदमी को मैं नहीं जानता। मुझे निजी अनुभव है कि रामनाम के रटने में कुछ चमत्कार है। वह क्या? अं कैसे, यह अनुभव से ही जाना जा सकता है।

जपतो हरिनामानि स्थाने शतगुणाधिक:।
आत्मानञ्च पुनात्युच्चैज्जपन श्रीतृन्पुनाति च।।

नाम स्मरण से नाम कीर्तन का महत्व अधिक है, यथा–
हरिनाम जप करने वाले की अपेक्षा उच्चस्वर से हरिनाम कीर्तन करनेवाला शतगुण श्रेष्ठ है, क्योंकि ज करने वाला तो केवल अपने ही को पवित्र करता है, परन्तु उच्चस्वर से कीर्तन करने वाला अपने को पवित्र करता ही है, सुनने वाला जीव, जंतु, पशु, पक्षी, कीट, पतंग, सबको पुनीत एवं पवित्र करता है। चैतन्यचरितामृत में लिखा ही है।

पशु पक्षी कीट आदि बोलती ना पारे। सुनीलेई हरिनाम तारा सब तारे।
जपीले से हरिनाम आपनी से तरे, उच्च संकीर्तन पर उपकार करे।।
अतएव उच्च करी कीर्तन करीलें, शतगुण फल हय सर्वशास्त्रे बोले।

जपसंख्या का नियम लेकर श्रीयुगलनाम जपना चाहिए

श्रीअत्रिसंहिता का आदेश है कि श्रीसीतारामजी के दिव्य धाम की प्राप्ति के लिए, तो चाहे कैसे भी नाम जपें, मरने पर धाम प्राप्ति तो अवश्य होगी ही। और यह सिद्धि है भी बड़ी मनोरमा।

येनकेन प्रकारेण संस्मरेद्रामनामकम्।
अवश्यं लाभते सिद्धि प्राप्तिरूपां मनोरमाम्।।

श्रीमानसजी भी यही आदेश देते हैं।

भाव कुभाव अनख आलसहूँ नाम जपत मंगल दिसि दसहूँ।।

किन्तु जगद्गुरु भगवान शंकरजी श्रीपार्वती के माध्यम से नामजापकों को आदेश देते हैं कि श्रीरामनामका जपनियम सदा धारण करना चाहिये और आलस्य प्रमाद आदि त्यागकर, सावधातापूर्वक जपना चाहिये।

श्री मद्रामेति नाम्नस्तु नियमं धारणं सदा।
कर्त्तव्यं सावधानेन त्यक्त्वा प्रामादिकं शिवे।।

भगवती पार्वतीदेवी ने पूछा कि नियम कब तक निवाहना चाहिये। श्रीजगद्गुरु की आज्ञा हुई कि नियम तब तक न छोड़ें, जब तक चित्त से अनायास स्मरण न होने लगे अर्थात् अजपा जप सिद्ध होने तक नियम पूर्वक जपना चाहिये। अजपा से तो बिना यत्न के निरन्तर जप आप ही आप होने लगेगा। अत: अभ्यास की प्रथमावस्था में बिना नियम का जप निष्फल हो जाया करता है। कारण, मूढ़मन स्वल्प नगण्य जपको ही बहुत मानकर, पर्याप्त जपसे जी चुराने लगता है।

मन बड़ा ही धोखाबाज है, इस पर कभी विश्वास नहीं करना चाहिये।

तावद्वै नियमं कार्य यावत् चित्तं न संस्मरेत्।
अनियमं कृतं जाप्यं निष्फलं प्रथमं प्रिये।।

नियमपूर्वक जप अधिक संख्या में बनता है और अधिक संख्या के जप से श्रभ्रामनाम में ध्रुवाप्रीति होती है। अत: आनाकानी छोड़कर, बुद्धिमान् जापक नियम का पालन अवश्य करते हैं।

नियमेनैव श्री रामनाम्नि प्रीतिर्ध्रुवा भवेत्।
तस्माद्विपर्य्ययं त्यक्त्वा नियमं सञ्चरेद्बुधः।।

जिनसे इस दुष्ट कलिकाल में अखंडनरूप से श्रीसीताराम का नियम पालन बन जाय, उन्हें अपने को बार—बार अहोभाग्य मानना चाहिये।

अहोभाग्यमहोभाग्यं कलौ तेषां सदा शिवे।
येषां श्री रामनाम्नस्तु नियमं समखण्डितम्।।

यहाँ तक तो हमने श्रीअत्रिसंहिता कथित श्री शिवपार्वती सम्वाद का उल्लेख किया।

अब विचार करना यह है कि हमारे नित्य नियम की जप संख्या कितनी होनी चाहिये। हम पिछले प्रसंग में श्रीदेवी भागवत के उद्धरण देकर, बता आये हैं कि हम गर्भ में प्रभु से उनके नाम जपने की प्रतिज्ञा कर आये हैं। उस प्रतिज्ञा में श्वास प्रत श्वास नाम जपने का करार किया था। चिकित्सा विज्ञान का कहना है कि स्वस्थ और शान्त जीवन में प्रत्येक दिन के चौबीस घंटे में एक साधारण व्यक्ति २१६०० श्वास प्रश्वास लेता है। अधिक भोजन, विशेष शयन, अधिक परिश्रम ब्रह्मचर्य नाश आदि कारणों से श्वास की गति बढ़ जाती है। अत: औसत दैनिक स्वांस संख्या पच्चीस हजार मान ली गयी है। अत: गर्भ करार के हिसाब से कम से कम हमारी दैनिक नामजप की संख्या पच्चीस हजार होनी चाहिये। किन्तु हमने जन्म लेते ही नाम रटना प्रारम्भ कर देने की प्रतिज्ञा की है न? अब तक नाम जप हीन आयु हमारी बीत गयी, वह बाकी संख्या कैसे पूरी हो? सो भी तो विचार करना है। हमारी समझ से हम कलि--काल में अधिक से अधिक एक सौ पच्चीस वर्ष की पूर्ण आयु भोग सकते हैं। एक दिन की स्वांस संख्या २१६०० x ३६५ x १२५ = लगभग सौ करोड़ अर्थात् एक अरब होता है। एक अरब १०००००००००–१ = ९९,९९,९९,९९९ होता है। सभी नौ संख्या नौ हुई। जीवन में इतनी जप संख्या पूरी करने से सदा के लिए मुक्त होकर, परमपद के भागी बन जायेंगे। पचास कोटि जप संख्या पूरी करने पर आप माया के रज, तम, सत–इन तीनों गणों से मुक्त होकर, गुणातीत पद प्राप्त कर लेंगे पचहत्तर कोटि जप संख्या पूरी करने पर आप नित्य पद पा लेंगे। सम्पूर्ण एक अरब संख्या पूरी होते–होते आप जीवन्मुक्त हो जायेंगे। तब आपको सभी लोकों में विरचने की अव्याहत गति प्राप्त हो जायेगी। सभी सद्गुण लौकिक पारलौकिक प्रकार के दिव्यानंद आपके लिए सुलभ हो जायेंगे आपका यही स्थूल शरीर दिव्य प्रकाशमय हो जायेगा। इष्ट दर्शन आदि तो निरावरण होते ही रहेंगे।

अब हम श्रीपरमहंस जी महाराज की श्रीवृहद् उपासना रहस्य अन्तर्गत श्रीसियारामनाम प्रसंग से इस सम्बन्ध की मूलवाणी उद्धृत करते हैं।

कीन्ह करार गर्भ के माहीं। रटिहौं नाम कहो प्रभु पाँही।।
स्वास स्वास प्रति श्रीसियारामा। रटिहौं सत्य कहौं सुखधामा।।
गर्भ वास को सोक निवारहु। यहि ते बाहिर बेगि निकारहु।।
हलन चलन बोलन नहि पावहुँ। गर्भ कलेस कहाँ लगि गावहुँ।।
बंधे नसनि ते सकल सरीरा। परवश परेउ सहत अति पीरा।।
अर्धचरन सिर मलथल माँही। सोचत ही निसि दिवस सिराही।।
नहि कोउ मोर सहायक स्वामी। तुम्ह विन हे प्रभु अन्तरयामी।।
यहि अवसर मम विनय सुनीजै। नाथ गर्भ ते वाहिर कीजै।।
बार–बार यहि भाँति निहोरी। विनवत प्रभुहि जीव करजोरी।।
रटिहौं निसिदिन नाम तव, तजि गृह सोकागार।
सत्य कहौं प्रभुपद सपथ, यहि विधि कीन्ह करार।।

अति आरत हुइ विविध प्रकारा। विनय कीन्ह प्रभु ते बहु वारा।।
तब बोले प्रभु परम उदारा। विसरेउ जनि यह गर्भ करारा।।
रटेउ सदा प्रति स्वास सुनामा। बहुरि न परव गर्भ दुखधामा।।
हरन नाम मम सर्व कलेसा। तजेउ न ताहि सु यह उपदेसा।।
रहिहौं मैं यहि विधि तब पासा। रटिहौ नामहिं जो प्रति स्वासा।।
कोटिन विष्णु संभु विधाता। नाम समान न कोउ जन त्राता।।
सकल काम पूरक मम नामा। रटेउ रटायउ तेहि बसु यामा।।
जो प्रति स्वासहि नाम न रटिहौं। फिरि फिरि तौ इन्हि गर्भनि परिहौ।।
बाहिर देखि प्रपंच अपारा। बिसरि जात मम नाम उदारा।।
गर्भ करार न भूलेहु कबहूँ। कोटिन होय परीच्छा तबहूँ।।
माया कृत दुख सुख सम जानी। रटेउ नाम मम सब सुख दानी।।
बारंबार सिखावहुं तोही। रटेउ नाम भूलेउ जनि मोही।।

यहि विधि दृढ़ करि गर्भ ते, बाहिर कीन्ह कृपाल।
विसरि गयउ वह कौली सठ, फँसि अब माया जाल।।

लगेउ करन कारज विपरीता। बिसरेउ प्रभु करि जग सन प्रीता।।
बाहिर निकरि अनेक प्रपंचा। सीखि जरै त्रयतापनि अंचा।।
रटत न नाम काम रस पागा। गर्भ कौल तजि दीन्ह अभागा।।
अबहुं चेति पच्चीस हजारहि। रटि सियराम सुनाम उदारहि।।
गये जाप जो स्वास वृथाहीं। अब न नसाउ सोचि मन माही।।
चढ़त सीस ऋण स्वसनि केरा। दिन दिन रटु सियराम सबेरा।।
पुरबहु अब तुम गर्भ करारा। रटि सियराम पचीस पद लीजै।।
जागहु मोह निद ते भाई। करहु बेगि सियराम रटाई।।

गये स्वास जो आज लगि, तिन्हि कर जोरि हिसाब।
पुरइ देह रटि नाम तब, नित्य मुक्त पद पाव।।

वर्ष सवा सौ दिन केते। जोरहु दिन प्रति स्वासा जेते।।
स्पसस स्वास प्रति नाम सुजोरी। चारि भाग तेहि करै बहोरी।।
प्रथम भाग जब रटि सुपुरैहौं। कर्ममुक्त गति तेहि दिन पैहौं।।
त्रगुन मुक्त गति दूसर भागा। पैहौ रटि मुख सह अनुरागा।।
तीसर भाग रटत मन लाई। नित्य मुक्त गति होत सुहाई।।
जीवन मुक्त सुगति सुखदाई। चौथ भाग रटि पैहो भाई।।

अव्याहत गति इच्छित कामा। पैहो रटि चहुं भाग सुनामा।।
स्वासन प्रति पुरिहहि सब नामा। हुइहहु तब सब गुन सुख धामा।।
नाम रटत परलोक लोक के। मिलत सकल सुख हरनन सोक के।।

देवनि सम नर देह यह, भासहि तेजागार।
अकथ अटर आनंद उर, भरिहहि आय अपार।।

सियवर दर्शन आदि अमित सुख। पैहौ विनसहि जनम मरन दुख।।
जो सब सस जनम भरि केरे। जोरि स्वास प्रति नाम सबेरे।।
रटिहहि ते सब सुख की ढेरी। हुइहहि अवसि कहौं मैं टेरी।।
कलियुग वयस सवासौ वर्षा। जोरि स्वास रटु नाम सहर्षा।।
करि वैष्णव गुरू बुझहु भेदा। नाम रटन कर नाशन खेदा।।
निज हठ तजि गुरु आयसु मानी। रटै नाम प्रति स्वास सुवानी।।
यहि विधि जो रटि नाम पुरावत। परमधाम सो जन सुख पावत।।
सहज स्वरूप धारि प्रभुसंगा। पावहि आनंद अकथ अभंगा।।
कर्मी धर्मी ज्ञानगुमानी। लहहि न यह गति सब सुख खानी।।
जो प्रति स्वास नाम रटि पावहि। नाम रसकि जन प्रभु मन भावहि।।
रिधि सिधि भगति ग्यान गति प्रेमा। नाम नटत पावहि प्रद छेमा।।

वर्ष सवा सौ दिनन के, गनि स्वासा प्रति स्वास।
रटि पुरवहि सियराम ते, राम रूप जग स्वास।।

यह विधि थोरे नाम न होई। रटै खूब सिधि पावहि सोई।।
यह साधन अति सुलभ ललामा। नहि कछु विधि विधान कर कामा।।
केवल युगल नाम लय लाई। रटै बैठि सब संग विहाई।।
अस विचारि तजि सकल असंका। करहु नाम कर नेम सुवंका।।
सवा लावा वा लाख सुवारा। रटहु नित तजि मद मारा।।

श्रीपरमहंस जी महाराज की उपर्युक्त नाम साधना में योगयुक्ति का मिश्रण नहीं है। प्रेमपूर्वक त ध्यान सहित युगलनाम का नियम से जप होना चाहिये। नियम कम से कम पच्चीस हजार, अधिक से अ सवा लाख नित्यजप संख्या का होना चाहिये। इससे अधिक जपमें उच्चारण दोष या गिनती में भूल की संभावना हो सकती है।

पूज्यपाद श्रीबड़े महाराज के मत से पच्चीस हजार नाम जापक मंगल भागी बनते हैं। पचास ह या अधिक जपने वाले देव पूज्य बन जाते हैं। एक लाख नित्य नियम से जप करने वाले मायामुक्त–नि बन जाते हैं। निरन्तर जप करने वालों की महिमा अकथ्य है।

सहस पचीस लो जपत जौन जीह नाम
राम अभिराम ताहि मंगल अवेशो हैं।
जाके नेम अचल पचास सहसाधिक है।
सो तो देव देविन ते पूजित विशेषे हैं।।
ज़ौन अनुरागी बड़भागी के सुनेम लक्ष
सो तो परत्यक्ष स्वच्छ रहित अंदेशो हैं।
(श्री) युगल अनन्य ताकी महिमा बखाने कौन
जाके सुखासागर की रटन हमेशो हैं।।

सबसे उत्तम जपसंख्या तो उपर्युक्त विधि से एक अरब ही आयु भर की स्वास संख्या के हिसाब से सही है। यदि एक लाख की संख्या में नित्य नाम जपते हैं, तो इनकी संख्या पूरी करने में आपको २८ वर्ष लग जायेंगे। सवा लक्ष नित्य नाम जप करने से यह संख्या २२ वर्षों में पूरी होगी। कोई बड़भागी रात्रि जागरण में प्रवीण स्वल्पाहारीदो--दो लाख नाम जप प्रत्येक दिन कर लेते हैं, उन्हें केवल १४ वर्षों में ही इतनी संख्या पूरी हो सकती है। यह नामजप संख्या उत्तम सिद्धि देने वाली है। यदि आपको इतने दीर्घकालव्यापी नामसाधना का साहस न हो, तो कोई बात नहीं, आप स्पसस प्रति नाम न जपकर, रोम--रोम प्रति के हिसाब से ही जप कर लें। विद्वानों के मत से कलिकाल में उपदिष्ट संख्या की चतुर्गणित संख्या में सिद्धि अवश्यंभावी हो जाती है। अतः आप साढ़े तीन कोटि के चौगुना १४ कोटि नाम जप कर लें, इसमें आपको एक लक्ष नित्य नामजप से चार वर्ष ही लगेंगे।

इस सम्बन्ध की मूलवाण श्रीपरमहंस प्रेमलताजी महाराज की हम उन्हीं के रचित ग्रन्थ श्रीउपदेश पेटिका से उद्धृत करते हैं।

प्रेमलता यहि भांति अब, रटु सियराम सनेम।
नासहि कलुष कुरोग कलि, कलि, पैहहु रम सुछेम ।। ३४।।
साढ़े तीन करोड़ जो, रोम जानि निज अंग।
चारि नाम प्रति लोम रटि, प्रेमसुलता असंग।। ३५।।

रोम रोम प्रति एक आवृत्ति अर्थात् साढ़े तीन कोटि नाम पूरा करने पर, वह भवजाल से छूट जायेंगे तथा उनके सभी भ्रम मिट जायेंगे। दो आवृत्ति अर्थात् सात कोटि पूरा करने पर, उसके मन, बुद्धि तथा चित्त शान्त होकर, ध्यान परायण हो जायेंगे तथा उन्हें अपने स्वरूप का ज्ञान प्राप्त हो जायेगा। तीसरी आवृत्ति पूरी करते करते, गुप्त दिव्य युगल विहार अपने हृदयनिकुंज में ही देखने लगेंगे। चौथी आवृत्ति होने पर, आपके युगल इष्ट सदा के लिये आपके हृदय में प्रत्यक्ष की भाँति बस जायेंगे। नामजप, प्रतीति तथा मन एकाग्रकर होना चाहिये।

एक बार जो लोम प्रति, रटै नाम लय लाय।
प्रेमलता भव जाल ते, मुक्त होय भ्रम जाय।।
उभयवार प्रति लोम रटि, मन बुधि चित्त थिराय।
प्रेमलता निज रूपकर, बोध पाय हरषाय।।
रटे तीसरी बार बर, नाम लोम प्रति जोई।
भासत युगल विहार उर, प्रेमलता जो गोई।।
चारि बार प्रति लोम जो, रटै नाम जन कोय।
श्री सियराम स्वरूप उर, प्रेमलता थिर होय।।
रटै नम यहि भाँति वर, कोटि चतुर्दश जीव।
प्रेमलता तनु अछत कलि, निश्चय पावै पीव।।

साधारण नाम सिद्धि के लिए नाम जपका नियम आप केवल छः महीने का कर सकते हैं। इस निर सिद्धि के लिए, आपको फलाहार या दूधाहार वृत्ति बहुत सहायक होगी। युगलनाम जप विश्वासपूर्वक ज से कलिकाल में छः महीने में ही सिद्धि हो जाती है। इस सम्बन्ध में कुछ प्रमाण हम नीचे उद्धृत करते

स्वास संग सियराम रटु, प्रेमलता षट मास।
सादर होय प्रकास उर, कलिमल पावहि नास।।६९।।

राग द्वेष मूलक भेदभ्रम मिटाने के लिये नामजप की युक्ति

रटै नाम करि नेम निरंतर जिज्ञासू षन्मासा है।
तजि वनिता बकवाद भोग जग विविध विकार विलासा है।।
असन सैन लघु वैन बसै थल निर्जन आस न त्रासा है।
प्रेमलता भ्रमभेद कल्पना पावै आपहि नासा है।।
पय आहार फल खाइ जपु, राम नाम षटमास।
सकल सुमंगल सिद्धि सब, करतल तुलसीदास।।

श्री नृसिंहपुराण में देवर्षि श्रीयाज्ञवल्क्यजी से कहते हैं कि नाम जपने में पहले परमपावन परमानन्ददा श्रीसीतानाम कहकर पीछे रामनाम अर्थात् सीताराम कहना चाहिये। यदि दो ही अक्षर वाले रामनाम ही ज अभीष्ट हो, तो बीच–बीच में अवकाश पाकर, श्रद्धा भक्तिपूर्वक श्रीसीतानाम भी उच्चारण करते जायँ, प्रकार से विश्वासी श्रीयुगलनाम जापक को केवल छः महीने में ही सिद्धि प्राप्त हो जाती है। नामजप नि होना चाहिये।

आदौ सीतापदं पुण्यं परमानन्ददायम्।
पश्चाच्छ्री रामनाम्नस्तु कथनं संप्रशस्यते।।

युग्मं वर्णं जपेद्यर्हि तदा सीतेति कीर्त्तयेत्।
सावकाशो सदा भक्त्या मध्ये मध्ये समादरात्
एवं रीत्या स्मरेन्नाम राम भद्रस्य संततम्।
षण्मासात्सिद्धिमाप्नोति कलौ विश्वासपूर्वकम्।।

बारह वर्षों का एक लक्ष नित्य नामनियम भी विशेष सिद्धिदायक है।

द्वादश वर्ष सनेम नित, रटै लाख सियराम।
येनकेन विधि तर्क तजि, फर्क बैठि निष्काम।।
दश नाम अपराध तजि, रटै खूब विनु ऊब।
पावै तब आनन्दघन, प्रेमलता महबूब।।
अवसि होय सियराम कर, रूप जियत जग सोइ।
तेहि सेवत पावहि सुगति, प्रेमलता सब कोइ।।

मूंगा, मोती तथा स्फटिक मणि की माला पर भी जप होता है, परन्तु श्री तुलसीमाला पर जो नाम की गणना की जाती है, उसका फल तो अक्षय होता है। ऐसा आह्निक सूत्रावलि में लिखा है।

प्रवाल मुक्ता स्फटिके जपः कोटि फलप्रदः।
तुलसी मणिभि र्येन गणिनं चाक्षयं फलम्।।

जप का जितना भी नियम रखें, फिर घटने नहीं पावे। नामस्वाद प्रगटाने के लिए सवालक्ष नित्य छः वर्षों तक जपना चाहिए। परमहंस श्री प्रेमलता जी अपने रचित श्री हितोपदेश शतक में कहते हैं–

श्री सियराम नाम चिंताहर सब भजनो का दाता है।
सकल भजन आधीन नाम के रटि रसना तजि बादा है।।
सवा लाख करि नेम वर्ष षट् पैहौं अनुपम स्वादा है।
प्रेमलता अनयास दुखह दुख नासहि सकल विषादा है।।६४।।

श्रीज्ञानेश्वर संहितान्तर्गत श्रीउमामहेश्वर सम्वाद रूप में श्रीनामनौका अनुष्ठान की विधि बतायी गयी है। श्रीपार्वतीजी का प्रश्न है– हे देवाधिदेव महादेव! भक्तानुग्रहकर्त्ता! श्रीरामचन्द्र के रामनाम का नौकानुष्ठान की विधि बतावें जिससे मनुष्य को सभी सिद्धियाँ प्राप्त हो जावे।

भगवान शंकर जी कहते हैं– हे देवि! मैं नौका नियम की विधि बताता हूँ, सुनो। श्रीरामनाम का नौका–अनुष्ठान परम कल्पवृक्ष तुल्य है। नव करोड़ निन्नावे लाख निन्नावे हजार नव सौ निन्नावे। इतनी जप संख्या पूरी करें। यह सर्वसिद्धि प्रदायक है। पूरी जप संख्या का नवमा अंश हवन करे, हवन संख्या का नवमा अंश तर्पण करे। तर्पण संख्या का नवमांश मार्जन करे। यह विधान धनकामी के लिए विशेष उपयोगी है। मार्जन का नवमांश भजनानंदी वैष्णव ब्राह्मणों को भोजन करावे। राजदंड का भय हो, शत्रुभय उपस्थित हो, तीनों तापों से दग्ध होते हों,प्राणसंकट

में पड़ जाय, तो सर्वसम्पत्ति दायक इस नाम नौका को करना चाहिए। हवन करे घृतसहित तिल चावल से, अथवा तस्मई से। तत्पश्चात् श्रीराघवजी के वीरगणों का यथाशक्ति आवाहन करके पूजन करे, क्योंकि ये वीरगण श्रीराघवजी के विशेष प्रिय हैं।

श्रीज्ञानेश्वर संहिता के मूल पाठः—

''पार्वत्युवाच—

देव देव महादेव भक्तानुग्रह कारक। वद श्री रामचन्द्रस्य नौकाख्यानमुत्तमम्।।
येनानुष्ठानतो देव सर्व सिद्धिर्भवेन्नृणाम्।

महादेव उवाच—

ऋणु वक्ष्यामि देवेशि! नन्दकार्या विधानतः।
श्रीरामनाम सम्भूतं कल्पवृक्षसमं परम्।।
नन्द कोटि नन्द लक्ष स्तथा नन्द सहस्रकम्।
तथा नन्द शतं देवि! नन्दकोत्तरमीरितम्।
एतत्क्रमेण कर्त्तव्यं सर्वसिद्धिकरं नृणाम्।
नवमांशने जुहुयात् तन्नवांशेन तर्पयेत्।।
मार्जनं तन्नवांशेन कर्त्तव्यं भूतिमिच्छता।
तन्नवांशेन च तथा ब्राह्मणे भोजयेत पुनः।
राजभये शत्रुभये त्रयतापे प्राणसंङ्कटे।।
कर्त्तव्यं साधकेनेदं सर्व सम्पत्तिकारम्।
पुनः स्वर्ण के चास्मिन हवनं तिल तन्दुलैः।।
सघृतैः पायसैश्चैव पश्चादाहृत्य वीरकम्।
पूजयेत्तु यथाशक्तिः यतः श्री रामवल्लभः।।

इति श्री ज्ञानेश्वर संहितायां पार्वती—महेश्वर सम्वादे श्रीरामनाम नौका विधिः समाप्तः। तिल तन्दुलैः घृतदुग्धैःजुहुयात् जलेन संतर्पयेत् कुशेन मार्जयेत् ब्राह्मणं भोजनं कुर्य्यात्।
एतदाभावे सति जप द्विगुणं कृत्वा अर्थात् हवनादि न बने तो जप संख्या दूनी कर दें।

श्री प्रेमलता जी महाराज स्वरचित बैराग्य प्रबोधक बहत्तरी में चौदह कोटि नाम जपकी विशेष विधि बताते हैं। सरल सुबोध मूल छंद ही में पढ़ लीजिए—

कलि केवल सियरामनाम गति जानहि जगत तमामा है।
कवनिउ विधि कोउ रटै कटै अघ कछु संदेह न या मा है।।
जो यहि भाँति रटै तो औरउ उत्तम चढ़ै सुरंगा है।
जग जबाल बहु ख्याल कला गुण मायिक विषय भुजंगा है।।
लोकलाज मद मोह कपट छल त्यागै नारि प्रसंगा है।
सावधान मन बैठि विलग मुख ठानि सुनेम अभंगा है।।

अशन सयन बहु वचन तर्कना तरकि लड़ाई दंगा है।
नाम प्रवाह अखंड सुमुख ते बह्यौ करै ज्यो गंगा है।।
कहुँ अनन्द अनुकूल फिरै कहु भूखा प्यासा नंगा है।
तन सुखदुख सम समुझि निरंतर रटै नाम शुचि अंगा है।।
नाम अनन्य रसिक संतनि कर सेवा संग सु चित लाई है।
करै सदा मन मारि भली विधि तजि गुमान मद ठकुराई।।
उपजै परमानंद अनूपम जाय जो कहु केहि विधि गाई।
रोम रोम धुनि उठै नाम की भाव भक्ति रह उर जाई।।
संत कहैं यहि भांति चतुर्दश कोटि नाम रटि ले भाई।
बहुरि न परिहैं मोह जाल महँ जन्म मरण दुख नशि जाई।।
रामरूप होइ जात रटत नर नाम, काम तजि अधिकाई।
चहुँ जुग चहु श्रुति प्रगट नाम जपि कहहु को न शुभगति पाई?

✡ सर्व साधन—सार नाम जप ✡

श्री अग्निपुराण में जप शब्द का अर्थ बताते हुए कहते हैं कि इस शब्द का प्रथमाक्षर 'ज' पुनर्जन्म को रोकने वाला है तथा द्वितीयाक्षर 'प' का अर्थ है पाप नाशन। इस प्रकार नाम जप से सब पाप नष्ट होकर, जन्ममरण रूपी भवसमुद्र से मुक्ति जपार्थ से ही संभवित होती है। इसी से तो यजुर्वेद का मंत्र है—रामनामजपादेव मुक्ति र्भवति अर्थात् एकमात्र श्रीरामनाम जप से ही मुक्ति—प्राप्ति संभव है। मुक्ति तो शरीरांत होने पर ही स्पष्ट अनुभव में आती है। नामजप से जीवितावस्था में ही इष्टदेवता के दर्शन होते हैं। अथर्ववेद की उपनिषद् कहती हैं ''जपान्तेनैव देवता दर्शनं करोति कलौ नान्येषा भवति'' अर्थात् जप से ही कलि में इष्टदेवता के दर्शन होते हैं। अन्य उपाय से नहीं।

जापक का कोई अनिष्ट नहीं कर पाता— उसके पास यक्ष, राक्षस, पिशाच, भीषण ग्रह ये एक भी फटकने नहीं पाते—

यक्षरक्षः पिशाचश्च ग्रहाः सर्वे च भीषणाः।
जापिनं नोपसर्पन्ति भयभीताः समन्ततः।।

लिंग पुराण ८५/१२४

श्रीमद्भगवद्गीता अध्याय १० के श्लोक २५ में भगवान ने सभी यज्ञों में जप यज्ञ को अपना ही स्वरूप मानकर जपयज्ञ की सर्वश्रेष्ठता बतायी है।

'यज्ञानां जपज्ञोऽस्मि।' 'विधि यज्ञाज्जपयज्ञो विशिष्टो दशभिर्गुणैः।।'

यह श्लोकार्द्ध मनु स्मृति २/२५, विष्णुपुराण ५५/९ तथा वुद्धपराशरस्मृति ४/५० में एक ही रूप से आये हैं। तात्पर्य यह कि यज्ञ की सर्वश्रेष्ठता सर्वमान्य है। यहाँ विधि यज्ञ का भाव स्पष्ट करते हुए प्रसिद्ध टीकाकार श्रीगोविन्दराजजी ज्योतिष्टौम आदि नाम वाले यज्ञ कहते हैं।

ज्योतिष्टौमादयो विधियज्ञाः। श्रीराघवानंद स्वामी दर्श पौर्णमास आदि यज्ञ बताते हैं— 'दर्शपौर्णमासादयो विधियज्ञाः॥' उपलक्षण से सभी अन्यान्य यज्ञ विधियज्ञ से सूचित हुए तथा उन सबों से जपयज्ञ दशगुना अधिक फलदायक है। मनुस्मृति के २/८६ श्लोक से पाकयज्ञ से भी जपयज्ञ श्रेष्ठ बताया गया है।

ये पाकयज्ञाश्चत्वारो विधि यज्ञ समन्विताः।
सर्वे ते जपयज्ञस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम॥

अर्थात् चारों प्रकार के पाकयज्ञ तथा विधि यज्ञ सभी अपने फल इकट्ठे करें तो जपयज्ञ के सोलह आने में एक आना भी नहीं तुलेंगे। अतः सर्व प्रकार की सिद्धियाँ जप से ही संभवित होती हैं। कहा भी गया है।

जपात्सिद्धि जपात्सिद्धि जपात्सिद्धि न संशयः॥
जप्येनैव तु संसिद्धये ब्राह्मणो नात्र संशयः।
कुर्यादन्यन्न वा कुर्यान्मैत्रो ब्राह्मण उच्यते॥

मनु. २/८७ वुहदविष्णुपुराण ५५/१९ पराशर. ४/६०

जप से जन्मजन्मान्तरों के पापपुंज नष्ट होते हैं, जप से सभी सुख भोग प्राप्त होते हैं, जप से मृत्यु पर विजय प्राप्त होती है, जप से सारी सिद्धियाँ मिलती हैं। यहाँ तक कि जप से मुक्ति भी मिलती है।

जपेन पापं शमयेदशेषं यत्तात्कृतं जन्मपरम्परासु।
जपेन भोगान् जयते च मृत्युं जपेन सिद्धिं लभतें च मुक्तिम्॥

लिङ्गपुराण ८१/१२५

यह तो किसी भी भगवन्मन्त्र के जप की महिमा हुई। सभी भगवन्नामों में सभी मन्त्रों में शिरोमणि भूत श्रीरामनाम की जप महिमा कौन कह सकता है? उत्तम नामजापक फलाशा की परवाह नहीं रखते उनका नाम जप सर्वथा निष्काम भाव से प्रेम पूर्वक होता रहता है। परन्तु प्रारम्भिक साधक को नामजप का फल हाथों हाथ अनुभूत होता रहे तो उसकी जपश्रद्धा उत्तरोत्तर बढ़ती जाती है। इसी विचार से हम द्वादशकोटि नाम जप में प्रत्येक कोटि के फल विलग विलग अगले पृष्ठों में दिखायेंगे। जापक स्वयं नामजपकर उन लाभों को आजमा सकते हैं।

नामजप शुद्ध—शुद्ध हो, अपना कान ही सुनसुनकर इसका गवाह रहे। नाम में विश्वास ही किसी सिद्धि का कारण बनता है।

जन्म कुण्डली
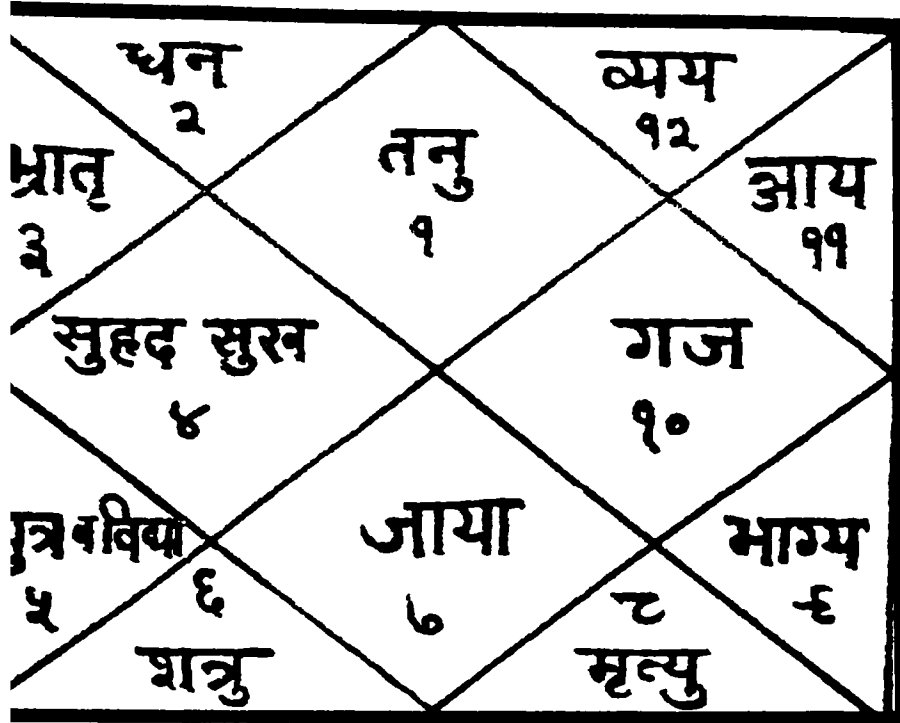
द्ध ही है कि मन्त्रजप से ग्रह सौम्य हो जाते हैं, परन्तु प्रत्येक ग्रह के म
थक हैं एवं कष्ट साध्य हैं, एक श्री रामनाम ही ऐसे हैं जो सभी ग्रहों
द प्रदान करने में समर्थ हैं। एक बार श्रीरामनाम उच्चारण ही त्रिताप श
ता है, परन्तु जिन्हें इतना विश्वास नहीं है, उनके लिए उनकी सा
जप तो अवश्य ही करना चाहिये। इस साधन—निष्ठा में जप—संख
क है। जो नामैकशरण हैं, उन्हे न जप संख्या का बंधन है न किसी
र अजपा जप करते हुए निज जीवन धन्य करते तथा विश्वकल्याण
हेक सुखों का त्याग नहीं कर सकते अथवा नहीं कर पाये हैं तथा दु
हैं, उनको तो पूर्ण विश्वास कर धैर्यपूर्वक द्वादशकोटि संख्यात्मक
लेना चाहिये। ऐसा कर लेने से संतमतानुसार जन्मकुंडली के द्वादश
ोगियों का अनुभव पाठकों के हितार्थ यहाँ प्रकट किये जाते हैं।
ष्ट्र से 'वामनराव' नाम के प्रसिद्ध नामजापक हाल ही में हुए हैं।
हैं जो नीचे उद्धृत किये जाते हैं।

रम सिद्ध श्रीवासुदेवानन्द सरस्वती 'श्रीटेवेस्वामीजी' ने अपने मंत्रा
का साक्षात्कार प्राप्त किया था तथा उन्हीं भगवान् से जन्म कुंडली
धान प्राप्त किया था। हम भगवान दत्तात्रय द्वारा उपदिष्ट अंश (क)
चार (ख) विभाग में रखेंगे। (ग) विभाग में अन्याय नाम जाप

१– प्रथम तनु स्थान की शुद्धि के लिए भगवान् दत्तात्रय कहते हैं (क) जिह्वा द्वारा एक करोड़ रामनाम जप करने से कुंडली का पहला तनुस्थान शुद्ध हो जाता है। एक करोड़ जप पूर्ण होते ही कल्पना प्रवाह बन्द हो जायेगा। स्वप्न में भगवद्मूर्तियों के दर्शन होने लगेंगे, प्रभु की मूर्तियों के साथ एवं साधु संतो के साथ स्वप्न में वार्तालाप होने लगेगा, और अपने शरीर के रोग के बीज नष्ट हो जायेंगे एवं सत्व वृद्धि होने लगेगी।

(ख) एक करोड़ जप होते ही कई वर्षों का मुकदमा जीत गये, मन का भारी दुःख नष्ट हो गया। यह तनुस्थान की शुद्धि है।

(ग) रोग ग्रस्त होकर काशी में देहपात करने के लिए आये हुए विठोवा नगसुंदर को प्रसिद्ध नामयोगी श्रीरामचन्द्र कामतने 'सीताराम' इस चार अक्षर वाले नामजप का उपदेश किया था। मृत्यु निकट जानकर उसने जप आरंभ किया। थोड़े ही दिनों में जप से रोगमुक्त हो गये। तनुस्थान शुद्ध हो गया।

(घ) दक्षिण में श्रीवामनराव नामक नाम–योगी हो गये हैं। उसने २४ कोटि रामनाम का जप किया था। प्रत्येक कोटि जप का फल उनकी डायरी में लिखा है। वह भी नीचे दिया जाता है। श्रीवामनजू को एक कोटि नाम–जप संख्या पूरी होने पर, कई वर्षों से कोर्ट में एक दावा चल रहा था,जिसकी उनके हृदय में बड़ी भारी चोट रहा करती थी, सो सहसा शांत हो गई। हृदय का ताप शांत हो गया। यह तनु–स्थान की शुद्धि का परिचायक है।

२– (क) दो करोड़ जप होते ही 'धनस्थान' की शुद्धि होगी। कर्जा अनायास निपट जायेगा और आर्थिक परिस्थिति शीघ्र ही अच्छी होने लगेगी।

(ख) दो करोड़ जप पूर्ण होते हुए ही सभी ऋण सध गया, आर्थिक संकोच दूर हो गया। यह धनस्थान की शुद्धि है।

(ग) ऊपर चर्चित विठोवा नागसुंदर को दो कोटि जप पूरा होने पर अच्छी जगह नौकरी मिल गई। धनस्थान शुद्ध हुआ।

(घ) श्रीवामनरावजी के दो कोटि नामजप पूर्ण होने पर कर्जा निपट गया। आर्थिक संकोच दूर हुआ। यह धन–स्थान की शुद्धि का परिचय है।

३–(क) तीन करोड़ जप पूर्ण होने पर 'पराक्रम स्थान' शुद्ध होगा। अपने कौटुम्बिक व बधुंजनों का वैमनस्य दूर हो जायेगा और कोई अपने से प्रेम करने लगेंगे।

(ख) तीन करोड़ जप पूर्ण होते ही भाइयों में परस्पर जो अनमेल था वह मिट गया, फिर कभी झगड़ा न हुआ। यह भातृस्थान एवं पराक्रम स्थान की शुद्धि है।

(ग) श्रीवामनरावजी को तीन करोड़ जपसंख्या पूर्ण होने पर उनके बंधु जो पहले उनसे विमुख रहते थे सो उनके साथ संपूर्ण प्रेम से रहने लगे। यह तृतीय भ्रातृ–स्थान व पराक्रमस्थान शुद्धि का परिचय है।

४–(क) चार करोड़ जप पूर्ण होने पर 'सुहृदस्थान व भ्रातृस्थान' की शुद्धि होगी अर्थात् अपने बंधुजनों और कुटुम्बियों के शारीरिक रोग दूर हो जायेंगे एवं मानसिक आघात बंद होगा।

(ख) चार करोड़ जप होते ही २२ वर्ष से एक जमीन का मुकद्मा चलता था, जिसको १६ बार आपके विरूद्ध कोर्ट ने फैसला किया था, अनायास बिना साक्षी के उसी कोर्ट ने आपके हित में निर्णय कर दिया। जमीन आपको सदा के लिए निर्विघ्न मिल गई। यह 'सुख—सुहृद—भ्रातृ स्थान' की शुद्धि है।

५—(क) पाँच करोड़ जपान्त में पुत्रस्थान व विद्यास्थान शुद्ध होगा। अपुत्र को पुत्र की प्राप्ति होगी और ब्रह्म विद्या भी प्राप्त होगी।

(ख) पाँच करोड़ जप होते ही प्रतिकूल रहनेवाला पुत्र स्वतः अनुकूल हो गया और ब्रह्म विद्या का बोध भी हो गया। यह 'पुत्र एवं विद्यास्थान' की शुद्धि है।

६—(क) छः करोड़ जप पूर्ण होने से 'शत्रुस्थान व रोगस्थान' शुद्ध होगा। बाह्य शत्रुओं और आन्तरिक काम क्रोधादि षट् रिपुओं का उपद्रव निर्मूल हो जायेगा। शत्रु पाँव पर आकर गिरेंगे।

(ख) छः करोड़ जप—संख्या पूर्ण होते ही जन—समाज में आपसे मतभेद रखने वाले सभी विरोधी आपके चरणों में गिर गये। यह शत्रु स्थान की शुद्धि है।

७—(क) सात करोड़ जप पूर्ण होते ही 'जाया स्थान' की शुद्धि होगी। पति को स्त्री अनुकूल हो जायेगी और स्त्री का पति अनुकूल हो जायेगा।

(ख) सात करोड़ जप पूर्ण होते ही अर्थ कष्ट से सदा रूठी रहने वाली धर्मपत्नी प्रसन्न रहने लगी और आजीवन अनूकूल रही यह 'जायास्थान की शुद्धि हुई।

(ग) विठोवा नगसुंदर को सातकोटि नाम जप पूरा होने पर एक बड़े श्रीमान् की कन्या का विवाह, जो दूसरे पुरुष से ठीक हुआ था, किसी खास कारण से छुड़ाकर, इनके साथ कर दिया गया तथा दायजे में बहुत धन मिला। इस प्रकार लाभ—स्थान व जाया स्थान दोनों शुद्ध हुये।

८—(क) आठ कोटि जप पूर्ण होने से 'मृत्युस्थान' शुद्ध होगा। अकालमृत्यु अपमृत्यु आदिक का भय न होगा।

(ख) आपके कंठ में एक नारियल जैसी कठिन गाँठ जो बहुत दिनों से थी एवं असह्य कष्ट देती थी, आठ करोड़ जप पूर्ण होते ही बिना दवा व चीर फाड़ के स्वयं गलकर नष्ट हो गई। यह 'मृत्युस्थान' की शुद्धि हुई।

९—(क) नव करोड़ जप पूर्ण होते ही 'महाधर्मस्थान' की शुद्धि होगी। नव करोड़ जप पूर्ण हुआ कि तुरंत ही विलक्षण घटना पटीयसी लीलाधारी प्रभु श्रीरामचन्द्रमाजू के स्थूल आँखों से प्रत्यक्ष ही दर्शन हो जायेंगे।

(ख) नव करोड़ जप पूरा होते ही श्रीमारुति मन्दिर में श्रीरामजी के दर्शन हुये। यह 'धर्मस्थान (भाग्य स्थान') शुद्धि का परिचय हुआ।

(ग) विठोवा नगसुंदर को नौ करोड़ जप पूर्ण होते—होते श्रीविश्वनाथजी व श्रीरघुनाथजी महाराज के साक्षात् दर्शन प्राप्त हुए।

१०—(क) दस करोड़ जप पूर्ण होने पर 'कर्मस्थान' की शुद्धि होगी। आपसे आप संत महात्मा व साधुपुरुषगण बिना बुलाये अपने घर पर स्वयं आकर मिलेंगे एवं अपने हाथों सदैव केवल शुभकर्म ही होते रहेंगे।

(ख) दश करोड़ जप पूर्ण होते—होते ऊँचे—ऊँचं महापुरुषों का समागम प्राप्त होने लगा, श्री ऊँडली आचार्य आपके घर पधारे।

११—(क) एकादश कोटि जप होने से 'लाभस्थान' की शुद्धि होगी। प्रापंचिक धन धान्य समृद्धि आदि का अनायास ही लाभ होता रहेगा।

(ख) ग्यारह करोड़ जप पूर्ण होते ही खेती की जमीन फलद हो गई, थोड़ी जमीन में पूरी उपज होने लगी। यह 'लाभस्थान' शुद्धि हुई।

१२—(क) बारह कोटि जप पूर्ण होने पर अशेषत: रजोगुण तमोगुण का नाश होगा। पूर्ण सत्वगुण—पूर्वक संपूर्ण सिद्धिकला प्राप्त होगी और कोई भी कर्त्तव्य करना शेष नहीं रहेगा। इस प्रकार बारह कोटि 'नामजप' करने से संपूर्णतया कृतकृत्यता प्राप्त हो जाती है। अपना प्रारब्ध एवं भावी भी बराबर बदला जा सकता है।

(ख) बारह करोड़ जप पूर्ण होते—होते स्वयं प्रभु श्रीरामजी ने आज्ञा प्रदान की कि तुम्हारा भजन पूर्ण हुआ। अब जीवों को नाम—सम्मुख करो। लोक में नाम का प्रचार कर जगत का कल्याण करो।

श्रीयुत् नरहरि कुलकर्णी सौदलगे नामक एक योगी हो गये हैं। आपको एक गाय ने सींग से मारा था। मृत्युवत् पीड़ा होनी लगी थी। जब औषधि से आराम नहीं हुआ तब किसी संत के उपदेश से दो अक्षर के मंत्र 'राम' मात्र का जप किया। धीरे—धीरे अच्छे हो गये। फिर तो आपको नामजप का चस्का लगा कि बड़ी तीव्रता से जप में तत्पर हुये। नव कोटि जप पूर्ण होने के पहले ही आपको श्री रामजी का साक्षात्कार हो गया।

श्रीयुत् डाक्टर रामचन्द्रराव भीमराव नायक भी १३ कोटि त्रयोदशाक्षर राममंत्र पूर्ण करने के लिए जप कर रहें थे। नित्य की संख्या बराबर डायरी में घड़ी के हिसाब से रखते थे। उन्हें भी अच्छे—अच्छे अनुभव हुये। श्रीगुरूआज्ञा परवश अपने अनुभवों का प्रकाश तो नहीं किया, किन्तु इतना अवश्य कहा कि द्वादश स्थान की शुद्धि के क्रम में अवश्य ही सब कुछ होते है। उस विषय में स्वानुभव होने से आपको पूर्ण विश्वास भी जम गया हैं।

इस प्रकार जीभ को नाम जप का चस्का लग जाय, तो देखिये क्या—क्या रंग छनता है? नामोच्चारण छोड़कर अन्यवार्त्ता नीम के समान कड़वी लगेगी। मुर्दे की भाँति जगत से उदासीन होकर सब संशय नि:शेष रूप से मिट जायेंगे। मस्तिष्क में अभिमानमद का लेश भी नहीं रहेगा।

श्री नामकांति कहती है—

सोभा सरस विशेष देख तब जब जुवान जप जागें।
नाम ललाम कलाम दाम तजि अपर बचन कटु लागे।।
दुविधा दाग दिमाग राग भव शव समान लखि त्यागे।
श्रीयुगलानन्यशरन सतगुरु पद पंकज सेव सुभागे।।४३।।

✡ निरन्तर अखंड नामजप ✡

उठते—बैठते, खाते—पीते, सोते—जागते सदैव नाम रटते रहना चाहिये। नाम भूलना बड़ी मूर्खता है, अनेकों खेद को बुलाना है। नामाभ्यास की उत्तम रीति यही है कि विश्वास पूर्वक श्रीनाम ध्यान को ही निरन्तर हृदय में धारण किये रहें। अपनी आत्मा के उद्धार का यही उपाय है कि सोते—जागते कभी नाम भूलें नहीं। यदि बने तो श्री अवध सरयूतट का अखंड निवास सज ले, 'तबतो सोना और उसमें सुगन्ध भी'। यह उपदेश कभी भूलना नहीं चाहिये।

ऊठत बैठत राम ररो मत मूढ़ मरो भरो खेद हजारो।
है यह उत्तम रीति पुनीत प्रतीति समेत हिया दृढ़ धारो।।
जागत सोवत भूलो नहीं, निज नामहि ते नित आतम तारो।
(श्री)युग्म अनन्य बसो सरयूतट, है वर बात न कीजियो न्यारो।।१०७।।

श्रीपद्मपुराण में लोकपितामह श्री ब्रह्माजी देवर्षि श्री नारद जी से कहते हैं कि श्रीरामनाम निरन्तर जपना चाहिये। नामजापक मनुष्य यदि श्रीजानकीजीवनजी का मधुर मनोहर नाम आधे क्षण के लिए भी भूल जाय, तो महदोष का भागी हो जाता है। हे महामुने। मैं आपसे सत्य कहता हूँ।

क्षणार्द्धं जानकीजानेर्नाम विस्मृत्य मानवः।
महादोषालयं याति सत्यं बच्मि महामुने।।

मार्कण्डेयपुराण में श्रीव्यासदेवजी ने श्रीसूत जी को बताया है कि जीभ से उच्चारणपूर्वक श्रद्धा सहित निरन्तर नाम जपने से थोड़े ही दिनों में परमानन्द का अनुभव होने लगेगा।

भजस्व सततं नाम जिह्वायां श्रद्धया सह।
स्वल्पकेनैव कालेन महामोदः प्रजायते।।

श्रीशिवपुराण का प्रसंग है। भगवान् श्री शंकरजी ने श्रीनारदजी के प्रति कहा है कि नारदजी! श्रीनाम सरकारकी जप द्वारा सेवा निरन्तर करनी चाहिये। आधाक्षण भी बिनानाम जपे बितावे, तो वह समय मृत्यु से भी अधिक दुखदाई प्रतीत हो।

रामनाम सदा सेव्यं जपरूपेण नारद।
क्षणार्द्ध नाम संहीनं कालं कालातिदुःखादम्।।

श्रीलिङ्गपुराण में श्रीशिवजी श्रीपार्वती जी के प्रति कहते हैं कि निर्वाणदाता श्रीरामनाम का स्मरण निरन्तर करना चाहिये। जापक यदि आधे क्षण के लिये भूल जाय, तो दुःखनिवास में पड़ जाता है।

स्मर्तव्यं तत्सदारामनाम निर्वाणदायकम्।
क्षणार्द्धमपि विस्मृत्य याति दुःखालयं जनः।।

श्रीआदिपुराण में भगवान्श्रीकृष्ण भक्तराज श्रीअर्जुन जी से कहते हैं कि जो सांसारिक विषयों से विरक्त होकर निरन्तर नाम का गान करते हैं, उनके बीच में खासकर श्रीराघवजी साक्षात् की भाँति सदा निवास करते हैं।

सततं नाम गायन्ति विनिर्विण्णेन चेतसा।
तेषां मध्ये सदा वासः श्रीरामस्य विशेषतः।।

पुनः भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं कि मैं जगद्गुरु श्रीरामनाम का निरन्तर प्रेमपूर्वक स्मरण करता रहता हूँ क्षणमात्र भी नहीं भूलता हूँ। अर्जुन मैं सत्य सत्य कह रहा हूँ।

रामनाम सदा प्रेम्णा संस्मरामि जगद्गुरूम्।
क्षणं न विस्मृतिं याति सत्यं सत्यं वचो मम।।

श्रीजावालिसंहिता का वचन है कि मुमुक्षुओं को चाहिए कि श्रीरामनाम को निरन्तर जपे, जाने और ध्यान करे अथवा दिनरात सदा सर्वदा कीर्त्तन ही किया करे।

रामनाम परं जाप्यं ज्ञेयं ध्येयं निरन्तरम्।
कीर्त्तनीयं च बहुधा मुमुक्षुभिरहर्निशम्।।

श्रीलोमशसंहिता में भी जगद्गुरु शंकरभगवान् का आदेश है कि श्रीरामनाम ही का निरंतर स्मरण करे, श्रीनाम ही सदा सुना करे, नामक्षरों का पाठ करे तथा कीर्तन करे तो दिनरात श्रद्धापूर्वक अखंडरूप से।

स्मर्तव्यं रामनामैकं श्रोतव्यं चैव सर्वदा।
पठितव्यं कीर्त्तितव्यं च श्रद्धायुक्तैर्दिवानिशम्।।

श्रीअनंत संहिता में श्रीरामानाम के निरतर जप का प्रभाव बताते हुये भगवान्शंकर जी श्रीपार्वती जी से कहते हैं कि श्रीरामानात्मक मंत्र को जो निरन्तर आदर और प्रेम के सहित जपते हैं, वही कलिकाल में कृतार्थरूप हैं। नामहीन व्यक्ति को माया मोहित समझना। इस मंत्र को अहर्निश निरतर जपते रहने से सब पापों से मुक्त होकर, जापक श्रीराघवजी की सायुज्य मुक्ति पाता है, अर्थात् भूषण वसन बनकर, उनके श्रीअंगों में संलग्न रहता है।

इमं मन्त्रं सदा स्नेहाद्ये जपन्तीह सादरम्।
ते कृतार्थाः कलौ देवि अन्ये मायामोहिताः।।
इमं मन्त्रं महेशानि जपन्नित्यमहर्निशम्।
मुच्यते सर्व पापेभ्यों रामसायुज्यमाप्नुयात्।।

श्रीप्रेमार्णव नाटक नामक आर्षग्रंथ का प्रमाण है कि निरन्तर नामजप का प्रभाव जान कर भी जो अधम पामर क्षणमात्र भी नाम के अतिरिक्त अन्य वस्तु का चिंतन करता है उसे गधा समझना।

क्षणं विहाय श्रीरामनाम यः पामराधमः।
कुरुते चान्यवस्तूनां चिन्तनं स तु गर्दभः।।

श्रीगणेश रहस्य में कहा गया है कि श्रीनामजप के बिना एकमुहूर्त भी बीत जाय तो हाथ मल–मल कर, माथा पीट–पीट कर, पछताया करे, कि पाप रूपी डाकू ने मेरे अमूल्य मानवजीवन का नामस्मरण वाला स्वर्ण अवसर चुरा लिया।

एकस्मिन्नप्यतिक्रान्ते मुहूर्ते नाम वर्जिते।
दुस्युभि र्मोषितस्तेन युक्तमाक्रन्दितु भृशम्।।

श्रीवशिष्ठ रामायण में श्री मुखवचन है कि जो निरन्तर स्नेहपूर्वक मेरे सुधा सरोवर रामनाम का स्मरण करता है वह धन्य है। हमारा अतिप्यारा है। मैं सत्य सत्य कहता हूँ।

ये स्मरन्ति सदा स्नेहान् मम नाम सुधासरः।
तेऽतिधन्याः प्रियास्माकं सत्यं सत्यं ब्रवीम्यहम्।।

पुनः कहते हैं कि जो इन्द्रियों का संयम करके, मेरे नाम को निरन्तर जपता है, उसके समान मेरा प्यारा ब्रह्माण्डमंडल में दूसरा नहीं है।

मन्नाम संस्मरेद्यस्तु सततं निब्रतेन्द्रियः।
तस्मात् प्रियतमः कश्चिन्नास्ति ब्रह्माण्डमण्डले।।

श्री विनय पत्रिका ६७ में श्री नामजप की विधि एवं निषेध का विवेचन करते हुए श्री गोस्वामिपाद आदेश करते हैं कि निरन्तर नाम–जपना, जप की सर्वोत्तम विधि है, श्रीनामसरकार को क्षणमात्र में भूल जाने से बढ़कर कोई निषिद्ध कर्म नहीं है।

''राम सुमिरत सब विधि ही को राज रे।
राम को बिसारिबो निषेध–सिरताज रे।।''

श्रीबड़ेमहाराज श्रीसीतारामनाम सनेह वाटिका, ९२४ में कहते हैं कि कराल काल को खंडन करने में श्रीनामसरकार परम प्रचंड हैं। इनका जप करना चाहिये। श्रीनाम में विश्वास प्रेम होने पर, अन्य साधन की आँच में जलना नहीं पड़ता। श्रीनामही को मनोहर मूलमंत्र मानकर, निष्काम भाव से इन्हें जीभ से निरन्तर जपना चाहिये। इससे सभी पापरूपी कलंक एवं अनिष्ट मिट जायेंगे। निरन्तर नामजप प्रियतम को अपनाने वाली अनमोल मुहर छाप के समान स्वीकृतिसूचक है।

''काल कराल को खंडन वेशक नाम प्रचंड सुजाप जपो जी।
प्रीति प्रीतिति कराय भली विधि साधना आँच न भूलि तपो जी।।
जीह अनीह निरन्तर धारना मूल मनोहर मंत्र थपो जी।
युग्म अनन्य कलंक कबाहत काटि के छाप अछाप छपो जी।।

श्री मिथिला जी के नाम जापक शिरमौर परमहंस श्रीप्रेमलता जी का भी यही आदेश है। आठो पहर निरन्तर नाम जपना चाहिए।

''नारि संग तजि श्रीसियरामा। रटै अखंड पुलकि बसु यामा।।''

श्रीवृहद उपासना अन्तर्गत श्रीसियरामनाम प्रसंग से–

श्री वैष्णव स्मृति में कहा गया है कि सोते जागते, खाते–पीते, उठते–बैठते, चलते–फिरते जो सदैव राम मामक मंत्र को जपते रहते हैं, उनको हम बार–बार नमस्कार करते हैं।

स्वपन् भुंजन् ब्रजंस्तिष्ठनुक्तिष्ठंश्च वदंस्तथा।
यो वक्ति रामनामाख्यं मन्त्रं तस्मै नमो नमः।।

अखंड नाम जपने वाले को भोजन करते समय भी नामजप छोड़ना नहीं चाहिये। अत्रिस्मृति नामक धर्मशास्त्र का आदेश है कि प्रत्येक ग्रास मुख में डालने के पहले नामोच्चारण कर लें। फिर ग्रास रखे! चबाते समय भी बीच–बीच में नाम गुनगुनाया करे। इस प्रकार से नामस्मरण पूर्वक भोजन करने वाले को अनेक दोषों से भरे अन्न में, कुअन्न भक्षण का दोष नहीं लगता। बल्कि भोजन के जितने भी दाने पेट में जाते हैं,, प्रत्येक दाने–दाने के हिसाब से उतने महायज्ञ करने से भी अधिक फल उन्हें मिलते हैं

कवले कवले कुर्वन् राम नामानुकीर्त्तनम्।
यः कश्चित् पुरूषोऽश्नाति सोऽन्नदोषैर्न लिप्यते।।
सिक्थे सिक्थे लभेन्मर्त्यो महायज्ञाधिकं फलम्।
यः स्मरेद्रामनामाख्यं मन्त्रराजमनुत्तमम्।।

श्री आदिरामायण में श्रीहनुमतलाल जी का आदेश है कि जागते, सोते, चलते, बैठते, विचरण काल में पलक खोलते, बन्द करते, हर समय श्रीरामनाम का जप करते रहना चाहिए।

जाग्रंस्तिष्ठन् स्वपन् क्रीडन् विहरन्नाहरन्नपि।
उन्मिषन् निमिषंश्चैव रामनाम सदा जपेत।।

निरन्तर नाम जप से कुछेक ही दिनों में अजपा जप सिद्ध हो जाता है। उस समय स्थिति कैसी बन जाती है, श्री बड़े महाराज का अनुभव उन्हीं की महावाणी में पढ़िये।

मेरे चित्त में सुखसार नामजप की अखंड तैलधारा इस प्रकार बहने लगी है कि उसका तार तोड़ने पर भी नहीं टूटता। उनसे प्राप्त आनन्द में पगकर, मन में दृढ़तापूर्वक जमी हुई काम वासना भी मिट गई। छलकी छाया भी मिट गई। व्यभिचार का कलंक मिट गया। स्थूल, सूक्ष्म,कारण और महाकारण रूप चारों मायिक शरीर श्रीराम विरहाग में जल गये। दुष्ट वासनाओं की शृंखला भी जाती रही। व्यर्थ का शोक संताप तथा कामादि प्रगट विकार भी हिल गये अर्थात् मिट गये। श्रीसद्गुरु की श्रीशीथ प्रसादी पाकर शरीर को पोसा है। अब निर्भय होकर श्रीरामनाम स्थित रमणीय रकार में मन रम रहा है।

चल्यो चित बीच नाम धार सुखसार अब
एकतार तैल सम तुड़त न तार है।
मल्यो मुद मदन मुराद मजबूत मन
छल्यो छल छाँह दाग दल्यो व्याभिचार है।।

जल्यो तन चार हार हिरस हराम होश
हल्यो हिय हाय जाय जाहिर विकार है।
(श्री) युगल अनन्य पल्यो सतगुरु सीत पाय
विगत विभीत रंग रमन रकार है।।९२५।।

भगवान्नाम का किसी भी दूसरे काम में प्रयोग नहीं करना चाहिये। भगवान्नाम लेना चाहिये केवल भगवान के लिए। भगवान् के लिये भी नहीं, उनके प्रेम के लिए– प्रेम के लिए भी नहीं, परन्तु इसलिये कि लिये बिना रहा नहीं जाता, मन की वृत्तियाँ ऐसी बन जानी चाहिये कि जिससे भजन हुए बिना एक क्षण भी चैन नहीं पड़े जैसे श्वास रुकते ही गला घुट जाता है– प्राण अत्यन्त व्याकुल होकर छटपटाने लगता है। इसीलिए भगवान् नारद जी कहते हैं 'अव्यावृत भजनात्' तैल धरावत् निरंतर भजन करने से ही प्रेम की प्राप्ति होती है।

✡ एकाग्र चित्त होकर नाम जपना ✡

श्रीपद्मपुराण में भगवान् वेदव्यास जी ऋषियों को श्री नाम उपदेश करते हुए, आदेश देते हैं कि श्रीरामनाम के अक्षरों को ध्यान में यत्नपूर्वक चित्तवृत्ति को एकाग्र बनाते हुए, नामाभ्यास करना चाहिये। चित्तवृत्ति रोके बिना, नामरस का स्वाद सुख बड़े–बड़े मुनियों को भी नहीं मिलते।

चित्तस्यैकाग्रता विप्रा नाम्नि कार्या प्रयत्नतः।
वृत्तिरोधं विना हार्द्रं दुर्लभं मुनीनामपि।।

पूज्यपाद श्रीबड़े महाराज स्वलिखित 'श्रीसीतारामनाम अभ्यास प्रकाश' नामक पुस्तक में अवधी भाषा के गद्य लेख में इस प्रकार इस सम्बन्ध में आदेश देते हैं। नाम जापकों के लिए 'प्रथम रूप का ध्यान दुर्लभ है,ताते प्रथम श्रीनाम ही के ध्यान में वृत्ति लीन करे। परमतेजमय सर्वत्रपूरन अथवा हृदय कमल में नाम का ध्यान करे। अष्टदल हृदयकमल के मध्य में महातेजमय सिंहासन, तामें श्रीनाम दोउ वरन अनंत भानु सम प्रकाशमान ध्यान करे औ दलन में प्रनवादिक महामंत्रन को ध्यान करे सहज रीति से और इह ध्यान करे के श्रीनाम से महामधुर धुनि उठि रही है, सो सावधान समेत सुने। सब अनाहद उसके सामने फीके पड़ि जाते हैं। देहादिक को भुलावै। या रीतिसे ध्यान करते–करते श्रीनाम के अंतरही में रूप सच्चिदानन्दमय भाव के अनुसार प्रकाशित हो जायगा, जिनकी छबि अकथ है। उस स्वरूप के दर्शन से बीज समेत वासना अविधा नष्ट हो जायगी। पुनि श्रीपरात्पर स्वरूप के ध्यान में लीन रहे। अभ्यास पुष्ट भए पर कीट–भृङ्ग न्याय आप भी हो जायगा, संशय नहीं है रूप अनूप सिंधु में लीन हो जाय। बाहर की सब सुधि भुलाय के ऊपर के शब्दों में उपदिष्ट ध्यान विधि सर्व साधारण के लिये उपयोगी है। आगे मधुर उपासकों के लिये ध्यान श्री बड़े सरकार बताते हैं।

''कोई संत रसवंत का संमत इह हैं के परत्पर धाम मन में विचार करे, उसी में श्रीसीता सर्वेश्वरी सहित सर्वेश्वर श्रीराम को भाव रूप ध्यान करे। अपना स्वरूप भी वहाँ शुद्ध निर्विकार परिकर सम विचारे। उसी ध्यान में मगन रहे, संक्षेप सेवा भी करे, जो विशेष न हो सके।''

सपरिकर युगल मनहरणललन का नखशिख ध्यान करते हुए उन्हीं की अष्टयामीय मानसिक सेव में सदैव छके रहने का नाम रसिकाई की भाषा में भावना है। श्रीवृहद्विष्णुपुराण में रघुकुलगुरु श्रीवशिष्ठपौः महर्षि पराशर जी अपने शिष्य को भावना का उपदेश करते हुए आदेश दे रहे हैं कि भावनापूर्वव नामस्मरण करने से जापक परमानन्द के सुधासिन्धु में मग्न हो जाता है। इससे बढ़कर कोई भी दिव्यानन्द नहीं है।

''परानन्दे सुधासिन्धौ निमग्नो जायते जनः।
यदा श्रीराम सन्नाम संस्मेद्भवनायुतः।।''

परन्तु है यह उच्चदशा की बात। सुदीर्घ कालीन नामाभ्यास के पश्चात् अन्तःकरण की संशुि हो जाने पर ही भावना बन सकती है।

''हरि निर्मल मलग्रसित हृदय असमंजस मोहि जनावत।
जेहि सर काक कंक बक सूकर क्यो मराल तहँ आवत।।''

श्रीमार्कण्डेय संहिता में कहा गया है कि अन्य साधनों से तो अन्तःकरण शुद्ध होने से रहा। स तत्त्ववेत्ताओं की अनुभव सिद्ध सम्मति है कि कलिकाल में तो श्रीरामनाम की साधना से ही अन्तःकर विशुद्ध होगा।

''अन्तःकरण संशुद्धि र्नान्य साधनतो भवेत्।
कलौ श्रीरामनाम्नैव सर्वेषां सम्मतं परम्।।''

अन्तःकरण को मलिन करने वाली है वासनाएँ! स्थूल वासना तो वैराग्य विचार से हट भी जा है परन्तु सूक्ष्म वासना गुप्त रहने से उसके अस्तित्व का पता भी नहीं लगता। किन्तु छिपी रहने पर वह सूक्ष्म वासना दिव्य परमानन्द का अनुभव होने देती। श्रीरामनाम जपसे वह छिपी सूक्ष्म वासना आप ही आप मिट जाती है।

''चित्तस्य वासना सूक्ष्मा सर्वानन्द विनाशिनी।
सापि नाम संलापादनायासेन नश्यति।।''

पूज्यपाद श्री बड़े सरकार की ऊपर उपदिष्ट विधि से आप नामाभ्यास के प्रारंभ में श्री नामा का ही ध्यान करें। जप समय नाम ही सुनते रहें। इस प्रकार नामाकार वृत्ति बनाने पर आपका अन्तःक शुद्ध हो जायगा। अन्तःकरण के विशुद्ध होते ही चित्तवृत्ति को निरूद्ध करने में दीर्घकालीन बहु साध्य उपायों का अवलंब लेना पड़ता है। पहले आप यम नियम प्राणायाम प्रत्याहार कर ले, तब ध्यान के अधिकारी होंगे। ध्याान से धारणा तक सम्हालने में चित्तवृत्ति एकाग्र होती है। ध्यान सिद्ध हो समाधि लगने पर चित्तवृत्ति का निरोध होता है। परन्तु श्रीनामजप में इतनी लंबी प्रक्रियाओं की अपे नहीं। आप केवल छः महीने उपर्युक्त वृत्ति से नामाकारवृत्ति बनाकर नामाभ्यास करें। आपकी चित्तवृ सुनिश्चित रूप से निरुद्ध हो जायगी। तब आप भाव समाधि या प्रेम समाधि के पात्र बन जायेंगे।

श्रीनृसिंह पुराण में कहा गया है कि योग भाषा में कथित प्रमाण, विषर्य्यय विकल्प, निद्रा और स्मृति आदि दशा में प्राप्त सभी प्रकार की चित्तवृत्तियाँ श्रीनाम को सावधानतापूर्वक जपने से निश्चय निरुद्ध होकर समाधि लगने लगेगी।

सर्वासां चित्तवृत्तिनां निरोधं जायते ध्रुवम्।
रामनाम प्रभावेण जप्तव्यं सावधानत:।।

श्रीआदिपुराण में भगवान श्रीकृष्ण श्रीअर्जुन जी को चित्त एकाग्र करने के सिलसिले में आदेश देते हैं कि श्रीरामनाम के जपसे ही जापकों की बुद्धि परात्पर ब्रह्म श्रीजानकी रमणजू के रूप में निश्चल रूप से लग जाती है। चंचल चित्त सहित मन को उस मनहरण रूप में तल्लीन करने वाले भी श्रीनामजप ही है।

नाम्नैव नीयते मेधा परे ब्रह्मणि निश्चला।
नाम्नैव चञ्चलं चित्तं मनस्तस्मिन्प्रलीयते।।

चित्तवृत्ति को एकाग्र करने में बाधक है विकार गण। नामजप से ही इनका अभाव संभव है। सबसे बड़ा विकार है मोह, जिसके कारण क्षणभंगुरवस्तु भी नित्य की भाँति, अपावन भी पावन की भाँति वाधक भी साधक की भाँति प्रतीत होता है। मोह ही का नाम अज्ञान है। यह अन्य उपाय से शीघ्र नहीं मिटता। नामजप से अनायास मोह भाग जाता है।

श्रीआदिपुराण में कहा गया है कि जिनके नाम स्मरण करने से मोह रूपी महा अज्ञान वन्धन अनायास नष्ट हो जाता है उन्हीं श्रीराघवजू का हम भजन करते है।

यन्नाम स्मरतो नित्यं महा ह्यज्ञान बन्धनम्।
छिद्यते चाश्रमेनैव तमहं राघवं भजे।।

श्रीलामेश संहिता में भी कहा गया है कि जिस प्रकार चिन्तामणि के संस्पर्श से दरिद्रता नष्ट हो जाती है उसी प्रकार श्रीरामनामजप से मोह जाल निस्संदेह मिट ही जाती हैं।

यथा चिन्तामणेस्स्पर्शादारिद्रय याति संक्षयम्।
तथा श्रीरामनाम्नावै मोहजालमसंशयम्।।

श्रीपद्मपुराण में श्रीवशिष्ठ जी श्रीभरद्वाज से कह रहे हैं कि सभी लोक लोकान्तर मोह की अग्निज्वाला से दग्ध हो रहे हैं श्रीरामनाम सुधा सिन्धु की सुरक्षा में घुस पड़ने वाले उसमें जलने से बच जाते हैं।

मोहोनलो लसज्ज्वाला ज्वलल्लोकेषु सर्वदा।
श्रीनामाभ्भोधिरक्षायां प्रविष्टो नैव दह्यते।।

श्रीजैमिनिपुराण का कथन है कि भगवान ने इस जगत को कर्माधीन बना रखा है और शुभाशुभ कर्म का फल भगवान ही के अधीन है, परन्तु श्रीरामनाम जप से समस्त कर्म संस्कार मिट जाते हैं।

कर्माधीनं जगत्सर्वं विष्णुना निर्मितं पुरा।
तत्कर्म केशवाधीनं रामनाम्ना विनश्यति।

ध्यान में बाधक है —लय (निंद), विक्षेप (वाह्यशोर गुल से चित्त उस ओर आकृष्ट होना), कषाय(विषय चिंतन), और रसाभास। श्रीप्रमोदनाटक नामक आर्षग्रन्थ का आप्त वचन है कि श्रीरामनाम के स्मरण से ये विघ्न भी मिट जाते हैं। इतना ही नहीं नाम जापक संसार से तर जाता है। श्रीरामनाम दोनों के आरति हरण है। उन्हें ही हम सदा स्मरण करते हैं—

कषाय विक्षेप लयादि हारकं सुतारकं संसृति सागरस्य।
सदैव दीनार्तिहरं दयानिधि स्मराभि भक्त्या परमेश्वरप्रियम्।।

श्री सांख्यल्य स्मृति नामक धर्मशास्त्र का आदेश है कि सभी पापों को नष्ट करके चित्तवृत्ति का निरोध कर देने वाले तथा परमानन्द का अनुभव कराने वाले मंगलमय श्रीरामनाम का जप करते रहना चाहिये।

पापानां शोधकं नित्यं परानन्दस्य बोधकम्।
रोधकं चित्तवृत्तीनां भजध्वं नाम मङ्गलम्।।

संमोहन तन्त्र में भगवान शंकर ने पार्वतीजी को बताया है कि सभी सिद्धियाँ एक मात्र श्रीरामनाम् जप से ही मिल सकती हैं, जो नित्य चित्तवृत्ति को एकाग्र करके सदा श्रीरामनाम का जप करते हैं, उनके लिये कुछ भी दुर्लभ नहीं है।

चित्तैकाग्रतयानित्यं यं जपन्ति सदा प्रिये।
रामनाम परंब्रह्म किंश्चित्तोषां न दुर्लभम्।।

चित्त की एकाग्रता की सर्वोत्तम विधि है रूपध्यान। यदि कोई निराकार वादी कहे कि चराचर मं व्यापक ब्रह्म अरूप ही होकर रमण करता है तो उसे नाम जपने वाली सच्ची शान्ति नहीं मिलेगी। श्रीनाम वाचक है, उनके वाच्य हैं परमानन्दमय सगुण साकार द्विभुज धनुषधारी श्रीअवध बिहारी ही है। यदि आ रूपध्यान छोड़कर नामाभ्यास करते हैं या नामजपना छोड़ केवल रूपही का ध्यान करते है तो दोनों मं कोई सिद्ध नहीं होने को। ऐसा सिद्धान्त समस्तसंत समाज सम्मत है तथा वेद सम्मत भी। अत: श्रीबड़े महाराज का आदेश है कि रूप ध्यान जागृतकर नाम जपना चाहिये। इस प्रकार नामाभ्यास करने पर आ सभी उत्पाती विकार समुदाय के उपद्रवों से बाल बाल बच जायेंगे।

श्रीबड़े महाराज ध्यान करने की एक सरल बिधि बताते हैं। एकान्त में पद्मासन या सुखासन मं बैठकर आँख कान बंद कर मौन हो जायँ। श्रीनाम रटते हुए पहले सूर्यचन्द्र तथा अग्नि के बीज रू श्रीरामनाम के प्रकाश ही का ध्यान करे। नाम रटने से अघट सुख मिलेगा। इसी मार्ग से चलने पर ना सुधा का स्वाद मिलेगा। इस प्रकार का अभ्यास कुछ दिन करने पर हृदय शुद्ध हो जायगा। त रससिन्धु श्रीयुगल रूप अनायास ध्यान देश में प्रगट हो जायेगा। किन्तु यह साधन तभी बन पायेगा ज संत सद्गुरु की चरण परिचर्या पहले कुछ दिन कर लेंगे।

नैन बैन श्रवन विशेष मूँद करि ध्यान
प्रथम प्रकाश ही को भली भाँति कीजिये।
नाम की रटन सुख अघट घटन पंथ
अटन विशेष सजि सुधा रस पीजिये।।
कछु दिन बीते पर सम शुद्ध सत्त्व भये पर
रूप रस सागर के बीच जाय भींजिये।
(श्री)युगल अनन्य इह होय तब मीत जब
युगल चरन संत सतगुरू मीजिये।।३१८।।

इष्ट—रूप—ध्यान पूर्वक नाम जपना चाहिये

रूपमारोग्यमर्थांश्च भोगांश्चानुषङ्गिकान्।
ददाति ध्यायतो नित्यमपवर्गप्रदो हरिः।।

अर्थात् मुक्तिदाता हरि, ध्यान करने वाले पुरुष को रूप, आरोग्य, धन और नानाप्रकार के भोग भी बिना माँगें ही दे देते हैं।

चिन्त्यमानः समस्तानां क्लेशानां हानिदो हरिः।
समुत्सृज्याखिलं चान्यं सोऽच्युतः किं न चिन्त्यते।।

श्रीहरि अपने चिंतन करने वाले के सभी क्लेशों की हानि करने वाले हैं। अन्य सभी साधनों का त्याग कर के उस हरि का ही चिंतन क्यों न किया जाय? यहाँ चिंतन ध्यान ही का पर्यायवाची है।

ध्यायेन्नारायणं देवं स्नानादिषु च कर्मसु।
प्रायाश्चित्तं हि सर्वस्य दुष्कृतस्येति वै श्रुतिः।।

अर्थात् स्नानादि कर्मों को करते समय नारायणदेव का ध्यान करे। यही सब पापों का प्रायश्चित्त है। ऐसा श्रुति कहती है।

अति पातकयुक्तोऽपि ध्यायान्निमिषमच्युतम्।
भूयस्तपस्वी भवति पंक्तिपावनपावनः।।

अर्थात महापापों से युक्त मनुष्य भी यदि निमिष भर अच्युत प्रभुका ध्यान करे तो पंक्तियोंके पवित्र करने वालों को भी पवित्र करने वाला बड़ा तपस्वी बन जाता है।

आलोड्य सर्वशास्त्राणि विचार्य च पुनः पुनः।
इदमेके सुनिष्पन्नं ध्येयो नारायणः सदा।।

अर्थात् समस्त शास्त्रों का मंथन करके और बार—बार विचार करके यही सिद्धान्त स्थिर किया गया कि सदा नारायण का ध्यान करना चाहिये। प्रथमावस्था में श्रीनामाक्षरों का ही ध्यान करना चाहिये। नाम के प्रत्येक वर्ण में अपार ऐश्वर्य भरा है। हृदय में नामाक्षर विराजमान

होते ही हमें सर्वथा निर्भय हो जाना चाहिये, क्योंकि अब नामध्यान से हमारी नाम शरणगति परिपूर्ण हो जाती है। नामध्यान छोड़कर इधर–उधर चित्तवृत्ति बहने नहीं पावे अन्यथा नामध्यान हीन हृदय ही को नाना प्रकार के दुखदायी मानसिक कष्ट व्यथित करते हैं। इस प्रकार नाम सनेह सम्हारने से आपको दिव्य दृष्टि प्राप्त होगी। कहा भी है।

ताही को सूझत सदा, दशरथ राजकुमार।
चश्मा जाके दृगन में, लग्यो रकार मकार।।

फिर तो श्री अवध विहारी क्षण मात्र के लिये आपकी आँखों से ओझल होंगे नहीं। अपने नयनों को उनकी रूप रमणीयता में रमाया करें।

हूजे सहज असंक अंक बिन विभव वरन उर धारी।
दूजे तरफ नहीं दीजे दिल दरद दून दिकदारी।।
चितवन चमन रमन कीजे चित नाम सनेह सँवारी।
युगलानन्य सरन बिसरे नहिं पल भर अवधविहारी।।८९।।

अब श्रीयुगलकिशोर के रूप में चंचल चित्त को दृढ़तापूर्वक स्थित कर दे। मनके चंचल स्वभाव को छोड़कर एकाग्र मन से प्रेमपूर्वक युगल रूपके नखशिख दर्शन करते रहें। आलस्य तो आपत्ति मूलक है विषयस्पृहा हृदय को कष्ट देने वाली है। तृष्णाओं में कोई रस नहीं। ऐसा विचार कर इन सबों से पृथक् होकर युगल किशोर के छविसरोवर में मगन रहना चाहिये।

युगल किशोर ओर दीजे चित चपल अचल ठहराई।
नखशिख नवल नेह पूरन अवलोकिय बानि विहाई।।
आलस कहर कषाय हाय हिय हिरस अरस दृग लाई।
(श्री) युगलअनन्यशरन सोभासर मन मज्जत सरसाई।।९०।।

नाम–रटन का सुदृढ़ संकल्प

श्रीगुरु संत शास्त्र श्रुति सम्मत समुझा मैं विद्वानों से।
नाम सार–सिद्धान्त कहत सब फिरि क्या काम प्रमानो से।।
रटिहौ सोइ विश्वास सुधरि दृढ़ तजि बकवाद अजानों से।
पारसमनि जब मिली मोह क्या तब फिरी पैसा आनों से।।

झूलना छंद

आज से रैन दिन सैन करिहौ नहीं,
लेटि जुग घड़ी उठि बैठना है।
मारि मन मदन को शौक सद सदन में,
होय हुशयार अब पैठना है।।

किसी से काज कछु मीत मुझको नहीं
विश्व से भलीविधि ऐंठना है।
युगल अनन्य श्री नाम सुख सिंधु में
दमबदम मौज मिलि मैठना है।।
आज से भली विधि जीति हौं निंद को
जानकी नाह निज नाम जपि के।
खान और पान दुखखान व्यवधान कर
छोड़िहौं नाम–तप तीव्र तपि के।।
किसी के साथ निज गाथ कहिहौं नहीं
कौन वाकिफ शबद वृथा खापि के।
भनै युग आनन्य जी जान को वारिहौं
जानकी नाथ पद छाँह छपिके।।१८३१।।

अब लौ नसानी अब न नसैंहौं।
राम–कृपा भव–निसा सिरानी, जागे फिरि न डसै हौं।।
पायऊँ नाम चारु चिंतामनि, उर कर तें न खासैहौं।
स्यामरुप सुचि रुचिर कसौटी, चित कंचनहिं कसैहौं।।
परवश जानि हँस्यो इन इन्द्रिन, निज सब ह्वैन हँसैहौं।
मन–मधुकर पनकै तुलसी, रघुपति–पद–कमल बसैहौं।।

श्रीनाम सेवन के अन्यान्य प्रकार

वृहन्नारदीय नामक आर्षग्रन्थ के मतानुसार, हम श्रीसीतारामनाम का कीर्त्तन करें अथवा मानसिक स्मरणही करें, सुनते ही रहें या लिखा करें श्रीनामाक्षरों के दर्शन किया करें या श्रीनामाक्षरों के ध्यान धारण ही करें, हमारे नाम सेवन का प्रकार चाहे उपर्युक्त विधियों में किसी भी विधि का हो हमारे सभी मनोरथ श्रीनाम सरकार पूरा करेंगे।

'स्मरणात्कीर्त्तनाच्चैव श्रवणाल्लेनादपि।
दर्शनाद्धारणादेव रामनामाखिलेष्टदम्।।'

श्रीलोमश संहिता का आदेश है कि एकमात्र श्रीनाम ही का स्मरण, श्रवण, नामाक्षरों का ही पठन अथवा श्रीनामका ही कीर्त्तन अहर्निश श्रद्धापूर्वक करते रहना चाहिये।

''स्मरतव्यं रामनामैकं श्रोतव्यं चैव सर्वदा।
पठितव्यं कीर्त्तितव्यं च श्रद्धायुक्तं दिवानिशम्।।''

काशीखण्ड नामक प्राचीन सद्ग्रन्थ में कहा है कि श्रीकाशीवासी भगवान् शंकरजी जीवों के कल्याणार्थ श्रीकाशीपुरी की गली—गली में सतत घूमते हैं तथा सबों को उपदेश करते रहते हैं कि परमानन्ददायक श्रीनामोच्चारण रूपी अमल को कर्णछिद्रों का दोना बना कर पान करते रहो। श्री रामनामही तारक ब्रह्म है। इन्हीं का मन से ध्यान किया करो। ऐसा कहते हुए मरणशील प्राणियों के कान में श्रीनामसुनाकर उन्हें मुक्त करते रहते हैं।

''पेयं पेयं श्रवणपुटके रामनामाभिरामं
ध्येयं ध्येयं मनसि सततं तारकं ब्रह्म रूपम्।
जल्पञ्जल्पन्प्रकृतिविकृतौ प्राणिनां कर्णमूले
वीथ्यां वीथ्यमटति जटिलः कोऽपि काशी निवासी।।''

श्रीजावालसंहिताका भी यही आदेश है कि भवसागर से तरने वालों को अन्यान्य जपों की अपेक्षा नामजप ही सर्वोपरि जप है। श्रीनाम ही सरकार के महत्त्व परत्त्व प्रभावादि को जानना चाहिए। ध्यान भी श्रीनामाक्षरों का ही करना चाहिये। कीर्त्तन भी श्रीनाम ही का होवे एवं प्रकार श्रीनामसेवा में सतत संलग्न रहना चाहिए।

''रामनाम परं जाप्यं ज्ञेयं ध्येयं निरंन्तरम्।
कीर्त्तनीयं च बहुधा मुमुक्षुभिरहर्निशम्।।''

श्रीनामजापक को चाहिये कि अन्य साधनों से उदासीन होकर एकमात्र श्रीरामनाम जपके लिए चातक के समान टेक धारण करें। श्रीनामाक्षरों के ध्यान में चन्द्रचकोर की वृत्ति धारण करना चाहिये। मेघगर्जन समान नामकीर्त्तन सुनकर हर्षोन्नमत्त होना मयूर से सीखें। इनके दोषों पर ध्यान न दें। इस सम्बन्ध में श्रीसुदर्शन संहिता का आदेश है।

''चातकानां चकोराणां मयूराणां तथा शुभम्।
लक्षणं दोषनिर्मुक्तं धार्यं श्रीनामतत्परैः।।''

श्रीभुशुण्डिरामायण में कहा गया है कि जो परात्पर श्रीरामनाम कीर्त्तन को सद् भक्ति पूर्वक सुनते हैं, वे भी परमधाम को प्राप्त करते हैं। फिर जो स्वयं जपते भी हैं और स्वयं सुनते भी हैं, उनके विषय में क्या कहना हैं।

''जे शृण्वन्तिहि सद्भत्या रामनाम परात्परम्।
तेऽपि यान्ति परं धाम किं पुनर्जापको जनः।।''

श्रीरामनाम सत्य है तो श्रीनामध्वनि कान से सुनना चाहिये। जीभ से श्रीनाम जपना चाहिये। पावनसुयश वाले सीतारामनाम को हाथ से लिखना चाहिये। नामाक्षरों का ध्यान मन से दृढ़तापूर्वक जमाना चाहिये। श्रीनामाक्षरों से अंकित श्रीतुलसीमाला को हाथों से स्पर्श करते रहने के लिए माला फेरा करो। नेत्रों से श्रीनामाक्षरों के दर्शन किया करो। संसार से भय हो तो श्रीनाम की शरणागति ग्रहण करो।

'श्रवन सुने सतनाम सुरव सुखादेन सुरसना जपिये।
करन लिखो सुचि सुजस नाम अभिराम सुमन थिर थपिये।।
परसो प्रेम समेत नाम दृग देखो वृथा न खापिये।
युगलानन्यशरन संकित संसृति से ह्वै तहँ छपिये।।

स्मरण करना है तो श्रीनाम का, जपरूप से सेवन करना है तो श्रीनाम का, स्पर्श करना है तो श्रीनामाक्षरों का, दर्शन भी नामाक्षरों के ही, पारम्परिक संभाषण में केवल नामचर्चा रहे। सुने नाम, मन में मनन करें नामार्थ ही। केवल नाम स्नेही जापकों से स्नेह करना चाहिये तथा समस्त कामनाओं से निष्प्रयोजन रहना चाहिए।

' सुमिरन सेवन सुचि दरशन परसन पुनीततम नामे।
संभाषण सब तरह श्रवन मन मनन नाम अभिरामें।।
नाम सनेह निरत नेही से सजना संग सदा में।
श्रीयुगलानन्य कदंब काम से रहना नित निष्कामें।।१४३

मत्स्यपुराण का कहना है कि जिसने सर्वमनोरथ दाता श्रीनामाक्षरों का ध्यान कर लिया, श्रीनामध्वनि सुनली, नाम गान कर लिया, उसने सर्व वैदिक कर्त्तव्यकर्म करने का फल पा लिया। नामही ध्यान करने योग्य, जानने योग्य तत्त्व, कर्णछिद्रों द्वारा पान करने योग्य हैं। सभी सिद्धान्तों का यह सारसर्वस्व है, सुख सौभाग्यदायक है।

'येन ध्यातं श्रुतं गीत रामनामेष्टदं महत्।
कृतं तेनैव सत्कृत्यं वेदोदितमखण्डितम्।।
ध्येयं ज्ञेयं परंपेयं रामानामाक्षरं मुने।
सर्वसिद्धान्त सारेदं सौख्य सौभाग्य— कारणम्।।'

गुणानुसन्धानपूर्वक नामजप

✓ हिन्दी के विद्वान् लेखक बाबू शिवपूजन सहाय का कहना है— संतों के मतानुसार नामोपासक को, हरिगुणगान में भी अनुरक्त होना चाहिए, क्योंकि जिसके गुणों की महिमा दिल में बैठ जायगी, उसी का नाम याद करते रहने में दिलचस्पी होगी। रामकथा में जिसका मन लगेगा, उसी का चित्त रामनाम के सुमिरन—भजन में एकाग्र होगा— रमेगा— तन्मय होगा। यह स्वाभाविक बात है कि जिसके गुणों पर मन रीझता है, उसी के नाम और रूप में हृदय आसक्त होता है। हम पहले भी कह आये हैं कि श्रीराम नाम में ही सपरिकर सानुज, तथा श्रीधाम सहित श्रीयुगलकिशोर की स्थिति है तथा समस्त दिव्यगुणगण भी श्रीनाम में ही स्थित रहते हैं। आदित्य पुराणे श्रीमहादेव वाक्यं शिवां प्रति—

'रामनाम्नि स्थितास्सर्वे भ्रातर: परिकरास्तथा।
गुणानां निचयं देवि तथा श्री धाम मंगलम्।।'

अत: गुणचिंतन नामार्थ चिंतन ही है। नामार्थ चिंतनपूर्वक नाम जपने का आदेश है, योगसूत्र का भी। श्रीगुणगणों के चिंतन से युगल ललन में अनुराग की बाढ़ सी आ जाती है।

सुमिरि सुमिरि गुनग्राम राम के उर अनुराग बढ़ाऊँ।
तुलसिदास अनयास रामपद पैहहि प्रेम पसाऊ।।

— श्री विनय १००

यदि अपरिमित रस सिन्धु श्रीसीतारामनाम के साथ दिव्य प्रेमानन्द संवर्द्धक गुणगणों का चिंतन भी हो तो ऐसा परमानन्द छनेगा कि जिसका बखान वाणी द्वारा हो नहीं सकता। इसी से तो श्रीमुखवचन हैं श्री भरतलालजू के प्रति—

मम गुन ग्राम नाम रत, गत ममता मद मोह।
ताकर सुख सोइ जानई परानंद संदोह।।७।४६

✓ श्री बड़े महाराज का आदेश है कि धारा प्रवाह अखंड नामजप करे। कोटि कोटि विघ्न होने पर भी नामजप रुकने नहीं पावे। वासनाओं के ताप में भूलकर भी नहीं तपे। लोकशोक से लापरवाह रहे। नई नई प्रेम भूमिकाएँ मिलेंगी। नाम रटन शिथिल कभी न होने पावे। नाम के गुण गा—गाकर उन्हें रिझाते रहें।

जपे जीह सरित प्रवाह के समान नाम
होय ना निरोध आठयाम विघ्न कोटि हूँ।
तपे ताप वासना विलाप से विहीन होय
खपे लोकशोक में न कैसहू अगोटि हूँ।।
नये नित्य नित्य नेहमयी भूमिका भुलाय आप
कँपे न कदापि एक रोमहूं लगोटि हूँ।
युगलअनन्य गुन गायके रिझावे राम।
वेद भेद खेद पार इतनोइ ओटि हूँ।।१२७४।।

राघव के गुन गाइये जू बहु वाद विवाद में कौन मजा है।
व्यर्थ कुमारग में भटको निज नाम सनेह सुराह बजा है।।
छाड़ो सभी चतुराई चटाक दै नाम रटो दुख दूर अजा है।
युग्म अनन्य सुनाम बिना कुछ और बके तिसही को सजा है।। १७५३।।

मरणकाल का नामोच्चारण

जब बात बेग करि प्रान उदवेग करि

नाड़ी उतपात भरी गात गात छाइ है।

पित्त हूँ प्रकोप करि बुद्धि चित्त लोप करि

ताप ज्ञान गोप करि जरनि जगाइ है।।

पाय सन्निपात अन्य बात ना सुनाइ है

दृगन तन्द्रा छाइ कंठ कफ लगि जाइ है।

हाय राम भाइ तब दैहों कहवाइ

राम नाम 'रसरंग' के मरत मुख आइ है।।

काशी वासी प्राणियों का मरणकाल ही में नाम सुनाकर भगवान् शंकरजी मुक्त कर देते हैं।

जासु नाम बल संकर कासी। देत सबहि सम गति अविनासी।।

आकर चारि जीव जग अहहीं। कासी मरत परम पद लहहीं।।

सोपि राम महिमा मुनि राया। सिव उपदेश करत करि दाया।।

कासी मरत जंतु अवलोकी। जासु नाम बल करौं बिसोकी।।

भक्तिहीन प्राणी भी मरणकाल में नामोच्चारण करे तो उसे निर्वाण मोक्ष मिलेगा ही।

'राम राम कहि तनु तजहि, पावहिं पद निर्वान।।' ३/२०

जाकर नाम मरत मुख आवा। अधमउ मुकुत होइ श्रुति गावा।।

जन्म जन्म मुनि जतन कराहीं। अंत राम कहि आवत नाहीं।।

जन्म—जन्म का भाव यही है कि मरणकाल में नामोच्चारण नहीं होने से बार—बार जन्म होते हैं।

पद्म पुराण में कहा है कि प्राण त्यागते समय रामनाम एक बार भी उच्चारण करने से वह सूर्यमण्डल को वेधन कर भगवद्धाम को जाता है। याद रखना है कि यह अर्चिरादि मार्ग केवल उत्तम वर्ग के सिद्धों के लिए ही सुगम है। सो अंतिम काल एक बार के नामोच्चारण से मिलता है।

'प्राण प्रयाण समये रामनाम सकृत्स्मरेत्।

स भित्वा मण्डलं भानो: परं धामाभिगछति।।'

श्री क्रियायोगसार में कहा है कि हे विप्रवर! मृत्युकाल में श्रीरामनाम का एक बार भी उच्चारण कर ले तो पापी भी परममोक्ष प्राप्त करता है।

मृत्यु काले द्विज श्रेष्ट रामरामेति यः स्मरेत्।
स पापात्मापि परमं मोक्षमाप्नोति मानवः।।

श्रीआदिपुराण में भगवान् श्रीकृष्ण ने अर्जुन जी से कहा है कि जो रामनाम का स्मरण करते हुए प्राण त्यागते हैं, उनको वह परमोत्तम फल मिलेगा, जो मुझे भी नहीं मालूम। मैं तो ऐसे प्राण त्यागने वाली का भजन करता हूँ।

रामस्मरण मात्रेण प्राणान्मुञ्चति ये नराः।
फलं तेषां न पश्यामि भजामि तांश्च पार्थिव।।

श्रीनारायण रहस्य में कहा गया है:कि प्राण त्यागते समय भक्तिभाव से आविष्ट मन होकर वचन से रामनाम का कीर्तन कर ले वह रोगी भी सर्व शुभाशुभ कर्मों से मुक्त हो जाता है।

त्यजन् कलेवरं रोगी मुच्यते सर्व कर्मभिः।
भक्त्यावेश्य मनो यस्मिन् वाचा श्री नामकीर्तने।।

श्रीअध्यात्म रामायण में श्रीवालि का वचन है कि मरणकाल में विवश होकर भी जो आपके नाम का स्मरण करता है, उसे परम पद मिलता है।

यन्नाम विवशो गृणन्म्रियमाणः परं पदं याति....।

———— ○ ————
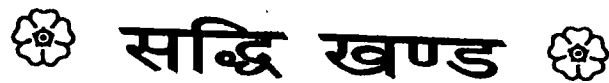
❀ सद्धि खण्ड ❀

नामजप से वैराग्योदय

आप ज्ञान मार्ग से चलना चाहते हैं तो आपको ज्ञान की आधार भूमि वैराग्य पहले प्राप्त करना होगा। वैराग्य की प्राप्ति निष्काम कर्म योग से होती है।

धर्म तें बिरति जोग ते ग्याना। ग्यान मोच्छप्रद वेद बखाना।।

आप भक्तिमार्ग से चलना चाहें तो पहले वैराग्य प्राप्त करना होगा। वहाँ भी निष्काम कर्म योग से ही वैराग्य–प्राप्ति संभव है।

भगति की साधन कहउँ बखानी। सुगम पंथ मोहि पावहिं प्रानी।

प्रथमहि विप्र चरन अति प्रीती। निज निज कर्म निरत श्रुति रीती।।

तेहि कर फल पुनि विषय विरागा। तब मम धर्म उपज अनुरागा।।

श्रीमद्भागवत का श्लोक प्रसिद्ध है कि ज्ञान को पूर्व भूमिकाभूत वैराग्य हृदय में दृढ़तापूर्वक न जम जाये तब तक कर्म करते रहें अथवा भक्तिमार्गियों को भगवत्कथा श्रवणादि में श्रद्धा न उपज जाय तब तक कर्म मार्ग नहीं छोड़ें।

तावत्कर्माणि कुर्वीत न निर्विद्येत यावता।

मत्कथा श्रवणादौ वा श्रद्धा यावन्न जायते।।

नाम साधना के पहले भी वैराग्य की आवश्यकता है। यह वैराग्य नामजप में प्रवृत कराने वाला है। यह वैराग्य नामनिष्ठ नामानुरागी संतों की चरणसेवा से प्राप्त होगा।

यावन्न रामभक्तानां सततं पादसेवनम्।

राम नाम्नि परे तावत् प्रीति स्संजायते कथम्।।

— आदि रामायणे।

यदि आपको किसी पूर्वपुण्य पुञ्ज के फलस्वरूप बिना सेवा किये ही नामजप में लगन लग गई, तो आप सेवा की भी उपेक्षा कर सकते हैं। आप नामाभ्यास में ही जुटे रहिये। श्रीनामसरकार ही आपको आवश्यक वैराग्य भी देंगे।

हमारे शास्त्रकारों ने वैराग्य की पाँच विभिन्न श्रेणियाँ स्वीकार की हैं। १. यतमान, २. व्यतिरेक, ३. एकेन्द्रिय, ४. वशीकार और ५. पर।

१. वैराग्य की यतमान दशा में विषयभोग त्यागने के यत्न में साधक लगता है।

२. व्यतिरेक दशा में सभी भोंगों का त्याग बन जाता है।

३. एकेन्द्रिय दशा में इन्द्रियों की विषयलिप्सा शिथिल पड़ जाती है। यह जितेन्द्रियता शास्त्रीय भाषा में दम कहलाती है।

४. वशीकार दशा में मन से विषयस्पृहा नगण्य हो जाती है। इस मनवशीकार को शम कहते हैं।

५. पर वैराग्य का लक्षण श्रीमानसजी में श्रीमुख में कहा गया है।

कहिअ तात सो परम बिरागी। तृनसम सिद्धि तीन गुन त्यागी।।

निष्काम कर्मयोग से वैराग्य उदय होता है। परन्तु कर्म द्वारा उत्पन्न वैराग्य की सीमा शमदम तक हद है। पर वैराग्य एकमात्र नामजप से भी संभव है। क्योंकि श्रीरामनाम के अंशभूत रकार से ही परवैराग्य प्रगट होता है। श्रीमहारामायण में कहा गया है।

'रकारोहेतु वैंराग्यं परमं यच्च कथ्यते

इस संदर्भ में हम श्रीराम–नाम विज्ञान के यशस्वी लेखक पं० जगदीश शुक्ल के ओजस्वी वचन यहाँ उद्धृत करते हैं– शुक्लजी अपने ग्रन्थ के पृ० ७२ में लिखते हैं–

'सच मानिये, जो राम–नाम रस पी लेता है, उसके लिये संसार के सारे रस नीरस हो जाते हैं। सांसारिक भोगैश्वर्य के विलास को वह नरक की यातना मानता है। रामनाम से शून्य षड्रस का भोजन और नवरस का काव्य भी उसे सुहाता नहीं हैं, लुभाता नहीं है। कृष्णगढ़ाधीश नागरीदास को किस सांसारिक भोगैश्वर्य की कमी थी, जो उन्होंने अपने भोगैश्वर्य– प्रधान राज्य को ठुकरा दिया और राम–नाम के साम्राज्य को अपना लिया। कुन्दनलाल भी धनकुवेर ही थे, किन्तु उन्हें भी राम–नाम के रस का ऐसा चसका लगा कि उन्होंने भी सांसारिक सुखों को ठोकर दे दी। राम–नाम का प्याला होंठों में लगाकर जमकर बैठ गये। राज्य–संचालन काल में राज्य–सुख से ऊबकर नागरीदास ने एक बार कहा था–

'कहा भयो नृपहू भये ढोवत जग बेगार।
लेत न सुख हरिभगति को सकल सुखनि को सार।।'

क्या कारण है कि एक भिक्षुक (श्रीजीवगोस्वामीजी) भी नाम–धन का धनी होकर पारसमणि जैसे मूल्यवान रत्न को भी नाचीज मानकर, नहीं नहीं खतरनाक जानकर, यमुना के जल में फेंकवा देता है। वह कौन सा अपूर्व आनन्द मिलता है रामनाम के रसिया को जो सिंहासन को भी ठुकराकर निर्जन जंगलों में जंगली जीवों के बीच में अलमस्त होकर घूमता फिरता है? क्या आपने इस विषय में कभी तत्वत: सोचा है? शायद नहीं सोचा है और न आपको सोचने की फुरसत ही है। तो विश्वास कीजिए अपने सत्यनिष्ठ और बीतराग पूर्वजों पर, रामनाम के अनुभवी महापुरुषों पर, भगवान् श्रीकृष्ण पर, भगवान् शंकर पर, देवर्षि नारद पर, ब्रह्मर्षि शुकदेव पर, महर्षिवाल्मीकि और याज्ञवल्क्य– जैसे सर्वमान्य महात्माओं पर। विश्वास कीजिये परमहंस रामकृष्ण पर, संततुलसीदास

पर, तथा युग–पुरुष और विश्व वन्द्य अपने राष्ट्रपिता बापू पर। विश्वास कीजिए, इन महापुरुषों को आपसे कोई स्वार्थ नहीं साधना है, झूठ नहीं बोलना है। दगा नहीं करना है। ये सभी संसार के सर्वश्रेष्ठ विचारक एकमत होकर एकस्वर होकर आपसे कह रहे हैं कि रामनाम की आनन्दगंगा में गोते लगाकर आपभी अपने आप को तारिए और इस परम और चरम लाभ के लिये औरों का भी आह्वान कीजिए। इसके लिए काशी या प्रयाग जाना नहीं है, कोई साधन या सामग्री जुटाना नहीं है, कुछ खर्च नहीं है, बस दिल खोलकर, जी उड़ेल कर, खुले कंठ से झूम–झूमकर गाना है–

'सीताराम जय सीताराम, सीताराम जय सीताराम'

पर वैराग्य से गुणगणों में सम्बन्धित सिद्धान्तों की अरुचि होती है।

कहिअ तात सो परम बिरागी। तृन सम सिद्धि तीन गुन त्यागी।।

श्री बड़े महाराज श्रीसीतारामनाम सनेह वाटिका में लिखते हैं।

नाम ही के आसरे न चाहे रिद्धि सिद्धि को–

साँची कहौ वानी सुखसानी मतिमानी नाम
कलित कहानी नहिं खाहिस समिद्ध को।
हौं तो अति अज्ञ पर नाम सरवज्ञ सोइ
वदन में बैठि वदैं वचन सुसिद्ध को।।
उचित न नाम नेह व्योम में मगन होय
और चीज चाहे इस रीति गुन गिद्ध को।
युगल अनन्य सुख सकल सुलभ नित
नाम ही के आसरे न चाह रिद्धि सिद्धि को।। ९९३।।

श्रीगोस्वामिपाद श्रीविनयपत्रिकामें कहते हैं।

रामनामते विराग जोग जाप जागि है।
सहित सहाय कलिकाल भीरू भागि है।

श्रीयाज्ञवल्क्य स्मृति में कहा गया है कि विषय भोगों से वैराग्य, ज्ञान, विज्ञान निर्मल प्रेम सब नामकीर्त्तन से सुलभ हो जाते हैं।

ज्ञान विज्ञान सम्पन्नं वैराग्यं विषयेष्वनु।
अमलां प्रीति मुन्निद्रां लभते नामकीर्त्तनात्।।

लघुभागवत में भी वैराग्य, ज्ञान, भगवत्प्रेम आनन्ददायक नामकीर्त्तन ही से प्राप्त होना कहा गया है।

ज्ञानं वैराग्यमेवाथ तथा प्रीतिः परात्मनि।
संलभेन्नाम संकीर्त्यह्यभिरामाख्यमद्भुतम्।।

वैराग्यपूर्वक नामजपनेवालों के मध्यही में श्रीरघुलालजी का खास निवास रहता है। श्रीआदि पुराण में भगवान् श्रीकृष्ण ने श्रीअर्जुनभक्त से ऐसा कहा है–

सततं नाम गायन्ति विनिर्विण्णेन चेतसा।
तेषां मध्ये सदा सः श्रीरामस्य विशेषतः।।

नामजापक की सुरक्षा

श्रीसीतारामनाम जपने वाले को निर्भय निशोच रहना चाहिये। यही नाम सभी ईश्वरों के भी जाप है। अत: इस नाम के जपसे सभी ईश्वरवर्ग परम प्रसन्न होकर, उस जापक की रक्षा में बिना बुलाये सदै तत्पर रहते हैं। सिद्ध नामजापक परमहंस श्रीप्रेमलताजी का अनुभूत वचन है—

'राम रूप धनुवान धारि कर रक्षा में नित रहते हैं।
शिव त्रिशूल धरि, ब्रह्मदंड कर, विष्णु चक्र निज लहते हैं।।
नारायन धरि गदा कौमुदी जापक के रिपु दहते हैं।
प्रेमलता हनुमान मनोरथ पुरवहि जो कुछ चहते हैं।। ९४
सियजी भोजन देइँ शक्ति सब करैं आइ शिर पर छाया।
दानव देव भूत किन्नर पशु पक्षी जो जग में जाया।।
नाम प्रसाद विषमता परिहरि करत सकल निसदिन दाया।
प्रेमलता तेहि भजहि न जड़मति पाइ अनूपम नर काया।। ९५

श्रीहितोपश शतक

श्रीमार्कण्डेय संहिता का वचन है कि परमानन्दरूप परमोत्तम श्रीरामनाम सरकार जापक विवेकादि शुभाचारों की रक्षा में सदा स्वयं तत्पर रहते हैं।

' विवेकादीन् शुभाचारान् रक्षणाय सदोद्यतम्।
श्री रामेति सन्नाम परमानन्दविग्रहम्।।'

अत: आर्तभक्त के जीवन, दृप्त भक्तों के प्रमोददाता तथा सामान्य भक्तों की सदा रक्षा करने व श्रीरामनाम के ही हम शरणापन्न हो रहे हैं।

'आर्त्तानां जीवनं नित्यं दृप्तानां वै प्रमोददम्।
भक्तानां त्राणकर्त्तारं रामनाम समाश्रये।।'

यही कारण है कि श्रीरामनाम स्मरण करते ही सभी उपद्रव उसी प्रकार मिट जाते हैं, उ सूर्योदय होने पर अन्धकार।

'सूर्योदये यथा नाशमुपैति ध्यान्तमाशु वै।
तथैव नाम संस्मणाद्विनाशं यान्त्युपद्रवा:।।'

नृसिंह पुराणे

श्रीसाकेतबिहारीजी सगुणनिर्गुण ब्रह्मों से भी बड़े हैं। वह भी अपने नाम के अधीन रहते हैं। श्री इतने महान् होकर भी ऐसे प्रेम प्रवीण है कि आपका प्रेमी नीच ऊँच कोई भी हो, उसके हृदय—भ में प्रवेश करने में तनक भी नहीं सकुचाते हैं। एक बार भी श्रीनामका उच्चारण कर ले तब उ शत्रुसमुदाय को नष्ट कर देते हैं। युद्धस्थल में भी रामनाम का स्मरण कर लो तो वहाँ भी रक्षा (आ करते हैं। सुरक्षा करने की प्रतिज्ञा बहुत ही पुष्ट है। श्रीनामरहस्य ऐसा सूक्ष्म है कि बिना स कृपा—कटाक्ष के समझ में नहीं आता।

अगुन सगुन के पार परम प्रभु सोउ श्रीनाम अधीना।
नीच ऊँच गृह गमन करत नहिं सकुचत प्रेम प्रवीना।।
वारक बदत दरत अरिकुल रन अमन करत पन पीना।
युगलानन्य शरन सद्‌गुरु बिनु लखि न परत गति झीना।।१३६।।

श्रीनामसरकार अपने जापक की सुरक्षा में ऐसे तत्पर रहते हैं कि उसके कुटिल शत्रु काम को, कलिकाल की हरकत (ख्याल) को, अज्ञानान्धकार पुँज को नष्ट करने में अपने हृदय में हर्षित होते हैं। (श्री युगलानन्यशरणजी महाराज) ने परख लिया है, हजारों सूर्य समान श्रीनाम समर्थ है— नाम बल पर जापक दिनरात निश्शंक रहता है। आपके गुणों को याद करके आँसू बहाता है। रक्षा में श्रीनाम ऐसे शूरवीर होते हुए भी जापक पर तो स्वप्न में भी क्रोध नहीं करते, चाहे उससे भयंकर भूल भी हो जाय।

काम कुटिल, कलिकाल ख्याल, तमतोम, हनत हिय हरषे।
सरस सूर शशि सदृश विलक्षन शुचि समर्थ पन परखे।।
रैन ऐन संका बिहीन बल बिशद बूँद वर वरषे।
युगलानन्यसरन नेहिन पर सपनेहू नहीं अमर्षे।।१६६।।

श्रीनामकांति।

❊ सभी पापों का प्रायश्चित नामजप ❊

मार्कण्डेयपुराणमें श्रीव्यासदेवजी ने अपने शिष्यों को समझाया है कि पापों के प्रायश्चित करके विशुद्ध बनने के लिए, धर्मशास्त्र ने बहुत से धर्माचरणों का आदेश दिया है। परन्तु उन सबों से अनन्तगुण श्रेष्ठ श्रीरामनाम का कीर्त्तन है।

'धर्मानशेण संशुद्धान्सेवन्ते ये द्विजोत्तमाः।
तेभ्योऽनन्त गुणं प्रोक्तं श्रेष्ठं श्रीनामकीर्त्तनम्।।'

श्रीप्रभासपुराण में श्रीमुखवचन है श्रीनारदजी के प्रति—
हे तपोनिष्ठ मुनिवर! सभी भगवन्नामों में सर्वश्रेष्ठ श्रीरामनाम है। इनका कीर्त्तन करना ही समस्त पापों से मुक्त होने का प्रायश्चित कर लेना है।

नाम्नां मुख्यतमं नाम श्रीरामाख्यं परन्तप।
प्रायश्चितमशेषाणां पापानां मोचकं परम्।।'

श्रीतापनीय संहिता में कहा गया है कि सभी दोषों का परम प्रायश्चित है श्रीरामनाम का कीर्त्तन। इससे अकल मृत्यु टल जाती है। मूला अविद्या नष्ट हो जाती है। इससे भिन्न और क्या कहें? हमारे जीवन सर्वस्व श्रीरामचन्द्र हैं। उनके नाम में अनन्त वैभव सन्निहित हैं।

सर्वेषामेव दोषाणां प्रायश्चितं परं स्मृतम्।
अपमृत्यु प्रशमनं मूलाविद्या विनाशनम्।।
नाम संकीर्त्तनं विद्धि अतो नान्यद्वदाम्यहम्।
सर्वस्वं राम चन्द्रोऽपि तन्नामानन्त वैभवम्।।

श्रीपराशर संहिता में कहा गया है कि सभी प्रायश्चित विधियों में श्रीरामनामका जप सर्वोत्तम है। संन्यासियों और श्रीरामभक्तों के लिए तो सभी भाँति से यही उत्तमोत्तम प्रायश्चित हैं।

प्रायश्चित्तोतषु सर्वेषु राम नाम जपं परम्।
यतीनां रामभक्तानां सर्वरीत्या विशिष्यते।।

वहीं यह भी कहा गया है कि सत्य सत्य बता रहा हूँ श्रीरामनाम से विमुख चाहे अपने पापों का हजारों प्रायश्चित करा ले, वह सर्वथा शुद्र हो ही नहीं सकता। भला किस प्रायश्चित में इतनी बड़ी विशुद्धीकरण क्षमता है?

श्रीरामनाम विमुखं जीवं शोधयितुं क्षमम्।
प्रायश्चित्तं न चैवास्ति कश्चित् सत्यं बचो मम।।

श्री शिव सर्वस्व में कहा गया है कि श्रुतिस्मृति पुराणों में श्रीरामनाम को ही परमोत्तम प्रायश्चित बताया गया है। श्रीरामनाम कीर्त्तन से तीनों ताप भी मिट जाते हैं। इससे सभी पापों का पूरा परा प्रायश्चित हो जाता है। नाम कीर्त्तन से बढ़कर तीनों लोकों में कोई पुण्य है भी नहीं।

श्रुति स्मृति पुराणेषु रामनाम समीरितम्।
यन्नाम कीर्त्तनेनैव तापत्रय विनाशनम्।।
सर्वेषामेव पापानां प्रायश्चित्तमिदं स्मृतम्।
नातः परतरं पुण्यं त्रिषु लोकेषु विद्यते।।

श्रीकबीर जी कहते हैं कि सब पापों का नाश श्रीनाम से सहज संभव है।

नाम जो रत्ती एक है, पाप जो रती हजार।
आध रती घट संचरै, जारि करै सब छार।।
जबहि नाम हिरदे धरा, भया पाप का नास।
मानो चिनगी आग की, परी पुरानी घास।।

(भगवन्नाम महिमा अंक पृ० ८१ से साभार उद्धृत)

अवतार लीलावाले मधुर देश की बात है। भगवान् श्रीरामचन्द्रजी का अभी अवतार नहीं हुअ था। महाराजा श्रीदशरथ ने एक दिन भूल से शब्दबेधी वाण के द्वारा मृग समझकर, सिन्धु मुनिका व कर डाला। अन्ध मुनि और उनकी पत्नी ने पुत्र शोक से महाराज के सामने ही प्राण त्याग क दिये। तीन निरपराधी ईश्वरानुरागियों के प्राणनाश का कारण होने से महाराज श्री कौशलेन्द्र ने अपने को महान् अपराधी माना। उनके मन में असह्य वेदना होने लगी। किसी भ

प्रकार उन्हें शान्ति न मिल सकी। अब मानसिक दशा ऐसी न रही कि वे राजधानी लौट आते। उन्होंने सोचा कि प्रायश्चित करने पर चित्त में शान्ति आ सकती है। इस उद्‌देश्य से वे गुरु श्री वशिष्ठ जी के आश्रम में गये। श्री वसिष्ठ जी आश्रम में न थे। उनके पुत्र श्रीवामदेव जी, महाराज के मुख से सारा वृतान्त सुनने के बाद बोले– मैं प्रायश्चित करा देता हूँ। आप स्नान करके आइये। महाराज के स्नान कर लौटने पर श्रीवामदेवजी ने कहा–

आप तीन बार रामनाम उच्चारण करें। महाराज ने वैसा ही किया। श्रीनाम के प्रभाव से उनके सारे पाप दूर हो गये। उनके प्राणों को शान्ति मिली, महाराज कौशलेश अपनी पालिता श्रीअयोध्या नगरी में लौट आये। इधर श्रीवसिष्ठ जी जब आश्रम में आये तो उनके पुत्र ने महाराज का आगमन तथा उनके प्रायश्चित का सारा वृत्तान्त कह सुनाया। पुत्र के द्वारा तीन बार रामनाम का विधान सुनकर, श्री वसिष्ठ जी आश्चर्यान्वित और क्रोधान्वित हो उठे। एक बार के स्थान में तीन बार क्यों? श्रीरामनाम में अविश्वास! अरे, एक बार 'रा' वर्ण का उच्चारण करते ही सारे पाप चले जाते हैं और 'म' वर्ण के बोलते ही मुखबंद हो जाने पर, फिर पाप लौटकर, शरीर में घुसने नहीं पाते। इस प्रकार के नाम में अविश्वास चाण्डाल ही कर सकता है। श्रीरामनाम के प्रति मर्यादा का उल्लंघन करने पर श्री वसिष्ठ जी पुत्र से क्रुद्ध होकर बोले, 'तुम मेरी संतान होने योग्य नहीं हो, तुम चाण्डाल हो, मैं तुम्हारा मुख भी नहीं देखना चाहता, दूर हो जाओ, अपराध क्षमापन की प्रार्थना होने पर, आपको मर्यादा रक्षणार्थ आपने उन्हें चाण्डाल जाति के निषादराज गुह रूप में भगवान् श्रीराम का अभिन्न हृदयसखा बनने का वचन दिया। हुआ भी ऐसा ही।

प्रायश्चित– विमर्श

मनुस्मृति, याज्ञवल्क्यादि स्मृतियों के प्रायश्चित प्रकरण में भिन्न–भिन्न पापों के लिए अलग अलग प्रायश्चितों की व्यवस्था कही गई है। पुन: जहाँ राजाओं के लिये सदक्षिणा राजसूय, अश्वमेधादि यज्ञों को प्रायश्चित रूप में करने का आदेश है, वहाँ चारों वर्णों और आश्रमों की प्रजाओं के लिए भी एक ही पातक के लिये वर्णाश्रम के अनुसार ही अलग–अलग प्रायश्चित बताये गये हैं। कहीं दो दिनों का सात्पनब्रत, कहीं नव दिनों का अतिकृच्छ, कहीं बारह दिन व्यापी प्राजापत्य व्रत करने का आदेश है। किसी पाप के लिए चान्द्रायण, किसी के लिए तप्त कृच्छ, कहीं कृच्छ–चान्द्रायण, कहीं कृच्छातिकृच्छ चान्द्रायण व्रत करने को कहा गया है। इसी प्रकार पञ्चगव्य प्राशन, कहीं ब्राह्मण भोजन, गोदान, स्वर्णदान प्रायश्चित रूप में करने का धर्मशास्त्रादेश है। उसी प्रकार दर्श पौर्णमास्य आदि नैमित्तिक यज्ञों की भी आज्ञा है।

पुन: उपर्युक्त पातकों के कर लेने पर भी वह चीर्ण प्रायश्चित नहीं माना जाता । कुछेक ही पापों की आंशिक निवृत्ति होती है। पाप–संस्कार बने रहते हैं। वे पुन: उस पातकी को पापों में प्रवृत्त कराकर दुर्दशा पात्र बनाते हैं। बात यह है जैमिनिपंथी कर्मकांडियों की दृष्टि सामान्य धर्म तक ही सीमित रहती है। सामान्य धर्म ऐहिक तथा स्वर्गीय सुख ही दे सकते हैं। उससे भक्ति, मुक्ति, भगवद्धाम की प्राप्ति तो होने से रहे।

अत: स्मृति—वचनों की अपेक्षा विशेष धर्म बताने वाले पुराणों के प्रमाण वेदतुल्य अधिक पुष्ट माने जाते हैं। कहा गया है—

पुराणं पञ्चमो वेदः—

इतिहासं पुराणं च पञ्चमो वेद उच्यते।
वेदानध्यापयामास महाभारत पञ्चमान्।।

श्रीनारदीय पुराण में कहा गया है कि वेदार्थ से भी अधिक पुराणार्थ माने जाते हैं। वेद पुराणमें ही प्रतिष्ठित है। अत: स्मृतिपुराण में विरोध होने पर पुराण ही अधिक बलवान् माने जायेंगे।

'स्मृति पुराण विरोधे पुनः पुराणन्येव वलीयांसि।'

पुराणों में पापी के द्वारा किये गये भूत, वर्त्तमान यहाँ तक कि भविष्य के भी संभाव्य समस्त पापों का अशेषरूप से आत्यन्तिक और सर्वांग पूर्ण प्रायश्चित श्रीरामनाम का उच्चारण मात्र ही है। ब्रह्मवैवर्तपुराण में श्रीरामनाम के तत्त्व के परम पारखी देवर्षिनारदजी राजर्षि अम्बरीषजी से कहते हैं। अनन्त जन्मों के अर्जित पाप पुंज श्रीरामनाम के प्रभाव से नाम उच्चारण करते ही उसी क्षण नष्ट हो जाते हैं।

जन्मान्तर सहस्रैस्तु कोटि जन्मान्तरेषु यत्।
रामनाम प्रभावेण पापं निर्याति तत्क्षणात्।।

पुराण के इस नाम प्रभाव कथन का धर्मशास्त्र समर्थक है। कात्यायन स्मृति नामक धर्म शास्त्र कहते हैं कि पूर्व के किये हुये पाप, वर्तमान के क्रियामाण पाप तथा भविष्य में होने वाले पाप सभी दो अक्षर वाले श्रीरामनाम के एक बार ही के उच्चारण से नष्ट हो जाते हैं तथा उच्चारण कर्त्ता को शुद्ध बना देते हैं।

कृतैश्च क्रियमाणैश्च भविष्यद्भिश्च पातकैः।
रामेति द्वयक्षरं नाम सकृज्जप्त्वा विशुद्धयति।।

अल्पपुण्यवाले मंदभागी मनुष्य को श्रीरामनाम के इस अचिन्त्य प्रभाव में सहसा विश्वास नहीं होता। उनके मन में नाना प्रकार के कुतर्क उत्पन्न होते रहते हैं। वे कहते हैं कि बारह—बारह वर्षों तक कृच्छ चान्द्रायण व्रत करने पर जो पातक नष्ट हो पाता है, वह इस छोटे से दो अक्षर वाले रामनाम से शीघ्र कैसे मिटेगा? उन्हें वेदार्थभूत हिरण्यगर्भसंहिता के इस परम प्रामाणिक वचन पर विचार करना चाहिये। संहिता कहती है कि अल्प नाम से इतनी अधिक पापराशि कैसे नष्ट होगी? ऐसी शंका नहीं करनी चाहिये। सूखे घास के बहुत बड़े ढेर को आग की एक छोटी सी चिनगारी कैसे जलाकर भस्म कर देती है? देखते नहीं। उसी प्रकार अग्नि के भी कारण श्रीरामनाम अशेष पातकों को भस्म कर देते हैं। इतना ही नहीं जापक के महामोह मदादि भी मिट जाते हैं।

अल्पे नाम्ना कथमस्य पापक्षयो भवदत्र न शङ्कनीयम्।
तृणादि राशि दहतेऽल्प बह्निस्तथा महामोहमदादि नाम।।

सच्ची बात तो यह है कि श्रीनामोच्चारण मात्र से इतने अधिक पापपुंज मिटते हैं, जितने पाप बड़े से बड़े श्वपचादि महाघातकी में भी नहीं पाये जाते। कोई पापी जीवन पर्यन्त सभी कुकर्म यत्नपूर्वक करने पर कमर कस ले, तो भी इस भूमंडल पर उतने पाप नहीं कर सकते, जितने अधिक एक नामोच्चारण से मिटते हैं।

श्री रामनाम सामर्थ्यमतुलं विद्यते द्विज।
नहि पापात्मकस्तावत्पापं कर्तुं क्षमः क्षितौ।।

— बोधायन सं०

श्वादोऽपि नहि शक्नोति कर्तुं पापानि यत्नतः।
तावन्ति यावती शक्ती रामनाम्नोशुभक्षये।।

— इतिहासोत्तमे

इस पर कुतर्की कहता है कि हो सकता है दीर्घकाल तक नामाभ्यास करने पर पाप सभी मिट जायँ। बेचारे श्रीनाम की अचिन्त्य शक्ति से सर्वथा अनजान है। अजी, श्रीनाम प्रभाव जानने वाले हमारे शास्त्रकारों ने तो केवल एक बार ही नामोच्चारण से समस्त पापों का अवश्यमेव नाश होना बताया है। हम नीचे प्रमाण के श्लोक लिखते हैं। ग्रन्थविस्तारभय से अर्थ न लिख पायेंगे। सरल संस्कृत है।

सकृदुच्चारयेद्यस्तु रामनाम परात्परम्।
शुद्धान्तकरणो भूत्वा निर्वाणमधिगच्छति।।

श्री पद्मपुराणे।

एक बार ही के उच्चारण से मुक्ति निश्चित रूप से मिलेगी, पुनः पाप न करे तो।

सकृदुच्चारणादेव मुक्तिमायाति निश्चितम्।
न जानेऽहं शतादीनां फलं वेदैरगोचरम्।।

— श्री शिवपुराणे

एक ही बार साक्षात् नाम न कह कर नाम से युक्त शब्द भी कोई कहे जैसे हराम, तेभी उसे साक्षात् नाम ही का समस्त फल मिलेगा। यहाँ तक कि मुक्ति भी मिल जायेगी।

सकृदुच्चारितः शब्दों राम नाम्ना विभूषितः।
कुरूते नामवत्कार्यं सर्वं मोक्षावधिं नृणाम्।।

सौर्य धर्मोत्तरे

कुतर्की जी! अब समझा अपने? अजी सत्पात्र कोई होगा, उसका थोड़े में बन जाता होगा। सबों के लिए ऐसा संभव थोड़े है? महाशय जी, हमारे भुशुंडि रामायण तो कहती है कि ब्राह्मण हो या राक्षस, पापी हो या धर्मात्मा नाम कहने वाला भवबन्धन से अवश्य मुक्त होगा।

द्विजो वा राक्षसो वापि पापी वा धार्मिकोऽपि वा।
रामरामेति यो वक्तो स मुक्तो भवबन्धनात्।।

श्री लघुभागवत का कहना है कि अभक्ष्य भोजन, दुष्टानारी गमन जैसे महापालक भी एक बार के नामोच्चारण से नष्ट हो जाते हैं

अभक्ष्य भक्षणात्पापमगम्यागमनाच्च यत्।
तत्सर्वं विलयं याति सकृद्रामेति कीर्त्तनात्।।

'जासु नाम सुमिरत एकबारा। उतरहि नर भवसिन्धु अपारा॥ ' २/१०१/२

'बारक नाम कहत जग जेऊ। होत तरन तारन नर तेऊ।।
स्वपच सबर खस जमन जड़, पांवर कोल किरात।
राम कहत पावन परम, होत भुवन विख्यात।। २/१९४।।

कहिये जी! अब क्या शंका है आपको? हमने मान लिया, परन्तु श्रद्धा विश्वास प्रेम से उच्चारण करेगा, तब न पाप मिटेंगे? फिर आप श्रीनाम के वस्तु गुण में अगर मगर लगाने ब्रह्मवैवर्तपुराण के प्रमाण पर नहीं ध्यान देते ? अनादर से भी नामोच्चारण करने वाले का पाप उसी प्र व्यर्थ जाता है, यथा वेदविहीन विप्र का दिया हुआ दान।

श्री रामेत्युक्तमात्रेण हेलया कुलवर्द्धन।
पापौघं विलयं यान्ति दत्तमश्रोत्रिय यथा।।

असावधानी से ही आग छू लो, तो हाथ जलेगा ही, उसी प्रकार अनजान से ओठ से नामोच्च हो जाय तो सभी पाप भस्म हो जायेंगे।

प्रमादादपि संस्पृष्टो यथाऽनलकणो दहेत्।
तथौष्ठयुट संस्पृष्टं रामनाम दहेदघम्।। ब्रह्मपुराणे।

नाम कहने वाले की ही बात नहीं, नाम सुनने वालों के भी सभी पाप इस प्रकार जल जाते जैसे अग्निकण से रूई का पहाड़।

रामेति नाम यच्छ्रोत्रे विश्रम्भाज्जपितो यदि।
करोति पाप संदाहं तूल बह्निकणे यथा।। — श्री विष्णुपुराणे।

पापनाश किसी विशेष सिद्ध देश में, अथवा किसी पुण्यपर्व पर ही नामोच्चारण से होता, भी प्रतिबन्ध नहीं। स्नानादि से पवित्र होकर ही नामोच्चारण करे, ऐसी भी कोई शर्त नहीं है। तो पवित्र कर ही देंगे।

न देशकाल नियमो न शौचाशौच निर्णयः।
विद्यते कुत्रचिन्नैव रामनाम्नि परे शुचौ।। — वैश्वानर संहि

स्वप्न में कोई नाम बड़बड़ा उठे, संभ्रमवश नाम कह उठे, प्रमाद से, जम्हाई लेने में, गिरते पड़ते समय, अभाव में पड़कर, किसी भाँति एक बार भी नामोच्चारण हो जाय, तो उनकी असंख्य गोहत्या ब्राह्मणहत्या जैसे घोरपाप भी नष्ट हो जायेंगे।

'स्वप्ने तथा संभ्रमत: प्रमादाच्चेज्जम्भृणात् संस्खलनाद्यभावात्।
रामेति नाम स्मरणत: सकृद्वै नाशत्यसंख्य द्विज धेनु हत्या।।'

श्री भुशुंडिरामायणे।

प्रायश्चित विमर्श पर श्रीभगवान्नामकौमुदीकार ने बड़े ही युक्तियुक्त ढंग से विचार किया है। संस्कृत जानने वाले उसे अवश्य देखें। श्रीअयोध्या के वर्तमान लक्ष्मण किलाधीश जी महाराज द्वारा लिखित अजामिल–उपाख्यानभी इस सम्बन्ध में द्रष्टव्य है। हमने यहाँ अतिसंक्षेप में लिखा है। इस प्रकार हम शास्त्र–दृष्टि से देखते हैं कि अन्य सहकारी साधनान्तरों से निरपेक्ष, अकेले एक ही बार के श्रीनामोच्चारण अशेष पातकों के एकमात्र समर्थ प्रायश्चित हैं। अग्नि के समान, उग्रवीर्य रसायन घटित औषधि के समान, श्रीरामनाम में अपना वस्तुगण है। यह जानकर, अनजान में, श्रद्धाविश्वास पूर्वक या विश्वासहीन होकर अविधिपूर्वक नामोच्चारण भी महान पापियों का आत्यन्तिक प्रायश्चित है। साक्षात् नाम का कहना ही क्या है? नामाभास भी वही कार्य कर देते हैं। प्रमाण तो बहुत दे चुके हैं। एक दो और दे रहे है।

कदाचिन्नाम संकीर्त्य भवत्या वा भक्तिवर्जित:।
दहते सर्वपापानि युगान्ताग्निरिवोत्थित:।।

ब्रह्मवैवर्त्त।

'प्रमादादपि श्री रामनाम उच्चरितं जनैं।
भस्मीभवन्ति पापानि रोगानीव रसायनै:।।'

सुश्रूत संहिता।

अवशेनापि यन्नाम्नि कीर्त्तते सर्व पातकै:।
पुमान्विमुच्यते सद्य: सिंह त्रस्ता मृगाइव।।

श्रीविष्णुपुराणे।

धर्मशास्त्र कथित कृच्छातिकृच्छ चान्द्रायण व्रतादि, प्रभूत धर्मसाध्य व्ययसाध्य यज्ञादि भी श्रीनाम के समान पातकियों के अशेष पाप नष्ट करने में समर्थ नहीं है। श्री मद्भागवत ६।१।९, १० में श्रीपरीक्षित जी श्रीशुकदेव जी से पूछते हैं कि मनुष्य नरगमन आदि पारलौकिक कष्टों के अनुभव से यह जानता है कि पाप उसका शत्रु है,फिर भी पाप वासनाओं से विवश होकर बार– बार पापकर्मो में प्रवृत्त हो जाता है। ऐसी अवस्था में उसके पापों का प्रायश्चित कैसे संभव है? मनुष्य कभी तो प्रायश्चित आदि के द्वारा पापों से छुटकारा पा लेता है, कभी पुन: उन्हीं पापकर्मो को करने लगता है, ऐसी स्थिति में मैं समझता हूँ कि उसका प्रायश्चित भी गजस्नान की भाँति ही व्यर्थ है।

दृष्टश्रुताभ्यां यत्पपापं जानन्नप्यात्मनोऽहितम्।
करोति भूयो विवश: प्रायश्चित्तमथो कथम्।।

सीताराम नाम साधन
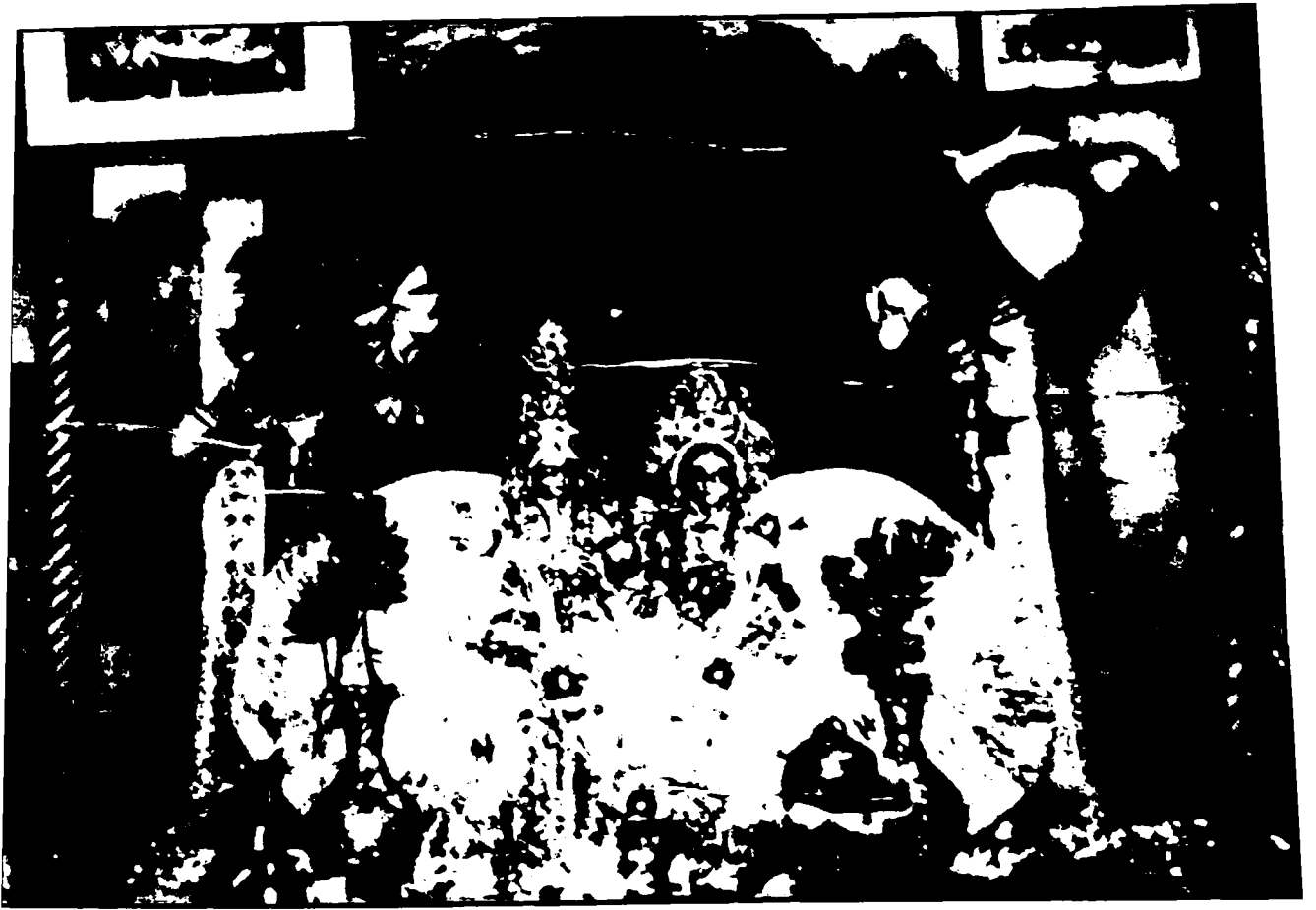
श्री रसमोद कुञ्ज बिहारी बिहारिणी जू

क्वचिन्निवर्ततेऽभद्रात्क्वचिच्चरति तत्पुनः।
प्रायश्चित्तमतोपार्थ मन्ये कुञ्जरशौचवत्।।

श्रीशुकदेवजी ने कहा व्रत, दान, यज्ञ आदि कर्मों के द्वारा किया गया प्रायश्चित पापियों के किये गये अशुभ (पाप) कर्मों का समूल नाश नहीं करता। कर्मों के अधिकारी अज्ञानी ही होते हैं। अज्ञान रहते पापवासना का सर्वथा अभाव नहीं हो पाता।

कर्मणा कर्मनिर्हारो न ह्यात्यन्तिक इष्यते।
अविद्वदधिकारित्वात्प्रायश्चित्तं विमर्शनम्।। ६।१।११।।

कर्मों में प्रवृत्ति अधिकांश रूप से लौकिक या स्वर्गीय भोगों के निमित्त ही होती है। ऐसे सकामकर्मों से कामनाओं का, वासनाओं का, परिहार कैसे संभव है? यही भोगेच्छा तो पापों में प्रवृत्त कराती है। तब भला अधिक से अधिक स्वर्गीय भोगसुख ही संपादन कराने वाले स्मार्तमतों के प्रायश्चित्तों से हृदय की शुद्धि कैसे हो सकती है? वासनाओं का नाश तो केवल भगवन्नाम से ही संभव है। स्थूल वासना तो ज्ञानविचार से भी दबायी जा सकती है, परन्तु सूक्ष्मवासना इतनी झीनी होती है कि विवेक बुद्धि से उनके अस्तित्व का पता नहीं लगता। नाश कैसे बने? श्रीमार्कण्डेय संहिता हमें विश्वास दिलाती है कि सभी दिव्यानन्द को मिटाने वाली चित्त की सूक्ष्मवासना भी श्रीरामनाम के जप से अनायास मिट जाती है।

चित्तस्य वासना सूक्ष्मा सर्वानन्दविनाशिनी।
सापि श्री रामसंलापादनायासेन नश्यति।।

शराब के घड़े को गंगादि पवित्र नदियाँ भी अपने परमपावन जल से शुद्ध नहीं कर सकतीं, उसी भाँति भगवत्विमुखी जीव को कृच्छाति कृच्छ चान्द्रायण व्रतादि भी बारंबार अनुष्ठित होने पर भी पवित्र नहीं बना सकते।

प्रायश्चित्तानि चीर्णानि नारायण पराङ्मुखम्।
न निष्पुनन्ति राजेन्द्र सुराकुम्भमिवापगाः।।

— श्री मद्भागवत ।६।१।१८।

कर्म प्रायश्चित्त में एक और कठिनाई है। कोई भी सकामकर्म में विधिहीन फलोत्पादन नहीं करता। विधियों का भलीभाँति निर्वाह अनेक दोषों के भाजन साधारण मानव से संभव नहीं। अतः इस दृष्टि से भी कर्मप्रायश्चित्त व्यर्थ हो जाता है।

ऐसी बात नामप्रायश्चित्त में नहीं है। परमसमर्थ श्रीनाम सरकार पापशोधन के लिए विधि की अपेक्षा नहीं रखते।

नामकीर्त्तनस्येति कर्त्तव्यादि निरपेक्षत्वेऽपि विधित्वसमर्थनम्।

— श्रीभगवन्नाम कौमुदी पृ० ५७

श्री भट्ट वार्तिक के शावरभाष्य में भी कहा गया है।

'किमाद्यपेक्षितैः पूर्णः समर्थः प्रत्ययो विधौ।'

कर्मप्रायश्चित की विधि में तंत्रमंत्र का कुपात्रद्वारा अशुद्धोच्चारणवाला छिद्र रह जाय, देश कालोचित दोष लग जायँ, किसी भी त्रुटि की संभावना में उस कर्मप्रायश्चित्त के साथ यदि हरिनाम का संकीर्तन कर ले, तो विधिहीन प्रायश्चित आपको पूरा—पूरा लाभदायक हो जायगा।

मन्त्रतस्तन्त्रतश्छिद्रं देशकालार्ह वस्तुत:।
सर्वं करोति निश्छिद्रं नाम संकीर्त्तनं हरे:।।

श्री स्कन्दपुराण में भी कहा गया कि तप यज्ञ आदि क्रियाओं में त्रुटि हो जाय, तो भगवत्स्मरण या नामोच्चारण कर लेने से न्यूनता होने पर भी वह क्रिया सम्पूर्ण फलदायिनी बन जाती है।

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्वा तपोयज्ञक्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्।।

इसी से तो बार—बार कहते हैं कि कर्मप्रायश्चित छोड़कर प्रायश्चित के रूप में भी नामोच्चारण कीजिये। आप अशेष पापपुंज वासना और पापप्रवृत्ति सहित अवश्य नष्ट हो जायेंगे।

❊ श्रीरामनाम जप से सर्वोच्च पद की प्राप्ति ❊

श्रीनन्दीपुराण में श्रीनन्दीश्वरजी ने गणों को समझाया है कि हे गण लोग! श्रीरामनाम का परम बल तुम सब सुन लो। इसी नाम के प्रसाद से हमारे इष्ट श्रीशिवजी सभी देवों में महादेव बने हैं, इसी के बल पर हलाहल पीकर अजर अमर बन गये। श्रीरामनाम के परत्व को जानते हैं तो श्रीगिरिजावल्लभ जू और कोई क्या जानेगा?

शृणुध्वं भो गणास्सर्वे रामनाम परं बलम्।
यत्प्रसादान्महादेवो हालाहलमयीं पिबत्।।
जानाति रामनाम्नस्तु परत्वं गिरिजापति:।
ततोऽन्यो न विजानाति सत्यं सत्यं वचो मम।।

परन्तु अपरिमित प्रभाव और अनन्त शक्ति सम्पन्न श्रीरामनाम का क्षुद्रपापों के नाशार्थ अपव्यय करने में नाम पारखी बुद्धिमानी नहीं मानते। इसी दृष्टि से क्रतु स्मृति नामक धर्मशास्त्र कहते हैं कि श्रीरामनाम के द्वारा जितने अधिक पापों का नाश बनता है, उतना अधिक पातकपुञ्ज महान् से महान् पापियों में भी देखने को नहीं मिलता है। इसी से बुद्धिमानों ने पापनाशार्थ नाम जपने को चीटीं पर तोप चलाना माना है। अत: पापप्रायश्चित भिन्न उपायों से शास्त्रों में वर्णित है।

न तावत्पापमस्तीह यावन्नाम्ना हतस्मृतम्।
अतिरेक भयादाहु: प्रायश्चित्तान्तरं बुधै:।।

सहज सुखस्वरूप जीवों का सहजानन्द पापों से ढक जाता है। प्रायश्चितों से पाप नाश होने पर पुन: सहजानन्द सरसने लगता है। नाम—विश्वासी के पाप तो श्रीनाम जप से अनायास मिट जाते हैं, किन्तु जिस मंदभागी को श्रीनाम प्रभाव में विश्वास नहीं, उसके पाप शोधन के निमित्त ही परमानन्दनिष्ठ महर्षियों ने प्रायश्चित्तान्तरों की व्यवस्था की है। श्रीआदित्य पुराण में भगवान् सूर्य स्वयं ऋषियों से ऐसा कहते हैं।

नामविश्रब्धहीनानां साधनान्तर कल्पना।
कृता महर्षिभिस्सर्वैः परमानन्दनैष्ठिकैः॥

श्रीगणेशपुराण में श्रीगणेशजी ने स्वयं कहा है कि मैं श्रीरामनाम के कीर्तन से ही सभी लोकों में अग्रपूज्य बना हुआ हूँ। अतः सबों को चाहिए कि श्रीरामनाम का सदा सर्वदा कीर्तन करते रहें।

अहं पूज्योऽभवं लोके श्रीमन्नामानुकीर्त्तनात्।
अतः श्रीरामनाम्नस्तु कीर्त्तनं सर्वदोचित्तम्॥

श्रीशुकपुराण में श्रीशिवजी ने श्रीपार्वतीजी को बताया है कि पार्वती! आप भी श्रीरामनाम रूपी परम रासायनिक महामंत्र का जप करें, क्योंकि इसी महामंत्र के प्रभाव से श्रीशुकदेवजी ने सभी ब्रह्मर्षियों में सर्वश्रेष्ठ पद प्राप्त किया है।

यत्प्रभावं समासाद्य शुको ब्रह्मर्षि सत्तम।
जपस्व तन्महामन्त्रं रामनाम रसायनम्॥

आप जानते हैं न, श्री प्रह्लाद जी भक्तशिरोमणि हैं। सभी भागवतों में द्वादश भागवत सर्वोत्तम बताये गये हैं। उनमें श्री प्रह्लाद जी का नाम सबसे प्रथम गिनाया गया है। अच्छा तो, यह बताइये कि ये भक्तशिरोमणि हुए कैसे?

नाम जपत प्रभु कीन्ह प्रसादू। भगत शिरोमनि भे प्रह्लादू॥

वर्त्तमान युग के समस्त सभ्य संसार ने एक स्वर से महात्मा गान्धी को इस युग का सर्वश्रेष्ठ महापुरुष माना है। क्यों? रामनाम बल से। आप भी अपना जीवन श्रीनामाकार बना लीजिये। महान् बन जाइये। ठीक है न?

गोस्वामी जी सर्वश्रेष्ठ वैष्णवाचार्य माने जाते हैं, श्रीरामनाम जप से ही। स्वयं कहते हैं—

राम नाम को प्रभाउ, पाउ महिमा, प्रताप।
तुलसी— सो जग मनिअत महामुनि सो॥

— श्रीकवितावली ७/७२।

श्रीरामनाम से सकल मनोरथ सिद्धि

श्रीस्कन्दपुराण में श्रीशंकरजी ने श्रीपार्वतीजी से कहा है कि जिसे चिन्मय रामनाम में अडोल पराप्रीति है और निरन्तर प्रेम से नामरटन करता रहता है, उसके सभी प्रयोजन बराबर पूरे होते रहेंगे।

येषां श्रीरामचिन्नाम्नि परा प्रीतिरचञ्चला।
तेषां सर्वार्थ लाभश्च सर्वदास्ति ॠणु प्रिये॥

श्री मार्कण्डेयपुराण में श्री व्यासदेव जी ने सूत जी से कहा है कि जिसे सतत श्रीरामनाम स्मरण करते रहने की निष्ठा है, तथा चित्त संकल्प विकल्प से रहित है, उसके लिये तीनों लोकों में ऐसी कौन सी दुर्लभ वस्तु है, जो सुलभ न हो जाय? मैं बिल्कुल सत्य कहता हूँ।

नाम स्मरण निष्ठानां निर्विकल्पैकचेतसाम्।
किं दुर्लभं त्रिलोकेषु तेषां सत्यं वदाम्यहम्।।

श्रीब्रह्मपुराण में श्री ब्रह्माजी ने श्रीनारद जी से कहा है कि श्रीरामनाम का कीर्त्तन ही परम मंगल रूप है। नाम जपने वाले जितना चाहें, उतना धन उनके पास आ जाय।

इदमेवहि माङ्गल्यमिदमेव धनागमः।
जीवतस्य फलश्चैव रामनामानुकीर्त्तनम्।।

श्रीकूर्मपुराण में श्रीशंकर जी ने श्रीपार्वतीजी से कहा है कि हे कल्याणि! श्रीरामनाम गोप्य से गोप्य तत्त्व है। मेरे तो जीवन सर्वस्व ही हैं। विलक्षण लौकिक भोग चाहो, विलक्षण मुक्ति चाहो, श्रीनाम सर्वेश सब दे सकते हैं।

गोप्याद् गोप्यतमं भद्रे सर्वस्वं जीवनं मम।
श्रीरामनाम सर्वेशमद्भुतं भुक्ति मुक्तिदम्।।

वहीं यह भी कहा गया है कि लोक में, वेद में, मनोरथ पूर्ति के जो–जो साधन बताये गये हैं, उन सभी साधनों से अनंत गुणा अधिक सामर्थ्य श्रीरामनाम में है। इनसे सद्यः सभी मनोरथ पूर्ण होते रहते हैं। विश्वासपूर्वक निरन्तर जपना चाहिये।

लौकिकी वैदिकी या या क्रिया सर्वार्थसाधिका:।
ताभ्यः कोट्यर्वुद गुणं श्रेष्ठं श्रीनामकीर्त्तनम्।।

श्रीबाराहपुराण में श्रीशंकरजी ने श्रीपार्वतीजी को उपदेश दिया है कि श्रीरामनाम अकेले सब मनोरथों को पूर्ण करने में समर्थ हैं। इन्हें किसी सहायक साधन को साथ करने की अपेक्षा नहीं है। सब प्रकार की सम्पत्ति देने में परम उदार हैं। सर्वोत्कृष्ट महामंगलमय हैं। अतः इन्हीं का जप किया करो।

निरपेक्षं सदा स्वच्छं सर्वसम्पत्ति साधकम्।
भजध्वं रामनामेदं महामाङ्गलिकं परम्।।

लिंगपुराण में भी श्रीशिव पार्वती संवाद है। श्रीरामनाम अमृत का पान करने वाले धन्य हैं। अपने सभी मनोरथ इन्हीं से प्राप्त करते हैं। ये धनातिधन्य हैं।

अहो नामामृतालापी जनः सर्वार्थसाधकः।
धन्याद्धन्यतमो नित्यं सत्यं सत्यं वदाम्यहम्।।

श्रीनृसिंहपुराण में श्रीनारदजी श्री याज्ञवल्क्यजी से बताते हैं। श्रीरामनाम में ऐसा प्रभाव है कि जापक दुर्लभ से दुर्लभ जिन जिन वस्तुओं की चाहना करता है, उन उन वस्तुओं को उसके माँगने से भी अधिक मात्रा में देते रहते हैं और ऐसा शीघ्र ही। इस प्रकार के सभी मनोरथपूर्ण करने वले श्रीरामनाम में जिसे प्रीति नहीं हुई, उसके अपराधों की गिनती नहीं हो सकती ।

राम नाम प्रभावेण यद्यच्चिन्तयते जनः।
तत्तदाप्नोति वै तूर्णमभीष्टमति दुलर्भम्।।
सर्वाभीष्टप्रदे नाम्नि प्रीतिर्नैवाभिजायते।
मुने तस्यापराधानां नियमो नैव विद्यते।।

श्रीपद्मपुराण में श्रीकृष्ण भगवान् ने श्रीअर्जुनजी से कहा है कि परम पावन श्रीरामनाम का जो नित्य जाप करते हैं, उनके सभी मनोरथ पूर्ण होते रहेंगे। अपुत्री हो, तो उसे पुत्रलाभ होगा।

राम राम सदा पुण्यं नित्यं पठति यो नराः।
अपुत्रो लभते पुत्रं सर्वकाम फलप्रदम्।।

व्रत, अन्य मंत्रका जप, पूजा, यंत्र मंत्र का सहारा लेना, और भी उग्रकर्म करना, व्यर्थ है। न योग करने की भी आवश्यकता है। अकेले नामजप सभी मनोरथपूर्ण करने में सर्व समर्थ हैं।

किं तीर्थैः किं व्रतैर्होमैः किं तपोभिः किमध्वरैः।
दानै र्ध्यानैश्च किं ज्ञानैर्विज्ञानैः किं समाधिभिः।।
किं योगैः किं विरागैश्च जपैरन्यैः किमर्चनैः।
यन्त्रैर्न्तस्तथातन्त्रैः किमन्यैरुग्रकर्मभिः।।
स्मरणात्कीर्त्तनाच्चैव श्रवणाल्लेखानादपि।
दर्शनाद्धारणादेव रामनामलिखोष्टदम्।।

इतिहासोत्तम नामक प्रामाणिक आर्ष ग्रन्थ में श्री भृगुजी का वचन है। श्रीरामनाम, सुनने वाले या संकीर्त्तन करने वाले सबों के समस्त मनोरथ पूर्ण करने वाले हैं। किसी अन्य प्रसंग वश भी नामोच्चारण हो जाय तो समस्त पापों को भस्म कर डालते हैं। जो भक्ति भावपूर्वक इनका जप करते हैं, उनके विषय में क्या कहना?

श्रुतं संकीर्तितं वाऽपि रामनामाखिलेष्टदम्।
दहत्येनांसि सर्वाणि प्रसंगात्किमु भक्तितः।।

श्रीक्रियायोगसार में किन्हीं ऋषि के प्रति सुग्गा पढ़ानेवाली गणिका का सुग्गे सहित उद्धार श्रीरामनाम से हुआ बताकर, कहते हैं—हे विप्रवर! श्रीरामनाम में इतनी कृपालुता, उदारता है। अतः आप भी इन्हीं का जप करें, आपके सभी मनोरथ अनायास इनके द्वारा पूरे होते रहेंगे और उपाय से मनोरथपूर्ति दुर्लभ है।

ईदृशं रामनामेदं जपस्व द्विजसत्तम।
अनायासेन तेऽभीष्टं सर्वं सेत्स्यतिनान्यतः।।

श्रीसौर्य धर्मोत्तर आर्ष ग्रन्थ में आया है कि श्रीरामनाम सभी मनोरथ देने वाले हैं। सज्जनों के अतिप्रिय हैं। लोक लज्जा तो भक्तिपथ का कंटक है, उसे शीघ्र नष्ट कर देते हैं।

'मनोरथ प्रदातारं सज्जनानां परं प्रियम्।
लौकिकी दुर्भगा व्रीडा हन्तारं नाम सद्यश:।।'

श्रीविश्वामित्र संहिता में श्रीविश्वामित्रजी किसी वैश्य को उपदेश दे रहे हैं मैं तो उन्हीं श्रीरामनाम का जप करता हूँ, जिनके स्मरण करते ही सभी मनोरथ अनायास नयनगोचर हो जाते हैं।

'यस्य संस्मरणादेव सर्वाथाश्चक्षुगोचरा:।
भवन्त्येवानायासेन तच्छ्रीराममहं भजे।।'

श्रीजावालि संहिता में भी यही कहा गया है कि श्रीरामनाम के सामर्थ्य से सभी मनोरथ सुकृतवा जापक के उसी भाँति करतल हो जाते हैं, जैसे कल्पवृक्ष के नीचे जाने वाले के लिए धन सम्पत्ति मुँहमाँग मिलती है।

'श्री रामनाम सामर्थ्यादखिलेष्टं करस्थितम्।
भवन्ति कृत पुण्यानां यथा कल्पतरोर्द्धनम्।।'

श्रीसुश्रुत संहिता का वचन है कि जो अपनी सभी अभिलाषाओं की पूर्ति के लिए अन्य साधन का सहारा छोड़कर एकमात्र परात्पर श्रीरामनाम का जप किया करते हैं, वे अन्त में अविनाश श्रीरामधाम को अवश्य जायेंगे।

'सर्वाभिलाषं पूर्णार्थं जपेन्नाम परात्परम्।
सर्वं त्यक्त्वा ततो याति ह्यवशं पदमव्ययम्।।'

श्रीपतञ्जलि संहिता का वचन है श्रीरामनाम परम मंत्रों को भी उत्पन्न करने वाले अक्षय बीज हैं इनका जो निरन्तर कीर्त्तन करते हैं, उनके लिये लौकिक पारलौकिक कोई भी अभीष्ट दुर्लभ नहीं है। उ जो चाहेंगे, वही मिला करेगा।

'रामेति नाम परमं मन्त्राणां बीजमव्ययम्।
ये कीर्त्तयन्ति सततं तेषां किञ्चिन्न दुर्लभम्।।'

वहीं यह भी कहा गया है कि श्रीरामनाम का कीर्त्तन मंगलमय है, सभी पापों को नाश करने वा हैं। आयु बढ़ाने वाले हैं, सभी मनोरथों को पूर्ण करने वाले हैं। भोग, मोक्ष, भक्ति जो चाहो सब उदार पूर्वक देने वाले हैं।

'माङ्गल्यं सर्वपापघ्नमायुष्यमखिलेष्टदम्।
भुक्तिमुक्तिप्रदं पुण्यं रामनाम्नस्तु कीर्त्तनम्।।'

श्रीहनुमन्नाटक में श्री हनुमतलाल जी ने श्रीअगस्त्यजी से कहा है कि जो हमारे परमकृपालु स्वा श्रीमान् रामचन्द्र के मंगलदायक श्रीरामनाम का सतत स्नेहपूर्वक कीर्त्तन करते हैं, उनके समीप पहुँच उन्हें मैं यत्नपूर्वक सर्वदा उत्तमोत्तम सुख एवं यथेच्छ मनोरथों को दिया करता हूँ।

'ये जपन्ति सदा स्नेहान्नाम माङ्गल्यकारकम्।
श्रीमतो रामचन्द्रस्य कृपालोर्मम स्वामिन:।।

तेषामर्थे सदा विप्र प्रयातोऽहं प्रयत्नत:।
ददामि वाञ्छितं नित्यं सर्वदा सौख्यमुत्तमम्।।'

श्री संमोहनतंत्र में श्रीशिवजी ने श्रीशिवाजी से कहा है हे प्रिये! जो साधक परब्रह्मस्वरूप श्रीरामनाम का चित्त एकाग्र करके नित्य निरन्तर जप करते हैं उनके लिये कोई भी अभीष्ट दुर्लभ नहीं है। जो चाहेंगे वही मिलेगा।

''चित्तैकाग्रतया नित्यं ये जपन्ति सदा प्रिये ।
रामनाम परं ब्रह्म किञ्चित्तेषां न दुर्लभम्।।''

श्रीवैरञ्च्य तंत्र में कहा गया है कि अन्यान्य सभी साधनों को छोड़कर एकमात्र श्रीरामनाम के जप में परायण हो जाओ। सभी मनोरथों को देने में ऐसा कोई भी दूसरा यत्न समर्थ नहीं है।

''त्यक्त्वाऽन्य साधनान् सर्वान् रामनाम परोभव।
नात: परतरं यत्नं सुलभं सकलेष्टदम्।।''

श्रीआदिरामायण में श्रीहनुमतलालजी श्रीनल जी से कहते हैं कि मनोरथ पूर्ण करने में श्रीराम नाम चिंतामणि कल्पवृक्ष तथा कामधेनु से भी अनन्तगुणा बढ़कर है।

''चिन्तामणि: कल्परु: कामधेनुश्चैव नृणाम्।
अनन्त फल संदोह भवनं रामनाम वै।।''

अब आगे हम अर्वाचीन नामजापक आचार्यो की महावाणियाँ उद्धृत करेंगे। श्रीबड़े महाराज कहते हैं कि श्रीरामनाम महाराज बिना माँगे अपने आश्रितों को अपनी ओर से साम्राज्य सुख के समान लौकिक साजसज्जा से परिपूर्ण रखनेवाले हैं। गोस्वामीजी ने भी श्रीदोहावली में इसी बात की पुष्टि की हैं। नाम गरीब निवाज को राजदेत जन जानि।। श्रीबड़े महाराज पुन: आदेश करते हैं। इसके अतिरिक्त और भी जो कुछ माँगना हो इनसे निशंक माँगते रहो। तुम्हारे ऊपर यदि कोई दारुण दु:ख आ पड़ा है तो उसके निवारण में श्रीनाम तनक भी विंलब नहीं करेंगे। तत्पश्चात तुम निष्कलंक रहकर सुखसार मौज इनके द्वारा लेते रहो। हमें श्रीनाम सरकार की ओर कृतघ्न होते देखकर फटकारते हैं कि कौन सा तुम्हारा ऐसा प्रयोजन है जो श्रीनामसरकार पूरा नहीं करेंगे?तब दूसरे साधन के द्वार खटखटाने की आवश्यकता? अन्य साधनों का भरोसा नहीं छूटता है तभी तो दरिद्रता के कीचड़ में लथपथ हो रहे हो। मैं(श्री बड़े महाराज) ने अन्य साधनों की आशा छोड़ दी है। अत: श्रीरामनाम से परमानंद में निर्भर होकर श्रीनामसरकार के मनोरथ प्रदायक यश का डंका बजाकर विश्व की भाँति घोषित कर रहा हूँ।

नाम महाराज सामराज सुख दैन द्रुत
चाहे जौन चीज माँगि लीजिये निसंकही
होई है न वार दुख दारुन प्रहार बिच
लीजिये बहार सुखासार अकलंक ही

कौन हेत हेरत हरामखोर और ओर
याही लिये नित्त रहे कंक रंक पंक ही।
(श्री)युगल अनन्य दूजी आस विसराय हिय
हरष अमाय वदै विज्ञ दिये डंक ही।१२८।।

उसी श्रीसीतारामनाम सनेह वाटिका में श्रीबड़े महाराज पुन: कहते हैं कि श्रीरामनाम, चिन्तामणि के भी मनोरथ पूरक चिन्तामणि हैं। अनन्त कामधेनु और कल्पवृक्ष के समान मुँह माँगी वस्तु देने में उदार हैं। ऐसा श्रीनाम प्रभाव स्वयं वेद कहते हैं। श्रीराम चिदानन्दघन है। बुद्धि मन की गति से परे पूर्णउदार हैं। सच्चे सर्वेश्वर है। श्री शंकर जी के तो हृदयहार ही हैं। श्रीशिव जी अपने हृदय में इनकी स्मृति जोगाये रहते है। श्रीनाम आश्रित के आरतिनिवारण में करुणानिधान है। नामार्थ के अनुरूप ही रमणार्थक धातु सिद्ध श्रीनाम दिव्य मधुर रस की खान है। प्राणों को भी अनुप्राणित करने वाले प्राण है। एकबार मुख से उच्चारण करने पर कोटि रोग हर लेते हैं। श्रीबड़ेसरकार कहते हैं कि श्रीनाम निर्मल हैं। सहज स्वतंत्र हैं। ज्ञान योग भक्ति भाव दिव्य रसों की स्वाद सीमा है।

चिंतामनि हू की चिंतामनि नाम कामधेनु
देवद्रुम अमित समान गुन वेद वद।
चिदघन—रूप मन मति गति पार,
परिपूरन उदार हर हार सर्वेश सद।।
करुनानिधान रसखान प्रानहूं के प्रान
वारक वदन वरनत हरे कोटि गद।
श्रीयुगल अनन्य स्वच्छ सहज स्वतंत्र सदा
ज्ञान योग भक्ति भाव रस जस स्वाद हद।१६१

वहीं श्रीबड़े महाराज कहते हैं कि श्रीरामनाम रटने पर आपको रिद्धि सिद्धि निर्मल सुख सब मिलेंगे। अन्य शुभ सुकृत समूह का आश्रयण तो नामजप के मार्ग में विघ्न(प्रत्यूह) रूप हैं। श्रीब्रह्मा विष्णु महेश आदि त्रिदेव अपनी अपनी जगह सभी जगदीश्वर कहाते हैं। श्रीरामनाम जप से ही उन पदों को प्राप्त किया है। यह बात वेद प्रसिद्ध है रत्ती भर भी शंका न करना। श्रीरामनाम के अधीन पांचों मुक्तियाँ सारी शक्तियाँ तथा भक्तिभाव सब कुछ हैं। यह बात संत वेद सम्मत है। श्रीनामजप से श्री जानकी वल्लभलालजू का स्नेह प्राप्त करो। सदा मौज लूटते रहो।

रामनाम रटे रिद्धि सिद्धि सुख स्वच्छ शुभ
सुकृत समूह परत्यूह परमानिये।
जेते जगदीश तेते नाम महाराज बल
भये बेद बदत रतीक संक नानिये।।

पाँचों मुक्ति शक्ति भाव भक्ति रामनाम तंत्र
संत श्रुति संवत सु एकरस जानिये।
(श्री) युगल अनन्य जानकीश से सनेह साज
सजिये सदैव याही माँझ मौज आनिये।।४१५

श्रीगोस्वामीजी के काव्यों में तो श्रीरामनाम के मनोरथ प्रदायक प्रभाव का वर्णन अनेक स्थलों में आया है।

रामनाम कलि अभिमत दाता। हित परलोक लोक पितु माता।।
राम नाम काम तरु जोइ जोइ मांगि हैं। तुलसिदास स्वारथ न खांगि हैं।।
'कलि नाम कामतरु राम के।'

सर्वत्र श्रीस्वामीजी यही दिखाते हैं कि मनोरथ पूर्ति के लिए श्रीनामतेर सभी साधन कलि से बाधित हैं। एकमात्र श्रीरामनाम के आगे कलि की दाल नहीं गलती।

कालनेमि कलिकपट निधानू। नाम सुमति समरथ हनुमानू।।

नामजापकवर्य परमहंस श्रीसियालालशरण प्रेमलता जी महाराज स्वरचित श्रीवृहदउपासना रहस्य में कहते हैं—

कोटिन साधन साधिये, कोटिन जन्म सुधारि।
रामनाम की रटन सम, सुखद न कहत पुरारि।।
अस बिचारि जो चहहु भलाई। रटहु रटावहु नामहि भाई।।
विद्यारथी रटै जो नामहि। पावहि विद्या विनु श्रम सामहि।।
धन हित रटन करै जो कोई। मिलै विपुल कहुं घटै न सोई।।
उभय लोक महँ जो चह जीती। रटै रटावै नाम सप्रीती।।
जो चह कोउ सुंदर सुत नारी। रटै नाम नित होय सुखारी।।
नारि चहहि जो सुत पति भूषण। पावहि सो रटि नाम अदूषण।।
रोगी जो चह रोग नशावन । रटै नाम लय लाय सुपावन।।
कोढ़ी जो चह निर्मल काया। रटै नाम सियराम सुहाया।।
रुजगारी रुजिगार में, लाभ चहहिं जो कोय।
रटैं रटावें नाम नित, कबहुँ न हानी होय।।
भयदायक असथलनि मसाना। रटत जाव सियराम सुजाना।।
राज भवन जंगल जल माँही। प्रविसहु नाम रटत भय नाहीं।।
कालहुँ की गति नाहिन तहँवा। होत उचारन नाम सुजहवां ।।
दुखप्रद जो सिंहादिक नाना। सुनत पराहि नाम धुनि काना।।
जे गृह ग्राम परै बीमारी। हैजा प्लेग बुखार तिजारी।।

जय सियाराम नाम धुनि कीजै। मिलि सुपरस्पर सब दुख छीजै।।
जो सीखन चह गुन चतुराई। सो सियराम रटै मन लाई।।
जोग जुगति जो चाहहि जोगी। रटै नाम सियराम निरोगी।।

कहत सुनत गावत सुजन, रामकथादि पुरान।
आदि अंत श्रीनाम धुनि, कीजै हित कल्यान।।

नाम सुकीर्त्तन गाय बजाई। करहु करावहु हिलिमिलि भाई।।
आरंभौ जो कवनिहुं काजा। करिय नाम धुनि सहित समाजा।।
जो चह सिद्ध करन सब कामा। करिय नाम धुनि प्रद विश्रामा।।
चाहहु जो सब सुख अनुकूला। करहु नाम धुनि मंगलमूला।।

❋ नामजप से त्रिगुणमयी सिद्धियाँ ❋

श्रीवृहद् विष्णुपुराण में श्रीपराशरजी ने अपने शिष्यों को समझाया है कि जो रामनाम का नित्य प्रत्येक क्षण जप करता रहता है वह श्रीनाम प्रभाव से सभी सिद्धियाँ प्राप्त कर लेता है।

राम रामेति यो नित्यं मधुरं जपति क्षणम्।
स सर्वसिद्धिमाप्नोति रामनामानुभावतः।।
श्री अगस्त संहिता में भी यही श्लोक आया है।

श्रीवृहन्नारदीय पुराण में कहा गया है कि कलिकाल में वेद विहित कर्मों को कोई घटा—बढ़ाकर करेगा तो सिद्धि मिलने में संदेह रहता है। कर्म के आदि अन्त में श्रीनाम कीर्त्तन अवश्य करें करावें। नाम कीर्त्तन से वैदिक कर्म की त्रुटि पूरी हो जायगी तथा उसी से वैदिक कर्मों का पूरा—पूरा फल मिलेगा उसे।

न्यूनातिरिक्ता सिद्धि कलौ वेदोक्तकर्मणाम्।
नाम संकीर्त्तनादेव सम्पूर्णा फलदायकम्।।

क्रियायोगसार में कहा गया है कि किसी के घर में श्राद्ध हो, तर्पण हो, बलिदान की नौवत आवे, कोई उत्सव हो, यज्ञ, दान, व्रत, देवाराधन आदि कोई भी वैदिक सत्कर्म करने का अवसर आवे उस समय इन सत्कर्मों का सम्पूर्ण फल चाहने वाले चतुर व्यक्तिको चाहिये कि श्रीसीतारामनाम का स्मरण भक्तिपूर्वक करता रहे।

श्राद्धे च तर्पणे चैव बलिदाने तथोत्सवे।
यज्ञे दाने ब्रते चैव देवताराधनेऽपि च।।
अन्येष्वपि च कार्येषु वैदिकेषु विचक्षणैः।

संस्मरेधत्फलं प्रेप्सु रामरामेति भक्तितः।।

श्रीआदिपुराण में श्रीकृष्णार्जुन सम्वाद में कहा गया है कि श्रीरामनाम के प्रभाव से सभी प्रकार की सिद्धियाँ पाकर जापक सिद्धराज बन सकता है। बुद्धिमान साधक को चाहिये कि विश्वासपूर्वक निरन्तर जपता रहे।

रामनामप्रभावेण सर्वसिद्धीश्वरो भवेत्।
विश्वासेनैव श्री रामनाम जाप्यं सदा बुधैः।।

श्री अनन्त संहिता में आया है कि श्रीरामनाम सब जगह सदा सर्वदा सबों को सिद्धि देने वाले हैं। इनके स्मरण करते ही अन्य साधनों में दीर्घकाल में प्राप्त होने वाला फल इनके द्वारा शीघ्र प्राप्त हो जाता है।

सर्वेषां सिद्धिदं रामनाम सर्वत्र सर्वदा।
यस्य संस्मरणाच्छ्रीघ्रं फलमायाति दूरगम्।।

वहीं यह भी कहा गया है कि श्रीरामनाम सभी ऐश्वर्य को, सभी सिद्धियों को तथा धर्मों को देने वाले हैं। सभी प्रकार की मुक्तियाँ तथा परमानन्द इससे प्राप्त हो जाते हैं। श्रीरामनाम के प्रभाव से ही ब्रह्मा जी सृष्टि की रचना करते हैं तथा सभी देवता सब ऐश्वर्य से सम्वित हैं।

सर्वैश्वर्यप्रदं सर्व सिद्धिदं सर्व धर्मदम्।
सर्वमोक्षकरं शुद्धं परानन्दस्य कारणम्।।
रामनामम्नः प्रभावेण स्वयम्भूः सृजते जगत्।
तथैव सर्वेदेवाश्व सर्वैश्वर्य समन्विताः।।

श्रीअध्यात्म रामायण में कहा गया है कि श्रीरामनाम के निरन्तर जप से वचन सिद्धि आदिक सिद्धियाँ स्वयमेव निश्चित रूप से आती हैं।

राम रामेति सततं पठनाल्लभते फलम्।
वाचा सिद्ध्यादिकं सर्वं स्वयमेव भवेद्ध्रुवम्।।

श्रीकबीरजी श्रीरामजी से सभी सिद्धियाँ सुलभ बताते हैं—

जाकी गाँठी नाम हैं, ताके है सब सिद्धि।
कर जोरे ठाढ़ी रहै, आठ सिद्धि नव निद्धि।।

अनुभवी नाम जापकवर्य परमहंस श्रीप्रेमलता जी महाराज स्वरचित वृहद उपासना रहस्य में सिद्धाई प्राप्त करने की युक्ति बताते हैं।

हनुमंतहि जो चहहु रिझाई। तौ रटि नाम सुनावहु भाई।।

सकल वासना करिहैं पूरी। सुनि सियराम नाम धुनि रूरी।।
जो चह प्रभु पद—पंकज—प्रेमा। करै नाम धुनि दायक छेमा।।
सब विधि कुसल चहहु सब ठामा। रटहु सदा सियराम सुनामा।।
आकर्षन मारन मोहन मन। असतंभन वसकरन उचाटन।।
जप तप जोग विराग सुदाना। पूजन पाठ होम ब्रत ध्याना

अनुष्ठान सिधि होय सब, आदि सुषष्ट प्रयोग।
रटै नाम हनुमान ढिग, बैठि सु तजि तियभोग।।

यहि विधि जो हनुमानहि कोई। नाम सुनावै तौ सिधि होई
नारि संग तजि श्री सियरामा। रटै अखंड पुलकि बसु यामा।।
करि सुअचल मन सुचि सब अंगा। बैठे सनमुख तजि सब संगा।।
सुक्षम शुद्ध बसन एक बारा। रटै नाम सियराम उदारा।।
मध्यम स्वर से करै उचारन। षष्ट मास करि नेम सुधारन।।
विघन होय तौ मन न डुलावै। अधिक नेम से प्रेम बढ़ावै।।
विलम होय वरु नेम न त्यागै। दिन दिन नाम रटन में पागै।।
अपर आस भय नींद विहाई। केवल नाम रटै लय लाई।।
उर दृढ़ता लखि श्री हनुमाना। सकल काज सिधि करहिं सुजाना।।
कहेउँ न कछु विधि जुगुति बनाई। यह सब बात मो अजमाई।।

श्री रामनाम अपने चारों प्रकार के भक्तों को अपनी—अपनी अभिलषित वस्तु देने में परम समथ हैं। ज्ञानी भक्त ब्रह्मानंद का अनुभव चाहते हैं। योग साधन से विलम्ब से मिलता है। जीभ से बैखरी वार्ण में नामोच्चारण करें तो सिद्धि अनायास शीघ्र मिलेगा।

नाम जीह जपि जागहि जोगी। विरति विरंचि प्रपंच वियोगी।।
ब्रह्म सुखहि अनुभवहि अनूपा। अकथ अनामय नाम न रूपा।।

इसी प्रकार जिज्ञासु को जीभ से नाम जप करने पर गूढ़ तत्त्वों का ज्ञान होता है।

जाना चाहहि गूढ़ गति जेऊ। नाम जीह जपि जानहि तेऊ।।

आरत भक्तों के घोर संकट अनायास नाम जाप से मिट जाते हैं।

जपहि नाम जन आरत भारी। मिटहिं कुसंकट होहिं सुखारी।।

हम आगे सिद्धि चाहने वाले के लिए नामयुक्ति बता रहे हैं।

साधक नाम जपहिं लय लाये। होहिं सिद्ध अनिमादिक पाये।।

❋ नामजप से विभिन्न सिद्धियाँ ❋

अद्भुत यह मंत्र सर्वतन्त्र है स्वतंत्र जाके
ऋद्धि सिद्धिदायक खल घालक सुरस्वामी हैं।
ममता को मारन उच्चाटन भवनिद्रा को
इन्द्रियन वशीकरन विषय को विरामी है।
मनको आकर्षन अस्तंभन चित्त चंचल को
पापन को प्रयोग दुष्ट दापन को दामी है।
सबको परिनाम सो सुमिरले 'सहाय राम'
नाम तो अनन्त तामें रामनाम नामी है।।

कल्याण के श्रीरामायण परिशिष्टांक पृ० ५३२ में एक गुणातीत बीतराग अवधूत के बताये साधनों से पृथक्–पृथक् अनेक सिद्धियों की प्राप्ति बतायी गयी है।

जिनको सिद्धि प्राप्त करने की इच्छा है वे साधक श्रवण नेत्रादि इन्द्रियों को विषयों से रोककर और मन बुद्धि चित्त तथा अंहकार की वृत्ति खींचकर एकाग्र होकर राम नाम जपते हैं, और अणिमादिक सिद्धियों को प्राप्त करके सिद्ध हो जाते है।

१– रामरूप में मन लगाकर नाम जपने से थोड़े काल में त्रिकालज्ञत्त्व सिद्धि प्राप्त होती है। यानी तीनों काल का ज्ञान हो जाता हैं।

२– फिर कुछ समय पीछे अद्वन्द्र सिद्धि प्राप्त होती है यानी शीतोष्ण नहीं व्यापता।

३– तदन्तर कुछ काल बीतने पर चित्तादमभिज्ञाता सिद्धि मिलती है अर्थात दूसरे के चित्त की बात जानी जा सकती है।

४– फिर थोड़े दिनों में अग्न्यकीब्र विषादीनांप्रतिष्टम्भ सिद्धि मिलती है अर्थात् अग्नि आदि से बाधा नहीं होती।

५– फिर कुछ काल में अपराजिता सिद्धि प्राप्त होती है यानी किसी से भी पराजय नहीं होती। क्षुद्र सिद्धियाँ रामनाम के जप से स्वाभाविक प्राप्त हो जाती है।

६– श्रीरामरूप में मन लगाकर नाम जपने से थोड़े ही दिनों में क्षुधा पिपासा शोकमोह जन्म मरणादि षडूर्मी नाश हो जाती है।

७– ब्रह्माण्डनाद में श्रवण देकर, रामरूप में मन लगाकर नाम जपने से दूरश्रवणसिद्धि प्राप्त होती है यानी दूर की बात सुनी जा सकती है।

८– सूर्यतेज में रामरूप स्थित करके उसमें मन दृष्टि लगाकर नाम जपने से दूरदर्शन सिद्धि प्राप्त होती है। अर्थात् दूर की वस्तु दीखने लगती है।

९– पवन में रामरूप स्थित करके उसमें मन लगाकर नाम जपने से मनोजव सिद्धि मिलती है यानी मन के समान देह की गति तीव्रगामिनी हो जाती है।

१०–अनन्तर मनोरथ में रामरूप स्थित करके उसमे मन लगाकर नाम जपने से मनोरथ सिद्धि प्राप्त होती है यानी मनचाही वस्तु प्राप्त हो जाती है।

११– सब देहों में स्थित आत्मा में रामरूप स्थित करके उसमें मन लगाकर नाम जपने से पर काय प्रवेश सिद्धि प्राप्त हो जाती है यानी दूसरी देह में प्रवेश करने को समर्थ हो सकता है।

१२– प्राणायाम की विधि से ब्रह्मरन्ध्र में प्राण चढ़ाकर वहाँ रामरूप में मन लगाकर नाम जपने से स्वच्छन्द मृत्यु सिद्धि प्राप्त होती है।

१३– देवसत्त्व सहित रामरूप में मन लगाकर नाम जपने से देवांगना क्रीड़ा सिद्धि प्राप्त होती है।

१४– सत्य संकल्पमय रामरूप में मन लगाकर नाम जपने से यथासंकल्प सिद्धि प्राप्त होती है।

१५– अभंग आज्ञामय प्रभु में मन लगाकर नाम जपने से आज्ञा अप्रतिहत सिद्धि प्राप्त हो जाती है यानी उसकी आज्ञा का कभी भंग नहीं हो सकता। ये सामान्य गुण सम्बन्धी सिद्धि है।

१६– शब्द, स्पर्श, रूप, रस गन्ध तन्मात्राओं में रामरूप स्थित करके उसमें मन लगाकर नाम जपने से अणिमा सिद्धि प्राप्त होती है यानी शरीर अणुमात्र हो सकता है।

१७– ज्ञानमय महतत्त्व में रामरूप स्थित करके उसमें मन लगाकर नाम जपने से महिमा सिद्धि प्राप्त हो सकती है।

१८– आकाशादि पञ्चभूतों में रामरूप स्थित करके उसमें मन लगाकर नाम जपने से लघिमा सिद्धि प्राप्त होती है देह लघु हो सकती है।

१९– सात्विक अहंकारमय रामरूप में मन लगाकर नाम जपने से प्राप्ति सिद्धि प्राप्त होती है। यानी इन्द्रिय और देह सहित पराये देह में प्रवेश किया जा सकता है।

२०– क्रियामहतत्त्वमय रामरूप में मन लगाकर नाम जपने से प्रकाश्य सिद्धि प्राप्त होती है यानी भूमि आदि के गुप्त पदार्थ दिखायी देने लगते हैं।

२१– त्रिगुण माया प्रेरक कालमय रामरूप में मन लगाकर नाम जपने से ईशता सिद्धि प्राप्त होती है। यानी ईश्वर शक्ति प्रेरणादि प्राप्त हो सकती है।

२२– तुरीय अवस्थामय रामरूप में मन लगाकर नाम जपने से वसिता सिद्धि प्राप्त होती है यानी मन विषयों से विलग हो जाता है।

२३– अगुणमय रामरूप में मन लगाकर नाम जपने से अवश्यता सिद्धि प्राप्त होती है। यानी इच्छामात्र से सर्वाङ्ग सुख प्राप्त रहते हैं।

आठों सिद्धियाँ भगवत प्रधान है। सबसे श्रेष्ठ ईश सिद्धि है। परिचित रामारूप में मन लगाकर नाम जपने से सब सिद्धियाँ प्राप्त हो सकती है।

'साधक नाम जपहि लयलाये। होहि सिद्ध अनिमादिक पाये।।'

यह परम प्रामाणिक मानस पंक्ति की सूत्रात्तिका व्याख्या है। पिछले पृ० ६९,७९ में हम श्रीरामनाम महामंत्र से विभिन्न सिद्धियों की प्राप्ति सम्बन्धी चर्चा कर आये हैं। उसकी व्याख्या उपरि निर्दिष्ट पंक्तियों में हो गई। किसी तान्त्रिक अनुभवी नामानुरागी गुरु के पथ प्रदर्शन का सहारा लेकर इन सिद्धियों के लिए यत्न करना चाहिये।

नामजप से पारमार्थिक सिद्धियाँ

श्रीपुराणसंग्रह में श्रीसूत जी ने शौनक ऋषिको समझाया है कि सभी मंत्रों में श्रीरामनाम सर्वश्रेष्ठ बताये गये हैं, किन्तु इस नाम का मर्म गौप्य है। श्रीउमापतिजी का तो जीवन ही है। जापक के अन्त:करण को शुद्धबनाने वाले हैं। सभी जीवों के लिये स्मरण करनें में सुलभ है। इनसे अनायास सिद्धि प्राप्त होती है। अन्य सभी साधनों को छोड़कर शीघ्र इसी नामात्मकमंत्र को प्रेमपूर्वक जपना चाहिए।

''सर्वेषां मन्त्रवर्गानां रामनाम परं स्मृतम्।
गोप्यं श्री पार्वतीशस्य जीवनं चित्तशोधकम्।।
सुलभं सर्व जीवानामनायासेन सिद्धिदम्।
सर्वोपायं विहायशु जप्तव्यं प्रेमतत्परै:।।''

श्रीसौर्य धर्मोत्तर ग्रन्थ में कहा गया है कि श्रीरामनाम का परत्व वेदों में सर्वत्र प्रसिद्ध है, अज्ञानी नहीं जानते हैं। इसी से भवसागर में गोते खा रहे हैं। श्रीनामजप से कर्मकाण्ड के सहित ज्ञान भक्ति अनायास सिद्ध हो जाती है। जीभ से परात्पर श्रीरामनाम का जप होना चाहिए।

''परत्वं परमं नाम्नो विदितं सर्वत: श्रुतौ।
अबुधा: नैव जानन्ति सम्पतन्ति भवार्णवे।।
सकर्मोपासना ज्ञानमनायासेन सिद्ध्यति।
रामनाम सदा जिह्वा संजपत्यखिलिश्वरम्।।''

श्रीजावालि संहिता में कहा गया है कि श्रीरामनाम में बिना साधन किये ही प्रगट रूप से सिद्धि मिलते देखी गयी है। अन्य साधनोंमें सिद्धि के लिए रचते पचते रहो वह नामजप वाला दिव्यानन्द तो दुर्लभ ही रहेगा।

''साधनेन बिना सिद्धि र्दृष्टं नाम्नैव संस्फुटम्।
अन्यत्र साधनै: दुखै: दुर्लभं तन्महत् सुखम्।।''

श्रीविनय १३०(४) में भी कहा गया है कि कलियुगी बनिये नाममात्र की पूँजी लगाकर अमित धन पाने को उत्सुक रहते हैं। उसी प्रकार सिद्धि चाहने वाले नाममात्र का साधन करके महान से महान सिद्धि पाना चाहते हैं। श्रीनामनगर में ऐसे लोभी का भी मनोरथ पूरा हो जाता है।

''साधन बिनु सिद्धि सकल लोग लपत।
कलिजुग बर बनिज बिपुल नाम नगर खपत।।''

श्रीसुदर्शन संहिता में कहा गया है कि अपने सदगुरु द्वारा उपदिष्ट रीति से मन को एकाग्र बनाकर श्रीरामनाम का जप करे। इस विधि से नाम जपने पर थोड़े ही समय में संसार से तीव्र वैराग्य तथा मधुररसमयी भक्ति, दोनों की परम सिद्धि हो जायगी।

यथा गुरूपदेशेन नित्यमेकाग्रमानसै:।
एवं रीत्या जपेन्नाम तदा स्वल्पमुपायत:।।
जायते परमा सिद्धिर्विरक्ति भक्तिरूज्ज्वला।

श्रीकेदारखंड में कहा गया है कि श्रीरामनाम के समान वेदान्त की जानकारी में कोई तत्त्व नहीं है। श्रीरामनाम के ही प्रभाव से निर्मल मुनिगण परम सिद्धि प्राप्त कर चुके हैं।

रामनाम समं तत्त्वं नास्ति वेदान्तगोचरम्।
यत्प्रसादात्परां सिद्धि सम्प्राप्ता मुनयोऽमला:।।

श्रीपार्वतीजी ने श्रीलोमश संहिता में पारमार्थिक तत्त्व के मर्मज्ञ जगदगुरु भगवान शंकरजी से एक बार पूछा था कि मैंने आपसे अनेक तत्त्व जाने। इस समय मैं यह जानना चाहती हूँ कि बिना अधिक साधन श्रम किये ही सब सिद्धियों को देने वाला किस गोप्य तत्त्व को आपने निश्चित किया है। उत्तर में भगवान शिवजी ने बताया कि श्रीरामनाम ही सर्वशास्त्र प्रसिद्ध परम तत्त्व है। परम प्रिय रहस्य यही है। इन्हीं से सभी सिद्धियाँ प्राप्त होती है। श्रीरामनाम के प्रभाव ही से तो मैं सर्वज्ञ बना बैठा हूँ। तीनों लोकों में श्रीरामनाम से बढ़कर कोई तत्त्व है ही नहीं।

इदानीं श्रोतुमिच्छामि किं तत्त्वं कृतनिश्चितम्।
गुह्यादगुह्यतरं गुह्यं पवित्रं परमं च यत्।
सुलभं सुगमोपायं विनायासेन सिद्धिदम्।।

शिव उवाच

रहस्यं परमं श्रेष्ठं सर्वसिद्धिप्रदायकम्।
रामनाम परं तत्त्वं सर्वशास्त्रेषु प्रस्फुटम्।।
यस्य नाम प्रभावेण सर्वज्ञोऽहं वरानने।
रामनाम्न: परं तत्त्वं नास्ति किञ्चिज्जगत्त्रये।।

श्रीअत्रिसंहिता में कहा गया है कि श्रीरामनाम का स्मरण चाहे किसी भी प्रकार से किया जाय, भगवत्प्राप्ति रूपा मनोरमा सिद्धि अवश्य मिलती है।

येन केन प्रकारेण संस्मरेद्राम नामकम्।
अवश्यं लभते सिद्धि प्राप्ति रूपां मनोरमाम्।।

मंत्र तंत्र रहस्यों के परम मर्मज्ञ श्रीहनुमतलालजी श्रीनल जी के प्रति श्रीआदि रामायण में कहते हैं कि अन्य प्रकार के सैकड़ों मंत्रो की आराधना करो, फल होगा या नहीं संशय रहता है। किन्तु श्रीरामनाम अपने स्वभाव से ही उच्चारण मात्र करने वाले को फल अवश्य देते हैं। श्रीनाम

मंत्र में अन्य मंत्रों की भाँति नहा धोकर जपके पहले पवित्र बनने का प्रतिबन्ध नहीं है। अन्य मंत्र के कीलनादि सिद्धि विरोधी रुकावटें है। परमसमर्थ रामनाम में कीलन का गम नहीं हैं। रामनाम का मनोरथ प्रदायक स्वभाव कल्पवृक्ष के समान है।

अन्यदाराघंनं शतैर्मन्त्रं फलति नाथवा।
गृहीत मात्र फलदं रामनाम स्वरूपत:।।
न शौच नियमाद्यच न सिद्धारि विचारणम्।
कल्पवृक्ष स्वरूपत्वाज्जनानां रामनामकम्।।

श्रीसाकेत प्राप्ति

श्रीपद्मपुराण में जगदगुरु शंकरजी श्रीपार्वतीजी से कहते हैं कि बड़े–बड़े सिद्ध योगीन्द्रों के लिए भी सभी वैकुण्ठों से ऊपर परात्परतम श्रीसाकेत संज्ञक रामधाम की प्राप्ति अगम है, दुर्लभ। अन्य किसी भी साधन से वहाँ जीव नहीं पहुँच सकता। एकमात्र श्रीसीतारामनाम ही ऐसे परम शक्तिशाली शक्तिशाली हैं, जिनके सहारे साधक वहाँ अनायास सुखपूर्वक पहुँच सकता है।

दुर्लभं योगिनां नित्यं स्थानं साकेत संज्ञकम्।
सुखपूर्व लभेत्तत्तु नाम संराधनात प्रिये।।
'तुलसी रामनाम सम मित्र न आन।
जो पहुंचाव रामपुर तनु अवसान।।(श्रीवरवै रामायण ७/६७)

दिब्य भगवद्धामों के महत्त्वज्ञाता लोकपितामह श्री बह्माजी देवर्षि श्रीनारदजी को गोप्य से गोप्यतम तत्त्व बताते हुए कहते हैं कि नारद! सत्य जानना केवल एक ही बार श्रीरामनाम उच्चारण करने वाले परात्पर श्रीरामधाम अर्थात् साकेत प्राप्त कर लेता है।

श्रृणु नारद सत्यस्त्वं गुह्याद्गुह्यतमं मतम्।
रामनाम सकृज्जप्त्वा याति रामास्पदं परम्।।

श्रीपद्मपुराण में ही श्रीशिवजी श्रीपार्वती जी से कहते हैं कि प्राण त्यागते समय श्रीरामनाम एक ही बार स्मरण कर ले वह अर्चिरादि मार्ग से सूर्यमंडल को भेदन करता हुआ श्रीसाकेत संज्ञक परमधाम को जाता है।

प्राण प्रयाण समये रामनाम सकृत्स्मरेत्।
सभित्वा मण्डलं भानो: परं धामाभिगच्छति।।

इतिहासोत्तम नामक आर्षग्रन्थ में कहा गया है कि प्राचीन काल में सभी महर्षिगण श्रीरामनाम के संकीर्त्तन से ही सिद्ध बन कर ब्रह्मानन्द में मगन रहते थे तथा शरीरान्त होने पर सभी श्रीरामधाम साकेत को गये।

पुरा महर्षय: सर्वे रामनामानुकीर्त्तनात्।
सिद्धा ब्रह्मसुखे मग्ना याता: श्रीरामसद्मनि।।

आदिपुराण में भगवान श्रीकृष्ण श्रीअर्जुन से कहते है कि अनान्य साधनों से हीन भी जो एकमात्र श्रीरामनाम ही का जप करता रहता है। उसकी सद्गति अर्थात् श्रीसाकेत प्राप्ति सुनिश्चित है।

रामनामैव नामैव रामनामैव केवलम्।
गतिस्तेषां गतिस्तेषां गतिस्तेषां सुनिश्रितम्।।

वहीं कहा गया है कि श्रीनामजप परायण प्रेम निर्भर जहाँ जहाँ—जाते है उन भक्तों के पीछे—पीछे सभी मुक्तियाँ उनकी स्तुति करती हुई अनुगमन करती है।

रामनाम रता यत्र गच्छन्ति प्रेमसंप्लुता:।
भक्तानामनुगच्छन्ति मुक्तय: स्तुतिभिस्सह।।

श्रीआदिपुराणान्तर्गत श्रीकृष्णार्जुन संवाद में कहा गया है कि जिनके चित्त में परममांगलिक श्रीरामनाम की स्मृति बनी रहती है वह श्री साकेत के मार्ग में सभी लोक लोकान्तरों के प्रलोभन को जीतकर निर्द्वन्द श्रीपरात्पर रामधाम में पहुँच जाते हैं।

यस्य चेतसि श्रीरामनाम माङ्गलिकं परम।
स जित्वा सकलांल्लोकान् परंधाम परिब्रजेत।।

वहीं कहा गया है कि अर्जुन! जिनके मुख से श्रीरामनाम किसी भी प्रसंग में कहा जाय वह भी सब पापों से मुक्त होकर नित्य रामधाम को जाता है। जो निर्वाण दायक नाम को श्रद्धा से रटते हैं, उनके पुण्य फल को कौन कह सकता है?

रामनाम प्रसङ्गेन ये जपन्तीह चार्जुन।
तेऽपि ध्वस्ताखिलाघौघा यान्ति रामस्पदं परम्।।
घोषयन्नाम निर्वाण कारणं यस्त्वनन्यधी:।
तस्य पुण्यफलं पार्थ वक्तु क: शक्यतेभुवि।।

श्रीअध्यात्म रामायण में वालि ने श्रीराघवजी से कहा है कि जिनके नाम विवश होकर भी कहने पर मरणशील प्राणी आपके परमधाम की प्राप्ति कर लेता है वही आप साक्षात रूप से मेरे मरते समय मेरे आगे विराजमान है।

यन्नाम विवशो गृणन म्रियमाण: परं पदम्।
याति साक्षात त्वमेवासि मुमूर्षो मे पुरस्थितम।।

श्रीसुश्रुत संहिता का वचन है कि सभी अन्यान्य साधनों को छोड़कर एकमात्र सर्वोपरि भगवन्नाम अर्थात श्रीसीतारामनाम का जप करने वाले के ऐहिक जीवन कालीन सर्वमनोरथ पूर्ण होते रहते हैं तथा अन्त में अविनाशी श्रीरामधाम की प्राप्ति सुनिश्चत रूप से हो जाती हैं।

सर्वाभिलाष पूर्णार्थ जपेन्नाम परात्परम।
सर्व त्यक्त्वा ततो याति ह्यवशं पदमव्यथम्।।

बोधायन संहिता के मत से यज्ञादि अनुष्ठान, कूप वावली खोंदवाना, धर्मशाला औषधालय आदि बनवाने को इष्टापूर्त्त कर्म कहते हैं। इनको अधिक रूप से करने पर भी इनसे अधिक—अधिक स्वर्गलोक का सुख भोगना होता है। अन्त में पुन: संसार चक्र में पिसाना पड़ता है। एकमात्र

श्रीरामनाम ही हैं, जिनकी साधना से जीव सामीप्य सायुज्य सालोक्य सामीरय जो मुक्ति चाहे सभी संभव हो जाती हैं।

इष्टापूर्त्तानि कर्माणि सुबहूनि कृतान्यपि।
भव हेतूनि तान्येव रामनाम्ना सुमुक्तद:।।

तापनीय संहिता का कहना है कि श्रीरामनाम परम प्रकाशमान हैं, पवित्रों को भी पवित्र बनाने वाले हैं। संसार से तारने में समर्थ इनसे बढ़कर कोई भी उत्तम मंत्र कहीं नहीं विद्यमान है।

रामानाम परंधाम पवित्रं पावनास्पदम्।
अत: परं न सन्मन्त्रं तारकं विद्यते क्वचित्।।

श्रीहिरण्यगर्भ संहिता के कथनानुसार श्रीरामनाम ही सर्वश्रेष्ठ मन्त्र है 'श्रीरामनाम ही परम अवलंब है श्रीरामनाम ही जन्म–मरण के भय को छुड़ाकर संसार से तारने वाले अर्थात् तारक एकमात्र श्रीरामनाम ही है।

श्रीरामेति परं मन्त्रं तदेव परमं पदम्।
तदेव तारकं विद्धि जन्ममृत्यु भयापहम्।।

वहीं आदिपुराण में श्रीकृष्णार्जुन संवाद कहता है कि स्वर्ग नरक देने वाले शुभाशुभ कर्मों को करते हुए भी यदि वह श्रीरामनाम का गान करता है तो वह भी परात्पर श्रीदिव्य साकेत धाम में पहुँच कर श्रीराधवजू के दिव्य विहार का आनन्द लूटेगा।

गायन्ति रामनामानि कर्म कुर्वन्ति चाखिलम्।
स याति परमं स्थानं रामेण सह मोदते।।

वहीं यह भी कहा गया है कि जो अन्यान्य साधन छोड़कर नाम जपता है वह चाहे किसी भी प्रकार से जपे वह बिना श्रम के ही आदरपूर्वक परात्पर श्रीसाकेतधाम को जायगा हो।

येनकेन प्रकारेण नाममात्रैक जल्पका:।
श्रमं विनैव गच्छन्ति परे धाम्नि समादरात।

वहीं यहाँ तक कहा गया है कि श्रीरामनाम के अनुरागी जापक के दर्शन से जो स्नेहार्द हो जाता है, वह भी परमानन्द सागर श्रीरामधाम को जायगा।

नामयुक्ताञ्जनान् दृष्ट्वा स्निग्धो भवति यो नर:।
स याति परं स्थानं परमानन्दसागरम्।।

श्रीसौर संहिता में कहा गया है कि दिवारात्रि श्रीरामनाम ही का कीर्त्तन करना चाहिये। सब सारो के सार तथा मोदनिधान तो यही है। जन्मजन्मान्तरों के पाप जनित दु:ख नामजप से मिटते हैं। सब धर्मों के फल मिल जाते हैं। अन्त में जापक परम धाम को प्राप्त करता है।

श्रीराम नाममनिशं परिकीर्त्तनीयं वर्तेतमोद सुनिधानमशेष सारम्।
जन्मार्जितानि विविधान्यपहाय दु:खान्यत्यन्त धर्म निचयं परधाममेति।।

हिरण्यगर्भ संहिता में श्रीअगस्त्य जी श्रीसुतीक्ष्णजी से कहते हैं। श्रीरामनाम अभिराम को विवश होकर भी उच्चरण करे तो वह सभी पापों से मुक्त होकर श्रीसाकेत जाता है।

''अभिरामेति यन्नाम कीर्त्तितं विवशाच्च यैः।
तेऽपि ध्वस्ताखिलाघौघा यान्ति रामास्पदं परम्।।

मार्कण्डेय संहिता का वचन है कि श्रीरामनाम में कृपादि अनंत कल्याण गुणागण भरे हैं। श्रीरामनाम ही सदा जीवों के शोक हरने में समर्थ हैं। संसार से तारनेवाले भी यही हैं। अतः हम तो भई इन्हीं श्रीसीतारामनाम का जप करते हैं। जिन्हें अन्य नामों में, अन्य मंत्रों में रुचि हो उन्हें मै मना नही करता। अपनी–अपनी रुचि न्यारी–न्यारी होती ही है सबकी।

''कृपादि गुण सम्पन्न सर्वदा शोक हारकम्।
तारकं संसृतेनित्यं रामनाम भजाम्यहम्।।''

श्रीनारायण रहस्य नामक तन्त्र ग्रन्थ में कहा गया है कि श्री रामनाम ही तीनों लोकों के प्राणियों को अपने कीर्त्तन से तारते रहते हैं अतः श्रीरामनाम स्वरूप को हम बार–बार प्रणाम करते हैं।

''यस्तारयति भूतानि त्रिलोकी संभवानि च।
स्वनाम कीर्त्तनेनैव तस्मै नामात्मने नमः।।''

बामनतन्त्र में कहा गया है कि इस पृथ्वी पर न जाने कितने मनुष्य उत्पन्न हुए और कितने मरे किन्तु निःसन्देह तर गये वही जिन्होंने श्रीरामनाम का कीर्त्तन किया।

''पृथिव्यां कतिधा लोका न जाताः कति नो मृताः।
मुक्तास्तेऽत्र न संदेहो रामनामानुकीर्त्तनात्।।''

श्री हनुमन्नाटक में श्री हनुमतलालजी श्रीअगस्त्यजी से कहते हैं कि बैठा हो, सोया हो, चाहे कहीं भी रहें श्रीरामनाम स्मरण करते रहने से वह श्रीसाकेत को ही जायगा।

''आसीनो वा शयानोवा तिष्ठतो यत्रकुत्र वा।
श्री रामनाम संस्मृत्य याति तत्परतमं पदम्।।''

नाम तो अनन्त तामे रामनाम भूप है।
नारायण आदिनाम कहे कोटि बार तऊ
तुल्यता न होत नाम बारक अनूप है।
और नाम देत भुक्ति मुक्ति विष्णु लोक लगि
रटे रामनाम देश पावै रस रुप हैं।।
परम पियूष और मत अंधकूप है।
(श्री) युगल अनन्य साँच बदत बजाय बात
नाम तो अनंत तामें रामनाम भूप है।।

अब हम पुराणों के प्रमाण द्वारा सिद्ध करेंगे कि मुक्ति श्रीरामनाम से ही सुलभ होती है। श्रीक्रियायोगसार नामक पुराणखंड में कहा गया है कि कोटि कोटि जन्मों तक अत्यन्त साधनकष्ट उठाने पर भी सुमुक्ति अर्थात, श्रीधाम की प्राप्ति संदिग्ध बनी रहती है सो श्रीरामनाम से सहजही मिल जाती है। अब आपही बताइये कि श्रीरामनामजप से बढ़कर और कौन साधन है?

''अत्यन्त दुःख लभ्योपि सुमुक्तिर्जन्म कोटिभिः।
लभ्यते रामनाम्नैव कर्मास्ति किमतः परम्।।

श्रीवृहद्विष्णुपुराण में कहा गया है कि विकारी हो, अधिकारी हो, अत्यन्त सब दोषों का भाजन ही क्यों न हो, श्रीसीतारामनाम का कीर्त्तन करने से परम साकेतधाम जायगा ही। अतः वेदोकी सम्मति में नाम कीर्त्तन से बढ़कर कोई साधन नहीं है। सब सिद्धान्तों का सार निचोड़ नाम कीर्त्तन ही है। इससे मुक्ति सबों के लिए दुर्लभ है।

''अविकारी विकारीवा सर्व दोषैक भाजनः।
परमेशपद यान्ति सीतारामनुकीर्त्तनात।।''
नातः परतरः पायो दृश्यते सम्मतौ श्रुतौ।
सारात्सारतमं शुद्धं सर्वेषां मुक्तिदं परम्।।

श्रीनृसिंहपुराण में आया है कि जो पापी मनुष्य नरक रूप है, जीते हुए भी मृतक तुल्य मानने योग्य है, वैसी नारकी की भी श्रीरामनामकीर्तन से मुक्ति हो जाती है।

''नरका ये नरा नीचा जीवन्तोऽपि मृतकोपमः।
तेषामपि भवेन्मुक्ती रामनामानुकीर्त्तनात्।।'

वृहन्नारदीयपुराण में कहा गया है कि श्रीरामनाम जापक सदा कृतार्थ रूप हैं, नाम प्रभाव से शुद्ध हो चुके हैं, श्रीनामसरकार उन्हें सभी उपद्रवों से रक्षा करते रहेंगे और अन्त में श्रीनाम के प्रभाव से ही परमधाम अर्थात् श्रीसाकेत को भी प्राप्त कर लेंगे।

'' ते कृतार्थाः सदा शुद्धाः सर्वोपाधिविवर्जिताः।
नाम्नः प्रभावमासाद्य गमिष्यन्ति परं पदम्।।''

श्रीनारदीयपुराण में श्रीसूतजी श्रीशौनकजी को उपदेश होते देते हुये कहते हैं कि हे विपेन्द्र, श्रीरामनाम स्मरण करने से, सभा क्लेश मिट जाते हैं श्रीनामाप्रताप से उन्हें कोई विघ्न नहीं व्यापता तथा अन्त में मुक्ति पाते हैं।

राम संस्मरणच्छीघ्रं समस्तक्लेशसंक्षयः।
मुक्तिं प्रयाति विप्रेन्द्र तस्य विघ्नो न वाधते।।

श्रीविष्णुपुराण में कहा गया है कि श्रीरामनाम निर्गुण सगुण सभी ब्रह्मरूपों के भी ईश्वर हैं। आदि देव भी यही हैं, भूमंडल में वह जीव धन्य है जो इन रामनाम का सतत स्मरण करते रहते हैं। श्रीनाम निर्मल अनपायिनी, परमानन्द दायिनी भक्ति को देने वाले हैं तथा यत्नपूर्वक जपने पर इनसे परम मुक्ति श्रीसाकेत प्राप्ति भी हो जाती है।

श्रीरामनाम सकलेश्वरमादिदेवं धन्याजना भुवितले सततं स्मरन्ति।
तेषां भवेत्परममुक्तिप्रयत्नतस्तथा श्रीरामनाम भक्तिरचला विमलाप्रसादा।।

श्री रहस्य नाटक का वचन है कि श्रीरामनाम जपने पर अत्यन्त मीठे स्वाद को सरसाने वाले हैं। मंगलों के भी मंगल कर्त्ता हैं। समस्त वेद रूपी लता जाल के यह चिन्मय फल है। श्रद्धा से या अश्रद्धा से जो एकबार भी इनका उच्चारण कर लें, वह श्रीरामनाम के प्रभाव से संसार से पार उतर जाता है

मधुर मधुरमेतं मङ्गलं मङ्गलानां सकल निगमवल्ली सत्फलं चित्स्वरूपम्।
सकृदपि परिगीतं श्रद्धया हेलया वा स भवति भवपारं रामनामानुभावात्।।

जो मोक्ष श्रीराम से भिन्न अन्य उपाय से प्राप्त हुआ है, वह मोक्ष भी विधवा स्त्री की भाँति श्रीरकार मकार रूपी सौभाग्य सूचक कर्णफूल से विरहित एवं अशोभित है। ऐसा मोक्ष व्यर्थ है। उसी रहस्य नाटक में कहा गया है कि चित्त रूपी भ्रमर को मधुर प्रेम मकरन्द पान करने के लिए दोनों नामवर्ण दो प्रेममकरन्द परिपूर्ण कमल हैं। दोनों को सुनकर कानों को इतना स्वाद मिलता है मानों सुधा पान कर रहे हों। श्री सरस्वती के ये दोनों नामवरण दोनों नयन हैं। इनके बिना श्री गिरा देवी भी अन्धी हैं। महामोह रूपी सघन अन्धकार को भगाने के लिए दोनों वरण सूर्य चन्द्र से सभी अधिक समर्थ हैं। वेद सिन्धु को मथकर काढ़े गये दोनों कौस्तुभमणिवत हैं। मुनिमानस में विहरने वाले दोनों राजहंस हैं। ऐसे सुखदायक श्री रामनामाभिराम में दोनों मधुर मनोहर वत्ण राज हैं।

येतोऽले: कमलद्वयं श्रुतिपुटी पीयूषपूरद्वयं वागीशा नयनद्वयं घनतमश्वणडांशु चन्द्रद्वयम।
छान्दसिन्धु मणिद्वयं मुनिमन: कासार हंसद्वयं मोक्षश्री श्रवणोत्पलद्वयमिदं रामेति हवर्णद्वयम्।।

श्री प्रेमार्णवनाटक का आदेश है कि यदि किसी को परात्पर ब्रह्म धाम की प्राप्ति की स्वच्छ अभिलाषा हो, तो उसे सभी अन्यान्य साधनों की आशा छोड़कर, मंगलमय श्रीरामनाम का स्मरण करना चाहिए।

सर्वाशां संपरित्यज्य संस्मरेन्नाम मङ्गलम्।
यदीच्छा वर्तते स्वच्छा प्राप्ति रूपा परात्परा।।

कूर्मपुराण में भगवान शंकरजी भगवती पार्वती से कहते हैं हे कल्याणी, श्री रामनाम गोप्य से भी गोप्य तत्व हैं। मेरे तो जीवन सर्वस्व ही हैं। इनके जपसे विलक्षण भोग तथा मुक्ति मिलते हैं।

गोप्याद् गोप्यतमं भद्रे सर्वस्वं जीवनं मम।
श्रीरामनाम सर्वेशमद्भुतं भुक्ति मुक्तिदम्।।

ब्रह्माण्ड पुराण में श्री धर्मराज स्वयं परमप्रभु श्री रामचन्द्रमाजू से कहते हैं कि हे राजन्! आपका नाम कीत्तर्न सुनकर, राक्षस, भूतप्रेत गुप्तचर वर्ग सभी भाग जाते हैं। यदि उपद्रव करने

पर तुल गये, तो उनका नाश भी हो जाता है। कीर्त्तन कार अन्त में आपके साक्षात् परम धाम भी साकेत को जाते हैं।

श्री यजुर्वेद में आया है श्री राघवजी के नाम का परम सुयश फैला है। श्रीराम नाम जाप से ही मुक्ति हो जाती है।

'यस्य नाम महद्यश: रामनाम जपादेव मुक्तिर्भवति।'

श्री ऋग्वेद का मंत्र कहता है, परब्रह्म स्वरूप ज्योतिर्मय श्रीराम नाम की उपासना मुक्ति चाहने वालों को करनी चाहिए।

ॐ परं ब्रह्म ज्योतिर्मय नाम उपास्यं मुमुक्षुभिः।'

श्री सामवेद का आदेश है कि जिस श्रीराम नाम में ॐ कार प्रतिष्ठित है, उसी रामनाम का ध्यान करना चाहिए, जो संसार से पार जाना चाहते हैं उनके लिये।

'ॐमित्येमकाक्षरं यस्मिन्प्रतिष्ठितं तन्नामध्येयं संस्सृति पारमिच्छोः।'

भगवान श्री कृष्ण श्री आदि पुराण में श्री अर्जुन जी से यह सिद्धान्त बताते हैं कि श्री राम नाम स्मरण के प्रभाव से ही परमपद श्री साकेत प्राप्त होता है, मैं सत्य सत्य कहता हूँ। श्री नाम फल को मैं भी यथातथ्य नहीं जानता।

श्री रामस्मरेणनैव नरो याति पराङ्गतिम्।
सत्यं सत्यं सदा सत्यं न जाने नामजंफलम्।।

इस प्रसंग में भी जो मुक्ति, परमधाम की बात कही गई, उन सबों से नित्य अयोध्या अर्थात् साकेत की प्राप्ति ही माननी चाहिये। इस सम्बन्ध में श्री बड़े महाराज जी के श्री सीतारामनाम सनेह वाटिका से नीचे उद्धृत किया हुआ कवित्त विचारणीय है।

'भजै जौन जाको तौन पावै ताको धाम है।
और को उपासक न और के सदन जात
बात वेद विदित विचारिये ललाम है।
सीताराम सेवै तौन लेवै श्री अवधधाम
अचल मोकाम हीन काल कर्म काम है।।
हुजिये अनन्यमति खौंचि इत उत सन
पूजिये हमेश इष्ट गुन गन ग्राम है।
(श्री) युगल अनन्य तिल भरि हूँ न संक यामें
भजै जौन जाकौ तौन पावै ताको धाम है।।

श्री नामाभ्यास से परमानन्द श्री साकेतधाम की प्राप्ति के लिए क्या क्या साधन करना होगा? श्री बड़े महाराज कहते हैं कि कामना त्यागकर, केवल एक पहर मन लगाकर वैखरी वाणी में नाम रटले। शीत घाम की सुरक्षा में लगा रहे, माता–पिता पुत्र कलत्र की ममता में लिपटा रहे, तोभी उसकी संसार बाधा मिट जाएगी।

रटै मन लाय नाम याम एक, काम त्यागि
पावैं परमेश परानन्द धाम जीव जड़।
सीत बात घाम तात मात सुत नात वाम
बीचहू वितावै तऊ मिटैगो उपाधि बड़ ।१०२।

श्री नारायण रहस्य नामक मंत्र शास्त्र में स्वयं श्री मन्नारायण देव देवर्षि नारद जी को बता रहे हैं कि जैसे उग्रवीर्य औषधि में यह अमोघ प्रभावशाली वस्तु गुण होता है कि उसे जानकर या अनजान में चाहे कैसे भी खालो, तो उसका यथागुण असर होगा ही, उसी भाँति श्री राघव नाम का अचूक प्रभाव है कि चाहे किसी भाँति मुख से नामोच्चरण हुआ, तो उसे अनायास योगिदुर्लभ श्री साकेत धाम की प्राप्ति अवश्य ही होगी।

यथौषयधं श्रेष्टतमं महामुने अजानतोऽप्यात्मगुणं प्रकुर्वते।
तथैव श्री राघवनामतो जना: परंपदं यान्त्यनसायसत: खलु।।

अत: जो नाम तीनों लोकों के प्राणियों को अपने कीर्त्तन मात्र से तार देते हैं, उन नामको भगवान नारायण बार—बार नमस्कार करते हैं।

यस्तारयति भूतानि त्रिलोकी सम्भवानि च।
स्वनाम कीर्त्तने नैव तस्मै नामात्मने नम: ।।

श्री ब्रह्म रहस्य का वचन है कि सभी आचार विचार से हीन, ताप क्लेशादिका भागी भी, यदि श्री राम नाम का कीर्तन कर लेता है, तो वह सनातन ब्रह्म 'राम अनादि अवधपतिसोई।' के पास पहुँच जाता है।

सर्वाचार विहीनोऽपि ताप क्लेशादि संयुत:।
श्री रामनाम संकीर्त्य याति ब्रह्म सनातनम्।।

श्री विष्णु रहस्य में कहा गया है कि श्री राम नाम का निरन्तर जप करने वाला, क्षण मात्र में अज्ञानवश कृत कर्मबन्धन से मुक्त हो जाता है। अन्त में कोटि कोटि सूर्य के समान प्रकाशमान मंगलमय श्री राम धाम को प्राप्त होता है।

यस्य नाम सततं जपन्ति येऽज्ञानकर्मकृत बन्धनं क्षणात्।
सद्य एव परिमुच्य तत्पदं याति कोटि रवि भास्वरं शिवम्।।

श्री आश्वलायन तन्त्र में कहा गया है सभी प्रकार के धर्मों से वर्हिभूत हो जाने वाला अधमनर, परात्पर ब्रह्म श्री रघुनाथ जी के नामों का कीर्त्तन करता है, तो वह भी उनके परमधाम को प्राप्त करेगा।

ये कीर्त्तयन्ति नामानि रामस्य परत्मात्मन:।
सर्व धर्म वहिर्भूतास्तेऽपि यान्ति परं पदम्।।

वहीं कहा गया है कि स्वप्न में भी श्री रामनाम का स्मरण करने वाला, मुक्त हो जाता है। जो प्रीति पूर्वक श्री रामनाम का कीर्त्तन करते रहते हैं, उन्हें कौन–कौन दुर्लभ फल मिलेगा इसका पता किसी को नहीं है।

स्वप्नेऽपि रामनाम्नस्तु स्मरणान मुक्तिमाप्नुयात।
प्रीत्या संकीर्त्तयेद्यस्तु न जाने किं फलं लभेत्।।

श्री नारायण तन्त्र में कहा गया है कि सर्वोपर दो अक्षर वाले श्री राम नाम का जो निरन्तर जप करते हैं, वे भागवतों में सर्व श्रेष्ठ हैं, सुखमय हैं सर्वदा पूज्य हैं। सुत कलत्र आदि ग्राहों से तथा तृष्णा रूपी जल से परिपूर्ण भवसमुद्र से पार उतर कर, वह श्री राघव जू की सायुज्य मुक्ति प्राप्त कर लेते हैं।

ये गृणान्ति निरन्तरं परपदं रामेति वर्णद्वयं
ते वै भागवतोत्तमाः सुखमया पूज्यास्तु ते सर्वथा।
ते निस्तीर्य भवार्णवं सुत कलत्राद्यैस्तु नक्रैयुतं
तृष्णा बारि सुदुस्तरं परतरे सायुज्यमायान्ति वै।।

श्री रामनाम सरकार मुक्ति देने में अनधिकारी का विचार नहीं करते, ब्राह्मण हो, चाहे राक्षस हो, पापी हो या धार्मिक हो, श्री राम नाम का उच्चारण कर लेना चाहिये। वह संसार बन्धन से मुक्त होगा ही। यह प्रमाण श्री भुशुण्डि रामायण का है।

द्विजो वा राक्षसो वापि पापी वा धार्मिकोऽपि वा।
राम रामेति यो वक्ति स मुक्तो भववन्धनात।।

मन शांत चाहै तो एकांत रहै इन्द्री रोकि
अवलोकि नाशा भौंह बैठि प्रान साधै जू।
साधु होन चाहै तो सरल रहै सबही सो
गहै ज्ञान विरति भगति निरूपाधै जूं।।
प्रभु प्रेम चाहै तो सुसंग करै प्रेमिन को
सुनै कथा गुन रूप ध्यान नेह नाधै जू ।
तरन जो चाहै तो सरन सीताराम होय
तारक सुमंत्र रामनाम अवराधै जू।।
धारत जे पतित पुनीतता विरुद नित्त
तेई प्रभु कृपा चित्त धारिहैं पै धारि है।
मारत है काल जाके बल महाबलिन को
तेई काम मलिन को मारिहै पै मारि है।।

जारत है जग जाके जाप रुद्र रस रङ्ग
ताको तेज मेरे पाप जारिहैं पै जारिहैं।
तारत है जो सुनाय काशी ईश सोइ मोहि
तारक श्री रामनाम तारिहै पै तारि हैं।।

नाम जप से श्री साकेत प्राप्ति का दृष्टान्त

महात्मा बजरंगदास जी का जन्म विक्रम सम्बत् १८५५, चैत्र शुक्ला नवमी के दिन, अयोध्या से उत्तर अट्ठारह कोश पर स्थित एक छोटे से गाँव में हुआ था। पिता का नाम श्री गोविन्दप्रसाद और माता का नाम श्रीमती सावित्री देवी था। बाल्यावस्था से ही इनमें जन्मजात बैराग्य के लक्षण दीख पड़ते थे। वैराग्य के कारण ही विद्याध्ययन भी अधिक नहीं कर पाये। गृहबंधन में जकड़ने के लिए माता–पिता ने इनका अल्पावस्था में ही विवाह कर दिया। सावन भादों को बढ़ी हुई बेगवती नदी का प्रवाह कौन बाँध सकता है? अभी बीस वर्ष के भी नहीं हुये थे कि रातों रात घर से छिप कर भाग चले। सद्गुरु की खोज में जहाँ तहाँ भटकते हुये, आप प्रभु प्रेरणा से श्रीगोकर्णनाथ धाम के पास ही कङ्कोड़ी चौकी नामक एक श्री रामानंदी संत के आश्रम में पहुँचे। महात्मा कमलदास स्थान धारी होकर भी वीतराग भजनानंदी संत थे। उन्हीं से आपने पंच संस्कार पूर्वक वैष्णवी दीक्षा ली। श्री गुरुदेव से भजन भावना की रीति सीखकर, वहीश्री गुरु सेवा में तत्पर रहने लगे। घरवाले इन्हें ढूँढ़ते ही थे। किसी प्रकार वहाँ आपका पता पाकर पहुँचे और इन्हें घर लौट चलने को बाध्य करने लगे। उस विघ्न के मारे श्री गुरु आज्ञा लेकर आप तीर्थाटन को निकल पड़े। श्री द्वारका धाम पहुँचे। वहाँ से सिद्धपुर, आबू, मथुरा, वृन्दावन, चित्रकूट, प्रयाग, काशी, गया आदि तीर्थों का दर्शन कर श्री अयोध्या पधारे। यहाँ कुछ दिन सानन्द रहकर, श्री जनकपुरी जाकर दर्शन किये। संयोग वश श्री वद्रीनारायण जाने वाले कुछ सन्तों का संग पाकर, गंगोत्तरी, यमुनोत्तरी, बद्रीनारायण होते हुए पुनः द्वारका पधारे। लौटती बार डाकोर तथा सिद्धपुर होते हुए अकेले धरणीधर भगवान के दर्शनार्थ चल पड़े। भगवान धरणीधर के दर्शन कर, गुजरात की जनता को निश्छल अहिंसक भगवत भागवत प्रेमी जानकर, वहीं एक नहेड़ी नामक ग्राम के समीप एक रमणीय झाड़ी एवं समीप ही निर्मल जलाशय देख वहीं झोपड़ी लगाकर, भजन करने लगे।

लगभग बीस वर्ष की अवस्था में आपने गृह त्याग किया था, पांच वर्ष के लगभग तीर्थाटन में लग गये। नहेड़ी में एक गोभक्त ब्राह्मण नंदीराम से आपको सत्संग सम्बन्ध से मैत्री हो गई। गोसेवा में जब नन्दराम जी स्वयं असमर्थ हो गये, तो बाबा बजरंगदास जी ने उनकी गो सेवा सम्हाली। तब तक आपकी अवस्था तीस वर्ष की हो चुकी थी। उसी समय आपका असमायिक मृत्युयोग आया। ज्वरावेश के कारण एक रात आपका पंच भौतिक शरीर चेतना शून्य हो गया। देवगण विमान में बैठकर, आपको देव लोक ले गये। एक रमणीय बागीचे में इन्हें बैठाकर, देवगण जाने लगे। बाबा ने पूछा, आप लोग कौन हैं? मुझे कहाँ लाये हैं? मुझे यहाँ कब तक रहना है? देवताओं ने उत्तर में कहा हम लोग देवगण हैं। इस देवलोक में आप लाये गये हैं और हमलोग

ठीक–ठीक नहीं कह सकें कि आपको यहां कब तक रहना होगा। आपने कहा मुझे देवलोक का निवास पसंद नहीं है। मैं तो अपने इष्टधाम श्री साकेतपुरी को जाऊँगा। कृपया आप लोग मुझे वहाँ पहुचावे। आपकी बात सुन, देवताओं ने आपस में परामर्श कर, कहा आप कुछ देर यहीं रहे। थोड़ी देर में आपको संतोषप्रद उत्तर मिलेगा। यहाँ प्रश्न यह होता है कि एक नैष्ठिक सदाचार परायण रामभक्त मरणोपरान्त देवलोक लाये ही क्यों गये? उतर सीधा है। बाबा ने श्री साकेत प्राप्त करने वाले श्री राम नाम का अभ्यास किया नहीं। आपके साधन में प्रधान रूप से अब तक तीर्थाटन और गौसेवा थी। इन कर्मों का फल स्वर्गही तो है। श्री गोस्वामिपाद कहते हैं–

''न मिटे भव संकट दुर्घट है तप तीरथ जन्म अनेक अटो।''
''बिनु विश्वास भगति नहीं तेहि बिन् द्रवहि न राम''

अपने इष्टाराधना में कट्टर अनन्य हुये बिना शरणागति भी नहीं बनती है। भक्ति प्रपत्ति बाबा से सधी नहीं थी। नामजप हुआ नहीं था। आखिर साकेत मिले भी तो कैसे?

हाँ तो, कुछ देर में देवगण लौटकर आये और बाबा को आदेश सुनाया कि आपकी आयु १२ वर्ष और बढ़ा दी गयी है। पुन: मृत्यु लोक में जाकर भगवद्भजन कीजिये, तब भजन के प्रभाव से साकेत पाइयेगा। यहाँ आपके आश्रम पर भक्तगण आपके दिवंगतशव की रातभर जग कर सुरक्षा कर रहे थे। प्रात: की प्रतीक्षा में अब तक आपका मृतसंस्कार नहीं हो पाया था। इतने ही में बाबा धीरे–धीरे सांस लेने लगे और कुछ देर मे उठ बैठे। आपके पुनर्जीवन पर भक्तों के हर्षका ठिकाना नहीं रहा। अपने भक्तों को देव लोक का सारा वृत्तान्त सुनाया। लोग बाबा को बारंबार नमन कर, अपने–अपने घर चले गये।

पुनर्जीवन मिलने पर अब बाबा श्री साकेत प्राप्ति के तीव्रसाधन में तत्पर होना चाहते हैं। देवताओं ने भजन करने का आदेश दिया सही, पर भजन करे भी तो कैसे और क्या? ऊहापोह में कुछ निश्चय पर नहीं पहुँचने के कारण व्याकुल हो रहे थे कि श्री हनुमानजी कृपा कर आपके सामने साक्षात् रूप से प्रगट हो गये। आपको नामाभ्यास की युक्ति बतायी। पुन: श्री हनुमतलाल जी अन्तर्धान हो गये। तब से आप दिन रात जगकर, अथक रूप से श्रीसीता राम नाम रटन में तत्पर हुये। गाँव का भक्त थोड़ा सा गोदुग्ध आपको दे जाता था, चौबीस घंटे में एक बार दूध लेकर आप नामजप दिन–रात करने लगे। जीवन भर पैर पसारकर सोने का नाम नहीं लिया। रात्रि में निद्रा तंग करे तो टहलने लगते थे। कभी एक इमली के वृक्ष में चोटी बांधकर बैठते। ऊँधने पर चोटी खींच जाय दुखने लगे पुन:ऊँघाई से सावधान होकर नामजपने लगते थें। कुछ दिनों के बाद श्रीरामनाम के अनन्यप्रेमी भगवान शिवजीने आपको दर्शन दिया। आपने उनसे अपने इष्ट श्रीसीताराम जी के साक्षात् दर्शन का वरदान माँगा। भगवान शिव ने इनकी मनोकामना पूर्ण होने का आशीर्वाद दिया और कहा यहाँ से थोड़ी दूर पर एक झाड़ी है वहाँ एक तालाब है। तालाब पर एक पीपल का वृक्ष है। वहीं रहकर नामाभ्यास में तत्पर रहो तुम्हें इष्टदर्शन अवश्य होंगे। श्रीशिवजी के बताये हुये स्थान को ढूँढ़ निकाला। यहीं कटाव नामक आपका भजनाश्रम बना। भजनके

द्वारा आपको इष्टमिलन की तीव्र विरहोत्कंठा जागी। साथ साथ आपका संसार से तीव्रवैराग्य और प्रचंड विरह देख प्रभु ने कृपापूर्वक प्रगट होकर सपरिकर दर्शन दिया और बहुत भाँति से आपको प्यार किया।

आज आपकी देवदत्त आयु के बारहोवर्ष पूरे हुये। माथे में तीव्र दर्द उठा। प्रार्थना करने पर दर्द शान्त हो गया । फिर बारह वर्ष अखंड नाम जप के प्रभाव से आपको पुन: दीर्घ जीवन मिला। आप स्वयं तीव्र नाम साधना पूर्वक अपना जीवन तो व्यतीत ही कर रहे थे, प्रभु आज्ञा से आपके दर्शनार्थी समागत भक्तों को भी रामरटन में लगाकर उनके लौकिक तथा पारलौकिक मंगल बनाने में तत्पर रहनें लगे। आपके सम्पर्क में आने वाले वहाँ आसपास की जनता में नाम लगनका अप्रत्याशित रूप में प्रचार और प्रसार हुआ। देवदत्त आयु के पश्चात् भी आप अड़सठ वर्ष और जीवित रहे। अंत में सम्वत १९९५ की माध तृतीया को आप अपने प्रेमी भक्तों एवं शिष्यों को नाम जपका उपदेश देकर भौतिक शरीर त्याग, सुन्दर सच्चिदानन्दमय दिव्य रूप धारण कर श्रीसाकेत धाम के नित्य निवासी बन गये।

परलोक संवारने के निमित्त नामजप

पूज्यपाद श्रीहरिबाबा कल्याण के भगन्नामांक पृ०७५ में लिखते हैं किसी सत्संगी मित्र ने एक बार मुझसे कहा कि मेरे परलोकवासी ताऊ बड़े कष्ट और दुर्दशा में है। मैने उत्तर में कहा कि यहां कोई भय नही आओ! हमसब मिलकर उनके निमित्त नामसंकीर्त्तन करें। उसी समय बहुत से पुरुष मिल गये और लज्ज को त्यागकर ताली बजाते हुए स्वर से नामसंकीर्त्तन करने लगे। प्राय: एकघंटा नाम कीर्त्तन होता रहा उसी रात को फिर उन्होंने स्वप्न में देखा कि वे पूर्णरूप से आनंद में है। कल्याण सम्पादक भा श्रीहनुमानप्रसाद पोछार उसी पृष्ठ की पादटिप्पणी में इस घटना के उल्लेख के साथ--साथ निजी अनुभ भी मिलते हैं। 'प्राय: इसी प्रकार का मेरा भी एक समय का अनुभव है— सम्पादक।।'' एक और सत्सं मित्र के पिता जी का कुष्ठ रोग से देहांत हुआ। उनके पिताजीकी नाम में सामान्य श्रद्धा थी, वे को उच्चकोटि के भगवदभक्त नहीं थे, वरन किसी अंश में उनकी साधु संतों पर श्रद्धा थी, पिताजी क सद्गति के निमित्त शास्त्रोक्त विधि करने की सत्संगी मित्र की सामर्थ्य नहीं थी। वे बड़ी चिन्ता में पड़े अंत में उनके मन में आया कि नाम संकीर्त्तन से बड़ा तो कोई यज्ञ नहीं है, अतएव सत्संगियों ने मिलक ताल बजाते हुये उच्चस्वर से बड़े जोश के साथ हरिकीर्त्तन आरंभ किया। संकीर्त्तन करते ही उनमें दो तीन सत्संगियों को यह भान हुआ कि पिताजी विमान पर बैठे बैकुण्ठ जा रहे हैं। इस घटना से ना में सबकी श्रद्धा बढ़ गयी। इस घटना वर्णन के साथ तत्कालीन कल्याण संपादक भाई श्री हनुमान प्रसा जी पोद्दार वहीं पाद टिप्पणी में अपना विचार निम्नलिखित पंक्तियों में व्यक्त करते हैं।

'' कोई यह न समझे कि शास्त्रोक्त श्राद्ध पिडदानादि क्रिया नहीं करनी चाहिये, वास्तव भगवन्नाम इतनी बहुमूल्य और अलौकिक वस्तु है कि जिसके साथ इन लौकिक क्रियाओं की किर

अंश में भी तुलना नहीं हो सकती। मरते हुए प्राणी को नामश्रवण करवाना तो प्रत्येक कुटुम्बों का कर्त्तव्य ही होना चाहिये, सबसे बड़ी सेवा यही होती है, क्योंकि इसी से जीव का परमकल्याण होता है। मरने के बाद भी अन्यान्य शास्त्रोक्त क्रियाओं के साथ साथ नाम—संकीर्त्तन किया जाना प्राणी के लिए निःसंदेह अत्यंत हितकर है।

आपको किसी भी बहुत पहले मरे हुये, अथवा थोड़े दिन पूर्व दिवंगत आत्मीय सम्बन्धी की सद्‌गति के निमित्त कुछ करना हो, तो आप यथासंभव उनके लिए अष्टयाम, नवाह्नमास—व्यापी वर्षव्यापी अखंड श्री राम नाम का कीर्त्तन करवायें। कीर्त्तन अर्थाभाव से न बने, तो आप स्वयं उनके निमित्त नाम जपिये। ऊपर के दृष्टान्तों से तथा इस तुच्छ लेखक के अनुभव से भी दिवंगत व्यक्ति के नाम से जप या कीर्त्तन उन्हें अवश्य भवद्धाम की प्राप्ति करायेंगें, चाहे वे नरक में या किसी योनि में भटक गये हों।

श्री जानकी रमण में प्रीति भक्ति

श्री ब्रह्मवैवर्तपुराण का प्रसंग है। भगवान वेद व्यास जी देवर्षि नारदजी से कहते हैं कि यदि परमानन्ददायिनी राघव प्रीति पाना चाहते हैं, तो आपको उनके नाम का कीर्त्तन करना चाहिए।

यदीच्छेत्परमां प्रीतिं परमानन्ददायिनीम।
तदा श्री राम भद्रस्य कार्य नामानुकीर्त्तनम्।।

श्री मार्कण्डेय पुराण में श्री व्यास देव अपने शिष्यों को समझा रहे हैं। श्री राम नाम वेदों के सार सिद्धान्त हैं। सब सुख के एक मात्र दाता हैं। श्री रामनाम को ही स्वयं परमब्रह्म समझना। नामजप करने वाला चाहे जो हो, सबों को दिव्य प्रेम देने वाले हैं।

वेदानां सार सिद्धान्तं सर्वसौख्यैक कारणम्।
रामनाम परब्रह्म सर्वेषां प्रेमदायकम्।।

श्री लघुभगवत में कहा गया है कि नाम कीर्त्तन से सभी परमार्थ बन जाते हैं। स्वस्वरूप परस्वरूप का सरसज्ञान चाहिये, विषयों से तीव्र वैराग्य चाहिये, परात्पर ब्रह्म श्री जानकी रमण में प्रीति चाहिए, तो परमानन्ददायक सर्वविलक्षण श्री राम नाम आपको सब देंगे।

ज्ञानं वैराग्यमेवाथ तथा प्रीतिः परात्मनि।
संलभेन्नाम संकीर्त्य ह्यभिरामाख्यमद्भुतम्।।

श्री भारत विभाग नामक पुराण में कहा गया है श्री रामनाम प्राण यात्रा के राहखर्च हैं, संसार के जन्ममरण रूपी रोग को छुड़ाने की औषधि है, दुःख शोक से रक्षा करने वाले हैं। योगशास्त्र कथित दस प्रकार के अन्तर्नादों में महानाद तो परधाम से ही होता है, उसे भी आप नाम जपकर सुन सकते हैं। श्री साकेत प्राप्ति महामोक्ष कहाता है, वह भी श्री रामनाम देने वाले हैं। मधुर उपासना वाली मधुराप्रीति चाहिये, तो वह भी श्रीराम ही देंगे और [illegible]

प्राणप्रयाण पाथेयं संसारव्याधि भेषजम्।
दुःख शोक परित्राणं श्री रामेत्यक्षर द्वयम्।।
महानादस्य जनकं महामोक्षस्य हेतुकम्।
महाप्रेम रसेशानं महामोदमयं परम्।।

श्री याज्ञवल्क्य स्मृति में कहा गया है कि आप विषयों से तीव्र वैराग्य चाहते हैं, तो श्रीसीतारामनाम जपिये। ज्ञानविज्ञान से सम्पन्न होना चाहें, तो इसी नाम का कीर्त्तन कीजिए। निर्मल और परिपूर्ण भगवत्प्रीति तो आप चाहते ही होंगे, सो भी नाम कीर्त्तन से ही पाइयेगा ही।

ज्ञानविज्ञान सम्पनं वैराग्यं विषयेष्वनु।
अमलांप्रीति मुन्विद्रां लभते नामकीर्त्तनात्।।

श्री प्रेमार्व्रणवनाटक नामक आर्यग्रन्थ का प्रमाण है कि प्रेम वैचित्र्य दिव्य प्रेम ही में संभव है। यह प्रेम की उच्च स्थिति है। इस प्रेमस्थिति में श्री प्रियाप्रियतमजू के मिलन काल में भी कभी कभी वियोगसा आभास हो जाता है।

'रसिक अली संजोगहु में अतिनेह विरह के छंद।'

यह दुर्लभ प्रीतिस्थिति साधक भी पा सकते हैं। ऐसी प्रीति की प्राप्ति एक मात्र नाम कीर्त्तन से संभव है और होगा भी इसमें कोई संशय नहीं। श्रद्धा—विश्वास के साथ ध्यानपूर्वक निरन्तर नाम जपिये।

प्रेम वैचित्र्यता प्रोक्ता दुर्लभा साधनान्तरैः।
तां लभेद्राम नाम्नस्तु जपाच्छ्रीघ्रं न संशयः।।

श्री विचित्र नाटक नामक ऋषि प्रणीत प्रामाणिक ग्रन्थ का उपदेश है कि श्री रामनाम से बढ़कर न तो कोई साधन है, न कोई साध्य। नामानुराग होना परम सौभाग्य सूचक है। श्री जानकी रमणजू में सर्वोत्कृष्ट प्रेम नाम जप से ही प्राप्त होता है। नामजप तो अमृत का सार है स्वाद देने में तथा अनन्त वैभव का सार भी नाम ही को मानना चाहिए।

न नामतः साधनमन्यदस्तिवै न साध्य सौभाग्यमतः परंक्वचित।
परात्परं प्रेमप्रकाशकं वरं सुधासरं सारमनन्त वैभवम्।।

श्री आदि पुराण में श्री कृष्णार्जुन सम्वाद का सिद्धान्त है कि श्री राम नाम जप में लगे हुये, महाभाग, धन काम, विष भोगों को त्याग कर, भूमंडल में अनासक्त विचरा करते हैं, उन्हें अनपायिनी विशुद्धा तथा सर्व मङ्गला भक्ति एवं भक्ति में परमनिष्ठा प्राप्त होती है।

ये नाम युक्ता विचरन्ति भूमौ त्यक्त्वाऽर्थ कामान्विषयांश्चभोगान्।
तेषां च भक्तिः परमा च निष्ठा सदैव शुद्धाः सुभगा भवन्ति।।

श्रीवशिष्ठ रामायण का वचन है कि नाना प्रकार के तर्क—कुतर्क करने वाले अथवा वाद—विवाद में माथा पच्ची करने वाले तो मानों अन्धेरे गढ्ढे में जाकर गिर पड़े। कौन निकालेगा इन्हें? इनके

लिये एकही उपाय है कि ये श्रीरामनाम के आश्रित होकर नाम जपे। श्री नाम ही इन्हें उबारेंगे, नही तो परमार्थ भ्रष्ट तो हो ही गये। श्रीराम नाम से बढ़कर कोई भी सुललित मंत्र नहीं है। अन्तःकरण को पावन बनाकर, दिव्य प्रेम उत्पन्न कर दें, ऐसी करामात केवल श्रीनाम ही में है।

श्री नाम थोड़े जप श्रम करने पर अनन्तगुण फल दे डालते हैं। समुन्नत सुख तो आपको नाम रटने ही से मिलेगा।

नानातर्क विवाद गर्त कुहरे पाताश्चयेजन्तव
स्तेषामेकमसंशय सुशरणं श्री रामनामत्मकम्।
मंत्र नास्ति यतः परं सुललितं प्रेमास्पदं पावनं
स्वल्पायास फलप्रदान परमं प्रोत्कर्ष सौख्यप्रदम्।।

श्री गोस्वामिपाद का भी यही आदेश है, देखिये श्री विनय प्रत्रिका ६७/५

'राम नाम प्रेम—परमारथ को सार रे। रामनाम तुलसी को जीवन आधार रे।।'

श्री बड़े महाराज स्वरचित सीतारामनाम सनेह वाटिका नामक ग्रन्थ में आदेश देते हैं कि आपको यदि प्राणप्रियतम श्री जानकी रमणजी के प्रति कृपासाध्य एवं परमपावन बनाने वाली पराप्रीति चाहिये तो, खूब शौक से नित्य हरे भरे श्री सीताराम नाम सरकार की ओर याचकता पूर्ण दृष्टि से अवलोकन कीजिए। यह जगत्प्रसिद्ध बात है कि श्री बाल्मीकि जी सीधा रामराम न जपकर उल्टे, मरा—मरा जपते जपते संसार में निरोग निःशोक हो गये तथा परमानन्द का अनुभव भी करने लगे। श्री प्रेम रूपी वस्त्र पहन लें तो नित्य दिव्य आनन्द से हरे भरे बने रहेंगे। चित्तको वासना समूह शमन करेंगे, श्रीनाम सरकार। बड़े सरकार की आज्ञा है कि वाणी से आप श्री नामजप की झड़ी लगाकर जपिये, श्री नाम में क्या दिव्यानंद है, सो नामानुरागियों के संग बैठकर आप देख लीजिए।

पराप्रीति प्रीतम प्रसाद पावनेश हित, हेरिये हरित नाम शौक सरसाय के।
नामही जपत जग जाहिर जहान युग, अरुग असुग बाल्मीकि हरसाय के।।
हराहर रोज ओज चोज चित चाह सोज, समन समूह प्रेमपट परसाय के।
युगल अनन्य त्वरा ताकिये सुसंग बैठि, विमल बहार नाम बाग बरसाय के।।

हम श्री बड़े महाराज की विरचित एक और कवित्त वहीं से उद्धृत करेंगे।

सीतारामनाम मोद मंगल मुफीद धाम
अमल अदाग राग बाग दसावहीं।
पारावार प्रबल प्रवाह आह दाह बिन
पावन परम प्रेमपट परसावहीं।।

करुनानिधान जीव जान प्रानहूँ के प्रान
स्वाद सुखखान रोमरोम हरसावहीं।
युगल अनन्य अविलोक नींक नेह निज
विमल विचित्र बर बूंद बरसावहीं।।

शब्दार्थ:— मुफीद = हितकर। राग = अनुराग के पूर्ववाला प्रेम। पारावार = समुद्र। आह दाह बिन = शोक संताप मिटाने को। अविलीक = अ (नहीं) व्यलीक (झूठा) असत्य नहीं, अर्थात् सत्य यथार्थ। बरबूंद = प्रेमाश्रु।

राम सुधा घनश्याम निरंतर जापिये याजिये चाव चढ़ाये।
नाम महाधन पाय विभव बल पाइये प्रेम प्रवीन पढ़ाये।।
और से काम न नात कछु कल्पांत लौ वासना दाग कढ़ाये।
युग्म अनन्य अभीत अजय हिय होयगो नाम सनेह बढ़ाये।।

श्री बड़े महाराज का स्वानुभूत कथन है कि अपने इष्ट के प्रति प्रवल प्रेम एवं उनकी कृपा मैंने प्राप्त कर लिया है। केवल श्री सीताराम नाम का परिपूर्ण परत्व विचार कर नाम रटने से ही। श्रीसीताराम नाम की अचिन्त्य विभूति सभी लोक लोकान्तरों में व्याप्त है। श्रीनाम से भिन्न और कुछ दृष्टि में नहीं आता है। ऐसा समझकर हृदय में बड़ा ही हर्ष हो रहा है। श्री युगलकिशोर का दिव्य विहारचिंतन ही सर्वथा निर्विकार है, अत: विचार करने से किसी से रागद्वेष करना व्यर्थ है।

सीताराम नाम की विभूति अविचिन्त्य चारु
व्यापि रही निखिल निकेतन मझार है।
ताते भिन्न तिहू लोक नजर देखात नाहि
समुझि सुहीय हरषात एकतार है।।
कौन साथ रागद्वेष कीजिये विचारु नेकु
एक रघुनाथ को विलास अविकार है।
युगल अनन्य नाम पूरन परत्व पेखि
पायो प्रेम प्रवल प्रसाद स्वच्छ सार है। १५०।

श्री आदि पुराण में स्वयं भगवान श्री कृष्ण श्री अर्जुन से कहते हैं कि श्री रामनाम जप परायण सज्जन ही श्री राघव लाल के भावुक भक्त हैं। उनके दर्शनों से ही दर्शनार्थी को मधुर रस वाली भक्ति प्राप्त होती है।

राम नाम रता ये च ते वै श्री राम भावुका:।
तेणां संदर्शनादेव भवेद्भक्ति रसात्मिका।।
'रामनाम प्रेम परमारथ को सार रे।
रामनाम तुलसी को जीवन आधार रे।। (श्री विनय६७/५)

श्री नाम जप से ही दिव्यानन्द का अनुभव

श्री पद्मपुराण में देवर्षि नारद जी महाराज अम्बरीष जी को नामोपदेश देते हुए, बताते हैं कि सभी मनोरथों के पूर्ण करने वाले श्री राम नाम के कीर्त्तन करने से जापक संसार बन्धन को काटकर परमानन्द प्राप्त करता है।

कीर्तयन श्रद्धया युक्तो राम नामा खिलेष्टदम्।
परमानन्द माप्नोति हित्वा संसार बन्धनम्।।

मार्कण्डेय पुराण में श्री व्यास देव जी ने श्री सूत जी को बताया है कि जीभ से निरन्तर श्रद्धा सहित नाम रटो। थोड़े ही दिनों में परमानन्द होगा।

भजस्व सततं नाम जिह्वायां श्रद्धया सह।
स्वल्पकेनैव कालेन महामोदः प्रजायते।।

श्री नृसिंह पुराण में श्री नारद जी ने महर्षि श्री याज्ञवल्क्य जी से कहा कि सर्वदा भक्तिपूर्वक श्री रामनाम के कीर्त्तन करने से स्वच्छ सौभाग्य एवं लोक विलक्षण सरस आनन्द अवश्यमेव मिलेगा।

सौभाग्यं सर्वदा स्वच्छं सरसानन्दमद्भुतम्।
अवश्यं लभते भक्त्या रामनामानुकीर्त्तनात् ।।

श्री वृहद विष्णुपुराण में महर्षि पराशर अपने शिष्य को बता रहे हैं कि भावना पूर्वक भी सीता राम नाम जपने से जापक परमानन्द के सुधासमुद्र में मग्न हो जाता है।

परानन्दे सुधासिन्धौ निमग्नो जायते जनः।
यदा श्री राम सन्नाम संस्मरेद्भावना युतः।।

श्री अङ्गिरस पुराण का वचन है कि जो जीभ से उच्चारण करके तथा मन से भी एक साथ श्री राम नाम का उच्चारण करते हैं, उनकी थोड़ी ही साधनश्रम से हृदय स्थित आनन्द की कली खिल जाती है।

आभ्यन्तरं तथा बाह्यं यस्तु श्री राम मुच्चरेत।
स्वल्पायासेन संकाशं जायते हृदि पङ्कजे।।

श्री बारहपुराण में श्री शिवजी भगवती उमा से कहते हैं कि प्रेम के अनन्य रसिकों के लिए श्री रामनाम नित्य ध्यान करने योग्य हैं। श्रवणपुट से सदैव पान करने योग्य हैं, जो सज्जन ज्ञान निरत है, उनके लिये श्री नाम तत्त्व ही ज्ञातव्य हैं। शुभाशुभ कर्मों की शान्ति भी श्री नाम से ही संभव है। परात्पर ब्रह्म श्री राघवजू का राम नाम सर्वेश्वर हैं, आनन्ददायक हैं। सबके सुहृद मित्र हैं। देवदानव से नमस्य है। श्री नाम परमानन्द की वृष्टि करने वाले घनश्याम हैं।

ध्येयं नित्यमनन्य प्रेमरसिकैः पेयं तथा सादरम्।
ज्ञेयं ज्ञानरतात्ममिश्च सुजनैः सम्यक् क्रियाशान्तये।।

श्री मद्रामपरेश नाम सुभगं सर्वाधिपं शर्मदम्।
सर्वेषां सुहृदं सुरासुरनुतं ह्यानन्दकन्दं परम्।।

श्री भारत विभाग में कहा गया है कि श्री राम नाम आनन्ददायक तत्त्वों के शिरमौर है, स्वयं परमब्रह्म है, परम प्रकाशमान है तथा सभी कारणों के भी आदि कारण हैं।

''आह्लादकानां सर्वेषां रामनाम परात्परम्।
परब्रह्म परंधाम परंकारणकारणम्।।''

श्री जावालि संहिता का वचन है कि श्री रामनाम का दिव्य प्रकाश हृदय में जगमगा रहा है, उसके लिये सर्वेश्वर ब्रह्म जन्य सभी दिव्यानन्द सुलभ हैं।

'' रामनाम प्रभा दिव्या यस्योरसि प्रकाशते।
तस्यास्ति सुलभं सर्वं सौख्यं सर्वेशजं परम्।।

रहस्य नाटक नामक प्रामाणिक आर्षग्रन्थ का वचन है कि श्री राम नाम के स्मरण से जापक को जो दिव्यसुख न मिले, वह आकाश वाटिका के फूल के समान, वन्ध्या पुत्र के समान अनहोनी बात है। अर्थात् निश्चय सब सुख मिलेगा, न मिले तो आश्चर्य मानना।

''स्मरणाद्रामनाम्नस्तु यत् सुखं न लभेन्नरः।
तत्सुखं खेगतं पुष्पं वन्ध्यापुत्रमिवाद्भुतम्।।''

श्री सांखल्यस्मृति नामक धर्मशास्त्र में कहा गया है कि मंगलमय श्री राम नाम पापों का विनाश करके, परमानन्द अनुभव कराने वाले हैं। इनके जप से चित्तवृत्ति भी निरुद्ध हो जाती है। ऐसे नाम का भजन करना चाहिए।

''पापानां शोधकं नित्यं परानन्दस्य बोधकम्।
रोधकं चित्तवृत्तीनां भजध्वं नाम मङ्गलम्।।''

श्री रहस्यसार नामक ग्रन्थ में श्री मन्नारायण मुनियों को श्री राम नाम का उपदेश करते हुए, आदेश देते हैं कि श्री राम नाम परब्रह्म हैं। सभी आनन्दों के एक मात्र निलय हैं। नित्य दिव्य परिकरों तथा महात्माओं के लिए तो इनका जप ही जीवन है, प्राणावलम्ब है।

''रामनाम परंब्रह्म सर्वमोदैकमन्दिरम।
जीवनं दिव्यनित्यानां परिकराणां महात्मनाम्।।

श्री बड़े महाराज स्वरचित श्री सीताराम नाम सनेहवाटिका २४३ में कहते हैं कि श्री राम नाम को करुणांश से अनन्त भाँति के परमानन्द अनुभव में आते हैं। जापक में काम विकार की किचिन्मात्र भी गन्ध नहीं रह जाती। क्रोध मोह आदि कष्ट नहीं देते। विषय वासना की क्षुधा मिटाने के लिए आठो पहर नाम की माला फेरनी चाहिये। निष्काम नाम जपने से श्री जानकी बल्लभलालजी स्वयं आकर आपसे मिलेंगे।

''नामहिकी करुना लवलेश से होत हजार करोर महामुद।
काम कषाय रहे न कहीं फिर मोह रु कोह करे न जरा तुद।।

आठहु याम सुदामहि फेरिये शीघ्र नसे विषवासना की छुद्र।
(श्री) युग्म अनन्य अकाम भये पर जानकिजीवन आय मिले खुद।।''

श्री पद्मपुराण में भगवान् श्री कृष्ण भी अर्जुन से कहते हैं कि जो दिनरात सदैव श्री रामनाम का जप करते हैं, उनके घर में सभी प्रकार के मंगल तथा सुख भरे रहते हैं।

''मङ्गलानि गृहे तस्य सर्व सौख्यानि भारत।
अहोरात्रं च येनोक्तं राम इत्यक्षरद्वयम्।।''

श्री मार्कण्डेय पुराण में भगवान् श्री व्यास देव जी अपने शिष्य से कहते हैं कि श्री रामनाम पर ब्रह्म हैं, वेदों के सार सिद्धान्त हैं। सब सुखों को प्रकटानेवाले कारण हैं, सबों को दिव्यप्रेम देने वाले हैं। मंगलों के करने वाले हैं। अतः सब प्रकार से सभी दुराग्रहों को छोड़कर, सावधानतापूर्वक तुम लोग श्री रामनाम का जप करो।

'' वेदानां सार सिद्धान्तं सर्वसौख्यैक कारणम्।
रामनाम परंब्रह्म सर्वेषां प्रेमदायकम्।।
तस्मात्सर्वात्मना रामनाम माङ्गल्यकारकम्।
भजध्वं सावधनेन त्यक्त्वा सर्व दुराग्रहम।।''

श्री प्रमोद नाटक नामक आर्षग्रन्थ में आया है— हम श्री रामचन्द्र जी के परममुक्ति देने वाले श्री रामनाम की वन्दना करते हैं, श्री नामसरकार की लेश मात्र कृपा से आज हम लोगों की सर्वप्रकार के सुख सुलभ हैं।

'' वन्दे श्री रामचन्द्रस्य नाम मुक्ति प्रदं परम।
यत्कृपालेशतः ऽस्माकं सुलभं सर्वतः सुखाम्।।''
''जितना नाम रटै लय लाई। उतना सुख पावे अधिकाई।।
जेहि न प्रतीति वचन सुनि होई। रटि सियाराम परीच्छै सोई।।
नाम उचारत सुख जो होई। जापक को कहि सकै न कोई।।

श्री वृहद उपासना रहस्य, श्री प्रश्नोत्तर प्रकरण

नाम जापकानि कर सुख जोई जानत नाम जापकै सोई।।

✡ श्री नाम जप से इष्टदर्शन ✡

श्री पद्मपुराण में श्री ब्रह्माजी ने नारद जी से कहा कि श्री राम नाम जप के प्रभाव से परात्परब्रह्म श्री सीताराम जी को जापक साक्षात् दर्शन प्राप्त कर लेते हैं। श्री नामार्थ भूत रूप चिंतनपूर्वक नाम जपना चाहिए।

''राम नाम प्रभावेण सीतारामं परेश्वरम्।
साक्षात्कारं प्रपश्यन्ति रामनामार्थचिन्तकाः।।''

भविष्योत्तर पुराण में श्री मन्नारायण देव ने अपनी प्रियतमा श्रीमती लक्ष्मी देवी से कहा है कि वेद मर्मज्ञ तथा ज्ञानसागर मग्न सज्जन कहते हैं कि सभी साध्नों में श्री राम नाम का उच्चारण सर्वश्रेष्ठ है। श्री नाम ही जप के प्रभाव से श्री जानकी बल्लभलालजू के नित्य परमानन्ददाता रसमय दिव्य रूप का मैंने भी दर्शन पाया ।

सर्वेषां साधनानां वै श्री नामोच्चारणं परम।
वदन्ति वेदमर्मज्ञा निमग्ना ज्ञान सागरे।।
यत्प्रभावान्मया नित्यं परमानन्ददायकम्।
रूपं रसमयं दिव्यं दृष्टं श्री जानकीपते:।।

उसी पुराण में श्री नारद जी ने श्री भरद्वाज जी से कहा है कि हे मुनिवर! श्री रामनाम के प्रभाव से श्री जानकी रमणजू का लोक विलक्षण, दुर्लभ भक्तसर्वस्वभूत रूप अनायास प्राप्त हो जाते हैं।

अनायासेन सर्वस्वं दुर्लभं मुनिसत्ताम।
प्रभावाद्रामनाम्नस्तु लभते रूपद्भुतम्।।

श्री मार्कण्डेयपुराण में श्री व्यास देव ने अपने शिष्यों को बताया है कि सभी पापों से संशुद्धि पाने के जितने भी समस्त धर्म समुदाय हैं, उनसे अनन्त गुण पाप संशोधन शक्ति में समर्थ श्री रामनाम का कीर्त्तन है। श्री नाम ही सरकार के अनुग्रह से श्री रामचन्द्र माजू के परमानन्द सिन्धु रूप निश्चय ही सुलभ हो जाते हैं।

धर्मानशेष संशुद्धान्सेवन्ते ये द्विजोत्तमा:।
तेभ्योऽनन्तगुणं प्रोक्तं श्रेष्ठ श्री नाम कीर्त्तनम्।।
यस्यानुग्रहतो नित्यं परमानन्दसागरम्।
रूपं श्री रामचन्द्रस्य सुलभं भवति ध्रुवम्।।

श्री पुराण संग्रह में श्री सुत जी ने श्री शौनक ऋषि से कहा है कि श्री राम नाम का परात्पर ऐश्वर्य मैं वचन के द्वारा कैसे व्यक्त करूँ? श्री रामनाम के स्मरण से सम्पूर्ण विश्व प्रकाशमय रामरूप मय भासने लगता है।

नाम्न: परात्परैश्वर्यं कथं वाचा वदामि ते।
स्मरणाल्लक्ष्यते विश्वं रामरूपेण भास्वरम्।।

श्री शिव संहिता में कहा गया है कि श्री राम नाम के स्मरण करते ही श्री राम रूप सम्मुख हो जाते हैं। अत: श्री रामनाम का कीर्त्तन सदैव करते रहना चाहिए।

नाम स्मरण मात्रेण नामी सन्मुखतां लभेत्।
तस्माच्छ्री रामनाम्नस्तु कीर्त्तनं सर्वदोचितम्।।

श्री लोमशसंहिता में श्री शिवजी ने श्रीपार्वती को बताया है कि जहाँ बुद्धिमान नामजापक दो अक्षर वाले श्री रामनाम का कीर्त्तन करते हैं, वहीं भगवान् श्री रामभद्रजू साक्षात् प्रगट होकर, जापक के समस्त दु:खों का विनाश करते हैं।

रामेति द्वयक्षरं नाम यत्र संकीर्त्यते बुधैः।
तत्राविर्भूय भगवान सर्वदुःखं विनाशयेत।।

श्री पद्मसंहिता में कहा गया है कि नित्य अविनाशी श्री रामनाम के प्रभाव से परमानन्द सागर दिव्य श्री रामरूप का साक्षात्कार वाला अनुभव हो जाता है। वैसे श्री नामरसका सदैव जप द्वारा पान करना चाहिए।

रुपस्यानुभवं दिव्यं परमानन्दसागरम।
रामनामरसं दिव्यं पिव नित्यं सदाव्ययम्।।

श्री राघवजू के श्री रामनाम देवमुनीश्वरों से प्रपूजित हैं, निर्मल हैं, निर्विकार हैं, भक्तों की विपत्ति को सदा भंजन करने वाले हैं। श्री सीताराम नाम द्वारा युगल रूप का साक्षात्कार होता है। अतः हम इन्हीं नामका स्मरण करते रहते हैं।

अनामयं रूप युगप्रकाशकं सदैव भक्तार्तिहरं कृपानिधिम्।
स्मरामि श्री राघवनाम निर्मलं प्रपूजितं देव मुनीश्वरेश्वरैः।।

श्री याज्ञवल्क्य स्मृति में कहा गया है श्री जानकी रमणलाल प्रधान पुरुषोत्तम हैं। परतम ब्रह्म है श्री अयोध्या विहार में अनधिकरियों के लिए अलक्ष्य रहते हैं। उनको श्री रामनाम का कीर्त्तन करने से वे अनायास प्राप्त हो जाते हैं।

परमात्मानमव्यक्तं प्रधान पुरूषेश्वरम्।
अनायासेन प्राप्नोति कृते तन्नाम कीर्त्तनम्।।

श्री शिव सर्वस्व नामक ग्रन्थ में श्री शिवजी ने श्री पार्वती जी से कहा है कि श्री रामनाम के कीर्त्तन ही से तारक ब्रह्म श्री जानकी जीवनजू के दर्शन होते हैं। देवि! मैं तुमसे सत्य कहता हूँ। मेरा वचन अन्यथा हो नहीं सकता।

नाम संकीर्त्तनादेव तारकं ब्रह्म दृश्यते।
सत्यं वदामि ते देवि नान्यथा वचनं मम।।

श्री अथर्वणोपनिषद में कहा गया है कि इष्ट देव के दर्शन उनके नामजप से ही संभव है। कलिकाल में दूसरा उपाय नहीं है।

'जपात्तेनैव देवता दर्शनं करोति कलौ नान्येषां भवति।

जैसे चंग–पत्र नभ–कूप मध्य जाइ रहे
गहे गुन हाथ बिना खींचे नहि आइ है।
धेनु मातु घरही में नेकु अंतराल पर

बाल बच्छ रोये बिनु दूध न पियाइ है।।
जीव ईश सहज संघाती त्यों अनादि उर
भजन विहीन ब्रह्म आनंद न छाइ है।
लोक वेद विदित है बात 'रसरंगमनी'
रामनाम रटे बिन नामी न मिलाइ है।।
भूमि के खने से आप आपहि कढ़त जैसे
पढ़त पढ़त पूरी पंडिताइ पाइ है।
ग्रास-ग्रास खात ही सुतुष्ट ज्यों चले ते पथ
आपुही सिरात घर जाई ठहराइ है।।
काठ के घिसत आगि आपै प्रगटात जिमि
मथत मथत दूध माखन सो खाइ है।
जानि यह बात ठीक रटै रसरंगमनी
रामनाम रटे राम आपही दिखाइ है।।

श्री राघवदर्शन के लिए चौबीस घंटे का अखंड नाम जप

कल्याण के भगवन्नाम महिमा अंक के पृ. ६१५ में यह प्रयोग लिखा है। मैंने और भी सन्तों से इस प्रयोग की चर्चा सुनी है। मेरा अपना अजमाया तो नहीं है, दर्शनार्थी सज्जन चाहें तो प्रयोग करके देख सकते हैं। विधि इतनी ही है कि एक एकांत कमरे को सब सामान हटाकर खाली करके, धोकर, स्वच्छ कर लेना चाहिए। सूर्योदय के पूर्व ही स्नान करके, उस कमरे में किसी ब्राह्मण द्वारा कलश स्थापन कराके गणेश जी का पूजन कर लेना चाहिये और शुद्ध घी का अखंड दीपक जला लेना चाहिये। सूर्योदय के समय से ही 'राम' इस नाम को स्पष्ट रूप से बोलना प्रारंभ कर देना चाहिए और दूसरे दिन सूर्योदय तक अर्थात् पूरे चौबीस घंटे 'राम-राम' बोलते रहना चाहिये। इसके लिये केवल इतने नियम हैं-

१-एक क्षण के लिए भी नाम बोलना बन्द न हो।

२- उस कमरे से अनुष्ठान काल भर बाहर न जाय।

३- उस कमरे में दूसरा कोई इस बीच में न आये। द्वार भीतर से बन्द रहे।

४- अखंड-दीपक बुझने न पाये।

एक दिन पहले ऐसा भोजन करना चाहिये कि अनुष्ठान के दिन शौच लघुशंका अधिक तंग न करे। अनुष्ठान वाले कमरे में अनुष्ठान करने वाला बैठे तो कमरे में जल रखना चाहिये। आवश्यक होने पर बोलते हुए जप चलता रहे और लघुशंका से निवृत्त हुआ जा सकता है। कमरे में ही नाली पर। उस कमरे में अनुष्ठान करने वाला बैठे, खड़ा हो, टहले, चाहे जैसे रहे, किन्तु नामोच्चारण बंद न हो, इतना ध्यान रक्खें। दूसरे दिन प्रात: काल कलशादि का विसर्जन कर दिया जाता है।

रहेउ एक दिन अवधि अधारा। समुझत मन दुख भयेउ अपारा।।
कारन कवन नाथ नहि आयउ। जानि कुटिल किधौं मोहि बिसराउ।।
अहह धन्य लछिमन बड़भागी। राम पदारविंद अनुरागी।।
कपटी कुटिल मोहि प्रभु चीन्हा। ताते नाथ संग नहि लीन्हा।।
जौं करनी समुझै प्रभु मोरी। नहिं निस्तार कलप सतकोरी।।
जन अवगुन प्रभु मान न काऊ। दीनबंधु अति मृदुल सुभाऊ।।
मोरे जिय भरोस दृढ़ सोई। मिलहहिं राम सगुन सुभ होई।।
बीतें अवधि रहहि जौं प्राना। अधम कवन जग मोहि समाना।।

उपर्युक्त चौपाइयों को आर्तभाव से भगवान श्री राम के शीघ्र दर्शन की उत्कट उत्कंठा को लेकर, जब तक कार्य सिद्ध न हो जाय, कम से कम इक्कीस बार जप करे और साथ ही ३ॐ रां रामायनम:' मन्त्र की १११ माला का जप करे।

जिस समय ये पंक्तियाँ लिखी जा रही थीं , उस समय एक भक्त महिला लेखक के पास बैठी थी। वह बिहार के सीतामढ़ी जनपद के अभ्यन्तर वेलाशान्ति कुटीर नामक ग्राम की निवासिनीथी। नाम है राजकिशोरी सहचरी । बेला बाबू लक्ष्मीनारायण चौधरी की धर्म पत्नी अपने पति देव की आज्ञा से श्री अयोध्या कार्तिक कल्पवास करने आई है। ठहरी हुई हैं अपने गुरुस्थान श्री रसमोदकुंज में ही। उसने साक्षात्कार के लक्ष्य से उपर्युक्त चौबीस घंटे अखंड नाम जप वाले अनुष्ठान की अनुमति माँगी। आदेश मिला और किया भी। आज दिनांक २३.१०.८१ को अनुष्ठान समाप्त कर, प्रात: ७ बजे रोती हुई और प्रेम विह्वल दशा में लेखक के समीप आकर उसने अपने गुरु सहितश्री युगल किशोर जू के प्रगट दर्शनों का सम्बाद सुना गयी है। अनुष्ठान अचूक फलप्रद है। युगल सरकार ने कृपापूर्वक यह भी बताया कि हम सदा श्री रसमोदकुंज में ही रहते हैं। हैं भी श्री रसमोदकुंज विहारी लाडिले लाल प्रगट प्रत्यक्ष ठाकुर । दर्शन करते ही चित्त वरवश चुराते हैं।

श्री नाम जप से सर्व रोग निवारण

श्री वृहद् विष्णु पुराण में श्री पराशरजी ने अपने शिष्यों से श्री रामनाम जप का प्रभाव बताते हुए कहा है कि श्री राम नाम के कीर्त्तन सभी रोग मिट जाते हैं, सभी उपद्रव शान्त हो जाते हैं तथा सभी मारणकारक योग शीघ्र टल जाते हैं।

सर्व रोगोपशमनं सर्वोपद्रव नाशनम्।
सर्वारिष्टहरं क्षिप्रं रामानुकीर्त्तनम्।।

श्री शुक पुराण में श्री अगस्त्यजी ने श्री सुतीक्षण जी को समझाया है कि श्रीमान् रामचन्द्र जू के श्री रामनाम सभी प्राणियों के जीवन दाता हैं क्योंकि रकार के सहारे ही श्वासा बाहर निकलती है और मकार के सहारे भीतर जाती है। रामनाम द्वारा श्वास लिये बिना कैसे कोई जीवित रहेगा?

रकारेण वहिर्याति मकारेण विशेत्पुनः।
रामरामेति सच्छब्दो जीवो जपति सर्वदा।।

इतना ही नहीं, श्री राम नाम के कीर्त्तन से सभी रोगों से जापक मुक्त हो सकता है इसमें कोई संशय नहीं। एक बात इस सम्बन्ध में स्मरण रहने योग्य है कि रोग तो प्रारब्ध प्रेरित ही आते हैं। यदि हम सकाम भाव से रोग निवारण के लिए ही नाम जपें, तो निश्चय रोग मिट जायेंगे। जपसंख्या रोग कारण भूतपूर्व पापों की गुरुता के अनुपात से ही निश्चय की जा सकती है। यदि निष्काम हो रहा है, तो भी रोग आप ही आप मिट जायेंगे।

श्री मद्रामेति नामैव जीवानां च जीवनम्।
कीर्त्तनात्सर्व रोगेभ्यो मुच्यते नात्र संशयः।।

श्री सूत संहिता में कहा गया कि भावुक संतों का एक ही सिद्धान्त है कि श्री राम नाम रूपी अमृत को पीकर, नित्य सर्व रोगों से रहित हो जाना चाहिए।

राम नामामृतं पीत्वा भवेन्नित्यं निरामयम्।
सिद्धान्तं सारमित्येकं साधूनां भावितात्मनाम्।।

श्री पराशर संहिता में श्री व्यास देव जी ने श्री कृष्ण पुत्र साम्ब को समझाया है कि दुष्ट रोग व्याधि जनित दुःख नाना औषधियों के सेवन से असाध्य हैं। श्री रामनाम रूपी रसौषधि पीकर निस्सन्देह सभी व्याधियाँ मिट जायेंगी।

न सांव व्याधिजं दुःखं हेयं नानौषधैरपि।
रामनाम्नौषधं पीत्वा व्याधिस्त्यागाा न संशयः।।

कोई पूछे कि रोग तो पूर्वजन्मों के किये हुए पापों का परिपाक हैं, पाप मिटे तब न रोग छूटेगा। इसके उत्तर में श्री व्यास देव जी कहते हैं करोड़ों पूर्वजन्म के पापों की क्या औषधि है जानते हो? परात्पर श्री रामनाम का कीर्त्तन करो शारीरिक रोगों की कौन कथा जन्मरण रूपी भवरोग भी इससे मिट जाता है।

सभी प्रकार के शारीरिक रोग तथा सभी मानस रोगों के विनाश के लिए तुम महामोद मन्दिर श्री राम नाम का स्मरण करो।

कोटि जन्मार्जितं पापमौषधैः शान्तिमंति किम्।
कीर्त्तनीयं परं नाम भवव्याधेस्तदौषधम्।।
सर्वरोगोपशमनं सर्वाधीनां विनाशनम।
स्मरत्वं रामरामेति महामोदैक मन्दिरम।।

श्री वैश्वानर संहिता कहती है कि जो श्री रामनामात्मक मंत्र का निरन्तर कीर्त्तन करते रहते हैं, वह सभी रोगों से मुक्त होकर, दुर्लभ मुक्ति भी पा लेते हैं।

रामनामात्मकं मंत्रं सततं कीर्त्तयन्ति ये।
सर्वरोग विनिर्मुक्तो मुक्तिमाप्नोति दुर्लभाम्।।

श्री ब्रह्मवैवर्त्तपुराण में श्री नारद जी ने महाराज अम्बरीष को समझाया है कि सभी अधिव्याधि अर्थात् मानसिक और शारीरिक रोग श्री रामनाम के स्मरण कीर्त्तन से शीघ्र नष्ट हो जाते हैं। उन नाम पुरुषोत्तम श्री जानकी कांतजू को हम प्रणाम करते हैं।

आधयो व्याधयो यस्य स्मरणान्नाम कीर्त्तननात्।
शीघ्रं वै नाशमायान्ति तं वन्दे पुरुषोत्तमम्।।

✓ श्री हनुमन्नाटक में श्री हनुमतलाल जी श्री अगस्त्यजी को श्री रामनाम की महिमा बताते हुये आदेश देते हैं कि मानव का यह स्थूल शरीर सैकड़ों जोड़ों के कारण सदा जर्जर बना रहता है। परिणाम तो मृत्यु है ही, जो अटल है अवश्यम्भावी है। इस रोगमय शरीर से पिंड छुड़ाने की क्या दवा है? श्री राम नाम का स्पष्ट प्रभाव देखते हुए भी ऐसा प्रश्न दुर्मतिमूढ़ ही कर सकता है। श्री सर्वरोगनाशक श्री रामनाम रूपी रसायन का पान करना चाहिये। शारीरिक तथा भवरोग सबों की यह श्रीरामवाण औषधि है।

इदं शरीरं शतसन्धि जर्जरं पतत्यवश्यं परिणाम दुर्वहम्।
किमौषधं पृच्छसि मूढ़ दुर्मते निरामयं राम रसायनं पिव।।

✓ श्री बड़े महाराज स्वरचित श्री सीतारामनाम सनेह वाटिका में कहते हैं कि जो श्री रामनाम रूपी महान औषधि का पान करते हैं, उनके शरीर में शारीरिक या मायाकृत कामादिक मानसरोग निश्शेष रूप से नष्ट हो जाते हैं। प्रीति प्रतीति सहित नाम रटने से दिव्य रसानन्द का अनुभव होगा, तो अंग तीनों ताप से तपने नहीं पायेंगे। स्त्रीजन्य काम सुख को छोड़कर, नाम रटने से चित्त से विलक्षण दिव्यानंद हटेगा ही नहीं। उमंग उत्साह बढ़ाकर श्वावप्रश्वास के साथ अखंड नाम जपने वाले को सांसारिक किसी भी विलास वस्तु की चाहना नहीं होती।

नाम महौषध पान किये कुल कायिक मायिक रोग रहे ना।
प्रीति प्रतीति समेत रटे राहत अंगन दाह दहे ना।।
वाम विकार विलास विहाय विनोद विचित्र सुचित्त जहे ना।
युग्म अनन्य अमंग उछाह अखंडित श्वास जहान चहे ना।।७३।।

✓ श्री बड़े सरकार अपनी श्री सीतारामनाम सनेह वाटिका १९७ में कहते हैं कि सांसारिक प्राणियों ने विषय भोग रूपी विष को खूब अघा—अघा कर खाया है। उन मूर्ख पापियों को यह भोग पचे कैसे? फलस्वरूप नाना शोक संताप सह रहे हैं। अब भी होश नहीं हो रहा है। विषय रूपी मदिरे के नशे में चूर हो रहे हैं। बुरी वला के समान तथा दु:ख के बीच मोहरात्रि में बेखबर सो रहे हैं। अत: घायल होकर चारों ओर डोल रहे हैं। इस भव संकट रोग के लिए धर्म कर्म साधन रूपी औषधि भी करे, अनेक मंत्र तंत्रों का भी अवलंब लिया, परन्तु विषैली भवव्याधि बढ़ती ही गई। श्री बड़े सरकार हमें कृपा पूर्वक बता रहे हैं कि अब श्री राम नाम जप रूपी तीव्र रसायन औषधि सेवन करें, तो सभी असाध्य कुरोग मिट जायेंगे।

हाय विषय विष खाय अघाय पचाय सक्यो नहि मूढ़ मलायन।
घूमत घायल घोर निशा मधि मोहनिशा दुखबीज बलायन।।
साधन औषध मंत्र किये हिय और हुँ व्याधि बढ़यो विषलायन।
(श्री) युग्म अनन्य असाध्य कुरोग नशे जब चाखिय राम रसायन।।

सचमुच और भी अनेकों असाध्य कुरोग श्री नाम जप से अवश्य मिटेंगे।

(भगवन्नाम महिमा अंक पृ. ८३ से साभार उद्धृत)

कुछ वर्ष पहले की बात हैं। सिद्ध महापुरुष श्री बलराम स्वामी जी महाराज की अतिप्रवृद्ध अवस्था थी। ८५–८६ वर्ष का वय:क्रम रहा होगा। उस समय आप श्री अयोध्या के श्री विजय राघवाचार्यजी महाराज के आश्रम में गद्दी के अधीश्वर थे। आप आश्रम में ही बीमार हो गये। रोग नाश के लिए प्रतिदिन श्री विष्णु सहस्रनाम के पाठ किये जाते थे। आपकी बीमारी के समाचार पाकर, एक सामान्य साधु आपके दर्शनार्थ आये। कुछ देर बैठने के बाद साधु ने श्री स्वामीजी से पूछा, आज आप कैसे हैं?

श्री स्वामी जी– दो दिनों से कुछ ठीक हैं।

साधु– श्री विष्णु सहस्र नाम का पाठ कितने दिनों से चल रहा है?

श्री स्वामी जी– आज दस दिन हो गये।

साधु– कुछ दिन और पाठ होने पर, आप पूर्ण निरोग हो जायेंगे। श्री स्वामी जी महाराज ने उन्हें तो इसका कोई उत्तर न देकर, केवल मुस्कराकर टाल दिया, परन्तु उनके चले जाने पर श्री स्वामी जी ने दस दिनों में पाठ बंदकरवा दिया। स्वामी जी ने कहा कि श्री विष्णु सहस्रनाम के पाठकी फलश्रुति जैसा कहती है– रोगार्त्तो मुच्यते रोगात्।' यह अक्षरश: सत्य है। किन्तु नाम पाठ का सहज फल है। प्रभु प्रसन्नता, न कि रोग निवारण, शारीरिक रोग नाश के निमित्त श्री नाम का उपयोग मुझे अभीष्ट नही। मैं तो केवल प्रभु की प्रसन्नता मात्र चाहता हूँ। 'या कहना' जब विष्णुसहस्र नामका यह प्रभाव, तो उनसे सहस्रगुणित प्रभाव वाले श्री रामनाम का क्या कहना? महात्मा गाँधी को दृढ़ विश्वास था कि श्री राम नाम से समस्त रोग, यहाँ तक कि असाध्य से असाध्य भी निर्मूल होंगे। आपने अपनी श्री 'रामनाम' नामक पुस्तक के आधे भाग में इस सम्बन्ध में अधिक लिखा है।

महात्मा गाँधी (ह. संठ २.६.४६ में) लिखते हैं मेरा यह दावा है कि रामनाम सभी बीमारियों की, फिर वे तन की हो, मन की हो, या रूहानीहो एक ही अचूक दवा है। इसमें शक नहीं कि डाक्टरों या वैद्यों से शरीर की बीमारियों का इलाज कराया जा सकता है। लेकिन राम–नाम आदमी को खुद ही अपना वैद्य या डाक्टर बना देता है और उसे अपने को अन्दर से नीरोग बनाने की संजीवनी हासिल करा देता है। जब कोई बीमारी इस हद तक पहुँच जाती है कि उसे मिटाना मुमकिन नहीं रहता, उस वक्त भी रामनाम आदमी को उसे शान्त और स्वस्थ भाव से सह लेने की ताकत देता है। जिस आदमी को रामनाम में श्रद्धा है, वैसे जैसे तैसे अपनी जिन्दगी के दिन बढ़ाने के लिए नामी–गरामी डाक्टरों और वैद्यों के दर की खाक नहीं छनेगा और यहाँ से वहाँ मारा–मारा नहीं फिरेगा। राम नाम डाक्टरों और वैद्यों के साथ टेक देने के बाद लेने की

चीज नहीं। वह तो आदमी को डाक्टरों और वैद्यों के बिना अपना काम चला सकने वाला बनाने की चीज है। राम नाम में श्रद्धा रखने वाले के लिए वही उसकी पहली और आखिरी दवा है।

✓ कोई भी व्याधि हो, अगर मनुष्य हृदय से राम नाम ले तो व्याधि नष्ट होनी चाहिये। राम नाम पोथी का बैंगन नहीं वह तो अनुभव की प्रसादी है। जिसने उसका अनुभव प्राप्त किया वह दवा दे सकता है दूसरा नहीं।

✓ विषय जीतने का सुवर्ण नियम राम नाम के सिवा कोई नहीं, मैं संसार में यदि व्याभिचारी होने से बचा हूँ तो रामनाम की बदौलत .... जब जब मुझ पर विकट प्रसंग आये हैं मैंने रामनाम लिया है और बच गया हूँ। बिकारी विचार से बचने का एक अमोघ उपाय रामनाम है। स्वप्न में ब्रतभंग हुआ तो उसका प्रायश्चित सामान्यत: अधिक सावधानी और जागृति आते ही रामनाम है।, ब्रह्मचर्य साधने की इच्छा रखने वाले हररोज नियम से सच्चे हृदय से रामनाम जपे और ईश्वर की कृपा चाहे।

हरिजन सेवक २८.७.१९४६ में महात्मा गाँधी लिखते हैं— जन्द अवस्ता (पारसीलोगों का धर्म ग्रन्थ) का जो हिस्सा आज इन बहनों ने गाकर सुनाया, उसमें ५ किस्म के बैद्य या हकीम का जिक्र है। पांचवा और सच्चा वैद्य वह कहा गया है जो रोग को मिटाने में ईश्वर के नाम का ही भरोसा रखता है। मैं तो यह चीज कहता ही रहा हूँ। कुदरती इलाज में एक ही रामवाण दवा है और वह है रामनाम। मुझे यह जानकर बहुत खुशी हुई और ताज्जुब भी हुआ कि गाथा में भी वही बात कही गई है। मेरी राय में कुदरती इलाज में राम नाम का स्थान पहला है। जिसके दिल में राम नाम है, उसे और किसी दवा की जरूरत नहीं है। राम के उपासक को मिट्टी और पानी के इलाज की भी जरूरत नहीं है।

श्री सुन्दरदास जी भवरोग की, सर्व विकार परिहार की, एक मात्र महौषधि श्री राम नाम ही को बताते हैं—

'' रामनाम मिस्री पिये, दूर जाहि सब रोग।
सुन्दर औषधि कटुक सब, जप तप साधन जोग।।

श्री कबीर जी महाराज राम—नाम रूपी रसायन के द्वारा सर्वरोग निवारण पूर्वक कायाकल्प की सम्भावना बताते हैं—

'' सभी रसायन हम करी, नहीं नाम सम कोय।
रंचक घटमें संचरे, सब तन कंचन होय।।
रामनाम निज औषधी, काटे कोटि विकार।
विषय व्याधि भी ऊबरै, काया कंचन सार।।''

✓ कल्याण भगवान्नामांक पृ. ७५ में पूज्यपाद हरिबाबा लिखते हैं— इन्फ्लूयंजा ज्वर के दिनों में मुझे एक बार जोर का ज्वर हुआ। बचने की आशा न रही। मैं उस समय अकेला कुटी में लेटा हुआ था। मन में विचार किया कि भब अंत का समय उपस्थित हुआ है। सावधानता से उठकर हरिनाम

जपना चाहिए। बड़े कष्ट में ही उठ बैठा और भगवन्नाम जपना आरंभ किया। कोई पाँच सात ही बार नामोच्चारण किया होगा कि अकस्मात् इतना आनंद और प्रफुल्लता हुई कि, शरीर में रोग का लेशमात्र भी लक्षण न रह गया और आश्चर्य से भरा हुआ आनन्द के मारे उठकर भागा एवं दो कोस जाकर दूसरे ग्राम में स्नान किया तथा नित्य क्रिया में प्रवृत्त हुआ।

(डाक्टर भगवती प्रसाद सिंह द्वारा लिखित पोद्दारजी के जीवन दर्शन पृ.६४ से साभार उद्धृत)

बात सन १९१६ ई. की है। भाई श्री हनुमान प्रसाद जी पोद्दार उन दिनों भारत–रक्षा–विधान के अनुसार बंगाल के बाकुड़ा जिले के शिमला पाल थाने के क्षेत्र में अन्तरीय (नजरबद) थे। वही आपको मोतियाज्वर (टायफाइड) हो गया। शिमला पाल का एकाकी जीवन, कोई साथी था नहीं। छोटे–से गाँव में कोई वैद्य डाक्टर भी नहीं था। एक बंगाली वैद्य थे, जिन्हें पुराना कम्पाउण्डर कहना ही ठीक होगा। दो–चार दवाएँ उनके पास रहा करती थी। पड़ोस में ही घर था। वे पोददार जी के पास आया करते थे। एक दिन घबड़ाहट ज्यादा बढ़ गई। मन में आया क्या भगवान्नाम में इतनी भी शक्ति नहीं कि मेरी घबड़ाहट मिटा दे? इतना सोचकर पोददारजी ने भगवन्नाम जप आरंभ कर दिया। उस जपका अनोखा फल हुआ। मन को शान्ति मिली। शान्ति–प्राप्ति के साथ ज्वरभी उतरने लगा। नाम जपने से उस ज्वर को पूर्णत: दूर कर दिया।

श्री नाभास्वामी जी ने स्वरचित भक्तमाल के छप्पय ९८ में श्री पद्मनाभजी की कथा लिखी हैं। पहले एक दिग्विजयी पंडित थे। श्री कबीर दास जी के ''पढै समुझि कैसमुझि पढ़े, सोई परम सयान । बिन याके विद्वान हूँ मूरख परम अयान।।'' ऐसी वाणी सुनकर अपना विद्याभिमान त्याग आपके शिष्य हो गये। श्री कबीर जी ने उनका नाम रखा श्री पद्मनाभ जी।

मूल छप्पय: – कबीर कृपा तें परम तत्त्व पद्मनाभ परचौ लह्यौ''

नाम महानिधि मंत्र नाम ही सेवा पूजा। जप तप तीरथ नाम नाम बिन और न दूजा।।
नाम प्रीति नाम बैर नाम कहि नामी बोलै। नाम अजामिल साखि नाम बंधन तें खोलै।।
नाम अधिक रघुनाथ तें राम निकट' हनुमत कह्यो।।

एक धनी मानी गलितकुष्ठ रोगी, किसी भी उपचार से रोगमुक्त न होने पर, श्री काशी की भागीरथी में डूब मरने जा रहा था। श्री पद्मनाभजी ने तीन बार रामनाम कहा कर, उसे तत्काल रोग मुक्त कर दिया।

श्री प्रिया दास जी कवित्त टीका पढ़िये:–

काशी वासी साहु भयोकोढ़ी सो निवाह कैसे
परि गये कृमि चले बूड़िवे को भीर है।
निकसे 'पदम' आय पूछी ढिग जाय कही
गही देह खोलो गुन न्हाय गङ्गा नीर है।।
रामनाम कहे वेर तीन में नवीन होत
भयौई नवीन कियौ भक्ति मति धीर है।

गयो गुरु पास तुम महिमा न जानी यही
नामाभास काम करे कही यों कबीर है।।

अर्थात् एक काशी वासी सेठ कोढ़ी हो गया और उसकी देह में कीड़े पड़ गये। उसने किसी प्रकार से जीने में अपना निर्वाह न देखा, तब उसने कहा कि हम श्री गंगाजी में डूब जायेंगे। उसके घर के और बहुत से लोग लेकर गंगा तट गये। उसी समय उनके भाग्यवश श्री पद्मनाभ जी वहां आ पहुँचे, और पूछा कि क्या है? लोगों ने सब कह दिया कि यह कोढ़ी डूब मरने जा रहा है। आपने आज्ञा दी कि इसके बंधन और पाषण आदि खोल दो। गंगा स्नान करके यह संकल्प करे कि 'मैं जन्मभर श्री रामनाम जपूँगा।' तीन बार श्री रामनाम कहें, अभी अभी इसकी नवीन काया हो जावेगी। वैसा ही किया। श्री रामनामनुरागी की कृपा से उसका नवीन शरीर हो गया, कुष्ठ छूट गया। तदनंतर उसने जन्मभर भक्ति पूर्वक श्री राम नाम स्मरण किया। इधर श्री पद्मनाभ जी अपने गुरू देव श्री कबीर जी के पास आये। श्री कबीर जी यह वार्ता सुनकर कहने लगे कि तुमने श्री राम नाम की महिमा नहीं जानी। कुष्टतो श्री राम नाम का आभास (अर्थात् हराम शब्द में श्री राम शब्द का योग) मात्र नष्ट कर देता है। तब श्री पद्मनाभ जी ने अति आश्चर्य को प्राप्त हो श्री नाम का प्रभाव जाना।

❄ श्री राम जप से भय निवारण ❄

बात अग्निपुराण की है। देवाधिदेव श्री महादेव जी, श्री दुर्वासाजी से कहते हैं कि श्रीरामनाम कीर्त्तन करने से, नामानुरागी के लिए न तो यमदूतों का भय रहता, न रौरवादि नरक गमन का। श्री यमराज का भी उसे भय नहीं रहता, क्योंकि ये महाभागवत हैं, नामानुरागियों का आदर करते हैं।

न भयं यमदूतानां न भयं रौरवादिकम्।
न भयं प्रेतराजस्य श्री मन्नामानुकीर्त्तनात्।।

वहीं श्री प्रह्लाद जी अपने सहपाठी बालकों से कहते हैं कि तुम सबों के सामने की बात है मेरे पिता ने मेरे प्राण लेने के लिए, क्या क्या न भयानक परिस्थियाँ प्रगट की। बलिहारी है श्री राम नाम के प्रभाव की! मैं उस भय सिन्धु से अनायास पार उतर चुका हूं। अतः तुम लोगों को भी दैत्यों सा दुराग्रह छोड़कर,सावधानी से नाम कीर्त्तन करना चाहिये। अन्य साधनों को नीरस समझकर, त्याग दो। एक मात्र श्री राम नाम का अवलंब पकड़ लो।

यत्प्रभावादहं साक्षात्तीर्त्वा घोर भयार्णवम् ।
अनायासेन वाल्येऽपि तस्माच्छ्री नामकीर्त्तनम्।।
कर्त्तव्यं सावधानेन त्यक्त्वा सर्व दुराग्रहम।
साधनान्यं विहायाशु बुद्धवा वैरस्यमात्मनि।।

श्री नृसिंहपुराण में इसी भाँति श्री प्रह्लाद ने अपने पिता से भी कहा है– 'श्रीपिता जी, आप मुझे प्रचंड अग्निज्वाला में जलाने की धमकी क्या दे रहे हैं? मैं नहीं डरता। भला श्रीराम नाम जपने वाले के लिये भी भय? श्री राम नाम से तीनों ताप मिट जाते हैं तो अग्नि की ज्वाला क्या है? पिता जी देखिये, अग्नि की लपटें, मेरे शरीर में लगकर जल की भाँति शीतल प्रतीत हो रही है, यह श्री राम नाम जप की खूबी है।

राम नाम जपतां कुतो भयं सर्वतापशमनैक भेषजम्।
पश्च तात मम गात्र सङ्गतः पावकोऽपि सलिलायतेऽधुनां।।

श्री ब्रह्म वैवर्तपुराण में श्री व्यास देव जी ने देवर्षि नारद जी को समझाया है कि नाम जापक चाहे वेदविहित शुभाचरण विशेष रूप से करता हो या उससे विरहित हो, यदि दिवारात्रि नाम कीर्त्तन करता है, तो नरक भय, जन्ममरण के भय से वह बिल्कुल मुक्त हो जाता है।

क्रिया कलाप हीनो वा संयुतो वा विशेषतः।
रामनामानिशं कुर्वन कीर्त्तनं मुच्यते भयात्।।

श्री आदि पुराण में भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन से कहा है कि श्री राम नाम का उच्चारण श्रद्धा वा अश्रद्धा से मनुष्य इस मर्त्यलोक में करता है, उसे श्री नाम प्रसाद से कोई भय नहीं व्यापता।

श्रद्धया हेलया नाम वदन्ति मनुजा भुवि।
तेषां नास्ति भयं पार्थ रामनाम प्रसादतः।।

श्री महाशम्भु संहिता में मंत्र तत्त्व के विशेषज्ञ भगवान शंकरजी का वचन है कि श्री राम नाम समस्त मंत्रों के बीज हैं। संजीवनी जड़ी हैं जिसके हृदय में श्री नाम सरकार विश्वास सहित स्मरण रूप से विराजमान हैं , वह चाहे हालाहल जहर पी ले, या प्रलय कालीन अग्निज्वाला में पड़ जाय, काल के मुख में ही घुस पड़े तो उसके लिये भय कहाँ? उसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

श्री रामनामा खिलमन्त्र बीजं सञ्जीवनं चेत हृदये प्रविष्टम्।
हालाहलं वा प्रलयानलं वा मृत्योमुर्खं वा विशतां कुतोभीः।।

श्री शिव सर्वस्व नामक ग्रन्थ का वचन है कि संसार चक्र में पिसने का भय तभी तक जीव के हृदय में बना रहता है, जब तक वह समस्त कलिमल विध्वंसक श्रीराम नाम का कीर्त्तन नहीं करता है। अर्थात् नाम कीर्त्तन करते ही सभी भय स्वतः भाग जाते हैं।

यावन्न कीर्त्तयेद्रामं कलिकल्मष नाशनम्।
तावत्तिष्ठति देहेऽस्मिन् भयं संसारदायकम्।।

श्री अध्यात्म रामायण का वचन है कि इस मर्त्य लोक का मानव श्री राम नाम का नित्य जप करता है उसे मृत्यु आदि से कभी भय नहीं होते।

रामरामेति ये नित्यं पठन्ति मनुजा भुवि।
तेषां मृत्युभयादीनि न भवन्ति कदाचन।।

पूज्यचरण श्री बड़े महाराज स्वरचित श्रीसीता राम नाम सनेह वाटिका में कहते हैं कि श्री राम नाम के अनुरागी को कोई भय शंका नहीं होती। वे नित्य निर्भय होकर, अविचल रूप से अपने नाम जप में डटे रहते हैं, क्योंकि श्री राम नाम का प्रताप श्री नाम कृपा से उनके हृदय में जमा रहता है। यदि प्रलय कालीन उनचासों पवन एक साथ घोर तूफान के रूप में बहने लगें या सातों समुद्र उमड़कर पृथ्वी को जलमग्न कर दे, या हजारों सूर्य एक साथ उदित होकर, चराचर को भस्म करने लगें, तोभी नामानुरागी को किंचित भी भय नहीं होगा। श्री नाम जप में उनकी वृत्ति जब डूब जाती हैं, तो उन्हें बाह्य उपद्रवों की नेक भी परवा नहीं होती। श्री बड़े सरकार कहते हैं कि नानानुरागियों की रीति भाँति समझना मन के लिये अगम अथाह है। मेरी बुद्धि तो वहाँ तक पहुँच ही नहीं पाती।

रहे संक तंक बिन अचल अडोल नित्त चित्त में प्रताप नाम छायो अविकार है।
वहे बरवात उनचासहूँ समुंद सात, होय जाय एक तऊ खेद न विकार है।।
सूर सत उदित के भये में न लेश डर, सावधान वृत्ति नाम लीनएकतार है।
(श्री) युगल अन्य मेरी मति न पहुँचि सके नाम अनुरागिन की रीति मन पार है।।

श्री पद्मपुराण में भगवान शंकर श्री पार्वती जी को समझा रहे हैं कि श्री राम नाम का उच्चारण सुनकर, भूत, प्रेत, पिशाच बेताल, कुष्माण्डक, राक्षस, ब्रह्मराक्षस तथा चेटक टोना आदि उपद्रवकारी आप ही दशों दिशाओं में भाग जाते हैं।

भूत प्रेत पिशाचाश्च वेतालाश्चेटकादय:।
कूष्माण्डा राक्षसा घोरा भैरवा ब्रह्मराक्षसा:।।
श्री रामनामग्रहणात पलायन्ते दिशो दश।।

श्री वात्स्यायनसंहिता में कहा गया है— विप्रवर! श्री रामनाम समस्त जगत के आधार हैं, अखंड सर्वेश्वर हैं। कलिकाल में इनका जो नित्य निरन्तर आदरपूर्वक जप करते हैं, वही धन्य है, पूजनीय हैं। उनके लिये कहीं कोई भय नहीं हैं। मैं सत्य कहता हूँ। मेरी बाते झूठी नहीं हो सकती।

समस्त जगदाधारं सर्वेश्वर मखण्डितम्।
रामनाम कलौ नित्यं ये जपन्ति समादरात्।।
ते धन्या: पूजनीयश्च तेषां नास्ति भयं क्वचित।
सत्य वदामि विप्रेन्द! नान्यथा वचनं मम।।

श्री हनुमत्संहिता में श्री हनुमत लाल जी ने कहा है कि श्री रामनाम रूपी मंत्र को जिसने यंत्र बनाकर, अपने किसी अंग में धारण कर लिया, वह कहीं भी रहे, उसके लिये कोई भय नहीं है। मैं सत्य कहता हूँ।

रामनामात्मकं मन्त्रं यन्त्रितं येन धारितम्।
तस्य क्वापि भयं नास्ति सत्यं सत्यं वदाम्यहम्।।

श्री नारदीयपुराण में श्री सूत जी ने शौनक ऋषि से कहा कि श्री रामनाम भयों के भी भय निवारक हैं। परत्पर तत्त्व है। प्रकाश देने वाले हैं। श्रीरामनाम स्मरण से अनंत पूर्व जन्मों के उत्पन्न भयसमूह सभी प्रकार से भाग जाते हैं।

भयं भयानामपहारिणिस्थिते परात्परे नाम्नि प्रकाश संप्रदे।
यस्मिन्स्मृते जन्म शतोद्भवान्यपि भयानि सर्वाण्यपयान्ति सर्वत:।।

❄ संकट-मोचन ❄

श्री मद्भागवत महापुराण में श्री शुकदेव जी ने परीक्षित जी को बताया है कि महाभयानक संसार का संकट आ पड़े, उस समय विवश होकर भी श्री राम नाम का उच्चारण कर लेने पर, उस घोर संकट से रक्षा हो जाती है, क्योंकि श्री रामनाम के डर से स्वयं डर भी डरकर भाग जाती है।

आपन्न: संसृति घोरां यन्नाम विवशो गृणन्।
तत: सद्यो विमुच्येत यद् विभेति स्वयं भयम्।।

श्री क्रियायोगसार में कहा गया है कि श्री रामनाम के स्मरणार्थ किसी खास समय का प्रतिबन्ध नहीं है। चाहे किसी भी समय भ्रमपूर्वक भी नामोच्चारण हो जाय, तो उसी समय सब दु:ख शान्त हो जाते हैं।

स्मरणे रामनाम्नास्तु न काल नियम: स्मृत:।
भ्रमादुच्चार्यमाणोऽपि सर्वदु:ख विनाशन:।।

श्री प्रमोदनाटक में कहा गया है कि श्री रामनाम निर्विकार है।, युगल रुपको प्रकट करने वाले है।, ऐसे कृपानिधान हैं कि सदैव अपने जापकों के संकट को हर लेने में तत्पर रहते हैं ऐसे श्रीरामनाम की देवता, मुनीश्रवर, तथा ईश्वर वर्ग के महान गण भी पूजा करते हैं। उन्हीं श्रीरामनाम का मैं भी स्मरण करता हूँ।

अनायमं रुपयुगप्रकाशकं सदैव भक्तार्तिहरं कृपानिधिम्।
स्मरामि श्रीराघव नाम निर्मल प्रपूजितं देव मुनी देव मनुीश्वरेश्वरै:।

वहीं यह भी कहा गया है। कि श्रीरामनामजप से, कषाय, विक्षेप, लय और रसाभास नामक जप विघ्न भी मिट जाते हैं। जापक संसार सागर से तर जाता है। श्री परमेश्वर के भी अतिप्रिय श्री रामनाम को हम भक्तिभाव से स्मरण करते हैं, श्री रामनाम दयानिधान तो दीनों की आरति संकट को सदैव हरते ही रहते हैं।

कषाय विक्षेप लयादि हारकं सुतारकं संसृति सागरस्य।
सदैव दीनार्तिहरं दयानिधिं स्मरामि भक्त्या परमेश्वर प्रियम्।।

श्री आङ्गिरस स्मृति का कहना है कि आप यदि मार्ग चलते अकस्मात् वाघ सिंहादि हिंसपशुसेवित घोर जंगल में पड़ गये हों, अथवा शत्रुओं से घिरे किले में बन्द हों, रास्ते में डाकुओं

ने आपको घेर रखा हो, इसी प्रकार अन्यान्य आपत्ति में आप फँस गये हों, तो श्री रामनाम का कीर्त्तन प्रारम्भ कीजिए। श्रीराम नाम के प्रभाव से आप तत्काल सभी आपत्तियों से बाल–बाल बच जायेंगे। आश्रितों की विपत्ति निवारण में ऐसे प्रवीण तथा स्वच्छ और स्वतंत्र हैं श्री रामनाम।

कान्तारवन दुर्गेषु सर्वापत्सु च सम्भ्रमे।
दस्युभि स्संनिरुद्धे च यस्तु श्री नाम कीर्त्तयेत्॥
ततः सद्यो विमुच्येद्वै रामनामप्रभावतः।
एतादृशं सदा स्वच्छं स्वतन्त्रं रामनाम च॥

श्री नारदीय पुराण में श्री सूत जी श्री शौनक जी से कहते हैं कि श्री रामनाम के स्मरण से समस्त क्लेश शीघ्र नष्ट हो जाते हैं। श्री रामनाम से सुरक्षित नामजापक को विघ्न बाधा नहीं पहुँचा सकता। अन्त में उसे मुक्ति भी हो जाती है।

राम संस्मरणाच्छीघ्रं समस्त क्लेश संक्षयः।
मुक्ति प्रयाति विप्रेन्द्र तस्य विघ्नो न बाधते॥

श्री क्रियायोगसार में श्री धर्मराज ने अपने दूतों से कह दिया है कि भाई, तुम लोग श्री राम नाम उच्चारण करने वालों के समीप भूलकर भी नहीं जाना। भगवत्पार्षदों से पिटाइ घलेगी, तो मैं नहीं जानता। घोर कठोर राजा के द्वार पर आ गया हो, किसी शत्रु के किले में बंद हो जाय, विदेश में संकट ग्रस्त हो जाय, डाकुओं के पल्ले में पड़ गया हो, दुःस्वप्नदर्शन से भयाकुल हो, किसी क्रूर ग्रह के द्वारा पीड़ित हो जाय, घोर वियावानवत में जा पड़े अथवा भयंकर श्मशान में अंधेरी रात के समय जा पहुँचे, ऐसे संकटों के अवसर पर भी श्री रामनाम का स्मरण करता रहे, तो वह सभी संकटों से बच जाता है। नामजापक के समीप कोई भी आपत्ति फटकने नहीं पाती।

राजद्वारे तथा दुर्गे विदेशे दस्यु सङ्गमे।
दुःस्वप्न दर्शने चैव ग्रह पीड़ासु वै मुने॥
अरण्ये प्रान्तरे वाऽपि श्मशाने च भयानके।
रामनाम स्मरेत्तस्य विघ्नन्ते नापदो द्विज॥

वहीं यह भी कहा गया है कि महा घोर उत्पात होने पर, दुस्साध्य राजरोग से ग्रस्त हो जाने पर, श्री राम नाम का स्मरण करे, तो उसे कभी कोई भी अमंगल नहीं होने पायेगा। हे मुनिवर! श्री रामनाम सभी अमंगलों को मिटाने वाले हैं। इतना ही नहीं, श्रीराम नाम से मनोरथ सिद्ध कीजिए, मोक्ष लीजिए आपको सब देंगे। अतः बुद्धिमानों को इन्हीं का सदैव स्मरण करते रहना चाहिए।

औत्पातिके महाघोरे राजरोगादिके भये।
रामनाम स्मरन मर्त्योलभते नाशुभं क्वचित्॥
रामनाम द्विजश्रेष्ठ सर्वाशुभनिवारणम।
कामदं मोक्षदं चैव स्मर्तव्यं सततं बुधैः॥

श्री रामनाम के स्मरण करनेवाले कभी दुखी नहीं होंगे। मैं आपसे सत्य कहता हूँ।

श्री राम नाम नित्य महामंगल को प्रगट करते हैं।

स्मरन्ति रामनामानि नावसीदन्ति मानवाः।
सत्यं बदामि ते नित्यं महामङ्गलकारणम।।

श्री प्रपन्नगीता में महर्षि श्री पुष्कर जी कहते हैं कि किसी घोर संकट से आपन्न व्यक्ति श्री राम नाम का स्मरण करता है, तो स्मरण करते ही उसका समुद्र के समान अपार दुःख भी उसी समय मिट जाता है। इसमें कोई भी सन्देह नहीं करना।

ये केचिद्दुस्तरं प्राप्य रघुनाथं स्मरन्ति हि।
तेषां दुःखोदधिः शुष्को भवत्यपि न संशयः।।

श्री बड़े महाराज श्री सीतारामनाम सनेह वाटिका १८२ में कहते हैं कि श्री रामनाम सोहन हैं, सुख के निलय है, इनसे कोई स्नेह करे तो उसके शरीर, मन, वाणी के कोई भी क्लेश नहीं रहने पायेंगे। श्री नाम प्रभाव के विषय में जो कुछ वेद, संत कहते हैं, सब सत्य है। शान्ति के तो घर ही है। नाम जपने से घोर से घोर दुःख भी मिटेंगे। लोक परलोक में सर्वत्र नामजापक शोक रहित होकर, आनंदपुंज से भरा रहेगा। देवता, मुनीश्वर, कोई भी उसे कोई कष्ट नहीं दे पायेंगे। श्री नाम जापक को किसी भी प्रयोजनीय वस्तु की कमी नहीं रहेगी। उसे लाखों प्रकार के मनोरम लाभ अनायास प्राप्त होते रहेंगे।

सीताराम सोहन सुखौन नामनेह किये
कायिक कलेश वाक् मानस न रहेगो।
साँचो श्रुति संत वर वैन ऐन चैन नाम
दशा दुखा दारुन दरार वन दहेगो।।
लोक परलोक में विशोक मोद थोक पाय
देवता मुनीश कोऊ फेंट को न गहेगो।
(श्री) युगल अनन्य काहू चीज की न कमी कछु
लाखन ललाम लाह अनायास लहेगो।।

एक पौराणिक कथा है। वन में कुछ ऋषिकुमार मिलकर खेल रहे थे। इसी बीच चारों ओर से वनाग्नि लग गयी। बालकों को कहीं से निकलने का मार्ग नहीं मिल रहा था। अपने अपने पिताजी से सब सुन चुके थे, भगवान्नाम सब संकटों से रक्षा करते हैं। अतः हार कर सब ऋषिपुत्र मिलकर नाम गान करने लगे। उसी समय संकट भजन नाम सरकार की कृपा से मूसलाधार वर्षा होने लगी। दाबाग्नि शांत हो गयी। सब बालक हँसते हुए अपने-अपने आश्रम पर लौट आये। कल्याण भगवन्नाम महिमा अंक पृ. २०५ के आधार पर लिखा गया है।)

(वहीं पृ.२०६ में एक और प्रसंग छपा है। कल्याण केवल सच्ची घटना ही छापता है।)

एक वृद्ध ब्राह्मण को हत्याके अपराध में फाँसी की सजा हुई थी। वह बनारस जेल में अपनी फांसी की कोठरी में बैठा अपने अंतिम दिन गिन रहा था। जिस गाँव में ब्राह्मण रहता था, उसमें एक खून हुआ था। पुलिस ने चार गवाहों को इन ब्राह्मणों के विरुद्ध झूठी गवाही देने को राजी किया। इससे उसे फांसी की सजा मिली। इन गवाहों को सिखाते समय पुलिस ने उन्हे वचन दिया था कि सेशन अदालत से ब्राह्मण को हलकी से हलकी सजा मिलेगी, पर बाद में वह छोड़ दिया जायगा। पुलिस ने गांव वालों पर दबाव डालकर और उनको धमकाकर गवाह बनाया था, और अदालत में पेश हुए थे। जब ब्राह्मण को मालुम हुआ कि उसे फाँसी की सजा हुई है तो उसी समय से वह मृत्युतक भगवन्नामोच्चारण का निश्चय कर रामनाम जपने लगा। जेल में भी वह केवल रामनाम जपता रहा। जेल के अन्य सामान्य कैदियों ने उसे अपने उपहास और विनोद का लक्ष्य बनाया, पर ये जपको खंडित करने में असमर्थ रहे। इसके पूर्व मैंने कभी किसी को इतनी तन्मयता से रामनाम जपते नहीं देखा था। इस प्रकार दिन बीतते हुये, वह हाईकोर्ट के निर्णय की प्रतीक्षा कर रहा था। एक दिन जेल में बड़ा तहलका मचा, पता लगाने पर मुझे मालूम हुआ कि जब उन गवाहों को मालूम हुआ कि ब्राह्मण को फाँसी की सजा हुई है, तब वे अपने कुटुम्ब के सम्पूर्ण आदमियों के साथ सेशन जज के पास पहुँचे और उनको सारी कहानी ठीक–ठीक सुना दी कि किस प्रकार पुलिस ने उनको झूठी गवाही देने पर राजी किया, जिसके फलस्वरूप ब्राह्मण को फाँसी की सजा हुई। उन लोगों ने प्रार्थना की कि ब्राह्मण के बदले वे अपने सारे कुटुंब के साथ फाँसी पर चढ़ा दिये जाये। विज्ञ जज ने परिस्थिति की गुरूता देखकर ब्राह्मण की सजा हटा दी और झूठी गवाही देने के जुर्म में उन गवाहों को दो–दो वर्ष की सजा दी। उसने प्रसन्नता पूर्वक यह दंड स्वीकार किया। रामनाम का यह प्रभाव देख मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई।

संकट मोचन रामनाम

घटना मेरे मित्र की है । मित्र बीकानेर राज्य के एक भाग में ग्राम्य पाठशाला के निरीक्षण के लिये गये थे। राजस्थान में आज भी ऊँट ही सवारी का सर्वश्रेष्ठ साधन है। एकबार एक गाँव से दूसरे गाँव में जाने के लिये उन्होंने एक ऊँट को भाड़े पर तय किया। ऊँट से यात्रा सुबह तीन चार बजे आरम्भ की। मित्र ने देखा कि ऊँटवान 'राम' नाम का लगातार जप कर रहा था। १० मिनट, २० मिनट तक मित्र महोदय वह जप सुनते रहे। दस मिनट और निकल गये। सुनने–सुनते आधा क्या पूरा एक घंटा हो गया। मेरे मित्र भी थोड़े आस्तिक हैं। उनसे नहीं रहा गया। वे ऊँटवान से पूछ ही बैठे – 'क्यों भाई' तुम राम–राम लगातार कैसे जप रहे हो? नाम–जप की चाट तुमको कैसे लग गई? ऊँटवान थोड़ा मुसकराया और उसने बात को टालने की चेष्टा की, पर मित्र के आग्रह करने पर ऊँटवान ने कहा–

मेरे जीवन का एक प्रसंग है , जिसने मुझे राम का नाम दिया। मेरे गाँव से सटकर ही पंजाब प्रान्त की सरहद है। पंजाब से राठ जाति के लोग प्राय: गाय–बछिया–पशु आदि खरीदने के लिए आया ही करते हैं। मेरे घर पर एक बछिया थी, जिसे एक राठ ने खरीद लिया, पर उसने एक बात कही। उसने कहा– इस बछिया को मेरे घर तक पहुँचाना पडेगा। अभी यह

बछिया तुम्हारे खूँटे से और तुमसे हिली मिली है। अतः मेरे साथ जायगी नहीं। तुम मेरे घर पर मेरे खूंटे से बाँध दोगे, तब दाम दूँगा। उसकी बात मैंने स्वीकार कर ली। बछिया लेकर मैं चला। राह में एक गडढा पड़ा जो बरसाती पानी से भरा था। ईंट बनाने के लिये काफी मिट्‌टी खोदकर निकाल ली गई थी। अतः गड्‌ढा बहुत चौड़ा तथा ज्यादा गहरा था, इतना गहरा कि एक व्यक्ति आसानी से डूब जाय। मेरी बछिया मेरे साथ जा रही थी। इधर—उधर भागती बछिया एक बार ऐसी उचकी कि संयोग से उस गड्‌ढें में जा गिरी। मुझे अपनी असावधानी पर बड़ा खेद हुआ। उसे बचाने के लिए मैं भी गडढे में कूद गया। कूदने के पहले मुझे पता नही था कि गड्‌ढ़ा ज्यादा गहरा है और मुझे लेने के देने पड़ जायेंगे? वछिया को तो क्या ब़चाता? मुझे अपनी ही जान के लाले पड़ गये । तैरना तो आता नहीं था, मैं पानी में डूबने लगा। जीवन का अंत सामने दीखने लगा। कोई पास नहीं, कोई सहारा नहीं। संकट भी कुछ इस प्रकार का आया कि पाँव पानी की तह में जाकर मिट्‌टी की दलदल में धँस गये। अब तो जीवन की आशा पूर्णतः छूट गयी। निराशा छा गई। मन—ही—मन भगवान को याद किया। अंदर —ही—अंदर राम राम की रट लग गई। रक्षा के लिए गुहार करने लगा। इतने में क्या हुआ कि अचानक मुझे ऐसा लगा कि किसी ने झटका देकर मुझे ऊपर उठा दिया है, दलदल से पैर निकल गये हैं और मैं पानी की सतह पर आ गया हूँ। उसी समय मेरे सामने से तैरती हुई बछिया निकली। उसकी लंबी पूछ मेरी पकड़ में आ गई। वह तो तैरकर पार हो रही थीं, उसकी पूँछ को पकड़े—पकड़े मैं भी तैरता हुआ पार हो गया।

जीवन के इस संकट में ही मुझे रामनाम की प्राप्ति हुई। 'राम' के स्मरण ने विपदा की उस घड़ी में रक्षा की। इतना ही क्यों, उसके बाद भी अनेक विपदाओं में इस रामनाम ने मेरी रक्षा की है। अब तो यही मेरे जीवन का आधार है, आश्रय है।

ऊँटवान के इस प्रसंग को सुनकर मेरे मित्र अत्यधिक प्रभावित हुए। उनकी नाम—निष्ठा और भी बढ़ गयी।

विघ्न वाधा निवारण

श्री गणेशपुराण में श्री गणेश जी स्वयं ऋषियों को समझा रहे हैं कि श्री रामनाम सभी विघ्नों के नाशक हैं, सब संपत्ति को देने वाले हैं अमृत के भी सार सर्वस्व, निर्विकार एवं स्वतंत्र है।

''विघ्नानां संनिहन्तारं दातारं सर्वसम्पदाम्।
सुधासारं सदा स्वच्छं निर्विकार निराश्रयम्।।

श्री ब्रह्मवैवर्त्तपुराण में देवर्षिनारद जी ने महाराज अंबरीष जी से कहा है— महाभाग राजन् मेरे परमोत्तम वचन को आप सुन लें। यदि आपके सामने कोई भी उपद्रव आवे, तो आप उसके निवारण के लिये कोई और यत्न मत करियेगा। श्री रामनाम का कीर्त्तन शुरू कीजिये। सभी उपद्रव अनायास मिट जायेंगे।

अम्बरीष महाभाग शृणु मद्वचनं वरम्।
सर्वोपद्रवनाशाय कुरु श्री रामकीर्त्तनम्।।

श्री वामन पुराण में स्वयं वामन भगवान् मुनियों से कहते हैं कि बज्रपात आदिक दुर्घटना जन्य दु:ख समूह घटित हो जायें, अथवा अन्य दुष्टाचरण से उत्पन्न कष्ट समूह आ जुटे तो श्री रामनाम के स्मरण से क्षणमात्र में सब शीघ्र नष्ट हो जाते हैं।

अघौघा बज्रपाताद्याह्यन्ये दुर्नीत सम्भवा:।
स्मरणाद्रामभद्रस्य सद्यो याति क्षयं क्षणात।।

श्री नृसिंह पुराण में कहा गया है कि जैसे सूर्योदय होते ही अन्धकार आप ही आप समाप्त हो जाता है, उसी भाँति श्री रामनाम स्मरण करते ही सभी उपद्रव शांत हो जाते हैं।

सूर्योदये यथा नाशमुपैति ध्वान्तमाशु वै।
तथैव राम संस्मरणाद्विनाशं यान्त्युपद्रवा:।।

इस पाप ताप पूर्ण संसार में कोई तो नाना प्रकार की चिन्ताओं से आतुर हो रहे हैं। कोई मानसिक, कोई शारीरिक रोग से व्याकुल हैं, किसी को ज्वर लगा है, कोई मृगीरोग से, तो कोई कुष्ठ रोग से, कोई यक्षमादि महारोगों से पीड़ित है। कोई बड़े–बड़े उत्पापों से व्यथित है, तो कोई अरिष्ठों से आक्रान्त होकर, मरणासन्न हो रहा है। किसी को महाक्रूर ग्रहदशा चिन्तान्वित कर रही है। कोई धन जन की हानि से महाशोक अग्नि में दग्ध हो रहा है। कोई भाग्यहीन जहाँ जाता है, वहीं तिरस्कृत होता है। कोई अपने दुराचरण के कारण लोक निन्दित होने से खिन्न है। कोई ऐसा अनाथ है कि कहीं भी उसे ठिकाना नहीं लग रहा है। कोई महादुर्भाग्य से अत्यन्त दु:खी है। कोई परम कंगाल बना है, कोई भाँति के संताप से हृदय जला रहा है, ऐसे दु:खी जीवगण भी यदि श्री रामनाम का कीर्त्तन करें तो उनके सारे दु:ख विपत्ति मिट जायँ और सुखी भी हो जाय। इस सबंध के श्रीवृहन्नारदीय पुराण के मूल श्लोक नीचे लिखे जाते हैं।

महाचिन्ताऽऽतुरो यस्तु महाधिव्याधि व्याकुल:।
ज्वरापस्मार कुष्ठादि महारोगे: प्रपीडित:।।
महानिन्द्यो निरालम्बो महादुर्भाग्यदु:खित:।
महाशोकाग्नि संतप्तस्सर्वलोकस्तिरस्कृत:।।
महानिन्द्यो निरालम्बो महादुर्भाग्य दु:खित:।
महादरिद्री संतापी सुखी स्याद्रामकीर्त्तनात्।।

ऊपर वाह्य उपद्रवों की बात हुई। आगे मानस कष्टों को गिना रहे हैं। यदि कोई पापी काम क्रोध से आतुर है, तो कोई लोभ मोह में पड़कर उद्विग्न बना हुआ है। कोई राग द्वेष की आग में हृदय जला रहा है तो कोई बड़ी –बड़ी विषय दुर्वासनाओं से घिरा हुआ है। कोई १. भूख, २. प्यास ३. लोभ, ४. मोह, ५. सर्दी और गर्मी इन छओ उर्मियों से पीड़ित है। कोई १. काम,

२. क्रोध, ३. लोभ, ४. मोह, ५. मद और मात्सर्य (पराई उन्नति देख कर डाह से जलना) इन छवों विकारों से परेशान है। कोई भावी सुख संग्रह का खयाली पुलाव पका रहे हैं, तो विषयलिप्सा के कारण उद्धत हो रहा है। ऐसे घोर उपद्रवों से व्याकुल है, इसी प्रकार अन्यान्य भाँति–भाँति के दारुण उत्पातों से अत्यन्त दुखी हो रहा है। यदि भावपूर्वक श्री सीतारामनाम जपें, तो इनके सभी उत्पात मिट जायेंगे और ऐसे व्यक्ति भी दिव्य परमानन्द का अनुभव करने लगेंगे। वहीं वृहन्नारदीय आगे भी कह रहे हैं।

काम क्रोधातुरः पापी लोभ मोह महोद्धतः।
रागद्वेषादिभिर्दग्धो महादुर्वासनाऽऽवृतः।।
षड्भिरूर्मिभिराक्रान्तः षडविकारै विखिद्यतः।
मनोराज्य कषायाद्यै र्व्याकुलः समुद्रवैः।।
अन्यैश्च विविधोत्पातै दारूणैरति दुःखितः।
रामनामानुभावेन परानन्दमवाप्नुयात।।

श्री आदि पुराण में भगवान श्री कृष्ण ने श्री अर्जुन जी को समझाया है कि श्री रामनाम स्मरण करते ही मनुष्य आपत्तियों से मुक्त हो जाता है। जो ऐसे कृपासागर नाम का सदा स्मरण करते रहते हैं, उन्हें न जाने कौन–कौन सी दुर्लभ वस्तुएँ मिलेंगी।

नामस्मरण मात्रेण नरो याति निरापदम।
ये स्मरन्ति सदा रामं तेषां ज्ञानेन कि फलम्।।

श्री सीतारामनाम स्नेह वाटिका में श्रीबड़े महाराज, मानव जाति के बाधकों के नाम गिना रहे है। मिट्टी, जल, अग्नि, वायु और आकाश ये पाँच तत्व भी कभी–कभी बाधक बन जाते हैं। पच्चीसों प्रकृति तो बाधक हैं ही। रज, तम, सत तीनों गुण, छः प्रकार के विकार, और भी अनेक दोष दुःख देने वाले हैं। श्री रामनाम जापक को ये सब कभी संताप नहीं पहुँचा सकते। सम्मुख होकर कुदृष्टि से देख भी नहीं सकते। मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार भी जापक के विपरीत नहीं होने पाते। देहासक्ति मानों शीशे का नुकीला टुकड़ा है, छूते ही गड़कर कष्ट देगी। अतः इसे त्यागकर नाम संचय रूपी अनमोल धन संग्रह करना चाहिये। श्री बड़े महाराज का आदेश है कि नाम जप से तुम्हारे सभी शोक संताप मिट जायेंगे। परमानन्द पाओगे तथा सच्चिदानन्द घनश्याम श्री जानकी रमण स्वयं ही आकर तुम से मिलेंगे।

पाँच तत्व प्रकृति पचीस तीन गुन षट
ऊरमी विकार षट और जेते दोष गन।
आँच नहीं देय सके तके सन्मुख नाहि
चित्त बुद्धि अहंकार चौथो महावीर मन।।

काँच को किरिच विच कौन तोको मिली नफा।
दफा करि दीजे दिव्य लीजे अनमोल धन।
युगल अनन्य नाम जापही से
मिटे हाय मिले आय आप चित्त धन।।२३८।।

श्री शनैश्चर स्मृति में स्वयं शनैश्चरजी कहते हैं कि बुद्धिमान व्यक्ति सभी उपद्रवों के नाश के निमित्त श्री राम नाम ही का जप करते हैं। मैं सत्य सत्य सत्य कहता हुँ। श्री नाम में श्रद्धा रखने वालों को मेरा कहना मान लेना चाहिए।

सर्वोपद्रवनाशार्थं रामनाम जपेद्बुधः।
सत्यं सत्यं न सन्देहो मन्तव्यं सततं जनैः।।

श्री अध्यात्म रामायण में कहा गया है कि जिन जिन देशों में श्री रामनाम की उपासना होती है, वहाँ अकाल की भूख़मरी तथा दीनता दरिद्रता दोष नहीं आने पाते।

येषु येष्वपि देशेषु राम नाम उपासते।
दुर्भिक्ष दैन्य दोषाश्च न भवन्ति कदाचन।।

श्री शनैश्चर स्मृति में स्वयं श्नैश्चर देव ही कहते हैं कि मेरे कोप के कारण जो महा:दुख समूह को देने वाली ग्रहवाधा यदि उपस्थित हो, तो श्री रामनाम के जप के उत्साह से थोड़े ही समय में शान्त हो जाते हैं।

मत्कृता यां भवेद्बाधा महादु:खौध दायिनी।
रामनाम्नो जपोत्साही मुच्यते स्वल्पकालतः।।

श्री सूत संहिता का वचन है। जो मनुष्य श्री राम नाम का जप करते हैं, उनके शत्रुगण नष्ट हो जाते हैं, उन्हें दुष्टग्रह बाधा नहीं पहुँचा सकते। राक्षस भी उन्हें नहीं खा सकते हैं।

रिपवस्तस्य नश्यन्ति न बाधन्ते ग्रहाश्च तम्।
राक्षसाश्च न खादन्ति नरं रामेति वादिनम्।।

श्री नृसिंहपुराण का वचन है कि परस्त्रीगामी, वेश्यागामी दुराचारी, चोरी डकैती करने वाले दुष्टगण, महापातकवान, भी श्रद्धा भक्ति पूर्वक श्री राम नाम का स्मरण करें तो निश्चय सभी पापों से मुक्त होकर विशुद्ध बन जाये। श्री बाल्मीकि जी प्रमाण हैं।

दुराचारो महादुष्टो महाघौघ निकेतनः।
रामनाम स्मरन भक्त्या विशुद्धो भवति ध्रुवम्।

श्री मिथिला के सुप्रसिद्ध नाम जापक शिरमौर परहंस श्री सियालाल शरण जी विकार नाश के सम्बन्ध में अपना अनुभव बताते हैं।

नाम तत्त्व लखि परत जब, नासत सकल विकार।
'प्रेमलता' रवि उदय जिमि, रजनी केर अँधार।।

नाम रटत दुरवासना याचकता जरि जाय।
प्रेमलता बिनु आग जिमि, ग्रीषम घास नसाय।।
नाम रटे बिनु कबहुँ उर, होत न रहित विकार।
प्रेमलता यहि भाँति जिमि, झारे बिनु घर द्वार।।

एक संत का जो यहाँ तक विश्वास है और उस पर उनकी प्रबल दृढ़ता भी है कि रामनाम जपते चलो तो दुर्घटनाओं से बचोगे, रोगों से मुक्ति पावोगे, विपत्तियाँ झेलने में सुविधाएँ प्राप्त करोगे, कठिनाइयों को आसानी से पारकर जाओगे और इहलोक— परलोक में दोनों हाथ लड्डू रहेंगे। वे तो यह भी कहते हैं कि आरंभ में प्रेम, विश्वास श्रद्धा, भक्ति आदि कुछ भी न हो, तब भी राम नाम जपते—जपते आपसे आप इन सद्‌गुणों का उदय हो जाता है जैसे उलटा नाम वाल्मीकि के लिए फलप्रद हुआ।

कल्याण के वर्ष २३ वाली सं० २ के पृ० ८७० में 'विष्णुपुरेर काहिनी' नामक बंगला पुस्तक के आधार पर एक सच्ची ऐतिहासिक घटना छपी थी। विष्णुपुर नामक राजधानी में एक वैष्णव परम्परागत राज्यसिंहासन पर राजा गोपालसिंहजी सन् १७१२ ई० में अभिषिक्त हुए थे। ये भगवन्नाम कीर्त्तन के ऐसे अनन्यप्रेमी हुए कि अपने राज्य भर के चतुर्वर्णों के स्त्री—पुरुष सबों से बलपूर्वक नाम जप करवाने लगे। स्वयं भी हरिनाम कीर्त्तन में ऐसे लीन रहने लगे कि राज्यसंचालन में स्वत: उदासीनता बढ़ने लगी। इधर मराठा सेनापति भास्कर पंडित बहुत दिनों से विष्णुपुर राज्य पर आक्रमण करने का सुयोग देख रहा था। श्रीगोपालसिंह की उदासीनता का उसने लाभ उठाने की ठानी। मराठा सैनिक मुर्शिदाबाद, ढाका और विष्णुपुर वाले मल्लराज्य के अनेक ग्रामों को लूटते हुए, खाश विष्णुपुर आ धमके । मराठों के इस अभियान से अनजान होने के कारण विष्णुपुर नगर की सुरक्षा सेना उस समय असावधान थी। घोड़े से सुरक्षा में तत्पर विष्णुपुरी सैनिकों को परास्त करते हुए, मराठी सैनिकों ने दुर्गपर अधिकार कर लिया। गढ़ की सेना भागकर राजा गोपालसिंह को सूचना दी।

राजा की आज्ञा से राजधानी के सभी प्रजाओं ने भयभीत होकर अपनी धन—संपत्ति बाल बच्चों सहित दुर्ग के भीतर आश्रय लिया। अपनी सेना की पराजय जानकर और कोई उपाय रक्षा का न देखकर, हरिनाम कीर्त्तन करने की आज्ञा दी। हरिनाम की तुमुल ध्वनि से गढ़ गूंज उठा । इधर भास्कर पं० की युद्धश्रान्त सेना रात्रि विश्राम करने लगी। राजा श्रीगोपालसिंह के राज मंदिर में श्रीमदनमोहन नामक ठाकुरजी उनकी वंशानुगत परामपरा से बड़े लाड़—प्यार पूर्वक पूजित थे। मराठी सेना को विश्राम करते देख, बीच में समय पाकर मल्ल सेना तोपों में बारूद भरने लगी और नये नये सैनिकों के दल दुर्ग में आने लगे। अचानक, आश्चर्यचकित होकर विष्णुपुर के मल्ल सैनिकों ने देखा एक अश्वारोही राजप्रसाद से निकलकर बड़े जोर से दुर्ग की ओर दौड़ा आ रहा है। घोड़ें के खुर की धूल चारों ओर उड़ रही है और वह घुड़सवार इतने वेग से चला आ रहा है कि वह कौन है, वह भी अच्छी तरह दिखलायी नहीं पड़ता। सहसा दल—भादल तोपें गरजने लगीं और थोड़ी देर बाद देखा कि जंगल में, जहाँ मराठी विश्राम कर रहे थे। वहाँ दल—मादल तोपों के गोलों की घनघोर

वर्षा हो रही है। फलत: असंख्य मराठे सैनिक मौत के शिकार हो रहे हैं। देखते–देखते भास्कर पण्डित की आधी सेना समाप्त हो गई। मराठा–सेनापति ने पराजय स्वीकार ली और शेष सेना को लेकर धीरे–धीरे पीछे हटने लगा। मल्ल सैनिक दुर्ग से निकलकर पीछा करने लगे। मराठी सेना तितर–वितर होकर अपने प्राण लेकर जहाँ भी छिपने की जगह मिली छिप गई।

पीछे पता लगा कि शत्रु सेना के छक्के छुड़ाने वाला दो तोप एक साथ एक ही घोड़े पर लाद कर चलने वाला आश्चर्य शूरता दिखाने वाला घुड़सवार कोई और नही था। वह था श्रीगोपाल सिंह की राज पराम्परा द्वारा पूजित वही मदनमोहन नामक ठाकुर। कैसे पता लगा? वह घुड़सवार सबों को देखते–देखते तोपों को लाल बाँध (तालाब) पर उतारकर स्वयं अपने मन्दिर में अलक्ष रूप में प्रवेश कर चुका था। शत्रु सेनापति अपने मंत्री सहित उस घुड़सवार के पीछे–पीछे आये और राजागोपाल सिंह के चरणों में पड़कर अपराध के लिए क्षमा माँगी। राजा ने कहा 'अपराध किस बात का' शत्रु सेनापति ने सारा हाल आद्योपान्त कह सुनाया कि 'आपके एक ही घुड़सवार वीर पुरुष ने तोपों के गोलों द्वारा हमारी सारी सेना को तहस–नहस करके पराजित कर दिया। आपके पास ऐसे कितने वीर पुरुष हैं? राजा गोपालसिंह ने कहा– हमारे पास तो ऐसा कोई सवार नहीं है, जो घोड़े पर तोप बाँधकर युद्ध करे। सेनापति ने कहा– यह तो प्रत्यक्ष घटना है। दोनों तोपें लाल बाँध के इधर–उधर पड़ी हैं और घोड़ा मन्दिर के दरवाजे के बाहर मौजूद है एवं घुड़सवार को हमने स्वयं इस सभा मंडप के भीतर प्रवेश करते देखा है। यह सुनकर राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ। दोनों वहाँ से सभा मंडप के भीतर गये तो शत्रु सेनापति ने मदनमोहन की विशालमूर्ति को देखकर तुरंत कहा कि 'बस' ये ही तो थे। तब राजा ने भगवान् मदनमोहन के वस्त्रों को देखा तो वे पसीने से भीगे थे। राजा गोपाल सिंह करुणभाव से अश्रुपात करते हुए बोले 'मैं बड़ा ही राज्यलोलुप हूँ। मेरे इस तुच्छ काम के लिए आपको युद्ध में जाना पड़ा। फिर उन्होंने शत्रु सेनापति के सौभाग्य की प्रशंसा करते हुए उन्हें आश्वस्त करके विदा किया– आप धन्यभाग्य हैं, जो आपको साक्षात् भगवान के दर्शन हुए। आपने जो कुछ आश्चर्य देखा है, यह सब इन भृत्यवत्सल शरणागतपालक दयासिंधु भगवान् मदनमोहन की ही लीला है।

❋ श्री नाम जप से अमरत्व ❋

श्रीशिवपुराण में स्वयं भगवान् शंकरजी, श्रीनारदजी को बता रहे हैं कि अनादि अनन्त रामनाम का सतत ध्यान करते–करते मैं भी अजरअमर अविनाशी बन गया हूँ। मैंनें यह गोप्य बातें आपसे ठीक–ठीक बतायी है।

यन्नाम सततं ध्यात्वाऽविनाशित्वं परं मुने।
प्राप्तं नाम्नैव सत्यं च सुगोप्यं कथितं मया।।
'नाम प्रसाद संभु अविनाशी। साज अमंगल मंगल रासी।।'

श्रीपार्वतीजी ने भगवान् शंकरजी से पूछा कि आप तो अमर बने हुए हैं और मैं आप अविनाशी की दासी (शक्ति) होकर भी बार–बार जन्ममरण का कष्ट क्यों भोगती हूँ?

प्रेमा परा रहस रसाल भक्ति भाव भेद
खोद से विहीन लीन लाभ ललकत हैं।
युगल अनन्य इष्ट अनुकूल झूल शूल
रहित सहित रंग रूप झलकत हैं।

श्रीरामनाम प्रतिकूल को अनुकूल बनाते हैं

श्रीदक्षस्मृति का वचन है कि श्रीरामनाम में जिसे रुचि बनी रहती है, उसके लिये विष हो जाता है अमृत, शत्रु बन जाता है मित्र, वह प्राणिमात्र का प्रेमपात्र बन जाता है।

विषं तस्य सुधा प्रोक्तं शत्रुस्य सुहृद्भवेत्।
सर्वेषां प्रेमपात्रं सः यस्य नाम्नि सदा रुचिः।।

श्रीरामनाम जापक शिरोमणि परमहंस श्रीप्रेमलता जी महाराज भी यही कहते हैं।

नाम रटत अब सुनहु गुन, होत सुदुख सुख दाय।
प्रेमलता जिमि कुजल मिलि, गंगहि गंग लखाय।।
नाम संग ह्वै जात भल, गुनद विषहुँ अति भीम।
प्रेमलता लहि चैत जिमि, सुखद होत कटु नीम।।

श्रीगोस्वामिपाद स्वरचित श्रीकवितावली (७।७५) में कहते हैं। निरन्तर नाम जपने वालों के लिए श्रीरामनाम सरकार अपना चमत्कार पूर्ण प्रभाव दिखाते हैं। नामजापक के ऊपर यदि प्रारब्ध प्रेरित कोई शोच संकट आने लगता है, तो उसी शोच संकट के माथे पर नाम सरकार शोच संकट डाल देते हैं। तब वह शोक संकट, श्रीनामजापक के लिये सुख शान्ति में रूपान्तरित हो जाता है। यदि तीनों तापों में कोई जलन नामजापक के हृदय में डालता है तो श्रीनाम उस जलन को ही जला कर भस्म कर देते हैं। डूबा हुआ भी तैरने लगता है। देखिये स्वयं डूबने वालों तथा औरों को भी लेकर डुबाने वाले पत्थर सब तैरने लगे और सेतु बन गये। श्री हनुमान जी ने पत्थर पर श्रीरामनाम जो लिख रखा था। बिगड़ी हुई बात भी बन जाती है। पूर्वजन्म के अपराधों पर प्रतिकूल बनकर श्री ब्रह्मा जी ललाट में दुख लिखने जा रहे हैं, नाम जपते हुए देखकर प्रसन्न होकर, सुख सौभाग्य लिख जाते हैं। इस प्रकार उसका अभाग्य सौभाग्य बन जाता है। जो लोग पहले उदासीन हो गये थे, वे अनुराग करने लगते हैं। गोस्वामी जी कहते हैं कि मेरे जैसे आलसी और निकम्मे का भाग्य जग जाता है। लूटने को आई हुई लुटेरों की सेना रक्षक और हितकारी बन जाती है। यहाँ तक कि आई हुई मृत्यु लौट जाती है। अतः नाम जापक की आयु बढ़ जाती है।

सोच संकटनि सोचु संकट परत जर
जरत प्रभाउ नाम ललित ललाम को ।

बूढ़िऔ तरति, बिगरीऔ सुधरति बात
होत दखि दाहिनो सुभाउ विधि बाम को।।
भागत अभाग, अनुरागत बिरागु, भागु,
जागत आलसि तुलसी हूँ– से निकाम को।
धाई धारि फिरिकै गोहारि हितकारी होत
आई मीचु मिटत जपत रामनाम को।।

कुटिल कर्म की रेख कठिन जो नाम रटे मिटि जाती है।
अनहोनी हो जाई भलाई दशहू दिशि दरसाती है।।
मृत्यु मातु सम होइ नाम बल जो सब जगकहँ खाती है।
प्रेमलता सो धन्य संत जेहि नाम सुरटना भाती है।।
कोटिन विघ्न विलाय नाम धुनि सुनि कर दे जाते टाला।
पावक शीतल होय हलाहल करै नामबल प्रतिपाला।।
अरिहु मित्रता करै डरै तेहि बाघ भालु बिच्छू व्याला।
प्रेमलता जो सदा नामकी फेरा करते हैं माला।।

श्रीरामनाम का चमत्कार

इस सम्बन्ध में हम सर्वप्रथम श्रीबड़े महाराज विरचित श्रीसीतारामनाम सनेह वाटिका से कुछ कवित्त उद्घृत करते हैं। श्रीमहाराज अपने नामजप के अनुभव के बल पर कहते हैं कि परम रमणीय श्रीरामनाम परमानन्द निधान हैं। परमानन्द देना इनका सहज स्वभाव है। इनके अतिरिक्त भी चाहे कोई भी अघट कार्य सुघट कर सकते हैं, इसमें आश्चर्य क्या करना है? जल के भीतर आग प्रगट कर सकते हैं। शून्य आकाश में नाना प्रकार की पुष्पवाटिकाएँ प्रकट कर दे सकते हैं। राई के भीतर समेरु पर्वत को अँटा दें। एक बूँद में समूचे समुद्र रख दें, सूई के छेद से झुंड के झुंड हाथियों को आर–पार कर देवें, इनके लिये सब संभव है। अत: इन्हीं नाम ब्रह्म के कृपाकटाक्ष की सदा सर्वदा आशा बनी रहती है अन्य उपाय चित्त को रुचता भी नहीं है।

सीताराम नाम अभिराम महामोद धाम
चाहे जोइ करे आचरज कौन पावहीं।
नीर बिच पावक निवास त्यों अकाश मध्य
विविध बिहार बाग फूले सरसावहीं।
राई माँझ मेरु को समोइबो समुंद बुंद
सूई बेध ही से गज जूथन समावहीं।
श्री युगल अनन्य परमेश की कृपा कटाक्ष।
एक रस आस और चित्त में न भावहीं।

पुन: श्रीमहाराज कहते हैं सभी अनहोनी बातें श्रीनाम सरकार करके दिखा देते हैं। जो निष्ठा उत्साह सहित नाम का स्वाद ले–ले कर नाम रटते रहते हैं, उनके लिये श्रीनाम सभी असंभव संभव कर देते हैं। तौक एक वृत्ताकार वजनदार पटरी होती है, जो बड़े–बड़े अपराधी के गले में दंडस्वरूप पहनायी जाती है। वह भी जापकका कट जाता है। शत्रु प्रेरित वाणों की शृंखला भी श्रीनाम सरकार टूक–टूक कर तोड़ डालते हैं। श्रीनाम प्रभाव से वन्ध्या भी पुत्र प्रसव करने लगती है, आकाश में फूल खिलने लगत है। पाषाण पर भी डाले हुए बीज अंकुरित हो उठते हैं। बालू से तेल निकालना, खरहे के माथे पर सिंग जमा देना श्रीनाम सरकार के बायें हाथ का खेल है। श्रीनाम सरकार के करुणामय प्रभाव से सभी संभव है।

नाम अभिराम माँझ रमत जमत जौक
तौक तीर तार तूटि जात एक पल में।
बाँझ सुत जनत फुलत व्योम बीच फूल
बीजहू पषान बिच सुदय प्रवल में।।
सिकता से तेल बारि मथत कढ़त धीउ।
ससहू में शृंग दरसात अविचलमें।
(श्री) युगल अनन्य नाम करुना प्रताप पाय।
अखिल अयोग योग होवत सुथल में।।३६२

पुन: कहते हैं कि श्रीनामसरकार चाहे जो कर दें, आश्चर्य क्या करना है? जल के भीतर प्रबल आग को बसा दें, उसमें बर्फ की पुतली दबाकर रखे रहें। स्त्री बिना पुरुष के संयोग से ही पुत्र जन्मा दें बिना बीज बोये खेत में अन्न उपजा दें, सब कर सकते हैं। बिना प्राण प्रवेश कराये ही मृतक शरीर को चला फिरा सकते हैं। पत्थर को तैरा देवें। ये सब आश्चर्य सुनकर चुप्प रह जाना है। श्रीनाम सरकार सब प्रकार से समर्थ है। सब कर सकते हैं।

'चाहे जौन करें नाम अचरज कौन है।
नीर बीच अनल प्रबल को बसावैं, पुनि
तामें हिम मूरति दबावै द्रुत दौन है।
पुरुष विहीन सुत वाम उपजावै, बीज
बिना उपजावै खेत साँच बात तौन है।
प्रान के प्रवेश बिना देहहू चलावैं, तिमि
पाहन तरावै सुनि कीजै मुख मौन है।
(श्री) युगल अनन्य सब भांति समरथ तम
चाहे जौन करे नाम अचरज कौन है।। ३६३

पुन: आप कहते हैं कि आकाश में पुष्पवाटिका का प्रफुल्लित हुआ देखना आदि आश्चर्य करामातें श्रीनाम सरकार से सहज संभव है। जो संत महानुभाव अज्ञानान्धकार से निकल आये हैं त

गृह सम्पत्ति को त्याग दिया है, वे ही श्रीनाम चमत्कार को समझेंगे। यथा शून्य आकाश की वाटिका में विलक्षण फूल खिलना असंभव है, उसी भाँति गृहस्थी मोह जाल में दिव्यानंद मिलना असंभव है। किन्तु विषय भोग में लंपट को कौन समझावे? वे तो उसी में लुब्ध हो रहे हैं। श्रीनामसरकार के चमत्कार को कहते नहीं बनता है। समझने पर नामाभ्यास के लिए अपार उत्साह बढ़ता है।

व्योम विहार बहार विलोकन की कुल कीमत नाम ते प्यारे।
संत सिरोमनि जानत है, तजि के तमतार अजार अगारे।।
फूलत फूल अजूब जहाँ रस लंपट लोभ लिये ललकारे।
(श्री) युग्म अनन्य कहे न बने मनमाह उमाह उद्येत अपारे।। ४५६।।

पाथेयहीन व्यक्ति के लिए श्रीनाम सुपुष्ट पाथेय, (राह खर्च) है। सर्वथा निस्सहाय व्यक्ति के लिए प्रबल समर्थ सहायक बन जाते हैं। भाग्यहीनों के भाग्य चमकाने वाले, गुणहीन में सब गुण गण भर देने वाले हैं। गरीबों को निवाजने वाले दीनबन्धु हैं। दीनहीन व्यक्ति के लिए परमदयालु उदारदानी हैं। कुलहीन को उत्तम कुलवानों के समान पूज्य बना देते हैं। इसके प्रमाण वेद हैं। पंगु को हाथ पाँव देने वाले, अंधे को आँख देने वाले, भूखे के लिये माता—पिता के समान भोजन देकर तृप्त करने वाले, आधारहीनों के लिए स्वयं आधार बन जाते हैं। भवसागर से पार उतारने के लिए स्वयं पुल बन जाते हैं। सुख का सार सर्वस्व प्रगटाने वाले हैं। इनके समान तो कोई पतितों को पावन बनाने की सामर्थ्य भी नहीं रखता।

श्रीगोस्वामी जी अपना दृष्टान्त देते हैं कि ऊसर भूमि के समान किसी भी कर्म के फलोत्पन्न में हम असमर्थ थे, सो नाम जपने से उपजाऊ भूमि के समान चारों फलों से भरपूर हो गये।

'सुमिरु सनेह से तू नाम रामराय के।
संवल निसंबल को सखा असहाय के।
भाग हैं अभागे हू को, गुन गुनहीन को।
गाहक गरीब को दयाल दानि दीन को।।
कुल अकुलीन को सुन्यो है वेद साखि है।
पाँगुरे को हाथ पाँव आँधरे को आँखि है।।
मायाबाप भूखो को अधार निराधार को।
सेतु भवसागर को हेतु सुख सार को।।
पतित पावन रामनाम सो न दूसरो।
सुमिरि सुभूमि भयो तुलसी सो ऊसरो।।

श्री विनय ६९।

श्रीगोस्वामीपाद कहते हैं कि घोर सूर्य की तपन भी अपना स्वभाव पलटकर, नामजापक को छाया समान शीतल सुखदायिनी बन जाती है। यदि कोई कहे कि कमल कीचमें नहीं, पत्थर पर उत्पन्न हुआ है, सो नाम के प्रभाव से वह भी सही मानने योग्य है।

'रामनाम जप निरत सुजन पर करत छाँह घोर घामो।
नाम प्रभाव सही के जो कहै कोउ सिला सरोरुह जाम्यो।।

श्री विनय० २२८।

डाक्टर भगवतीप्रसाद सिंह लिखित श्रीहनुमान प्रसाद पोद्दार जी के जीवन– दर्शन पृ० ६४ से साभार उद्घृत है। सन् १९१६ ई०में भाई जी राजद्रोह के अभियोग में तत्कालीन ब्रिटिश सरकार के द्वारा बंगाल के बाँकुड़ा जिलान्तर्गत शिमलापाल नामक थाने के पास अन्तरीण (नजरबंद) रखे गये थे।

घर से ऐसा समाचार आया कि दादी रामकौर देवी बीमार हैं और मिलना चाहती हैं, पर अत्यधिक कमजोर होने के कारण वे शिमलापाल नहीं आ सकतीं। नजरबंदी के नियमानुसार पोद्दार जी शिमलापाल से बाहर नहीं जा सकते थे। कलक्टर भी बाहर जाने की आज्ञा नहीं दे सकता था। इनके मन में दादी जी से मिलने की तीव्र इच्छा जगी। बंगाल–सरकार को तार दिया, वहाँ से अस्वीकृति आ गई। बड़ी व्याकुलता हुई। फिर उसी भगवन्नाम का आश्रय लिया और इस निमित्त से जप आरम्भ कर दिया। उसी दिन एक मुसलमान डिप्टी कलेक्टर मुआइना करने के लिए थाने में आये थे। वे चटगाँव के निवासी थे। बड़े सहृदय तथा राजनीतिक व्यक्तियों के प्रति आदरभाव रखने वाले व्यक्ति थे। सरकारी अधिकारी होने से देश–भक्तों की सहायता करने में भय था, परन्तु भारतीय होने के कारण हृदय में राजनीतिक कार्यकर्त्ताओं के प्रति अपार सम्मान था। वे पोद्दार जी से मिलने के लिए आये। इन्होंने उनसे सारी बातें बता दी। सब सुनकर वे बोले– 'आपके लिये कल ही आर्डर आता है।' इनको विश्वास नहीं हुआ। ये जानते थे कि आर्डर कलक्टर नहीं, गर्वनर ही दे सकता है और मिल सकता है एकमात्र कलकत्ता से। इतने समय में तो कलकत्ता आना जाना भी संभव नहीं। इन्होंने पूछा–'कल कैसे आ सकता है?' डिप्टी कलक्टर ने कहा– 'देखिये, कल आ जाता है।' डिप्टी कलेक्टरसाहब की बड़ी पहुँच थी। उन्होंने अपने दौरे का सारा कार्यक्रम स्थगित कर दिया। उसी दिन बाँकुड़ा गये और बाँकुड़ा से कलकत्ता जाकर गर्वनर के सेक्रेटरी से मिले। पूरी रिपोर्ट देकर उनसे कहा– ' पन्द्रह दिन के लिए पैरोलपर छोड़ना चाहिये। ' इसके फलस्वरूप पन्द्रह दिन तो नहीं, सात दिन के लिए पैरोलपर जाने की आज्ञा मिल गई और यह दूसरे दिन ही पोद्दारजी को प्राप्त हो गयी।

इसी प्रकार एक दिन इन्हें किसी सम्बन्धी से समाचार मिला कि इनके फूफा ज्वालादत्त जी सख्त बीमार हैं। उन्हें देखने के लिए व्यग्रता हुई, किन्तु स्वीकृति मिलने की कोई आशा दिखायी नहीं पड़ी। निदान प्रार्थना और नाम–जप का आश्रय लिया। संयोगवश उसी दिन इनके स्नेही पुलिस इन्स्पेक्टर चटर्जी महाशय आ गये। इन्होंने अपनी समस्या उनके सामने रखी। इन्स्पेक्टर साहब ने कलकत्ता जाकर इन्हें पैरोलपर जाने की स्वीकृति भेजवा दी। इन घटनाओं से पोद्दार जी को भगवन्नाम के प्रति निष्ठा प्रगाढ़ होने में बल मिला।

❈ श्रीनाम प्रारब्ध भी मिटाने में समर्थ है ❈

श्रीगणेश रहस्य में कहा गया है कि जिसके हृदय में श्रीरामनाम की अखंड स्मृति बनी रहती है, उसकी प्रारब्धरेखा भी धर्मराज मिटा देते हैं।

स्मरणे राम नाम्नस्तु मानसं यस्य वर्तते।
तस्य वैस्वतो राजा करोति लिपि मार्जनम्।।

श्रीआदिरामायण में श्रीहनुमतलालजी ने श्रीनलजी को श्रीरामनाम का चमत्कारपूर्ण प्रभाव बताया है। आप कहते हैं बुद्धिमान् जनों ने सिद्धान्त ठहराया है कि श्रीरामनाम में ही प्रारब्ध कर्म मिटाने की प्रवीणता है। दृष्टान्त के लिये श्री शबरी जी को बताते हैं। उनका अस्पृश्य शवर जाति में प्रारब्धवश जन्म हुआ था। वह जाति चाहे कितना भी कर्म–धर्म करे, विप्रों द्वारा पूजनीय वन्दनीय नहीं हो सकती। पर श्रीरामनाम के प्रभाव से स्वयं श्री राघवजू ने उसे मुनिजनों का वन्द्य बनाया और उसी के चरणामृत से पंपा सरोवर का जल शुद्ध होता दिखा दिया।

प्रारब्ध कर्मापहृति प्रवीणं रामेति नामैव बुधैर्निरुक्तम्।
यज्ज्ञानमात्रादधमा किरातीं मुनीद्रवृन्दैरभवन्नमस्या।।

श्रीसीतारामनामसनेहवाटिका में श्रीबड़े महाराज ने भी यही कहा है। श्रीनामानुराग करने से जापक को द्वन्द्व रहित परमानन्द का अनुभव होता है और उसके तीनों गुण अथवा, संचित क्रियमाण और प्रारब्ध तीनों कर्मयोग क्षीण हो जाते हैं। हृदय में सुपुष्ट परम प्रकाश सुगम हो जाता है। एक निमिष भी नाम रटन बिना व्यर्थ बीत जाय तो कोटि कुलिश की चोट से भी अधिक दुखदायी प्रतीत होता है। अमृत से भी अनन्तगुणा अधिक मधुर स्वाद मिलता है। इनसे वेदवाणी से भी बढ़कर, वाक्य ज्ञान प्राप्त हो जाता है। वेद बखान कर कहते हैं, श्रीरामनाम ऐसे करुणानिधान हैं कि अपने अनुरागियों के लिखित भाल अंक भी मिटा देते हैं।

परानन्द द्वन्द्व से विहीन तीन छीन पीन
परम प्रकास नाम नेह से सुगम है।
एक पल रटन विहीन जो वितीत होय
सो तो कोटि कुलिस समान ही सुगम है।
मधुर पियूष से सहस गुन कहे हान
वचन विलास वेद वानी हूँ अगम है।
युगल अनन्य भाल अंक को मिटाय देत
करुना निकेत यो बखानत निगम है।।३९५।।

श्रीगोस्वामी जी की महावाणियों से भी यही सिद्ध होता है। यथा—

रामनाम सो विराग जोग, जप जागि है।
वाम विधि भालहू न कर्म दाग दागि है।। (श्री विनय ७०।३)

नाम लेत दाहिनो होत मन, वाम विधाता वाम को।। श्री विनय ।।
तुलसी प्रीति प्रतीति सो, रामनाम जप—जाग।
किए होइ विधि दाहिनो, देइ अभागेहि भाग।। श्री दोहा० ३६।
कुटिल कर्म की रेख कठिन जो नाम रटे मिटि जाती है।
अनहोनी होइ जाय भलाई दशहू दिशि दरसाती है।।
मृत्यु मातु सम होइ नाम बल जो सब जग कहँ खाती है।
प्रेमलता सो धन्य संत जेहि नाम सुरटना भाती है।। ७६।।
— श्री हितोपदेश शतक

नाम साधना संभूत अनुभव

श्रीबड़े महाराज ने हम आश्रितों के मार्गदर्शन के लिए श्रीसीतारामनाम सनेह वाटिका नामक एक विशालकाय ग्रन्थ लिखा है। इसमें कुल ३२४८ छन्द है। कवित्त, सवैया और झूलना ये तीन ही छन्द इसमें लिखे गये हैं। अंत में एक दोहा है। नामानुरागियों के लिए संपूर्ण ग्रन्थ मननीय है। यहाँ हम अपने लघु ग्रन्थ में कहाँ तक उनका उद्धरण दे सकते हैं? कुछ छंद यहाँ आपके अनुभव एवं नाम साधना अनुभूत प्रभाव सम्बन्धी उद्‌धृत किये जाते हैं।

आप कहते हैं कि श्रीसीतारामनाम की बार—बार बलिहार जाता हूँ। आपकी अहेतुकी करुणा से मुझे परमानन्दमय दिव्य धाम की प्राप्ति हुई। आपने कृपाकर मेरी तीनों वासनाएँ तथा तीनों ईषणाओं को नष्ट कर दिया। त्रिगुणमय उपद्रव सभी शांत हो गये। हमारे व्यथासमूह स्वयं सकुचाकर दब गये। माया का अपार सागर सूख गया। अब श्रीरामराज्य के नीतिमय देश में अपना निवास है, श्रीजानकीवर ईश्वरों के शिरताज हैं। आपके नाम के गुणों का गान कर अनुकूल स्वच्छ सुखसार की पराकाष्ठा तक पहुँच गया हूँ।

सीताराम नामही की बलिहारी बार बार
निरहेत करुना ते पायो मोद धाम दिव्य
वासना विलास बहवाय खानवाय तीन
ईषना उपाधि गुन दाह्यो हवनीय हब्य।।
सासना समूह सकुचाय सरमाप सूखि
सिंधु पर पार आप भये भई नीति नव्य।
(श्री) युगल अनन्य जानकीश सिरताज ईश
नाम गुन गाय स्वच्छ सीम सुख सार सव्य।।११३९।।

श्रीनाम सरकार के कृपाप्रकाश से दिव्यानंद प्राप्त हुआ तथा दुःख विरहित बड़ायी पायी है। हृदय में ही श्रीअवध छयल का निवास स्थान दीख पड़ा, जहाँ उनकी छवि छटा सदैव छायी रहती है। अनंत गुणगणनिलय श्रीजानकीरमण को दिव्यगुणों एवं उनकी विमल कीर्ति का गान करने

से विषय आशा गई एवं संसार का भानमिटा तथा अब हृदय रसि काई की कमल कली प्रफुल्लित हो रही है।

पाय प्रकाश विलास से खाश हुलास उदास विहीन बड़ाई।
छाय छटा छवि छैल निवास सुवास अजूब हिये दरसाई।।
गाय गुनेश सुकीरति आस विनास कियो भव भान भुलाई।
लाय ललाम सुनाम विकास 'अनन्य' सुकंज खिले रसिकाई।।११४३।।

पुन: कृपापूर्वक अपना अनुभव बताते हुए श्रीबड़ेमहाराज कहते हैं कि श्रीनामकी ही चिन्मय शक्ति से वेद, पुराण तथा कुरान आदिक धर्मग्रन्थ प्रगट हुए हैं। श्रीनाम रहस्य न समझ सकने के कारण अनजान व्यक्ति पढ़—पढ़ कर वृथा वकबाद में फँसकर, श्रीनाम का स्वाद नहीं ले रहे हैं। अनेक मत मतान्तर के ग्रन्थ तो पढ़ लिया, किन्तु श्रीनामरहस्य की जानकारी के बिना जीवन समाप्त होने पर है तौ भी यथार्थ रहस्य का तत्त्वज्ञान नहीं हुआ। मेरा तो शास्त्रवासना का बीज ही श्रीनाम प्रताप से जल गया है।

चेतन शक्ति से वेद पुरान कुरान अनेक सुशब्द भये हैं।
बूझे बिना बेवकूफ वृथा बहुवाद वके नहि स्वाद लये हैं।।
बोध विहीन पढ़े बहुधा मत, भासत भेद न जन्म गये हैं।
(श्री) युगल अनन्य सुनाम प्रतापते वासना बीज जलाय दये हैं।।१२१५।।

श्री बड़े महाराज श्री संतसुख प्रकाशिका नामक स्वरचित ग्रंथ में अपने शुभ संकल्प का उल्लेख नीचे लिखे गये शब्दों में करते हैं।

अब हम वसिहौं प्रीतम पास।
सकल लोक सम शोक समुझि जिय सब सन होय उदास।
सूरज चंद अनल दामिनि सम जहँ पल पल प्रतिकास।।
(श्री) युगलानन्य अमल नामहि चखि होहु मगल रसरास।।

श्री नाम के कृपाकटाक्ष के कण मात्र से, आपका वह संकल्प अब चरितार्थ हुआ है। आपका मानसिक निवास अब उसी दिव्य युगल विहार देश में हो रहा है जहाँ प्रेम, प्रमोद तथा प्रकाश का बाहुल्य है। अनंत साकेत सुन्दरियों के साथ रास विलास में तत्पर विश्वसुखदाता श्री जानकी रमण जू के संग आप भी एक विलासिनी नायिका रूप से वहाँ रहने लगे हैं। वहाँ अखंड दिव्य विलासानन्द परिपूर्ण रहता है। धूलवत् तुच्छ स्थूल शरीर के भान से ऊपर उठकर, आपने त्याज्य मन के संकल्प विकल्पों को हटा दिया है, कंटक के समान खटकने वाली दुर्वासना मिट गई है। यह सब श्री नाम जप का प्रभाव है। अब तो आपके लिये दशो दिशाओं में वही रूपराशि कोटि कोटि विद्युत्पुंज का प्रकाश छिटकाते हुए, सर्वत्र दृष्टिगोचर हो रहे हैं।

''सीताराम नाम कृपा कलित कटाच्छ कन
पाय प्रेम प्रमुद प्रकाश पर वास है।
आठ वाम वामवर विश्वअभिराम संग
रंग अविभंग अंग विशद सुवास है।।
मनोराज खाम, खार खाहिस, खजान खेह
देह को विहाय दूर भये अनायास है।।
(श्री) युगल अनन्य दाम दामिनी दमक दिव्य
दशहूं दिशान सुखखान रूपरास है।।''१३३०।।

श्री गोस्वामिपाद ने अपनी दोहावली में लिखा कि निष्काम नामजप से अविलंब दिव्यप्रेम की प्राप्ति होती है। उस दशा में गदगद कंठ, अश्रुपात तथा रोमांच आदि सात्विक विकार जापक के अंगों में अनायास होते रहते हैं। यदि तुम्हारा हृदय नाम स्मरण काल में प्रेम से द्रवित नहीं हो रहा है तो, ऐसा हृदय लेकर क्या करोगे? वह तो टुकड़े–टुकड़े करके फट जाने योग्य है। नयन में स्राव नहीं होता, वह नयन फूट जाय। शरीर में रोमांच नहीं होता तो वह शरीर जल जाय।

'हिये फाटहु फूटहु नयन जरै सो तन केहि काम।
द्रवै स्रवै पुलकै नहीं, तुलसी सुमिरत राम।।'

प्रारम्भिक जापक अपने में इस दशा का अभाव देखकर घबड़ा उठता है। श्रीबड़े महाराज आश्वासन देते हैं कि घबड़ाओ नहीं। नाम साधना में तत्पर रहो। गोस्वामी जी ने तीन ही सात्विक दशा को आवश्यक बताया है, तुम्हें आठो सात्विक विकार एक साथ अनायास उदित होंगे। मुझे भी प्राप्त हुआ है और जिन्हें प्राप्त होगा वे धन्यातिधन्य हैं। आठो प्रकार के सात्विक भाव कांतिमय होते हैं। श्रीजानकी कांतको वे आठो भाव बहुत ही प्रिय हैं। नामजप से ही ऐसा हो सकता है। अनायास शरीर में रोमांच होगा। नयनों से अश्रु प्रवाह बहने लगेगा। स्वरभंग अर्थात् गदगद् कंठ हो जायगा। प्रेमजन्य कंप भी शरीर में आपही आप प्रगट होगा। दिव्य शरीर की स्तब्ध दशा, अंग रंग का वैवर्ण्य हो जाना, मूर्च्छा, प्रलाप सभी होंगे और होंगे वेप्रमाण। उसे नापा–जोखा नहीं जा सकता । श्रीनामप्रताप से ऐसे प्रेम का दिव्य प्रकाश जिनके अंगों में हो जाता है, वे धन्य हैं।

' आठ भाँति कांतिकर कांतप्रिय सत्य सुचि
संभवित जौन तौन नाम ही सुजाप ते।
अनायास पुलक, प्रवाह नैन नीर, स्वर
भेदन, सुकंप, प्रगटात अंग आप ते।।
चिदवपु जड़ता, विवरन विचित्र वर,
मूर्च्छा, प्रलाप, विरहित जोख नाप ते।
(श्री) युगल अनन्य धन्य धन्य नाम जापो जन
पायो प्रतिकास प्रेम नाम के प्रताप ते।। १४४३।।

श्री बड़े महाराज अपनी प्रेमदीवानी दशा नामजप से संभवित बता रहे हैं। श्रीजानकी रमणलाल के श्रीसीतारामनाम अति सुखधाम से मेरी लगन लग गयी है। हृदय में निरंतर प्रेम की तरंग आलोडित होती रहती है। कलिकाल का दुष्ट प्रभाव एवं प्रारब्ध की दुखदायिनी रेखाएँ आप ही आप श्रीनामप्रताप से मिट गयी और प्रीतिकी वह श्रेष्ठता (हिश्मत) प्राप्त हो गई है, जो शोक दु:ख (गम) से सर्वथा विरहित हैं। अमृतमय संजीवनी के समान तथा पवित्रता का सारसर्वस्व श्रीप्राणप्यारे की अखंड स्मृति (सुरति) जग पड़ी है। श्रीप्राणवल्लभ जी के रूपगुणों में पग गई हूँ, जहाँ मनोनिग्रह (सम) आपही आप हो जाता है। प्रेमरस से जी जान आक्रान्त हो गया है और 'मैं अरु मोर तोर तै माया' मिट गई है।

झूलना छन्द १६७३ पढ़िये—

'लगी लाल के नाम से लगन मेरी
लहर कहर उठती जिगर आय हरदम।
भगी भभरि के भाल से काल किसमत
मिली प्रीति हशमत रहे जौन गत गम।।
जगी जीवनी सुधा सुचि सार सूरति
पगी यार के रूप गुन लाय के सम।
भनै जुग्म आनन्य जी जान घायल पगी
प्रेमरस, मिटि गई कथा हम तुम।।'

श्रीसीताराम नाम के छपे अक्षर वर्णराज है, साक्षात् श्रीयुगलकिशोर के स्वरूप ही समझो इन्हें। इनकी कृपा से ही दिव्य युगलविहार रहस्य का ज्ञान होता है। ये दयालु नाम सरकार अपने जापकों को दिव्य अनमोल अचल गुणगण तथा अनंत सुख देते हैं। एक ही बार श्रीसीतारामनाम का उच्चारण कर लो तो हृदय के क्लेश शांत हो जायें, विलक्षण पवित्रता आ जाय। श्री बड़े महाराज ने इन्हीं श्रीनाम सरकार से नेह नाता जोड़ा है। अत: इन्हीं के प्रभाव से कभी मंद न होने वाला दिव्यानन्द पाकर हृदय निहाल हो रहा है।

सीयपीय सहज स्वरूप वरनेश विधि,
विशद विहार बोध कारन कृपाल है।
अमल अमोल गुन अमित अडोल दिव्य
भव्य रस एक सुखदायक दयाल है।।
सुद्धता विचित्र भाँति वारक प्रतच्छ स्वच्छ
नाम सियराम हिय हरन कुसाल है।
श्रीयुगल अनन्य ताते इनही से नेह करि
अधिक अमंद मोद मानस निहाल है।। १७९०।।

नाम साधना से संभाव्य लाभ

अभिमान, मान बड़ाई की चाह और धन की तड़क–भड़क तीनों ही दु:खखान है और प्राणों को संकट में डालने वाले हैं। बैखरीवाणी में नामरटन करने से तीनों ताप मिट जाते हैं। नाम जापक के ऊपर भूत, प्रेत, दानव, दरिद्रता, अपराध प्रवृत्ति, दरिद्रता, दुष्ट वचन सुनने का खेद आदि अपना दुखद प्रभाव नहीं डाल सकते। श्रीसीतारामनाम जपने से परमानन्द का अनुभव होने लगता है। अत: श्रीनाम साधारण जीवों के लिए तो प्राण संजीवनी ही है। ऐसी जगत्प्रसिद्ध बात है तथा शास्त्र भी इसके प्रमाण हैं। श्रीबड़ेमहाराज का कहना है कि भोग वासना को भली–भाँति निर्मूल करने के लिए तो श्रीसीतारामनाम की प्रत्येक श्वास में तथा भोजन काल के प्रत्येक ग्रास में भी जपते रहो।

रामनाम रटत कटत अभिमान मान
शान दुख खान प्रान फाँस अनायास ही।
भूत प्रेत दानव दरिद्र दोष दुष्टवाद
करे न दखल कोउकाल ताके पास ही।।
जाहिर जहान सब शास्त्रन प्रमान
नाम महामौज खान जीव जान आम खास ही।
(श्री) युगल अनन्य भोग भावना समूल भली भाँति
निर्मूल हेतु जपो सांस ग्रास ही।। २७३३।।

उदार शिरोमणि श्रीरामनाम जीभ से जप करते हुए, मन ही मन उनके सुयश के गान करने से तुमको दिव्य प्रेम रूपी पदार्थ प्राप्त होगा। श्रीनामजप छोड़कर दूसरे साधन के चक्कर में मत भटकना, और जगह स्वार्थ सिद्धि हो सकती है, पर सब प्रकार के परमानन्दमय परमार्थ तो परमोत्तम श्रीसीतारामनाम जप से ही संभव है। पंचाग्नि तापना आदि तपश्चर्या को छोड़कर, परम प्रेमनिधि श्रीनाम सरकार में भली–भांति प्रीति करना ही यथार्थ उपाय है।

नाम उदार सिरोमनि के जस गाइये पाइये प्रेम पदारथ।
और नहीं भटको कतहूँ सब ठाई समाइ रह्यो निज स्वारथ।।
पाँचहु आँच बिहाय भली विधि नाम महानिधि प्रीति यथारथ।
श्रीयुग्म अनन्य सुनाम जपे भलि भाँति मिले मुदमय परमारथ।।१८९५।।

जिन बड़भागी ने श्रीनामरूप अमृत का स्वाद चख लिया, उनकी सभी वासनाएँ नि:शेष रूप से मिट जाती हैं। उनके हृदय में सतत आनंद भरा रहता है। उनके लिये मानस में तथा वाह्य जगत में भी श्यामगौर की झाँकी सदैव बनी रहती है। श्रीजानकीकांत प्राणवल्लभ को आत्म समर्पण कर देने पर, नामजापक को अचल अनुराग प्राप्त होता है। जो नाम नहीं जपकर, अन्य उपाय में रचते पचते हैं उनका पेट कभी नहीं भरेगा। कूकर के समान टुकड़े– टुकड़े के लिए भले भटका करें।

जानकी जीवन नाम सुधा जिन चाख्यो तिन्हें नहिं वासना और है।
आठहु जाम उछाह रहे तिनके हिय में मन बाहर गौर है।
आपको प्रीतम के पद पै बलिहारी किये अनुराग अदौर है।
(श्री) युग्म अनन्य सुनाम भजे बिन मागत मूरुख कूकुर कौर है॥ १९८५॥

श्री जानकी जीवनजू के श्रीसीताराम नाम जपने से काल की भयंकरता तथा विषय वासना मिट जाती है। जापक को संसार का भान तनक भीं नहीं रह जाता। सुयश जोर श्री युगलकिशोर में प्रीति और प्रतीति (विश्वास) दोनों बढ़ जाती है। निष्काम भाव से प्रेमपूर्वक नामाभ्यास करने पर ज्ञान, वैराग्य तथा योग सिद्धि के महाफल श्रीनाम ही दे देते हैं। ऐसे ही नामानुरागी संत शिरोमणि के अनुग्रह से अगम अथाह तथा निर्वाध रहस्य का ज्ञान संभव है।

जानकी जीवन नाम जपे खपे काल कराल कषाय करोरन।
शेष रती न रहे जग की मति प्रीति प्रतीति बढ़े जस जोरन॥
ज्ञान विराग सुयोग महाफल नाम सुप्रेम अकाम हलोरन।
(श्री) युग्म अनन्य अतीव अगाध अबाध रहस्य सुसंत निहोरन॥ २७७॥

रटत नाम सियराम संत जे चमचम चमका करते हैं।
असन वसन बिन मागे पावत प्रमुदित अवनि विचरते हैं॥
पूजत सब जग पांय नाय शिर राजौ तिन सन डरते हैं।
प्रेमलता बसुजाम सुमंगल मोद मौज मन भरते हैं।

रटते रटते नाम जींहसे राम रूप उर आवत है।
विविध जतन करि मुनिजन जेहि नित तजि मायामद ध्यावत है॥
महिमा अगम अपार जासु कहि वेदादिक कवि गावत है।
प्रेमलता सोइ ब्रह्म नामवश जो शंकर मन भावत है॥

त्रिगुणमयी माया जेहि प्रभु की जग कहँ नाच नचावति है।
सृजि पालति संहरति लोकत्रय रुख लखि बहुरि नशावति है॥
ज्ञानी शूर मुनीशन के मन छनमें पकड़ि डुलावति है॥
प्रेमलता सोइ नामजापकिनि शिशु सम लाड लड़ावति है॥

नाम रटे नशि है दुख द्वंद अमंगल संकट सोच विषादू।
नाम रटे नशिहैं परिताप प्रलाप कलाप विमोह प्रमादू॥
नाम रटे नशिहैं मद मत्सर दंभ मनोमल मायिक स्वादू।
नाम रटे नशिहैं अघ संकुल प्रेमलता जनि शोचिय बादू॥

नाम रटे मुदमोद प्रकाशत नाम रटे मन होत सुछंदा।
नाम रटे दशहूँ दिशि मंगल नाम रटै नसिहैं भ्रम फंदा।।
नाम रटे उर बोध अनूपम भक्ति विचार सुहोत अमंदा।
प्रेमलता रटि नाम निरंतर पावत सुंदर संत अनंदा।।

श्रीप्राणप्रियतम के अनुपम रम्यगुणों के अनेक कौतुक नाम लगन लगाते ही प्रत्यक्ष भासने लगते हैं तथा श्रीनामानुराग की चासनी में मन को पगाकर, नामाभ्यास करने पर हृदय में श्रीयुगलकिशोर की सुछवि के प्रति ऊँची – ऊँची सुमधुर अनुरागों की तरंगे उठती रहती हैं। मोह रजनी से जगकर अथवा रात्रि जागरणपूर्वक नाम रटन करने पर, रागद्वेष, कठिन क्लेश, कलिकृत उपद्रव, कडुवी तथा व्यर्थ की विषयस्पृहा मिट जाती है। अपनी दिव्य आशा, मनोरथ तथा आत्मस्वरूप की कल्पनातीत सुन्दर मनोरम चाँदनी श्रीनामसरकार प्रदत सौभाग्य से भासने लगती है।

नाम रंग रूप गुन अमल अनूप प्रिय
प्रगट प्रतच्छ होत नाम लाग लागते।
उज्ज्वल उतंग पर तरल तरंग छवि
उठत हमेस नाम प्रेम पाग पागते।।
रागद्वेष दारुन कलेश करतव कलि
कटुक कषाय जाय जात जाम जागते।
(श्री) युगल अनन्य आस आतम अचिंत्य चाह
चाँदनी चमक चारु भासे भाग भागते।। १५३५।।

ब्रह्मज्ञान के जिज्ञासु वेदान्त अध्ययन का महत्व अधिक देकर, वेदान्त का अध्ययन करते तो हैं, परन्तु सच्चे ज्ञानोदय के अभाव में झखते रहते हैं। श्रीसीताराम में निर्मल स्नेह तो हुआ नहीं। चित्त की चाही सुख शान्ति मिले तो कैसे? आलस्यप्रमाद को तथा विषय आशा को त्याग कर, नामाभ्यास कीजिए। दिव्य प्रेम का सूर्योदय होगा और आप आनंदसिंधुमें मगन हो जायेंगे। नामजापक अचानक आनंदसिंधु में जाकर मगन हो जाते हैं।

वेद परत्व विशेष कर पर बोध उदोत बिना विललात हैं।
नाम निसोत सुनेह नहीं केहि भांति लहे चित्त की कुसलात है।।
आलस आस उदास किये मुद माहि समाइये प्रेम प्रभात है।
(श्री) युग्म अनन्य प्रमोद नदीस में आकस्मात ही जाय समात है।१२१६।।

नाम रटने से जापक को अपने इष्ट में प्रीति प्रतीति दृढ़ हो जाती है। उसे रसरीति का बोध हो जाता है। जापक विनीत हो जाता है। उसमें गंभीर गुणगण आ बसते हैं। वह धीर और शीतल हो जाता है तथा उसे सुख राशि ही हाथ लग जाती है। वह लोक परलोक में शोक रहित हो जाता है। वह मोहान्धकार की परिधि से बाहर निकल आता है। अत्यन्त महान पुरुषों की गोष्ठी में उसे स्थान मिलता है। उसके सभी दिव्य मनोरथ सफल हो जाते तथा हृदय की

आनन्दकमल— कली प्रफुल्लित हो उठती है। सभी सिद्धियाँ उसकी मुट्ठी में आ जाती है। तथा उसके सभी दुःखशोक विनष्ट हो जाते हैं।

'प्रीति परतीति रस रीति सुविनीत गुन
गहर गंभीर धीर सीर सुख रास है।
लोक परलोक में असोक तम तोक बिना
महत महानन की सभा में सुबास है।।
अनायास उदित मुदित अभिलाष खास
मधुर सुमंजु कंज विसद विकाश है।
श्री युगल अनन्य सब सिद्धि करतल नित्त
नामही के रटेते उदासता विनाश है।। १२४३।

अब अगिले दो तीन छन्दों में हम मधुर उपासक रसिक महानुभावों के लिये नाम साधना से संभाव्य दिव्य युगलविहार रहस्य के दिव्यानुभव के सम्बन्ध में दो चार बातें श्री बड़े महाराज की महावाणी के प्रकाश में दर्शायेंगे। श्री जानकीरमण जी का श्रीरामनाम रमु रमणार्थ साधु से सिद्ध दिव्य रस से भरा है। वैसे सरस नाम में मन रमाने से जापक के लिए लोक विलक्षण दिव्य रस के सिंधु में रमण करना सहज संभव है। श्रीयुगलकिशोर में रागासक्ति एवं संसार के विषय विलास से रागरहित होना दोनों सरस श्रीनाम जप का परिणाम होगा तथा विहार देश में पहुँचाने वाले (सायब) (साइब) अनुराग भी उदित होगा। जीव को विह्वल बनाने वाले भयंकर कलिकाल का प्रभाव स्वत: मिट जायगा। नाम जप से ही परम पावन रस सिद्ध सुधी संत का समागम होगा। ऐसे रसिक महानुभावों को आप श्रीयुगलकिशोर का प्रतिरूप (नाइव) ही समझें।

'राम सुनाम रमे रमिहै, रस सागर माँझ अथाह अजायव।
राम अराग दोऊ अनुभव अनुराग बिहार बहार सुजायव।।
काल कराल विहाल जहां तहँ आपहि आप से होंयेगे गायव।
(श्री) युग्म अनन्य मिले तब मौज जभी सुचि संत समागम नायब।।' २६६७।।

दिव्य सुखों का सार तो युगल दिव्य विहार ही है। वहाँ रसकी धारा ही बहती रहती है। ऐसे रससिन्धु युगल सरकार के प्रति प्रेमप्यार का उदय होना, श्रीनामही के अधीन है। जपिये और पाइये। आप जप के द्वारा श्रीसीतारामनाम में मन को रमाइये। फिर आप संतोचित निर्मल विचार हृदय में स्फुरित कराना चाहें, सो भी होगा। संतों का स्वच्छ आचार—विचार टकसार में आप नाम कृपा से ढल जायेंगे। युगलकिशोर में इश्क (रागासक्ति) का दिव्यानन्द भी नामजप से ही संभव है। दिव्यप्रेम का सिन्धु हृदय में उमड़ाना, हृदय में दिव्य सद्गुणों को बसाना, प्राण संजीवनी युगल मनहरण ललन के दिव्यदर्शन (दिदार) कराना श्रीनामही परतंत्र हैं। मन को अचंचल, शांत बनाना हो, बोलको अटल बनना हो, तो भगवान् शंकर के हृदय में दिव्यहार के समान सुशोभित होने वाले श्रीसीताराम नाम को अपने हृदय में बसाइये।

'विमल विहार रसधार सुखसार सुचि
सिन्धु सरकार प्यार नाम के अधार है।
विसद विचार संत स्वच्छ टकसार
इश्क अमल वहार नाम रमत अपार है।।
प्रेम पारावार दिव्य गुन गुलजार
जान जिवन दिदार नाम तंत्र एकतार है।
(श्री) युगल अनन्य मन लोल अविलोल बोल
अटत अतोल नाम हर हिय हार है।।' १२०९

श्रीनाम जप से आपके हृदय में प्रेम का सिन्धु उमड़ेगा। सुखसार की सीमा तो श्रीयुगल अवधविहारी हैं, उनसे मिलन का उत्साह बढ़ेगा। नींद स्वप्न दशा में भयंकर दृश्य का अनुभव कराने वाली है। ऐसी तमोगुणमयी निद्रा दब जायगी। दिलदार यार श्री अवधकुमार के अविकृतरूप दर्शन ही मौजदार क्षेम है। श्रीनाम वर्णराजों में ही उस रूप की झलक होगी। जिस सुखद सौज से सम्पन्न स्वर्णकुंड में युगलबिहारी जी बिहरते हैं, उस अनिद्य हौजका (अन + ओट – अनौट) निरावरण साक्षात्कार आपके लिये एकरस सदा बना रहेगा। सबसे बड़ा लाभ तो यह है कि आपके हृदयकमल को प्रफुल्लित करने वाले विलक्षण सूर्य के समान नामसरकार के हृदय में आते ही यह सब चमत्कार होने लगते हैं।

'प्रेम पारावार उत्साह सुखसार सीम
भीम भान भवन दवन नाम निंद है।
छेम मौजदार दिलदार अविकार रूप
झलक परत बरनेस विच चिंद है।।
हेम हौज सौज शौकदार दिखलाई देत
दृगन अनोट एकरस अविनिंद है।
(श्री) युगल अनन्य मोद मधुर मरंद मित्र
नाम सुविचित्र उर आवै अरविन्द है।। १५३६
नामही रटत कलिकलुष कटत सुख सटत
सुझत जीव मुक्ति पद पावही।
नाम ही रटत रामरूप रति प्रगटत
घटत कुचामवाम प्रीति परिनामही।।
नामही रटत राम लीला लखि लोभै मति
तन धन लोक लीला नहीं मन भावही।
नामही रटत रसरंगमनी प्रेमानन्द
पावैं जीव जोपै मन नाम मै जुटावही।।

नामही रटत रामधाम ध्यान वास मिलै।
मानसी सुप्रीति पूजा झिलै चित्त चावहीं।
नाम ही रटत भव विषया विरति होति
माया गोति काम मद दंभ न सतावहीं।।
नाम ही रटत रस भावना सुभाग जागै
भाल के कुभाग भागै राम प्यारे लागही।
नामही रटत रसरंगमनी परा भक्ति
पावैं जीव और जुक्ति सपने न पावहीं।।

प्रात:स्मरणीय श्रीजयदयाल जी गोयन्दका भगवन्नामाङ्क पृ० ६८ में नामजप विषयक स्वकीय अनुभव लिखते हैं।

'कुछ मित्रों ने मुझे इस विषय में अपना अनुभव लिखने के लिये अनुरोध किया है। परंतु जब कि मैंने भगवन्नाम का विशेष संख्या में जप नहीं किया, तब मैं अपना अनुभव क्या लिखूँ? भगवत्कृपा से जो कुछ यत्किंचित नाम–स्मरण मुझसे हो सका है, उसका माहात्म्य भी मुझसे पूर्णतया लिखा जाना कठिन है।

नाम का अभ्यास मैं लड़कपन से ही करने लगा था। जिससे शनै: शनै: मेरे मन की विषय वासना कम होती गई और पापों से हटने में मुझे बड़ी ही सहायता मिली। काम क्रोधादि अवगुण कम होते गये, अन्त:करण में शान्ति का विकास हुआ। कभी–कभी नेत्रबन्द करने से भगवान् श्रीरामचन्द्रजी का अच्छा ध्यान होने लगा। सांसारिक स्फुरणा कम हो गयीं। भोगों से वैराग्य हो गया। उस समय मुझे वनवास या एकान्त स्थान का रहन–सहन अनुकूल प्रतीत होता था। इस प्रकार अभ्यास होते–होते एक दिन स्वप्न में श्रीसीताजी और श्रीलक्ष्मण जी सहित भगवान् श्रीरामचन्द्र जी के दर्शन हुए और उनसे बातचीत भी हुई। श्रीरामचन्द्रजी ने वर माँगने के लिये मुझसे बहुत कुछ कहा, पर मेरी इच्छा माँगने की नहीं हुई। अन्त में बहुत आग्रह करने पर भी मैंने इसके सिवाय और कुछ नही माँगा कि 'आपसे मेरा वियोग कभी न हो।' यह सब नाम का ही फल था। इसके बाद नामजप से मुझे और भी अधिकतर लाभ हुआ, जिसकी महिमा वर्णन करने में मैं असमर्थ हूँ। जब जब साधन से च्युत करने वाले भारी विघ्न प्राप्त हुआ करते थे, तब–तब मैं प्रेम पूर्वक भावना सहित नामजप करता था और उसी के प्रभाव से मैं उन विघ्नों से छुटकारा पाता था। अतएव मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि साधन पथ के विघ्नों को नष्ट करने और मन में होने वाली सांसारिक स्फुरणाओं के नाश करने के लिए स्वरूप चिंतन सहित प्रेमपूर्वक भगवन्नाम जप करने के समान दूसरा कोई साधन नहीं है, जबकि साधारण संख्या में भगवन्नाम जप करने से ही मुझे इतनी परमशांति, इतना अपार आनन्द और इतना अनुपम लाभ हुआ कि जिसका मैं वर्णन नहीं कर सकता, तब जो पुरुष भगवन्नाम का निष्काम भाव से ध्यान सहित नित्य निरंतर जप करते हैं उनके आनन्द की महिमा कौन कह सकता है?

वहीं भगवन्नामांक पृ० ७८ में कलकत्ते के एक अनुभवी नामजापक श्रीहीरालाल जी गोयन्दका लिखते हैं।

श्रीरामनाम में पतितको पावन, नीच को उच्च, अधर्मी को धर्मात्मा और विषयीको विरागी बनाने की अद्‌भुत शक्ति है। महान् दुराचारी पुरुष भी निरंतर निष्काम नामजप से सत्वर पापमुक्त होकर शुद्धान्त:करणवाला धर्मात्मा बन जाता है और शरीर के रहते हुए भी वह उस परम शान्त रूप परमात्मा को प्राप्त हो जाता है। भगवान कहते हैं—

अपिचेत्सुदुराचारो भजते मामन्यभाक् साधुरेव स मन्तव्य: सम्यग्व्यवसितो हि स:।

क्षिप्रं भवति धर्मात्मा शश्वच्छान्तिं निगच्छति कौन्तेय प्रतिजानीहि न मे भक्त: प्रणश्यति।।

गीता ९। ३०, ३१।

नामजप की वृद्धि के साथ ही संसार में वैराग्य और भगवान् में प्रेम की वृद्धि होती है। हृदय में भगवत्स्वरूप स्फुरित होने लगता है। भगवान् के ध्यान में रुचि होती है और स्वत: ही ध्यान होता है। नेत्रों से अश्रु धारा बहने लगती है, हृदय गद्‌गद हो जाता है। यों होते—होते साधक की वृत्ति भगवत्स्वरूप में तदाकार हो जाती है और फिर किसी समय में ध्यान नहीं छूट सकता। सगुण स्वरूप के दर्शनाभिलाषी को भगवान् स्वयं प्रगट होकर दर्शन देते और उससे बात करते हैं तथा अंत में अपने स्वरूप का ज्ञान प्रदान करके अन्तर्धान हो जाते हैं। यदि साधक की इच्छा भगवत्तत्व जानने की होती है तो ध्यानकाल का भगवत्स्वरूप अन्तर्धान हो जाता है और उसे सर्वत्र एक सच्चिदानंदधन परमात्मा ही भासने लगता है। जैसे स्वप्न से जागने के बाद पुरुष को स्वप्न संसार की केवल आकृतिमात्र भासती है, इसी प्रकार उस भगवत् प्राप्त पुरुष को भी यह संसार केवल आकृति मात्र से ही भासता है। उसके ज्ञान में केवल एक रामही रह जाते हैं। यह स्थिति नामजप के प्रताप से होती है। अतएव प्रत्येक पुरुष को निष्काम भाव से भगवन्नाम का जप करना चाहिए।

अखंड जप से और अधिक लाभ

निरन्तर का तात्पर्य कि नियम के बीच एक दिन भी छूटे नहीं। एक दिन भी नागा पड़े तो सिद्धि में रुकावट हो जाती है।

नैरन्तर्य विधि: प्रोक्त: न दिनं व्यतिलंघयेत्।
दिवसातिक्रमे तेषां सिद्धिरोध: प्रजायते।।

इस तुच्छ लेखक की सम्मति में जागृति अवस्था में एक क्षणभी नामजप न छूटने पाये। हाथ में माला न भी रहे तो जीभ नाम रटन करती ही रहे।

श्री बड़े महाराज का परम हितकर उपदेश है कि श्रीजानकी जीवनजू का प्रकाशपुंज युगल सीतारामनाम स्नेह संयुक्त तैलधारावत् अखंड जप कीजिए, नीद पड़ने पर जीभ भले रुके, नहीं तो जाग्रत दशा में माला हाथ में नहीं रहने पर भी जीभ सतत नाम रटने में तत्पर रहे। शौचालय में बैठे—बैठे भी नामजप होता रहे। भोजन काल, प्रभाती करते समय, चलने फिरने के समय भी

जपको सम्हाले रहें। कभी जीभ रुके नहीं। जीभ भोजन चबाने समय नाम छोड़े, तो उस समय मन जप करें। काम तो कठिन है, परन्तु असंभव नहीं है। अजी, ऐसा अखंडजप जाग्रत दशा में होगा, तो आप नींद में भी नाम रटते ही रहेंगे। इन पंक्तियों के लेखक ने ऐसे नामजापकों के दर्शन किये हैं, जो जाग्रत के समान ही निद्रावस्था में भी बैखरी वाणी में नामोच्चारण की झड़ी लगाये रहते थे।

अब निरन्तर जप का लाभ बताते हुए श्रीबड़े महाराज हमें आश्वासन देते हैं कि तुम्हारे अनिष्ट करने वाली कोई बात नष्ट होने से नहीं रहेगी, अर्थात् मिट जायेगी। सारे उत्पात, सारे प्रपंच भाग खड़े होंगे। श्रीजानकीजीवन प्राण के प्रति अचानक प्रीति–प्रतीति उदित हो जायगी। श्रीनाम को दृढ़तापूर्वक हृदय में धारण किये हुए जीभ से निरन्तर नाम रटने से मान रहित होने की रीति सुनी जाती है।

'जानकीजीवन नाम प्रभानिधि नेह नहे जपिये एकतारे।
हान की बात न नेक रहे उत्पात प्रपंच पलाय पवारे।।
प्रानकी प्रीति प्रतीति सुजान, आकस्मात विचित्र बहारे।
(श्री) युग्म अनन्य अमान की रीति सुनात सुनाम रटे दृढ़ धारे।।' ११३१।।

आठो पहर जीभ से निरन्तर नाम जपने वाले के काम और लोभ इस प्रकार मिट जाते हैं कि उन्हें कामिनी के चामवाले शरीर से, दाम अर्थात् रुपये पैसे से कोई भी मतलब ही नहीं रह जाता है। निरन्तर नाम जापक के हृदय में सुख शांति का अनुभव इस कारण होता है कि वहाँ कच्ची बुद्धि में समाये रहने वाली दु:ख का घर मोह ममता तथा लौकिक भोगवासना, मान बड़ाई की चाह आदि नाम प्रभाव से मिट जाती है। ऐसे जानकीकांत जी की गुलामी (सेवकाई) के अभिमान से (अस अभिमान जाइ जनि भोरे। मैं सेवक रघुपति पति मोरे) मायिक त्रिगुण का तार विगत हो जाता है। श्री बड़े महाराज अपना अनुभव बताते हुए कहते हैं कि समस्त वाणियों की उत्पत्ति तथा स्थिति स्थान तो (वर्गधाम) अनादि श्रीसीतारामनाम ही है। उन्हीं को जीभ से उच्चारण करने से मैंने प्रियतम के परम दिव्य रूप के प्रति प्रीति भी पायी है।

'जिन जीह जापौ नाम अभिराम अष्ट याम
तिनही न काम रह्यो चाम अरू दाम से।
ममता मलिन मति खाम दु:खधाम तजि
पायो विश्राम विश्ववासना विराम से।।
जाग्यो जिय जोति प्रीति निखिल निसोत
तिभि गुनगन गोत गयो गरब गुलाम से।
(श्री) युगलअनन्य नाम रसना अधार करि
पायो प्रिय रूप अनुराग वाग धाम से' ।।१७८९।।

जीभ से एक बार सीताराम उच्चारण के समान कोटि–कोटि तीर्थ, व्रत, दान, पुण्य, यज्ञादि के फलों को कहना तो अज्ञानता ही है। सच बात तो यह है, एक नामोच्चारण का फल स्वयं शब्द ब्रह्मरूप वेद भी नहीं निरूपण कर सकते, ऐसा वेदवत्ता बुद्धिमान् कहते हैं। जो बड़भागी नामानुरागी दिनरात अखंड तैलधारावत् नामोच्चारण करते रहते हैं, उनके विशुद्ध परत्त्व महत्त्व को कहां कहाँ जा सकता है? जैसे क्षुधातुर भोजनान्न के समीप लुब्ध रहता है, उसी भाँति परातत्पर ब्रह्म स्वयं श्रीजानकीरमणजू ऐसे जापक के आसपास लुब्ध की भाँति मड़राते रहते हैं। श्रीबड़ेमहाराज का विमल आदेश है कि ऐसे निर्विकार, सारे उपद्रवों को शांत करने वाले श्रीनाम को निरंतर रटते रहो। जगत जीव के विरोध (जुध) की परवाह न करो।

एक बार रसना उचारको महत्त्व वेद
वचन बयान योग वदत न वेद वुध।
जौन जन रैन ऐन रटत अखंड नाम
तिनको परत्व प्रिय कहिये कहाँ लों सुध।।
परम परेस हूँ लुभाय रहे ढिग नित्त
नामिन के आसपास आतुर सजाय छुध।
(श्री) युगल अनन्य अनुपाधि अविकार नाम
रटिये सचेत हेरिये न जग जीव जुध।। १२८१ ।।

श्रीनामजप के प्रभाव से जापक के आसपास श्रीयुगलरूप का प्रकाश अनायास हो जाता है। इसमें कुतर्क कौन करेगा? मूर्ख व्यक्ति अज्ञानवश श्रीनामपरत्व प्रतिपादक शास्त्रवचन को बढ़ा चढ़ा कर कहा गया मिथ्या वकता फिरता है। वह तो स्वयं मोहसिंधु में बहा जा रहा है, उनकी बकवाद कौन सुने? सावधान होकर शाश्वत फलप्रद नामजप को चालू रखें, तो प्रेमप्रकाशक दर्जे तक सुगमता से पहुँच सकते हैं। श्री बड़ेमहाराज का कहना है कि निर्मल अतुल नाम प्रभाव की चमक तभी संभव है, जब तैलध ारावत् अखंड नामजप का प्रवाह जारी हे।

नाम के प्रभावते प्रकाश आसपास होत
अनायास यामें मीनसेख कहो को कहे।
अर्थवाद व्यर्थ वकि वदन सुबोध बिन
वालिस विशेष मोह वारिनिधि में बहे।।
होय हुशयार कार कायम करत किल
अनायास प्रेम प्रतिकाश पद को लहे।
(श्री) युगल अनन्य आव अमल अतोल तब
रहे एकतार नाम रटन सदा गहे ।१३२४।।

अखंड नामजप करने की लालसा रखने वाले जापक श्री बड़े महाराज के संयम सम्बन्धी आदेश को नीचे लिखे गये सरल सुबोध कवित्त में पढ़ें।

' राम रस चाखिये न भाखिये विकार वैन
ऐन अभिलाषिये अनूप रूप प्यार पन।
काम कस नाखिये न राखिये जहर जोड़ि
ग्राम आस लाखिये न माखिये सु सत्रु सन।।
सुधा सत स्वाद संत संग रसरंग बीच
अंग अंग आपनो भिजाइये बिहाय बन।
(श्री) युगल अनन्य आठहू पहर रट
लाइये अखंड तब पाबो सम चित धन।।१८३९।।

निरन्तर नामाभ्यास का प्रभाव

इन पंक्तियों के लेखक को भी कुछ नामजप के प्रभाव देखने को मिले हैं। श्रीजनकपुरधाम मध्यवर्ती परिक्रमा में सुप्रसिद्ध जलेश्वर नामक महादेव स्थान से आगे चलकर, आप वजराही नामक एक संत की कुटिया परिक्रमा मार्ग से सटे हुए पायेंगे। वहीं मेरे एक घनिष्ट स्नेही संत श्री ससित रामलषनदास जी महाराज भजन करते थे। उन्हें सीतारामनाम जप का ऐसा सुदृढ़ अभ्यास पड़ा था कि निद्रा अवस्था में भी उनके मुख से जोर–जोर से सीतारामनाम का उच्चारण होता रहता था। कई बार मुझे उनके साथ ही साथ आसन लगाकर, अत्यन्त निकट में रहकर देखने का अवसर मिला है। नामोच्चारण उनका जागृत की भाँति ही चलता रहता था, उनकी निद्रा का पता उनके खर्राटे की आवाज से, तथा हाथ से जपमाला छूटकर गिर जाने से, लगता था। एक क्षण भी उनकी जीभ नामजप से खाली नहीं रहती थी। इस समय आप नित्यधाम में हैं।

श्रीमिथिलाजी के सुप्रसिद्ध संत बाबा श्रीनवलकिशोरदास जी महाराज की दिवंगत माता के श्राद्ध के अवसर पर, संत महोत्सव में मैं भी सम्मिलित हुआ था। गाँववाले उनके परिवारवाले बताते थे कि माताजी की मृत्यु के पश्चात् भी उनके निष्प्राण हाथ की उँगलियाँ, सुमरनी फेरने की चाल से बराबर हिलती रहती थी, चिता पर भस्म होते होते उँगली का संचालन जारी रहा।

हमारे सम्पर्की श्री अयोध्या गोलाघाट के रासकुंज नामक स्थान की निर्मातृ महिला संत माता श्रीरामसखीजी ने मुझे अपनी आँखों देखी घटना सुनायी थी। काशी के गृहस्थ नामजापक भक्त थे श्री गंगाप्रसाद जी। ऐसा नामजप का अभ्यास था उन्हें कि चितापर जलते–जलते उनके निष्प्राण ओंठ जीवित की भाँति नामजप के समान हिलते रहे थे।

महाराष्ट्र के एक अस्पृश्य जाति के गृहस्थ संत थे चोखामेलाजी। वे राजमिस्त्री के कार्य से अपनी जीविका चलाते थे। कभी एक ऊँची इमारत के निर्माण कार्य में कच्ची नींव के कारण, वह इमारत बहुत ऊँचाई तक पहुँचते पहुँचते ढहकर गिर गई।

पचासों राजमिस्त्री तथा मजदूर हजारों मन ईंट के नीचे दबकर मर गये। ईंट हटाने पर जो लाशें निकलीं वे ऐसी कुचली थीं कि उनकी पिसी हुई हड्डियों से उनके व्यक्तित्व की पहचान असम्भव थी। चोखामेलाजी की अन्त्येष्टि वहाँ के भक्त समाज के द्वारा बड़ी प्रतिष्ठा तथा

समारोह से सम्पन्न करनी थी। जब पहचान में आवे तब तो? श्रीनामदेवजी ने युक्ति बताई। भक्तों से कहा शवों की हड्डी के समीप कान सटा कर, निकलने वाली ध्वनि सुनो। चोखामेला की हड्डी से नामध्वनि निकल रही थी। उसी के द्वारा उनके शव को पहचान कर, उनकी अन्त्येष्टि प्रतिष्ठित हुई।

छिनकू भगत के कटे सिर धड़ से रामनाम की ध्वनि निकलती थी। प्राचीन समय की बात है, जब भारत में यवनशासन अपने पूरे प्रभुत्व में था और प्रभुता के मद में शासक अनेक प्रकार के अत्याचार करते थे। उस समय वहायलपुर राज्य में एक छिनकू नाम के भगवद्भक्त रहते थे। वे सत्यवादी, ईमानदार तथा नैष्ठिक राम—नाम के जापक थे। वे आँटा, दाल, घी, मसाले आदि गल्ले किराने की दुकान करते थे। उनका दुकान अपने पदार्थो की शुद्धता के लिए प्रसिद्ध थी। वे केवल शाम को दो घंटे के लिये दुकान खोलते थे। शेष सब समय भजन में व्यतीत करते थे। एक दिन सवेरे एक मुसलमान छिनकू के घर पहुँचा और उसने उसी समय दुकान खोलकर कुछ सामान देने की माँग की। उस समय भक्त छिनकू भजन में लगे थे। उन्होंनें उसे शाम को आने के लिए कहा और तत्काल दुकान जाने में असमर्थता प्रगट की। मुसलमान चिढ़ गया। उसने छिनकू को ही नहीं, उनके आराध्य को भी बुरा—भला कहा। छिनकू जी बोले— अगर यहीं शब्द मैं तुम्हारे धर्मग्रन्थ और पैगम्बर को कहूँ तो कैसा लगेगा?

मुसलमान— तुम्हें इतनी जुर्रत है? मैं तुम्हें देख लूँगा। वह मुसलमान काजी के पास पहुँचा और उसने वहाँ अभियोग लगाया कि छिनकू ने पैगम्बर को गाली दी है। उस समय के नबाब वहायलपुर भले स्वभाव के थे। वे छिनकू भगत को जानते थे — और उनमें श्रद्धा रखते थे। उन्होंने छिनकू के पास संदेशा भेजा— 'आप कह दें कि मैने कुछ नहीं कहा।' लेकिन छिनकू भगत ने झूठ बोलना स्वीकार नहीं किया। उन्होंने काजी के सामने अपने शब्द दोहरा दिये, काजी ने उनको 'संगसार' कर देने (पत्थर मार—मार कर मार देने) की सजा दी। छिनकूभगत को पकड़ कर एक मैदान में ले जाकर, एक खंभे से बाँध दिया गया। उधर से आने जाने वाले मुसलमान उन्हें पत्थर मारने लगे। छिनकू जोर—जोर से श्रीराम— श्रीराम बोलते रहे। पत्थरों की मार से उनका पूरा शरीर घावों से भर गया। रक्त की धारा शरीर से चलने लगी। संध्या को एक मुसलमान सैनिक उधर से निकला। वह छिनकू से परिचित था। उससे भक्त की वह असहनीय दशा देखी नहीं गई। उसने तलवार से उनका शिर काटकर,उन्हें इस अवस्था से छुट्टी दे दी। किंतु उसे तथा औरों को भी यह देखकर आश्चर्य हुआ कि छिनकू का कटा सिर तो 'श्रीराम' बोलता ही था, उनके मस्तक हीन धड़ से भी देर तक 'श्रीराम' का ध्वनि निकलती रही।

(कल्याण भगवन्नाम महिमा अंक से साभार उद्धृत)

एक और नामाभ्यासी की चर्चा करूँगा। महाराष्ट्र में श्रीगोंदवलेकर महाराज नाम के सुप्रसिद्ध परम रामभक्त संत हो गये हैं। एक बार डाक्टर ने रोग परीक्षा के हेतु आपके सीने पर, स्टेथोंस्कोप लगाया और आश्चर्य यह कि बजाय नाड़ी के शब्द के उन्हें 'श्रीराम जय राम जय जय राम इस त्रयोदस अक्षरमन्त्र की ध्वनि ही सुनायी दी। डाक्टर ने सोचा— शायद भ्रम हो गया होगा, किंतु बार—बार ध्यान देने पर भी वहीं अनुभव हुआ। यह नामाभ्यास की उत्कटकोटि की सिद्धावस्था है।

❋ नाम से शान्ति लाभ ❋

महात्मा गाँधी कहते हैं:— (भगवन्नामांक पृ० ९९ से)

नाम की महिमा के बारे में तुलसीदास ने कुछ भी कहने को बाकी नहीं रखा है। द्वादशाक्षर मन्त्र अष्टाक्षर इत्यादि सब इस मोह जाल में फँसे हुये मनुष्य के लिए शांतिप्रद है, इसमें कुछ भी शंका नहीं है। जिससे जिसको शान्ति मिले उस मंत्र पर वह निर्भर रहें। परन्तु जिसको शांति का अनुभव ही नहीं है और जो शांति की खोज में है, उसको तो अवश्य रामनाम पारसमणि बन सकता है। ईश्वर के सहस्त्र नाम कहे गये हैं। उसका अर्थ यह है उसके नाम अनंत हैं, गुण अनंत हैं। परन्तु देहधारी के लिये नाम का सहारा अत्यावश्यक है और इस युग में मूढ़ और निरक्षर भी रामनाम रूपी मंत्र का सहारा ले सकता है।

(डाक्टर भगवतीप्रसाद सिंह लिखित भाई जी के जीवन—दर्शन से——)

सन् १९१६ ई० की घटना है। कल्याण के लब्धप्रतिष्ठ भूतपूर्व सम्पादक भाई हनुमान प्रसाद जी पोद्दार उन दिनों राजद्रोह—अभियुक्त के रूप में अलीपुर कारावास में आवद्ध थे। 'इन्हीं दिनों पोद्दार जी के ससुर श्री मुंगतूराम सरावगी इनसे जेल में मिलने आये। उस दिन घर से भोजन नहीं आया था। ये जेल से कोटे में प्राप्त चावल पकाने की तैयारी कर रहे थे। चावल बहुत ही घटिया किस्म का था। उसे देखकर सरावगीजी बोले— आपने ऐसे चावल जीवन में कभी छुये भी न होंगे, इनसे पेट की ज्वाला कैसे शान्त होगी? इस निर्जन, मच्छरों से भरी कोठरी में जिन्दगी कैसें कटेगी? पोद्दार जी ने अत्यन्त शान्त स्वर में उत्तर दिया— ''दु:ख और सुख की अनुभूति तो मन की मान्यता पर है। यह तो भगवान का प्रसाद है, तो मैं प्रेम से खाता हूँ। इसमें दु:ख की तो कोई बात ही नहीं है।''

अध्यात्मनिष्ठ विप्लववादी विचारधारा में निष्णात होने से जेलयात्रा इन्हें रंचकमात्र भी कष्टकर नहीं प्रतीत हुई। मानसिक स्थिति पूर्णतया संतुलित रहीं। चिन्ता केवल एक बात की थी और वह थी गृहस्थी की दयनीय स्थिति। घर में रह गई थी तीन स्त्रियाँ बूढ़ी दादी, विमाता गौरा बाई और पत्नी रामदेई तथा दो छोटी बहनें कमलाबाई और पूर्णीबाई। इनमें माँ गौराबाई उन दिनों अपने पीहर में थीं। इन सबकी देखभाल की व्यवस्था करने वाला कोई पुरुष न था। भरण—पोषण के लिए भी अपेक्षित साधनों की कमी थी। पोद्दार जी की यह उद्विग्नता कुछ ही दिनों तक रही। इस घबराहट में भगवान का नाम याद आया। नामजप के लिये माला की आवश्यकता का अनुभव हुआ। वह इनके पास थी नहीं। कोठरी के द्वार पर एक सन्तरी पहरा दे रहा था। वह उत्तर प्रदेश का निवासी ब्राह्मण था। पोद्दार जी ने बुलाकर उससे कहा— 'पण्डित जी ! एक माला ला दीजिये।' पहरेदार ने पूछा, 'माला का क्या करोगे? ये बोले 'भगवन्नाम का जप करूँगा।' ब्राह्मण ने कहा— माला मेरे पास है नहीं, बाहर से लाना जुर्म है। यदि कहीं पकड़ लिये जायँ, तब क्या होगा? मैं माला लाकर नहीं दे सकता, पर जप करने का गुर बता सकता हूँ।' यह कह कर वह चला गया। कुछ देर के बाद जब वह लौटा तो उसके हाथ में एक कांटी थी। उसे पोद्दार जी को देते हुए उसने कहा—

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।'

इस मंत्र को जपकर एक कहो, फिर जपकर दो कहो, फिर तीन! इस प्रकार जप करते– करते जब १०८ हो जायँ तो इस काँटी को लेकर दीवार पर एक लकीर खींच दो। ऐसे तुम्हारा जप चल सकता है और गिनती भी हो सकती है। पोद्दार जी को यह बात जँच गई। जप करने का गुर बताने वाले उस पहरेदार को उन्होंने गुरू मान लिया और आजीवन इसी भाव से उसका स्मरण करते रहे।

ब्राह्मण के निर्देशानुसार नाम–जप चलने लगा। इसमें इनका बड़ा मन लगा। जप से धीरे–धीरे मन की सारी व्याकुलता दूर हो गई। मन शांत हो गया। यहीं से इन्हें नाममाहात्म्य का परिचय मिला। फिर तो नामजप पोद्दारजी के जीवन का साथी हो गया। वह षोडशनामात्मक मन्त्र उनका आजीवन सहचर रहा। दूसरों को भी इसका महत्त्व बताकर जप की प्रेरणा देते रहे।

हमारे मित्रगणों का सुझाव है कि यह युग आलसस्य प्रधान है। आजकल लोग परिश्रम करने से जी चुराने लगे हैं। आपका यह विशालकाय ग्रन्थ कौन पढ़ेगा? संक्षेप में छोटा ग्रन्थ लिखिए। श्रीरामनाम की स्तुति से जी अघाता ही नही। अत: कम करते करते ग्रन्थ बढ़ गया। दूसरी बात यह है कि नामजप श्रमवीरों की सम्पत्ति है। आलसियों के लिए यह मार्ग दुर्गम है। अत: एक उत्तम नाम साधक के लिए जितनी ज्ञातव्य बातें अपनी छोटी सी बुद्धि में आवश्यक समझी गई सब पर कुछ न कुछ कहा गया है।

अत: 'विश्राम स्थानमेकं' शान्तिदायक श्रीसीताराम द्वारा शांति लाभनामक अन्तिम लेखके साथ यह ग्रन्थ समाप्त किया जाता है। आगे अन्तिम नामलेखन खंड पढ़िये। इसमें आप केवल तांत्रिक विचार पायेंगे। कर्मकांडियों के लिए उपादेय होगा। प्रेमी तो नाम जपेंगे ही।

श्री नाम- लेखन खण्ड

✡✡

अब तक श्रीसीतारामनाम जप के ही प्रभाव पर विचार होता रहा है, किन्तु नाम लेखन का विशिष्ट प्रभाव भी अपना अलग चमत्कारपूर्ण महत्त्व रखता है। इस अन्तिम खण्ड में हम श्रीनाम लेखन के प्रभाव पर ही प्रकाश डालने की चेष्टा करेंगे।

यह पौराणिक बात प्रत्यक्ष प्रमाणवत् लोकप्रसिद्ध है कि श्रीगणेश जी श्रीरामनाम लिखकर तथा लिखित नाम की परिक्रमा करके ही सभी पूज्यदेवों में अग्रपूज्य बने बैठे हैं। इसी पर विचित्र नाटक में लिखा है कि श्रीरामनाम के अन्तर्गत ही सभी ब्राह्मणों की स्थिति है। अत: और देवता तो प्रथमपूज्यता प्राप्त करने के लिए, सर्वतीर्थमयी वसुन्धरा की परिक्रमा करके सबसे पहले श्रीब्रह्माजी के यहाँ उपस्थित होने की त्वरा में थे, वहाँ श्रीनारद जी के उपदेश से मूसा—वाहन गणेशजी ने श्रीरामनाम लिखकर उसी की परिक्रमा कर ली। इसी से आपकी परिक्रमा सर्वप्रथम पूरी भी हो गई तथा आप प्रथमपूज्य भी बन गये।

यदीक्षणाच्छम्भुसुतो गणाधिप: सुरासुरै: प्राथमिक: प्रपूज्य:।
प्रदक्षिणा यस्येकृते समस्ता क्षमावती स्यात् परित: प्रदक्षिणा।।

वृहन्नारदीय पुराण का कहना है कि जैसे श्रीरामनाम के कीर्त्तन करने से, श्रीरामनामध्वनि श्रवण करने से, श्रीनामाक्षरों के दर्शनों से, श्रीनामाक्षरों के ध्यान करने से, सभी दिव्यादिव्य मनोरथ पूर्ण होते हैं, उसी भाँति श्रीनामलेखन भी सर्वाभिष्ट प्रदायक हैं।

स्मरणात्कीर्त्तनाच्चैव श्रवणाल्लेखनादपि।
दर्शनाद्धारणादेव रामनामाखिलेष्टदम्।।

श्रीअमर रामायण में लिखित आख्यायिका है। एक नौका पर बहुत से यात्री बैठकर एक बरसाती वेगवती नदी पार कर रहे थे। विपरीत तूफान के झकोरे में पड़कर, वह नौका सभी यात्रियों के सहित जल में डूब गई। यात्रियों में अधिकार पापीगण ही भरे थे, जिनके पापों के बोझ से भी नाव डूबी रही होगी। किन्तु उस नौका पर कहीं रामनाम अंकित था। अत: नाम लिखित नौका पर चढ़ने वाले सभी डूबे हुये यात्रियों को मुक्ति मिली।

श्रृणुदेवि ! पुनश्चैका नौका जन– समाकुला।
प्रतिकूलाशुगेनैव वारिमग्ना जनैः सह।।
सा नौः श्री रामरामेति वर्णेश्च संस्कृता शिये
तत्प्रभावेण ते सर्वे मुक्तिमीयुरयौगिकाः।। ४।१२।१३।।

सेतुबन्ध के अवसर पर श्रीनल जी के मन में अभिमान हो गया। आज मैं न होता तो, सर्वेश्वर सर्वसमर्थ प्रभुका भी यह सेतुबन्ध कार्य कैसे पूरा होता? गर्वहारी अखिलेश्वर ने उनका ऋषिप्रदत्त स्पृष्ट पाषाण को तैराने वाली शक्ति कर्षित कर ली। अव तो जो पाषाणशिला श्रीनल जी जल पर रखें, वही डूब जाय। परमचतुर श्रीहनुमतलाल जी प्रत्येक पाषाण खंड पर श्रीरामनाम लिख– लिखकर श्रीनल जी को देने लगे। अब तो छोटे बड़े सभी नामांकित पाषाणखण्ड समुद्री जल पर तैरने लगे। श्रीरामनाम के इस प्रभाव को देखकर सभी वानर आश्चर्यचकित हो गये।

लिखित्वा दृषदां मध्ये नाम सीतापतेर्मुहुः।
निचिक्षेप पयोराशौ बहूनुच्चावचान् गिरीन्।।
संतरन्तिस्म दृषतो रामनामांकिते जले।
तद्दृष्ट्वा बानराः सर्वे वभूवु र्विस्मितास्तदा।।

सत्संग– गोष्ठी में सुनी हुई एक क्विंदन्ति है। एक नामसिद्ध संत को किसी श्रद्धालु सेवक ने तन, मन, धन से सुदीर्घ कालीन सेवा की। सिद्ध जी ने एक दिन उस पर रीझकर कहा 'बेटा' तैं तुम्हें एक ऐसा यंत्र दे रहा हूँ, जिसको अपने शरीर के किसी भी अंग में धारण करके रखो, तो तुम्हें सभी प्रकार की सिद्धियाँ अनायास प्राप्त हो जायेंगी। सेवक सिद्ध की अनेकों सिद्धाई चमत्कार देख चुका था। अतः उनके वचन में दृढ़ विश्वास रखकर, उस सिद्ध प्रदत्त यंत्र को बड़ी श्रद्धा के साथ अपनी दाहिनी भुजा पर बाँध रखा। उसे उस यंत्र के प्रभाव से क्रमशः सभी अष्टसिद्धि उपसिद्धि प्राप्त होने लगी। एक दिन उस सेवक के जी में आया कि जरा यंत्र को खोलकर देखूँ तो सही। कैसा चमत्कारपूर्ण है यह। देख लेने पर मैं भी दूसरे को यह यंत्र देकर सिद्ध बन सकूँगा। खोलता है तो भोजपत्र पर केवल एक रामनाम मात्र लिखा था। उसके मन में आया– यही रामनाम मात्र है! इसे तो हर कोई जानता है! कहता है, अगोंमें लिखित रूप से बहुत धारण भी करते होंगे, तो कहाँ सिद्ध हो जाते हैं? मुझे जो कुछ प्राप्त हुआ है, हो न हो महात्मा के आशीर्वाद की करामात होगी। रामनाम में इतना प्रभाव कहाँ संभव? इस प्रकार नाम प्रभाव में कुतर्क करते ही उसकी सारी सिद्धाई कपूर की भाँति उड़ गई। ठीक ही है।

'कबनिउ सिद्धि कि बिनु विश्वासा।'

ऊपर वाली आख्यायिका है तो किंवदन्ति, परन्तु उसकी सत्यता श्रीरामरक्षा स्तोत्र के नीचे दिये गये श्लोक से प्रमाणित हो रही है।

जगज्जत्रैक मन्त्रेण रामनाम्नैव रक्षितम्।
यः कण्ठे धारयेत्तस्य करस्थाः सर्व सिद्धयः।।

अर्थात् जगत पर विजय प्राप्त करने वाले श्रीरामनामात्मक मंत्र से जो सदा सुरक्षित रहते हैं, वे यदि इन्हें अपने कंठ से सदा धारण किये रहेंगे, उन्हें सभी सिद्धियाँ हस्तामलकवत् सुलभ हो जायेंगी। यहाँ कंठ में धारण करने का अर्थ १— कंठ से मध्यमा नाम जप रूप में तथा २— यंत्र रूप से कंठ में पहने रहने से। दोनों ही अर्थ मान्य हैं।

श्रीहनुमत्संहिता का आश्वासन है कि जिनने श्रीरामनाम का यंत्र बनाकर अपने अंग में धारण कर लिया है, उन्हें कहीं किसी समय में भी किसी वस्तु का भय नहीं रहेगा। वही यंत्र उसकी सदैव सुरक्षा करेंगे।

रामनामात्मकं मन्त्रं यन्त्रितं येन धारितम्।
तस्य क्वापि भयं नास्ति सत्यं सत्यं वदाम्यहम्॥

किसी भी मंत्र की सिद्धि के लिए, सर्वप्रथम साधक के लिए अपने इष्टमात्र का पुरश्चरण कर लेना चाहिए। मंत्रशास्त्र का कहना है कि पुरश्चरणहीन मंत्र की सैकड़ों वर्ष पर्यन्त आराधना करने पर भी सिद्धिदायक नहीं होता। यदि मंत्र की पुरस्क्रिया कर लेने पर, आप जो—जो भी सिद्धि चाहें, आप अपने आराध्य मन्त्र के द्वारा सुगमता से प्राप्त करते रहेंगे। पुरश्चरणसम्पन्न मंत्र ही फलदायक होते हैं। नामलेखन भी रामनाम रूपी महामंत्र की आराधना ही है। संमोहन तन्त्र का आदेश है कि यहाँ से हम नामलेखन मंत्र की पुरश्चरणविधि कहते हैं।

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि पुरश्चरणकं विधिम्।
बिना येन न सिद्धिः स्यान्मंत्रो वर्ष शतैरपि॥
कृतेन येन लभते साधको वाञ्छितं फलम्।
पुरश्चरण सम्पन्नो मन्त्रोहि फलदायकः॥

श्रीरामनाम तो सर्वश्रेष्ठ मंत्र है ही । इनका लेखन भी मंत्राराधन का एक प्रकार ही है। अतः नाम लेखन रूपी मंत्राराघन के लिए भी पुरश्चरणविधि, लेखन साधन में प्रवृत्त होने के पहले कर लेनी चाहिए। एकमात्र नामलेखन पुरश्चरण द्वारा सिद्ध हो जाने पर, नाम—लेखन के लिए कोई भी सिद्धि असाध्य नहीं रहेगी। उसी संमोहन तंत्र के यह भी श्लोक हैं।

अतः पुरस्क्रियां कुर्यान्मंत्रवित् सिद्धि काम्यया।
सम्यक् सिद्धयैक नाम्नोऽस्य नासाध्यं विद्यते क्वचित्॥

पुरश्चरण के पश्चात् अधिक संख्यक नाम लेखन के लिये और क्या कहा जाय, वह स्वयं मंगलस्वरूप बन जाता है। उसे नामलेखन के अतिरिक्त किसी भी अन्य साधनान्तर की अपेक्षा नहीं रहेगी। न उसे किसी मंत्र का जप, न्यासादि विधि, मंत्रान्त में हवनादि कार्य करना आवश्यक रहेगा।

बहुनामवतः पुंसः का कथा शिव एव सः।
किं होमैः किं जपैश्चैव किं मन्त्रन्यास विस्तरैः॥

मन्त्र का यह रहस्य है कि पुरश्चरणहीन मंत्राराधन, प्राणहीन शरीर की भाँति, काठके बने हए हाथी की भाँति, निष्प्रयोजन रह जाते हैं।

रहस्यानां हि मंत्राणां यदि न स्यात्पुरस्क्रिया।
जीवहीनो यथा देहो यथा काष्ठमयो गजः।
पुरश्चरणहीनो हि तथा मंत्र प्रकीर्त्तितः।।

किसी भी शुभ दायक महीने के शुक्ल पक्ष में कोई शुभदायक नक्षत्र के समय आप पुरश्चरण प्रारंभ करें। प्रारंभ में आपको नामलेखन द्वारा अग्रपूज्य बने श्री गणेश जी तथा अपने इष्टदेव श्री जानकी कॉतजू का पूजन कर लेना चाहिये। पुरश्चरणकाल में श्वेत–वस्त्र ही धारण करना चाहिये। प्रत्येक दिन नित्यकर्म स्नानादि से पवित्र होकर ही आप नाम लिखें। भूतशुद्धि करके अपने हृदय में अपने इष्ट देव श्री रघुलालजू का, श्री मैथिली जी, श्री लखन लाल जी तथा हनुमदादि पार्षदों के सहित ध्यान कर लें। उनकी संक्षिप्त मानसिक पूजा भी कर लेनी चाहिए। प्रणव अथवा प्रणवमूल श्री राम नाम का उच्चारण करके नाम लेखन प्रारम्भ करें। लेखन कार्य के अंत में भी प्रणव का उच्चारण करना चाहिये। किन्तु बीज मंत्र का आद्यक्षर तो अनन्त एवं अग्न्यासन माने जाते हैं। इनका उच्चारण तो और भी मंगलदायक होगा।

लेखन कालीन पुरश्चरण के अवधि–पर्यन्त शुद्धासन का उपयोग करें। शरीर शुद्ध रखें नित्य शुद्धान्न ही भोजन करें। मांसाहार कभी न करे। एकान्त में अकेला रहे। चौबीस घंटे में एक ही समय भोजन करें। श्री रावघजू की सतत शरणागति को सम्हाले रहे। श्री रामदर्शन के लिए सदा उत्कंठा बनी रहे। पुरश्चरणकालीन नामलेख अष्टगंघ की होनी चाहिये। कस्तूरी, केशर, लाल और सफेद श्री खंड चन्दन, गोरोचन, कपूर, कंकोल और खश ये आठों, अष्टगंध कहाते हैं। भोजपत्र पर या ताड़ पत्र पर, अथवा शनके कागज पर लेखन होना चाहिये। प्रत्येक दिन एक हजार सीतारामनाम लिखना चाहिए। तीन महीने दस दिनों में अर्थात पूरे सौ दिनों में एक लक्ष नाम लिखे। लेखनकाल में मुख से भी श्रीनामोच्चारण करते रहें। श्री रामचरित्र का श्रवण करें, श्रीसीतारामात्मक स्तुति का पाठ करें। यह लेखन विधि तीन मास में पूरा करके, अनुष्ठान समाप्त करें। पूरी लिखित संख्या का दशांश अर्थात् दस हजार बार संस्कार किये हुये अग्नि में गोदुग्ध की तस्मई से हवन करे। हवन का दशांश एक हजार बार गो–दूध से तर्पण करे। पवित्र–जल से तर्पण का दशांश अर्थात एक सौ बार मार्जन करें। तत्पश्चात् पंचसंस्कार पूर्वक द्वितीय जन्म पाये हुये मंत्र जापक द्विजो को दक्षिणा सहित भोजन करावें। गेहूँ के आटे की गोली बना बना कर, अपने लिखित नामके पत्र टुकड़ों को उनमें बंद करे। तत्पश्चात नाम भरित गोलियों के पात्र को माथे पर रखकर नाभि भर जल में जाकर स्थित होवे। श्री रामानन्य चित्त होकर एक–एक करके सभी गोलियों को जल में पवरा देवे। ऊपर गद्यवर्णित विधि निर्देशक मूल श्लोक नीचे लिखी भाँति से पठित हैं।

शुक्लपक्षे शुभेवारे स्वस्तिवाचन पूर्वक।
विघ्नेशं स्वेष्टवेञ्च पूजयित्वा लिखोत्प्रिये।।
शुक्लाम्बरधरः स्वस्थः कृतनित्यक्रियः शुचि।
भूतशुद्धयादिकं कृत्वा संध्या द्राघवं हृदि।।
हनुमता च संयुक्तं लक्ष्मणेन च सीतया।
मानसं पूजनं कृत्वा लिखोन्मन्त्रमनन्यधीः।
प्रणवं पूर्वमुच्चार्य सदामंत्रं लिखोत्प्रिये।।
अंते प्रणवमुच्चार्य नमेत्सीतापतिञ्जपेत।
अनन्तोऽग्न्यासनो देवि केवलो जाठरः स्मृतः।
शुद्धासनः शुद्धदेहो नित्यं शुद्धान्न भक्षकः।।
निरामिषा शनो नित्यमेकाकी ह्येक भुग्भवेत।
रामाश्रयो रामचित्तो दुर्जन दृष्टि वर्जयेत।।
गुरुप्रोक्तविधानेन ह्यनुष्ठानं समाचरेत्।
एवं मन्त्र लिखोद्यस्तु लक्षसंखया जितेन्द्रियः।
तस्य सिद्धो भवेन्मन्त्रः सर्वकाम–फलप्रदः।
राममन्त्र लिखोन्नित्यमष्ट– गन्धेन भक्तितः।।
कस्तूरी कुडकुमं युग्मचन्दने रोचनागरू।
घनसारञ्च कङ्कोलमुशीञ्चाष्ट गन्धकाः।
भूर्जपत्रे तालपत्रें शणपत्रे च लक्ष्मिजे।
रामनाम सहस्रन्तु लिखोदनुदिनं सुधीः।।
मासत्रयं शुद्ध चित्तो यावल्लक्षं समाप्यते।
तावत्स रामरामेति राममन्त्रञ्पेन्नरः।
शृंणुयाद्रामचरितं पठेद्रामस्तुति सदा।
त्रिमासैवं विधिं कृत्वा ह्यनुष्ठानं समापयेत।।
तद्दशांश पायसेन जुहुयात्संस्कृतेऽनले।
पयसा तर्पणं कुर्याद वारिभिभार्जनं स्मृतम।।
द्विजेभ्यो भोजनं दद्याद् दक्षिणाञ्च ततः परम्।
पिण्ड गोधूमचूर्णेन कृत्वा पत्राणि गोलकम्।।
नाभिमात्रे जले स्थित्वा मस्तकोपरि धारयेत।
श्री रामं हृदि विनस्य क्षिपन्नद्यामनन्यधीः।
एवं सिद्धि मनुप्राप्तो मन्त्रः सिद्धि– प्रदायकः।।

सकाम साधकों को उपर्युक्त विधि से नामलेखन रूप मंत्राराधन वाला पुरश्चरण करके, तभी श्री नामलेखन से मनोरथ पूर्ति के यत्न में लगना चाहिये। ऐसे तो श्री नाम सरकार की रीझ है, बिना पुरश्चरण के भी नाम लिखने वाले पर ढरकर, उसके सभी मनोरथ दे डालें , किन्तु तांत्रिक विधि तो प्रथमतः पुरश्चरण कर लेनी ही है।

नामलेखन से धन सम्पत्ति की प्राप्ति

प्राप्त धन का भी तिरस्कार करके, जानबूझ कर स्वेच्छापूर्वक गरीबी स्वीकार करने वाले बीतरागी नामानुरागी तो लाखों करोड़ो में विरले निकलते हैं। वैसे महानुभावों की दृष्टि में यह बात सदैव सुनिश्चित रूप से जमी रहती है कि अर्थ तो सभी अनर्थों का जनक है।

'परम अकिचन प्रिय हरि केरे।' अतः

मुनिवर जतन करहि जेहि लागी। भूप राज तजि होहिं विरागी।।

अतः ऐसे परमोत्तम साधक रूखा–सूखा आधा पेट खाकर रह जाते हैं, वस्त्र भी नाममात्र का ही संग्रह करते हैं। कुटिया बनाने को बला मानते हैं। बाकी लोग धन के पीछे पागल हो रहे हैं। धर्म पूर्वक हो, अधर्म करने से हो, घूसखोरी, कालाबाजार, चोरी डकैती आदि कदाचारों का बाजार सर्वत्र गर्म हो रहा है। गृहस्थों को तो परिवार संग्रह के लिए अर्थ चाहिये ही, विरक्त कहाने वाले, गृहत्यागी महानुभाव भी धन ही के चक्कर में नाना प्रकार के दंभ सजकर धन संग्रह में ही रचते पचते रहते हैं। उन्हें कहाँ फुर्सत कि बैठकर माला फेरें?

धन प्राप्त के लिये श्री मंत्र राज–लेखन

अतः हम सर्वप्रथम धन–प्राप्ति के लिएनामलेखन की युक्ति बतायेंगे।

श्री महानिर्वाण तंत्र में आया है कि एकाकी श्री रामषडक्षर मंत्रराज मदार के पत्ते पर, अष्टगंध की रोशनाई से, तथा चंपेकी कलम बनाकर उत्तर मुँह बैठकर एक लक्ष लिख डालें। इतने ही में वह कुवेर से भी अधिक धनाढ्य हो जायगा। श्री रामनाम, श्री राममंत्र के अपरिमित प्रभाव जानने वाले इस कथन में सहज विश्वास कर लेंगे।

षडक्षरं महामत्रं संलिखोदर्कपत्रके।
लेखिनी चंपकोद्भूता चाष्ट गन्धैरूदङ्मुखः।।
लक्षमात्रेण देवेशि कुवेरादधिकं धनम्।।

अर्कपत्र मदार के पत्ते को कहते हैं। मदार अकवन जाति का बड़ा पेड़, पुष्प सुगंधयुक्त पत्ते चिकने होते हैं। कस्तूरी, केशर लाल चंदन, श्रीखंड चंदन, गोरोचन, अगर, कर्पूर , खश – ये अष्टगंध कहाते हैं। यह पहले भी कह आये हैं।

कस्तूरी कुङ्कुमं युग्म चन्दनं रोचनागरु।
घनसारञ्च कङ्कोलमुशीरञ्चाष्टगन्धकाः।।

कहाँ बैठकर लिखे? अन्य तंत्र कहते हैं वटे च धन वृद्धिः स्यात् अर्थात् बरगद की छाया में बैठकर लिखने वाले के धन बढ़ जाते हैं।

स्नानादि से शुद्ध बनकर, कम्बल या कुशासन पर बैठकर श्री मंत्र लिखना चाहिये। नित्य शुद्धान्न चौबीस घंटे में केवल एक बार भोजन करें। एकांत में रहे।

''शुद्धासनः शुद्धदेहो नित्यशुद्धान्न भोजनः।
निरामिषाशनो नित्यमेकाकी नित्यमेकभुक।।''

भूमि पर कुश या कम्बल बिछाकर सोना चाहिए, अनुष्ठान पर्यन्त ब्रह्मचर्य व्रत रखे। हो सके तो स्वयं पाकी रहे। दूसरे से स्पर्श बचावे। वासस्थान की ग्रामसीमा से बाहर न जाए। सभी अनुष्ठानवालो के लिए इतने संयम समान रूप से पालनीय हैं।

धन के लिए राम नाम-लेखन

महानिर्वाण — तन्त्र के अनुसार भूमि पर पवित्र तीर्थरजबिछाकर अथवा कागदपर ही अष्टोत्तरशत अथवा पाँच सौ रामनाम नित्य श्रद्धा भक्ति के साथ लिखे तो वह धन—धान्य से सम्पन्न हो जायगा। श्रीराघवजू का प्रियत्व—लाभ होगा। लेखक गुणज्ञ, शत्रुनाशक बनेगा तथा इसके और और मनोरथ भी पूरे होंगे। रजपर नाम अंकित कर गिनकर मिटा दें, फिर लिखे और गिन गिनकर मिटाता जाय।

'केवलं बिलेखाद्रामं भूमौ वा कागदेऽथवा।
शतं पंचशतं नित्यं लिखायेद्भक्तिसंयुतः।।
धन धान्य समायुक्तो भवेच्छ्री रामवल्लभः।
गुणज्ञः शत्रुसंहर्ता वाञ्छासिद्धिः प्रसिध्यते।।'

धनप्राप्ति के लिए भूमि या कागद पर लिखने का आदेश तो महानिर्वाणतन्त्र को आप पढ़ ही चुके हैं। अन्यत्र तंत्रवचनों के अनुसार धन लाभ के लिए भोजपत्र पत्र तथा कदलीपत्र पर भी नाम लिख सकते हैं— यथा कदल्यां सुख सम्पत्ति'

'कार्गजे सम्पदः प्राप्तिः भूर्जेच श्रियमाप्नुयात्।।

स्मरण रहे कि नामलेखन के लिए कुशासन या कम्बलासनपर ही पर बैठकर नाम लिखना हितकर होगा। भोजन पान का संयम तो प्रत्येक दशा में आवश्यक है।

'कुशासने समासीनमथवा कम्बलासने।
दग्धान्नस्य परित्यागी विश्वामित्रभवं तथा।।'
श्रीविश्वामित्र जी के बनाये अन्न भी त्याज्य हैं।

वेल के बने १० अंगुल लंबे ६ अंगुल चौड़े तख्ते पर भी नाम लिखकर गिना और मिटाया जा सकता है।

'केवलं रामरामेति भूमौ वा विल्वपट्टके।।'

लेखनी का जहाँ कोई विशेष निर्देश नहीं हो, वहाँ अनार की बनी कलम आठ अंगुल की काम में लावें।

'लेखन्याष्टङ्गुलं कुर्यात्सर्वकार्येषु साधकः।।'

धन प्राप्ति के लिए श्रीशंकर उपासना

बेल के पत्ते पर जितने दिनों में बने नित्य नियमपूर्वक आप एकलक्ष नाम लिखकर पूरा करें। रक्तचन्दन से लिखिये। प्रत्येक दिन का लिखा पत्र श्रीशिवजी का यथायोग्यपूजन करके उन पर 'नमः शिवाय' मंत्र से चढ़ाइये। लक्षसंख्या पूरा होते– होते आप धनवान्, रूपवान् तथा चिरंजीवी बन जायेंगे। श्रीशंकर भगवान् के प्रेमभाजन बनेंगे तथा अन्त में किसी पाठ के अनुसार आपको श्रीशिवलोक की प्राप्ति होगी। किसी पाठ में श्रीविष्णुलोक–प्राप्ति बतायी गयी है–

श्रीअवध किशोर दासजी महाराज द्वारा लिखित लेखन विधि में पाठ है–

' रूद्रलोकमवाप्नोति नात्राकार्या विचारणा।'

श्रीरामटहलदास जी अपनी लेखनविधि नाम छपी पुस्तिका में लिखते हैं–

विष्णु लोकमवाप्नोति नात्र कार्य विचारणम्।

सम्पूर्णविधि इस प्रकार पठित है।

विल्वपत्रे लिखोन्नाम लक्षं वै रक्तचन्दनैः।
शिवार्चनञ्च च कर्त्तव्यं तस्योपरि निवेदयत्।।
धनाढयो रूपवान्सद्यश्चिरञ्जीवी शिवप्रियः।
रूद्रलोकमवाप्नोति नात्र कार्या विचारणा।।

पुत्र प्राप्ति के लिए नाम लेखन

पुत्र – प्राप्ति के लिये श्रीरामनाम लेखन अमोघ उपाय है। श्रीरामनाम लेखन से कोई भी अभीष्ट पूर्ण होने से बाकी नहीं रहता! तंत्रशास्त्र की सम्मति में श्रीरामनाम लिखने का आधार भी एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। महानिर्वाणतंत्र की सम्मति से आप तालपत्र पर भी नाम लिख सकते हैं।

तालपत्रे लिखेद्राम सर्वतोभवति ध्रुवम्।
सुवर्णश्चापि गौराङ्गो रूपवान्पुत्रवान्भवेत्।।

अर्थात् तालपत्र पर नाम लिखने से कनकोज्ज्वल गौरांग सुन्दर पुत्र प्रगट होता है। तालपत्र पर लिखे तो लक्षारस में हल्दी मिलाकर रोशनाई बनाकर, अनार की आठ अंगुल की कलम से लिखें।

'लक्षारस हरिद्राया लेखनी दाड़िमोद्भवा।'

पुत्रार्थ पाँच लाख नाम लिखना चाहिये।

'लक्षेतु कार्य सिद्धिः स्यात्पुत्रार्थे पंच लक्षकम्।'

यदि श्रीतुलसी वन में बैठकर यह नाम लेखन करें तो पुत्रप्राप्ति निश्चित हो जाती है। 'तुलस्या पुत्रवृद्धिश्च।'

संमोहन तंत्र की राय से आप पीतल के चदरे पर श्रीरामनाम लिखें। 'पुत्रार्थे पैत्तलं पत्रम्।' उस समय आपको रोशनाई चाहिये केशरमिश्रित श्रीखंड चन्दन की।

कङ्कुमं चन्दनोपेतं पुत्रप्राप्ति सुसम्पदः।

वही आठ अंगुल वाली अनार की कलम रहे। पीतल पर केवल एक या दो लाख नाम लिखने से ही कार्य– सिद्धि होगी।

लक्षमेकं द्विलक्षं वा लिखेत्पुत्रार्थमम्बिके।

पीतल पर नाम लिखने वाले को लिखित नाम की संख्या गिन–गिन कर अलग संख्या का हिसाब रखना चाहिये तथा लिखित नाम मिटाकर– मिटाकर पुनः पुनः नाम लिखा करें। ऐसे तो तंत्र ग्रन्थों में पुत्रार्थ नामलेखन के लिये ताम्रपत्र तथा सुवर्णपत्र का विधान है।

'पुत्रार्थे स्वर्णपत्रञ्च – महानिर्वाण तत्रे।' उस समय कस्तूरी तथा कर्पूर मिश्रित रोशनाई रहे। 'मृगमदे च कर्पूरं पुत्रप्राप्ति न संशयः।' पुत्रार्थ नाम लिखने वाले को सर्वदा श्रीमनुशतरूपा वाला वरदान माँगने काल का ध्यान करना चाहिये।

चाहउँ तुम्हहि समान सुत, प्रभु सन कवन दुराउ।

रोगनिवारण के लिये नामलेखन

गौरी–डामर तन्त्र के मत से तुलसीपत्र पर श्रीरामनाम लिखकर, श्रीशालग्राम शिला पर चढ़ावे। पीछे उतरी हुई लिखित निर्माल्य चवाकर खा जाय। उसके समस्त रोग नष्ट हो जायेंगे तथा वह तेजस्वी हो जायगा।

तुलसी– पत्रमालिस्य भक्षेयेत्प्रातः यो नरः।
रोगादि सर्वे नश्यन्ति तेजस्वी सोऽभिजायते।।

उसी तंत्र में यह भी कहा गया कि जो ग्रन्थारंभ में लिखित ढंग से नामलेखन का पुरश्चरण कर चुके हैं, वे यदि वट पत्र पर अष्टगंध से जूही की कलम से केवल दस हजार श्रीरामनाम एकान्त में बैठकर लिखे, तो उसके क्षय (टी०वी०), मृगी, कुष्ठ आदि असाध्य रोग भी सहजही तत्काल नष्ट हो जायेंगे।

लिखेदयुतमेकान्ते महारोगान् बहून्यपि।
क्षयापस्मार कुष्ठादि नाशयत्येव तत्क्षणात्।।

रोगनाश के लिये लोहपत्र पर भी नाम लिखने का विधान है। उस समय गोराचन को दूध में मिलाकर रोशनाई का काम लें।

रोगनाशे शत्रु नाशे लोहपत्रे च उत्पले।
गोरोचन सदुग्धेन सर्वक्लेश निवारणम्।। (महानिर्वाण तन्त्रे)

गौरी– डामर तन्त्र में कहा गया है वेल पत्र पर रक्तचंदन से अनार की कलम से द्वारा इक्कीस हजार रामनाम लिखकर श्रीशिवजी को अर्पण करे तो रोगी रोगमुक्त हो जायगा। शर्त यह है कि वह ग्रन्थारंभ कथित नामलेखन वाला पुरश्चरण कर चुका हो।

विल्वपत्रे समालिखय महादेवं प्रपूजयेत्।
एकविंशति साहस्त्रं पुरश्चरणकृन्नरः।।
रोगी रोगात्प्रमुच्येत................।
तुलसीपत्रमालेखयमयुतं रामनामकम्।
शालग्रामेऽर्पयित्वा सर्वकार्याणि साधयेत्।
तत्पत्रे नरोनित्यं क्षालयित्वा पिवेज्जलम्।
सर्व रोगा विनश्यन्ति सुख सौभाग्य वर्द्धते।।

अर्थात् दस हजार रामनाम एक सौ नित्य के हिसाब से लिखे। प्रत्येक दिन श्रीशालग्राम पर चढ़ावे। पीछे पूजा से उतारे निर्माल्य में से, नाम लिखित तुलसीपत्र निकालकर, उन्हें कटोरे भर जल में भिजावे। वह श्रीनामचरणामृत पी जाया करे, तो उसके सभी रोग नष्ट होंगे। श्रीखंड केशर से श्रीतुलसी की कलम से श्रीठाकुर जी के आगे बैठकर नाम स्नानादि से पवित्र होकर कम्बल या कुशासन पर बैठकर या चमेली की कलम से लिखे। 'चारोग्यं हरि सन्निधौ।'

केवलं रामरामेति भूमो वा विल्वपट्टके।
शतपञ्च सहस्त्रच नित्य भक्ति युक्तो लिखेत्।
धनधान्य समायुक्तों विरूजो विष्णुवल्लभः।

अर्थात् केवल रामनाम पृथ्वी पर या बेलकाठ के १० अंगुल लंबे ६ अंगुल चौड़े पटरे पर श्रद्धाभक्तिपूर्वक नित्य पांच सौ अथवा एक हजार लिखे तो धनधान्य से सम्पन्न, रोगरहित और भगवान् का प्रिय भक्त बन जाता है। पवित्र नदी या सिद्धपीठ से रजधूलि ले आवे। उस रज को बिछाकर, तुलसी, , चमेली या अनार की कलम से नामांकित करता और गिन–गिन कर मिटाता जाय। लिखने के समय मुख से नामोच्चारण करते रहना चाहिये। पटरे पर हरदी, रोरी या सिन्दूर से नाम लिखे।

व्यापार में लाभ के लिय नाम लेखन

महानिर्वाण तन्त्र में लिखा है कि पुत्रप्राप्ति के लिये कदली पत्र पर तथा व्यापार लाभ के लिए तालपत्र पर केशर श्रीखंड मिश्रित चन्दन से चमेली की आठ अंगुल वाली कलम से एक लक्ष नाम लिखे। नाम लिखते समय पीताम्बरी पहने रहे। मौन होकर लिखे। यावत् संख्या पूरी होने तक दृढ़ ब्रह्मचर्य धारण किये रहे। व्यापार में यथेच्छ लाभ होगा।

कुङ्कमं चन्दनोपेतं पुत्रप्राप्ति सुसम्पदः।
पीतवस्त्रान्वितो मौनी ब्रह्मचर्य दृढ़व्रतः।।
कदली तालपत्रेषु लेखयेल्लक्ष मात्रकम्।
व्यापारे लभते शीघ्रमिष्टसिद्धिं न संशयः।।

❁ सर्वमनोरथ दायक नाम ❁

गौरीडामरतंत्र के विधान से दस हजार तुलसीपत्र पर रामनाम लिखकर श्रीशालग्राम को चढ़ावे, तो उसके जो भी मनोरथ हो पूरा होगा ही। इसमें तनक भी सन्देह नहीं।

तुलसीपत्रमालेखयमयुतं परमेश्वरि।
सर्वान् कामानवाप्नोति नात्र कार्या विचारणा।।

यदि पीपल या अगस्त्य की जड़ में बैठकर उपर्युक्त प्रकार से नाम लिखे, तो कार्यसिद्धि और भी सुनिश्चित होगी।

अश्वत्थागस्त्यमूलं च सर्वकामः प्रसिद्धयति।

तुलसीपत्र पर केशरचन्दन, या हरिद्रामिश्रित चन्दन से नाम लिखना चाहिये। कलम तुलसीकाष्ठ या अनार की होवे। यदि कार्य सिद्धि में विलंब मालूम पड़े, तो 'कलौ चतुर्गुणंप्रोक्तम्' अर्थात् कलिकाल में शास्त्रोक्त संख्या को चारगुणा बढ़ा दें तो अवश्य कार्य सिद्ध होगा।

महानिर्वाण तंत्र मं भी ऊपरनिर्दिष्ट नामलेखन विधान ही कहा गया है।

तुलसीपत्रमालेखयमयुतं रामनामकम्।
शालग्रामेऽर्पयित्वा सर्व कार्याणि साधयेत्।।

❁ सर्वमनोरथ सिद्धार्थ श्री हनुमादाराधना ❁

पीपल के पत्ते पर आप रामनाम लिखें। अष्टगंध से लिखना चाहिये। अष्टगंध के नाम हम पिछले पृष्ठ में लिख आये हैं। अनार की कलम आठ अंगुल वाली से लिखिये। पत्ते पर ११ या २१ नाम लिखिए। १०८ पत्तों पर नित्य लिखना चाहिये। प्रत्येक दिन के नामलिखित पीपलपत्तों को पान की भाँति लपेटकर लाल धागे में उसकी माला बनाकर प्रतिष्ठित और पूजित श्रीहनुमतलाल जी की प्रतिमा को चढ़ाइये। यह क्रम ६१ दिन चले। नित्य के निर्माल्य नाम लिखित माला को किसी प्रवाहमान नदी में बहा देना चाहिये। आपके मन में जो भी कामना होगी, उसे श्रीहनुमानजी अवश्य पूरी कर देंगे।

मैं (लेखक) ने कई व्यक्तियों को यह प्रयोग बताकर सफल मनोरथ बनाया है। विहार के श्रीसीतामढ़ी जनपद में कोइली नामक ग्राम में श्री विजयेन्द्रनाथ वर्मा रहते हैं। आज—कल श्रीसीतामढ़ी अदालत कचहरी में महाफिसदफ्तर है। विद्यार्थी जीवन में इन्हें मृगी रोग से विशेष विद्यार्जन में बाधा हुई। डाक्टर ने ही ऊबकर कहा हमारे चिकित्सा विधान में जो भी संभव चिकित्सा है, हम लोगों ने सब करके देख लिये। अब यह रोग किसी संत के आशीर्वाद से भले छूटे, नहीं तो चिकित्सा शास्त्र के लिए असाध्य है। वह बालक मेरे सामने लाया गया। मैंनें यही प्रयोग बताया। लेखन के अंतिम दिन उसे श्रीरघुनाथजी के साक्षात् दर्शन हुये और आरोग्य लाभ का आशीर्वाद मिला। आज उस प्रयोग से रोग मुक्त हुये, उन्हें ३० वर्ष हुए होंगे। इस समय कई बच्चों के पिता हैं। एक गरीब मारवाड़ी से यह प्रयोग कराया। वह आज करोड़पति है। कई उदाहरण हैं।

श्रीहनुमानजी के उपर्युक्त अनुष्ठान काल में ब्रह्मचर्य धारण करना, भूमि शयन, हो सके तो स्वयंपाकी रहे। स्पर्श किसी से भी न करावे। हविष्यान्न भोजन फलाहार या दुग्धाहार करे।

प्रेत बाधा निवारण के लिये

श्रीहनुमानजी या नृसिंह मंदिर में बैठकर, श्रीविग्रह के सामने कागद पर लाल रोशनाई से ५०० नित्य रामनाम लिखिये। जब तक प्रेतबाधा, निर्मूल रूप से नहीं मिटे, तब तक लिखते रहिये। प्रेतबाधा अवश्य मिटेगी। लेखन काल में मुख से नामोच्चारण करके श्रीहनुमान जी को सुनाते भी रहिये।

'कागदे तु समालिख्य हनुमदग्रे सुरेश्वरि।
प्रेतबाधा: प्रणश्यन्ति नृसिंहाग्रे न संशय:।।'

क्लेश निवारण के लिये नामलेखन

कागद पर (कागदे संकटो हानि:) गोदुग्ध में गोरोचन मिलाकर (गोरोचन सदुग्धेन सर्वक्लेशनिवारणम्— महानिर्वाणतन्त्रे) अनार की कलम से नित्य ५०० रामनाम लिखिए। (सकाम नामलेखन ५०० से कम न होना चाहिये) जब तक संकट एवं क्लेश सर्वथा न मिटे, तब तक इसी प्रकार लिखते रहिये।

मृत्युयोग टालने के लिए नाम लेखन

उपर्युक्त विधि से एक हजार नित्य नाम लिखिये। लिखते समय मुख से नामोच्चारण भी होता रहे— तथा अविनाशी रामरूप का ध्यान करते रहिये। महामृत्युञ्जय जप से नाम लेखन अधिक हितकर एवं विश्वसनीय है।

लिखित्वानुदिनं ध्यायन्नपमृत्युं जयेन्नर:।

उपद्रव उत्पात शान्ति के लिये नाम लेखन

संमोहन तन्त्र के मत से उपद्रव शान्ति के लिये महुए के पत्तों पर रामनाम लिखना चाहिए। (शान्त्यर्थे च मधूकम्।') ताम्रपत्र पर लिखें तो और भी अधिक हितकर होवे।

ताम्रपत्रे लिखेद्राम संविधानं रसायुतम्।
सर्वपापक्षयं याति विघ्ननाशो भवेद्ध्रुवम्।। (महानिर्वाण तन्त्रे)

रोशनाई गोरोचन गोदुग्ध में धुला रखिये। कलम जूही में रखें। 'शान्ति के जाति संभवा' संमोहन तन्त्रे।

नित्य ५०० या एक हजार नाम लिखकर आप पचास हजार नाम लेखन पूरा करें।

औत्पातकस्य शान्तयर्थे लक्षार्द्ध च महेश्वरि।

साधक में विश्वास की प्रबलता से थोड़े लेखन से ही कार्यसिद्धि हो जाती है। नारदीय पुराण में कहा गया है कि 'यस्य यावाश्च विश्वासस्तस्य सिद्धिश्च तावती।' अर्थात् साधक में विश्वास की मात्रा के अनुपात से ही सिद्धि मिलती है। जितना अधिक विश्वास उतनी ही शीघ्र सिद्धि। जिन्हें विश्राम शिथिल हो, उन्हें भी अमोघ नाम लेखन अपना फल देंगे। कलियुग में सिद्धियाँ चौगुने साधन से मिलती है। एक आवृति में न हो, तो दो बार के, तिवारे या चार बार में अवश्य कार्य होगा ही। लिखना न छोड़ो।

बन्धनमोक्ष के लिये नाम लेखन

कोई अपराधवश कारागृह (जेल) में बन्द हो जाय, तो वह ताम्रपत्र पर केशरचंदन से अनार की कलम द्वारा तीन लाख नाम लिखें। अवश्य बन्धन से मुक्त हो जायगा, चाहे कैसी भी अक्षम्य कठिन सजा हुई हो।

ताम्रपत्रे लिखेद्राम संविधानं रसायुतम्।
सर्वपापक्षयं याति विघ्ननाशो भवेद्ध्रुवम्।।
लक्षत्रयेन देवेशि ! बन्धमोक्षौ भवेद्ध्रुवम्।।

नाम लेखन द्वारा विद्या प्राप्ति

संमोहन तंत्र के निर्देशानुसार आपको विद्या प्राप्ति के लिए तीन महीने का नामलेखन प्रयोग करना चाहिये। शुद्धासन पर बैठकर श्रीनाम में अनन्य मन लगाकर लिखिए। नित्य लिखने के पहले अपने इष्टदेव का षोडशोपचार से पूजन कर लिया करें। अनुष्ठान पर्यन्त जितेन्द्रिय बने रहें। घी का दीपक जलाकर उसका काजल संग्रह कीजिये। उसकी रोशनाई बनाइये। सन से बने कागज पर लिखना होगा। काशकी कलम रखिये। सर्वसुलभ साधन हैं। एक हजार सीतारामनाम नित्य आपको लिखना होगा। आप समस्त विद्याओं को प्राप्तकर परम तत्वज्ञ बन जायेंगे। शर्त इतनी ही है कि आप ग्रन्थारम्भ में कथित रामनाम लेखन का पुरश्चरण पहले कर चुके हों, तभी यह विद्या प्राप्ति वाला लेखन प्रयोग आपका सफल होगा।

शुद्धासने समास्थाय मासत्रयमनन्यधीः।
पूजापुरःसरं नित्यं सहस्त्रं विजितेन्द्रियः।
लिखेन्नखिल विद्यानां तत्त्वज्ञो भवति ध्रुवम्।।

इसके पहले स्याही, कागद तथा कलम की व्यवस्था लिख चुके हैं। यथा—

शुद्धोदकेन संसिद्धं कज्जलं घृत दीपजम्।
पत्रं शानमयं प्रोक्तं लेखिनी कासजा स्मृता।।

महानिर्वाण तन्त्र मतानुसार ताम्रपत्र पर केशर चन्दन से मौनपूर्वक पाँच लाख नाम लिख लें, तो सभी विद्याओं का अधिपति हो जाता है।

'पञ्चलक्षं लिखेन्मौनी सर्व विद्यधिपोभवेत्।'

इसके पहले वाला श्लोक कहता है— 'ताम्रपत्रे लिखेद्रामं.........।'

मुक्तिप्राप्ति के लिए नामलेखन

नाम लेखन का पुरश्चरण कर चुका हो, तो वह केशर चन्दन से तुलसीपत्र पर 'तुलस्यां मोक्षदं प्रोक्त' एक लाख रामनाम लिख ले। उसकी अन्य जो भी मनोकामना होगी, उसके अनुसार इस लोक में भी सभी मनोरम भोगों को भोग कर, पूर्वजन्मों की वार्ता का जानकार होकर, अन्त में भगवद्धाम को ही जायगा।

मुक्तिकामो लिखोल्लक्षं साधको विधिपूर्वकम्।
सकामो याच्छितं लब्ध्वा भुक्त्वा भोगान्मनोरमान्।।
जातिस्मरो नरो भूत्वा याति विष्णुः परं पदम्।'

जातिस्मरका अर्थ पूर्वजन्म का ज्ञान जानने वाला तथा विष्णु से श्रीरामजी को ही जानना चाहिये।

षडक्षरं महामंत्रं लेखायैदर्क पत्रके।
लेखानी चम्पकोत्थाय ह्यष्टगन्धैरूदङ्मुखाम्।।
पञ्चलक्ष विधानेन खेचरी सिद्धिमाप्नुयात।
लक्षत्रयं प्रकुर्वीत वाक्सिद्धिर्नात्रसंशयः।।

अर्थात् षडक्षर श्रीराममंत्रराज को अकवन के पत्तों पर अष्टगंध से चम्पे की कलम से उत्तरमुख बैठकर लिखें। इस विधि से पाँच लाख मंत्रराज लिखने पर उसे आकाश में उड़ने की शक्ति प्राप्त होगी। तीन लक्ष लिखे तो वाक्सिद्धि होगी। अर्थात् जो बोलेगा, वही हो जायगा।

आगे हम क्षुद्र अष्टसिद्धियों की संक्षेप में चर्चा करेंगे। तंत्रशास्त्र में इन सिद्धियों को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है, परन्तु भक्तों के समाज में भगवत्प्रेम प्राप्ति का बाधक होने के कारण इन्हें क्षुद्र कहकर उपेक्षणीय बताया जाता है। यहाँ लेखन का विधान तांत्रिकमत से ही हो रहा है, अतः संक्षेप में वर्णन करना पड़ता है।

❄ आकर्षण प्रयोग ❄

आकर्षण प्रयोग के लिए शीशे पर (आकर्षे शीशजस्मृतम्— संमोहन तंत्रे) नित्य तीन सौ (आकर्षे शतत्रयम्) करंज की कलम से (आकर्ष करञ्जोत्थया— संमोहन तंत्रे) रामनाम लिखना चाहिए। केशर से लिखने पर सभी सिद्धियाँ सुलभ हो जाती है। (केशरेण लिखेद्रामं सर्वसिद्धिः प्रदायकम् महानिर्वाण तन्त्रे) ऐसे कार्यो के लिए एक लक्ष नाम पूरा करना चाहिए।

पलाशपत्रे समालिख्य चौदश सहस्त्रकम्।
गन्धर्वाप्सरसां चैव भवेदाकर्षणं ध्रुवम्।। गौरी डामर तन्त्र।

पलाश के पत्ते पर केशर से करंज की कलम द्वारा ग्यारह हजार रामनाम लिखने पर गन्धर्व तथा अप्सराओं का भी निश्चित रूप से आकर्षण होता है।

❄ वशीकरण सिद्धि ❄

किसी को भी वश में करना हो भोजपत्र (वश्यार्थे भूर्जपत्रेतु— संमोहन तंत्रे) या वट के पत्ते पर (वशीच वटपत्रके) दर्भ अर्थात् कुशके अंकुर से(वश्ये दर्भाङ्कुरोत्थया— संमोहनतन्त्रे) पाँच हजार रामनाम नित्य (वश्यार्थे पञ्चसाहस्त्रं — संमोहन तंत्रे) लिखना चाहियें। कुश के अंकुर से न बने तो तुलसी की कलम से भी नाम लिख सकते हैं। (तुलसी कुशमूलेन भूर्येपत्रे लिखेद्वशी)।

एक एक नामोच्चारण से दुर्लभ मुक्ति पर्यन्त देने वाले, महान अनमोल परमदिव्य मंगल–भवन श्रीसीतारामनाम को लौकिक धन पुत्र आदि क्षुद्र नश्वर वस्तुओं की प्राप्ति के निमित्त जपना या लिखना मुझे नहीं भाता। किन्तु कुछ ऐसे मनोरथांध लोग भी हैं, जो लाख समझाने पर भी अपने मनोरथका हठ किसी प्रकार से छोड़ने को राजी नहीं होते। उन्हीं को श्रीनामलेखन जैसे मंगलमय कार्य में लगाने के लिए, यह तान्त्रिक नामलेखन खंड लिखा गया है। श्रीनामलेखन से उनके मनोरथ तो पूरे होंगे ही, और श्रीनामसरकार की साधना में लगने पर, उनका हृदयभी पीछे निष्काम हो जायगा। कुछ विलंब से ही सही वे भी श्रीसीताराम भक्ति के सुधाधिक रस का समास्वादन कर सकेंगे। अत: उपर्युक्त श्रीनामसरकार को निर्दोष विधि अकामी भक्तों को ग्राह्य हो सकते हैं।

किन्तु तान्त्रिक ग्रन्थों में दुष्ट प्रयोगों की सिद्धि के लिए कुछ ऐसे भी घृणित उपकरण बताये गये हैं, जो सदाचार प्रेमी सज्जनों के लिए, अस्पृश्य एवं अग्राह्य हैं?

प्रश्न यह होता है कि तंत्र–ग्रन्थ में ऐसा लिखा ही क्यों गया? उत्तर सीधा है। वाममार्गियों का मन तो तंत्र–मंत्र पर ही आधारित होता है। वाममार्गी लौकिक भोगों के भूखे होते हैं। उन्हें परलोक सँवारने से क्या मतलब? उन्हें श्रीरामनाम में इष्ट भाव तो है नहीं, जो श्रीनाम सरकार का समादर कर सकें। उन्हीं से वैसे घृणित उपकरणों का उपयोग संभव है और उन्हीं के लिये तंत्र ग्रन्थ में ऐसे प्रयोग बताये गये होंगे।

श्रीसीतारामनाम लेखन प्रसंग पर लिखने वाले हमारे पूर्व लेखक हैं, वैष्णव–धर्म के कट्टर समर्थक पं० रामटहल दास जी महाराज। आपका लिखा हुआ श्रीराममन्त्र (रामनाम) लेखन विधि नामक पुस्तिका सं० १९९५ माघ पूर्णिमा के दिन श्रीअयोध्या नयाघाट स्थानाधिपति पं० गिरधारी दास जी ने प्रकाशित करवाया था। यह ग्रन्थ अब अप्राप्य है। दूसरे लेखक हैं परम प्रतिष्ठित श्रीवैष्णव पं० श्री अवध किशोर दास जी महाराज, जिनकी लिखी श्रीरामनाम लेखन विधि नामक पुस्तिका सं० १९९७ में विद्यापति प्रेस पटना से प्रकाशित हुई है और अद्यावधि वहीं से उपलब्ध भी है। उपर्युक्त उभय परमादरणीय बहुश्रुत विद्वान संतों ने हस्तलिखित एवं प्रकाशित तन्त्र ग्रन्थों की पर्याप्त छानबीन की है तथा उनमें से श्रीसीतारामनाम लेखन सम्बन्धी सामग्रियों को ढूँढ़ निकाला है। इनके ग्रन्थों में उन तन्त्र ग्रन्थों के मूल संस्कृत श्लोक इन्हीं के हिन्दी अनुवाद सहित प्रकाशित भी किये गये हैं। अत: आप दोनों महानुभावों ने श्रीनाम साहित्य में नई क़ड़ी जोड़कर नाम जगत का महान उपकार किया है।

रही ग्रन्थोक्त ग्राह्य एवं त्याज्य भागों के सम्मिश्रण की बात। सो क्या शब्द ब्रह्म–भूत वेदों में परम निषिद्ध तामस यज्ञों का वर्णन नहीं है? वेदों के भाष्यकर्ता लंकाधिपति रावण का पुत्र 'मेघनाद मखकरइ अपावन।' वाला यज्ञ क्या वैदिक नहीं था? यदि नहीं तो श्रीगीता में वेदों को त्रिगुणमय क्यों बताया गया? 'त्रैगुण्य विषया वेदा निस्त्रैगुण्यों भवार्जुन।' श्रीगीता २।४५ का क्या भाव? इस पर हम परममान्य वेदों की निंदा नहीं करते। करें तो स्वयं निन्दित हो जायँ। श्रीगोस्वामिपाद रचित श्रीदोहावली कहती है–

'अतुलित महिमा वेद की तुलसी किये विचार।
जे निंदत निंदित भयो, विदित बुद्ध अवतार।।'

श्रीवेदों में भरे सभी प्रकार की सामग्रियाँ अधिकार भेद से भिन्न–भिन्न विचार वालों के लिये यथा योग्य ग्राह्य हैं। जो अपने काम की नहीं, उन्हें आदरपूर्वक वहीं छोड देना पड़ता है। वही बात मंगल

साधक भगवान् शंकर जी द्वारा विरचित तन्त्र ग्रन्थों की है। हमारे पूर्व लेखक दोनों संतों ने ग्राह्य एवं त्याज्य सभी तान्त्रिक मतों को हमारे सामने रखा। यह तो हमारे विचार पर निर्भर करता है कि हम अपनी बुद्धि से अपने अनुकूल सामग्री उन तांत्रिक ग्रन्थों से चुन लेवें। जो तामस दुष्ट प्रयोग हमारे काम का नहीं, वे वहीं पड़े रहेंगे। उनका ग्राहक वाममार्ग वाले हो सकते हैं, अवथा जो भी हो।

उपर्युक्त उभय नामलेखन विधि संज्ञक प्रकाशित ग्रन्थों में विविध मनोरथ तथा उनके पूर्ति साधक उपाय ऐसे मिले–जुले ढंग से लिखे हैं कि साधारण बुद्धिवाले साधक अपने मतलब की चीज उनमें से चुनकर ले भी नहीं सकते। अत: हमारी विश्लेषणी बुद्धि ने पहले विविध मनोरथों का विभाजन किया। पीछे उनकी पूर्ति साधनों की उन उद्धृत श्लोकों से चुन चुनकर उन प्रकरणों में सजाया। पहले उन विभागों की चर्चा की, जो सकाम सदाचार प्रेमी सज्जनों के द्वारा ग्राह्य भी हो सकेंगे। पीछे तान्त्रिक मत के अनुसार मारण, उच्चाटन, संतापन आदि दुष्ट प्रयोग वाले त्याज्य विभाग लिखने की बारी आई। एक तो वे दुष्ट प्रयोग ही द्वेष मूलक हैं। हिंसा प्रिय आसुरीप्रकृति वाले दुर्जनों के मतलबकी बात है। दूसरे उनके साधक लेखन सामग्री तो ऐसे कुत्सित एवं अपावन है कि भावुक नामप्रेमी सज्जन उनकी चर्चा भी नहीं सुनना चाहेंगे। उनके लेखन में हमारे हृदय में हिचकिचाहट उत्पन्न हुई। मस्तिष्क के विचार एवं हृदय की भावुकता में विवाद छिड़ गया।

विचार— सभी ग्रन्थों में नाना विधि अधिकारियों के निमित्त नाना प्रकार के विषय लिखे होते हैं। एक की जो उत्तम जँचता है, दूसरा उसी को त्याज्य मानता है। ग्रन्थकर्त्ता का क्या दोष? तंत्र ग्रन्थों में जैसा लिखा है, जैसा पूर्व लेखकों ने लिख दिया, उसी प्रकार तुम भी लिख दो।

हृदय— हमारे इष्ट श्रीजानकीजीवन सर्वसुहृद, सर्वसुखद हैं।

'राम प्रानप्रिय जीवन जी के। स्वारथ रहित सखा सबही के।।

उनका जैसा मधुर मनोहर रूप, उसी भाँति उनके नाम।

आखर मधुर मनोहर दोऊ।' ' सुमिरत सुलभ सुखद सब काहू।।'

अपने कलुषित हृदय से उत्पन्न अनुचित रागद्वेष के वशीभूत होकर, उन्हें तन्त्रवल से किसी की हिंसा, किसी के संतापन, किसी के उच्चाटन में नियोजित करना भयानक भूल है। दूसरी बात यह कि इष्ट नाम हमारे प्राणाधिक प्रिय है, जिन्हें हम अधिक से अधिक आदर करते हैं,जिनकी परमपावन वस्तुओं से अर्चना करना चाहते हैं उनके लेखन में तंत्रोक्त अपावन एवं घृणित वस्तुओं का संयोग करना हमारे लिए सर्वथा असह्य है। सच्छास्त्रों के दिव्य प्रमाणों से संशोभित एवं वैष्णवाचार्यों की विमल महावाणियों से विभूषित ऐसे आदर्श ग्रन्थ में तन्त्रशास्त्र में लिखित वाममार्गियों के मतपोषक गन्दे विषय लिखना ही सर्वथा अयोग्य है।

विचार— भई, अपने भोले— भाले वैष्णव बन्धुओं को वाममर्गियों के कुत्सित मत से बचाने के निमित्त उन्हें स्पष्ट रूप से त्याज्य बताकर सावधान तो कर ही देना चाहिये। 'संग्रह त्याग न बिन पहिचाने।' वैष्णवों के लिए परहिंसा संतापन, उच्चाटन आदि दुष्ट कर्म त्याज्य हैं, उनके साधन भूत कुत्सित सामग्रियों से नाम लिखना तो सर्वथा त्याज्य है ही। अल्पविचार वालों को सावधान करने के लिए त्याज्य विभाग में सभी वस्तुओं का स्पष्ट विवरण लिखना ही चाहिये।

हृदय— लिखना हो लिखो, पर ऐसा लेख तो लेखक को भी कलंकित करता है। न जाने, आदरणीय तन्त्र शास्त्र ने कैसे आचार भ्रष्ट, दुष्ट प्रकृति के हृदयहीन अधिकारों के लिए, ऐसे दुष्ट प्रयोग लिखे तथा उसके ऐसे कुत्सित साधन बताये, जिसकी चर्चा सुनना भी हम लोगों को नहीं सुहाता।

कहाँ हम लोग श्री नवल युगल मनभावनजू की सुमधुर लीला रस के समास्वादन करने वाले अनुरक्त तथा अपने प्राण सर्वस्व को कोटि–कोटि भाँति के समादर पूर्वक लाड़–प्यार करने वाले तथा कहाँ उनके सुललित पावनास्पद नाम के साथ ऐसे घृणित द्रव्यों का प्रयोग! अत: ऐसे प्रसंग को किसी भाँति से भी परम पावन नाम साधना ग्रन्थ में लिखना लेखक को भी कलंकित करेगा।

विचार– श्रीनाम साधना के विभिन्न लक्ष्य रखने वालों के दृष्टिकोण से, नाम उपासकों के वर्ग माने गये हैं। १– आर्त्त २– जिज्ञासु ३– अथार्थी, और ४– ज्ञानी।

'राम भगत जग चारि प्रकारा। चारिउ सुकृती अनघ उदारा।
चहुँ चतुर कहँ नाम अधारा। ग्यानी प्रभुहि विशेष पिआरा।।'

और रस के दृष्टिकोण से पाँच प्रकार के भक्त होते हैं। १– शान्त, २– दास्य, ३– वात्सल्य, ४– सख्य और मधुर।

श्रीनाम साधना सार्वभौम एवं सर्वोपयोगी ग्रन्थ है। इसमें केवल मधुर भाव वालों की भावुकता एकदेशीय विचार एकाधिकार जमाना चाहें, सो कैसे हो सकता है? अत: विधि निषेध बताना ग्रन्थ का आवश्यक कर्त्तव्य समझकर, दुष्ट प्रयोग एवं उनके कुत्सित साधन को त्याज्य बनाने के लिए, उसकी चर्चा अनुचित नहीं है। इस प्रकार दोनों में विवाद का अंत नहीं देखा। शाखा प्रशाखा बढ़ती ही जा रही थी। इधर हमें भी ग्रन्थ पूरा कर, बहुत से उतावले प्रतीक्षकों के हाथों में ग्रन्थ यथाशीघ्र पहुँचाने की चटपटी थी। विचार के प्रमाद में आकर दुष्ट प्रयोग एवं उनके कुत्सित साधनों को त्याज्य विभाग में स्थान देकर, ग्रन्थ छिपा दिया। छपी हुई दो हजार प्रतियों में से लगभग ३०० प्रतियाँ धड़ाधड़ वितरित हो गईं। हमारे प्रेमी मित्रों के करकंजों में जब इसकी प्रति पहुँची, तो वे अंतिम त्याज्य विभाग के दुष्ट प्रयोग एवं कुत्सित साधन को हमारे हाथों से लिखा हुआ जानकर, भौंचक से रह गये। मीठे उपालंभो के प्रेमपूर्ण शब्द कान में पहुँचने लगे। मित्रों का कहना था कि तंत्रशास्त्र अपनी जगह पर सही भले हों, तुम्हारे पूर्व विद्वान लेखकों ने उसी तन्त्रोक्त कुत्सित साधन को अपनी पुस्तिका में स्थान दिया तो विद्वान महापुरुष सर्वसमर्थ होते हैं, परन्तु तुम्हारे जैसे नामानुरागी की कलम से त्याज्य ही बताने के लिए क्यों न हो, ऐसे अवाच्य शब्द लिखे कैसे गये?

मित्रों के प्रबोधन से हमारी विचार की प्रमादनिद्रा भंग हुई। आखिर लेखक का हृदयभी अपने मधुर उपासक बन्धु मित्रों के सहधर्मी ही तो ठहरा। अब हम अपने हृदय की भावुकता में सजग हो गये हैं। हम अभी अपने यहाँ की अवितरित प्रतियों में उन अंतिम विवादस्पद पंक्तियों को वहिष्कृत करते हैं। यह संशोधित पृष्ठ वितरित प्रतियों में भी जो प्रेमीबन्धु चाहें, हमारे यहाँ से छपे पर्चे लेकर चिपका लेवें। हमने तर्क प्रधान विचार विमर्श को नैयायिकों की झोली में डाल दिया है। हे ज्ञान विज्ञान की गवेषणा! आपको प्रणाम है! आप दार्शनिक महानुभावों के गंभीर मस्तिक देश को जाकर सुशोभित करें। सकाम नाम साधना कर्मकांडी सज्जनों के कर्मठ हाथों में सौंपकर, हम सबसे न्यारा अपना पंथ बना रहे हैं। 'नेह नगर के पैरोइ 'न्यारो' अब हमने अपने मन को समझा–बुझाकर राजी कर लिया है।

'करो मन नेह नगर गुजरान।।' 'अब हम बसिहौं प्रीतम पास।
सकल लोक सम सोक समुझि जिय, सब सन होय निरास।
सूरज चंद अनल दामिनि से, पल पल जहँ प्रतिकास।
श्रीयुगलानन्य अमल नामहि चखि होहु मगन रसरास।'

नेह नगर प्रवेश होगा, नाम साधना से ही। वहाँ ठहरेंगे भी नाम जापकर ही। वहाँ के दिव्य युगल भावना रस की माधुरी भी चखेंगे नाम जपकर ही। हमारी नाम साधना लौकिक वस्तुओं से

सर्वथा निष्काम रहेगी। हम दिव्य प्रेम के भूखे हैं। श्रीनाम सरकार भी कृपा कर हमें वहीं देवें। हृदय को भावुकता में पड़कर विचार का त्याग करते जानकर पाठक यह न समझें कि ये लोग विचार हीन होकर आचार भ्रष्ट हो जायेंगे। हम लौकिक बुद्धि त्याग रहे हैं। इस बुद्धि से प्रभु की प्राप्ति तो नहीं होती। श्रीगीताजी में श्रीमुख वचन है कि इष्ट ध्यानपूर्वक सतत सप्रेम भजन करने वाले प्रेमी भक्तों को ही आप कृपापूर्वक वह बुद्धि भी देते हैं, जिसकी सहायता से भगवत्प्राप्ति संभव है।

तेषां सतत युक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकम्। ददाभि बुद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते१०१०

श्री जगज्जननी श्री जनकनंदिनीजी के युगलचरण पकड़कर मचलने पर, वे कोई साधन कराये बिना ही सेतमेत में वह बुद्धि दे देंगी।

'जनकसुता जगजननि जानकी। अतिसय प्रिय करुना निधान की।
ताके युग—पद कमल मनावऊँ। तासु कृपा निरमल मति पायऊँ।।'

श्रीगुरु करुणा से भी विमल विवेक मिलता है।

तुलसिदास हरि गुरु करुना बिनु विमल विवेक न होई।
विनु विवेक संसार—घोरनिधि पार न पावै कोई।।

श्रीविनय०११५।६

ऐसी निर्मल बुद्धि और हृदय की भावुकता में मतैक्य है। विरोध तो लौकिक बुद्धि और दिव्य प्रेमपूर्ण हृदय की भावुकता में होता है। अनादिकाल से ही परम समर्थ पतित— पावन श्री सीताराम नाम सरकार ऐसे घोर पातकियों का भी समुद्धार करते आ रहे हैं, जिनके पापों के प्रायश्चित कई जन्मों तक कृच्छ् चान्द्रायणादि व्रतों तथा अन्यान्य क्लिष्ठ साधनों से भी संभव नही थे। इसी पर तो श्री गोस्वामिपाद ने श्रीविनयजी में कहा 'पतित पावन रामनाम सो न दूसरो।' अनन्तकाल तक यह पतित पावन विरद श्रीनाम सरकार वहन करते ही रहेंगे। तीनों लोकों में समस्त मंगलों का विस्तार करते रहना श्रीनाम सरकार का सहज स्वभाव है। अन्यान्य युगों में श्रीनराम सरकार का गोप्य प्रभाव आज इस घोर कलियुग में स्पष्ट रूप से इस प्रकार प्रगट न हो जाते, तो हमारे जैसे विषय के किंकर जीवन तो डूब ही मरते। ऐसे परम उदार, सर्व सुहृद, सर्व सुखद मंगलखान श्रीसीताराम नाम सरकार की सदा जय जय होवे।

हमारे लिये तो वही ग्रन्थ धन्यातिधन्य है जिनके पठन श्रवण से हमें श्रीनाम साधन में लगन जगती है, वही सत्संग नित्य वाञ्छनीय, नित्य कर्त्तव्य है जिससे श्रीनाम साधना में हमारी रुचि सदा बढ़ती रहे, वही महापुरुष हमारे परमाचार्य पद पर प्रतिष्ठित होने योग्य है, जिनके समागम से हममें श्रीनाम निष्ठा समुत्पन्न हो। वही घड़ी, वही मुहूर्त्त हमारे समस्त जीवन का सर्वाधिक सौभाग्य वर्द्धक है, जिस क्षण हमारी जीभ से अपने प्राणाधिक प्रियतम के मधुरातिमधुर नाम का समुच्चारण बन जाय।

तदेव लग्नं सुदिनं तदेव तारावलं चन्दवलं तदेव।
विद्यावलं देववलं तदैव सीतापतेर्नाम यदा स्मरामि।।

वहीं सौभाग्यशाली सज्जन धन्यातिधन्य है, मान्याग्रगण्य है, जो श्रीसीतारामनाम जप में लगे हुए हैं। स्वर में स्वर मिलाकर गर्जन कीजिए तो—

'जय जय श्री सीताराम।' इत्यलम्
'शुभं भूयात्। मङ्गलं सन्तनोत्।।'

श्रीशत्रुहनशरणजी द्वारा लिखित

अन्यान्य उपलब्ध अनमोल पुस्तकें

श्रीइश्क कान्ति की रहस्योद्घाटिनी टीका

मूल इश्ककान्ति के यशस्वी लेखक हैं अनन्त श्रीस्वामी युगलानन्यशरणजी महाराज। दिव्य प्रेम की उन्मत्त दशा में लिखी गई यह प्रेम पुस्तिका सहदय प्रेमी पाठक के ह्वदय में दिव्यप्रेम की चैतन्य चेतना संदीपन करने में बड़ा ही उपादेय है। मूलग्रन्थ हिन्दी संस्कृत के साथ अरबी –फारसी,पंजाबी आदि शब्दों के संमिश्रण से केवल हिन्दी मात्र जानकार पाठकों के लिये अब तक दुर्बोध रहा है। ओजस्वी भाषा में लिखित इस पुस्तक के केवल मूल रूप में पाठ से प्रेमी सज्जन थोड़ा बहुत दिव्य प्रेम का आभास पाकर टीका के अभाव में इसके सम्यक् रसास्वादन के लिये तरस कर रह जाते थे। अब रहस्योद्घाटिनी टीका में पूरी व्याख्या पढ़कर आप दिव्यप्रेम के सुधा स्वाद का दिव्यानन्द लूटें। विद्वान् सज्जनों ने इस टीका की मुक्तकंठ से सराहना की है। एकबार इसे आद्योपान्त पाठकर लेने पर, फिर तो आपको इसके नित्य पाठका स्वत: चस्का लग जायेगा। इसे एकबार अवश्य देखें। २५२ आठ पेजी साइज में छपे होने पर भी इसके न्यौछावर केवल दस रूपये रखे गये है।

—: श्रीअयोध्या के जगमगाते रत्न :—

इस ग्रन्थ में आज से डेढ़ सौ वर्ष पहले के अयोध्यावासी सिद्ध महापुरूषों की संक्षिप्त गुणात्मिका जीवनी है। उनके नाम हैं १—दीनवन्धु श्रीरामप्रसादजी विन्द्वचार्य,२—तपस्वी—रत्न,श्रीरामदासजी महाराज जिनका अचलकीर्ति स्वरूप है वर्त्तमान श्री तपस्वीजी की छावनी।३—संतसेवी रत्न श्रीमणिरामदासजी महाराज जिनकी श्रीमणिराम बाबा की छोटी छावनी आज भी संत सेवा का आर्दश वहन करती है।४—रसिक रत्न करूणासिन्धु श्रीरामचरणदासजी महाराज, जितने सर्वप्रथम श्रीमानस जी टीका लिखी।५—आदर्श रसिकरत्न श्री जानकीचरण। आप इनकी प्रेमदीवानी दशाजीवनी में पढ़ें । ६—श्रीरामसखारत्न श्रीशीलनिधिजी। श्रीकनकभवन के आगे श्रीलाल साहब का मन्दिर आज भी के सुयश पताका फहरा रहा हैं।७— भावुक रत्न श्री चित्रनिधि जी महाराज। मूल्य केवल दो रूपये लागत से भी कम।

—: श्रीमिथिला संतमणि मोदलताजी का चरितामृत:—

नवीन कीर्त्तन गायन रूप देकर,विवाह पदावली की रचना करने वाले श्री मोदलताजी का जीवन दर्शन कर, आप सीखेंगे प्रेमसाधना पद्वति एवं संतो की रहनी। एकबार इसे अवश्य पढ़ें। २३६ पृष्ठों की इस पुस्तक का सस्ता न्यौछावर केवल पाँच रूपये मात्र हैं।

—: श्रीराघव स्वभाव सौरभ :—

श्रीगोस्वामीजी के काव्यों के साथ—साथ श्रीवाल्मीकीय रामायण श्रीमद्भागवत आदि प्रामाणिक ग्रन्थों के श्रीराघवचरित्र चित्रण से उनके मधुरतम शीलस्वभाव का परिचय संग्रह किये गये इस ग्रन्थ के पाठ से आपको लाभ होगा। न्यौछावर दो रूपये मात्र।

उमा रामस्वभाव जिन जाना। तांहि भजन तजि भाव न आना।।

मुद्रक : श्रीराम ऑफसेट प्रिन्टर्स, पालकी खाना, फैजाबाद, दूरभाष—२०५५२

छह उर्मियाँ:— भूख, प्यास, लोभ, मोह, सर्दी, गर्मी, जन्म-मरणादि